

॥६॥ गुरु ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

स्योहमेकं ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥
सेषतकी स्याहके पीरा ॥ ताके संग ॥
रिहे बीरा ॥ धातरितत्नेन ॥ आवेक ॥
सामद ॥ अरु गर भसु ना ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥
तकी स्याहसूंकही ॥ सांचाही ॥ मल ॥
रासही ॥ ही इतूरकही ॥ सबही ॥
हिबकंपावेनही ॥ २ ॥ ही इतूरकही ॥
करेपुकारा ॥ जुलहावांणी ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥
अपारा ॥ सेषतकी ॥ इक ॥ बोले ॥
कहोकबीरतुम ॥ अगमनिलं ॥
३ ॥ सरी ॥ इतंतुमरा ॥ हनुवाई ॥
अगमचस्तक्यापार्श्व ॥ याके ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥
चोकहोबुजाई ॥ नहिते तोही ॥
रेभाई ॥ हाथीमातावे ॥ गतु ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥
वोयाके ॥ ऊपरि ॥ आंगि ॥ कु ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥
म्हावतहाथी ॥ ल्हावोगाहा ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥
हजूरिकी ॥ योतवठाडा ॥ ५ ॥ सेषतकी ॥
कीबूऊतदेवाता ॥ हाथीमस्तवऊ

तहेमाता। म्हावतहाथीकंललकरो
 याकौतुरतमारिहीडारो॥ दोऊदीन
 संश्रोगेज्ञाना॥ काहूकाइनडरनहं
 मांनं॥ तबहाथीकंश्रानिपुकाया
 मेरेमनमेंनेनहींआया॥ ७॥ पुके
 नहाथीकरेविवेधा॥ सिंघरूपत
 हांवेवेदेधा॥ श्रोरकिसीकीनजरि
 नआवे॥ हाथीदेधिदेधिपछितावे
 ८॥ हाथीकालरूपकौंदेधे॥ हमरे
 स्वांतिरूपमनलेधे॥ हाथीभगि
 गयोहैथांनं॥ पातस्पाहनहींपायो
 प्पानं॥ ९॥ इसरबरीयांश्रानिपु
 कारा॥ कबीरबाणीकथेश्रपारा
 करोकैदकबहूमतिछोरो॥ या
 कंमारिगंगामेंबौरो॥ १०॥ सेषतकी
 कहैकैसीभईपातस्पाहतबक
 बुनहींकही॥ सेषतकीइककी
 न्दबधांनं॥ याकामरमनकाहू
 जांनं॥ ११॥ चोबदारकौंदीनपवा

३

सूनातिवे

सेषतकी सोची मनमांहीं ॥ १६ ॥ दो कुं
दीन इन दीन नुवा

यातबकबीरकं तुरत बुलाये ॥ १७ ॥
मरदन करिब सत्रप हिराये ॥ लेलं च
मेल फुलेल लगाये ॥ कहै कबीर क
हामनमांनी ॥ सोही बात सोहि कहोनि

दां नी ॥ १४ ॥ साह तकी दोय बोले बां
तेरी सौं नतिक रे है ग्यां नी येक दी
में ठा डार हे उ दो उ दी न का हे कं क
उ श्ण तव क वी र क रि क ही वि वे
आ दो ऊ दी न में क हुं न दे या दी न
क सब के मन ना या दो ऊ दी न क
तैं आ या २० दी न येक में क हुं पु व
री दोय क है दो जग में डारी येक
न को ई न ही पावे दोय क है दो जग
जीव जावे २१ जा को नां मतु म दी न
व हिरा या सो सरूप धरि में ही आ य
तुम कं आं छिन सू के नां ही में व्या प
क हुं सब के मां ही २२ सकल म
धि आ प ही आ पा ॥ आ प ही ज पे आ
प नों जा पा जु ल हा ग्यां न क थे अप
रा सं न ति क रो म ति ल्या वो वारा २
३ ना ई येक तुम ले हो बु ला ई इन
की सौं न ति क रो रे ना ई ना ई दे धि दे
धि प छि ता वे सद ली क या सं न ति

श्रीदेविदेविसवरहेच्छिपाई। तब
 रडेरैचल्पआया। अजहं स्या
 नेदनहीपाया। २५। सेवतकीबो
 कवांनी। सुनौं स्याहमेंकहं बंधां
 हैयहां नाई। सबके
 छैतलबकराई। २६। येकलाठाम
 सूतमगाई। सबहीजुलहापकडि।
 २७। तबकबीरउठिठाडेभयेजा।
 तस्याहसंबांनीकहेजां। येतुमकांम
 चुनहींकीया। सबकुंडुषकाहेकं
 या। इनसबहीकंविदाजोदेही। स्तं
 निसांसबहमसंलेही। २८। चौबदा
 कंलीनौंसाथा। नलीतगादूकदीनौं
 २९। चतत्रैचतछोरनश्रीवै॥
 वथाकेमनमेंपछितावै। ३०। सूत
 रबहुततहांलागा। कहुंछोरनही
 सैधागा। करामातिदेवितवरहेउ
 हस्यहनेदनहींलहेजा। ३१। त्रैसे
 मतिकेमंदा। नयेनयेउगावतफं
 ३२। चौथापरचात्रैसैदीयेउपातस्या

हनेदनहीलीयेउ॥३१॥पांचवांपरचाकह
खिचारीजाकीवातवकुतअतिहारी॥पं
डिसंन्यासीअरुडंडीइनसब-दिनमिति
कीनीमंडीसेधतकीअरुस्याहबेराजे
तहांजायवकुतहीगाजेकबीरग्यांन
सबऊपरिगावेकासीभेकोइरहगनपा
वे३३बांनीकहेसबतकेआगेहमरोजे
रककुनहीलागेकेतोधाकेमारिहीडा
रोकेहमकुंतुममारिनिकारो३४तब
सबदिनमितिमोहिवुलायातबमेंआ
गैहीचलिआयातबकाहीनागीसम
सेराचहुंदिसासोलीनोंछेरासबसम
सेरदेखतउगईमेरेमनककुसंसेना
हीमारमारसबबोलेबांनीचढिगयो
गगनिकाकनहीजांनीपवनरूपधरि
तहांदिआयास्याहनेदअजहंनही
आयाछठवांपरचात्रैसैलीनांसात
कोटडीसांहीदीनां३५कुलफदईचो
कीवेगईनिकसिगयोकाकुववरिन
पाईसातमेंपरचैसरपमगायासरब
अंगमेंलेतपटाया३६ताकोविषनही
नेदेंपासेकेचनेगेचोगदो३७

नकीवातव
अधोयेषुदायकादावा

ना
येषु धा

दशगमवताशी।
येगमरनये
रिल्लइये ३

नांनैसोत्त

हम
नागे
नलचारादेव्याना

ही व्याल हमारा ॥ ४६ ॥ जाकी आगताहा
की पौना ॥ सोही लगावे तो बुजावे कौना
अपारवां परचा नै सैदीना ॥ तब मै कां
मयेक असकीना ॥ ४७ ॥ परबत ऊपरि
मोहि चढाया ॥ वहां जाय करितुरतगिरा
या ॥ धरती ऊपरि अंगिसमाया ॥ अजहं
स्याह भेदनही पाया ॥ ४८ ॥ केते परचा
लेहो मोसूं ॥ मै तो कछू कही नही तो सौं
मनमांनै करिली ज्यो नाई ॥ मैरै है सत्यपुर
षसहाई ॥ ४९ ॥ तुमरो मास्योक बडनम
रिहं ॥ तीनलोकमें नाही डरिहं ॥ काल
सबन कौंडंड दिवावे ॥ सो मैरै मनक छून
आवे ॥ ५० ॥ सिरपर कहा चढावो भारा ॥ त
मतो सबै कालके चारा ॥ कालबली सौं
कबून छूटै तीनों लोक काल सब लूटै
पूश ॥ सो काल है सतिका चेरा ॥ सो मै कीया
सतिमें डेरा ॥ तन मन सुरतिसति मैरै है
मेरा भेदन कोई लहै ॥ पूश ॥ जंत्र मंत्र बज
मंठि चलाई ॥ मैरै अंगन लागी नाई ॥ क
हां लग परचालेहो मेरा ॥ मेरा मरमन का
हू हेरा ॥ ५३ ॥ बारवां परचा नै सैदीना ॥ अ

मूरखमोहिनचीनां।तिरवांपरचा
 लमगाया।ताताकरिकैमोहिन्हला
 ।धुधा।सीतलअंगनलायेताता
 अल्हकीजाता।परचैपरचैअसै
 ।कौनवातकाकहुंविबेया।।५५।
 तीबारकरामतिहमदशी।उनके
 मेंडरमतिनशीचोदवापरचाचोर
 याया।अजहुंस्पाहनेदनहीया
 ।महिलांमांहीमोकंदेया।।तव
 लकीनबिबेया।।इनकीअगम
 काकहीये।।अबतोचुपहोयकेर
 ।मुषाबहुतहीपरचालीनांभाई।।इ
 कामरमनकाहूपाई।।पं५मांपर
 सैतीनां।सैकोमयेकअसकीनां।
 जोगणीवांवनवीरा।।देबेस्पाहमह
 तीरा।।देवतसुधिवुधिसवैहिरां
 बतोदिलमेंकलुइकजांनी।।पुण
 चारिकीहोतीआसा।।सोमेंअंचित्नी
 मपासा।।रहगयाकुछामनपिछतां
 ।।तबताकैकलुउपज्योग्यानां।।६०
 येकहाकहीनहींजाईकलुइक

रचो श्रीरत्नो भाई को इ मोटो पर चो दे
हो क वीरा तो तुम सां चे सति फकीरा
ई १ मोटो पर चो इ म कं दे ही जाति अ
ल्लु की त व व हर रा श्री सो ल्वां पर चो अ
सै दी नां म्हा ज हू द कां म अ स की नां
ई २ पीर प कं म र न वीर सू ला ये सब सु
स ल मां न के मू ला सो में सब ही ली न
बु ला ई अ ग म ध्या ल का हू न ही पाई
ई ३ स्या ह दे धि त की फिर दे धा अ ग
म ध्या ल के सैं क रिले धा जा ग त है वै
सु प नां भाई दे धि दे धि दित्त में पि छ
ता ई ई ४ भा ग व डे ह म जां नी वा ता
है क वीर सा हि व की जा ता क हे स्या
ह सु नो हो पी रा स ति पु र व है स ही क
वी रा स त्र वां पर चा स ति स रू पा म्हा
ते ज अ रु ब हू त स रू पा पां णी प व न
ज मी अ का सा चं द सूर सं ग ली या त
मा सा ई ५ स्या ह त की दो उ भ र्म भू ला
है क वीर ग पां न को मू ला इन की सि प
ति क चा क रूं व धां नी अ ग म नि ग भ उ न
स ब ही जां नी ई ६ सा हि व म न चा है
... ..

काहे डरे सुखिमकारण यह वपुध
 ईषा कालवली महाबडोक हावे सो
 रकी नजरिन आवे। द्वेषिक वीर
 चक्रत नये उपात स्याह अचरज
 यगये उ। ईषा पात स्याह के असी
 जिउ सेषतकी सांची मोहिक हे
 निकम हरि जो मोपर करही तो से
 य सबही हरही। उणे नि। स्तवे कूं
 आगे गये उ। इनको योजन का हू
 हे उ। ती न नोककी होत बडा शीवे
 कते वसक लवहरा शी। ११ सो तो सब
 दीन उठा शी असी अगम ठोर कया पा
 सेषतकी मोहिक हो बुझा शी। तो तुम
 चेपीर कह शी १२ सेषतकी तब उ
 उपात स्याह वात सुनिली ये उ
 नसद मानिको इ हू सरनां ही थ्ये तुम सं

१३ अवारवां परचा

भाई अगम मध्या लक क कहि

हसना जो रि के वैवा। तव में

बघट नीतरि ये वा। रूप ये क अनंत हो १४

मन का फूल हे उ। तब

स्याह के

नः शी मनकी डर मति

बही गइ दि कर जा...
वक वीर अगम क चुक ह्या जो क छ
रज होय सो लेह पीछे दोसन हम कूंदे
ह ७६॥ तब स्याह कही निस्त में पांउं
तो में सरण तुम्हारी आंउं ये क छिन क
में निस्त दि पाई मुख सों स्याह कही में पाई
७७॥ स्याह मर म पायो हे पूरा अब मेरे ड
ष नये सब हरा सेषत की छो डै न ही
वां नी अंधे बात मेरी न ही मां नी ७८॥
षेपत की बोले अति मां नी साहिब सि
रतिन का हू जां नी जो तुम हो हू न फी
अस वाता तो मां नूं साहिब की जाता
७९॥ बे न मूं न साहिब हे सो ही सो न मूं
न मां नें न ही कोई बे चूं न वे जि न्या क
हावे सो साहिब मेरे मन भावे ८०॥
सबे नि सां न में नि ज हे सो ही ता की ष
वरि न पावे कोई सेषत की तब अरे
कहे उ जाय ग गनि में वां नी क हे उ
८१॥ होय न फी होय अस वाता तब त
सति साहिब की जाता अलय फन क
म करी व सी ग तब ही उ नें मां नी सी ष
८२॥ सेषत की मां नि जो ली ये उ के त
८३॥ सेषत की स्याह

लाया। या मुरदा को दे हो उवाडी तो
 अलह मुदाय कहा श्री ७५। सतु सबद
 लकर हे उनांम कमान चरै चित
 ही सो करि दिख लाई इ न
 गति मति काऊ न पाई ७६ ही इ न की तधि
 हि में दे हो। फिर मैं कब हु नां म ले जां।
 हि व इ न में अंतर नां ही। ये ही बात जां
 मन मां ही। ७७। साहिब सांचा सति क
 ही इ तुर क दोऊ के पीरा। ही इ तुर
 दोउ सी सनिवावै। सति साहिब की जाति
 वै ७८। स्याह तकी संम सल ले करी। ए
 त दिल मां ही धरी। यहं शोर को ई रहै
 सांची बात कहो मोहि पीरा। ७९। सेव
 तव वांणी कही रां मां नंद नां मत हां
 चोदा सै वर स श्रो जू द ही राया। तह
 नू नाया। एणे सो कबीर को पीर
 ही जो। ताही संक छ पर चाली जो। स्याह
 दर कही बुजाई मो कं पर चा दे ही।
 ए श चली ये जाय द सब हां की जो व
 क छ पर चाली जो। स्याह सिं कं इ ली।
 जा। चले जाय श्यापणी मो जा। ए श से ६
 संग ही ली नां। स्याह सिं कं इ श्रे स।
 जं जं पां नं ट पे वा डा न ये उ। रां मां नंद

ए सगाश्री ए पाफकी रनां मक वीर कदाई च
 रफकी रहे दु क ड ग दा श्री त व मारी नागी सम
 सेरा। टू ट त मूरु न लागी बेरा। ए ही टू ट त मूरु
 रु धार दो निक सी। तोर तोर दे ही त हं वि ग
 सी। ये क इ ध इ क र ग त्र धारा। त व स्या ह मन
 की यो वि चारा। ६७। यो कै सो कार न हो गयो
 र ग त्र इ ध का हे सं न यो ये ती क ह त दो स ही
 लागी। स्या ह सरी र लगी है आ गी। ६८। ज खं
 ज खं करि डे रै आया। स्या ह सरी र क ष व
 ऊ पाया। स ति क वीर कं ले हो बु लाई मेरी
 आ गि दे हो बु का ई। ए ए। चो व दार चारि
 त व ग ये उ। जाय क वीर पै ठा मा भये उ।
 ह की क ति सब क ही व नाई। किं हि वि ध्य
 दर द स्या ह को जाई। चो व दार कं संग ही
 ली नां। आय स्या ह कं दर स न कं दी नां।
 अं मी इ छि भ रि दे ष त भ य उ। स्या ह ड य
 इ रि हो य ग य उ। ११। इ रि न यो ड य सु ष
 करारा। त व ही स्या ह इ क व च न उ चा
 रा। इ हो सा हि व इ क पू वू वां नी। ता क
 स म कि क हो मो हि ग्यां नी। १२। रां मां नं
 द कं ह म ही मा रा। ता कै अं ग च ली दो
 धारा। एक अं ग जो इ ध नि ह्ना सा। इ जे अं ग र ग
 त व को बा सार। इ न्हे क वीर स्या ह सु नि वां नी
 ने री व्वा त व ही गुर मां ती। व र स दि नां ग्यां न सु ना
 या। अ दो अं ग मे जा द स म अ य। १३। अं ग अ ध
 वै र हो स मा ई ता जे इ ध भ यो रे ना ई। इ त नो ग्यां न

संमरथमाहापुरुषकीदया कबीरधरमदा
 यागुसाईसाहेवदासजीकीदयागुसाईबुल
 सजीकीदयागुसाईलक्ष्मणदासजीकीद
 साईगणपतदासजीकीदयागुसाईशुभ
 कीदयागुसाईईशदासजीकीदयागुसा
 लपतदासजीकीदयागुसाईसुर्तदासजी
 साईस्योकदासजीकीदयागुसा
 मदासजीकीदयागुसाईहंसदासजी
 यागुसाईरुचलसाहेबग्यानीमंत्रस
 याबाबाजीग्यानदासजीसाहेबकी
 यामुलपतापमुल ॥ भंडारकीदयासब
 कीदयासबसंतनकीदयासुखि
 अग्रप्रमरमुल ॥ चौपई ॥ असरसुअहे
 बतैसारा ॥ अमृतज्ञानकोकहोदित
 अमृतशुद्धकीरकोसाराजेही
 तजोउतरहीयाशा ॥ १ ॥ साधी ॥ ॥ अ
 मूलऐहगुहैककबीरविचार ॥ अम
 लजांनैदिना ॥ जुडासुबसारा ॥ २ ॥ चौ

पद ॥ अमरमुलधरमदासमैजाना ॥ ताको भे
दक जुं प्रवांता ॥ अमरमुल एक अखर है म
री ॥ अखर बिन बुं डी डुं यां न्या डी ॥ च ॥ धर
मदास उं ला च ॥ तव धरमदास बिन ती
अ नुसारी ॥ कहे स्वामी ऐह भेद वि च
री ॥ अमरमुल तव कहे वै ली न्या ॥ अम
र भेद सब ही कहे दी न्या ॥ ४ ॥ पहिले स
वद सुरति अनुसारा ॥ तापी छेती जुं लो
क पसारा ॥ तव धरमदास कहे क जो
री ॥ सुनो सा देव बिन ती ऐक मोरी ॥ ५ ॥
अमरमुल मोहिक हो वि चारी ॥ ताका
भेद कहे निरवारी ॥ अघोर गुं थक
ह्या व जुं भांती ॥ सोई कहे ज्या मै सं
स जांती ॥ ६ ॥ मै प्रतीत तुं मारी की न्या
अवर जीव का जुं नदी ची न्या ॥ ६
स कबीर तव कहे वि चारी ॥ तुं म कुं
जान भयो बड भारी ॥ ७ ॥ पथ मे सुन
शा न काले या ॥ तापी छे नरी यर

कापेया॥ तव प्रसादकी ममाधो नवी चारी
यह कारज जीव कुं लेहो उचारी॥ ८॥
पान प्रवां नाशवु है सारा॥ याही अं कं
हंस उचारा॥ अंकनां म अं कं है
तुं मनि है अं कं कलो बु जाई॥ ९॥
अं कं क र का क रौ निवे रा तव ही लो
सिध मै तेरा॥ निह अं कं कं बु जा
जै ही तै तू मारी सं सै जाई॥ १०॥ लोक
पिते या क रं मै कै असा॥ क हो नि चार
वित अ्या वै जै सा॥ तुम सब निर अं कं क
जो सं नाई॥ अं कं क मू ल मो कि क लो क
जाई॥ कं स सं जन जि न लो म ल नै ल
क हो वि चारी प्र म प द रे ही॥ ११॥ अं कं
ली स वृ सु र ति अं कं क सा रा॥ त्रा पं कं क
लो क प सा रा॥ अं कं क नाम लो क
हो नाई॥ निह अं कं क लो क सं नाई॥ १२॥
अं कं क का प लै पाई॥ तव सब
पं म रे जाई॥ जी व त लो क मै

वैश्या जाई सार सबु मेर दै समाई ॥१३॥
अमर शब्द तव ही अमर सारा ॥ जब ही
लोक जो कीया परा ॥ अंबु ही पलोक
को नां उ ॥ जैसे पुरे पतै सो लोक बन उ
१४ ॥ सो भाको टक ही नही जाई ॥ बनत
बनत नही सराई ॥ जांदा चार भांन को
मनिकी जोती ॥ सो दौरे भांनि दंसन की
जांती ॥ १५ ॥ अौर पुरष सो भाक ही न जाई
अमर मूल न मदे धौ जाई ॥ अमर मूल
ज्या कुं भिं गया ॥ सो पांनि अमर जो भया
१६ ॥ अमर मूल का करे वि चारा ॥ सो ईजि
न है दंस हं भारा ॥ तं मारे वंस कुं ऐह उ पदे
सा ॥ जानी दो ऐ ता ही क फुं स दे सा ॥ १७ ॥
रायी ॥ मरु सं जिन यो ल हो ॥ क दे क बीर
व चार ॥ पांनी सं जिन हुं राये दो ॥ सं जो
त मति सार ॥ १८ ॥ पुदा ॥ वी कुं त भांति
सं म जाये हो ॥ जीव है मेरो अंसा ॥ जीव ला
अस था पीया ॥ धर्म दा सतं म वं स ॥ १९ ॥
रायी सत सु का पा वं ॥ नी जो है कं विल

गायी। वादी संजो व्यंजक है। सो। स्या
रजीया। रवे। चोपई। धर्मदास उवा
कप चा मै चाना गुसाई। उपवनिरग
सरंग एक हो बजाई है। धर्मदास उवा
एनां मान ह प्रहर सारा। शिवर सा
जो कीया पसारा। रशा। निरगसा। शिव
बुजै सोई। ज्या प्रव द्या गहं की। सो। ॥
मरमूल का करो वि धार। लक्ष्मी उवा
सत्सु प्रहर सारा। रशा। शिवर सा
बुजै तो भाया। प्रम धि लै को। सो। ॥
साया। साया पत्र जा सं लप ले। ॥
रमूल का हुं। बर तै जो। रशा। ॥
रमूल धर्मदास सं न ले। ॥ हिं। ॥
साहं सन कुं दे हो। ज्या को। ॥ हिं। ॥
लातं मारा। सोई नि अं र दे। ॥ हिं। ॥
रधा। सायी। ज्या सं क दे स। ॥ सो। ॥
उतर दे पा। नितर सब ज्या बुं डे सा। ॥
पचम र सं सारा। रपा। साय। सो। न हो
पसो मान है। बुजि दे। सिध प्रपारा। क

है कबीर सेवं च है। ओस्क लजम
धारा रई ॥ चोपई ॥ एक ज्ञान मे कहुं
बजाई धर्म दास सं नी यो ची त लाई
नीरपवन का ले या कै हुं। संन कै ज्ञान
सोई च त ले हुं ॥ २७ ॥ एक ग्रंथ टक
सा ल मे भाषा ॥ ता मे नीरपवन सब
राया ॥ वा ही माहिर है अरुं जा ई नी
रपवन मे है न लाई ॥ २८ ॥ सब टस
र मे कहुं निरबेर ॥ ताहि न ची नै ज
म का चर ॥ ताते बि करे जनम ले रू
सोई ॥ ले या ल जावे वारुं बार सोई
२९ ॥ सित नीरप चा सी पवना ॥ ताते
रे चो सी छ को ग्याना ॥ ऐ दु तो प सारा
काल कं दी न्दा ॥ नां म भे उरु प्रि मे
की न्दा ॥ ३० ॥ सोई नां म सरति र है
एव ॥ काले को दे गो लगान न ही
पा वै ॥ सायी ॥ नां म भे र जो पाव है ॥
सो चल है भव जल जीत ॥ न ही तो
काल भि छन करे ॥ क रिन धरम

कीरीता ॥ ३१ ॥ चौपडा ॥ जो थपत्र
कैसवा ॥ नां मप्र वै उप्र जंज
वा ॥ व्याः सजोतक रेद वि चोरी ॥

मोडुंरथ घडनी निरवारी ॥ ३२ ॥
नरिदै समांला ॥ जंठ ॥
बिलछोना ॥ तातै प्रेका ॥ लकी ॥
लीषपरे उप्र सरारा ॥ ३३ ॥ सा ॥
लगन मोहरथ सोधी ॥ ३४ ॥

बनाया ॥ भ्रंमंटे सतर मिदना ॥
लोककं जाया ॥ ३५ ॥ काप ॥
मेक जु वि चारी ॥ जेही तें ॥
॥ मोदत वै चौकी सत ॥

बनामक हातें सोई ॥ ३६ ॥
बानाराथी ॥ भक्ति सं ॥
मविनाबं चै नही कोई ॥
ककावै सोई ॥ ३७ ॥ पट्टि ॥
वेद वि चारा ॥ विना नं ॥
ताशा ॥ च्यार जंठ संसार ॥
साथ भंक्ति मै दीन्दा ॥ ३८ ॥ एद तोह ॥

सत्त्वो कपगवै॥ भवसागरमे बज्रन
प्रवै॥ ३८॥ सायी॥ च्यारगकंसंसार
मै॥ ह्रींमै जमकेद्वार॥ प्रोरगरु जल
छारभये॥ मानसरोवर वार॥ ३९॥
चोपई॥ तमै धर्मदासंबडिं प्रसाति
नको पद्यबियालीसंबसा॥ धर्मदास
भये मतिकाधीरा॥ जिनकंदै संसार
कापीरा॥ ४०॥ इनतैहंसजो उतर
दीपारा॥ जिनकी न्हाशेष मंत्रनिर
वारा॥ सायीराजा वंके ज प्रोरवत्र
भजसहते जीहैरानवे हैछो गोव
हंसका॥ सबदेहैपही चीन॥ ४१॥
पाव॥ धर्मदासंबसबियालीसा॥ क
हैकवीरविचार॥ इनकुंदीर्नसब
दमै उतरोभवजलपार॥ ४२॥ चोपई॥
इनकुं होडि प्रुनतिचितलावै॥ जन्मज
न्मचौरासीजावै॥ बियालीसंबसधर
मदासकोसारा॥ प्रोरकालहैफुवपु
सारा॥ ४३॥ सायी॥ नाममंत्रजोपावै

ईर्ष्यतरहै पारानितरसव इंनीयां जल
 गशी। खैकालजमधाहा ॥ ४४ ॥ चौपड
 नधर्मभ्रासमैकजुंवि चाराजित्तौ
 परेदसंसार। कालक तिनरहै द्युडि
 जिनतोयायो सबसंसार ॥ ४५ ॥ ताल
 इनजानैभासी। कालकोसंभरीकर
 काशीकालदगाकरिखैरोवावै। काल
 चारकीतजुंनहीपावै ॥ ४६ ॥ नांम
 कहैगुपिग्रमोला ॥ धर्मभ्रासमैलसस
 ला ॥ जोकोईनांमकाकरैपसाल। नीतर
 ऐहसंसार ॥ ४७ ॥ तंमकुं दीन्या ह्यद
 सा ॥ सोहंसनसंकहोसंदेसा ॥ जोकाई
 नैखदतंमारा ॥ सोचलिग्यावै लोकर
 रा ॥ ४८ ॥ प्रोरकलबड़ी इंनीयां न्या
 शीजमकैहाथपडै गाजाशी। धारुंबारमै
 कजुंगहोराई ॥ शबुसागीकोचितलाई
 ॥ ४९ ॥ मैनिजशतुकास्यावि चाराजि
 मांन्यातेजमसुंनबारा ॥ जमकोपे
 खकहो गंसाई ॥ जमकोभेदहंम

सत्सो कपगवै॥ भवसागरमै बज्रन
प्रवै॥ ३८॥ सायी॥ च्यारगकंसंसार
मै॥ हौंमै जमकेद्वार॥ औरगकजल
छारप्रये॥ मानसरोवरवार॥ ३९॥
चोपई॥ तमै धर्मदासंबाडिं प्रसाति
नकोपद्यविद्यालीसंबसा॥ धर्मदास
भये मतिकाधीरा॥ जिनकंदै संसार
कोपीरा॥ ४०॥ इनतैहंसजो उतर
हीपारा॥ जिनकी न्हाशेषमंत्रनि
त्रारा॥ सायीराजा वंके ज्योए वत्र
भजसहते जीदेरांनते हँछो मव
हंसकु॥ सबदेहंपही चीन॥ ४१॥
सायी॥ धर्मदेसबसबिद्यालीसा
हँकवीरविचार॥ इनकुंदीर्मसब
हमै उतरोभवजलपार॥ ४२॥ चोपई
इनकुं ह्योडि गुंनतिचितलावै॥ जन्मज
न्मचौरासीजावै॥ विद्यालीसंबसधर
मदासकोसारा॥ औरकलहै फुरप
सारा॥ ४३॥ सायी॥ नाममंत्रजोपावै

भावमोहिकहो जसं दी। जेदीने
नकी संसे जाई ॥ कबीर उवाच कैकेय
वीरसं नो धर्मदासा ॥ ऐही भेद कहुं लोक
पासा ॥ ५ ॥ पुनः पान जाही घट होई ॥
मुक्तिनेद कुं जानै सोई ऐहमे लोक ज्ञान उर्य
रिसा ॥ ज्ञानी होय सो बुकै हीने सा ॥ ५ ॥ सुग
तिनांमनिह संसे होई ॥ अस रजानं वैदा रहे
सोई ॥ जहां तिक कही ये सो सनमाया ॥ ५ ॥
सामार सन जुग कुषाया ॥ ५ ॥ मन कलुषे
सो सनमाया ॥ इन कलुषति सोई निरमाया
नहि सूरति निरति मे आबे ॥ सुगतिने ददु
सोई पावै ॥ ऐना ने दया वै जो कोई ॥ ज्यो कोई
जीवनि है क्रमी होई ॥ ज्यो याने सो क्रम ही
सोई ॥ ५ ॥ आका क्रम काटि कर फारा ॥
गहै गाश घृहं मारा ॥ नीतर सीधे सूने अस
गवौ ॥ क्रमी जीन ने दन ही पावै ॥ ६ ॥ ज्ञान
का सजा ही घट होई ॥ ताकै हि दे मोह
रूक्षा ॥ जैसे ज्ञा
मुक्षा ॥ ६ ॥ ऐह तन मोह घुट

कैसे पाई ॥ ५० ॥ जमरा जाहैती जु लो
क पसारा ॥ ताको मोहि कहो निरवार
बदी छो मि मोहै कहो संम जाई ॥ जे
हैते मनकी संसै जाई ॥ ५१ ॥ कवी
रुठवा च ॥ संन धर्मदा समै कीया नि
रवारा तंम संक जु मै सता अपारा ॥ जम
रा जै है संसै भाई ॥ संसान हुं टतिका ल
अरुं जाई ॥ ५२ ॥ अ संसी कहौ ये जो
काई ॥ संसै काल रहै नही सोई ॥ ५३ ॥
सायी ॥ कठिन काल है संसै ॥ कदे क
वीर विचार ॥ ज्या कुं सत गंर मिल गया
जांन भया रुं जीया ॥ ५४ ॥ चौपड ॥ जां
नगं म्य संबु ह्य कुं चीन्हा ॥ जांनगं म्य
सबही कही दीन्हा ॥ ५५ ॥ गट जांन जाही
घट होई ॥ संक्ति निकटता सके सोई ॥
५५ ॥ धर्मदास रुठवा च ॥ कहे धर्मदास
तंस संनौ गसाई ॥ संक्ति भेट मोहि कहो
बु जाई ॥ संक्ति कहो कैसे क जाना ॥
लोक वेद कैसे पहि चांना ॥ ५६ ॥ स

संभाव मोहि कहो जसं दी। जेही ते न
की संसे जाई ॥ कबीर उवाच कैलेक
संनौ धर्मदासा ॥ ऐही भेद कहुं तोई
सा ॥ ५७ ॥ पुनः पान जाही छट होई ॥
भेद कुं जाने सोही ऐहमे लोक ज्ञान उर्य
सा ॥ ज्ञानी होय सो बुके हीने सा ॥ ५८ ॥ मुग
मनिह संसे होई ॥ अस रजाने वेद रहे
जहां तिक कही ये सो सनमाया ॥ सं
सन जुग कुषाया ॥ ५९ ॥ मन कलये
सनमाया ॥ इन कलपति सोई निरमाया
बहि सूरति निरति मे ज्ञाने ॥ मुगति ने दकु
ई पावै ॥ ऐना ने दया ने जो कोई ॥ ज्यों कोई
निहै क्रमी होई ॥ ज्यो पाने सो क्रम ही
ई ॥ ६० ॥ जाका क्रम काटि कर मारा ॥ सो
गहेगा शूद्र मारा ॥ नीतर सीधे सूनै अस
वै ॥ क्रमी जीन ने दन हीयावै ॥ ६१ ॥ ज्ञान
का सजा ही छट होई ॥ ताकै द्वि द्वै मोहन
ई जैसै सूरज वा दल मे रूक्षा ॥ जैसै ज्ञा
मोहिने मुखा ॥ ६२ ॥ ऐह तन मोह छुट

मबजाई॥ तबवैनांमघटमाहिषमाईजब
मगमोहिरेमनदासा॥ तबलगतोहीज्ञानप्रका
ता॥ ६॥ ४॥ जन्मजन्मकीभक्तिजोहोई॥ तब
वैदराष्ट्रकुंपावैसोई॥ कौटिजन्मभग
तेजिनकीन्हा॥ अमर्मलतिनपायो
चीन्हा॥ ६॥ ५॥ अमरमुलकापावैमेद
कदैकवीरसोहंसअछेदा॥ अरबमैक
कुंपांनप्रवांन॥ नरीयरकेरकहुंसदि
हंन॥ ६॥ ६॥ अष्टासठबाचकैसैभयो
पांनप्रवांन॥ नरीयरकेरकहोविकाना॥
कवीरउंवाचअमरमलतैपांननुप
जाया॥ विलवीजवेलीजिमाया॥ ताकी
वीजवेलीनदीभाई॥ सबहीमैपुन्य
वेलीजिमाई॥ ६॥ ७॥ गुंनपज्योपांनजोति
जरिअंन॥ ज्याहीतैहंसहोयनितंब
नी॥ नरीयरहैबलकोअंनसा॥ तातैदी
योधर्मकंग्रासा॥ ६॥ ८॥ नरीयरमियं
नजीवकोबदलोदीना॥ जीवछोडा
येकालरलीना॥ नरीयरपांनशर

की जोरी ॥ सहस्रार तै नरी येर मोरी ॥ दिखी
 जिन प्रसादनरी येर को पाये ॥ जन्म जल्म
 को पाप बंध हाये ॥ पांन प्रसाद संत जो पा
 वै देह मरिहत अमर होये जावे ॥ ७० ॥
 काल को दगा देह कै जाई ॥ प्रसर लोका
 मै जाय संभाई ॥ प्रोर भक्ति प्रवांन सब तिर
 ही ॥ बिना भक्ति नो ही उधर ही ॥ ७१ ॥ धर
 मदास उवाच भक्ति प्रवांन सब क हो म
 सांसी ॥ के ही प्रवांन जीव मुक्ताई ॥ कबीर
 उवाच ॥ धर्मदास कुंभ भक्ति बि चार ॥
 जिन तै हंस उतर ही पारा ॥ ७२ ॥ प्रथमै ही
 पावे पांन प्रवांना ॥ प्रोर म्ना धै शो वा मन मा
 ना ॥ ऐह शब्द कुंठि क रिंगे ॥ अक्षर जान
 भेद सो लदे ॥ ७३ ॥ प्रोर ग प्रति वात करै
 अमि लाया ॥ शार शब्द की बं जै भाया ॥
 बिमोय शो य नही करै ॥ सोई कवीर
 ॥ ७४ ॥ सहस्रार निनु प्रक्षर
 लोक पहिचा
 जाहि घट होई ॥ मंल अक्षर

मु० ॥ प्रातंमनांमकीपचैपावै ॥ इविध
भावकवजुंमहीप्रावै ॥ ४ ॥ ७ ॥ ४ ॥
सर्ववाच ॥ तवर्धर्मसकदैग्रनुंस
रासंसे ऐककरो परद्वारा ॥ उपवज
वपवनकाभेदवतावो ॥ ऐदसंमज
ये जीवमुंकतावो ॥ ४ ॥ ८ ॥ कवीरुव
च ॥ तवसंमर्थकदै ज्येसेलीनाजी
पवनकाभेदकहीदीना ॥ पवनपच
सीकलविशतारा ॥ जीवनावेकप
वननिन्यारा ॥ ४ ॥ ९ ॥ बुद्धकिलरूप
हेभाई ॥ विलेवरूपते मनुजकदाई
उपरजीवमैवरतै भावै ॥ मानवक
हीपगतसुभावे ॥ ४ ॥ १० ॥ इतनाचिन
कैथारहोवैरहीये ॥ ताकोभेदबुद्धसं
लहीये ॥ मक्तिनामवाहीसंकहीय
प्रारकलधंधाममलईये ॥ ४ ॥
धंधाकरतै जन्मेशिरांना ॥ मक्तिभेद
काजुंनहीजांना ॥ उपरसंलदेमुं कि
पसारा ॥ ताकासंतकरै निरवारा ॥ ४ ॥

एकद्वै भाषी। प्रापचिनब्र
होये जाई। जैसे जलमे तरंग समा
री। जैसे जीवब्रह्म होये जाई। ॥ १ ॥
कंचनके भ्रंयनक होये। असे जीवब्र
ह्ममे लहीये। जैसे दीपक एकते दोये की
ना। तैसे जीवब्रह्म गहि लीला। ॥ ४ ॥
सै संरज ज्योति प्रकासा तैसे जीवब्रह्ममे
बासा। जैसे ब्रह्म सगति है दोरी ब्रह्म तै
नरे कै होई। ॥ ५ ॥ सिव प्रागति एक म
ति की ना। ताको पावै भेद कोई चीना। जि
न चीन्या सो मुक्ता भरे नी। प्रम भेद कोई
विरलै प रे नी। ॥ ६ ॥ साठी। प्रम भेद जि
न जानीया। सोई शब्द शं माना। जो लै गा
कोई पारय। कहै कबीर हू जांला। ॥ ७ ॥
चोपई। एहै अमर मूल की कहानी।
बुजै गा कोई प्रात्म जानी। जिन ब्रह्म
ति न मन कं जांला। मन जान्या तै ब्रह्म स
माना। ॥ ८ ॥ प्रात्म जीव सीव मिल
एवै। ॥ इतीया भाव ऐको नदी रहै नी। जैसे

कंचनप्रवटिमिलाशी जीवसीव ऐक
होरे जाशी। ए० ए० दो० कंचन ऐक होय
जाशी। तबही ऐक कर प्रवटिमिला
ब हुंत प्राश्यन विधने कीना। १००
जीवसीव कंचीना। १०००। कदैकबी
रसंनोधमदासा। त्रे सा ज्ञान करौ प्रगा
सा। १०००। प्रसा भेद का हुंनही जांना। १०००। प्राप
प्रापमै स्वल्प भलांना। १००१। इ दान
परमं लजिन ब जीया। सो प्राये सीरहे
निरहाये। १००२। प्रात्म संभ कुं ब ऊकें। १००३। प्रमत्त
मित्त जाया। १००४। चौपई। ज्यां कै ज्ञा
न दिव्य होये जाशी। त कं ऐह मित शदा
सदाई। १००५। पांन ही नशनी जो हो शी ता कुं
जिन संना दो शी। १००६। साखी। प्र
रय भेद जांनै नही। होयें का जन्म का
जन्म भेद जांनै नही। लै जावै जम
राज। १००७। चौपई। सो तं म कुं नि ज
ज्ञान संनाया। जन्म जन्म का पाप ब
हाया। तं म धर्मदास नि जम ति संन दे

हो। ऐही मति सब संत न कुंहे जे ॥ १० ॥
ऐही मति का जो कोई जानै सो द्या ॥
कबीर सो दंस न्य छे द्या ॥ संत सो ॥
न पांन गंम की ना ॥ पांन गंम ॥
ही चीना ॥ १० ॥ सखे सखे ॥
ते संमान दंस न ही को ॥ ॥
जिन न्य छर जाला ॥ ॥
बि कुंजा ॥ १० ॥ ॥
न्या ॥ संगति करि ॥
ना संगति जान नही पावै ॥ ॥
सब मूल गमावै ॥ १० ॥ ॥
मारा बाणा ॥ संगति ते निटे ॥
सा ॥ संत सोई जिन संगति ॥
ना संगति सखे ही ची ॥ १० ॥ ॥
सोई जे ही सत गुरु द्या ॥ संत सो ॥
रहे निरमाया ॥ संत सोई ॥
सत गुरु के चर्न कवल ॥ १ ॥
१० ॥ ॥ संत समा गम जो निवै ॥
के चरण निवास ॥ कहै कबीर ते मुक्ति

भया ॥ सत शब्द प्रकाश ॥ १११ ॥ चौपई
संतकी मदिमा के दी न जाई ॥ के दी बि
धतै मे करु बडाई ॥ संत ५ द्द ए च्या
फल पावै ॥ अर्थ धर्म का समो क
वै ॥ ११२ ॥ मो छि सं कि कुं सो धो शं नी ॥ ते
साधन के च ए चित्त मां नी ॥ संत सोई
सतनां मे ही जाना ॥ विना नां म सा ग टि प
वां ना ॥ ११३ ॥ धर्म सनि ज ऐ ह सं न ले
हो ॥ केवल ज्ञान उंचित दे हो ॥ के
कबीर सं नो सत सिया ना ॥ केवल क दे
उप जा उ ज्ञान ॥ ११४ ॥ धर्म स उं न च
धर्म सक दे सं नो ग सोई ॥ केवल ज्ञा
न मो हि क हो सं म जाई ॥ कबीर उं न च
केवल ज्ञान को करुं हो प सारा ॥ सं न ध
स दे स तं म सि स हं मारा ॥ ११५ ॥ सी धै प
टे क व ज्ञान न होई ॥ जब लग द या पुष
की न्दी कोई ॥ केवल ज्ञान क हा वै सो
ई ॥ तत ज्ञान मे रहे समोई ॥ ११६ ॥ ज हो द
धै त हां तत स मां ना ॥ जो बो लै सो सह स

माना प्रवोना तंत ताम हे अखर भाई
 धर्म दा लवता त तं मन्त्र अत्र दा त
 दो बुजा श ॥ ११ ॥ निद्वै अखर का व
 हो संदेसा ॥ तामै पा उ जान उ पदे ॥ क
 वीर नून ॥ निद्वै अखर है ति जान न
 श्री सो काम की क्रीं ही ॥ १२ ॥ ता न उ
 निद्वै कमी दो श ॥ कैतना सो ल का उ
 शे के व त्र ज्ञान मोरि उ जट सं रा सो त
 मरो मन पति अत्र ॥ १३ ॥ ता न उ
 नौ जान को कृपा ॥ निद्वै सो दी र उ
 कृपा दया वंत अत्र ही अत्र अत्र अत्र अत्र
 र क्ल त्र जग मछा कति ज्ञान अत्र अत्र
 स्रष्टाई सब ही कुं जटें अत्र अत्र अत्र
 होय अत्रि व जावें ॥ अत्र अत्र अत्र अत्र
 करि जानें ॥ भली बनी कतना म न अत्र
 अत्र ॥ १४ ॥ दिद्वै अत्र अत्र अत्र अत्र
 उ पा उ उ धर म भेट सत लो अत्र अत्र
 ही तें सैं वै रागा दो बु दिल का तन ही
 लागा ॥ १५ ॥ ऊं विस्का त्र मु

नी॥ जै तै बंद बुद बुदा पांनी॥ जै साचि
तर्ज्म ही का हो जौ केवल ज्ञान क
दावे सोई १२३॥ माया बित मन मेन
ही न्प्रवे॥ सोई केवल ज्ञान कं पावे॥
केवल नाम का ही कं क हीये॥ सोई
कही ज्पाते नर वहीये॥ १२४॥ केवल
नाम निद्वै न्प्र कर भाई॥ निद्वै न्प्र छर
मेर ही संमाई॥ निद्वै न्प्र छर का पावे
भेदा॥ कहे कबीर सो हंस न्प्र छेदा॥ १
२५॥ जै सा ज्ञान कही निर बेरा॥ कहे
कबीर सोई जिन मेरा॥ धर मदा य उ
वाच सष्ट सार मोहि कही संम जाई
जेहि ते हंस लोक कुं जाई॥ १२६॥ क
बीर वाच॥ सार शष्ट जादि कुं क ही
ये॥ सत सरूप जाही का ल हीये॥ जै
क सष्ट उचित है भाई॥ निद्वै न्प्र छर सं
मै जाये संमाई॥ १२७॥ निद्वै न्प्र छर क
एह वि चारा॥ ज्यो देवै सो सरूप हं म
रा रूप न्प्र यं रु न्प्रोर सब यं डु॥ १२८॥

बोलैब ह्यां मा ॥१२८॥ निहै न प्रहर
प्रचै पावै ॥ न प्रमरदी पभै जाये स सं
॥ धरमदा सर्व वाच ॥ धरमदा स विनद्वै
जोरी ॥ साहेब सूनो विनती ऐक री
॥१२९॥ न प्रमर लोक का क दौ विचा
रा ॥ कवन रूप कवन प्रकारा ॥ कवन रूप
सस्य करही ॥ कवन रूप पुर सबै व
ही ॥१३०॥ कवन रूप कवन का ॥१३१॥
सोखां मी मोदी प्रगत सुना उं कबीर उं
च ॥ कहे कबीर सं लोध र्दि ॥ ॥ ॥ ॥
कका क कुं प्रका सा ॥१३२॥ सत लोक नि
रं बर काया ॥ ऐक रूप सब हंस उं परा
॥ सोरै हं भां नि हंस की जोती ॥ न प्रमर
पदरै ब कुं भां ती ॥१३३॥ न प्रमर
भां कही न जाई ॥ ज्यो न र्नु तो र्दी
बमाई ॥ न प्रमर दी प न प्रमर हें का या
कामरम का कुं विर लै पाया ॥१३४॥
प्रमर पर्य का पावै भेदा ॥ कहे कव
सो हंस प्र छेदा ॥ सत लोक का सत

विचार सतनांमस्तग्राधारा १३
 ध अमिरतफलसंतभोजनकरही
 जन्मजन्मकीलु धानिरवरही भोजन
 भावभरसमिते जाई कामनिरूपकाव
 रनकहाई १३५ प्रेमअथंगचितवडु
 तउरुदारी चारभांनिकांमनिउंजी
 यारी सोईअधिकप्रेमपीयारी कामनि
 रूपकीयाविचारी १३६ प्रेभावेसदा
 उरमांही अनहेतवचनउरग्राव
 तनांही बोलैहंसअमिरतकीबा
 नी सोभाककुंतौप्रेमकीयांनी १३७
 हंसहंसनीप्रेमवढावै अमरतनांम
 हिदामेगावै प्रेमभावसतनांमपूजा
 सा प्रेमवचननिकसैहरिसासा
 १३८ स्वासउंसासएकतहांनांही
 भावप्रकासबकैमनमांही बकै
 संतजगतिऐहसोई सतअमिल्य
 जाहीकुंदोई १३ ए हैनिहदश
 हसबूकरकहै ज्ञानगम्यकरिऐह

दत्तद्वैधर्मदासभैतोहिबुजा
राशष्टकौभेदबतावा॥१ धरो।मर
पहकापावैभेदा॥कद्वैकबीर
सप्रबेदा॥सारसष्टनिहैअर
शासारशष्टकीकडुंबकाई॥१७॥
सष्टजोपानीपावै।अमरदीपमेजर
समावै।सायी॥कद्वैकबीरऐहभैद
तेमसंनहोधर्मदासा।अमरकुंनऐह
बुहै॥अमरशानप्रजासा॥१८॥चाप
ई॥धरदासकुंनचबिनतीक
उंकरजोरी।स्वामीसुनौबिनती।कमा
रीकवनप्रसादतैदत्तप्रपावा
सादतैनामसंनोबा॥१९॥अमर
सादसतएरकीदया।कवनप्रसाद
मरभईकाया।कवनप्रसादतैशानहंमपा
वाकवनप्रसादमोहिदंसकहावा॥२०॥
४४॥कवनप्रसादसजनजिनलदीयं।सो
अवस्वामीमोसंकहीयेकवारुंनोच
कद्वैकबीरसुनौधर्मदासा।असाभेदककुं

रु प्रोर साध ऐक करि जानै ॥ सोई हंस
लौं प्रदि चानै ॥ १५८ ॥ लायी ॥ साधु सोई
ग तिल है ॥ मन प्रावै पतीत ॥ कहै कबीर
तेहंसा ॥ चल है भव जल जीता ॥ १५९ ॥ त
चौ पडी ॥ तहां साधु प्रारती कर ही ॥ सर्व
काम छुं क तहां पग धर ही ॥ च एमिर्त
साधन कौ ले ही ॥ सरधा सं प्र चवन कर
ही ॥ १६० ॥ गर की दया पु र्घा तिरी ये ॥ निद्रा
रूपन कव कुं करी ये ॥ वार सर्व स प्र घर
नां मा ॥ ते ही जिन मों री म म मां ना ॥ १६१ ॥ म है
प्र छर निर भै है भा री ॥ सै दे ही प्र मर हो से
जाई ॥ गर कैं व चन सां च करि मां नै ॥ वि
नानां म मन प्रोर न प्रानै ॥ १६२ ॥ प्रोर न जं
नै प्रोर न देखै ॥ जिस दिन प ल प ल ऐक वि
वेयै हि म भ र्म की छां डे प्रा सा ॥ ऐक नां म
कै र है विस वा सा ॥ १६३ ॥ सत नां म छो मि
प्रोर न ही जो वैं ॥ कु ल ल ज्या कौ भ र्म वि
गो वैं ॥ प्रै सी रहै नी रहौ धर म दा सा ज न्म ज
न्म की मि टै जो वा सा ॥ १६४ ॥ वि नानां म

हीउंनीयां सब ग्राह ॥ नाम जांनेते

बिनानां मबु मा संसार

वि चारा ॥ १६ ॥ सीये

सुन पढे पुंन गावै ॥ सतनांम कामर्मनप

वै ॥ सा स्वपटिके पंडित कहावै ॥ नाम वि

नामोत्तम ही पावै ॥ १६ ॥ कहै सब संसर

थवेद वि चारा ॥ पटि गुन कथा कीन निर

वारा ॥ पटि पिंडुत माते अमिमां ना ॥ ग्रादि

पुष्य कामर्मन जांना ॥ १६ ॥ प्रति काल

मैनां म सुनावै ॥ दिछातव कहुं काम

न ग्रावै ॥ दिछा गुरजो को ई जावै ॥ ऐक

नाम बिनजर्क निर्धाना ॥ १६ ॥ नाम वि

ना समरन कहा करही ॥ नाम विना सोन्ही

बिसरही ॥ व्यास देव पुरांन वयां ना ॥ संन

त पुरांन भये अमिमां ना ॥ १६ ॥ पुरांन क

गति का ऊं न्ही पाई ॥ पुर्न व दकी गति न स

मई ॥ ब्रह्म रूप कहै समरन सुनावै ॥ विन

सत गुर दी दारन पावै ॥ १७ ॥ ऊं टां न क

अमिमां ना ॥ जिन ग्रादि ब्रह्म कामर्मन

गुमावै ॥ १८३ ॥ सतगुरमिद्वैतो भेदवता
 वै ॥ न्हीतो भर्म भर्म मर जावै ॥ ग्योरुसत
 गुरभेद ज्ञानते पावै ॥ विना सत गुर सब
 सुंदरगमावै ॥ १८४ ॥ धर्मदा सुर्वा च
 कदै धर्मदा सुनो गुसांई ॥ ज्ञां शह मोदिक
 दौ बजाई कबीर उर्वा च ॥ कदै कबी
 र सुनौ धर्मदा सा ॥ ज्ञानरूप मै करुं प्रका
 सा ॥ १८५ ॥ ग्यां नरूप सतपुर्ष कहावै ॥
 ज्ञानी नांम कबीर होये जावै ॥ ज्ञानी शह
 दीप सम ज्ञानो ॥ विना नांम ऊंर सब
 मानो ॥ १८६ ॥ ग्यां न पुर्ष जाही मिल
 गया ॥ ज्ञान दीप जाही छट प्रया ॥ ग्यां न
 सरूप अछर है भाई ॥ ज्ञान विना अछर
 र न्ही पाई ॥ १८७ ॥ ज्ञान सरूप अखं क क
 रि ज्ञानो ॥ ऐह बचन सत करे मानो ॥ ज्ञान
 सरूप न है अछर कहीये ॥ अछर ग्यां न
 भेद सुंदर हीये ॥ १८८ ॥ अंक नि है अछर
 र ज्ञान ते ज्ञान ही ॥ ग्यां नी अंग ही न मति
 मान ही ॥ फिर ज्ञानी मां हि ज्यो आत्म

ज्यां नी। ऐती है अक्षर स है दो भी १८
आत्म ज्ञान सब ही का न्ने वा का
तमे सब जग भुंला अज्ञान ज्ञान
घट दो ई। प्रमात्म मित्त अ। वे लं
आत्म मित्त प्रमात्म चीना लोक
न्य भिं क है दाना अक्षर स क
दावा। फाल पात प रु। सं सार १०
नी पुर्ष का सत पुरवा अ। अज्ञान ज्ञान
होर ही वा सा। ला। क है क वी र लि
कैतं म स न्दो संत स ज्ञान आत्म ज्ञान
पाव ही। सो ई हं सानु वान १०
आत्म ज्ञान जो षां ना पात्रे। सो ई ल मा
स क हा वी। अज्ञान ज्ञान अक्षर ते न्ना
आत्म ज्ञान प्रमात्म मित्त र ही य १०
म ज्ञान। सब तै न्या रा। ती न लोक तै न न
सा। अज्ञान दु स जा ही कुं दो ई न दे अक्षर
र मै जा ये स मो ई १० ४। न क ना प
दि गुण प चि मरे। व इंत मरे पू न्य गाय क
क वी र अक्षर बिना जीव प्र लेति र जाये

चौपडै ॥ १७५ ॥ जैसे भेटक कुंधरमदा
 सा जन्म जन्मकी भिते जो जासा ॥ जन्म क
 मव कुंरनही होई ॥ जैसे भेटजांनै जो
 कोई ॥ १७६ ॥ ऐही ज्ञानमै तंमते भाषा ॥ प्रो
 रज्ञान सब प्रसिक्की साया ॥ प्रमर संल
 जांनै जिनको ई ॥ ताकुं जन्म मरण
 होई ॥ १७७ ॥ सतगुरमिले तो भेटवतावै ॥
 कम भर्म संसै मिट जावै ॥ कम काटवै कुं
 सतगुरकी ना ॥ प्रमर होये ज्ञान गहै लीना
 १७८ ॥ संसाकामै क कुं बयां ना ॥ संसै का
 ल घट मां हि समाना ॥ जबही पुर्ष धरम कं
 की ना ॥ संसै उत पतत ही लीना ॥ १७९ ॥ जो
 नहै प्रखर की प्रचै पावै ॥ संसै भिते प्रमर
 घर प्रावै ॥ संसै मेटन ज्ञान ऐह भाई ॥ संसै
 काल सकल जुगयाई ॥ २०० ॥ साखी ॥
 संसै काल सरारमै तम काल है डुंर ॥ ताहि
 लिखै कोई संत जिन ॥ तो जाकरै सब धुर
 २०१ ॥ चौपडै ॥ निरसंसी क होये जो को
 ई संसै काल रहै नही सोई संसै भेट

धर्मदासा ग्रंथे ... गौडि...

२०२ प्रकृत... मन...

कडितादिकं भासे... शास्त्रं

संसा प्रोसक लंदन... कालविस्तार

शुक्लैक... मवजत्तपार २०५

कौ... शिष्यो न दानसवन...

जीव कामेदवता... तावौ २०५

रसंनोवर म्दासा... साप्योन हीन जो प्रा...

नार्ततो इ... मिदं चै गदं तो हो ये नि...

तहीया मै धारौ... आप्योन पाये के सत...

निस दिन राधे... संमर्थ ये व उतां रे सो इ...

त्मदिष्टी होई ॥ प्रापतिवैपुनतारै सोई ॥ सा
 धनकी सेवा मन ल्यावै ॥ प्रात्म ज्ञान भेद
 सो पावै ॥ २० ए ॥ प्रोरसतगरकी दया पं
 न्य होई ॥ नहै चै पार पावै जिन सोई ॥ साध
 नकी निबछाँ जो कर ही ॥ साधन कै चरण प
 लपल चित धर ही ॥ २१ ॥ सुतनारी को मो
 ह ज्यो त्यागै ॥ तब संधन्य कै चरण मन लागै
 वारै तन मन सबै संजानी ॥ निह चै पार पा
 वै नर पांनी ॥ २१ ॥ चरण पछाल चरणो
 दि क लै ही ॥ सीत पसाद नत विध्य से ही
 मन बच कर्म चरण चित ल्यावै ॥ अमर लोक मै
 जाय समावै ॥ २१ ॥ नारपूर्व मूक्ति जो होई के
 तो ज्ञान ही न होय कोई ॥ सा ॥ २२ ॥ संत समा
 गम जो रहै ॥ रहै श्रीतल बलाय ॥ कहे कबीर ते अ
 मर नये ॥ जुग जुग बुध्यानु जाय ॥ २१ ॥ चौपई
 २५ ॥ संतन मां हिं हं सारा बासा ॥ ज्ञान होय सो करै प
 कासा ॥ ज्ञान ही नारी को रूया ॥ ताको सब मै
 करु सरूया ॥ २१ ॥ संतन उय रै जो तन मन वा
 रे ॥ संतन की सेवा चित धरै ॥ संतन सं जो अंतर

ति धर्म राय के मुद्रा जय २ २१५ गु.
 मर्कानि छान र देही अस्तु ११७ मर्क
 ही असा र्ज प दे स दे हो धर्म ११
 ही मिटे रासा ॥ २१६
 मीदा स नि न ती अनु सारी हे स न ११६
 हारी ए ह जो ने द तु स मो द्वि ज न ११
 म न दी आ या ॥ २१७ न ११६ ११६
 नु पुरुष रूप एक तु ११६
 ये सब संसारा ॥ आदि प ११६
 २१७ आदि पुरुष र म तु ११६
 शृष्वानु ह म सु सु न्यो ११६
 बात तु म मो ही नु जाई २११ म ११६
 ए ह ने द न लामे ली ना तु म ११६
 तु म जा नौ सब अ न र जो म ११६
 कु क ही यो जै ही ते ने द र ११६
 श्री को होई ॥ ता कु अ क मे के न ११६
 य ए ह सब ने द व ता ये हो तु म सु ११६
 ए स सै सक ल मि टा य हो म न र न ११६
 २२२ ॥ व ११६

कर्म न्रावै ॥ हे धर्म दास ऐह्य साट् सबही
नको देहौ ॥ जीव बुडाये काल सं लेहौ ॥ २
३ ॥ पारस नाम क कुं उर्प देसा ॥ को न श ब
का क कुं सं देसा ॥ चां नी जीव कुं सष्ट है सा
रा ॥ या ही पारस तै हंस उर्बारा ॥ २३ ॥ पार
स पान बाल क कुं भाई ॥ जे ही तै हंस लोक कु
जाई ॥ कित कुं पारस है सीवा ॥ सु करीया जानी
सष्ट ही पीवा ॥ २३ ८ ॥ स्मरति सष्टु मे तन मन दे
ही ॥ धर्म दास मै क कुं बुजाई ॥ त्रै सी रहनी पं
थ चलावौ ॥ हंस बोध्य के लोक लै ग्रावौ ॥ २
३ ॥ ती नव चन क कुं बुजाई ॥ जो मानै
सो लौ सिधाई ॥ पुष्य होये सष्टु न्ही जाना ॥ निह
चै होये है निरक निधांना ॥ २४ ॥ बाल क हो
ये बीरान ही पावै ॥ कै सै करि सत लोक सिधा
वै ॥ काम नि होये पारस न ही देही ॥ कै सै करि
होये मुक्ति सने ही ॥ २४ १ ॥ सिध जानी होये
गुर नव तावै ॥ तो सब दोष गह क ग्रावै ॥ का
मनि पारस गुर कुं देई ॥ गुर सोई जि पारस ले
ई ॥ २४ २ ॥ ई न मै जो गुर सं सै राये ॥ तो धर्म रा

वैकुण्ठगत्रचायै नमः स २४ २४
वैस्यसोईजगुमनवे
टकरैगुरवाशनहै जे
मतैबचनकहनहै निह

योवाता २४

बिनतीप्रनुसारी ॥ तह ॥ सग ॥
हारी ॥ ममवसपारसदेई

हीहोई ॥ २४ ५ ॥
उपदेसा ॥ जेहीतेहैये

सवालकजोहोई ॥
२४ ६ ॥ तिनकंपारस

गटकवीरहीहोई ॥
निसदिनरहैसहमे

नमैरहैप्रस्थिरप्रगा
गागोरसतपारसकोजाने

यमैववेदा २ ४ ॥
षाटकवीरताहीत

कीजै ॥ बंसतुमारेसष्टप्रता
गीकायेनपसारा ॥

कर्म प्रावै ॥ हे धर्म दास ऐह्य साट सब ही
 न को दे हो ॥ जीव बुडाये काल सं ले हो ॥ २
 ३ ॥ पारस नाम क कुं उ प दे सा ॥ को न श ब
 का क कुं सं दे सा ॥ चां नी जीव कुं स पृ है सा
 रा ॥ या ही पारस तै हं स उं बारा ॥ २३ ॥ पा
 स पान बाल क कुं भाई ॥ जे ही तै हं स लोक
 जाई ॥ कित कुं पारस है सी वा ॥ सु करी या जां नी
 स पृ ही पी वा ॥ २३ ट ॥ सरति स पृ मे त न मन
 ही ॥ धर्म दास मै क कुं बु जाई ॥ त्रै सी रह नी पं
 थ च ला वौ ॥ हं स बो ध्य के लोक तै प्रा वौ
 उरी ॥ ती न ब च न क कुं ब जाई ॥ जो मां नै
 सो लौ सि धाई ॥ पु र्ष हो पे स ब न्ही जां ना ॥ नि ह
 चै हो ये है नि र क नि धां नां ॥ २४ ॥ बाल क हो
 ये बी रा न ही पा वौ ॥ कै सै करि स त लोक सि धा
 वौ ॥ कां म नि हो ये पारस न ही दे ही ॥ कै सै क
 हो ये मु क्ति स ने ही ॥ २४ ॥ सि य जां नी हो
 गुर न ब ता वौ ॥ तो सब
 म नि पा र स गुर
 ई ॥ २४ ॥ ई न

ये कै मुद गल चायै गुंर सोई ज्यो सिय समं जा
 कै सिय सोई जो गुंर मन वै भौ ॥ २४ ॥ धजा गुंर कुं मे
 टकरै गुंर वाई न है चै जीवनर क मै जा शी तं
 म तै ब च न क कुं न है ॥ नि द चै क रि तं म सून
 यो वा ता ॥ २४ ॥ धर्म दा स र्जु वा च धर मा स
 वि न ती गुं नु सारी ॥ है स त ग र मे तुं म व लि
 दारी ॥ मं म वं स पा र्श दे शी तं म तै भे ट व डुर न
 ही हो ई ॥ २४ ॥ धो गुं व तं म वं स न ले क है
 उ प दे सा ॥ जे ही तै हो घे हं स कुं भे सा तुं मारे वं
 स बा ल क जो हो ई हो घे जां नी प ति बु जै सो ई
 २४ ६ ॥ ति न कं पा र्श भा यो सो ई ॥ ज्या घ ट प्र
 ग ट क वी र ही हो ई ॥ ज्या कुं न ही व्या पे कां मा
 नि स दि न र है स द्य मे धां मा ॥ २४ ॥ ७ ॥ र है न ग है
 न मै र है प्र स्थि र गुं गा ॥ म न सा वा चा स त प्र सं
 गा ॥ गोर स त पार स को जां ने भे दा ॥ गुं त्र प्र सै स
 यै वि वे दा ॥ २४ ॥ ८ ॥ गै सै सं त ज न स द्य स ने ही ॥
 सा ट क वी र ता ही की दे ही ॥ ति न भे पार स भे ट न
 जा जै ॥ वं स तं मारे स द्य प ती जै ॥ २४ ॥ ए ॥ व डुरं
 जी का ये ल प सा रा ॥ रं ग जां न म ति क रो चां था

श्री। बाहिर भी तत दुसै सोई। ताका व
चन सत करि मांनौ। अपनी मति कव ऊं
मति मांनौ ॥ २६३ ॥ गर जो बिंदु मान मद
तोरं ॥ संसै काल तत विन वोरं ॥ गर कुं मा
नै ब्रह्म सरूपा ॥ पाप पुन्य तै परै अतुं पा
२६४ ॥ धरम दास उंवा च ॥ धर्म दास वि
न वै कर जोरी ॥ खां पी संनौ विनती ऐक मोरी
नारी नां मनरक कीयां नी ॥ सो गूं कूं कूं की
जै अं नी ॥ २६५ ॥ अघोर नरक नारी जो क
हीरे ॥ सो ऐह सत गर कै सै ल हीरे ॥ गर कुं
ब्रह्म सरूप हंम जांन ॥ नरक भोग वै क व
न अज्ञाना ॥ २६६ ॥ गर कै च एं है मुक्ति को
सुं ल ॥ जनी भंमै क व न वि ध भू ल ॥ गर म
है मा अगम व ताई ॥ नी च ल च न कि म क
हौ गर सांई ॥ २६७ ॥ नी चा सो जो नी ची क
है ॥ नी च पंथ जो पां नी ल है ॥ उं चै ज ल नां
ही र है राई ॥ नी चा मां ही पां नी भव अं शी २
६८ ॥ सांथी ॥ ३२ ॥ सो तं म मो है व ता वौ

नैज्ञानप्रपाराधरमदासकीवीरुती
 रदौकताहंमारा२६॥ पुहा३३॥
 लीज्ञानतुमवोलीया॥ सतसद्वृहैयये॥
 सचारमैसतकहां॥ कदौगदुसमहाये
 २७॥ चोपई२॥ कवीरुवाच॥ कदौ
 कवीरुसुनौधर्मदासा॥ ऐहीज्ञानमैककुं
 सांमैजांन्यातुम॥ भर्मसुहुटात
 कुं कविनकालभर्मलटा॥ २७१॥ काल
 कीगतिमति तुमनहीपाई॥ ऊरिऊरिमे
 रदौमुलाई॥ मांनबडाईधरोउतारी॥ क
 ता॥ ततमनवारी॥ २७२॥ लज्याखोये
 २७३॥ मसमाई॥ ऐहलज्यासगलोऊगयाई
 ऐहलज्यासंसारलजाई॥ सोलज्यालिजत
 होयेग्याई॥ २७४॥ ज्याकुंकदीयेवदस
 रूपाताकुंकदीरेकप्ररुभुपा॥ बाहैमीत्र
 तदुसाई॥ सोसुटभीत्रप्रगत रहांशार
 धाताकैबचनसतकरिमनौ॥ प्रपनी
 कंबकुंमतिगनौ॥ पूरगाविंदमानेम
 सिसैकालततहिबारी॥ २७५॥

नगरद्वैबहसंभार्ज॥ पापपुंन्यतैन्य
गार्ज॥ धर्मरायेतंमोवैघटप्रावागुर
वचनत्तमडुलयावा॥ २७६॥ सिर
सोईगुरबचनहीमांना॥ प्रज्ञानीद
बकैजांना॥ गरपतीतहिदैप्रौडीत
सबबुडहैडनीयांआई॥ २७७॥ बुम
येथ॥ दानहीपावै॥ तातैजन्मभर्मन्
जावै॥ तवकवीरभयेप्रविधांना॥
दासपीछैपिछतांना॥ २७८॥ धर्मदा
उवाच॥ देगुरदयालवदयाकरिहोखा
मैनहीजांन्यांप्रज्जामी॥ मैप्रज्ञाना
ममर्ममनजांना॥ मैजांन्यबुजिमातैप्र
भिमांना॥ २७९॥ प्रहमेरैचितकबुसं
नाही॥ जालिबुजडुलवैगरपांही॥ तुम
रदेवहोबहसमांना॥ मैसेवगपचुऊं
पांना॥ २८०॥ बालकजोकबुपीतातैभं
वै॥ पीताबालककदयाप्रमित्नायेद
मोप्रकरिहोखांमी॥ तमकनामैप्रभूप्र
जांमी॥ २८१॥ जोतुमडुधमोकुंदेहो॥ २

यमेरोत्तमलेहो॥ जिनदी दृष्टपंथ
 त्यागुं प्रांन जीव होये प्रकाशर
 सां देव मोष दया कीनां तं मा रे व
 रं दं मदीनां॥ कवी र्नुवाच ल
 याचित प्राई। धर्मदा सुत बड
 पत्रा चर्ण ग है कै कुंडो त की ना
 ल चरणो दिक लीना॥ माहा प्रस
 का विया त बे मांगी॥ बिन ती करि चर्ण लि
 त लागी॥ २८४॥ तब साहिल ने दया की न
 महा प्रसाद करवै लीना॥ नां ना बी जन
 की बा ब कुं भ्रांती॥ सब प्रकार ब कुं सदी
 सेती॥ २८५॥ कन च न थार प्रारती वारी
 सेवा ब कुं त ही यामै धारी॥ सुत नारी सब च
 रण न लागे॥ चर्ण घटा ये भक्ति प्र लुं रा गे॥
 २८६॥ चरणो दिक सब पां नी नै ली ना॥
 दिव्य ज्ञान संब ही न कुं दी ना॥ तब सा हे ब
 चो का मै ये॥ भ्रांति भ्रांति कै प्रंग दि टा ये २
 २७॥ प्रादम वा धं सं म र न धो ना॥ वा बू मिं व
 र्ति प्र वां ना॥ प रु स ही थाल हा थ कर ना

नगरद्वैबहसंभाजे॥ पापपुंन्यतैन्परा
गार्जे॥ धर्मरायेतंमोवेषट-प्रावा॥ गुरवे
वचनतंमडुलयावा॥ २७६॥ सिष
सोईगुरबचनहीमांना॥ अज्ञानीहोरे
बकेजाना॥ गरपतीतहिदैअप्रीई॥ ताते
सबबुडहैइनीयांअई॥ २७७॥ बुमाज
येथ॥ दानहीपावै॥ तातेजन्मभर्मही
जावै॥ तवकवीरभयेअप्रविधांना॥ ध
दासपीछेपिछतांना॥ २७८॥ धर्मदास
तुंवाच॥ देगुरदयालदयाकरिहोस्वाम
मैनहीजान्याअत्रज्यांमी॥ मैअज्ञानतं
ममर्ममनजाना॥ मैजान्यबुफिमातेअ
भिमांना॥ २७९॥ अरुमेरैचितकबुसंसे
नांही॥ जानिबुऊडुलयेगरपांही॥ तुंम
रदेवहौबहसमांना॥ मैसेवगपुऊअ
प्यांना॥ २८०॥ बालकजोकबुपीतातेभा
ये॥ पीताबालककदयाअभिलायेदया
मोप्रकरिहोस्वामी॥ तंमकनामैप्रभूअत्र
ज्यांमी॥ २८१॥ जोतुंमडुएमोकुंदेहो॥ शं

रायमेरोतंम लेहो॥ ज्योनही इहमपारं

प्राज्जुत्पागं प्रांनजीव होये प्रकाज्ज

सादेवमोषदयाकानात्तंम

इहंमदीना॥ कवीरुंवाच

याचितप्रार्थ॥ धर्मदास

पञ्चाचर्णगहैकैकं

लेचरणौदिकलीना॥

कदियातबमंगी॥ जलतीकावच

तलागी॥ २८धातवसाहित

महाप्रसादकरावे लीना॥

कीयावकुंभान्ती॥ खल

सेती॥ २८धा॥ केनजल

सेवावकुंतहीयामैधर

एणनलागी॥ चर्णषटा

२८धीचरणौदिकसब

दिव्यज्ञानसबहीनकुंदा

चोकामैयै॥ भान्तिभान्ति

२८धा॥ प्रादमवाहसमरन

सर्तिप्रवांनापकसही

नगरहैबहुसंभाजे॥ पापपुंन्यतैन्यरा
गाजे॥ धर्मरायेतंमोरेघटप्रावागुरके
वचनतंमडलयावा॥ २७६॥ सिध
सोईगुरबचनहीमांन॥ अज्ञानीहोये
बुझैजाना॥ गरपतीतहिदैग्योई॥ ताते
सबबुडहैइनीयांग्योई॥ २७७॥ बुमाज
येथ॥ हानहीपावै॥ तातेजन्मभर्मही
जावै॥ तवकबीरभयेअंविधांना॥ धर
दासपीछेपिछतांना॥ २७८॥ धर्मदास
उवाच॥ देगुरदयालदयाकरिहोस्वामी
मैनहीजांन्याअंजामी॥ मैअज्ञानतं
ममर्ममनजांना॥ मैजांन्यबुझिमातेअ
भिमांना॥ २७९॥ अरुमेरैचितकहुसंसे
नांही॥ जानिबुझडुलयेगरपांही॥ तुंम
रदेवहैबहुसमांना॥ मैसेवगपहुहुअ
पांना॥ २८०॥ बालकजोकहुपीतातेभा
ये॥ पीताबालककदयाअभिनायेदया
मोप्रकरिहोस्वामी॥ तंमकनामैप्रभुअं
जामी॥ २८१॥ जोतुंमडुअमोकुंदेहो॥ पां

लेहौ॥ जो नदी इ छपांड

त्यागुं पांन जीव होये प्रकाज्ज २

सा देव मोष दया की नां तं मारे व

दं मदी नां॥ कवी र्जु वाच त

या चित प्राई॥ धर्म दास त बड

पञ्चाचणी ग है कै कंडो त की ना

ल चरणो दिक ली ना॥ माहा प्र स

का दिया त ब मांगी॥ विन ती करि च ए चि

० धा त व सा हि व नै द या की न

सा द क रा वै ली ना नां ना वी जन

कुं भां ती॥ सब प्रकार व कुं स दी

५॥ कं न च न थार प्रार ती वारी

० धा मै धारी॥ सत नारी सब च

० क्ति प्रं नुं रा गे

० धी चरणो दिक सब पां नी नै ली ना॥

सब ही न कुं दी ना त व सा दे व

दि टा ये २

० प्रा द म वा छ स म र न ध्यो ना॥ वा वृ मिं व

० प्र वं ना॥ प रु स ही थाल हा थ कर ना

री सोभा सुद्वहो प्रेमपीयारी ॥ २८ ॥ ध्रुवा
हंवार प्रसाद ले आवै ॥ प्रेमभाव सतग
र मन भावै ॥ कर ही बिहार सुगंध मंधुरी
सकल मंध्य ग्यानंद भरपुरी ॥ २८ ॥
पाये प्रसाद प्रचवन लीना ॥ धर्मदा स
कुं प्रसादी दीना ॥ सब ही मिल प्रसादी प
वा ॥ एक मत होये भक्ति ही भावा ॥ २९ ॥
धर्मदा सर्व वाचा ॥ धर्मदा सविनवै करि
जोरी ॥ तं म समर्प्य हो बंदी कोरी ॥ तत प्रसा
दी सब ही कुंदीना ॥ ग्यानंद बह्य सब
ही कुं कीना ॥ २९ ॥ जिते क जीव गिदै
मै होई ॥ सब मिल ग्यानंद प्रेम समोई
चेरी चैराग्र है जिन लोका ॥ एक मति
होये भक्ति संजोगा ॥ २९ ॥ तव सा देव
पी लंग प्र आयै ॥ ब होत पीत सु ग्राह्य व
नायै ॥ धर्मदा स सब पुत्र कलत्रा ॥ एक म
न एक चित कै जंत्रा ॥ २९ ॥ धर्मदा सकी
नारी चल ग्राई ॥ प्रबं धं पुत्री संग लाई
ग्रा प्रतिल चन ॥ तव समर्थ कुं वंद

।कीनातनमनधमिस्तगरकुंटीना
यीउध॥ऐहतनमनलेहोगसांशी

ममकाजातनमनधनिनवकान
कहास्यसंपतिकूलनाजारएया॥चो

२० समर्थुवाच॥तवसंमर्थनैदया

वमस्तिकउपहाथजोटीना॥

कैसेऊषवैगई॥अंतरगतिकोअर

२१ एदीजोमयसोईभीवदेया॥स

सोटीकीयापरेया॥जावोनाहीअप

तमारोसतदेयोउरमाही॥र

मनहोई॥मनअहंक

योई॥ऐहमनकाहैकठिनविक

।ऐहमनकाऊंजीतनपारा॥रएटा॥

मनकमककमकरावै॥देहकेस्वार्थ

चनेचावै॥बुद्ध्याधीनसतगरवच

२

ममनधिरहंसजाना॥काल

अभिमाना॥मानतिजैबिनपी

२२ ॥होयेअधीनचणकंगहीये

३००॥ वज्रतपश्चग रूतवप्र ऐउ॥ धर
दास कं ग्रासका द ऐउ॥ धर्मदा सत्
वंसुर्जगार॥ तुं महंसपुं चैस्यस
३०१॥ नहै चै ह्यो ऐमंक्तिपवांना॥ स
लोक प्रवकरहोपायांना॥ तुंमारेवं
ज हांलगहोई॥ तिनकैदाष्टमंक्तिस
लोई॥ ३०२॥ वयां तीस वंसतं मारोहो
॥ तिनकं कतारहैसब कोई॥ वयां तीस
समैदसह जारा॥ ईनतै दंसुं तरहीप
३०३॥ नामजानैतै सबही उंधारा॥
नां नामबुमा संसारा॥ नामन होये प्ररु
सकहावै॥ विना नामनही लोकसि
रावै॥ ३०४॥ नामन होये करै प्रहंकार
है चै नरकपडै जम धारा॥ नामजानैतो
मारेवंसा॥ विना नाम सबलोक विनास
०५॥ कृता ऐक इंतीया नहोई॥ इंतीयाभा
वपुन्य इ जा सोई॥ ऐकतै भये अनंतप
गारा॥ तामै भिटक मंवा संसारा॥ ३०६॥ ऐ
कनांमवै द्वाप प्रकेला॥ ऐकनांमवि

हला॥कैते कलिपदांनव ऊक्त
एभारयविसतरही॥३०॥अ
ऊसाह्वहीजांनानवव्याकरण

॥लपस
॥०॥पाले

॥जिन आत्म

ब्रह्मघटमाहीपंदिचांना॥सो तोल्य चैवा
धनबं चै चौरतै जदै

लकी गतिमति प्रसी हो ई॥३॥

महिमा जानै नही को ई॥कगलन

तिकै ही ना॥कवही सुख कवही ड

की गति प्रै सी कही

॥५॥ कदै दं मनी कै ची ना॥कन

मनमै प्रावै प्रै सा॥एह सब मे हो प्र

सा॥३१॥ कव ऊंक दै प्र भू नै की ना॥क

दी ना॥सायी ३५

भेद नही जानै॥सुख कदै भू लायो नै

धर्म दासतै॥सुन ली ज्यो चित ली

॥३१॥ चोप ई ३१

तूमकेसैप्रायेउदासमोहिकीनाप्रजड
भलाहैजावोगसाईनितरमारजीवस
बयाई॥३२४॥मैकुंनिरंजनप्रलयप्र
पारा॥कौनभेदतैकोनपसारा॥तूमनही
जानहोहंमारोब्योहारा॥कौनभेदतै
जीवउतहीपारा॥३२५॥कबीरउवा
चा॥हंमैकह्योसुनो धरमराजा॥तूमन
हीजानैहंमारोकाजा॥हंमारैबलशब्
कोप्राई॥याहीबलतैजीवमुक्ताई॥३
२६॥जाहानामतहांतंमनहीकोई॥वि
नानामकुमारासोई॥नामपतीतभक्तिप्रवा
ना॥ऐहीविधकाहुहंसनिरवाना॥३२७
धरमहंजाब
जेतेकनामतूमसुमर्णकरही॥सोसबना
महंमारो धरही॥जोकोइभक्तिकरैसंसार
सोसबहैहंमारोब्योहारा॥३२८॥बहोत
फंदाहंमकीना॥सबसमेटवांधभग
दीना॥तूमकेहीभांतिजीवमुक्तावो॥सो
खामीमोहिभेदववो॥३२९॥कबीरउ
वाचा॥हंमारैसहृएकपुर्वकेरा॥सहृमि

च

कहू शास्त्र

तां कंमारकरुजरछारा॥ ररशाडु
ऐकं प्रेसही आहा॥ प्रसिक्ता ल
पुम्यदाहा॥ सिवसंमाधकरैग्रहं

विष्णुग्र

इयदेउ॥ प्रवरकवनजाही न्ही ले
मन्प्राये दौहं स्युर्ब्वारना॥
भक्तिहोये है कुलनारना॥ कर्वा
धरमराये लजाई
मधर्मभये अन्याई॥ ररशाडु
मांशीजोगजीत मैनां
मसिंर ऐकदीयो ग्रमोला॥ र
नसह प्रमोला॥ ररशाडु करनां
कहोशीमीगरगंकर कहै नकोशतुं

तव तं ममानसरोवर प्राये ॥ कन्या देषे व
कुंत मन भाये ॥ ३४ ॥ तव तं मकन्या
प्रासे लीना ॥ सीसकुरं भ कौ तव तं म
ना ॥ प्रमी प्रकुरतोर कै भीना ॥ पृथस
रापतो ही कुं दीना ॥ ३४ ॥ वचन करे
है भूला ॥ तातै धर म तु म भये प्र
न्याई ॥ तीन लोक का करे प्र हारा
तो कुं न भू ही उं इ तं मा रा ॥ ३५ ॥ वचन
रते ह म सं च रा ॥ तातै तु म रो नि न प सा रा ॥
न व डुर य तो ये मारे नि कारा ॥ तव हं म भये
हं स र य बा रा ॥ ३५ ॥ तव हं म सह की व
र स बा रा ॥ सो तू मारी टी री न ही टर है टा
रा ॥ म ल स वू को पा वै भे दा ॥ हं म ही मि ल
है हं स छे दा ॥ ३५ ॥ हं मारे स वू हं स ग
ति पा वै ॥ तू म ही पे ल हं स सि धा वै ॥ सो तो
भे द तू म न ही पा वै ॥ कै ते स वा कर जो
हो रा ॥ ३५ ॥ तं म कुं वि ध्य प्रो ग न बो
की ना ॥ पृथ व च न की प्र ग पां दी ना ॥ त
तै तू मारे नि न प सा रा ॥ राज करो वै र

असंख्यं च प्रधातुं मकुंद्याहं सकी
अंशो ताते लोक देष्यो त्वं मंगं शो हं
रीदया मां न सीरत्नी जौ। सब का योजन
बहुन्दी की जौ। ३५५। जब तं अथा दो
सहृदिको ना। तब तं मारो लोक रूढ़े न
नि धाना। तब सब जीव सत लोक ही
जाई। तब तं मारी रहै कवन बमाई
३५६। ऐ हे प्रती हास कथा विस्तारा।
नही तो पुष्य सब ही तै न्यारा। ऐ हं मित्र तुं
मकुं वर दी ना। सब का योज कव जाम
तिकी ना। ३५७। सायी रूट। महो इतं ज
ब होये वै। तब देष हो लोक हं मारा। त
ब तं मकुं हं ममि लै गा। सत ल सुट क
सारा ३५८। चोपई रूट सने छं रु जये
मिं जा शी रहै पुष्य तब सं न्य सं माई। हं
धम राज तं मपुष्य कै प्रसा। मिल हं र
ए मिट जा है संशा। ३५९। इतनी बात
धम राये संकी ना। प्री छै जगति पीया
ना दी ना। चले चले

तव तं ममानसरोवर आये ॥ कन्या देवे व
कुंत मन भाये ॥ ३४ ॥ तव तं म कन्या
प्राप्ते लीना ॥ सीस कुरं भ कौ तव तं म
ना ॥ अमी अंकुर तोर के भीना ॥ अर्थ स
राप तो ही कुं दीना ॥ ३५ ॥ वचन करे
है भूला ॥ ताते धर म तु म स ये अ
न्याई ॥ तीन लोक का करे अहार
तो कुं न भू ही उं इ तं मारा ॥ ३५ ॥ वचन
रते क म सं चर ॥ ताते तु म रो नि न प सारा ॥
स व अ र य तो ये मारे नि कार ॥ तव हं म भये
हं स र य वा रा ॥ ३५ ॥ तव हं म सह की वा
र स वा रा ॥ सो त मारी टारी न ही टर है टा
रा ॥ म ल स व को पा वै भे दा ॥ हं म ही मित
हं हं स छे दा ॥ ३५ ॥ हं मारे सह हं स ग
ति पा वै ॥ त म्ही पे ल हं स सि धा वै ॥ सो तो
भे द त म न ही पा वै ॥ के ते स वा कर जो
हो रा ॥ ३५ ॥ तं म कुं वि ध्य अ प्रो ग न बो ड
की ना ॥ अर्थ वचन की अ प्र ग्पा दी ना ॥ त
ते त मारे नि न प सारा ॥ राज करे बै र

असंख्यं त्रिपुधाहं सकंदयाहं सकी
श्रीं शीतातै लोक देव्यो तं मंगं शीहं श्री
रीदया मां न सीरती जै। सवृका योजन
बहुन्दी की जै। त्रिपुशा जव तं अथा दो
सवृविका ना। तव तं मारो लोक रं है न
निधाना। तव सब जीव सत लोक ही
जाई। तव तं मारी रहै कवन बमा श्री
त्रिपुधा ऐ हे प्रती हा स कथा विस्तारा।।
नही तो पुष्य सब ही तै न्यारा। ऐह मित्र तुं
कं वर दी ना। सवृका योजन कं वं म
की ना। त्रिपु७। सायी बट। महो इतै ज
ब होये है। तव देष ही लोक रं मारा। त
व तं सकुंदं म मिलै गा। सत सवृट क
सारा त्रिपु टा। चोप ई ब्रह्म सने छं रु जयै
मिं जा ई रहै पुष्य तव सं न्य हं ना ई। हं नै
क मरा ज तं म पुष्य कै प्र सा। मिल है रं
पु मिट जा है संशा। त्रिपु एपी इतनी बात
धर म राये संकी ना। श्री छै जगति पीयां
ना दी ना। चले चले सं मार ही ग्री।

मार्गमांदिब कुं हंस छौ डायै ॥ ३६० ॥ च्य
रसि ध्य पवरत मैर हीया ॥ तिनै तै भैद जा
नको कहीया ॥ वै है सिध तो काल तै व
चै ॥ दिव्य ज्ञान हिदाके संचै ॥ ३६१ ॥ ता
पी छै मित्त लोक ही प्रायै ॥ धर्म दास तंम
इक्षपायै ॥ धरमदास उवाच ॥ तब धरम
दास विनती प्रनुसारी ॥ है सतगूरु मै त
मव लीहारी ॥ ३६२ ॥ अगम ज्ञान तंम मं
दिवताया ॥ हिदाक वल जो मोर जूडा
या ॥ धिन्य है सूक्ति तंमारी बानी ॥ जे
ही तै मितै नुककी यानी ॥ ३६३ ॥ धिन
जीवन है जन्म ह मारा ॥ जे ही तै इक्ष
पायो तु मारा ॥ ऐह वात मोदि कही सं
म जाई ॥ जे ही तै जीवकी संसै जाई ॥ ३
६४ ॥ काल करिके कुं नही जाना ॥ सं
मोसुं कहीयै पांन पवाना ॥ काल पाये
अवतार जो होई ॥ नाना रंग करै पुन्य
सोई ॥ ३६५ ॥ जीवत काल ची जो पा
ई ॥ तब तो जीव सर्व सिधाई ॥ जब ल

तल चीन नदी पावै। तब लग अम

प्रोवै। उददी तिम तो जाल

देखान ही मिटे

सैसा जो तम दया की यो विस्तारा तो से

हंमारा। उद ७ जो ऐह काल ही

त लोक प ऊ चै जाई ज्ये

है जीव मां ही। तो काल ची

नाये दे हो मोहि पां ही। उद ६। विन चीन्य

नदी हं सर्वे वारा। मै प्रपत्तै ची तमै की

न विचारा। काल करि न है जग मै फंदा

कैसे हं स हो ये निरबंदा। उद ६। निरउ

ही मोहि करि हो गूं सांई। तो मै पंथ चलं

जाई। कबीर उवाचा। तब सा हेव कहे

वै प्रबुं सारा। स न धर मदा स तम काल

प सारा। उद ७। काल मूल सं सै है भाई। प

थ मै काल तम चीनो प्राई। जिते कक

करै सं सारा। सोई है सब काल प सारा

७७। काल स भाव तै जन्म जो कोई। काल

सब जाये विगोई। मीन रूप काल

जाई॥ सत्तलोक तबनाम धराई॥ जब
ही पुर्यग पत होये जाई॥ संनं मूलम
दूजाये समाई॥ ३८४॥ कालसंन्यका
ऐकविचारा॥ संन्यथिररहे कालच
लधारा॥ नाक कुंजाई नाक कुंजाई
कालकलाकरि सबै भ्रमाई॥ ३८५॥
जैसा देयो तैसा है सोई॥ कब ही पगट
कब ही रूपत होई॥ रूपत पगट है
ऐक सुभाउ॥ इतीया भाव करि प्रा
न सुनउ॥ ३८६॥ जस है तसै कहां न
जाई॥ ज्ञान बिना न ही बजै नाई॥
जाकुं दिव्य ज्ञान है सारा॥ ताकुं दीपक
संमउ जीया रा॥ उचनी च उचनी समक
रि जाना॥ उचनी च सब जडिकर मा
ना॥ ३८७॥ प्रोर गुं ग लोगन बूजै को
ई॥ सब संसार गुं ट है सोई॥ गुं ट सां च
दोनु मित जाई॥ ज्ञान पगट जाके घ
ट समाई॥ ३८८॥ धरमदा सत्संभव जै
हौ ज्ञाना॥ काल को गुं न भ्रम जानौ ना

हं अमर

जा सोई ॥ ३ ॥ ३ ॥ साठी ३ ॥

अमरमूल कुं वृजकै ॥ तो का ल द ग सि
र जाये ॥ का ल पार घा बुज कर ॥ ल व न
है का ल समाये ॥ ३ ॥ ७ ॥ चो प ड ३ ५ ॥ का
ल न है का ल कौ भेद ब ता उ ॥ स न ध र म
दा स मै तो हि स म जा उ ॥ न्द है अ व र क र
भेद जो पा या ॥ सो न है का ल मै जा ये स म
या ॥ ३ ॥ १ ॥ ज्यो न ही जं नै न है अ व र का
भेद ॥ ता कं का ल कर त है छे द ॥ बिन अ
व र न ही का ल ही जी ता ॥ गा ये व जा ये र
है स ब री ता ॥ ३ ॥ २ ॥ जो ग जी ग स ब का
ल पा सा र ॥ अ प्रो र नं ना चि र त्र व्यो दारा ॥
का ल की ग ति म ति ऐ ह स व हो शी ॥ का ल

शी ३ १ ३ ॥ जी

जीना ॥ का ल न चीने

र लो ना ॥ क व ही स व क व ही ड्य

का ल की ग ति अ सी है सो ई ॥ ३ ॥ ७ ॥

क है मै म न मां हि वि चारी ॥ मुं

मक्ति जो होये है हमारी ॥ ऐ है भ्रम काल
 उर्गये सार लीना ॥ भ्रम न चीनै मति कै
 हीना ॥ ३ए ५ ॥ सायी ४६ ॥ जीवत मक्ति
 कुंछी ककै ॥ करै मखे की आसा ॥ ते नर भु
 लै वा पड़े ॥ धरि सुवा म बिस वासा ॥ ३ए ६
 चो पड़े ३६ ॥ निस दिन संसे धो घे गू है रा वै
 अनदे घ्योरी जै अरु गा वै ॥ जो देखै सो
 काल पसारा ॥ ओर जो बिन सै सो काल
 व्यो हारा ॥ ३ए ७ ॥ सायी ४७ ॥ असी उनी
 यां अंधरी ॥ धो घे जनम गमाये ॥ सब उ
 नायां जहे डै गई ॥ मित्त मित्त म जाये ॥ ३
 ए ८ ॥ चो पड़े ३७ ॥ मेरा कहा जान ऊनिज
 चीना ॥ ता कुं उबार काल सुं लीना ॥ ता तै तं
 म कूंक हौ संदेसा ॥ अघिना सी घट पाये
 उं पड़े सा ॥ ३ए ९ ॥ तं म धरम दा समत दिट
 कर हौ ॥ ईत वति चित्त अनंत मति धर हौ ॥
 भ्रत भव च्य वरत मांन जो कहीये ॥ पाह
 विधती काल निरव हीये ॥ ४० ॥ भ्रत संसे
 काल की काया ॥ भव च्य होये सो जीव कहा

पावतमोनप्रमात्मजोनो।याहीविधत
 नकालपदिचोनो॥४०१॥सोईभूतसो
 ईबतमाना॥सोईभवत्सदीयेपदिच
 ना॥कालकलाकुंचीलतनाही॥काल
 विचित्रदैसबमाही॥४०२॥सासीधरा
 कालजीतजांनीया॥सबइंतीयामिट
 जाये॥इंतीयाभावनउपजै॥तबबदे
 कालपछिताये॥४०३॥चोपई३८॥जो
 नग्यात्मइष्टाहीई॥इंतीयाभावन
 पजैकोई॥जांदाइंतीयातहांइसरहो
 ई॥इंतीयाकालनचीनेकोई॥४०४॥स
 यीध३॥इंतीयाचेरीकालकी॥सुर्षसम
 जेनाही॥ज्याकीइंतीयामिटगईतेच
 सबसमाही॥४०५॥चोपई३५॥
 इंतीयाइरमतिदासीहोई॥ज्ञानविचा
 रकहातेसोई॥तीनकालमेरहेजो
 एसोईपुर्षकायाकोबीरा॥४०६॥सोई
 संहनाजमलो॥मित्रद्वानसो
 लावाहीहंसतैकालडराई॥

कोटिर्नुपाई ॥ ६० ॥ रहेंग गहेंग तैस बृजे
प्रसे ॥ आत्परामघटमै प्रसे ॥ ६० ॥ साषी
॥ ६१ ॥ इतनी वात सून ली जीये ॥ काल
को शान बषान ॥ काल पाये कै होये है
दंमसं फिर फिर ज्ञान ॥ ६० ॥ चौपई
६० ॥ धरमदास ठेवा च ॥ तब धरदास पाये
नै परै ॥ हे सत गुरतं ममोहि निसतारै ॥ तंम
तौ कहै बचन प्रवाना ॥ काल पाये करि फि
र फिर ज्ञाना ॥ ६१ ॥ तुंम प्रसाद मक्ति फ
ल पाये ॥ ऐह भव सागर बडुरन प्राये ॥ दं
मसं ज्ञान किदा फिर होई ॥ ततव बचन
कहीये पुन्य सोई ॥ ६१ ॥ कबीर ठेवा च
तब साहेब कहै वै प्रसै लीना ॥ तंम दूरी पा
यो काल करि चीना ॥ दंम तंम दंस ऐक है
प्राई ॥ दंम तंम ऐक प्रवर कहें ना ही
६१ ॥ ऐक मन ऐक तन ऐक है प्रगा ॥
तोकुं कहीये प्रेम प्रभंगा ॥ बडुरत उप
प्राये सदीना ॥ भृंगी भाव भृंगी की
ना ॥ ६१ ॥ दंम तंम सत लोक के बासी

कालनदी तदा सर्वप्रविनासी॥ मैज्ये
कस्यो मित्तलोकव्योहरा॥ कालपा
येक रूढये प्रवतारा॥ ४१४॥ कालपा
येबिनसे ज्ञासारा॥ कालपायेकेकरे
आहारा॥ कालपाये कतानदी चीना
सगत्ये जगकीना॥ ४१५॥
जोगतैसिष्टनिरमाडी॥ प्रोरका
राई॥ सायी ४५॥ कबी
जैतैरदो॥ प्रोरकालको जोग
दिजक्तिरदो॥ काल
॥ ४१६॥ चोपई ४१॥ धरम
धरमहरसांना॥ ज
ज्ञानसतगुरपदि चोना॥ तिससाहे
जोवाला॥ प्रपनो जानक
पाला॥ ४१७॥ ऐकवातमैकहेत
॥ सोसतगुरमैबिनतीलाउ॥ का
मप्रोहिबताई॥ प्रचरज
प्राइ॥ ४१८॥ ज्योपेहसक
लप

निषेदा॥ ब्रह्मसास्त्रपठिपंक्ति कदाई
कालपुर्ससबतैबमग्राई॥४३॥ सा
धसंगतिमिलभेदवतावही॥ जेहीतै
कालकैफंदसंबं चावही॥ कालसबद
नहीहोताभाई॥ तोकाहेकंभक्तिकराई
४३२॥ कालकैकरतैजोगअनुसरही
कालकैडरतैदानवङ्ककरही॥ कालकैडरतै
तनतपसाधा॥ कालकैकरतैपांचूंईवीबांध
४३३॥ कालकैकरतैसंतकरैज्ञाना॥ काल
कैकरतैछांकेअभिमाना॥ कालकैडरतै
नरसंककरही॥ कालकैकरतैऊरिपहर
ही॥४३४॥ कालकैडरतैपायंडनहीकरही॥
कालकैकरतैपायंडपहरही॥ साषीधई॥ अ
सोडरहैकालकै॥ तंमसून्होधरम्रासा॥ आत्म
ब्रह्मचीन्यांविना॥ नहीपावैसषवास॥४३५
चौपई४२॥ औरकरहीतैडनीयासबबू
डी॥ काऊंनदेयीकालकीसूकी॥ तंमधरम
दासनिडरहोयेरहै॥ कालनहीहैऊरिप
हरहै॥४३६॥ ऊरिसांचपहिचानैभाऊंत्

ॐ भेदनहील

गाधरमदास उवाच ॥ ज्योतिं न मद्याकर
होगु सोई ॥ सोई ज्ञान पावै सब गार्कवीर
उवाच ॥ तं मधरमदास गृपतिकर हौ ज्ञान

वाना ॥ ४ ॥ यज्ञे से चौर

प्रिय सर्व चौर दन जा ही ॥ ७ ॥

। यार भया ॥ चौर से साहा तत

धर्म दास उवाच तव

ग्रानंद ते भरो उधि गस्त व व ल

वन तील होत भोति सं

चल दीना

॥ पद रज लै मिस्तक पला पा ॥ ज्ञान

प स्वाति क पा या ॥ रज प्र स्वात जोति

वा ॥ ४

ले वै तत माहा

। से वै ॥ सीत कुष्ट देह को कम

सब यये जाये ज्यो बुं कै ममी ॥ ४४ ॥ २ ॥ चं

विध्य सं

मतिमानै। ज्ञानी जीवकुंनि जर्जप देसा। सब
सूरतिका पावै लेसा ॥ ४५६ ॥ सब सार ज्ञान
जो होई। सोई हंस कहावै जोई। धरमदा
तंम कूं नही भारा। सबको तारन है कता
तंमर्जप देस क ऊं बहो भांती। जोमानै सो
हंसकी पांती। सो नही मानै कहातु मारा
सोपु है जमके द्वारा ॥ ४५७ ॥ जमके हा
थ परै जा जाई। बुझा जायेथ हान ही पाई
४५८ ॥ दासी ॥ क है कवीर सनली जीये
प्रवांना मित्र सहिदान। समै समै जीव कुं दी
जीये। पावै पद निरवांन ॥ ४६० ॥ चौपई ॥
धरमदा सबिनती अरु
सारी। है सतगूर मै तंम बली हारी। कहौ अ
रती चोका व्याहारा। कवन सहृते आरती
बारा ॥ ४६१ ॥ कवन सहृ सतगूरकी पांज
जेहोतै छुटे कालकी बाजी। कवन सहृते
नरीयेर मोरा। कवन सहृते तीनका तोर
४६२ ॥ कवन सहृ दीपक उं जीयारा। क
वन सहृते दीपक बारा। कवन सहृते चे

काकीना कवनसद्वृत्तैपांनलिषदीना॥
 ४६३ कवनसद्वृत्तैपसाद्वनायाविक
 नसद्वृत्तैमिं एम चढाया॥ कवनसद्वृत्तै
 प्रानसाजा॥ कवनसद्वृत्तैप्रनकदना
 जा४६४॥ कवनसद्वृत्तैसांग्रीधारा॥
 चोकाभिंधैप्रानसंचारा॥ कवनसद्वृत्तै
 धोवतीभ्रानचढाई॥ कवनसद्वृत्तैधि
 सिचंदनलाई४६५॥ कवनसद्वृत्तैप
 पचढाया॥ कवनसद्वृत्तैजलप्रयाद्व
 नाया॥ कवनसद्वृत्तैश्रोवतीश्रुमांडा॥ यताए
 केचर्ण जोसिरचढाई४६६॥ कवनसद्वृत्तै
 दिदीजैनाया॥ जेदीतेंदंसद्वोयेदेंश्रुमांडा॥
 नवीरुवाचाएदमेदमेतेंमेचनानां
 कअर्थजानसमजाउं४६७॥ कवनसद्वृत्तै
 कअनुसारासुनिमद्वृत्तैकायापयाया॥
 तेजसिद्वाद्युचेंकाचार्ता॥ कवनसद्वृत्तै
 तेजसिद्वाद्युचेंकाचार्ता॥ कवनसद्वृत्तै
 तेजसिद्वाद्युचेंकाचार्ता॥ कवनसद्वृत्तै
 तेजसिद्वाद्युचेंकाचार्ता॥ कवनसद्वृत्तै

॥४६॥ एतव जीवउठविनतीकीना ॥ चंद
सरज दोयेसायी दीना ॥ तापी छैप्रवांना
साजा ॥ ज्ञानसबूघटमांहिसंमाजा ॥ ४७० ॥ क
दलीपत्रतहांअनधराया ॥ अमसहउ
चारकराया ॥ अमरपनवाराअमरकैजा
ना ॥ अमरविस्तबिलैपहिचाना ॥ ४७१ ॥ अ
मरविस्तकाजानैभेदा ॥ कहैकबीरसोप
नवाराअप्रछेदा ॥ तापुपानअमरधराया ॥
ताकोभेदकोईबिलैपाया ॥ ४७२ ॥ बीजमि
अधरतीपदीना ॥ पानसपारीनरीयेरलीना
सोप्रसादसंतजोपावै ॥ सतसुकतकैलोक
सिधावै ॥ ४७३ ॥ तीनषऊत्रियंडसरीरा ॥ वा
हेरभीत्रऐकैनीरा ॥ कहैकबीरडुतीयाक
भेटौ ॥ ऐकबुऊकायाबीरकभेटौ ॥ ४७४ ॥
तापीछैततमिष्टानचढाया ॥ बहौतततसं
पेमलगाया ॥ ऐहसतसुकतिभेटहंमारी ॥
दमलीजीभवजीवउठवारी ॥ ४७५ ॥ सायी ॥
४८ ॥ करजोरविनतिविनहुं ॥ सोधोसकल
सरीर ॥ चकपरैतोविगसीयो ॥ सतअरसत

कवीरु ७६॥ चोपई ७७॥ तब नरीयेर कुंठ
 न चढाया॥ बहोत ततसं प्रेम लगाया॥ मित
 लोक है जमको धां ना॥ मारै मित्र कवीरको
 बोना॥ ७७॥ वानमार जगति जसलीना॥
 उवै संत कंटीकादीना॥ साखी धर्या॥ पां
 नरीयेर मोरकै॥ जम सिरटा करवांदा॥ कंच
 नकपुर मिलाये॥ कौसा है बकवीरको दोष्ट
 ॥ ७८॥ चोपई ७९॥ कवीर उवाचा॥ तब
 पक कुंठान प्रकासा॥ सत लोक मानुकी
 यावासा जगमग जोत बरै प्रगासा॥ अज
 विस्तमै करै निवासा॥ ७९॥ अज रविस्तको उ
 भेदा॥ कहे कवीरसो जोत अछेदा॥ उतम
 प है पंकी माला॥ बिंधनि बार रची धरम
 सांला॥ ८०॥ कलसा अंकत पलं वधरी
 व्यसौ पारी कपुर तै भरीया॥ तब पान
 लेयन लिंघीया॥ अगंम बिस्तत हांसवदे
 या॥ ८१॥ सत सबुता मै लिखदीना॥ मि
 चार ऐकत हांकीना॥ अरु सागर मेरो
 स्थाना॥ त हां वैसे त चढाया पांना॥ ८२

सेतपांनकीप्रमरकाया॥सीपमांहिमांचुई
मिंतनाया॥भ्रमतपवनफिरैसंसार॥निरम
लहंसहोयेअसवारा॥४८३॥जन्मजन्म
कापापबूहाया॥तबहीतिनकावेगतो
राया॥४८४॥मिंत्रिणकातोडुवाका॥
ग्रासाबासामनकलेपना॥येदोसखाभूत
ग्राजहंसहंससंजमसंतिनकाहट
ऊठाजमकैमूढेयूक॥४८५॥तवपांनप्र
नादेदोसजांना॥भूक्तिहोयेहंसनिर्घाना
दांहिनछांकोधरमभ्रस्थाना॥बावेउरगद
नीजांना॥४८६॥ग्रागैचित्रगूपतिकोभा
रांनामलैनिजहंसउवारा॥उंठैघाटप्र
मासीकोटा॥हंसाउबरेनांमकीग्योटा॥४
८७॥सायीपुठे॥केतैपंछीकेतैबिछे॥केतै
बिलेबैग्राये॥कहैकबीरजोगूमिहै॥तेहं
सालोकहीजाये॥४८८॥चौपई४६॥
पांनदेहनिजहंसमूक्तावा॥ज्ञानभक्तिघट
मांहिसमावा॥घटकीएचैकहीविचारा॥जे
हीतैजीतैजमकीधारा॥४८९॥जपप्रसनां

॥सायीपु॥

४९॥ चोपड्ड ४७ ॥ मित्रसनांनका ॥

सनांनकराया किरसिनांन जोमांथोनि
वाया ॥ धनीके चरणचित्तचितवनला
या ॥ ४९ ॥ काकद्वैकवीरसुनौ धरमदास
होये उदासा ॥ सायीपु ॥

प्रति एक जोत है ॥ ममरनांमप्रसथी
सत कवी

॥ चोपड्ड ४८ ॥ मित्रव्यपनकावाके
कादीनासीलसंतोयले
यारासत

फेरी पुंहाई ॥ जलपवीत्रसंतनसख
गासमाहीपुरष

सेतपानकी प्रमरकाया ॥ सीपमां हिमां चुंड
मिंतनाया ॥ भ्रमतपवनफिरै संसारा ॥ निरम
लहं स होये असवारा ॥ ४८३ ॥ जन्म जन्म
का पाप बूहाया ॥ तब हीति न का वेगतो
राया ॥ ४८४ ॥ मित्रति एका तो डु बाका ॥
ग्यासा बा सामन कल्पना ॥ वेदो सरवा भूत
ग्या जहं मसं हंससं जमसं तिन का तूट
फंरा जमकै मू देखूक ॥ ४८५ ॥ तब पान प्रक
ना दे हो सु जांना ॥ भक्ति होये हंस निरखान
दां हि न छां को धरम मस्थाना ॥ बावे डुरग व
नी जांना ॥ ४८६ ॥ ग्या गौ चित्र गूपतिको भा
रा नांम लै नि जहं स उं वारा ॥ उं ठे घाट प्र
मासी को टा ॥ हंसा उं बरै नांम की ग्यो टा ॥ ४
८७ ॥ लायी पुठ ॥ केतै पंछी केतै बिछ ॥ केतै
बिलं वै ग्याये ॥ कहै कबीर जो गुरमि हौ ॥ ते
सा लोक ही जाये ॥ ४८८ ॥ चौपड ४६ ॥
पान दे हनि जहं समक्तावा ॥ ज्ञान भक्ति घट
मां हि समावा ॥ घटकी प्रचै कही विचारा ॥ जे
हीतै जीतै जमकी धारा ॥ ४८९ ॥ जप प्रसन

नकोमिंत्रसूनावौ॥बिनामिंत्रपांनीमतिपीवौ
बिनामिंत्रचरणामितमतिपीवौ॥मांन्डरूड
प्रदैकरिजीवौ॥४९०॥साथीपु३॥न्यगम
सरोवरविमलजलाहंसोपैठिनहायेका
याकंचनमनसंगना॥कमभूमभिटजाये
४९१॥चोपई४७॥मिंत्रसूनानका॥रू
कतिसागरसूनीरसंगाया॥धनीकं०प्रीन
सनांनकराया॥करसिनांनजोमांथोनि
वाया॥धनीकेचरणचित्तचितवनला
या॥४९२॥कदैकवीरसूनोधरमदीस
भवसागरसूहोयेईदासा॥रूया॥४९३॥
ग्राद०प्रतिऐकजोतहो॥ममरनांमग्रसथी
४॥चवदैभवननवैयंडुमै॥ऐकहीसतकव
रा॥४९४॥चोपई४८॥मिंत्रग्रुपनकवाके
निरभैपदकाचोकादीना॥सीलसंतोयलै
मिंजनकीना॥प्रेमप्रीतकाभयांजीयारा॥सत
रूकृत्तिमित्तजीवनहारा॥४९५॥सतरूक
तिकाफिरीडुंहाई॥जलपवीत्रसंतनरूयव
ई॥सर्वसंतनमित्तकीयाप्रजासामाहीपुरख

मोहि भेद बतावौ ॥ जेही तै होयै दं समस्त
वौ ॥ ५०८ ॥ कबीर उवाच ॥ तव समर्थ
सै कहै वैलीना ॥ ऐह मताहं मत्तं मसंकहै
ना ॥ जोई तनी विध्य नही ॥ विन आवै ॥ तो से
ज प्रारती प्रेम संग आवै ॥ ५०९ ॥ तीनुं कालम
प्रारती करै ॥ प्रातिमिंध्य संज्य विस्तारै ॥ सव
सेर मिष्टान मंगावै ॥ नरीयेर ऐक तहा अं
चटावै ॥ ५१० ॥ सवा सोपान सेत मंगावै ॥ स
चे कामै अन्य चटावै ॥ सात पांच तहां म
लगावै ॥ साधन की सेवा मन ल्यावै ॥ ५११ ॥
जैसी पीत सं प्रारती करै ॥ सोपानी भव सा
गतिरै ॥ पांच सुपारी ऐक धोवती धरै ॥ सत
गुरू की नव छावर करै ॥ ५१२ ॥ संधन तै ब
पीत बंधावै ॥ सत गुरू सरूप होये ज्ञान सं न
वै ॥ ज्ञान पढै अरु सब समजावै ॥ सब सं स
प्रेम मन भावै ॥ ५१३ ॥ परमदा उवाच ॥ जो
ईत नानही कसै कही हार ॥ ताको मो संकहो वि
चारा ॥ कबीर उवाच ॥ जोईत नानही बिन
आवै ॥ तो पदवी कडी हार न पावै ॥ ५१४ ॥

प्रारती ज्यो न ही कौसो तो दोये प्रारती से वा
 चित धरै ॥ फा गुन प्रोरुं भा इ वाष वान्ना दो
 प्रारती मति छो डो सू जाना ॥ ५१ ॥ सा षी ५५ ॥ पांन प्र वान्ना
 श्वाना देही ॥ बहारै मा सकै कम जो धो ही ॥
 दान सनान भक्ति जो होई ॥ धर म उ दे स म त
 संगति सं मोई ॥ ५२ ॥ सा षी ५५ ॥ पांन प्र वान्ना
 को भे द है ॥ सत गूर म हि मा जाना तै हे सा ने हे
 मुक्ति पदा सत स ह् प वान्ना ॥ चो प ई ५५ ॥ स न
 धर म दा समै तो हि बु जा व ॥ प्रारती म ता सब
 तान सू ना व ॥ अ छर सार प्रारती है सोई ॥ वि न
 स छर सब जाये वि जोई ॥ ५५ ॥ दा अ छर भे द ज्ये
 जानै अ गुणा ता कं काल न प्रा वै संगा ॥ प्रारती
 वं जंत भांति सं करै ॥ अ छर भे द हि दै न हि धै
 ५५ ॥ सा षी ५५ ॥ अ छर भे द जानै न ही ॥ वा ता क
 र्वनाये ॥ तो को क ही यो न मानाये ॥ जी व ही दै है
 निसाये ॥ ५६ ॥ चो प ई ५५ ॥ प्रारती भक्ति प्रोर
 अ छर सार ॥ प्रोर सकल है ऊं त प सारा ॥ ज्या
 कै अ छर की प चै होई ॥ प्रारती निज क दा
 है सोई ॥ ५७ ॥ प्रारती ज्ञान अ छर धु न्य गा

जै॥ मूलमित्रघटमादिविराजै॥ ताकीम
हिमातल्लैनकोई॥ कैसेसंतकहावैसोई॥
५२२॥ सोकण्हारप्रचरनिजजाना॥ से
रगरूसबभेयेषिससमाना॥ गरूसोईज्यो
चरजानै॥ ओरसकलप्रपुवांनै॥ ५२३॥
अक्षरभेदनजानैभाई॥ कैसेकरिकण्हार
रकहाई॥ कण्हारसोईसोजीवकृतारै॥ बि
नअक्षरसोनरकहीडारै॥ ५२४॥ सिषसक
लकण्हारसमेता॥ गरूनहीएहदगाजमदेत
बिनअक्षरगरुवाईकरही॥ धर्मरायेकैफ
दसोपरही॥ ५२५॥ कोटिजन्मनरकमैबास
सिषसमेतसबकीयानिवासा॥ इतनाभेदन
जानैप्रांनी॥ सोतोपेटकैकारनैज्ञानबयांनी॥
५२६॥ जैसेजगमैगगनैहारा॥ तैसेजानदे
सोकण्हारा॥ अक्षरकीपचैनहीपावै॥ अ
पप्रापमैगरुकहावै॥ ५२७॥ गरुनांमकब
रकोअई॥ निनकैपठैतरैकोनकहाई॥ गु
गरवागंगासैमजोई॥ अरकीमहिमागंगान
होई॥ ५२८॥ साधी५६॥ गरुनांमकबीरहै॥

रसकलहैसियाजैसैलंदीयोंमैगंगा। अत्रै
कंपरिषा। ५२९॥ चोपडपूत्र॥ धर्मदास
चा। ऐहसंन्यधर्मदासहिरषांनै। सतस
आधीनै। जन्मदंमाराखारुप्रजएजी॥
जन्मकोपापमिटगएजी॥ ५३०॥ तव
सकहैवैकजोरी। साहेबसंनैबिनतीऐ
कमोरी॥ एकसंसोमोराघटमाही॥ कैसे
छुटतर्नही॥ ५३१॥ भितलोकमैपाषं
वरमा। कैसेजीवहोयेनिहैकमा॥ तंम
येज्ञानसंनार्शिसिषपाषंडतज्योनहीजा
॥ ५३२॥ ताकोमोहिउपदेसबतावो
जीवहोयेमुक्तावो॥ कबीरउवाचा।
षंकीजीवकीभक्तिनहीहोईकेतैकम
करैपुंनसोई॥ ५३३॥ ज्याकैमनपाषंडनही
होई। सोहंसानिरमुक्तासोई। सोमुक्तागुरुब
षवाना॥ वचनरहेतपाषंरुतज्यशान
३४॥ जपतपज्ञानबहुंकरिजांनै। निम
धर्मबहुंभांतिबषांनै॥ जबलगनहीपाषं
जाइ। तबलैगगहूगम्यनहीवहैराई

जै मूलमित्रघटमाहिविराजै ॥ ताकीम
हिमातल्लैनकोई ॥ कैसे संत कहावै सोई ॥
५२२ ॥ सोकणिहार अछरनिजजाना ॥
गरुसबभेयेषिससमाना ॥ गरुसोईज्यो
छरजानै ॥ अोरसकलप्रषपवानै ॥ ५२३ ॥
अक्षरभेदनजानैभाई ॥ कैसेकरिकणिह
रकहाई ॥ कणिहारसोईसोजीवरुतारै ॥ बि
नअक्षरसोनरकहीडारै ॥ ५२४ ॥ सिषसक
लकणिहारसमेता ॥ गरुनहीऐहदगाजमदे
बिनअक्षरगरुवाईकरही ॥ धर्मरायेकैफ
दसोपरही ॥ ५२५ ॥ कोटिजन्मनरकमैबास
सिषसमेतसबकीयानिवासा ॥ इतनाभेदन
जानैषानी ॥ सोतोपेटकैकारनैज्ञानबयानी ॥
५२६ ॥ जैसेजगमैउगनैहारा ॥ तैसेजानहै
सोकणिहारा ॥ अक्षरकीपचैनहीपावै ॥ अ
पप्रापमैगरुकहावै ॥ ५२७ ॥ गरुनामकब
रकोअ्याई ॥ निनकैपठैतरैकोनकहाई ॥ पु
गरवागंगासमजोई ॥ परकीमहिमागंगान
होई ॥ ५२८ ॥ साखी ५६ ॥ गरुनामकबीरहै ॥

श्रीरसकलहैसिषाजैसैलंदीयामैगंगा। श्रैसै
कंपरिषा। ५२९। चोपड्पुत्रा। धर्मदासउ
वाचा। ऐहसंन्यधर्मदासहिरषानै। सतसह
आधीनै। जन्महंमारास्वारथजरेउ।
जन्मकोपापमिटगएनी। ५३०। तबधर
सकहैवैकजोरी। साहेबसंनैबिनतीऐ
कमोरी। ऐकसंसोमोराघटमाही। कैसेऊ
घुटतर्नही। ५३१। भितलोकमैपाषंड
धरमा। कैसेजीवहोयेनिहैकमा। तंमगरुहे
येज्ञानसंनार्शसिषपाषंडतज्योनहीजा
। ५३२। तकोमोहिउपदेसबतावो। ज्या
जीवहोयेमुक्तावो। कबीरउवाचा।
धंमीजीवकीभक्तिनहीहोईकितै-
करैपुंनसोई। ५३३। ज्याकैमनपाषंडनही
होई। सोहंसानिरमुक्तासोई। सोमुक्तागुरब
पवाना। बचनरहेतपाषंमतज्यज्ञान
३४। जपतपज्ञानबहुंकरिजांनै। निम
बहुंभांतिबषानै। जबलगनहीपाषंन
जाइतबलैगंगरुगाम्यनहीरहैराई

नसकूपसतगूर तैपावै। विनसतगूरको
भेदवतावै। ज्ञाननांमहैबीजसरूपा॥
विनाज्ञानसबजमकोरूपा॥ ५४ चज्ञा
नबीजप्रथमअस्सारा। ज्ञानबीजतैस
कल्पसारा। ज्ञानबीजतैदीपनिरमाई।
अमीअंकुरज्ञानतैपाई। ५४ ए। प्रथम
तहांपुष्पकोमंला। जेहीतैभरेसकलअ
सथूला। सोरैहैसूतिभयेउतपांनी। ज्ञान
बीजहैसबकीघांनी। ५५ अ। कुरभसहे
तधर्मरायेवरजोरा। सरतिनांमज्ञानीअ
नूसारा। जिनधर्मरायेकोमाथौतोराले
कतैदीननिकारवरजोरा। ५५ अ। विषम
रोवरधर्मविराजै। अतिअहंकारमह
बसगाजै। भांतिभांतिकैबाजनबाजै
पांचततगुनतीनविराजै। ५५ अ। ता
सकलसिष्टभुमाई। भयापसारोबिल
मनहीलाई। ऐहसबज्ञानकीयाउतप
नी। बाह्यएद्वीवैससइकीघांनी। ५
५३। ब्रह्मातैसबजातपसारा। चारब

मैं है अधिकारा ॥ व्याख्यान तै सकल प्रसन्न
 ब्रह्म संसारा ॥ ५५ ॥ ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म
 लकुं जानै ॥ तातै ब्रह्म जात ब्रह्म ॥ ब्रह्म
 ये ब्रह्म नही जानै ॥ सो ब्रह्म नही जानै ॥
 ५५ ॥ विना ज्ञान ब्रह्मै प्रज्ञाना ॥ प्रज्ञान
 मित्र जपै निज द्याना ॥ जाये त्री मित्र जपै त्रि
 राती ॥ प्रोर जानै नही ब्रह्म विद्वान् ॥ ५५ ॥
 जाये त्री जपै प्रति प्रतिमाना ॥ हंस तै कदा
 प्रोर को ज्ञाना ॥ गुरु मार्ग ची नै नही भाई ॥
 पटि पटि पंडित रहै भ्रष्टाई ॥ ५५ ॥ प्रज्ञानि
 पन प्रोर घट क्रमा ॥ जेद विचार साधै त्रि
 धरमा ॥ भक्ति ज्ञान नही जानै मया ॥ स्वर्ग
 विचार कहै ब्रह्म धर्म ॥ ५५ ॥ प्रिय पादा पि
 त्रिभ कुंदीना ॥ प्रप नै मल ॥ प्रक कार बड
 कीना हंस तो पत्र भक्ति लो लाई ॥ ऐह सम
 प्रोर भक्ति नही भाई ॥ ५५ ॥ ब्रह्म एक
 देव करै जिम नारा ॥ ब्रह्म धर्म नु पजे नु
 दे कारा ॥ हंस तो ब्रह्म कलन मै जाये ॥ हंस तै
 पत्र भक्ति लो लाये ॥ ५६ ॥ जीमै

ऊंतकरै अभिमान वैसगये सबनरकुं।
 तसद्वपुवांन ॥ ५८७ ॥ अथ स इव एवो
 रा ॥ चौपइ ५८ ॥ चारबुणमैस इ प्राधीन
 सेवाकरै भक्ति लोलीना ॥ यातै भक्ति सत
 रकी पाई ॥ चारबुनमैस इ अधिकार ॥ ५
 ८८ ॥ ब्रह्मगतिसेवा अन्नसरो ॥ कामकोव
 भपरिहरै ज्ञानभक्ति ज्याघटनाही होई ॥
 वतैस इ कहावै सोई ॥ ५८९ ॥ छत्र वडक
 रै मित्राई ॥ नितनितसंसोप्रेम अधिकार वै
 धर्मकुं विद्यसंपुजे ॥ सतधर्महि दैनहीस
 ५९० ॥ याहीतैस इ भक्तिवघांनै ॥ ब्रह्मलो
 मैसेवामांनै ॥ कलजगमांनिस इ अधिकार
 नीनधर्मको भयोसिंधारा ॥ ५९१ ॥ धिन्यस
 इ जोसेवाकरही ॥ अथोर्धिन्यज्योभक्ति
 वतरही ॥ धिन्यस इ जो ब्रह्मही जानादि
 गुं मानहोयेदीरघपहि चान्ना ॥ ५९२ ॥ स
 यीद्वै ॥ ऐहकरनीहैस इकी ॥ तंमसन
 धर्मदास ॥ सतगुरुचरणसेवाकरै ॥ अमरने
 कमैबास ॥ ५९३ ॥ चौपइ ५९ ॥ धर्मदास

मसुत्रप्रवृत्तारोतेपेक्षितिसतशरकीध
 तंमारपीछेबाह्यएतिरहै। तमारपीछेछ
 ॥५॥ तमारपीछेबंसुंरहै।
 चहोयेउचनुंरहै। अरबएशक्तिकुं
 ॥ ज्योसीतप्रसादीमादिचितल्याने॥५॥
 श्रीदत्त॥ अोरसकलसबवैसहोरेप्रसेह
 मजारै॥ कहैकबीरसोपऊंचैहै। ज्योदि
 करैबिचार॥५॥ चोपई६०॥ ऐंरुंरुं
 नोब्रएनकरलेषा। मूक्तिपठावैतमारपी
 या॥ अरुतंमारैसायासहदीपावै। बिना
 नहीसिषकहावै॥५॥ अरुकरनेदज
 प्रगा॥ ताकुंनहीकालप्रसंगा। बिज
 सबकुंडुषहोई। तंमारैसिषसबजाये
 ॥५॥ अोरसकलहैजसकीध
 ताकुंधर्मधीरहैमारा। धर्मदासनुंब
 तबधर्मदासकहैवैकजोरी। खांमीसुनो
 नतीएकमोरी॥५॥ तमदयालदयानि
 खांमी॥ कहोदयाकरिअंतरजांमी। तंमा
 वचनमूक्तिसबजैहै। हंमारोबंसकैरै

रकप्रहै॥६००॥ कबीरुवाच॥ तजस
द्वेष्यैसैकहैवैलीना॥ प्रबतमारैवंसकर
कहुंचीना॥ जेहीबिद्यमूक्तिकुंजैहैभाई
सोसबतोहिकहुंसमजाई॥६०१॥ प्रथमैत
ज्ञानमनलावै॥ सोसहजसमाधपमपदपावै
निरमोहीहोयेजगमैरहाई॥ मोहपीजगस
नहीकरहाई॥६०२॥ मानैतोसमताहोयेज्ञा
ना॥ सतहीजंमैसतपहिचाना॥ निहैचैना
मकबीरकोधरही॥ तिनसुकवसुंतरनही
करही॥६०३॥ प्रापाछोकनामचितधरही
सैदेहीसतलोकमैपगधरही॥ जोकहुमनमै
करैअहंकारा॥ निहचैजीवबुडैतैहीवा
रा॥६०४॥ सतभक्तिसंतनमनलावै॥ धिन्यल
छिमीसंतनकंपहावै॥ साधनकीसेवामन
लावै॥ बाढैभक्तिप्रमपदपावै॥६०५॥ सतव
चनसबहीसुकहै॥ सतसहृदिदामैरहै
सतछोकिन्योरनहीरावै॥ पुष्यछोडिअनंत
नहीभाषै॥६०६॥ ज्योईतनाचितनहीआ
वै॥ निहचैनरकसोपानीजावै॥ आपनैको

रकप्रद है ॥ ६०० ॥ कबीर उवाच ॥ तजस
देव प्रेसै कहै वैलीना ॥ प्रवत मा रैवंस कर
कहुंचीना ॥ जेही विद्यमूक्तिकुं जेहै भाई
सो सब तोहि कहुं समजाई ॥ ६०१ ॥ प्रथमै तो
ज्ञानमन लावै ॥ सो सहज समाध प्रमपद पावै
निरमोही होये जूगमै रहै ॥ मोहपी जूगस
नही करहाई ॥ ६०२ ॥ मानै तो समता होये ज्ञा
ना ॥ सतही जनि सत ॥ पहिचाना ॥ निहै चैना
मकबीर को धरही ॥ तिनसुं कछु संतर नही
करही ॥ ६०३ ॥ प्रापाछो मनां मचित धरही
सै देही सत लोकमै पग धरही ॥ जो कछु मनमै
करै अहंकारा ॥ निहं चै जीव बुडै तै ही वा
रा ॥ ६०४ ॥ सत भक्ति संतन मन लावै ॥ धिन्यल
छिमी संतन कं पदावै ॥ साधनकी सेवा मन
लावै ॥ बाढै भक्ति प्रमपद पावै ॥ ६०५ ॥ सत व
चन सब ही सुं कहै ॥ सत सहृदिदामै रहै
सत छै कि न्योर नही रावै ॥ पुष्य छै डिअनंत
नही भावै ॥ ६०६ ॥ ज्यो ईतना चितनही आ
वै ॥ निहं चै नरक सो प्राणी जावै ॥ आपसै को

धनहीमनमाही॥जोबोलेतोशानकीछां
 ही॥६०॥ज्ञानप्रकाशसतसद्वृत्तनावही
 बहोजीवनलोकपभावही॥तंमारैबंसंश्रु
 मीजोहोई॥तिनकैप्रभवऊत्तमनहोई॥६
 पप्रभकैकीयांभक्तिनहीहोई॥सातपी
 टीत्प्रभसमोई॥अष्टमीपीटीभक्तिप्रवा
 ना॥सद्वृत्तसारपीवैनिर्वाणा॥६०ए॥सातवा
 लकत्तमारैहोई॥वैवाक्यकप्रसिमानस
 मोई॥तातैभक्तिनहोयेनुजीयारा॥तिनकुं
 गुरकहैसंसारा॥६१॥तीनलोकब्रह्मसना
 जाई॥स्रगपातालमैरहैसमाई॥धर्मरायेता
 कीसूद्यपावै॥तवप्रपनाइतवैगपठावै॥
 ६१॥बहुत्तबहुत्तकरैतापावै॥सद्वृत्तारमि
 तौपावैनाई॥सद्वृत्तारज्याकैघटमाही॥तिनकै
 उत्तमिकटनहीजांही॥६२॥अप्रोरत्तमारैबं
 सकौहोई॥बिजानामबंचैनदीकोई॥प्रम
 भांमज्याकैमिलगया॥सोप्रांनीनिरससैभ
 जाहीघटप्रगासा॥तहां
 अबसा॥सद्वृत्तजानैबंसक

हावै॥ सोकैसेकरिलोकसिधावै॥ ६१४॥ ला
वी ६४॥ अमरसहपावैनही॥ रहैअरयपिछी
ताये॥ कहैकबीरविचारकै॥ कैसेकरिचो
रासीनहीजाये॥ ६१५॥ चौपई ६१॥ धर्मदासउ
वाच॥ तबधर्मदासबिनवैकजोरीसाहेव
सुनौबिनतीऐकमोरी॥ जोतंमकहोसोइप
वांना॥ परकासहसत्यकरजाना॥ ६१६॥
हंमजान्यापूर्यगुरमांही॥ तंमतेपुष्यभेदक
बनांही॥ हंमारैजीवपुछ्याप्राई॥ हंमबूजैस
बतंमारैमांई॥ ६१७॥ तंमसाहेवहोसबस
षदाई॥ तंमबिनकौनहंसमुक्ताई॥ हंमारै
बालकतंमारैपीछै॥ तंमारैनामसकलज
गसीछै॥ ६१८॥ कबीरउवाच॥ तबसाहे
वअप्रसैकहैबूजाई॥ बालकतंमारामृत्ति
कुंजाई॥ बालकजोकोईतंमारहोई॥ भ
क्तिहोयैउजीयारासोई॥ ६१९॥ जोबालक
साहेवकौहोई॥ ताकुंमाथोनिववैसबको
ई॥ तिनतैभक्तिमिजादाहोई॥ सहसारचल
हैनिजसोई॥ ६२०॥ प्रोहृतमारोबालक

नादकोकोशतिनव केनामने ॥

दकैवालकसहृदी जाना ॥

लोकपहिचाने ॥ ६२५ ॥

राशीमानगुमान ॥

हैमसंनही ॥

जाना ॥ ६२५ ॥

पुनपायेदौकस

प्रपवांनापाया

॥ ६२३ ॥

है प्रेसकलसव

है तेही जमसहृ

धर्मदासतेदहृ

पारातंमविनाहृ

कलपवांनापति

नहृदीजाना ॥

रंमधरमदास

ताखोडिसवदे

सहसमाना ॥

चरतमनद
सकहोमोसत

हावै॥ सोकैसेकरिलोकसिधावै॥ ६१४॥ सा
षी ६५॥ अमरसहपात्रैनही॥ रहैअरुणपिछी
ताये॥ कहैकबीरविचारकै॥ कैसेकरिचो
रासीनहीजाये॥ ६१५॥ चौपई ६१॥ धर्मदासउ
वाच॥ तवधर्मदासबिनवैकजोरीसाहेव
सूनौबिनतीऐकमोरी॥ जोतंमकहौसोइप्र
वाना॥ परकासहसत्यकरजाना॥ ६१६॥
हंमजांन्यापर्यगुरमांही॥ तंमतेपुर्वभेदक
हनांही॥ हंमारैजीवपुष्पाप्राई॥ हंमबूजैस
बतंमारैमांई॥ ६१७॥ हंमसाहेवहौसबस
यदाई॥ तंमबिनकौनहंसमुक्ताई॥ हंमारै
बालकतंमारैपीछै॥ तंमारैनामसकलज
गसीछै॥ ६१८॥ कबीरउवाच॥ तवसाहे
वअसैकहैवजाई॥ बालकतंमारामंक्ति
कुंजाई॥ बालकजोकोईतंमारहोई॥ भ
क्तिहोयैउजीयारासोई॥ ६१९॥ जोबालक
साहेवकौहोई॥ ताकुंमाथोनिववैसबको
ईतिनतैभक्तिमिजादाहोई॥ सहस्रारचल
हैनिजसोई॥ ६२०॥ प्रोक्तमारैबालक

॥ जूटी बात भई

आरौ सब ब्रह्म इतीया नही कोरी ॥ ३
रीया भ्रम मिट गयो सोई ॥ ६७ ॥ वेदसा
त्र ऐह सब बघानी ॥ बचन बिलास कहै
सब जानी ॥ ब्रह्म सांख्य मिल जगडा की
या ब्रह्म रूप का जून ही चीला ॥ ६८ ॥
बनितो जोड़ जा होई ॥ भ्रम बाद परै सब
कोई ॥ अथं कत ब्रह्म सबे कोई कही ॥ अथ
उत ज्ञान मै निस दिन रहै ॥ ६९ ॥ अता की ब
कहै त प्रवांना ॥ जूटी बात न छौं मै अ
तांना ॥ आप ही कहै आप ही नांही ॥ अ
प ही थापै आप ही ठगंही ॥ ७० ॥ अथ
की मै कर कही ये भाई ॥ सब ब्रह्म रहै स
भाई ॥ आप ही मुख आप ही जानी ॥ आप ही
कथा कहै बघानी ॥ ७१ ॥ आप ही ऊंच
री च दिख लावै ॥ आप ही जानी होये ज्ञान
रनावै ॥ आप ही बुजै आप ही नांही ॥ आप
ही आप मै सकल समांही ॥ ७२ ॥ आप ही
कै ब नांही ॥ जप तप ज्ञान आप

धरहोसभारी॥६६५॥ प्रथमअहारसतगु
नज्योकही॥सतगूनरूपभोजनअन
सही॥उंतमतां उलप्यानधराया॥उत्त
चोकापवीत्रवनाया॥६६६॥पानीछान
तहांधराया॥सहबोलैजोअबिलाया॥जे
तिकठुद्याहोयेमनभांती॥तेतीकरैधरैम
नखीती॥६६७॥सहबोलैप्रसादचढावै॥
भोजनलैअधिकरुचनुपावै॥ऐहमिस
करैसंतपदज्ञाना॥योगरालेईअधिक
सखमाना॥६६८॥दसवैभागअभ्यागति
कुंदेही॥तवप्रसादपवीत्रकरलेही॥
अभ्यागतिकुंदेननहीपावै॥राजसीध
रमहोयेनरकहीजावै॥६६९॥सतगू
नधर्मठुटतवजाई॥राजसीधर्मरहेउ
हिराई॥सतगुनधर्मकरैप्रतपाला॥निह
चैपावैलोकरीसाला॥६७०॥चेतनपुरुष
मेजायेसमारी॥इबद्याभावसवैमित
जाई॥राजगूनतमिगूनसतगूनकहीये
सबमितजायेज्ञानसोलहीये॥६७१॥

बकुंभुमककरिडारौ। ऊंटीवातभई
 आरौ। सबबुल इतीयानहीकोरी॥ इ
 तीयां भूममिटगयो सोई॥ ६७८॥ लेदसा
 सु ऐहसबवयानी॥ बचनविलासकहै
 सबजानी॥ छुं साह्यमिलजगडाकी
 मा बुद्धरूपका ऊंनही चीना॥ ६७९॥
 चीनैतौ जोइ जाहौरी। भूमवाटपरैसब
 कोई॥ अथंरुतबुहसबकोईकहै। अथं
 इतज्ञानमैनिसदिनरहै॥ ६८०॥ ताकीव
 तकहैतपवाना॥ ऊंटीवातनछौंमै अ
 ज्ञाना॥ आपहीकहै आपहीनाही॥ अ
 पहीथापै आपहीनुंमंही॥ ६८१॥ मूरख
 कीमैकरकहीयेभासी। सबत्रबुद्धरहैस
 भासी। आपहीमूरखआपहीजानी॥ आपही
 कथाकहैवयानी॥ ६८२॥ आपहीऊंच
 नीचदियलावै। आपहीजानीहोयेज्ञान
 संनावै। आपहीबुजै आपहीनाही॥ आप
 आपमैसकलसमाही॥ ६८३॥ आपही
 मरणकरैवनाई। जपतपज्ञानआपठ

है राई ॥ अपही सिरएननिगूनमैबासा ॥
आपहीऐकअनेकतमासा ॥ ६७८ ॥ आ
पहीबाजीगरहोयेआया ॥ आपतमासे
आपभूलाया ॥ आपहीआपकुंचीने
नाही ॥ तातैभटकतफिरैमहिमाही ॥ ६७९ ॥
साही ॥ ६८० ॥ आपआपकुंचीनकै ॥ आपब
ह्यहोयेजाये ॥ आपनचीनैआपकुं ॥ पडैन
रकमैआये ॥ ६८१ ॥ चोपई ६८२ ॥ अकथक
हांनीकहीनजाई ॥ आपअवतिहोयेकथासं
जाई ॥ आपहीमानवमारूपबनाया ॥ ६८३ ॥ जो
येकरिजगतिदिषाया ॥ ६८४ ॥ ऐसेभाववि
धनैकीना ॥ तातैकोईनपावै ॥ चीनासतगुन
भक्तिज्ञानजिनचीना ॥ रजगूनतमगूनकीप
यामलीना ॥ ६८५ ॥ साही ६८६ ॥ आपआपकुं
चीनकर ॥ आपबह्यहोयेजाये ॥ कहैकब
रनिरदोषहोये ॥ बह्यसरूपकहाये ॥ ६८७ ॥
चोपई ६८८ ॥ तेहीबह्यसरूपकुंजाना ॥ ती
नसहंसारज्वकमाना ॥ कितहुंनदेखीये ॥ ६
जानांनु ॥ सबघटबह्यगवैहीगंनु ॥ ६८९ ॥

जिनकुं ज्ञानग्रनभैपकासात्तवसकल
कमकुंसहैजैविनासात्तवसकलकमस
हजहीमिटगयै।नांककुं ग्रायेनांकगयै।
ई८५।जैसैरहैतैसैहै सोई।दिलकोभूमभि
रगयोसोई।तवभूमकमकीछुटीग्राया
ऐकनांमभैरहैविसवासा।ई८६।नांमछोडि
ग्रोरनहीजांना।तीर्णव्रतमन ऐकलया
ना।आपहीतीर्थआपहीदेवा।आपहीआ
पलगावैसेवा।ई८७।आपहीमूर्तिपिंकाक
हाया।आपहीजात्रीहोये जात्रालगाया।आ
पहीमहिमासबकीकीना।आपहीलिटा
करिमिणालीना।ई८८।सखीईए।आप
सकलजुगव्यापीया।आपहीप्रलयअप
रा।आपजगतिर्नपजावै।आपहीदसअव
तर।ई८९।ओपईईई।आपहीदेवदैय
तसबमांही।आपहीजुधकीयोसबगंही।
आपहीमहाभार्यकराया।पांमंकुंसबजा
नखनया।ई९०।आपहीकैरूपांडवकहा
गा।आपहीदोक्षसवनकुंदाया।आपही

है राई ॥ अपही सिरगूननिगूनमै बासा ॥
आपही ऐक अनेकतमासा ॥ ६७८ ॥ आ
पही बाजी गरहोये आया ॥ आपतमासे
आप भूलाया ॥ आपही आपकुं चीनै
नाही ॥ तातै भटकत फिरै महिमाही ॥ ६७९ ॥
सायी ६७ ॥ आप आपकुं चीनकै ॥ आप ब्र
ह्म होये जाये ॥ आपन चीनै आपकुं ॥ पडै न
रकमै आये ॥ ६८० ॥ चोपई ६८ ॥ अक एक
हांनी कहीन जाई ॥ आप अष्टति होये कथासं
जाई ॥ आपही मानवमारूप बनाया ॥ उजा हो
ये करि जगति दिषाया ॥ ६८१ ॥ असे भाव वि
धनै कीना ॥ तातै कोईन पावै चीना सतगुन
भक्ति ज्ञान जिन चीना ॥ रजगूनतमगूनकी
यामलीना ॥ ६८२ ॥ सायी ६८ ॥ आप आपकुं
चीनकर ॥ आप ब्रह्म होये जाये ॥ कहै कब
र निरदोष होये ॥ ब्रह्मसरूप कहाये ॥ ६८३ ॥
चोपई ६५ ॥ तेही ब्रह्मसरूपकुं जाना ॥ ती
नसहंसार ऊठकमाना ॥ कित ऊन देषीये उ
जानां ॥ सबघट ब्रह्मगवैहीगं ॥ ६८४ ॥

कमकुंसहै जै बिना सा तब सकल कमस
 हज ही मिट गये ॥ नांक कुं प्राये नांक गये ॥
 दृष्ट पा जै सै रहै तै सै है सोई ॥ दिल को भ्रम मि
 ट गयो सोई ॥ तब भ्रम कम की छुटी ॥ असा
 ऐकनांम मे रहै बि सवासा ॥ दृष्ट नांम छोडि
 ओर नही जाना ॥ तीर्थ ब्रत मन ऐकल अं
 ना ॥ आप ही तीर्थ आप ही देवा ॥ आप ही अ
 पन गावै सेवा ॥ दृष्ट ७ ॥ आप ही मूर्ति पिंका क
 हाया ॥ आप ही जात्री होये जात्रा लगाया ॥ अ
 प ही महिमा सब की कीना ॥ आप ही निवा
 करि मिथ्या लीना ॥ दृष्ट ८ ॥ साक्षी दृष्ट ९ ॥ आप
 सकल जूग व्यापीया ॥ आप ही अलख अत्र पा
 रा ॥ आप जगतिर्नुप जावै ॥ आप ही दस अत्र
 तरा ॥ दृष्ट १० ॥ ओपई दृष्ट ११ ॥ आप ही देव दैय
 मोही ॥ आप ही जूध कीये

आप ही दौलत सब नकुं

हहकारसरूपा ॥ आपहीराजकरैसबको
भूपा ॥ ६५१ ॥ आपहीमलाब्ररादोयेनांउं ॥
आपहीआवैभवकैगंउं ॥ आपहीचेराहो
येसेवालाई ॥ आपहीपिभूतहोयेकथासं
नाई ॥ ६५२ ॥ आपहीसूनेआपहीकहैआ
पाजानबुजैजठहोयेरहै ॥ आपहीरावहो
येन्यावचूकावै ॥ आपअन्यावआपसमज
वै ॥ ६५३ ॥ आपहीहेतआपहीउंपादी ॥ आ
पहीघाटाओरमीगस्वादी ॥ आपहीसून्य
समधलजाई ॥ आपहीरागरसनालैजाई ॥ ६५४
आपसकलहैवेदपुरांना ॥ आपहीपो
थीआपबघांना ॥ आपहीबुझंसास्त्रबना
याबादबिबादकरिजानसंनाया ॥ ६५५
आपहीजीतैआपहीहारै ॥ आपहीनरै
आपहीनारै ॥ आपहीजुजैआपहीमौर
आपहीसहायेकआपहीउंबारै ॥ ६५६
६ ॥ साखी ॥ ऐसीमहिमाबुद्धकी ॥ कहै
तांकहीनजाये ॥ ऐकअनेकमैरमरहा ॥ ६
टघटरहोसमाये ॥ ६५७ ॥ चौपईदी ॥ धर

तमज्योक्कहैने एकब्रह्मसमा

एहजांना॥ कबही ज्ञांना

रूपहोयेव्रतै ॥ कबही ज्ञानीहोयेकरिछ

दिएंजाकबहीकहैएहब्रह्मसमांना॥ कबही

राजभिठकभयेमांना॥ ब्रह्मरूपकाहैअपे

कीना॥ सोसां देवमोहिवतावो चीना॥ ६॥ ए

कबीरुंवाच॥ कहै कबीरसूनाधर्मदास

याहीकोभेदकहुंतोहिपासा॥ ब्रह्मरूपहैव

जसमांना॥ पारब्रह्म अंकुरप्रवांना॥ ७००॥

ताहीमांदिपुत्रदोयेकीना॥ एकसगतिऐव

सबकुचीना॥ मूलबीज ऐकसोसबजांना॥

पुष्यकतिदोयेनांमवयांना॥ ७०१॥ तासां

पांचमारनिरमाया॥ प्राकासआदिदेसब

नाया॥ प्रथमहीवायेरूपजोकीना॥ वायेवै

मथतेजधरदीना॥ ७०२॥ तेजकैमद्यपानी

पजाया॥ पानीकैमिद्यप्रथवीसमाया॥ जै

बीजतैबिह्ननिरमाया॥ तैसेप्रभूसकलवन

या॥ ७०३॥ अैसेउतपनसबकीहोईधोय

मैसबगयैबिगोई॥ सतगुरज्याकुंदयाक

हेहकारसहपा ॥ आपहीराजकरैसबको
भूपा ॥ ६५१ ॥ आपहीभलाबुरादोयेनांनुं ॥
आपहीआवैभवकैगंनुं ॥ आपहीचेराहो
येसेवालाई ॥ आपहीपिंरुतहोयेकथास
नाई ॥ ६५२ ॥ आपहीसूनेआपहीकहैआ
पाजांनबुंजैजठहोयेरहै ॥ आपहीरावहो
येन्यावचूकावै ॥ आपअन्यावआपसमजा
वै ॥ ६५३ ॥ आपहीहेतआपहीनुंपादीआ
पहीघाटाओरमीगखादी ॥ आपहीसून्य
समधलगाई ॥ आपहीरागरसनालैगाई ॥ ६५४
आपसकलहैवेदपुरांना ॥ आपहीपो
धीआपबषीना ॥ आपहीबुंसात्रिबना
याबादबिबादकरिजांनसूनाया ॥ ६५५
आपहीजीतैआपहीहारै ॥ आपहीनरै
आपहीनारै ॥ आपहीजुंजैआपहीमौर
आपहीसहायेकआपहीनुंबारै ॥ ६५६
६ ॥ साखी ॥ ॥ ऐसीमहिमाबुद्धकी ॥ कहै
तांकहीनजाये ॥ ऐकअनेकमैरमरहा ॥ व
टघटरहोसमाये ॥ ६५७ ॥ चौपईदी ॥ धर

दसर्जवाच॥ तमज्योकहै नो एकब्रह्मसमा
ना॥ जीवसरूपका ऐहजांना॥ कबही अज्ञान
रूपहोयेव्रतै ॥ कबही ज्ञानीहोयेकरिथरतै
ईए॥ कबहीकहै ऐहब्रह्मसमाना॥ कबही
राजभिद्वकभयेमाना॥ ब्रह्मरूपकाहै अैसे
कीना॥ सोसादेवमोहिवतावो चीना॥ ईएए
कबीरर्जवाच॥ कहै कबीरसुनौधर्मदासा
याहीको भेदकहुंतोहिपासा॥ ब्रह्मरूपहैवी
जसमाना॥ पारब्रह्म अंकुरपुवाना॥ ७००॥
ताहीमाहिपुत्रदोयेकीना॥ एकसगति एक
सबकुचीना॥ भूलबीज एकसोसबजांना॥
पर्यपकतिदोयेनांमबद्यांना॥ ७०१॥ तांमांही
पांचमारनिरमाया॥ आकासआदिहैसबब
नाया॥ प्रथमहीवायेरूपजोकीना॥ वायेकै
मथतेजधरदीना॥ ७०२॥ तेजकैमद्यपांनीउ
पजाया॥ पांनीकैमिद्यप्रथवीसमाया॥ जैसे
बीजतैबिद्वनिरमाया॥ तैसेप्रभूस
या॥ ७०३॥ अैसेउतपनसबकी
मैसबगयैविगोई॥ सतगुरज्या

ना ७१७ ॥ कवन बोलता समर्ण बना ॥ कौन
 सहले भ्रावन जांना ॥ विना बीज कौं जाव
 न ज्यामै ॥ विना अंक कौं अंक पहि चानै ॥
 ७१८ ॥ सायी ७५ ॥ कवी रुंवा चा ॥ विना अं
 क कौं वीरवा ॥ विना मांडी कौं फुला ॥ विना
 नाल कौं कवल है ॥ विना मूल अस्थूल
 ७१९ ॥ चौपई ७० ॥ हे संतो तं म कहौ विच
 रा सेत मूल पां पडि डारा ॥ तामै अग्र की
 वास सहार्ई ॥ उं वै अग्र धार चलि म्हाई
 ७२० ॥ ये तै तहां कवीर धर्म दासा बही
 यां स्त सृक्तीर देवासा ॥ ऊंठी वात ज्यो
 चल छांनी ॥ निरछीर निरवार करि जांनी
 ७२१ ॥ सबत्र ब्रह्म रहौ भूपूरी ॥ बाहिर
 भीत्र तत हजरी ॥ उजा कोई नही देखै सो
 ई सतपुष्य ज्यो कै घट होई ॥ ७२२ ॥ ज्याकुं
 सतगुर दया कीना ॥ अमर मूल तिन पाय
 चीना ॥ सतगुर सांच ऊं सव होई नही
 मानै जड मूर्य सोई ॥ ७२३ ॥ तं म धर्म दा
 स जांन सून लेहौ ॥ सत्य सीयापन हंस कुं

देहौ मिथ्याज्ञान जोहंमर्जुप देसौ तोन
 हीपावौ लोकप्रवैसौ ७२४ जोहंम चाहोम
 पनाकाजा सबहंसनकुंसद्वर्जुपराजा जो
 कोईसद्वसंनैहमसेनी सोनिहंचेहोयेहंस
 कीपांती ७२५ ज्याकुंसतज्ञाननिजश्याया
 सोहंसानिरमोहकभया साहेवसेवगए
 कहोयेजाई जैसेकंचनश्रवटमिलाई
 ७२६ इतीयाभावमिटगयासाई जीव
 बह्यएकहोयेजाई संसमितैश्रमरपद
 सहीये श्रमरमूलकोसोजसलहीये ७२७
 श्रमरमुखसतगुरसपावै बिनसतगुरसब
 मूलगुमावै ततभेदनहैश्रककोपाया त
 तैएकएकजोडिढाया ७२८ कहैकवी
 रसूनौधर्मदासा श्रैसा भेदकरौश्रकासा
 जोहंमएहभेदसंसारसंनानौ तोसद्वसंसा
 रलोकलैग्यावौ ७२९ तुंमकुंदीनमिं
 सहिदानी ज्याकुंदयाकहौचित्तजानी
 सोईमूक्तिजीवकोईपावै बिनाश्रकचौरा
 सीजावै ७३०

ना ७१७ ॥ कवनबोलतासुमर्णबाना ॥ कौन
सहलेआवनजांना ॥ विनाबीजकौजाव
नज्यामै ॥ विनाअंककौअंकपहिचानै ॥
७१८ ॥ सायी ७५ ॥ कबीरउवाचा ॥ विनाअं
ककौवीरवा ॥ विनामांडीकौफुला ॥ विना
नालकौकवलहै ॥ विनामूलअस्थूल
७१९ ॥ दोपई ७७ ॥ हेसंतोतंमकहौविच
रासेतमूलपांणुडीडारा ॥ तामैअग्रकी
वाससुहाई ॥ उंठैअग्रधारचलिआई
७२० ॥ यैतहांकबीरधर्मदासा ॥ बही
यास्तसूक्तिरदेवासा ॥ ऊंठीबातज्येदि
बलछांनी ॥ निरछीरनिरवारकरिजांनी
७२१ ॥ सबत्रबहारहैभूपूरी ॥ बाहिर
भीत्रततहजरी ॥ उजाकोईनहीदेयैसो
ई ॥ सतपुष्यजाकैघटहोई ७२२ ॥ जाकुं
सतगूरदयाकीना ॥ अमरमूलतिनपाय
चीना ॥ सतगुरसांचऊंसबहोई ॥ नही
मानैजडमूर्यसोई ७२३ ॥ तंमधर्मदा
सज्ञानसूनलहै ॥ सत्यसीयापनहंसकुं

देहौ मिथ्याज्ञान जो तूं मर्नुप देसौ तो न
 ही पावौ लोक प्रवैसौ ७२४ जो तूं मचाहो
 पनाकाजा सब हंसन कुंसद्वर्णपराजा जो
 कोई सद्वृत्त नै तूं मसेती सो निहं चै होये हंस
 की पांती ७२५ ज्या कुंसत ज्ञान निज श्रया
 सो हंसानि रमोत क भया साहेव सेव ग ए
 कहोये जाई जैसे कंचन अत्रवट मिलाई
 ७२६ इतीया भाव मिट ग्या ताई जीव
 बह्य ऐक होये जाई संसमिटे अमर पद
 सहीये अमर मूलका सो जस लहीये ७२७
 अमर मूल सत गुर सपावै विन सत गुर सब
 मूल गुमावै तत भेद न है अक को पाया ता
 तै ऐक ऐक जो डिढाया ७२८ कहै कबी
 र सुनौ धर्म दासा जैसा भेद करौ प्रकासा
 जो तूं म ऐह भेद संसार सुनावौ तो सब संसा
 र लोक लै आवौ ७२९ तुं म कुंदी न मित्र
 सहिदानी ज्या कुंदया कहौ चित्त जानी
 सोई मूर्ति जीव कोई पावै विना अंक चौरा
 सी जावै ७३० मुक्ति भेद जो पावै प्राणी

सद्व्यं कब्रह्मसहिदांनी ॥ रजगुनतमगुन
तैः प्रागैकहीये सतगुनधर्मकीपचैलहीये
७३१ ॥ सतगुनधर्मकापावै भेदाकहैक
वीरतबहंसप्रच्छेदा ॥ धर्मदापुर्ववाच ॥ तब
धर्मदासबिनतीअनुसारी ॥ हैसतगुरमैतम
बलीहीरी ॥ ७३२ ॥ कवीरुर्ववाचसतगुर
ताकुंदयाकीना सकलविस्तकौपायोची
ना ततमांदिनहैसतदियावै हिदामाहि
अनहदकंपावै ७३३ ॥ ओरुताकुंआ
गैअसबतावै लखदीरघप्रमपदपावै
ओरुपूरन ज्ञानजाहीघटहोई सतगुरभे
दकंपावैसोई ७३४ ॥ ओरब्रह्मज्ञानवि
नरुक्तिनहोई कैसोसंतकहावैसोई
नामहोमिओरनहीजानै तीर्थवृत्तएक
नहीमानै ७३५ ॥ ओरसकलधोयाक
जानै सतनामअबिनासीमानै धोयाजो
गजिगतपकीना धोयादानपुन्यकरतीना
७३६ ॥ धोयैकमकरैससारा धोयारूपजक्ति
अविस्तारा धोयासकलपुरांनबखानै धोया

वेदसाहस्रसबमानै ७३७ धोयासाधीपदद्वै
 भाई धोयाकद्वैकद्वैप्रथसूनाई प्रथमधोय
 साचकरमाना बुकतैधोयाकरिजांना ७३८
 जैसेसिरगुणतैनिरगुणपहिचांना निरगुण
 दान्यसिरगुणकाऊंमाना निरगुणसिरगु
 एद्वैर्नमिदगया आदिबुहसंप्रचाभया
 ७३९ तंमधरमदासनिजमतिस्नलेहौ
 धोयैसंसैचित्तमतिदेहौ प्रथमभक्तिरूप
 कोजांना ॥ तहीपाछैतततवयांना ॥ ७४०
 धर्मदास उर्वाचजवत्तंमततसूनावौखा
 मी ॥ जांनहोयेउरंमंत्रज्यामीकवीर उर्वाच
 जववैहैततहिदामैअद्वै तवसबधोया
 बुनसूनावै ७४१ तवहीततअपनाकरि
 जांनै सतगुरकुंतवहीपहिचांनै तवही
 गरूसिषसबकोई सबमैदेयीयेतंमही
 सोई ७४२ गरूसिषएककरिजांनै डंजी
 वातचित्तनहीअंनै जवतिकडजाभाव
 हैज्याकै ॥ नहीगरूनहीसिषहैत्याकै ॥ ७४३
 साधी ७४४ गरूसिषकीमहिमा कद्वैकवी

पहीमनवारूपकहावै॥ आपहीउजाभा
वसनावै॥ ७५७॥ आपहीबचनबचननही
आवै॥ आपबचनकहैजगसमजावै॥
आपअरूपरूपनहीकोई॥ आपहीसक
लरूपहैसोई॥ ७५८॥ आपहीसिरगूण
निरगूणकहीये॥ ज्ञानगमतेऐहमतिल
हीये॥ आपहीज्ञानमूर्तिकैदाता॥ प्रथ
मबोलेविष्णुता॥ ७५९॥ कहैकबीरसं
नौधर्मदासा॥ औसाज्ञानकरूपकासा॥
तबधर्मदासविन
तीअनूसारीहेसाहेबमैतंसबली
दारी॥ ७६०॥ ऐहमतिअगममोहिसं
नवौहिदाकंवत्यजोमोरजुडावौ
ऐकवातमैपुछुगूसोईसोईकहौ
ज्यामैससैजाई॥ ७६१॥ तमसबबहु
कहैदियलाया॥ मरैमननिहचैसो
आया॥ औरनकुंकहाकहुगसोई
ऐहतौज्ञानकह्योनहीजाई॥ ७६२॥
मैजांन्यासबतमारीदया॥ औरजीव

नही सर्वपती आया ॥ अब ता कर मोहि
 कहौ नुपदेसा ॥ जोह सन कुंकुं संडे सा
 ७६३ ॥ कबीरुं वाचा ॥ हे धर्मदास तो ही
 ज्ञान सुनानुं जो मो नही सो हस को भ
 ७ ॥ बुद्ध ज्ञान ज्या कौ घट होई ॥ अमर
 ककुप ऊं चै सोई ॥ ७६४ ॥ तब कबीर
 से कहै बजाई ॥ तं मनुं कौ न संसै है भाई
 तं म तो अपनाहं सनुं बारा ॥ ओरु को कौ
 न है भारा ॥ ७६५ ॥ उहा ॥ ७६६ ॥ सब कौ तार
 न समर्य है ॥ कहै कबीर बिचाह ॥ तं म बं
 सै कौ न है ॥ अपनां करो सुं बारा ॥ ७६७ ॥ लोप
 ७६८ ॥ सत गुरु लीन जक्ति कौ भारा ॥ ते ही क
 रिके सिष्टुं बारा ॥ जहां सत गुरु चित्त वै चित
 तब निहं चै हं सलोक पं लं चै जाई ॥ ७
 जब ऐह सिष्टुं कीया प्रजासां ॥ अनंत
 ७ ॥ अज ॥ अं अनंत हं समंता
 सत लोक मै आन समाई ॥ ७६९ ॥ तं म बुं क
 ओर संसै नां ही ॥ अपनाहं स करो मंता ही
 ७ ॥ अचर सारा सोहं

या ७८३ सतलोकतै आगे चलगाएने अच
 रजसेलतहां एक भएने सो अचरजमोहिक
 हौन जाई तमपुछौ तो दे ऊं च ताई ७८४ अ
 सी बात का ऊं नही जाना किन ऊं न पुछी का
 ऊं न बघाना तं मधर्मदास प्रमदत मोरा सून्यौ
 ज्ञान ऐह दीपक अजोरा ७८५ के तै कसत
 लोक मै देया और पुष्य पुरात्म बडु तहं मपेया
 अै सो लोक होये ब्यौ हारा अै सा पुष्य ऐही
 बिस्तारा ७८६ तहां वहां देया सूर्ति सुभा
 ई जिन वहां हं म कुं दीन पठाई उहा ७८७ त
 हं वहां देया सहज ही अनेक धूने अपारा
 कहां लग कहिये गनती सून धर्मदास बिस्ता
 रा ७८७ जो कछु आवै गनती ताको है स
 बनासा वै है अने गनित के सै गिनै अै सै शब्द
 प्रकास ७८८ जो फई ७९ बचन भेद करिक
 था सुनाई जेही तै तं मारो मनपती आई बह्य
 अलेख लिख्यो कि मजानी अघंडत कहै करि
 ज्ञान बघानी ७८९ जहां तिक गंम ज्ञान की
 होई तहां तिक बिन सै रहै न कोई जहां ति

कसोभोसुनो अपारा जो देयो सो भयं विचार
 ७ए० ॥ ओर कहै सो इतीया होई। इलीया भयम
 मिटगया सो प्राणै कब ह्य इतीया नही कोई कि
 से उत पुन्य कहै ये सोई। ७ए१ ॥ इहा ८१ नही उ
 त पुन्य नही प्रलो। नही आवै नही जाये। उही गिन
 त नही अलि गिनता। एह सब मनसस जाबो। ७ए
 चो पई ७पा ॥ धर्मदास मुंजा चा। हे स मर्थ लम म
 गम्य अपारा तं मारी ह यां आवा गि वन निवारा
 त्व धर्मदास पुछे कि जोरी सलो खं मी वितती। ए
 क मेरी ७ए ३ ॥ निहं चै ज्ञान लंग मो हिर नाका नि
 हं चै प्रेम मै तं म तै पावा। एक ब च ज खिन ती सुनो
 स्वामी सोई वा त पु सु अं उ ज्यामी। ७ए ४ ॥ आवा
 न क वन विध्य होई। सो सा देव मो हिक हो विलो
 शी क बी र उ वा चा। त व सा देव कहै वै अ नू सा
 र पा चं भू तं का फु त ता स वारा ७ए ५ ॥ ता मो
 ही प्र ग ट जो आप सं माना। त्रि ग न रूप करि आ
 त्त ज्ञाना। उ वं स स अ रू रूप सं भानु। इ न मै म
 न राजा करि पानु ७ए ६ ॥ ता तै जी वं बु ध्य है भई
 अ व ग ति ग ति मे रहै भू वा ई। आप ना रूप आप

मन ही चीना ॥ तातै आवा गिवन करतीना ॥
७ए ॥ ना कोई आपाना कोई गया ॥ मन कै भ
र्म तै जटवत भया ॥ मन ही जानी मूर्ख कही
ये ॥ मन ही ब्रह्म रूप होये लहीये ॥ ७ए ८ ॥ म
न को ऐह सकल पसार ॥ पाप पुन्य मन ही बि
स्तार ॥ मन ही मोह भाव नै प जावै ॥ मन ही आ
स त्रि दशात्मा वै ॥ ७ए ९ ॥ मन ही देव देहा पसा
र ॥ मन ही पुजे मन ही पुजारा ॥ मन ही नारी
पुर्व करि जां ना ॥ मन पुत्र मन बाप बयां ना ॥
८ ० ॥ उदा उदा ॥ कहै कबीर ऐह मन है ॥ म
न को सकल पसार ॥ बुझि कै सब समाईये ॥ त
ब आगे ब्रह्म दी दार ॥ ८ १ ॥ जो पड़े ० ६ ॥ हे
म आगे जो दीया पयां ना ॥ जहां देखी तहां सं
त समाना ॥ अक्षर ऐक सब मै देया भाव अ
नेक करै कौलेया ८ २ ॥ तब हंम चलै अप
नै अस्थाना ॥ तब नै रध लोक संकीया पीया
ना ॥ मारग बिच अच जीवरु देया ॥ ताकी
सो भा कहु बिसेया ८ ३ ॥ अद भूत लीला
बनी न जाई ॥ प्रेर कहं संन्या संकोपती ॥

संनधर्मदासमैतोहियंजाउं, अकथडुं
थासंजाउं ८०५ तहांदेष्यो कबीरदेवो लो
सहृउं वैतहां रहंसि सौंया ८०५ संस्यक
ष्यो देसां तहांनेकनव्यापैकहैसा ८०५ हं
जान्यो कै हं मही कबीरा जहां देष्ये तहां कबी
रीरा तव चिंतमाहि जो कीज बिचारा ऐ
बीरसकलहैसारा ८०६ उजा प्रोर नदी
ई सरबत्रसत कबीरहै सोई सत कबी
भपुरां बाहिरभीत्रततहजरा ८०७ ॥ सार्ध
॥ हंम कबीरहंम कता ॥ २ सकलसि
मदास उजा मही देष्योये ॥ सतसबूपकास
८०८ ॥ चोषई ० ७ ॥ प्रोर नदी कबीर नदी ॥
दासा अक्षर एकघटमांनि निवासा बाही
जोसतपर्ये कहीये आदि अंत अक्षरहोय
स्वीय ८०९ अक्षरमूल प्रोर सबडारा सा
षरमेनी कथा बिस्तारा कथा कहै कर शान
सुनया ऐहमांति संसार बुजाया ८१० जि
ज्याति नधोषा माना सकलबातमि
प्याकर जाना मिप्याबाद छोमि जि नदीना

समजाव वचनभावमै सब ज्यो प्रावा ८
२५ वचनभाव वचन किम कहीये सोख
मी मोहि भेद निरवहीये प्रथमतो तंम सह
सुना पीछे ज्ञानगंम्य सावा ८२६ अब
तंम कहौ वचन कालेया हंम सेवग किम क
रेयेया ऐक वचन कहीये गदै राई जेही तै
चित्त अनंत नदी जाई ॥ ८२७ ॥ कबीर उ
वचन व कबीर प्रसै कहै वैलीना ज्ञान
भेद सबही कही दीना सुन धर्म दास मैक
ऊं विचारी तेही तै निभ है सब संसारी ८
२८ प्रथम ही सिष होये जो आई ताकुं ज्ञा
न दिटा वौ भाई पान प्रवान की थित जब आ
वै तीन कुं भक्ति अंग सावै ८२९ जब
देखौ वा को डिट ज्ञाना ताकुं कहीये सह
सहि दाना सह मोहि जब निहं चै प्रावै तो
कुं ज्ञान प्राधाध सुनावै ८३० ज्याकुं रं
न दिव्य होये जाई ताकुं ज्ञान अवाध सुन
ई अनमै का जब करै विचारा सो तो ती
न लोक तै न्यारा ८३१ उ प्रज्ञान प्रगट ज

बहोई आत्मरामको चीनैसोई आपसद्व
हैसद्वकहावै आपहीबोलैअ बोलसं
८२ आपहीबचनसोअबचनक
हीये आपहीबोलैचूपकरहीये अबोल
बोलमिधकतारा हैसबमाहिसबतैन्यारा
८३ आपहीगरुआपहीसिया आपहीअ
पआपकुंदेया ऐहमतिजिनपावैकोईसरा
ज्याकुंसतगुरमिलीयांपुरा ८४ ॥ पुढा ॥
८५ ॥ देयासंन्याकहाव हुताआपहीरूप
अपारा आपनचिनिआपकुंनु हैसबस
सारा ८६ ॥ चोपई ८७ ॥ ऐहीमहिमातंसकं
कहैदीना बिरलासियकोईपावैचीना तंस
धर्मदासऐहमतिउपदेसो जोजिनजिसता
हीतिसविसेयो ८८ ॥ बालकसज्याकुंहो
येज्ञाना ताकुंदेहोपानप्रवांना आकुंज्ञान
सुखमहैभाई ताकुंसमरणदेहोदिठई
८९ ॥ ज्याकुंज्ञानगंम्यजोहोई ताकुंसा
हैसोई ज्याकुंदिव्यज्ञानप्रकासा तह
ततज्ञानउपदेसा ९० ॥ ज्याकुंउपसं

नजोहोई आत्मततकुंपावैसोई जहांनु
प्रज्ञानप्रकासा आत्मरंमतहांकरैनिवा
सा ८३९ आत्मरंमकीपचैहोई आप
हीआत्मब्रह्महैसोई हजकित हंनदेषे
भाई आपरहैसबसांहिसमाई ८४० ऐ
हभांतितंमजुगसमजावौ जोसमजैताही
लोकलैआवौ जिनसतनांमकीपचैपाई
ज्याहंलोकनिकटहैभाई ८४१ हंमतो
ऐकलोककहीदीना अनंतलोकघट्ठी
मैचीना अनंतलोककीपचैपावै कदैक
बीरअमरहोयेजावै ८४२ ऐकवचनमै
देहृदिषाई जिनतैतूमारीसंसैजाई ऐक
मैसतजुगमैरहीया सतपुर्वमोसूंनक
हीया ८४३ हंमतंमआयेततसमऐका
हजाभावमतिराषिहोटेका संरतिसरूपहं
महीभाई जैसेरूपमोहिनिरषहोआई ८
४४ ब्रह्मरूपमोहीकुंजाना जलतरंगमोह
कुंमाना-केवलब्रह्मऐकहंससरूपा स
रतिसरूपऐकआयेअनुंपा ८४५ सह

एकस्वरतिव्याप्ती सोमोक्तमनिहं
 जानी श्रोरधर्मदासहैमोरोश्रया सोई
 होतमनिजहंसा ८४६ श्रोरतीन्यु
 मोरैनिवासा सकलसिद्धमैमेलेप
 सा जंदरूपएककीनाभाई ५५५ रूपस
 रूपव हूरूपवनाई ८४७ पांचतलहंस
 शगटकीना निहं चै बालतहांमैलीना
 पहीतैसबबेलसजेई श्रापहीश्रापमै
 रहैसमोई ८४८ गांधुयूरूपश्रु बल
 बनाई रामकृष्णकुपगटसोई एह
 निजरूपहंमोरोसाचा ईनचीनैतैजम
 सुवांचा ८४९ जमरोहैमोरेसरूपा श्री
 रलयचौरासीवनायोरूपा तामैबीसश्रा
 पमैकीना गोपमतामै तमैकुंदीना ८५०
 हंसतैइसनाहीकोई भूमिहीमैसबगयेवि
 गोई सूरनरसनीक्षदेवश्रपारा रिचै ४
 भरमव्योहारा ८५१ ईनतोसिष्टभ
 ई रातिदिवसभर्ममैरहैसमाई ए
 रमैतमतैकहा अनंतकवीरसंब

हा ॥ ८५२ ॥ निह चै वात ऐही पवां ना जा
नै जा केई संत सू जाना ॥ सो धर मदा स
सुतं मते कहौ ॥ तं मनिह चै करमान
होसही ॥ ८५३ ॥ धर्मदा सुते वा चतवध
रम कहै कजोरी ॥ साहेब सुनौ बिनती ऐक
जोरी ॥ अथत कथा तं ममे हि सुनाई ॥ इ
सर ओर न कोई ग्राई ॥ ८५४ ॥ कबीर उ
वाचतव कबीर मुख बो लै बानी ॥ सतव
चन सुन लै हो जानी ॥ सर भर्म धो यहै भा
ई ॥ ऐक ही जिन अनंत तप टाई ॥ ८५५ ॥
करै करावै प्राप कला सा ॥ गा फल भरम
भले संसारा ॥ भर्म काल जम जाल पसारा
सुन हो जान ऐव भर्म विगारा ॥ ८५६ ॥ सा
वी ८८ ॥ ये हर औ सव विलास रा बैलै व
डेनु संजान ॥ सकल आत्म ऐक है ॥ मूलव
कै बिनहां न ॥ ८५७ ॥ चोपई ८३ ॥ ऐह अथ
त कथा हे मने ताके हा वात पवां न मिथुक
सुलेहा ॥ ऐती अथत कथा मिथु कर सम
जावा ॥ उजा कोई न जानत भावा ॥ ८५८

सत्सु मनीकै जाना ॥ सत्सु मित्रकी ना वि
नहाना ॥ धर्मदास उवाच है संमरण प्रदि
चन संनाया ॥ हिदा कवल जो मोर जु
टपुर्ण ॥ तं मसत गुरकी बल बल
भव सागर मेव हरन प्राउं ॥ ऐकं जि
कहा करे वषां ना ॥ सत गुरकी महिमा को
ना ॥ पद १ ॥ गदगद बचन कल्याण ही जा
बिगसक वल गुणार है समाश ॥ बलौ त प्र
होत दिल मां ही ॥ प्रचर्ज सुषु कहु कल्या
जा ही ॥ पद १ ॥ कहै धर्मदास ऐसी ही जानी
ना ॥ महिमा कै सै किमत बयानि ॥ जो क ब
यात म करी ग साश ॥ सो सो सद्दर है उ स्याई
॥ कबीर उवाच कहै कबीर धर्मदास
याना ॥ बहे जात तं म मन मे जाना ॥ हम त म
कबीर धर्मदास ॥ सब लखि हृ एक ए दास
दर ॥ कबीर धर्मदास दोये मति जानो ॥ तत
तानि ह वै करि मानो ॥ जो धर्मदास सो इक
कबीर धर्मदास का एक शरीर ॥ पद
है सो सद्द प्रज्ञाना ॥ सद्द सद्द प कबी

हा ॥ ८५२ ॥ निह चै वात ऐही पवांना जा
नै गाकेई संत सू जाना ॥ सो धर मदा स
सै तं मते कही ॥ तं मनिह चै करमान
होयही ॥ ८५३ ॥ धर मदा यउं वचत वध
रम कहे कजोरी ॥ साहेब सुनौ बिनती ऐक
मोरी ॥ अघत कथा तं ममे हि सुनाई ॥ इ
सर और नकोई आई ॥ ८५४ ॥ कबीर उं
वचत व कबीर मधुबो लै वानी ॥ सत व
चन सुन लै हो जानी ॥ सर भर्म धोष है भ
ई ॥ ऐक ही जिन अनंत वपटाई ॥ ८५५ ॥
करै करावै प्रापकता सा ॥ गा फल भरम
हले संसार ॥ भर्म काल जम जाल पसार
सुन हो जान ऐव भर्म बिकारा ॥ ८५६ ॥ सा
री ८८ ॥ ये हर च्यौ सब बिलास रा बैलै ब
उं सुं जान सकल आत्म ऐक है ॥ मूल व
कै बिन होना ॥ ८५७ ॥ चोपई चर ॥ ऐह अघ
त कथा हे मने ताके हा वात पवांना मिथुक
सुं लेहा ऐती अघत कथा मिथु कर सम
जावा ॥ उजा कोई न जानत भावा ॥ ८५८

सत्सु मनीकै जाना ॥ सहस्रमिंत्रकीना
 लहाना ॥ धर्मदास उवाच है संमरथ प्र
 स्वचन संनाया हिदा कवल जो मोरनु
 ८५ ॥ तूं मसत गुरकी बल बल
 नु भव सागर मैव हरम व्यानु ऐक जि
 कला करु वषा ना सत गुरकी महिमा को
 ना ॥ ८६ ॥ गदगद बचन कलान ही जा
 विंग सकवल गुण रहै समाश ॥ व होत व्या
 होत दिल मा ही ॥ प्रचर्ज सुख कल कल्या
 जा ही ॥ ८७ ॥ कहै धर्मदास ऐसी जानी
 ॥ महिमा कै सै किमत बषा नी ॥ जो क
 या तूम करी ग साश ॥ सो सो सहै र है उर माई
 ॥ कबीर उवाच कहै कबीर धर्मदा
 सयाना ॥ बहै जात तूं म मन मै जाना ॥ हम तूं म
 कबीर धर्मदासा ॥ सकल सिष्ट ऐक प्रकार स
 ८८ ॥ कबीर धर्मदास दोये मति जानौ ॥ तत
 वेतानि हे चै करि मानौ ॥ जो धर्मदास सो इक
 कबीर धर्मदास का ऐक शरीर ॥ ८९ ॥
 है सो सह प्रज्ञाना ॥ सह स रूप कबी

८ ए२ ऐ ही ग्रंथ मम मित्र सुनावा चार
वेद को मूल बतवा ॥ छंदै सख पठिकरै
विचारा ॥ जैसे ज्ञान तो हुं तू लैन पारा ॥ ८ ए ३ ॥
जैसे ज्ञान अथं मत भारी ॥ अमर मूल मै तत
सवां री सत संगति करिषो जजिन पाया ॥ स
गूर चरण यौ मन लाया ॥ ८ ए ४ ॥ इहा ऐ
जैसे ज्ञान ज्या घट मै ॥ तं म सुन्दौ धर्म द
सा प्रगत बुद्ध सरूप है ॥ ऐकनांम वि सव
सा ८ ए ५ ॥ सायी ऐ ॥ अमर मूल है कथ
सब ज्ञान न के र भे मारा ॥ सुनति अमर पद
पावही ॥ कहे कबीर विचारा ८ ए ६ ॥ जै
रई ८ ए ७ ॥ सायी ऐ ॥ ऐसी प्रथ अमर हर
संघु ए स ही इहा ॥ अमर मूल यो गुरु है ॥ ज
इ कै चित्त लगावै सत गुर चरण प्रसके कहे
ज्या वै लही जावै ॥ ऐ ॥ अमर मूल अमर गाव
मै ए वि के ज को दिखते स ए बके ज ग्या
न र मोरा ॥ सब विधि का ज करौ मै तोरा ॥ ज
तुं प्रछै सो मै भायुं ॥ भेद अ भेद जुगति सब
रायुं ॥ १ ॥ थोरै मै सब व्या ल दियं जे ॥ ज्ञान

ज्ञानसकलसमजांते॥ भक्तभेदतोको
 रंजा॥ अगमनिगमसबतोहिद्विषरंज
 संतगुरकेचर्णाचितधरह्वाधर्मराये
 जिनमरिऊ॥ जोगपकलाजेतीजोहोई
 वजोभाषिसूनांऊतोई॥ अवरपुन
 मा॥ तामैसपतदीपनवमंडा॥ ता
 गमनिगमनिर्वाना॥ सोजनभेदकाह
 जंजा॥ सोमैतोकोदेहूखपाई॥ अग
 काहूनहीपाई॥ अदसूरजसौगिनती
 शनिसबासूरपुनिकहीयेसोई॥ देइप
 मिलेमासएकपुरा॥ प्रायुष्याकायेदसुं
 रामासबसएककहीये॥ अहवाह्याहीये
 हियो॥ हीयेहिविधिसबजहबीनोऊई॥
 अगमवस्तकाहूनहीपाई॥ शिष्यमुलीगणगं
 फदेवा॥ अगमवस्तकाहिसैनभेवा॥ अ
 ह्याविधमहादेसोई॥ अगमवस्तकोन
 सैनकोई॥ पंक्तिज्ञानीबुधिवंतासाख
 सकाहैनअंता॥ प॥ अ॥ ए॥ जी॥ जे॥ ते॥ जू॥ गं
 ॥ सि॥ धि॥ सा॥ ध॥ क॥ को॥ इ॥ पा॥ व॥ त॥ ना॥ ही॥ ॥ अ॥

वं के जरहा है बंकी ॥ अग्रमहल लागे न
 हीटंकी पहलै भक्ति को चित लाई ॥ ता
 सुखुटे मन की काई ॥ ३७ ॥ तन मन धन उंम
 अरपन करिहौ ॥ सत गुर चर्ण सी सप्रध रहिहौ
 आपण सरब सदेहौ लूटाई ॥ बुटे जन्म म
 रण की काई ॥ ३८ ॥ सत गुर संपुटुदान ही कर
 णां ॥ होये अमर्क बहू नही मरण ॥ तन मन
 सेती सेवा की जै ॥ सत पंथ को मार्ग ली जै ॥ ध०
 अरु भै मारग कहू विचारी ॥ निह चै करलेहौ
 उरधारी ॥ मूल कवल मुलग हौ मांही ॥ लेक
 र अंगन मिलावो तांही ॥ ३९ ॥ स्वासा सरति ऐक
 घरि लावौ ॥ तिनु गुण मै अंगन मिलावौ ॥ स्वास
 सरति ऐक गुण तीन्हा ॥ प्राये कै त्रिकूटी मै
 चीन्हा ॥ ४० ॥ येह तै सुख मण संग चलावै ॥ म
 हासंगत मै जाये समावै ॥ वासुं फिर उं पर कुं
 धावै ॥ त्रिलोकी काइसन पावै ॥ ४१ ॥ वासुं पि
 र उं पर कौं चढ देवौ ॥ महासंगत लिख अंग
 पेवौ ॥ ता अंगे सत पुष्य विराजै ॥ अनहद वा
 जा अने जौ ॥ ४२ ॥ वह जाई कै वासा कर

हीनाको ऊर्ध्वपै जैनाको ऊर्ध्वरही। जिह्व
 न विग्यान न भूले। विभज रत्न कल लब्धने व
 जो फुले। धृपू। सत पुर धर्ष स विधियो पावै
 विन जिभ्या तहा वही जगावै। जो वैसे कोठ
 सो भात्रा ऐं। अग्रमौ ड। केन ही जा ऐं। धर्ष
 गणगद्द प देव मनी धर्षनी। सब मिलि कूटे
 तै निरंजत मां नी। सिध साध करि संजो जी ज
 ना। मन को यो जन पायौ ईतना। धर्षा गुण विर
 एण मै सब हिरचे। ससत विना सब धैरै प
 चे। कथत बकत सब जन मगसा यो जतु पु
 रष कोर्म मन पायौ। धर्षा ये हम सन्ना विप्रत
 को भोगी। ये हम न जो गीरे हि विरै गी विहृत
 कही मन मां न तेना ही। सब ऊंटे ए मन मन
 हि मा ही। धर्षा। ये हम न जत हि जिन जन प्र्या
 ध। मन हि ध्या पू प्रो पुन पाडो। ये हम न क र ए
 क ए कर व र्णा। अग्रम भेद को ई न ही या व
 न। पुं०। ये हम न ग लत हो ई ते हि जा गा छि
 दे ज न म न का ध र गा। सो नि ज भे द ति हि मै
 ही ना। सत पु र्ष व के ऊ र्व।

बं के जरहा है बंकी ॥ अग्रममहल लगेन
हीटंकी पहलै भक्ति को चित लाई ॥ ता
सुबुटे मन की काई ॥ ३७ ॥ तन मन धन उं म
अरफन करिहौ ॥ सत गुर चर्ण सी सप्रध रहिहौ
आपण सरब सदेहौ लूटाई ॥ बुटे जन्म म
रण की काई ॥ ३८ ॥ सत गुर संपदुदान ही कर
णां ॥ होये अमर्क बहू नही मरणं ॥ तन मन
सेती सेवा की जै ॥ सत पंथ को मार्ग ली जै ॥ ध०
अब मै मारग कहू विचारी ॥ निह चै करलेहौ
उरधारी ॥ मूल कवल मुलग हौ मांही ॥ लेक
रअंन मिलावो तांही ॥ ध१ ॥ स्वासा सरति ऐक
घरि लावौ ॥ तिनु गुण मै अंन मिलावौ ॥ स्वास
सरति ऐक गुण तीन्हा ॥ आये कै त्रिकूटी मै
चीन्हा ॥ ध२ ॥ येह तै सुख मण संग चलावै ॥ म
हासंगत मै जाये समावै ॥ वासुं फिर उं पर कुं
धावै ॥ त्रिलोकी का प्रसन पावै ॥ ध३ ॥ वासुं प
रुं पर कौं चढ देवौ ॥ महासंगत लिख अंन
पेवौ ॥ ताअगै सत पुष्य विराजै ॥ अनहदवा
जाअने जौ ॥ ध४ ॥ वहा जाई कै वासा कर

हीनाकोऊनीपजैलाकोऊमरही।सिंहदर
नविश्याननभुलै॥विभजंरुनकवलकनेक
जोफुलै॥धपू॥सतपुरषईसविधिसोपावै।
बिनजिभ्यातहावहाजागवै॥जोबैलैकोउ
सोभाश्राएँ॥अग्रमठेडकोनहीजाएँ॥४६
गणेशपदेवमूनीधर्मी॥सबसिलिछूते
तैनिर्जनमाजी॥सिधसाधकरिषजोगीज
ना॥मनकोषोजनपायै॥इतनाधगागुणनिर
एणमैसबहिरचे॥समतविनासबत्रैसंप
चै॥कथतबकतसबजनमगमाथै॥सतपु
रषकोर्मनपायै॥धजायेहमनप्रादिव्रति
कोभोगी॥येहमनजोगीयेद्विरीगी॥बहुत
कहीमनमानतेनाही॥समकंदेषमनमन
हिमाही॥धहायेहमनमनहिनिरंजनप्रा
पु॥मनहियाएप्रेरुनपापु॥येहमनकरण
कणीकरावरा॥अग्रमभेदकोईनहीपाव
न॥५०॥येहमनगलतहोईतेहिजागा॥ब
टैजन्ममर्नकाधरा॥सोनिजभेदतिहिमें
दीना॥सतपुर्ववकेजह्वीना॥५१॥साषीध

कहतौ कहे विसतारिकै कितहौ नही स
तोषा सतनामकौ चीनकै बूटै सबही धो
षा प्रसा चिरिई ॥ ३ ॥ नके नर्तु वा चिकहे
बके जूस एौ गुरमेरा कैसै पाऊ अमबसे
रा ॥ त्रैसा ज्ञान सूरपा नही देया ॥ रिषमनी
यो जकीया सब भेषा ॥ ५ ॥ षट् षट् योजै
सब ग्यानी यिकु वातका हनही गानी ॥ च्य
रवेद षट् सास्त्र सूनीया ॥ तंमसा ज्ञाननका
हू गूनीया ॥ ५ ॥ अवर अष्टादससुरोपुरा
णा ॥ चारसंपदा बावनघर ॥ इनका ज्ञान
यो जेहंमसारा ॥ अोर जहां लगकही येगपा
ना ॥ सोहंम अँप एौ मनमै जाना येह बात
टपटीकही ॥ कौण भोतकी जियेसही ॥ ५ ॥
कैसै जीवपहू चैदेसा ॥ साहिवकही येअ
मअदेसा ॥ सोईकरोपहू चैवा जागा ॥ अब
मेरा मन हूसा लागा ॥ ५ ॥ अवर ज्ञाननि
जरनही आवै ॥ बस्त हंमारी कैसै पावे ॥ सोईब
तअब करौ होगुसाई ॥ अबमैरै मनससैना
ही ॥ ५ ॥ ताहिका एदया तंमकी ॥ हा ॥ सबैवि

तंमकुंहमंचीन्हा॥कहौबिचारकौणपुन
 मेरा॥प्राचागवनकाटुगोरा॥५॥येहजां
 एसतप्रहंमप्राये॥हमइष्टनसब्बसुषपाये
 मनसूकामज्जगतिहंमपाई॥हमसाहिवबक
 कीनसहाई॥६॥हमारीगतिप्रतकिनहनः
 हीपाई॥सोसाहिवहमदीनलयाई॥आदिप्र
 सिमेंजांणीस्वामी॥हस्तीसबघटअंतर
 ई॥साषी५॥कवीरउवाच॥कहैकवीर
 जसै॥पुर्वदयाभईतोये॥सतनामकुलुंऊके॥
 रहौअमघरसोये॥६॥चोपडा॥चाईती
 अगाधरमेणीसंपुणस्तस्ती॥अथसेउंसमन
 कीषचईलिखंते॥साधुप्रायेअंगसं॥यहोमी
 हिकीयागवन॥गेरिगेरिवकतफिरै॥हमनका
 घरकौना॥१॥प्रायेद्वारगडेभयो॥तवदियाकी
 न्हीसेना॥जबसमनसूठलोडिकै॥देयीअप
 नैनेना॥२॥समनउरिसनेहकरोइसणका
 ललेह॥मूषद्विपांय्यानावने॥समसूयहो
 मूषलेह॥३॥समनसेरीसांकडी॥
 रलियेजाये॥साधुप्रायेपीतक

माथा जाज्योन कसू जाकन जाज्योन
पानीपण नउं तरे बहोरन चढई च
२३ मसतग लेस मन च ल्यो पथमै दो
जाये जाके हम चोरी करी सोप हू च
आये २४ वा जा रा बह दो ल्यो धि
आई नरि वै दो नु चोरी गये तहां भई प
२५ तब ही समन ध्याये के पो लि प
सो आये नी या दे धि के रो व ही मसत
ही यो लू काये २६ जा कि की वा ड
धि यो सी स छि पा वै त कं थ मो कुं उ म
का ची गि नी भले भले हो संत २७ न
क है नी का की यो अ न ल्या ये क ट सी स
ब के सा ध प धार सी करु सी स व क सी
२८ ने की रो व त ही से न ही आ स न वि
आवे से उं सी स घ र मै ध र्यो व ले न
न नि अ वै २९ हमे जानू या रो व ही
उं तो प ण घ टि जा ये नी की तो फू ली प
है क ही मह म नी तर स स न ये ३० सां
वि मु ष प धार ता त ब र हे ती धी व

॥३॥ च ॥ संम

मकीसकुंरोईयो॥कीसकाकीजेसोगा॥एते
वाससरायेका॥सखेबटाउलोगा॥इनास
मनवासतकंकहाकहिसमरीये॥कूकरि
रोवुअवा॥मूवानकोईवाहुडा आपो
सोजासीसव॥उरें॥ईतनीकहेतुधोजन
भयो॥बीतीरजनीआध॥आ॥गोपा
संतजनाउगेलेपसादा॥उधा॥कहो
मनसेउकहा॥जिनकोमसोअगाध॥अ
वतहीचरणोपु॥अ॥अवनहीदीले
भा॥उ॥कहोसाधोकीसखकहासम
मकीवाता॥करेवतवाहीजीवपरे॥वीर
हंतग्रावतजाता॥उ॥तम॥साधोमो
जनकरे॥वेया॥दादीसेनाही॥दासाज
रदासाही॥उ॥उ॥
वहुदोकहोहाये
॥सौरकरेसबलोगा॥उ॥
॥मतिकोईवकोव

३६॥ करे भोजनपोढणकीयो वीतग
ईसवरति पहरदोषे जातांथका तबह
द्वोप भति ध० साधसवारुभिचले मूष
सोकीयोउ चार समनसेउ कहांगयो मिल्य
नचलतीवार ॥ ध१ ॥ सेउजगमैसुचलि
गयेहमबीचलिनहार ॥ वाकोमीलणोड
लभदे मास्योयांकेधार ॥ ध२ ॥ तबसाधुं
विवोलिया ॥ केसैकहीरुह्वात सेउको
एनमारीयो ॥ देखोहमरात ॥ ध३ ॥ तब
साधुआयेपांवना ॥ पउपगारकीयो मसत
गतोघरमैधस्यो ॥ ध४ ॥ सुलीदीयो ॥ ध५ ॥
समनसेउमारीयो ॥ केकेअईनमहरि ॥ सा
धुअैसीनाकरे ॥ रुह्तोकरीकहरि ॥ ध६ ॥ म
स्यो ॥ कहरनाभयो ॥ मेरोहोयेप्रकाज ॥ सेउके
पएनिभगयो ॥ रहीसमनकीलाज ॥ ध७ ॥ से
उचंदनकोबिडो ॥ सीचकीयोसमर्थ ॥ काट
तहीकसक्योनही ॥ वहसऊनयेहहथा ॥ ध८ ॥
तबसाधुअैसैकहै ॥ सनौसमनएकमन ॥
साधुसैवैहरिभजे ॥ जाकोजीवणधने ॥

धरु ॥ पुर्वे तण सुब सिव सो ॥ सब दी नले ए
 जकरा यो समन वै ही चरव सो ॥ जिन चर
 जै सो भाव ॥ धणी धात कहै तपे छले च ला
 ला धड पेप कू च्या जाये ॥ गरदन सो प्रेरै
 दीसा ॥ पंथ दीसा दोये पाये ॥ पुर्वो से उ हरि
 जन चलत है ॥ राम कहो ॥ रामो डि ॥ लज
 मर दे पे म प्र का सीयो ॥ निचन क ह करि जो
 डि ॥ ११ धड सु ल सु न म स भयो ॥ जो डे ॥ दो भौ
 हाय ॥ साधो मूय प्र का सि दो ॥ कि ही समन लं वा
 ता ॥ परा सी सं त्या वे म ज सा ॥ साध व ला दो ला पे
 ओर भेद त म जिन क हो ॥ ले रा पु ह्य जो य
 ये ॥ पुत्र साध भये जो ये करे ॥ धि ड सु जो डे
 सी सा राम नाम र स नार ची ॥ कि रि पा क हो ज ग दी
 सा ॥ १४ ॥ तीन पहर लट करे र हो ॥ सी सब ल
 ने त ना ॥ जती सती की पार धा ॥ जी न त भ ये ॥ ज
 ५५ ॥ से उ जा गत ही क हो ॥ क ही रो क स न
 जा राम कहो सब दी न भ लो ॥ ये रो भ लो दी न अ

न के दो डे ॥ वात नगर जाती न प्र सु नि
 दो डे दे व न ३ गावत हे नर

राव॥ ५७॥ सकलत्राये चरनोपडे॥ महि
माबढीअपार॥ मंगलजसरघुनांथको
॥ ५८॥ तबरामरायेकिपा
करी॥ डरकीयासबडवराजात्रायेसाय
पडे॥ भयोसमनकोसीष॥ पूर्ण॥ पुरपाटण
मैनिपजे॥ दोनैहिरिकासंत॥ सेउसमन
कीकथा॥ बुनीदासअनेत॥ ६०॥ ईती
सेउसमनकीपचईदंपुरण॥ अथकवी
रसाहेबकीगोर्षकीगोष्टलियंत॥ गोर्षउबा
त॥ गोरथकहैस्वामीजी॥ कहाहमसेवो
कहाहमपुजे॥ मोहीदेहौबताई॥ कास
छेत्रहमचलिआये॥ तुमरीसूनीबडाई
॥ कवीरकहैअबधु॥ मनहीसेवामनह
पुजा॥ मनहीतूयाभोगी॥ पूर्णबह्यसव
लघटयेले॥ हममर्मनजाऐजेगी॥ २॥
गोरथकहैस्वामीजी॥ मनमैजानूपवनप
हिचानौ॥ बीरजबंधकरिबंधु॥ औरदेव
थरकरिजानौ॥ सरतिशिधानमैसांधु॥ ३॥
कवीरकहैअबधु॥ बिंदरायासूबोव

कहावे। पटराजाकेसैलै। दुधंबीरोदाहीन
 मैमैरो। वाकासंगमैवेलै। ४॥ गोरखकहैखं।
 मीजी। बिंदराषांजमकैसैमोरै। काछाहीध
 जोहोई। मूषभासूसेनैनाइसै। कुडपहन
 हीकोई। ५॥ कबीरकहैअबधु। दसादेयेसै
 प्रोजकजावै। वेदवाहनांही। बप्राजेका
 मीसकुंदीजासादेबहैसबसांही। ६॥ गोरख
 कहैखंमीजी। बिंदराषादेहीनहीबीगडे।
 सीधानांमकहीजे। रोगदोषआपेनहीपी
 डी। ७॥ असाजसलहीजे। ८॥ कबीरकहैअ
 बधु। जलनहीरहतावंक्युभूला। ताकुंप
 वनांघाई। रहतानांमओरहैगोरख। ऐहते
 रहतानांही। ९॥ गोरखकहैखंमीजी। लज
 मायामोहिजलकीदीसै। कलासेसबसे
 लू। जलसाधैतेपुराजोगी। अजरअपर
 करिमेहेलू। १०॥ कबीरकहैअबधु। जल
 बीजासी। घलबीजासी। जासीचंदअरु
 सरा। नहीपुर्णज्ञानप्रमदपाया। तातेरहा
 अधूसा। ११॥ गोरखकहैखंमीजी। प्रादिज

लहै॥ जलकीकाया॥ जलकाचरुदीस-
चाला॥ जलकाततसैजमीसंहपाण॥ मैज
लकागोरषवाला॥ ११॥ कबीरकहैअवधु
ओलाजलहै॥ ऊलीकाया॥ ऊलाचरुदी
सचाला॥ कत्मकताअमअगोचर॥ तं
ऊलागोरषवाला॥ १२॥ गोरषकहैस्वामीजी
हमतोकताजलहीजानै॥ इतीयाइसैने
ही॥ बुद्धाबिष्टमहेसूरदेवा॥ जलमैरहा
समाई॥ १३॥ कबीरकहैअवधु॥ बुद्धाबि
ष्टमहेसूरदेवा॥ येहनितकाअवेजाई
असाभेदबिचारोगोरष॥ पमततमिदिज
ई॥ १४॥ गोरषकहैस्वामीजी॥ जलमैजो
तिहोतिनहीब्यापै॥ जलहीजललेगा
या॥ जोनाथाचौरासीसीधा॥ जलमैजोग
माया॥ १५॥ कबीरकहैअवधु॥ जोगनजानै
जगतिनजानै॥ सहजसमाधलेगाई॥ बि
सूरजचंद्रभयाऊजियाग॥ पमततमि
जाई॥ १६॥ गोरषकहैस्वामीजी॥ जोग
गकैबडाअंत्रा॥ मोहिअंटेसाभारी

सेवीरजत्रीयासंगदीना।सहजैवाजीदा
री॥१७॥कवीरकहैअवध॥सबहीलैना
सहहीदेना॥सबहीघरपाया॥बिआसहसं
रीडनीया॥मथिमथिसूत्रगुमाया॥एवागो
र्यकहैस्वामीजी॥मायाकेसंगमायाबिगरे
पातपातसंफुटै॥सिंधनांसतोतबहीपडै
गा॥पाकबेलिसंदुटै॥१८॥कवीरकहै
अवध॥सिंधनयाएसिंधानांही॥बिरि
डुंगएकीअसा॥भ.स.भ.स.भ.टकेभवस
गरा।नवचौरासीवासा॥२०॥गोरथकहैस्व
ामीजी॥मिषसतखंडरवनमैबैगा॥सबैबा
सनांत्यागी॥अदिनाथसबुडकेपुता।
मैहत्तगोरथबकिभणी॥२१॥कवीरकहैअ
वध॥घरमैजोगभोगघरमाही॥घरमैअस
रगलागा॥घरमाहीपुरागुरपाया॥अरामनने
भोगा।रव।गोरथकहैस्वामीजी॥व्यावर
कीपीडबाऊनहीजांए॥कहाजांएगए
कैसा॥भीज्याबिनाभेदनहीवाकै॥सूका
लकडजैसा॥२३॥कवीरकहैअवध॥सु

कालकटु जलपचले सतगुरकैनुपका
रा ज्येसा भेदविचारो गोरष उतरो भो
जंपारा २४ गोरष कहै खांमीजी जोग
जगतिहै जुमसंन्यारा भागवडा सोई पा
वै ॥ जोयेह जोगजगतिकं पावै तौउलटि
जूणीनदीप्रावै २५ कबीरकहै अबध
जोगजगतसमृत्तिन होई मेरा मनक
मानौ पुर्वदसाक्तकोमार्ग ताकामर्मन
जानो २६ गोरष कहै खांमीजी तम
बादी जोगी जोगकठिणहै भाई जोगज
गतिमैघटमैदेखा ॥ घटमैकरी कमाई २
कबीरकहै अबध ॥ जतीहवातो मृत्ति
पावै सिंगलदीपसमाना वैउंधरोतो
मबीउंधरो हमसुनिसूण भयाहसना
२८ गोरष कहै खांमीजी भोगप्रारंम्या
जोगन होई वातकरो तमओली ॥ ज्ये
सतासाधकानादी गुणई डीकीवो ली
२९ कबीरकहै अबधु हमनिराणनि
गुणकेवालक तमकहा भेदपदिचा

आदिभक्ति हंमकर... ॥ गो... ॥
 जोने ॥ ३० ॥ गोरधक... ॥
 हं ३ जोगी ॥ विजरसरी... ॥
 लेजहांमंछी ॥ ॥ ॥
 है प्रवध... ॥
 सबव्यो हारा ॥ हसधरतीमै धरती... ॥
 सबसून्या रात्रि ॥ गोरधक... ॥
 पहाडांधुणीहमारी ॥ नितजा... ॥
 नलोक... ॥
 रश ॥ कबीरकहै प्रवध... ॥
 एहोई ॥ भंडानन... ॥
 तेरावनमै ॥ योंतो सुक्ति... ॥
 सांमीजी ॥ हमबुह्यगिन्याली ॥ सब... ॥
 वसं... ॥ गोरधवाला ॥ स... ॥
 रविचारही चालं ॥ ३५ ॥ कहे प्रवध... ॥
 बुह्यचीनसो बुह्यगिन्याली ॥ सबचटएकही... ॥
 तोंने ॥ प्रापहीसाहिपहि... ॥ ३६ ॥ गोरधक... ॥
 सांमीजी ॥ मनपवनामै वसि कराय्या ॥ जा... ॥
 लमठहाया ॥ पां चूबांण जूगतसं... ॥

पिंड बुझंडर चनहारेकं

कालकटु जलपचले सतगुरकैर्नुपका
रा ॥ त्रैसा भेदविचारो गोरष ॥ उत्तरो भो
जोपा रा ॥ २४ ॥ गोरष कहै स्वामीजी ॥ जोग
जगति है जुमसंन्यारा ॥ भागवडा सोई पा
वै ॥ जोयेह जोगजगति कं पावै ॥ तोउलधि
जूणी नदी आवै ॥ २५ ॥ कबीर कहै अबध
जोगजगतसंमृत्ति न होई ॥ मेरा मन क
मानै ॥ पुर्वदसाक्तको मारग ॥ ताका मर्म
जानै ॥ २६ ॥ गोरष कहै स्वामीजी ॥ त
बाटी जोगी ॥ जोग कठि एहै भाई ॥ जोग
गति मै घट मै देखा ॥ घट मै करी कमाई ॥
कबीर कहै अबध ॥ जती हूवा तो मृत्ति
पावै ॥ सिंगलदी पसमाना ॥ वै उधरो तो
मनी उधरो ॥ हमसुनिसूए भयाहरना
२७ ॥ गोरष कहै स्वामीजी ॥ भोगप्रारंभ
जोगन होई ॥ बात करो नुमओली ॥ मे
मतासाधकानादी ॥ एणई डीकी वी ल
२८ ॥ कबीर कहै अबधु ॥ हमनिराएणि
गुणके बालक ॥ तूमकहा भेदपदि चं

आदिभक्ति हंमकरीकुंमार्ई। गोर्ष...
जाने॥ ३०॥ गोर्षकहैस्वामीजी॥ सहेमाहि
हंइजोगी॥ वजरसरीरवनाया॥ उंलटैनीरच
लैजहांमंछी॥ त्रैसापैडापाया॥ उशक्तिबीरक
हैअबधुसुकैगानीरसुखीअंतमरेगी॥ येऊव
सबब्योहाराहसधरतीमैधरतीहममैहमतो
सबसून्यारात्रि॥ गोर्षकहैस्वामीजी॥ गिंड
पहाडांधुणीहमारी॥ नितजागूंनहीसूता॥ ती
नलोकहैनिमैबसेकीन्हा॥ भैगोर्षअबधुता
३॥ कबीरकहैअबधु॥ गिंडपाहाराक्यागु
एहोई॥ भंडातनइसावो॥ हीरणहोजबलौ
रावनमै॥ योंतोसुक्तिपावो॥ उध॥ गोर्षकहै
गामीजी॥ हमबुह्यगिन्यानी॥ सबसुंकांनी॥ स
सुंउलटाहातूं॥ एरवाजोगीगोर्षवाला॥ स
वचारहीचालूं॥ उ॥ कबीरकहैअबधु
चीनसोबुह्यगिन्यानी॥ सबघटोकही
प्रापहीमाहिपहिचानै॥ उदी॥ गोर्षक
गीजी॥ मनपवनामैबसिकराया॥ जायेजं
वहाया॥ पांचूवाणजूगतसंजीत्या॥ प
पिंडबुसंडरचनवसें

दुनिरवां एही पाया ॥ ३७ ॥ कबीर कहै प्रबध ॥
चंदनही सरगिगन नही धरती ॥ जहां नही प्र
रता रा ॥ जहां नही पानी जहां नही पवनं ॥ जहां
अस्थान हं मारा ॥ ३८ ॥ गोरष कहै स्वामीजी ॥ गो
ष कहै तू गुरवा स्वामी ॥ अ नैरी ऊ मोहि द
जे ॥ हं म कौं ए है कौं न सरीरा ॥ ई कामर्म कहि जे
कबीर कहै प्रबध ॥ सपतधातका बन्पापी ज
रा ॥ मां हि निरगून बीरा जै ॥ यो तो भेद अजम
है गोरष ॥ नुलट निरंत्र गा जै ॥ ४० ॥ गोरष व
है स्वामीजी ॥ भली भई तू महम सं मिलिय
सतगुर भेद बत्तावो ॥ हिम सतगूर हं म सिष्य त
मारा ॥ तन की तपत मिटावो ॥ ४१ ॥ कबीर व
है प्रबध ॥ छूछम वेद कै पै डै ता जो ॥ तू म बिद
ग सवृत्तौ लावो ॥ कले सवृत्तौ सो कौं नै बेलो
जद सीदा सख पावो ॥ ४२ ॥ तल घोटै तार
लगी ॥ हर डीया की तीर ॥ गोरष का संसा मि
सतगूर मिले कबीर ॥ ४३ ॥ जेनाय चौरास
सिधा ॥ कोई न देया पीर ॥ गोरष का संसा म
या सतगूर मिले कबीर ॥ ४४ ॥ सतगूर मि

कबीर॥ भेद सब दीया मतये ॥ अक्षर ॥ ३ ॥
 मरगथा ॥ सोपलमै दीया फल्ला चाये ॥ ७ ॥ ३ ॥
 श्रीगोर्षकबीरसाहेबक ॥ गोष्टसंपुरण ॥ ७ ॥
 अरजनामा ॥ करत कुं पकारं मरेतु ॥ १ ॥
 अधारा विजाकी जीये गुहार ॥ विगिन ॥ १ ॥
 लाये हो ॥ बडे बने कये संतलरुका की
 यो ॥ राघोषनजन ॥ जिनपजे ही ॥ १ ॥
 हो ॥ १ ॥ जिनके इय इये त ग्यापद ॥ १ ॥
 कौकलापमेटो ॥ इतल रुनदा पर ॥ १ ॥
 गर दिवा ऐहो ॥ २ ॥ सेतलं वबा ॥ १ ॥
 चंद्रविकल भयो ॥ लखीरतरे ॥ १ ॥
 यानकुं तिरायें ॥ ३ ॥ द्वापरतल ॥ १ ॥
 सतारौ नृपवध ॥ व्याल ॥ विद्यकुं ॥ विडार ॥ १ ॥
 किं करतैव चाये हो ॥ ४ ॥ पंदुके ॥ १ ॥
 कलजपके ॥ १ ॥ बहे संसै की धारदा
 रसी सभं सलराये ॥ १ ॥ तिनके जपसास्था
 विमार्थो ॥ इयदहनतै ॥ कल ॥ भुपं ॥ मं ॥ जे
 जैकारुं चराये हो ॥ ६ ॥ कल ॥ तनधारेसा
 रेकाजबहु जीवक ॥ १ ॥

करतकलापहा... हारोसाहृदंपत्तव
तिजोरा... पुत्रमास्यैहैमोराह
हृत्तसकरवभोराहमरनप्रेअभागे
५॥ तवबोलेसतनामवैन॥ साहृदिदै
षचैन॥ तेरोसुत्तमितैअेन॥ तजोकुमा
काग॥ र६॥ सहजअारतीउनमाना॥ स
हृत्तदीयोपाना॥ तवबालिकअंगिर
ना॥ लोकसौभाअनूराग॥ २७॥ देषधरम
नचित्तभयोअानंद॥ मेढोसबकार्त
दंद॥ बोढोसतनामबंद॥ चकवगस
मागीऐ॥ २८॥ धरमदासदासांनदास
सतगूरपदकंजअासा॥ सतनांमजप
खासा॥ प्रेमअमिरसपागे॥ २९॥ ईतीश्री
अप्रजनामासंपुर्ण॥ सबकीगएतीशैले
३०॥ एध॥ सर्वसंतनसुखीनतीमोरी॥ दु
टोअकरलीअारी जोदेवीसौलिवी॥ म
मदोअनदेऐ॥ ३१॥ नंगुदपुरधामसु
अैसंतनरजअस्थान॥ अंअलव्योता
मधदी॥ अगवानदाय अलास॥ ३॥

श्री
गुरु

गुरुसाई श्री चंचलदासजी
॥ श्री गुरुसाई गुरुधनदासजी
बालकजाजके ॥ पोथीउत्तर
प्रहरदातालयी ॥ संमत ॥ ॥ ॥
मासकात्तिक ॥ कुरुक्षेत्र ॥ वा
राचलियाजिनकुंडंमौतल
प्रहोये ॥ सत्सादेव ॥ सत्
रत्तभगवानदासदासान
रीवाडडीकाहं तदेवादास
नीलमंथ ॥ उपमहर्षुल्लि
गाईजमलाल ॥ कवीरसाहे
प्रभेदसारलिखंते ॥ चौपई ॥
॥ ॥ उवाचा ॥ पांनीतत्तकाप्रबकहोवि
चारा ॥ सावधंनलोमुनियोसारा ॥ पवनपंच
सीकजुवयांनी ॥ जाकीआदिअंतनहीजा
नी ॥ शसोग्नेयनमेंभाघिसुनाई ॥ काजुकवि
रलैसाधपाई ॥ सुरसअंसतैउत्तपनिभयज
मिनभिनग्रेयनमेंकहेऊ ॥ शासमें ॥ पांनीपुव
तकीरचना ॥

चीन्हे भेदकौं ॥ उतरै भोजनपारा ॥ ३ ॥ ची
ई ॥ अब पानीका कइ बिचारा ॥ पवन
दले उतरै पारा ॥ रंग छतीस भये है जल
का ॥ एक बूंद सब ही मैठलका ॥ ४ ॥ वा
बूंद सै उतपनि भये ॥ अमी बूंद क
रुनही लहे ॥ अमी बूंद का अगम
चारा ॥ ताकौ को पावे संसारा ॥ ५ ॥ अमी
बूंद कौं जानै कौई ॥ पवन भेद पावे गार
ई ॥ पानी वृत्ता बिदम महेसा ॥ पानी वृ
रंभ सक्ति अरसेसा ॥ ६ ॥ पानी पांच त
उपाया ॥ तीन लोक मै ऐही छाया ॥ ए
बही मन की उतपानी ॥ सो कौई पावे
रहै पानी ॥ ७ ॥ सै ॥ पानी पवन की म
रुहै ॥ चारि लोक विसतार ॥ जानी हे
सो पावही ॥ तासु पुरस निन्यार ॥ ८ ॥ च
पई ॥ मूल सरति पुरस सुं अई ॥ तासै
बवाजी फैलाई ॥ बाजी कीन्ही अने त
अपारा ॥ कहां लंगिनु वार नही पारा ॥
करता काल कीया विसतारा ॥ लय

वीरासीवारनया ॥ नाना...
निकीयेऊ ॥ नाना...
॥१०॥ सुरतिसर्गानि...
हीलीनौगगाने...
हत्तसबकोडा...
साई ॥११॥ जा...
परमपुरससा...
येजोकोई ॥ त...
१२॥ सुरतिसारवसतकोपावै ॥ सब...
स्कोभर्ममितावै ॥ भव...
ग्राई ॥ व्हेसीसुरतिक...
सारसबहैसिखरपति ॥ सार...
सतगुरविनानप्रावहं ॥ सा...
कोई ॥१३॥ चापई ॥ ज...
कहुं ॥ निमयमंदिपार...
कोई भेदनपावै ॥ सत...
यलयावै ॥१४॥ न्ह...
सुरतेतीसुनहीपावैपारा ॥ ना...
संसुरतिल्योलावै ॥ गगनि

काकरोहोबिचारा॥ भंति भंतिकेचं
टसं वारा॥ पांणीतजोपवननिजगहेकु
सारनांमभेदहृमलहेकु॥ २५॥ कहै
कबीरसुमो धरमदासा॥ मूलभेदकी
नेकुपकासा॥ गुपतनांमत्तमकौकही
दीन्हा॥ ताकरभेदनकाहूचीन्हा॥
॥ २६॥ ऐहीनांमरायोत्रुमगोई॥ ताक
रभेदनपावैकोई॥ सारनांमपावैनिज
सोई॥ जाकैसत्तगरपूराहोई॥ ३१॥ अ
गमनांमसबहीतैग्यारा॥ धरमदास
तेपहूचौपारा॥ जोकोईहंसनांमनि
जपावै॥ सोईहंसलोककौजावै॥ उर
नांमबिनामूकिनहीजाई॥ सोहमत्तो
कौदीन्हूचिन्हाई॥ ऐहीचहनचीन्दि
जोपावै॥ ग्यावागवनबोहौरिनहीग्या
वै॥ ३३॥ बारबारमैकहूचिताई॥ बि
नानांमसबजमपुरजाई॥ नांमकहूऐही
पगटनांही॥ ऐहीनिजभेदहमारेमाहि
॥ ३४॥ तैरेजीवकाजिमैकही॥ सति

रतीतियेहीहैसही॥धरमदासऐहीलारवि
वारा॥भवसागरसैंउत्तरोपारा॥३५॥समें
हृद्विनिजगूपतहै॥कहैंभेदतोहि
सारा॥सोपीवैसोबांचही॥नहीतोसबजम
केधारा॥३६॥चोपईसबसबकोईब
यानै॥सबभेदकोईनहीजानै॥उपानीग
नीकवीसूरपिकता॥सबहीकहैसबद
कीमंडित॥३७॥सबसूरतिआयेसंसारा
आपहीसंमरघरहानिन्यारा॥सबसूग
मगमपावैनांही॥भूलिरहेसबसमहीभ
ही॥३८॥पांचसबपुरसउंचारा॥सबभेद
हेन्यारान्यारा॥पांचकसबपुरससैंभये
ऊ॥जासैंभयेसोयोजनलयेऊ॥३९॥
पृथमसबदसोहंजोकीन्हं॥सबघट
मांहीताकरचीन्हं॥सबऐकतरहंका
रउंचारा॥ब्रह्माविष्टजपहीत्रपुरारा॥
धे॥वोऊंकारसबजबभयेऊ॥तिन
सबहीरचनांकरिलीयेऊ॥सबसहप
जनजानां॥जिनऐहीकीयोसक

किरहे सब ज्ञानी ॥ कहां लूंक हूं पार नही के
ई ॥ जे आये ते गये बि जोई ॥ ६८ ॥ कोई के
स लोक कौं गये ऊ ॥ सत गूर भेद सरति नि
ल रहे ॥ सत गूर सत गुर जगति बयानै ॥ स
त गूर का कोई मर्म न जानै ॥ ६९ ॥ सत गूर
सोई गुर ज्ञान प्रकासा ॥ तासौं मिटै काल
की वासा ॥ सत पुर ससो सत गूर दाता ॥ त
की गति नही लये बिधाता ॥ ७० ॥ संत
जगतिके गरू कहावै ॥ उदेवा सो भेद
न पावै ॥ कहै कबीर सूने धरम दासा ॥
दि टपती त करै बिसवासा ॥ ७१ ॥ न्ह
अक्षर मूल सब ही को ॥ पाये कारि जहा
ये है जीव का ॥ नही तो और अने कउ पा
वा ॥ करि करि थके लोक नही आवा ॥ ७
२ ॥ ये कही नाम विन मूक्ति न पावै ॥ जो
कोई कोटि जतन करि धरि वै ॥ सोह नाम
हमारे पास ॥ पावे सत लोक हेये वासा
७३ ॥ विरलाहं स पावे ही नाई ॥ सो मैं तो
सौं दीन्ह चिन्हाई ॥ कहै कबीर सूने धर

मदासा ॥ सारनां मबिनहंस निरासा ॥ समै ॥
५ ॥ कहे कवी रधर मदाससौ ॥ लेहोनां म
माशिनानां मबिनां बूठेनहीं ॥ कालबडो
रीयाशिन ॥ ७५ ॥ हूकाया कालपसारहै ॥ सार
नांमहै डुरि ॥ बिरलाहंसा पावही ॥ दोई जपां
नी भरिपुरि ॥ ७६ ॥ चोपई धरमदाससतिमें
सांथी ॥ ७७ ॥ पतिवस्तुगटक रिरायी ॥ स्वास
एकपानहै भाई ॥ न्हस्वासासौं करौ लयाई
न्हस्वासान्ह अक्षरहोई ॥ सतगर भेदक
होवै सोई ॥ कालमहाकालहै दोई ॥ महाप
स्वैमैरहै नकोई ॥ ७८ ॥ तबरहीहै न्ह अक्षर
रसारा ॥ सोई सबको सिरजनहारा ॥ आदि
सक्तिनिरंजनदेवा ॥ सिधसाधिकलागे ऐह
सेवा ॥ ७९ ॥ अष्टकरमकेदाताहोई ॥ कम
करै नंगतावै सोई ॥ न्ह अक्षरहै अक्षर अक्षर
नामी ॥ सक्तिनिरंजनकै सोस्वामी ॥ ८० ॥ पां
चततगर ॥ तीनसंवांरा ॥ सोऐही आदिसक
तिविसतारा ॥ तीनलोकसक्तिसंवांरा ॥
चाप्यालोकपुसहै न्यारा ॥ ८१ ॥ चौथा

लोकवाही विसतारा ॥ पुरसपुरात्मज्जमज्ज
पारा ॥ १ ॥ कहै कबीर धरमदाससौ ॥ ऐही नि
ज भेदहमारा ॥ जो पावै उसनंमकों ॥ धरे
नजग अग्रवतार ॥ ८२ ॥ जोय सारनांमगदि
उतरोपारा ॥ बारबारमैं कही पुकारा ॥ मुखसौ
कहै कबीर कबीर ॥ कहे नमिटे कालकी
पीर ॥ ८३ ॥ नांमहमारा जगत सबकहे
ई ॥ भेदहमारा नकोई तहैई ॥ मेरौ निज
सरूपहै सोई ॥ ताकों चीन्है बिरताकोई
८४ ॥ मेरौ निज सरूपको पावै ॥ सोईहंस
लोककों आवै ॥ धरमदासतैरे बरुभा
गा ॥ तोकों टीन्हौ अटलरहागा ॥ ८५ ॥
धरमदासमैं कहुं पुकारी ॥ नांमबिना न
मृत्ति तं म्हारी ॥ ऐहीमैं कहुं भेदकी बा
णी ॥ धरमदास तंमहहैं बरुग्यानी ॥ ८६ ॥
वांनोके बवारनपारा ॥ भेदसासबमैं त
सारा ॥ बरुंत जीव अटके जमघारा ॥ त
बमैं कही भेदनिजसारा ॥ ८७ ॥ सतिस
बूपरतीति लगावै ॥ मनिषदेहसोईनि

शकरही॥तासैंक

॥निराधरनांउं

बहुरिनआवे॥

कीन्हा॥सद्वहम

॥ट ए॥भेदहमा

प्रत्तरनांमहेन्यारा

नां॥धरमदा

॥व्यास्वैंगूरहेज

भैंतोसैंकही॥

वकाजहोईशोपद

॥१॥१॥धरमदासओरसहतेजी॥

बुजराऐबंकेजी॥व्यास्वैंगूरजगत

कण्हारा॥नांमभेदसैंउंत्तरैपारा॥

॥नांवनांवसबहनगोहरात्र॥मेरांनां

कारूपावा॥धरमदासतोहिदीन्कल

षाई॥जधकरोकालसैंजाई॥एत्राहोए

संकजीवमूक्तावै॥प्रमरापुरकौंलेप

रूचावै॥असैंकरोजीवकाकाज॥सब

छादसनांमपुसपरमांनं॥छादसनांमजीव
केजांनं॥ऐहीचौबीसैंदकण्हारा॥कांटे
कमनरककीधरा॥१०७॥ऐहीसूमरने
हीजांनं॥ऐहीगुजपाऐहीध्यांनं॥ऐही
नेदुगटकहूंनंहीं॥धरमदासराधौम
नसांही॥१०८॥अथपुसनांमकोबरनेन
प्रथमपुसकेनांमउंचाहूं॥ऐकनांमकोक
रैदीदारु॥सतिनांमरुहकौंकदिदी
न्हं॥ताकाभेदनकाहूचीन्हं॥१०९
अकहैनांमहैअगमअपारा॥सोईसब
कोसिरजनहारा॥अजरनांमअमृत
निजनांमां॥गगनिमंरुलकताकरधं
मां॥११०॥अमोहननांमपारसभौपारा
विरलाजनकोईलखनैहारा॥अभैने
मनिहगमनाको॥पायैकरिजहोयेहै
जीवका॥१११॥सतिसिअअदितनजिन
जांनं॥ताकाअवागवजनिसांनं॥अ
मोदितनहिचंतनिजनांमा॥छादसनां
मसिरैनिजधंमां॥११२॥छादसनांम

हंसा लेई ॥ करम भरम संलै लजि लेई
है कबीर सूनों धरम दासा ॥ छारु सनाम
संपकासा ॥ ११३ ॥ अथ जीवकानां वरनेन
दसनांम जीवके सारा ॥ ताका प्रबुद्धमें
हं विचारा ॥ जीवसास सरति जलान्
मज्जैसी विधि जानूं ॥ ११४ ॥ सिव
रहंस कहि जे ॥ ऐ ही अट नांम दा लेद
नही जे ॥ वो ऊं सो हं मक्ति मनि जां ॥ ला
को है अम पुहतां ॥ ११५ ॥ उं ही पद
पद असी पद लेया ॥ छारु सनांम
देया ॥ मन अह स्तरति ऐक धरव
अपम पुरस सो ता ती धरि जा ॥ ११६ ॥
विधि वान धरै जो कोई ॥ सति पुस धरप
चै सोई ॥ कहै कबीर सूनों धरम दासा
अक्षरं मे की ज्यो वासा ॥ ११७ ॥ विर
जां नै ये ह कर लेदा ॥ जां नै मिटे जगत
दा ॥ नांम न्द अक्षर न्यारा भांशा ता
समाई ॥ ११८ ॥ तहां हीं सो सब
ऊं ॥ तीम लोक में दीनीनी ऊं ॥ जो

बन्ने प्रदस्य मां ही ॥ जीव की संसेव
 तां ही ॥ ११ ॥ जो निज सार नाम कौं
 ही ॥ ते जीव तत् लोक में आव ही ॥ वं
 प्रदक प्रवर है भाई ॥ सो मैं तो सुदि
 जा ॥ १२ ॥ व मेव डे सिधिसाधिक
 टके ॥ यरे सयांने ते सब भटके ॥ रं
 निरंजन देवा ॥ ऐ ही निरगून की साध
 वा ॥ १३ ॥ इन में प्रटकि रहे सब गप
 ऐ ही वस्त प्रम सब जानी ॥ जन्म म
 बूटै न ही जीव की ॥ षव
 पीव की ॥ १४ ॥
 इन में सकल रहे
 वैकोई ॥ योजि
 कहै कबीर गू
 का हू हेरा ॥

वैविसरो मं ॥
 कहै कबीर स

ताई। ऐहीनांम बितजमडरंजाई। ऐहीनां
 ममूलनिजसाराजोपावैसोपकृष्णैपारा। १
 दीकहैकवीरहंसनेकेराई। गुप्तभेद
 लेखचढाई। सुनिधरमदासभेदकीबांजी
 तहांनरूपरेखनिसांनी। १२७। जहांनही
 क्तिप्रवतारा। पारबुल्लपदसोहैन्यारा
 हंनहीं। प्रादिनिरंजनदेवा। दुत्याबि
 महेसूनसेवा। १२८। जहांनहींचंद
 प्रवतारा। प्रगमप्ररुसबदेतींन्यारा ॥
 चतीनतहांनहींभाई। ताकीगगन
 पाई। १२९। सोहंवोऊंरंकारा। मन
 पांनप्रगमतेन्यारा। कवनप्राया
 कवनवहांजाई। ऐहीप्रवरिकाहून
 ई। १३०। सोमैंतोसैंकहूबूजाई। रा
 गुप्तभेदयेऊभाई। आईमूलसर
 रा। उंनहीं। प्राऐसबजग
 १३१। न्हस्वासातैंउत्तपनि
 हं। प्रायेस्वासाहोईगये
 होईकीयेऊबंधांनं। तासैंन

होयेहरंमरदेह॥ १४६॥ इहा मूलनांम
जसारहै॥ कहैपुकारिपुकारि॥ जोपावै
बांचही॥ नहीसबैकालपसारि॥ १४७॥
चौपई॥ मकरतारहैंजीनीमेरी॥ तहं
हांकालकरैनहींचोरी॥ तामोरीहंस
चटिआवै॥ सोहंसासूषसागरपावै॥ १४८॥
॥ कालमहांकालनहींदोई॥ तहांव
सुखबिलसैसोई॥ अमरहोईसूषसाग
पावै॥ जोनीसंकटबहुरिनआवै॥ १४९॥
मूलनांममूलनउंचारा॥ धरअधरदो
तैन्यारा॥ समकालबलतिहैंलोकमै
जीवसीवकोनाथ॥ मूलनांमजोपाव
सोकरैआपनैहाथ॥ १५०॥ मूलनांमउ
रै॥ मूलठिकांनासोई॥ बिनामूलनपहुं
नहीं॥ लायकथैजोकोई॥ १५१॥ मूल
नांमनिजनांमहै॥ सनोहैधरमदास
जोपावैसोबांचही॥ नात्रजमकीफां
१५२॥ मूलनांमपायैबिना॥ हंसलोक
हीजाई॥ जानीपिंरुतसरिवां॥ करिक

मयेर्नपाई॥१५३॥मूलनांमपायेविना॥हं
साजायेविगोई॥कहैकबीरधरमदाससैं
मेकौदोसनहोई॥१५४॥चोपसित्तरनांम
प्रगतजिनिकरिहूँ॥रिहीनांसगुप्तलेधरि
हूँ॥नांममूलसैंजीवर्नवारा॥औरनामप्रगत
संसार॥१५५॥मूलनांमजाकैंघटिआवैसो
हंसासत्तलोकसिधावै॥जगजगमेंत्नीनऊँ
तारा॥मूलनांमसैंजीवर्नवारा॥१५६॥मूल
नांमगुप्तमरायौ॥सतनांमप्रगतमभ
यो॥कोटिकमहंसाकैंहोई॥मूलनांमसैं
मरोयोई॥१५७॥मूलनांमऔरनहींकोई
मूलनांमसबकारैधोई॥पांनीपवनकाने
दअपारा॥मूलनांमईनहींसैंन्यारा॥१५
८॥मूलनांमबिनमूक्तिनहोई॥लावगपान
कथैजोकोई॥मूलनांमकापावैसेदा॥तब
हीहंसाहोयेअबेदा॥१५९॥सैंमेंतोकोदीया
चिन्हाई॥धरमदासरहौल्योलाई॥१६०॥सैंमें
जिभ्याकहूँतोजगतिरै॥प्रगतकहीनहींज
यो॥गुप्तनांमतोकोदीयो॥लेहोसीसचढाये

॥ इति श्रीगणेश जैदसारसंपुरण ॥ १६ ॥
गणेश ॥ ६ ॥ सबकी गणती ॥ १२५ ॥ कबीर
सादेवकी देय संगंथ बिज्जं नसाभलि
यैते ॥ चौपई ॥ कबीर उवाच ॥ सनिधर्म
दासतमसंतसूजांन ॥ कथों गिथनिजसा
विज्जं नं ॥ अपर्मपारपारकैपारा ॥ सारबि
ज्ञानसवनतैन्यारा ॥ १ ॥ तवनही आदिनिबं
जनदेवा ॥ बुद्ध्याविष्टमहेस्वनसेवा ॥ ज
वनही आदिसकतिनिरमाया ॥ जवनहं
उरषपुरषकीकाया ॥ २ ॥ तवनही पांचतत
रजधोनी ॥ तवनही चार ॥ औरघोनी ॥ त
वनही करमसेसबराहा ॥ तवनही चंद
सूरगंनग्राहा ॥ ३ ॥ तवनही नादबंदक
बुकीन्हं ॥ तवनही प्रेमप्रतीतिकबुची
न्हं ॥ तवनही वेदवेदकोकता ॥ तवनही
रूपरेषकबुधरता ॥ ४ ॥ तवनही आदिअं
तिमधिकोई ॥ ज्ञानविज्ञानकबुनहीहोई
सोलासूतनहीहोतेभाई ॥ ताकीगमकाह
नहीपाई ॥ ५ ॥ धरमदास उवाच ॥ धरमदास

कर जोरा ॥ बंदी होर ऐक वीन ती मोरा ॥ त
 श हो तो सो निज कहीये ॥ ता करि नेद को
 लहीये ॥ ६ ॥ त म तो दया वंत हो स्वांसी
 रग म की अत्र ज्यांमी ॥ कवी रनु वा च ॥
 प्रदा स ऐक वचन हमारा ॥ ७ ॥ पा न विजं
 को सारा ॥ ८ ॥ ना पैदन गर में पुर धये क
 हऊ ॥ ता क भेदन का हू ले हे ऊ ॥ का ल म
 ह का ल न ही होई ॥ ता की गति जां ने न ही
 कोई ॥ ९ ॥ होई क बू तौ का ल डर ला गौ ॥ न
 ही त हां को ऊ ऊँ को भा गौ ॥ ना पैदन गर अ
 तर पू र धां मां ॥ मू ल स हू की नौ ये क नां मां ॥
 ए ॥ सोई मू ल नू अ द र होई ॥ ता की गं म जं
 ने न ही कोई ॥ ध र म दा स रनु वा च ॥ ध र म
 दा स क है स नौ गू सांई ॥ नू अ द र मू ल व
 से कि हि गांई ॥ १० ॥ ता को अ व मो हि क हौ
 बि चारा ॥ क हौं स व नि का सि रं ज न हारा ॥
 क वी र रनु वा च ॥ क है क वी र स नौ ध र म दा
 सा ॥ स ति स हू पू र स प्र गा सा ॥ ११ ॥ त व न ह
 हो ता वो ऊं कारा ॥ पू र न वृ ह स क ल ते

प्यारा॥ तब नही हो तारंकारा॥ तब नही
वनमनका बिसतारा॥ १२॥ तब नही ध
घासोहं गमनां ऊ॥ न्ह अक्षर अमपुर
गं ऊ॥ आदिसूरतिघट भीतिरिआई
ह अक्षर मैर है समाई॥ १३॥ आदिसूर
ते सोहं प्रकासा॥ ताका है अमपुर बा
सा॥ तासोहं सौ सब कछु होई॥ अमपुर
भेद नही पावे कोई॥ १४॥ स्वासा सोहं है न
हं भाई॥ सोहं की गति का हू न पाई॥ पां
चतती नूं गनकी स्वासा॥ सोहं अंसकी
या प्रकासा॥ १५॥ सोहं है ब्रह्म कैं पारा
सोहं सब मैकी या पसारा॥ तासोहं तै नां व
निन्यारा॥ सोई भेद निज होई हमारा॥
१६॥ चारि लोक पूरष बिसतारा॥ चारि
लोक सौ पूरष निन्यारा॥ पूरष मोरि सब
हं कैं मांही॥ पूरष भेद कोई पावत नांही॥
१७॥ चहुं लोक मै व्यापक सोई॥ चहुं
लोक तै न्यारा होई॥ ताकी सम किन आ
वे भाई॥ तातै हं सा जाये न साई॥ १८॥

विसरिवाक्यप्रकिजायाश्चनाष्टविबेकी
जांनिहेगायववाजायाश्रियहविचार
मानासरसबहोविधिरचीविचारसाधन
सिधप्रगटकिद्योश्चनाष्टमुनौप्रकाराधर
वंधोसांनिचाहत्तुद्योदहनिश्चैसनसांनि
विचारमानतापररचीश्चनत्तपरनांनि
उत्तश्चैरमानरत्तादिजेद्यातहैततिंनिहेता।

दिक हो गूसाई ॥ है न्यारा के है सब गुंड ॥ कर्त
क है कबीर सू नौ धरम दासा ॥ दि
ठपतीति गदो बिस्वामा ॥ २६ ॥ सति वचन में
॥ २७ ॥ चारा ॥ है सब सां हि सब तै न्यारा ॥ अग
म अथा हथा नदी कोई ॥ तन मन अरु पै
पावै सोई ॥ २८ ॥ अक दबस्त के सैं करिक
हीयो ॥ समजि बुजि न्यारा हो ऐर हीये ॥ अ
कथ कथा कदा कहे गां जुं ॥ धरम दास में
ताहि समाजुं क ॥ २९ ॥ धरम दास बुजो
अति हरी ॥ है न्यारा अरु सदा भरपुरी ॥ कहा
कहुं कहवै की नां ही ॥ सब तै न्यारा है स
वसां ही ॥ ३० ॥ धरम दास बुजिते जाई ॥
विन बुजें जीव जम पुर जाई ॥ धरम दास
॥ ३१ ॥ धरम दास विन ती अरु नूं सारी ॥ अहो
साहिब मंसरनि नूं सारी ॥ ३२ ॥ बाहिरि नी
तरिक हाव तावो ॥ एक ठौर न्ह चरहरावो
कवहुं क न्यारा कवहुं क मां ही ॥ ऐपतीति
क्युं अवे गूसाई ॥ ३३ ॥ गौरि विकां नां म
साभायो ॥ हमसौ भेद कहुं नही रायो ॥

कवीरुं वा चाकहैकवीरसुनौ धरमदासा ॥ ३
 मपुर्यहै नमरे पासा ॥ ३ ॥ ताकी अरुमै करौ ल
 षाई ॥ स्वरतिदिष्ट करिले होव जाई ॥ स्वरतिदिष्ट
 पानमें आवै ॥ सोई जीव परम पद पावै ॥ ३ ॥
 समै ॥ मन सब परि असवार है ॥ मन उं परि नही
 कोई ॥ मन ऊपरि असवार होई ॥ ते कलिबिरले
 जोई ॥ ३ ॥ चौपई ॥ धरमदास रहते हो वि
 चारी ॥ करौ स्वरतिमन परि असवारी ॥ पांचत
 तर्तत्रिं गन है भाई ॥ स्वरतिमंदि करौ समाई ॥
 ३ ॥ बधिचित्तमनसा अगम अुपारा ॥ स्वरति
 मंदि त्तम करौ पैठारा ॥ घटमंदि है बहू तपसा
 रा ॥ करौ स्वरतिमै होऊ असवारा ॥ ३ ॥ मन अुं
 रुस्वरतिविकुटी आवै ॥ पानपुरसका असनपा
 वै ॥ वाह होई अनहद ऊनकारा ॥ ताके अुंगै
 बस्त अुपारा ॥ ३ ॥ स्वयमनि स्वरति चढी अु
 जोतिषकासा ॥ महा
 धरमदास पदु चैति
 पासा ॥ ३ ॥ देष जोति अुचरज कंत भ
 ये ही निजक देऊ ॥ करै निरं

जनबहुतसूनमोनां॥ पांदांपहं चैकहौक
वनगीयां नां॥ ३ए॥ धरमदास
मदासकहैनिजबांती॥ सतगुरमोहिमितै
हैपानी॥ तबैनिरंजनयहविचारी॥ हैयेहप
रमपुरखअधिकारी॥ ध०॥ धरमदास॥ तबच
नत्रेपराई॥ आगेसारबस्तनिजपाई॥ न्हअ
क्षरनांमनिजजागा॥ कोटिभांनरुंमईक
लागा॥ ध१॥ अूनहदघुरैअगमअपारा
भांतिभांतिकेरागऊनकारा॥ देयिअचर
जकह्योनहीजाई॥ यामैतोरिकहांसंपाई
ध२॥ अपुनेंपमभागसिराई॥ धनिकबीर
जिकरीलियाई॥ आवागवनभर्मसब
भागा॥ मेरैवकेभागअबजागा॥ ध३॥ अ
नंतजन्मकीतबसधिआई॥ जीधरआये
तहांसमाई॥ जीवसबहीयेहघरसौंआ
वा॥ सतगुरमितैतबघरकौंपावा॥ ध४॥
अरधराईन्हअक्षरबासा॥ कोटिचंद्रस
रषगासा॥ पिंडुब्रह्मंडसबैहमजांना॥ ची
टीघूरजाऐसंभांना॥ ध५॥ अमोतअजर

अमरघरपाया ॥ प्रमथंमसंतगरइसाया ॥
 कबीरउवाच ॥ कहैकबीरपरमवैरागा ॥ धं
 निधरमदासतेरेवरुभागा ॥ धर्ष ॥ येहबिग्या
 नसारकौपावै ॥ जहांकैगयाबहुरिसुहीअ
 वै ॥ बंध्याबिदममहेसनजांजां ॥ तहांधरम
 दास ॥ अस्थांजां ॥ धग ॥ सिधसाधिकनौनाथ
 नपावै ॥ औरजीवकीकौनचत्नादे ॥ जहां
 धरसदासकाबासा ॥ तहांप्रमपुरसपरगा
 सा ॥ धजा ॥ धरमदासउवाच ॥ धरमदासपुहे
 ईकवाता ॥ कहैगसोईजीवनकायाता ॥
 कबीरउवाच ॥ कहैकबीरसुनौधरमदा
 सा ॥ सतिबचनमेंकरौप्रकासा ॥ धर्ष ॥ येह
 देयिसंसारहीआवा ॥ बहौजीवनकौग्या
 नदिहावा ॥ जगतभाररूमजायेउगावै ॥
 समकेजीवकौलोकपहंचावै ॥ पूं ॥
 जोकोईजीवनांननिजपावै ॥ सोईजीव
 लोककौआवै ॥ वंसबयांलीसराजमेंदी
 न्दा ॥ ताकाकाजसहीमेंकीन्ह ॥
 बचनअबकहुबुजाई ॥ न्हअक्षर

पवरिनपाई ॥ वंसरुम्हारै लोक ही आवै
और जीवनां वनही पावै ॥ ५२ ॥ जो निज मू
लवस्तकौ चीन्हां ॥ सोई हंसपयां नां दीन्हां
यां में संसै है कबू नां ही ॥ बसैं आई लोक कै
मां ही ॥ ५३ ॥ सुनिधर मदास और ई क बां न
करि परती तिले कुपहे चाने ॥ में तो हि दी
न्ही वां हह मारी ॥ मूलनां मतिरै नर नारी ॥
५४ ॥ मोरी भक्ति सति हू म ना यो ॥ मिथ्या
बचन क बहू मति रा यो ॥ नारी होये भक्ति
जो कर ही ॥ और जन्म नर ही धर ही ॥ ५५ ॥
नर तन दोई भक्ति जो पावै ॥ सो जीव चौरा
सी न ही आवै ॥ बारू बार मिन घ तन दोई
और देहन ही पावै कोई ॥ ५६ ॥ बहू तजत
नमम भक्ति बिस तारा ॥ तब निजनां मपा
वही सारा ॥ पाये नां म लोक ही आवै ॥ मेरे
जीव अंत न ही जावै ॥ ५७ ॥ तत भक्ति पुरष
मोहि दीन्हां ॥ तातैं जपान पसां कीन्हां ॥ जपान
पाई बिगपान विचारै ॥ कात्न जीति करि लो
क सिधरै ॥ ५८ ॥ साषी सद्दी कहै रमैनी ॥

सारविज्ञानराहश्रुतिजीनी॥ ग्रंथश्रुनेक
 कहापरकारा॥ सारविज्ञानसबनतैन्यारा
 ५९॥ सारविज्ञानसबनकोठीकी॥ धरमदा
 सऐसबतैनीका॥ ऐसाभेदकहंनहीलाका
 भेदसारमेंसबकहारा॥ ६०॥ भेदसारवि
 ज्ञानहेसारा॥ चीहेबस्ततिरेभोपारा॥ ग्रंथ
 ज्ञानबहुतहैभाई॥ भेदलसेबिनजमपु
 रजाई॥ ६१॥ सतिसतिसतिमेंकहं॥ यामेंसं
 तेराधीनही॥ तथैविज्ञानजीवजगकोई॥
 अमरलोकपहंचैगासोई॥ ६२॥ कहैक
 वीरसुनोधरमदासा॥ जामेंनादतलैजमप
 सा॥ नांवसारन्हअब्रह्महोई॥ औरनांमपह
 चैनहीकोई॥ ६३॥ समै॥ कहैकवीरधरम
 दाससौं॥ ऐकनांमनिजसारा॥ जोकोईहंसा
 पावै॥ आवैलोकहमार॥ ६४॥ कहैकवी
 रयेकनांमबिन॥ सबहीहैबकवाद॥ सति
 नांमहैचैकहै॥ तेकोईबिरलासाध॥ ६५॥
 ईतीश्रीविज्ञानसारग्रंथसंभरण॥ ग्रंथ
 ॥ ७॥ सबकीगणती॥ १३२१॥

यएकजाय॥२४॥उत्तर महावाक्यके अर्थ
कूनीके सुनेवनाय॥आत्मनिश्चै होयजव
मलिनअविद्याजाय॥२५॥प्रह्ला॥अवकृपा
कर सोसंकहो॥महावाक्यके जेद॥जोसम

ऊं निन्व२कर॥संसैरहनयेद॥२६॥गुरुवचन
उत्तर॥तत्पदत्वंपदकहतं न्यारीर तोहै ब
पकईनमेंहैअसी सोनिश्चैकर जोहि॥२७॥

दिव्यवचन॥प्रह्ला॥त्वंपदअर्थदयातकै
कहीयेसोसमजाय हरहोयअगंनत

म आत्मसुधदकेसाय॥२८॥गुरुवचनउत्तर

मनबुधइंडीदेहमित्त रह्योअपनयोमं
न त्वंपदयातेकहैतहै ऐहनिश्चैकर

जान २७ वाचअर्थतोसंकहो नि

श्चैकरउरमांदि लय्यअर्थअवकहत
हं रहैभरमकहुनांदि २० जापत्या
गपल्यएकीये ऊंअविद्याभेद सम

जै आत्मरूपकं सायीसधि अखेद २२ ह
 दे अंतरजोति है आत्मनिश्चलरूप देह
 प्राणतैनिन है केवलस्वधस्वरूप २२ ती
 नदेहतैतिनकर अपनोरूपसुजाल सो
 देह एा सरवको सायीसधसमान ॥ २३ ॥
 सिष्यवचन ॥ प्रश्न ॥ कंगोरोहंसांशो मबकुं
 अमभवहोय न्यारोआत्मदेहते दीतं
 नाहीकोये ॥ २४ ॥ प्रवचन ॥ उत्तर ॥ अजका
 रुकमेकहो देहआत्मानांदि कीयकम
 यादेहके सोचुतैओरैमांदि २५ घट
 एाजोघटनही प्रयत्न्यारोदेय अैसेआ
 त्मदेहते जांनोभिनवसेय ॥ २६ ॥ सिष्यव
 चनप्रश्न ॥ देहआत्माजोनही तोकीयेही
 कोकाह कोउअर्चनयेसैकहे देह
 त्माआह ॥ २७ ॥ प्रवचन ॥ २८ ॥ अरि
 ज्ञांश्च मिथ्यामैअध्यासदीयोहैजांनके
 पोजांनतनांदिदेहअसिमानके जन
 मरनकोभोगहोयहेयादतं परिहा
 बरुछुटेनाहभोगकेमांहते २८ ह

० अहंकारकरतागये अधिष्ठादीष्टन
 हीकोय ४४ हलनचलननोजनकि
 या ज्ञानीरूकैहोय वस्तुधिकहुन
 गहै नरअहंकारीसोय ॥४५॥ अरिह्य ॥
 आत्मअद्वैतरूपसर्वगतेजानिये विक
 लपरहितअनूपएकप्रवाणीये प्रलव
 धकोजोगसुषक्ष्मसासही परिहांआत्
 केवलरूपसुक्ष्मप्रकासही ॥४६॥ दोहा ॥
 इनसुननसवहीथको ज्योएकनिरध
 र ज्ञानअतिपरगठजयो जक्तज्योज
 रद्वार ४७ कीनोग्रंथविचारकै नहचै
 ज्ञानप्रकास अवनसुनतआनंदहोय
 भितैद्वैतजगत्रास ४८ सारसारसवग्रं
 थको संग्रहकीयोवनाय जाषाज्ञान
 कासतत्र दीनोनामजनाय ४९ गुरा
 सयकोसंमादहै जोरसुनैचितलाय ह
 दैज्ञानप्रकासहोय अज्ञानतिमरमित
 जाय ५० ज्ञानप्रकासप्रकासते रहैतिमर
 कहुनाहि अवनमननहृदसजोधारैर

मां हि ॥ पृशांती श्रीमानघकां सङ्गत्तदास्यै ह
 रीनाकृतसंपरखं ॥ अथ च सबकी गती ॥
 इदं शब्दवाच्ये जंबुसरकी कथा लि
 चते ॥ इहा ॥ साह एक धनवंत ॥ ता
 सकै पुत्र बिजोई ॥ जंबुसर तसनां
 मासी लघुरजनमत होई ॥ १ ॥ पिता
 की पोब होह द्य ॥ परन बो आ रे की
 नो ॥ परन त जुं करना थि ॥ न्नापुत
 र मुदीना ॥ २ ॥ एक बणी यां कै धी व
 आठ ॥ की न्हो सुन मतो बि चारे ॥
 करे पिता सुं अर जा ॥ परब जंबुसर मूरे
 शमां कुंकल जुग ऐ भयो ॥ हुन त ऐ लागै यो

धरमवात ॥ तात त बजां नि
 लेर परन बाचल

बआयो ॥ जंबुसर त हां परन हाथ ता
 यो ॥ १ ॥ बाणी ये दी यो ॥ बब हो
 वरे न आरौ ॥ बिबै डे डयुं जानि ॥
 ॥ चले त हांते

आप ॥ आप वैरे निजन वना ॥ तब त्रीया
 मलो विचार ॥ कीने ताके डिग वना ॥
 ७ ॥ डिग ॥ जंबुसर वैरे जहां ॥ सुमरे वन
 वननां ॥ आतुई कर जोर के ॥ पुबनला
 जी बात ॥ ७ ॥ जंबुसर बुतै सील धरम ॥ नजे
 नांम निज ऐक ॥ त्रीया तो तै ता समन ॥
 भायै प्रसंग अनेक ॥ ९ ॥ सो प्रसंग अब क
 है तहं ॥ प्रथम त्रीया उवाचै ॥ यामै सं
 सेनां हि अब ॥ प्रगट सां चीमांनि ॥ त्रीया
 कत है विनती ॥ काम अपवल जांनि ॥
 १० ॥ आगे जातां होयगी ॥ मारुदोर समां
 न ॥ मारुदोर किम ॥ त्रीया उवाचै ॥
 सोरठा ॥ थलीयांगो उवाचै ॥ सुखयोयो
 अकल विन ॥ कीयो बाजरो युवारा ॥ मारु
 दोर यें जानीये ॥ ११ ॥ जंबुसर उवाचै
 तारत थोने फूल ॥ डुधीर ह्यो दिनती ॥
 नलग ॥ बुटां पिंछै भूल ॥ तहां नक बुह
 जाईयो ॥ १२ ॥ त्रीया उवाचै ॥ नां हन नदी
 कै सोय मृकट तैमांन सभयो बहो हं म्र

कटहोये॥कीयेजलातचदेवपदा॥१३॥
 जंबुसरुर्वाचा॥कोईसहारोनाहिलवसा
 गरमैडुतांरह्योग्रहर्जंये॥सोनहीकाक
 जकरकको॥१४॥त्रियार्वाचा॥भज्यो
 नपुरणंम॥ग्रहसुखसोभीतज्यो॥जाकुं
 मेरनगंम॥बुगतीज्युंलटकतरह्यो॥
 १५॥जंबुसरुर्वाचा॥इंईईकोर
 यनांस॥जासंगनांसैरंमपदरेलो
 ग्रसा॥योयोमुखपांरुने॥१६॥त्रिया
 उवाचा॥नृपतेसुतएकजांनि॥चल्यो
 जचंदनपांनकुं॥आगेभईजोहांनि॥
 मेरोयोयोपांरिको॥१७॥जंबुसरुर्वा
 चा॥सोरग॥जगतसुबलोहाजांनि
 ताहिगहैअज्ञाननरा॥मुखओडुज्युंनो
 हि॥तजीकुदातीकनककी॥१८॥
 त्रियाउवाचा॥येहसुनप्रसंगसार॥
 सबकैमनआंनदबटो
 वचारा॥जंबुसरसुं॥
 त्रियेउवाचा

नीया करत प्रनांम ॥ १३ ॥ भये सब त्याही ये
सुज सब ठैर है नांम ॥ २० ॥ जंबु सरुं वा च
नांम नांम बिन नांर है ॥ सुनैं सकल तुम जो
ये ॥ ऐक प्रसंग अश्रुत है ॥ कहैं सम जां उ
तोय ॥ २१ ॥ वहे नीव्या ही माता धरी ॥ माता
जायो जंम ॥ तीनुंत जवन कुंगये ॥ रह्यो
कुंन को नांम ॥ २२ ॥ अष्टादस नांता न
या ॥ ऐह तीनुं का हेत ॥ ताको प्रसंग अब
कहत हं सुनीयो होये सुचेत ॥ २३ ॥
चौपई ॥ ऐक नगर मै बेस्यो ताके ॥ सुत
कन्या संग जन मे जाके ॥ ताको तुरत ही
नां व कहायो ॥ सुलतां कं मेर नांम सोपा
यो ॥ २४ ॥ यो टान वत्र जन मे सोई ॥ ताहे
नदी मे दीयो बिगोई ॥ कोई न प्रतलनि
कसे जाई ॥ ऐक महा जन तीये कटा
ई ॥ २५ ॥ वाके पुत्र है तो ऐका ॥ ऐह हरि
यो लीयो बबेका ॥ लरका काटे का
जरो बुहायो ॥ लरकी सहै तदरवा जै
शयो ॥ २६ ॥ देवपी जरो और ही बनीयां ॥

तरकी काढ लई है जनीया ॥ दो ऊब डै भये
दो नु अस्थानां ॥ तां को व्याह भयो प्रमांलां ॥
२७ ॥ चैत्ररी मां हि जो बैठे तब ही ॥ सुइ का
कां नी देयो जब ही ॥ ता में अंक मडे कहे
हेरै ॥ बहे नी भाई सुलतां कु मेरै ॥ २८ ॥ सु
लता अंक बिचरे देया ॥ ता को पीछे की
यो बवे या ॥ भाई बहे नी बिहा वें नी ॥ सुलतां
त ज्ये हथ ले वो जानी ॥ २९ ॥ हो य भै भी त
की यो ग्रहे त्यागा ॥ बन बन बिचारे ले बै
रागा ॥ पुरब पाप को न भै की यो ॥ तीर ब
हे न घर वा सो दी यो ॥ ३० ॥ संत बवे यी बु
ऊत डो लै ॥ सुन र ब चन सब न का तो
लै ॥ पीछे क मेर ही की योग वनां ॥ हेरत
आयो बेसां कै भ वनां ॥ ३१ ॥ सो बे स्यां
या की मह तारी ॥ ता कैर हो क रिघर की
नारी ॥ वा का पेट को ऐ क सुत भयो ॥ सु
लतां सुं सा धायो क हो ॥ ३२ ॥ सुलतां
चली वहां तै जब ही ॥ बेसां कै घर आई
तब ही ॥ जब बे स्यां सुं ब चन उं चारे

अष्टसनाताविस्तारे ॥ ३३ ॥ अगरेना
ताकाव्यो ॥ सुत्ततां उवाच ॥ किं
ता ॥ नग्रनायकाग्रहै दुसरैमातामेरी
तुमसुतकीमैनरि प्रगटसासुहैमेरी म
स्योवंदकीनारि सोकतुसदाहमारी
तुमैतातकीसुतातोहदादीमैधारी मम
भाईकीजोरित्तगैतुभावजमैरे येता
लछनतुजिमै किन्याकिसबिधटेरे
षटनाताषटबिधिभया मानयधर
मदीयोयोये ज्ञानभक्तिवैराग्ये
जबधरमसाबतोहोय ॥ ३४ ॥ दोह
भाईसुत्ततांकेबचनसुन ॥ पुछैनलगा
मेर ॥ कोहैतैकहीयोकरा ॥ सोअबभा
फेर ॥ ३५ ॥ सुत्ततां उवाच ॥ किं
वेस्योघरेबासकहौं तोहिभड-वोभाई
पकडुंमैतोहितुंमैघरेमेरीभाई योवं
प्रगटमोरपलैमैबंधीतेरे सासुकोभ
तारसैसुसरोहैमेरे ममदादीकोकस
तादिबिधिदादोकहीये ऐसाचेअ

धतज्याति सुट	दीये भा	जे
नही येयट	गोर सु	ज्य
नासिहै रज	काजा	
एसुनिवचन	विज	शो
रह्यो सुत्वता	कर	वच
लाडेवे		
सीसुभाईसम	ज्वम	गये
पुनिभाईकोव	जा	यो
जांसोकेके	विचार	
ममयांचंदको	दरह	होवे
दाटीसुतका	किकि	सविधितो
हितडाईये	संगतुम्हा	
रोत्यागीये	गीनका	प्रोरकु
मेराकहेहसके	सुत्वता	भायेफे
रि।त्यागकरो	नजो	जंबुसर
बुधिवानदीया	जान	विद्यामन
श्रानंदवटो	योसकल	अज्ञान
जंबुसरवडि	नाग	धनितेरे
जैन्मतहीग	जराज	कांडिरत्यो
		प्रब्रह्म

सुं॥ध॥॥दिवलेनकुंचोर॥बांधीपोटजो
प्रीतिकरि॥ग्यानभयोतिंहिगोर॥जंबुसर
कोजानसुनि॥ध॥॥अष्टनारिहेहगाने
सुनि॥ताहीकोसंसोगयो॥चोरभये०ग
लतांनसीलवांन्केवचनसुनि॥ध॥३
ईतीश्रीजंबुसरकीकथासंपुरण॥३
हा॥३॥सोरठा॥३॥किवता॥३॥चोप
ई॥३॥सवगएती॥ध॥३॥यंष्ट॥ए॥
॥३॥३॥अथब्रह्मज्जोसक्तिदत्ते॥
ऊंब्रह्मएकसुधचेतनमयाअचेतनजड
मायाब्रह्मकोसंजोगजैसेंब्रह्मकीछाया
ब्रह्मसरजीवछायासरजीवनांहीब्रह्म
बिनांछायानांहीमायाकीवोटब्रह्म
नहिसुऊंब्रह्मकीवोटमायानहि
ऊंब्रह्ममायाकोऐसैसंसंजोगमाय
जडब्रह्मचेतनिमायाऊपरब्रह्म
ब्रह्मऊपरकोनांहीब्रह्ममायातनई
भईब्रह्मकीसक्तितीनिईछा॥३॥
पा॥२॥ग्यान॥३॥मायासक्तितीनसं

१ मिथ्या २ विपरजे ३ ब्रह्मकेनां
 पंच ब्रह्मकहिए १ जीवकहिए २
 कालकहिए ३ कर्मकहिए ४ सुभाव
 कहिए ५ ब्रह्मकाहेतैकहिए अखंड
 अविनासीहै तातैब्रह्मकहिए १ जीव
 काहेतैकहिए आपकंआपचन्दैनाही
 तातैकहिए कालकाहेतैकहिए आप
 कोंआपकालनृपाईले तातैकालकहि
 ऐ ३ कर्मकाहेतैकहिए सकलदेहवि
 पैकरता तातैकर्मकहिए सुभवकाहे
 तैकहिए धारोधाटोडुषसुषअमलज
 नै तातैसुभावकहिए ५ मायाकेनांम
 पंच मायाकहिए १ आकासकहिए
 २ सुनिकहिए ३ सक्तिकहिए ४ प्र
 कृतिकहिए ५ मायाकाहेतैकहिए ब्र
 ह्मतेसबलहै तातैमायाकहिए १ आका
 सकाहेतैकहिए पिंडब्रह्मडआदिकार
 एहै तातैआकासकहिए सुनिकाहेतै
 कहिए जडहै तातैसुनिकहिए सक्ति

मायाकेसरीरदोय एकसरीरनोतत
को ताकेनांमतीनसूक्ष्मकहिए
लिंगकहिए १ जोतिकहिए २ एक
सरीरपंद्रशततको ३ ताकेनांमती
नि स्थूलकहिए दीर्घकहिए वि
राटकहिए सरीरदोई तुरियाबिन
रमुक्ति अवस्था चारि जाग्रतसुप्र
सुषेपति तुरिया अथ अवस्था
पांचततको पचीसप्रकृतिमिलि
जाग्रतरहे तातें जाग्रत अवस्था
हिए १ नोततको सुप्रामंभुमें तातें सु
प्र अवस्था कहिए २ जाग्रत सुप्र अ
स्था जाऐं नाही तासु सुषपति अवस्था
कहिए ३ जीवबल एक करि जाऐं
तातें तुरिया अवस्था कहिए ४ जीवब
अंतर नाही जैसें सूरजघांम दोई नाह
जैसें अग्नि उद्वन दोई नाही जैसें जल
गदोई नाही जैसें कंचनके अशुष
चन दोई नाही जैसें बल जीव अंत

ही जीवब्रह्म एक करि जाँऐं तासुं मुक्ति
 कहीऐ पदद्वय ब्रह्ममाया लयनतानि
 ततकारनज्ञान कुलालन्यायेते ब्रह्म
 कान्यायेतेमाया मोडोमाया अंस जीव
 ह्यको अंस ज्ञानब्रह्मको अंस अज्ञ
 नमायाको अंस ता अज्ञानसुं जीवबंध्यो
 अष्टबाएषट्कुरमी कहीऐ काम क्रोध
 मोग मोह मांनि अज्ञमांनि ऐषट्क
 मी जीतैं तासुं जीवनमुक्ति कहीऐ ब
 चाचार परा पसेति मधुमा बैषरी
 यातीन उनसनी ब्रह्मवाच पंचत
 तको विनसैं नीततको वासनाले अ
 तरे ऐदोई सरीरविनसैं तबत्रबाए
 ततप्रापति होई गंगाघोषन्याई अर
 हटघंटकान्याई कुलालचक्रन्याई
 जमचक्रन्याई कीटिचंगन्याई लोह
 चुंबकन्याई गलफीध्यानन्याई ॥ ई
 ब्रह्ममायाको निरणोः ॥ पिडब्रह्मंड
 को विचारा ॥ प्रमहसगिनाना ॥ इति

०

श्री गुरु चारय विरंचितं ॥ ब्रह्म
 ज्यज्ञात संपुरण ॥ धृष्ट ॥ १० ॥
 बर्का गणती ॥ १४ ॥ अष्टपट
 द्विको मत्त ॥ लिप्यां तै ॥ आत्म कोंक
 जे प्रनांम जाकी महिमा चित घनरंम
 चार बेद यत्सास्त्र भये अपनी मति
 मामै निरमये १ मीमांसा बिसे सक क
 बहैरिन्याय पातो जलन दे संधि श्रे
 बेदांत बंधां नै यत्सास्त्र यत्सास्त्र म
 नै २ सक्ति अनंत मत्त अविनासी स्व
 यं उती सरव प्रगासी मीमांसा प्रतिपा
 दै कर्म विन करणी बातौ सब नर्म ३
 देही बचि करै सो पावै मीमांसा असे
 हरावै विन बोयें कै सै फल याय वि
 न यायें कोई नाहिं घाय ४ सुन कर म
 न के सुन फल लागे जे नर मुठ ते कर
 ही त्यागे जे नर अ सुन कर म लिप टाय
 जे मुनि कहै ते करि पिछिताये ५ बि
 से सक सब समैं बतावै समैं विना क

४

थन आवे जैसे बीज बो दै किसान स
 ना होय फल की होन दै समं करावे
 होये यह तो प्रगत लये सब कोय उ
 दि रूप समं होय फुरे करणी समं परस
 परजुरे ७ जैसे वैसे सकहे समजावे कु
 नमादिक देखो जैसे पावे न्याय कहै मै यो
 पहि चाना करता कारजि कारन जाना
 ८ होय सोही सो करता करै काज बिधि
 तारी नही टरे करै कर्म सुभ समं विचारै
 कर्ता कब और करि डारै ९ वो कुला
 लये भाजन जैसे जैसे करै होय बुनितै सै
 या बिधि न्याय कहो विस्तार गोत्र कहै
 यो ही निरधार १० कर्म जोग पातां जल
 कहै जोगी होय जेद सोल है जोग्य
 गजोगम गध्यावे देही सां हि देव सोप
 वै ११ मूल बंध विट आद्य करै उल
 टि अणान प्राण संचरै उलटै पवन ग
 निदि सि जाई उपजे धुनि म न त म
 ई १२ जोग जुगति भेटै कर

कहै पातां जल सार सांघिक है विन जां
न न पावै जो कोई कोटि जतन करि धर
वै १३ कर्म जो गप साधन कौ देहे सो
अनित्य विन भंगी ये है नित्या नित्य वि
बे क वि चारै राखै नित्य अनित्य बिसारै
१४ उलटि आपमें आप समावै नि
जिस रूप आप नौ सो पावै सांघि गान
मत है सुधी कपलिक है जा नै गुर मुधी १५
वेदांत कहै सार मत कहै जा मै क दण
सु मन न हीर है पूर्ण बुद्ध निरंतर आई
कैसे नित्य नित्य कहई १६ ग्यान अज्ञा
न क वन सं कहै सब ही खय प्रकासी
त है नांक बु साधन नांक बु जु ती नां
क बु बंधण नांक बु मुक्ती १७ यौ वे
दांत प्रगट बयानै व्यास वचन अन मो
सं जानै षट सास्त्र सिं न्य सिं न्य वि चार
त त वि चार ऐ क मत सार १८ जैसे कही
गा वन हारा रागरा गणी ब हो प्रकार
जोई जोई जा कौ भावै री ऊ री जि पु नि

ताकं गात्रै। १९७। विधिनिसेदकवनसुंक
येकही गावनहा रात है। उलीसर्ववि
पूर्णयेका अपनै नाव होर ह्यौ अनेक
हो। २०। ज्ञानमुक्तिवैरागरिवा। नक्ति
जुजब होये। उलीप्रमपदपाईये। अ
मुषडा जोये। २१। ईति श्रीषट्का
कोसत उलीजीकृतसंपुरण।

११। स्वयंकी गणती। १४७७।
अथ ग्रंथहेतुपदेलालि।
चोपडा। रायबिसंघबघैराणी सतरू
पासुंकह बघाणी बिसंघदेवबघेलारा
उ तयंतकनोजबसैतिहैं। संघ १ पाट
रूपसतरूपांरांनी हंस। महासुषकी
यांनी भक्तिरूपर्ज्जलतनसोभा सत्त
रूपांसतगुरपदलोभा २ मनविच्यार
इसविधिसुंरहई आठंपहरध्यानचित
अहई जोगुरमितैतोकारिजहोई वि
नगुरजातसकलजुगरोई ३ महाप्रेम
आरते अत्यभारी असेनहैं अवरः

प्रांति जया प्रगासा पोढे ऊते सयन सुधम
 ही ठाठी सक्ति वोर कुछिनां ही २ए स
 त्यं सास चली जो ज बही बाहिर आं
 नरही है त बही बाहिर स्वास अप्रव
 ल आर्द्र सोऽस्वास मति नै पाई ३०
 ले कै स्वास ब्रह्मा कुं दी न्हं ब्रह्मा ता
 ह प्रचंड त की न्हं ए बि स तार की यो
 हां ब्रह्मा धर्म अ धर्म अरु कर्म अ व
 र्मा ३१ ब्रह्मा कह्यो वेद को ची न्हं
 ये ही सिषा पन सब नै ली न्हं चार वेद
 कानां व सुणाया रघुज गुस्यां म अथर
 वण गाया ३२ अ ले पंडित डनी यां स
 वही उत पते जयी वेद की ज बही
 अगु सब स्त कै सै कै पावै सब ही ज
 गत वेद ज मावै ३३ निगम चार यं
 कह्ये ब्रह्मानी सास्त्र की सुनिये यह
 बांणी जे ही जे ता के नाम उं चार
 ताका अ व सुणिले हू वि चार ३
 ध प्रथम मी मां सा अ सै बो र्ना पति

ब्रताकरणीकरितोत्सा० करणीकरिद्विजन
 कुं वतलावे कहेजीवकैसेफलपावे
 ३५ इजैवैसेसककीडुणीयेबाणी ।
 तनसबईरुबिधिसमैबघाणी समै
 बिनासुधरेनहीकाजा समयजाणि
 कैरकरैसमाजा ३६ तीजैन्यायकहैहै
 करता मरणजीवणसबभर्मअवरथा
 करतातीनलोकबस्यकीन्ही अगमभे
 दकाहैहीचीन्हां ३७ चौथापाता
 जलकोज्ञानां कर्मजोगतीनकह्योनि
 ध्यानां कर्मजोगकरिनैकसमानां
 अगमवस्तकोसर्मनजानां ३८ पंच
 संकपलिमुनिकीबाणी सांघिग्यानम
 तनीकैजाणी मैजोकह्योअथैबि
 नां सोनिजिभेदनकाह्यजाना ३
 ९ वेदव्यासवेदांतकहेउं येकनि
 रंजनकाहुनलहेउं मेराभेदनिरं
 नपारा ताकुंकोपावैसंसार ध० य
 षटकामतसबकहिदीन्हां मेरा

नकाऊनही चीन्हं॥ लागेऊगरनै॥
मतेवाला॥ येअरुजावसगावैकाला
धर॥ स्मै॥ पंडितज्ञानासवरहे॥ येऊग
राकरिरोप॥ आयेथेकुठिलाभकुं॥ चले
जमाकुंघोप॥ धर॥ इतरुयंउंवाच
चौपड॥ सतरूपाराजासुकही सत
खाणीसुणेयेसही सतगुरसूहैमु
क्तहमारी कहीबिसंधकीनारी ध
राजाकराणीसमजाये तवरजा
एवेकआये सतगुरइसकीयासु
धमौना॥ बिसंधकृतवउपज्योज्ञाना
ध४॥ स्मै॥ कबीरउंनन॥ सतरु
पाराणसहित॥ सुएनल गोरितज्ञान
संधाबाधेलसुं॥ कहैकबीरबलच्छा
ध५॥ चौपड॥ अबसुणेलेऊपुराण
नगती नमेंजीवनपावैमती भयेपा
पपुराणसेती मांसघाणबतलाद्वेषे
ती धर्द करेपापअरुमनमेंसुसे व
धर्मया मेंसब फ सि बेदबास

२
 वेसबधोये अंतसमैपिइत्तसबरोये
 ४७ पडनलंगीज्जजसकीसारा इष
 वैअरुकरैपुकारा वडेकुलीनये
 संगये वेदव्यासकरोवतनये ४
 ८ चौरासीबंधनमैदीया वेदव्यासने
 असाकीया अनेकहोकेसैकरिबूटे
 वेदफंदसबहीकूलूते ॥४९॥ रैमै ॥ वे
 दव्यासअवतारबड ॥ धर्मरायेज्जवं
 सैरहो पुतायेजीवा सातदीपनबंध
 ॥५०॥ चौपई ॥ अबअवतारनकी
 बिधिभायूं सतरुपातुचितगहिरा
 संगदेवबधेत्ताराउं तुमऊंसुणैये
 कचित्तलाउं ५१ पूर्णकलाअसअ
 वतारा कीयोनिरंजनरूपपंसारा रा
 मकहतिसैबडदोउं पूर्णआपनि
 रंजनहोउं ५२ निरसैहअरुबाव
 नअवतारा कालरूपनिरंजनधा
 रा वा रै सबहीअसकहाई सोईनि
 जनरायपगई ५३ जमकीन्हीये

कला अन्नता ॥ ताकुं भजे साध अरुसे ॥
 ता ॥ इनमै मुक्ति न कहु पाई ॥ कालक
 लाधरी डारै घाई ॥ पध ॥ ॥ ससब्रत
 मानै नही ॥ जंवे लगपर हे जीव ॥ परप
 चीति कुं लोक का ॥ संध कहै ते ॥ हिपी
 व ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ सोई निरंजन काल
 कहावै ॥ ताको योगी ध्यान लगवै सो
 वै जोगी पावत नांही ॥ देखै कालरूप की छं
 ही ॥ ५६ ॥ असे मुलिप डो संसारा कैसे ॥
 पावै नेदह मार ॥ तीनौ लोक निरंजन
 राई ॥ उतपति पले करे अरु घाई ॥
 ५७ ॥ असे जीव मुक्ति नही पाई ॥ बडे बडे
 दीने भटकाई ॥ चारुं मुक्ति निरनै
 करि राषी ॥ ताकी अब सुणिले कुस
 घी ॥ ५८ ॥ हेसालोक सांमी पीठां उ
 सारूपी साजो जीनां उ ॥ चारि मुक्ति
 जाके घर होई ॥ जासुं जागिरे हे ॥ सब
 ई ॥ ५९ ॥ ताका ध्या लनका कुपाई ॥
 में जीवर हे ॥ बिलमाई ॥ कालरूप

रंजन राई ॥ अष्टि रूप सर्व न कुं धाई ॥ ६०
 की वेद करै अस्तुती ॥ अनंत कलांति
 हिं करै विभूती ॥ सिव तुं ब्रह्म ताहि कुं
 ध्यावै ॥ सनकादि क सो ध्यान तमावै ॥
 ६१ ॥ सेस सहस्र फलानु मे जस गावै ॥
 तनिरंजन कुं नही पावै ॥ जाके अंगे
 हमारी ॥ ताकी कवन करै जंकु रगारी
 ना जग का जीवन को ई सानै ॥ जं
 चा करि जानै ॥ जं वं ॥ जं वरहा लिप
 ई ॥ आवागत नमिटे न्ही भाई ॥ ६३ ॥
 ॥ जं वा आपनिरंजना जिन्ह ॥ जं जो
 यो पसार रोकि वे वि ब्रह्मंड ॥ ॥ मु
 दसवौं दे रा ॥ ६५ ॥ चो पइ ॥
 ब्रसंघ देव सतरु पां वी ली ॥ स
 तगुर वस्तुं म्हा र अमो ली ॥ ताकी हम
 कुं करौ लिये ई ॥ हम प्रती ति तु म्हा री पा
 ६५ ॥ निरंजन ह्म के पार क हाई ॥ सो
 वस्तुं होय सहाई ॥ सोई वस्तुं कै सै कै
 ॥ हम रै हा थि कवन विधि आवै ॥

मो

सोईबातकहोहिस्वामी॥भक्तिमुक्ति क
हीयेनिसकांमी॥उमअचाहि कुछिचा
हितनांही॥मुक्ति काजआयेजगमांही
६७॥चारमुक्तिकेआगेमुक्ति साहि
बकहोताहिकीयुक्ती॥बातयेकमो
हआश्रजभावे॥अबकहोजीवके
संपतिआवे॥६८॥कैसोस्वामीदेऊ
दिषार्ज॥नहींतोतलफ २ जीवजाई
जीवतजीवमुक्तिन्हीपहिहो॥सुवांजी
वपीछेक्याकहिहो॥६९॥~~हो~~ जीव
तजीवमुक्तिन्ही॥सुवांमुक्तिकीआस
तेजीवचोरासीगये॥पडेकालकीफांस
७०॥~~कबीरचचन~~ जोपडूकहै
कबीरसुंणैबाघेला सतगुरतोहिकी
प्राअबचेला सतरुपांसुणितैसत
ज्यानां ताकेसुंणैप्रमपदधांमा ७१ अ
मरहोपजगधरेनजांमा प्रमसनेही
आत्परंमा सुणहोभक्तिमुक्तिआग
र सुमरोपुसहंसकेनागर ७२ पहि

लै भक्ति करो चित्त लाई ॥ लोक लाज त
जि मान ब माई ॥ कुल करणी छांडो मन
मोटा ॥ छांडो कर्म भर्म सब छोटा ॥ ७३ ॥
नं व सने ही जो कोई साधु ॥ लो है ता धु
श्रम श्रमा धु ॥ उ न साधन की सेवा जो
नो ॥ जो त्रम चार लोक गति मानो ॥ ७४ ॥
साधु संत हो ऐ सुषदाई ॥ सत लोक श्र
स्थिर धर पाई ॥ सत रूपों उ ज्ञा च सत
रुपां सत गुरु सं नाथी ॥ साहिब श्रु ज सुनो
एक साथी ॥ ७५ ॥ कैसा साध कहो स म
जाई ॥ उ न के ल दिन दे हो सुनाई ॥ क
बीर उ न च ॥ सुनि सत रूपों उ न के
चहिना ॥ लो लै ब चन मधुर सुष वेना
७६ ॥ काम को धरन प नै ऊ ना ही ॥ और
भाव सु त्य जि न ज्ञा ही ॥ लो र्भे इष्टि नि
नि कट न हि श्र नै ॥ लो हा कं चन सम
करि जा नै ॥ ७७ ॥ सम इष्टी सी तल गति
डो लै ॥ कुट ल ब चन क ब ऊ न्ही लो
लै ॥ चंचल चेत न ही

तेजनसीतलसुषकीसीरा ७८ दया
भावसबउपरिगये छोटाबडानसुष
सुभाये सकलसरीरबसैगुरगंजा
जबबोलैजबनिर्मलबैना ७९ ॐ
सासाधहोयेजगमांहीं नावसनेही
चाहितहांही परउपगारजीवका
करहीं कालकुटलसुनांहीडरहीं
८० नावलक्षकीयेसहिदांनी सत
रूपांसमजोमनजांनी सतरूपांसत
भावतुमारा अगमपंथहैगंनहं
मारा ८१ सोहमतुमसैंकह्याबुजा
ई गुप्तवस्ततोहिदेऊनिषाई ॥ ८
८२ ॐ वा ॥ सतरूपंसुषां
नंदकहिउ सोसतगुरकैसीविधिल
हैउ ८२ कायाभेदयुक्तिमोहिकही
गे गोरगोरकेमारगलहीये मनअ
इश्रुतिंकांनघरमांही मनसाल
इरिबसैंकेहिगंहीं ८३ बुधचित्त
का मोहिकहोबिचारा हंसकरोई

नसर्वतंत्यमहं... विदुस्तं...
कम्बरा... विदुस्तं...
नसु... विदुस्तं...
सना... विदुस्तं...
रीव... विदुस्तं...
तत्तु... विदुस्तं...
न्या... विदुस्तं...
तेके... विदुस्तं...
वने... विदुस्तं...
वि... विदुस्तं...
ही... विदुस्तं...
व... विदुस्तं...
वि... विदुस्तं...
स... विदुस्तं...
स... विदुस्तं...
वि... विदुस्तं...
वि... विदुस्तं...
वि... विदुस्तं...
वि... विदुस्तं...

हही हिरदामो ह्रीवासामनका पांचुई
 श्रीराजालनका ए० नेत्रमांहिफिरैऽ
 कासा जहांतहोमनकीपाप्रकासा
 सुणिसतरपासुरतिठिकाना तोसुभा
 सुभेदद्वेषांना ९१ श्रुतिदोयदोनुघ
 रमांही येकरगनियेकश्रवणगंड
 मनसात्तहरेभेदतोहिदेउं मनतैवेग
 सबैगुणलेउं ए२ सबकैसिरधरि
 हैनकबहु ० इनडायनजुगवायोस
 बहु चितंबुधियेकधरमांही चंच
 लचितबुधिधरेमांही ९३ तीनुगु
 एकासीनठिकाना बहोयेकधरजा
 तेंजांना अटदेलमांहिविरंचिकहा
 ई द्वादसमांहिविष्टहैभाई ९४ सि
 वषोडसमांहिप्रकासा तीनुकीयार्त
 नघरिबासा चंद्रशुरजदोनुबीरव
 षांनुं बाहिरभीतरियेकहीजांनुं
 ए५ इनकाभेदश्रवरनहीपावे
 कैतेजोगीजुगुमावे ऊपरिचंद्र

रहै त तै सरा ॥ भेद ल है ते दो सी पूरा ॥
 ए ६ ॥ द्रव्य ति दिसा चंद्रका ब्राह्मण सो क
 लंड में करै प्रकासा ॥ बाहिर उतर घरे
 होये आवै ॥ अम भेद को ई नही पावै ॥
 ए ७ ॥ उतर दिसा ३ ॥ सूरज का बाला ॥ ज
 रहै त हां करै प्रकासा ॥ बाहिर दमि ए दि
 सहो में आवै ॥ यह फेरव को ई नही पावै
 ए ८ ॥ केता पचि र जनम गुमावै ॥ फिर
 भटके चोरा सी आवै ॥ दोरू क लाल ह
 नही को ई ॥ जसा अपनी सब नै को ई
 ए ९ ॥ ते ज सरज दे ही र म वा लना सी त
 त चंद्र कर त है काला ॥ पहली सर करे
 जंजाला ॥ अं चिली या त ब हो ग या पा
 ला ॥ १० ॥ अंत लै का है ये प्या ला चंद्र क
 र त है सब को काला सुष मनि जाहि भये
 दो उली न्ना ॥ यो भयो जीव काल आ
 धी ना ॥ १० ॥ यै ता का म नि रं जन दार ई ॥
 भेद बिना सब बह २ मर ई ॥ यन सब ह न
 तै हरि मुक्तां मा ॥ सुनि स त्प रु पां मे रो जां ॥

वही हिस्दासो हीबासामनका पांचुई
 श्रीराजासनका ए० नेत्रमांहिफिरैः
 कासा जहांतहोमनकीपाप्रकासा
 सुंणिसतरपासुरतिठिकाना तोसुंभा
 सुंनेदद्वेषांनां २१ श्रुतिदोयदोनुघ
 रमांही येकरगनियेकश्रवणगंड
 मनसात्तहरेभेदतोहिदेउं मनतैवेग
 सबैगुणलेउं ए२ सबकैसिरधरि
 हैनकबड ० इनडायनजुगवायोस
 बड चितंबुधियेकधरमांही चंच
 लचितंबुधिधरेनांही २३ तीनुगु
 एकासीनठिकाना बहोयेकधरजा
 लेंजांनां यटदेलमांहिविरंचिकहा
 ई द्वादसमांहिविष्टहैभाई २४ सि
 वषोडसमांहिप्रकासा हीनुकीयान
 नघरिबासा चंदशुरजदोनुबीरव
 षांनुं बाहिरभीतरियेकहीजांनुं
 ए५ इनकाभेदश्रुवरनहीपावे
 कैतेजोगीज्मगुमावै ऊपरिचंद

रहे तले सरा ॥ जेदल है ते दो सी पूरा ॥
एई ॥ दयति दिसा चंद्रका बाला सो ब्र
संड मै करै प्रकासा ॥ बाहिर उलत घरे
होये आवै ॥ अम भेद कोई नही पावै ॥
ए ॥ उतर दिसा ॥ मूर्ज का बाला ॥ जहं
रहे तहां करै प्रकासा ॥ बाहिर दमि एदि
सहोपे आवै ॥ यह फेरव कोई नही पावै
ए ॥ केता पचि र जनम गुमावै ॥ फिर
भटके चौरासी आवै ॥ दोरू कला लह
नही कोई ॥ जहां अपनी सब नै कोई
ए ॥ तेज मूरज देही र मवारना सीत
ल चंद्रकर तहै काला ॥ पहली सर करै
जंजाला ॥ अचिलीया तब होगया पा
ला ॥ १० ॥ अंतसैं काहे ये प्याला चंद्रक
रत है सब को काला सुषमनि मां हि भये
शे उली न्या ॥ यो भयो जीव का स अ
री ना ॥ १० ॥ शयैता को मनिरंजन करई ॥
नेद बिना सब बह २ मरई ॥ यन तब है
हरि मुकां मा ॥ सुनिस तह पां मेरो जां

रतनीकसेआई ५ तबरोमानंदनेट
जोपाई तबकवीरअपनेघरआई
मालालानीतलिकबनई तबतैउत्त
भक्तिचलाई ६ कवीरकरैसोमायन
भावै लोगजातरीदरसनआवै क
टमसहतसबहीमिलिरोवै व्याकुल
भयेकहैघरयोवै ७ मकामदीनाह
मारेसाजा कलमासेजाओरनिवा
जा, जबकवीरकैलागीजाला माथे
तिलेकगलामेंसात्वा ८ कवीरतु
किननैजरमाया येपाषंडभेषकहां
सुंल्याया अपनीसहचल्योगतिहो
९ हिंडनुरकबुजिल्योदोई एं अ
चरजभयोसकलसंसारा तबरोमा
नंदलगईपुकारा सुसलमानजु
लाहायेक जितहरिभक्तनकाप
हस्याभेष १० कीरतिकरैसोतुम
कौदैई बुजानांमजुम्हारोलेइ त
बरोमानंदनैतुरतबुलाया आगे

पीछेपडदादिवाया ११ गेर. उंड. तैसा
 नसीसेवा आ. कोउंनउ तैसा स
 बवस्तपुजाने-शुनी विसरएजस्त
 येकनहीशुनी १२ तादिज पु. सम
 देनांही तुलसीपवनपुजा. ही त
 बकबीरतननकीजांन. सं. मं. सी
 येकनहीशुनी १३ तुलसीपुजतं
 डि. करि. ल्याके आ. त्र. दे. दे. के. श. नि. च
 दावी तवसंग. न. द. कै. सी. जा. णी. पु. ह. र्. न
 सौं. क. ह. न. ह्या. नी १४ सम. क. क. न. ली. ध्या
 तोही सबसौं. नो. म. ह. म. ले. ले. ही. ह. म. र. म. न
 सौं. गै. ल. मं. जा. न. तु. म. से. व. ग. इ. ह. न. की. इ. से
 श. र्. १५ तुल. सं. म. क. क. न. ले. ह. ल. पा. र्. इ
 ली. नी. नी. ती. ले. क. ल. न. र्. इ. श. से. र. म. क
 सब. को. र्. इ. श. सी. मं. ति. दि. ज. न. लं. ही.
 र्. १६ गु. ह. से. इ. जब. उ. म. र. हो. र्. स. त
 ग. र. क. लि. से. मि. ल्या. न. हो. र्. प्र. मा. र. र. स. न
 दे. हो. गु. सा. र्. इ. न. त. ले. ली. पु. दा. र्. १७
 तब. अ. गा. ध. बु. धि. क. र्.

हतनीकसेआई ५ तबरोमानंदनेट
जोपाई तबकबीरअपनैघरआई
मालालीनीतलिकबनई तबतैउत्त
भक्तिचलाई ६ कबीरकरैसोमायन
भावै लोगजातरीदरसनआवै क
दुमसहतसबहीमिलिरोवै बाकुल
भयेकद्वैघरघोवै ७ मकामदीनाह
मरेसाजा कलमारोजाओरनिवा
जा जबकबीरकैलागीजाला माथे
तिवैलैकगलामैमात्वा ८ कबीर
किननैजरमाया येपायंडभेषकहां
सुंल्याया अपनीराहचल्यांगतिव
इ हिउचुरकबुजिल्योदोई ९
चरजभयोसकलसंसारा तबरो
नंदलगईपुकारा मुसलमान
लाहायेक जिनहरिभक्तनका
हस्याभेष १० कीरतिकरैसोतु
कौदेई बुजानामतुम्हारोलेइ
बरोमानंदनैचुरतबुलाया आ

पीछेंपडदादिदाया ११ रामानंदकरैमा
सेवा जाव्याकोउनजांनैसेवा स
स्तपुजाभैश्रानी बिसह्यावस्त

१२ ताबिनपुजासम

दैनंही तुलछीपत्रनपुजासांही त
वकवीरतनजनकीजांनी खामीसौ
जयेकनहीश्रानी १३ तुलछीपत्रते
डिकरित्यावो आत्मदेवकौश्रानिच
टावो तवरामानंदऐसीजांणीपुछौंईन
सौंकहुनबानी १४ हमकबदीनीदिष्या
तोही सबसौनांमहमालेलेही हमरातिब
सेगैलामेंजाई तुमसेवगसहतनीकसे
जाई १५ तुमरामकहाभेटहमपाई
मालानीनीतिलकबनाई जैसेरामक
हैसबकोई ऐसीभांतिहरिजननेही
होई १६ गुप्तनेदजबप्रगटहोई सत
गुरकलिमैमिल्यानकोई प्रगटदरसन
देहोगुसाई नदेवोतोगुरकीडहाई १७
तबअगाधबुधिकबीरकीबीन्ही प

शयोत्यादिष्या र्दन्ही नागबडोरामानं
१८ गुरपाई जन्ममरन काभ्रमगुमाई
रामानंदगुरपाईया ची
न्हितीयाब्रह्मज्ञान उपजीभक्तिसरीर
में पायापदनिरवान १६ रामानंदका
सिषकबीर असामतकासंत भक्ति
डढावन श्रोतरे गावेंदास अनंत २०
कबीरभक्तिकबीचित्तलाई
छांटीप्राया मोहबडाई पहिलेंतोदास
तनकीनां बकृतसुषभक्तनकौदीन
२१ कपडाबुणेंबेचिलेअवें बधन
लेयसोषायसुलावें येकदिनांहरि
तरतीनां दरसनआय चोहटैदीन
२२ सुणोंकबीरतुहारोनांम
आयोतुम्ह रैठांम भक्तकोरु
स्योतनखीनां बसतरमांगेअति
धीनां २३ अधीफाडिदेनजव
जो सारीदेहोभक्तकुनागो द
अत्रहीत्याई तबकबीर

ही जार्ड २४ हाट वाट मै रहै लुकाई घ
रके काऊ धरि न पाई दिना ती लके मां
न स भुये बाल करो वै धरे बिडये २५
जब हरिकी ली जै सी दया घर बैगां
बाल दिलै गया छुटत सौं ज छर मां हि
उतारी बर जत ही बाध रि मै डारी २६
घर मै धरो कबीर की माता देहै सं ल लुख
रै दाता औ सोरां सक हां को दाता सुं
कबीर करै अपघाता २७ कहौ बी
र कहा सौं आयो काको धन जो देन प
गयो कब ऊ कबीर बोले न ही मांगे
लाघट का धरै जो आयो २८ सुणारी
माता बात हमारी का सी बिश्वनाथ
अधिकारी जाके दरसन राजा आयो
जिन कबीर कौं बिचि चढायो २९
इ बिले वै न ही बे टा तेरा तब राजा उ
ठिकी न निहैरा मां नीरा जा बिन ती ते
री ज हां पग दो बाध रे मेरी ३० सौं
जम गाय मेँ धा करौ दाम ये क घर में न

ये

हीधरौ तबराजासौंजमगाई सोक
 बीरघरदईपगाई ३१ घडीयेकमैवै
 चलिआवै लोगनगरकेदरसनपा
 वै इतनीबातकहीहरिजबही मा
 ताकैमनमांनीतबही ३२ तबकेसे
 अइदिहोगया अपनैपेटकठुन
 हीकह्या जनाआरकबीरकैध्याई
 नानिनिंरिघरकुंलेआई ३३ स्वांमी
 तुमकौंनेटजोआई कैघरचोकैदे
 होउंताई देषीआपअपनेनैनां त
 पतीयायेपारकेबैनां ३४ कौनैदई
 कहांसौंआई तवमातासबकथास
 नाई तबकबीरमनहीमनजांनी
 पाकरीहैसारंगपांनी ३५ गकुर
 सौंअैसीकरी अबजीवडाकबउ
 नहीडरी तननाबुननाबांडिके ह
 चरनाचितलाय अबतोरांमकप
 री पचिपचिमरैबलाये ३६ भत्त
 लायमहोछाकीन्हां कठुनराओ

हो

नामैहरी पराई नारी धरु नामै घरका
कुकाफो स्या मानसमारि नही
स्या कीयाम हो ब्राह्मन ही बुलाये सु
इलोगतै अनिजिमाये ध५ अरु वतु
महम ही दे होर सोई जातो हम तुम
लागन होई वीगाठीगी जब ही देषी
कछुन बोले कबीर बिबेयी ध५ अरु
बतौना जन ही घरमां ही ल्याउं तुम
बैठोउसद्धां ही उत्तर करि कबीर टलि
गया जब के सोके मनसं सैं भया ध६
जब हरि ऐसी कला जो कस्या मांथे
इविगेबका धस्या सोइ इविबणी
यां कुं दीन्हो अरु भांति भांतिका
साधालीन्हो ध७ मैदा चावलयां
डबहोतेरी सकल रसोई घृत घने
री जन चार मजुर ले चाल्या सो
सौं जले घ्र कुं हाल्या ध८ ब्राह्मन
देषि भया सुयभारी कोई न जानै
चिरित्र मुरारी जनकी मरमां अरु

धिक बटाई। जनां जनां कुंसेर अटाई
४ एणिये कक है जुना है दोल लिपारी। तो
राजा सौं कहो जनाई वे कक है नीको
रेनीको। मली करै उधार होय जीको।।
५ धेबी रापान देल सुय पायो। लब क
बीर सब के मन भायो। पायो जोध जब
स्वारथ शयो। धनि धी करत सबे घ
रगया। ५१। दो दो।। सांचो भक्त क
बीर है। कासी प्रगट्ये शया। जो के
ई नी दा करै। सो ही नरक कुं जाया। ५
२। चौपई। जहो कबीर तहां हरिग
ये अणपि बाण पाजां लण भये बैग
कहा करै रे भाई द्यौन कबीरा के घ
र जाई ५३ सब का कु कुं दे तर सो ५
जो कोई जो ली सांडे सो ५ बां लन ५
रस न्यासी ली न्ही या देषि मा कु कुं व
न्ही ५४ सैंदा चावल सेर अटाई
घत सहित अरघा ड सि गाई जैसी
सुनि सुख भया भारी के सो रायी व

तहमारी ५५ तबकबीरघरकुंउति
आई हरिकाचिरत्रकाऊनहीपाई
बहुतसौजदेवीघरमांही ओजुब्रा
लएलेलेजांही ५६ धनिधनिकर
तगयासबकोई तबकबीरमुयरा
बैगोई धनिसमरथहैकरतामेरो
होंतोऊसदाहरिकोचैरो ५७ हरि
बिनकौनबडाईदेई हरिविनको
नअपनौकरिलेई तबकबीरकेता
लीलागी भईप्रतीतभरमगयोभा
गी ५८ प्रेमसहैतहरिकैगुनगाबै
हरिहरिकेदरसनआवे सोनारूपा
केपडादेई दासकबीरकछनहै
लेई पूण छाजनभोजनइतराले
ई भावसहतजोहसिहसिदेई
कबीरराजाकोहउत्पार्गे त्योंत्यों
अधिकजातरालागे हूं दिन
दनभीरबहोतअधिकई सुमरन
करतचित्तचलिजाई तबकबीर

ये कबुधि विचारी लोक बड़ाई हिरसै
डाई ईर प्रातसमै गनिका के यथा
हं संगी अच भोभया ले बाहु ज लव
के घाली गिनिका मिलिक कबीर संगी
चाली ईर जारी भरि चरवौ दिक्ती
या मदकै धोषे भरि भरि पीया ले बजा
रके माहि निसर्या मांनुं ग्यांन ह्यानस
बबिसर्या ईर हांसी करै नगरके ले
गा भक्तनके मनउपज्यो लोगा बां
हए बां एणस वै बिगोवै हरिजनदे
पिदे पिमुषगोवै ईध भक्तिकीयो
चाहे सबकोई नीच जातपे भक्तिन
होई दिनदस भक्तिकबीरै कीन्हें
अब देयो गिनिका संगती न्हंई ई५६
चलेर कबीर गये जहां नगरकोरा
जावै ज्यो तहां अोर बार आदर क
रिलेता डारि सिंघासन आसन देता
ईध तादिन आदर कहुन कीया स
भा बाहिर बैठिक दीयां सबहीके स

तहमारी ५५ तबकबीरघरकुंउति
श्राई हरिकाचिरत्रकाऊनहीपाई
बहुतसौजदेयीघरमांही ओजुब्रा
लएलेलेजांही ५६ धनिधनिकर
तगयासबकोई तबकबीरमुयरा
बैगोई धनिसमरथहेकरतामेरो
होंतोऊसदाहरिकोचैरो ५७ हरि
बिनकौनबडाईदेई हरिविनके
नअपनौकरिलेई तबकबीरकेत
लीलागी भईप्रतीतभरमगयो
गी ५८ प्रेमसह तहरिकेगुनगा
हरिहरिकेदरसनआवे सोनारु
केपडादेई दासकबीरकछन
लेई पूण छाजनभोजनइतर
ई भावसहतजोहसिहसिदेई
कबीरराजाकोहउत्पार्गे त्यो
अधिकजातरालागे हूं दि
दनभीरबहोतअधिकई सुमर
करनचितचिनिजाई तबक

कबुधिविचारी लोकबड़ाई किरसै
ई प्रातसमै गनिका के यथा
संगे अचं भोभया ले बाह्य
घाली गिनिका मिलिकबीरसंगि
चाली ईर जारी भरि चरनोदिकनी
मदकै धोषे भरि भरि पीया ले बजा
कै माहि निसर्या मानुं ग्यान द्यान
बिसर्या ईर हांसी करे नगर के ले
भक्तनके मन उपजो सो जा बा
ल ए बा एण सवै बि गो वै हरिजन के
दे पि मुष गो वै ईर्ष भक्ति कीयो
चाहे सब को ई नीच जात पै भक्ति न
होई दिन दस भक्ति कबीरै की न्ही
अब देयो गिनिका संगती न्ही ई ५६
चले र कबीर गये जहां नगर कोरा
बै ग्या लहां और बार आ दर क
लेता डारि सिंधासन आसन दे ता
ई ता दिन आ दर कहुन कीया स
भा बाहिर बैठि क दीया सब ही कै स

तहमारी ५५ तबकबीरघरकुंउति
शार्ड हरिकाचिरत्रकाऊनहीपाई
बहुतसौजदेवीघरमांही ओजुब्रा
लएलेलेजांही ५६ धनिधनिकर
तगयासबकोई तबकबीरमुयरा
मैगोई धनिसमरशुहेकरतामेरो
हौतोऊसदाहरिकोचैरो ५७ हरि
बिनकौनबडाईदेई हरिविनको
नअपनौकरिलेई तबकबीरकैता
लीलागी भईप्रतीतभरमगयोभा
गी ५८ प्रेमसह तहरिकैगुनगाबे
हरिहरिकेदरसनआवे सोनारूपा
कपडादेई दासकबीरकछनही
लेई ५९ छाजनभोजनइतराले
ई भाबसहतजोहसिहसिदेई
कबीरराजाकोहउत्यागे त्यों
अधिकजातरालागे ६० दिन
दनभीरबहोतअधिकई सुमरन
करतचितचिनिजाई तबकबीर

कबुधिदि चाली लोकबड़ाई फिर
 ई ईर प्रातसमै गनिका के यथा
 संगे अचं लोभया लेबां हज
 घाली गिनिका मिलिक बीर संगि
 वाली ईर जारी भरि चरबोदिक ली
 मदके धोले भरि भरि पीया खेबजा
 के मांही निसर्या मांनुं ज्ञान नय
 बिसर्या हंसि करै नगर के ले
 भक्तनके मनउपज्यो लो जा बां
 लए बां एणसबै बिगोवै हरिजनदे
 देषिसुषगोवै ईध भक्तिकीयो
 जाहे सबकोई नीचजातपै भक्तिन
 होई दिनदस भक्ति कबीरै कीनी
 बदेषो गिनिका संगली बूझी ईप
 चलेर कबीर गये जहां कंगर कोरा
 बैगो सल अोर बार अोर दरक
 लेता डारि सिंधासन असन देता
 ईध तादिन अोर कबुनकी
 भावाहिर बैठिक दीया स

बहुतक हारा जा सौं भेदा हम पंडा सै
की योनि ये दा ॥ ७ ॥ पंडै हम सौं कह
जो साधी ॥ सो हम तुम सौं कहुन रायी ॥
तब राजा मन बिलसत भयो ॥ आइ बु
मति बिसर क्यौं गया ॥ ८ ॥ अब क
बीर कुंमिली ये जाई ॥ जांतर कहुन ह
य भलाई ॥ राजा बोले डर पै भारी ॥ दे
सराप कै लेय उ बारी ॥ ९ ॥ भई कथ
बात सम जाई ॥ बेगारणी बुजो जाई
वै महंत हम रै मन जांणी ॥ उन कहु
हम सौं लीला ठाणी ॥ १० ॥ राणी क
बखनि करे ॥ चलि कबीर के पा
यन परो ॥ कौन भेट ले मिली ये जाई
देयै दि बतो उ रै रिसाई ॥ ११ ॥ बे
गलै कुहाड़ी बांधिके ॥ सिर लकड़ी क
भार ॥ कुटं सहतरा जा चलो ॥ सब
ग देख नहार ॥ १२ ॥ चौपई ॥ बसंघ
देव बघे लो राजा ॥ कबीर कार्णयोई
लाजा ॥ हर हीतै कबीर डे ग धायो ॥ र

जदेपिसुनमुबहोयआयो। ६५॥ चारि
मारिमांयेकाबोजु मेरामनमैनांही
बामु राजासंणीडंडवलकीन्हों। त
बकबीरअंकमालभरिलीन्हों। ६६
ई येकपावराजागहैरहीया पूजाप
वरांणीसबभईया बगसोस्वामीचु
कहमारी बुसबिनकौनकरैरषव
री ६७ हमहीपीठिजिनदेहोगसां।
बहुतभांतिअस्तुतीबनाई कहैक
बीरभलीतुमकीन्ही हमकुंआय
बडाईदीन्ही ६८ बडाहोयसोदे
बडाई बडासोबांटिबांटिधनया
ई बांटासोसांचकुंउपहैजांनै मु
षकहाबडाईजांनै ६९ तबराउ
सनआनंदभयो दरसनपायअप
नैघरगयो कबीरअपणैनांमहि
पावै अुकुलवंतीगरभहिपावै
७० दिनदिनडुनीप्रगतहोई करण
कैसैंबांनीसोई औंकोईअपनीक

तब डाई सुपनही पावै जरि बरि जा
ई ए१ अपनौ काम करै जो मर दे
क्यों करि कामं निमे टै दर दे अैसे बि
बै संसार सुताना हरि जन हरि भजि
भये सयाना ए२ बहोरिक वीर कुं
चटी बडाई दरसन पुनी यां देषन
आई बिगडा कारजि रंगम सवारै
नोज लडु बतरां मउं बारै ए३ का
जी सुलां करै नु पाधी बांलन बनी
यां सबै पराधी बैर करै अरु मारन
ताकै समझिन भई मन ही मन जा
कै ए४ अैसें करत बडुत दिन बी
ते बाद कीये कबीर कुं नही जीते
अोर कबीर की माता घोटी भक्ति भ
वैप कडै चोटी ए५ बडुत सुमति
करै सब रारी धनिके वीर जो लेय स
हारी बाहिरि बैरी अोर घर मां ही र
है कबीर नाम की छांही ए६ भक्त
को बैरी है संसार आदि अंत हरि रा

धनहारा ॥ १ ॥ ब्रह्म न भक्तो अडवैरा जा
 उकारे मांडुसैरा ॥ एण ॥ येक दिना अ
 सी बनि आर्श ॥ बिधिसंजोगनसेट्यो जाई
 स्याहसिकंदरकासी आया ॥ काजी मुल
 के मन भाया ॥ १५ ॥ गया उकार बारन
 ही लाई ॥ ब्रह्म न बणीयो मिलि मिलि
 ॥ और कबीरकी माता बोरी ॥ सम
 न भई मति की मोरी ॥ एण ॥ सब आ
 तुर करि जाय उकारे ॥ जां तुं का कु के
 मांन समारे ॥ कबीरकी रक्षा करै भग
 वंता ॥ सो जस गावै दास अंनंता ॥ १००
 दोहा ॥ स्याहसिकंदरतु बडो ॥ मेटि
 हमारी पीरा ॥ असी का कुनां करी ॥ जै
 करी कबीर ॥ १०१ ॥ चौपई ॥ कहै पा
 त स्याह कहा भयो भाई तेरा गांव पर
 गनां लीये बुडाई गांव पर गनां नाही
 लीन्हें जु लो है येक अमार गकीन्हें
 १०२ ॥ मुसलमानकी बोडीरीती और
 हिंदुकी कीन्ही होती जीदै तीरथ

नीद्वैवेडु नीद्वैनेग्रहनीद्वैरविचंड
१३ नीद्वैसंकरनीद्वैमाया नीद्वैसा
रदागनिपतिराया नीद्वैग्यारसिहो
मसरंध्रा नीद्वैब्राह्मनजगिग्रारा
ध्रा १०४ नीद्वैमातपिताकीसेवा
बहनभानजीग्रोरकुलदेवा नी
द्वैसकलधर्मकीआसा घटदरस
नग्ररवारहैमासा १०५ ऐसीवि
धिसबलोगविगारा हिंडतुरक
दोउंसुन्यारा तातैहमहीमानेनही
कोई जबलगजुहाकासीहोई
१०६ ईतनीमेटोविपतिदमारी उ
महीपितातुमहीमहितारी ईतनी
बनतीसुनोहमारी इहैनगरमोहि
सोदेहानिकीरी १०७ तबसुन
तसिकेंदरउंगोरुसाई छडीदा
रदोदीयेपगाई आनोवेगबान
हीहोई तेमारुबिनतीकरैजेई
१०८ आयपयादेवातसुनाई

स्याहसिकंदर सुलावै भाई हौं शिक
 रकैसैं जानै कौनकैही कैसैं प्रहै जा
 १०९ तेरी भाई पजाई रारी काजी
 मुलां सहत पुकारी जब कबीर स
 मजि चले मन मांही जैन चलो लोब
 तले जांही ११० सब संतन को दे पर
 धी तुम जिन करो दुर्मै रो सोधा ३२
 आतुर दो अरु पठाये लै कबीर
 कौ बेग अथाये १११ लै कबीर जहां उ
 भाकी न्हो जहां सिकंदर डेरा दी न्हो
 हसवारी मन वचला जा तापरिम
 लातिल कबिरा जा ११२ मुदत वच
 न अरु निरमल नैनो जब बो लै जब
 सीतल बैनां तव काजी बोले सम
 जाई करत सत्ना मदिवां नां भाई
 १३ अरु मै सा ला अरु मै कहा करि ज
 तुजिन काजी हो पदिवा नौं व
 सिकंदर अैसी वातां कु तो हि दे
 दो जिग जाता ११४ राह छोडि

करी कर रहा ॥ क्यों वे जुलाहा बिग
ड्रा का हा ॥ अपनी राह चत्या गति
होई ॥ हिंदू तुरक बुजि न्यो दोई ॥
१५ तब कबीर बोले वचन विसे
षा ॥ सकल सभामें अमृत देया ॥ दो
जुग जाय तुरक अरहिंदू ॥ काजी
लांके ले भौं हूँ ॥ ११६ ॥ हम तो भक्ति म
क्ति सुं अये ॥ गुर परता परां म गुन
ये ॥ राम भौं रोसै गिनुन का हूँ ॥ सब
ही राजारंकर सा हूँ ॥ ११७ ॥ ॥ ॥
राधन हारा राम है ॥ मारन सके कोय
पात सा हसौं ना डरू ॥ कर ता करै से
होये ॥ ११८ ॥ चौ पई ॥ काठिक तब
सुणवै काजी ॥ विचि २ ब्रा ह्य एव
वै भौं जी ॥ माला तिलक डुरिक रिड
रो ॥ पी है ले पाथर सौं मारो ॥ ११९ ॥ हो
र बाई सुनै सब कोई ॥ मुसल मानव
फर क्यो होई ॥ कहै कबीर समजि वि
न करि डु ॥ तुम ही का फर तुम ही म

ॐ॥१२०॥ कौंजक तेव सौं गायकटाई
 बकरी सुरगी किन फुरमाई॥ जितना
 देयु आत्म घाली॥ तितना की जम तोडै
 बाती॥ १२१॥ राजा परजा नरको पडिउ
 जीव दयानही हिरदै धरिऊ॥ रांसक
 हत जाकुं भोनां ही॥ ईतनी सुणि को
 पोपात स्यां ही॥ १२२॥ मांनुं घटा आ
 वटी कडा ही॥ मांनुं काला की छंम
 रोडी॥ मांनौं सोवत सिघज गाई॥ मांनौं
 बेसां दरमें होसी होरी॥ १२३॥ का फरसं
 के मांनै मेरी॥ अब देयुं करा मांति ते
 री॥ बांधि २ पग मां हि जंजीरु॥ १२४॥
 तब कबीर करता गहिली न्हा॥ जानं
 तयत परि आसन की न्ही॥ छूटि जं
 जीर पडे जल मां ही॥ लागे तस्वाडु
 बोना ही॥ १२५॥ क्रोध नयो असुर यों
 भायो॥ जल में रसो पाणि अब कौन राये
 बफुरि बांधि में दरमें नायो॥ आसपा
 स पावक दे रायो॥ १२६॥ नयो उं दास

शसनहीनीरु॥ हरि२ सुमरैदासक
बीरु॥ कबीरकहणहरिसुकीन्हं॥
पञ्चपञ्चमाजहांगंइफकीन्हं॥१२
७॥ जतिगयोमंदररायवडांनी॥ मइ
करमातिसुरनरमुनिजांनी॥ अदि
करुपनाराणकीन्हं॥ मानुं देहवि
धातादीन्हं॥१२५॥ जैजैकारभयो
जगसांही॥ काजीबां ह्यनषरारु
सांही॥ नाटकचेटकजुलाहाजा
नै॥ स्याहसकंदरतुमतिमानै॥१२६
ईतनीसुनिमनउपज्योरोसो॥ अख
कबीरतेरोकौनभरोसा॥ मातोहाथी
अनिजुकाया॥ अपनीछांहचुरता
आया॥१२७॥ संकनमानैग्हावतकेरी
सोहाथिनवैतीयोनमेरी॥ सौनासां
कलबांध्यारये॥ दांनौंकुंचीडुरिसौं
नाये॥१२८॥ सौनाउपूंकुसदांतमंटा
या॥ विचि२हीरामोतीलाया॥ नगरमां
हि नहीबूटनपावै॥ मांमसमारैकोटट

हावे ॥ १३२ ॥ राणमैरावत माएबांका ॥ भा
 टविरदनाथे है ताका काला भैलुं मा
 थैथाया तेतसिद्धकदेनहीधाया ॥ १
 ३३ ॥ युनीवहो नना मरन जीता ॥ पंथ च
 ले जब गावैगीता ॥ सकलसिनार छंटा
 चोरासी ॥ मांनों ई इलो कर्तुं परै जासी
 १३४ ॥ सोकवीर परिश्रानिगुकाया ॥
 पीछे ज्यायन आठौं आया ॥ कहेसिकं
 दरकोपे मारी ॥ अरु ब्रह्मवत जीवस
 महारी ॥ १३५ ॥ दोहा ॥ कालरूपहोप
 आइया ॥ सबकोई चालेमा गिसतक
 वीरतोनाइहै ॥ रहैनामसोलागि ॥ १३
 ६ ॥ चौपड़ी ॥ सिंघरूपके सोडरपाया ॥ ता
 तेहस्तीनिकटिन आया ॥ पीलवांनऊं
 आगमदीना ॥ मिरै आगे सिंघहीकी न्हा
 १३७ ॥ पीछे स्याहसिकंदरदीग कबीर
 के आगे सिंहीबैग ॥ पीलवांनहस्तीक
 रिन्यारा ॥ भईकरामाति अरु वकीबारा
 १३८ ॥ सांचारोसकबीरतुम्हारा ॥

आसनहीनीरु॥ हरि२ सुमरैदासक
बीरु॥ कबीरकहणहरिसुकीन्हो॥
पहुपब्रमाजहांगंइफकीन्हो॥ १२
७॥ जतिगयोमंदररायवडानी॥ भई
करमातिसुरनरमुनिजांनी॥ अदि
करुपनारोणकीन्हो॥ मानुदेहबि
धातादीन्हो॥ १२८॥ जैजैकारभयो
जगसांही॥ काजीब्राह्मनघराक
सांही॥ नाटकचेटकजुलाहाजा
नै॥ स्याहसकंदरबुमतिमानै॥ १२९
ईतनीसुनिमनउपज्योरोसा॥ अब
कबीरतेरोकौनभरोसा॥ मातोहार्य
आनिऊकाया॥ अपनीछांहचुरत
आया॥ १३०॥ संकनमानैग्हावतके
सोहाथिनवैलीयोनमेरी॥ सौनासं
कलबांध्यारये॥ दांनौंकुंचीडुरिसै
नाये॥ १३१॥ सौनाउंकुसदांतमें
या॥ बिचि२हीरामोतीलाया॥ नगर
टिनहीबुटनपावै॥ मानसमारैकोव

अतुरसिरनाथा तबकबीरअपनैघर
 पा जहांरकहतहोरदृग काजीबो
 सणहोगयाजुंठा १५५ गुपनैघर
 आयेदासकबीर गुरपरसापभये
 अमसरीर जबकबीरकेलागीजा
 ता मितिरसंतजनसुकेवाला
 १५६ हसिरबोलेदासकबीर चर्न
 सनराधेरखुबीर यतस्थाहजबकस
 नीदीकां तबलेरैमनसंकनकीन्हा
 १५७ जाकेभक्तनकोबलहोई जा
 कमारिनसकेकोई कोटिपापहरि
 भक्तनसलै भक्तनपीछैहरिचलि
 जावे १५८ जोभक्तसौरहैजगारा
 जाकानोहीहरिध्वारा जोभक्तन
 कीनिहाकरै तोकुंभीनकमांसोहिसे
 परै १५९ जोभक्तसौकरैजांती ता
 केगतजमदेहैकांती सबजीवनमै
 राधेराम हरिभक्तनवीनसरैनकां
 १६० गुरगोविंदओरभक्तही

बकै राषो प्राण हमारा ॥ येका जीब्रा ह्य
 नमर मन जांनै ॥ सिर जंन हार तुम ही
 करि मांनै ॥ १३९ ॥ देषि दीन ता कहै
 कबीर ॥ जन उर राषि तीयोर घुबीर ॥
 सि कंदर अब कै न ही डरता ॥ तो
 हरि निश्च पर लै करता ॥ १४० ॥ कबीर
 कै डुष नै कन आई ॥ ता तै असुर स
 ज्या न ही पाई ॥ जो कोई आ गे आ गुन
 मांनै ॥ जा कौ साध न लो कर मांनै ॥ १
 ४१ ॥ जो जन देयै हरि का कीया ॥ जो ज
 न हरि अप नां करि लीया ॥ पा तस्या
 ह गहे कबीर कै पाई ॥ अब के सो आ
 दष्ट हो जाई ॥ १४२ ॥ मां गो सौं नां मा गो ह
 या ॥ मां गो बस्तर अधिक अनुं पा ॥ मां गो
 गांम पर ग नां घोडा ॥ तुम ही कौ दीजे
 सोई थोडा ॥ १४३ ॥ कहै कबीर मां गुं न ही
 माया ॥ रा जारे क सबै ई न या या ॥ माया
 मा गौं सौं न क न होई ॥ मन दि टरा ये ह
 रि जन सोई ॥ १४४ ॥ तब हा थि जो डि

लीन्हें पावहुं श्रेय का कल नहीं
हैं। श्रेयो कपटकी यो ब्राह्मणों।
रश्मि जेब हृदये मनो ॥ १५७ ॥ तापी वे
हरिजन चलि श्रेयो ॥ जानू पाव सरित
बादल ध्याये ॥ पंडित बीस की लिखनी
कीन्हें ॥ छबीस को सलग पालमादी
न्हें ॥ १५८ ॥ द्वादश बीस हें होय न अंत
सोज सगा तैलाय अनंत चले समूह
नगिन ती होई ॥ गंगा के तीर मिले सब
कोई ॥ १५९ ॥ सुनत कबीर मुखे देर
हीया ॥ सुन मुख होय कहुन ही कही
या ॥ तब के सो अपना करि लीया ॥ को
टिकता कबीर की कीन्हें ॥ १६० ॥ डे
रां रश्मि दरले ही ॥ अछा करि मांगी सो
दे ही ॥ कहुं कना चै कहुं कमावै ॥ ह
रिका चिर तन कोई पावै ॥ १६१ ॥ दिना
पांच मिहि मांजी कीन्हें ॥ पुरमां की प
हरां वली दीन्हें ॥ मां ऊभयो कबीर सु
पदे वै ॥ जीवन जन म सुफल करि

चीन्हां॥ तातै मेरा कछु नकी च्हां॥ जा
को गुर न कृ न सौ नां तो॥ ताकुं का त
नवा वै माथो॥ १५२॥ दोहा॥ जल बो र
पाव क ज र्त॥ बिन स्यो न हीं सरीर गज
तो दु त हरि रा घी यो॥ नि जै भ यो क बी
१५२॥ चौपड़ी॥ ऐ ह पर कार क बी र
बारा जहां त हां हरि न ये र य वारा
ब हो रि स टि बां ल ए म तो की न्हें ज
त्व हे ब हो त डु य ह म कुं दी न्हें १५३
पर पंच ये क की या अ न हो ता छ लि
ल ता करि अ प नी बी ता बां ल ए चो
के मुंड मु माई ति न कौ सी ष दे गु प त
च लाई १५४ दी यो द ल क बी र के न
मां अ सी को स त्त ग ज त रा गां मा म
घ मो स प छ लो प ष वारो नौ सी कै दि न
मै लो स वारो १५५ जुं लो द ल दी यो
ब का फू बे गा ब सं त पंच मी आ क
दा स क बी र म हो छारा म सब सं त
की जो वै बा टा १५६ मां थै मां नि र द ल

ली नों पावुं-सैस का लुख ही ली
हो-सैसो कपटकी यो बाल लो-घ
र आये जब हरे भे भनां ॥ १५ ॥ तापी है
रिजन चलि आये ॥ जानु पाव सरित
बादल ध्याये ॥ पंडल बीस की लिषनी
की नों ॥ छबीस को सलग पाव नदी
नो ॥ १५ ॥ पहिला बीस लें होय न अंत
जस गावें दोस अरु नंत चले समूह
नती होई भांगा के तीर मिले सब
ई ॥ १५ ॥ सुनत कबीर गुप्त होये र
ही पा ॥ सुन सुष होय कछु नही कही
या ॥ तब के सो अपना करि ली नों ॥ को
कला कबीर की की नों ॥ १६ ॥ डे
आदर ले ही ॥ अछा करि मांगे सो
ही ॥ कडं कना चै कडं क गावें ॥ ह
का चिरतन को ई पावें ॥ १६ ॥ दिना
चमि जि मां नी की नों ॥ शुर मां की प
राव नी दी नों ॥ मां ऊ भयो कबीर सु
पदे वै ॥ जीवन जन म सु फल करि

कीजे कासी करवत लैलै मरिजे
१७४ जो लग परसै देव दुवारा से
तुम सहै जै होवो भरतारा येक तो
तीरथ कोटिन करै येक धुंवा घोटि
२ कै मरे १७५ येक ज्या यहिवा लै
सी कै तो उ न जाय अप छरारी कै
जो लग सुषन ले हो ह मारा तो लग
गमि थ्या जनम तुम्हारा १७६ ईत
नी मां नौ वात ह मारी बहोरिनरा
घोर घोटिन चारी कहै कबीर
सु नौरी माई सुरग लोक सौं कौन
ड्य आई १७७ कै सै करे ह मारी च
ही सो तुम नेद कहो समजाई हिया
बैठी तुम ला जनम रिहो नीच देखे
तुम संकन करिहो १७८ बगसि
२ अब कहें निहोरा तेरा घ्या लम
नहै मेरा ऊँ ए २ का कला जो कर
ही रुं म २ बटि जा उ अब ही १७९
तेरै हाथिन आ उ माई सिरपे मेरे

रो कुंजो ज...
काटि टिपारे...
गुचुप होरह...
इ तुमसौ प्रीति...
हांडो माता...
कहापरी उंजारी...
डिदे मेरी...
१५५॥ हहा...
सुई भया कली...

कीजे कासी करवत लैलै मरिजे
१७४ जो लग परसै देव दुवारा सं
तुमस है जै होवो भरतारा येकते
तीरथ कोटिन करै येक धुंवा घोदि
२ कै मरे १७५ येक ज्या यहिवा लै
सीके तोउ न जाय अप छरारी के
जो लग सुषन ले हो ह मारा तोल
गमि थ्या जनम तुम्हारा १७६ ईत
नी मां नौ वात ह मारी बहोरिनरा
घोरा घोदिन च्यारी कहै कबीर
सुनौरी माई सुरग लोक सौं कौन
ड्य आई १७७ कैसै करे ह मारी
ही सो तुम भेद कहो समजाई दि
बैठी तुम ला जनम रिहो नीच दे
तुम संकन करिहो १७८ बगरि
२ अब कहें निहोरा तेरा घालम
नहै मेरा ऊँ ए २ का कला जोकर
ही हूं म २ बटि जाउ अबही १७९
तेरै हाथिन आउं माई सिरपे मेरै

बेलनमें गयो लीसंबरसलममनकही ल
 यो बससोलेकरीहैमक्ती लपीलेपाई
 हैमुक्ती २०४ मरिवाकेसखिलीलावा
 टी सोधिलईमगहरकीयाटी कासी
 मुक्तिहैसबकोई मगहरमरेरालिवा
 होई २०५ कासीकाटेसबकापापु
 ऊरापुंहरिपरसापु हीइतुरकबिचिपा
 डीआंटी तुमजातोतुमदीज्याआंटी
 २०६ बोजबतीसफूलमगाया ताके
 उपरआसनकराया सबसंतमितिना
 चैगावे तात्पषावजसबैबजावे २
 ०७ अमरभयोछांड्योनदरील गयोसं
 देहीदासकबीरा भक्ताकैमनअचर्जर
 भयो फूलदेखिअपनेघरगया २०८
 एकतोसुणिनाजनषांही एकलोगब
 होतपेछतांही कबीरबिनाकासीअ
 धीयारा ज्युचंदाबिनदीसैतारा २०९
 जुंवरालिमैडुलहैनांही ज्युघतबिना
 रसोईकहुनांही

मलीनां यौकवीरविनकासीसुनां
२१० जहां २कवीरचलिजाई तहां
२चोगनाबडाई सिवबिरंचिआमे
करिलेही सुरपतिडारिसिंघासन
देही २११ विद्युकहैवैकुंतुमुम
हारे रहोसदाहीभावहमारे सिध
सनेहकरेबहोतेरा सौपनकहैमंडा
रकुंबेरा २१२ सनकादिकमिलिनांचै
संगा नारदव्याससंगतिरंगा ककुंकहै
लगसबसुषजीते भयेज्ज्यापीकदे
हसमीते २१३ हरिज्जपनांगुनआप
नगावै जनकुजसदेप्रीतिबठावै ज
नसुषेलिआपसुषपावै भक्तबहु
तहरिआपकहावै २१४ भक्तनके
संगितागोडोले भक्तनकेघटबैगो
बोले इतनीकथाकहीहरितेरी गा
वैसुणैमुक्तिहोयचेरी २१५ जरना
रीगावैजोकोई निश्चैसुषपावैसबके
ई नासैरोगसबहैहोजाई उपजैज्ञान

भक्तिमनमोही २१६ विद्याहीन जो वि
श्रापावै कबीरका गुनरुचिकरिगावै
कबीरहै करताकी कला भक्तिहेतपहो
मीश्रोतला २१७ कबीरकरतादोक
रिजानै जाकी भक्तिरामनहीमानै नर
गुनभक्तिकबीरविचारी तातैउतस्यो
मोजलपारी २१८ अंनदेवसुँसरगु
नजान्ना अषंडअपारताहिमनमान्य
हरिकेतागुनबरनौतेरा कंताथाकिर
ह्यामनमेरा २१९ अिरपस्वतजालि
बालिमसिद्धिजे भारआगंरैलेषनक
जे सारतसमंइकीकीजेद्योती वसुध
सबकागंदकीहोती सारदातनषणी
अवैअंत जोजसगावैदासअनंत
॥दोहा॥ दासअनंतजोकथीहै॥ ह
कीभक्तिअपाराकहुककहीकब
कीसतगुरकेउपगारा२२१॥इती
कबीरसाहिबकीप्रचईअनंत
दकलसंपुरण॥ग्रंथ॥१२॥सब

गणेशी ॥ १८०१ ॥ अष्टग्रंथ अमृतधा
राति च्छंते ॥ दोहा ॥ मंगलरूपसहस्र
मम ॥ निजानंदपदजास ॥ तद्व्योमंग
लाचरनयहसो हं हंसप्रकाशक
बिन्न ॥ जीवसीवएककरौ असी अ
सीभावधरौ अहंघासवासकरौ अ
मृतप्रमोनिये मरनको नैनसावो
अवयसरूपपायो वेदविद्विजोल
पायो गुरुज्ञानजानिये मानितजिम
निलैरेतेरौईसरूहैरेसवै अमैदान
दैरेहैरे अमीषोनिये भगवांभयांभ
न मोबिनांनलहैअंनविषियाविषै
मानविदितबषानिये ॥ २ ॥ कुडिलया
अमृतधाराग्रंथहैताकोकरौबष
न ताकोकरौबषानंअंनसबवि
रौ अंजलफेनतरेगअंगसबअं
बचारौ बुधिसुधिकरिपीवैनिरम
पुटिकाकांन ॥ अमृतधाराग्रंथहै
कोकरौबषानं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ अमर

रतो नही अमर अमर पति नहि मरन जी
 वन से सो न से लहे अमर पद ताहि ध
 यह अमृत अमृत सही नमृत ता प्रकाश
 अंजन ता अमृत नही अमृत निरंज
 न भास ५ पित्रै पीयुष जीव जुगति सैत
 जि अजुक्ति अज्ञान अमंड धर जूते
 नकी सो अमृत प्रमान ६ ॥ सो रग ॥ श्री
 गुर संत प्रताप ॥ वर नौ बुधि विस्तार
 सक छ ॥ तजौ अंन कौ जाप ॥ जगत् सोई
 सोई सोही ॥ ७ ॥ अरित न जातै अमृत
 होई सुजुक्ति बतार्ये ॥ प्रथम चारि अनु
 बंध तहो मन नार्ये ॥ अधिकारी अहंदि
 धैत धिसन बंधरे ॥ परिहं प्रमं प्रयोजन
 जाना और सब बंधरे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कहौ
 वरन वर धरनि सनि ॥ अधिकारी को हेत
 साधन तै फल लिख है जू छषहि को ये
 ता ॥ ९ ॥ अधिकारी वरन न ॥ दोहा ॥ धा
 न चारि विचारि जुत कहिये ता कौ
 वैराग आदिषट अंग पुनि निज

असासौ चटाइये १८ दोहा वैरागनो
मवितरेकयह विषियनभावअभाव
बिद्वत्तमतपरमानहै सुधवृत्तिमन
लाव १९ ऐकइं डीकोभेद अरिल
मनमैइंछाहोई विषयकेभोगकी
मनइं डीकोरोकिअवसथाजोगकी
ज्यौं दीपकघटच्छिन्ननिसेपेषिये प
रिहायौंमनवृत्तिनिवारियेकब्रह्मले
षिये २० दोहा ऐकइं डीवैरागय
ह ऐकरनिरधार मनइं डीअनिमा
नतजि मनमनिमनहिविचार २१
वसीकारवैरागकवित्त लोकहैप्र
लोकजोगत्यागिये सरूपभोगलषि
लषिमहारोगभेदसोप्रकासिये सुरन
रभोगजानतीनतापतापमान संसेअ
रूसोकभानिअतिसैप्रभासिये पुनि
कृतलोकजाइंछीनभयेपरैअइंका
मककहैबनाइंलोभयौंनिवासिये भग
वानभयाभाननमलप्रकासजानइं

राजा लज्जा जाले प्रिले उजासिये २२
 दोहा बलीकात बैराग यह इं ह्यासे
 एनलेष तीलिते दयासे प्रगट तेगुम
 मिते तेष २२ बलीकात बैरागतीन
 प्रकारहे तिलके तोस मंदती वरती
 वरतर अष्टमंद दोहा सुतवित
 विषै वियोगतै त्याग बुधिमन होई कि
 गधिगधिगधियमै बसै बैरागमंदय
 जोई बंध छाजन भोजन जगमिलै
 ईथह मुक्ति करि जान मंदमंद प्रनिप
 इहे तीवरपदनिरजोन २५ मंदक
 रै सतसंगानिति पावै सुधसरूप गुरुप्र
 तापतै प्रगटिहै कीटी भ्रंगनिरूप
 र्द अथतीवरसरूप अश्लि निर
 दिनधरै धियानरां मजी भजतुहै दे
 प्रहसुषधं म बांम सुततजतहै प्राप्ति
 प्रगट अभाव अ प्राप्ति भ्रमरे परिहो
 यह तीवर वैराग जो निनिह वतंगरे
 २७ - तीवरतरके सरूप सोरठा

तीव्रतरवैराग अबन्नाशैवरन
नकरौ जाकैनाथेनाग गुरुप्रता
पसौपावही २८ कबित्त सुवलोक
भरलोकसुरलोकजनलोकमहरलोक
तपलोकसतिलोकअदिहै अतलवित
लसोतोसुतलरसातलहैतलातलमहा
तलपातालकुंसादिहै लषैलोकलोक
जेतेसोकहैसंतापतेतेसुनैपुनैसीसधुनै
भोगसुषबादिहै भगवांनभरमनास्यो
जीवसीवएकवास्यो आषहीमैआष
नास्योअमीरसयादिहै २९ दोहा सा
तलोकपुनिसाततल चौदहभुवनवि
चारि जन्ममरनसबहोतहै सोमन
मैनहिधारि ३० यहवैरागविधान
है कह्योअलपविसतारि विवेक
अदिपुनिकहतहै तीन्येनेदविचा
रि ३१ अष्टविवेकवरनन अरित
विवपदपदप्रकासएकपदकीजिये
यहविवेकप्रमानजुगतिजाजीजि

ये ब्रह्मविवेकतजिसेकविवेकविच
 रिये परिहांयहविवेकनिरक्षरद्वैतत्र
 मजारिये ३३ चोपई घटमठएकम
 तिकांजानौ पटसरूपसबतंतुबखानौ
 कंचनश्रामुषनसबएकै जलज्यौफै
 नतरंगनसैकै ३३ यौहीचेतनजगत
 प्रकासै स्यावरजंगमविवधिप्रभासै
 मुकरमहलज्यौविवअनेका सुधवि
 वेकअनेकनएका ३४ बैरागविवेक
 कहैसमजाई समजैतैससैसबजाई
 अबषटसंपतिनेद्वतांऊ जाकैकह
 तपरमंदपोउ ३५ अष्टषटसंपतिवर
 ननःचोपई मनबुधिचितअहंकार
 सरूपा कामकल्पनातिनहिनिरूपा
 अंतःकरणकषायनसाई समसरूपनि
 स्वासनपाई ३६ अरिल इन्द्रियभोग
 संयोगसर्वथात्यागियेतजिविकारवि
 विचारज्ञानरसपागिये बाहिभीतरि
 वृत्तिऐकनिचलनभई परिहांसमदमद

तीव्र तरवैराग अत्रवज्रागैवरन
नकरै जाकेनाथेजाग मुरुपस्ता
पसौपावही २८ कवित्त सुवलोक
भूरलोक सुरलोक जनलोक महरलोक
तपलोक सतिलोक आदिहैं अतलवित
लसोतो सुतलरसातलहैं तलातलमहा
तलपातालकुंसादिहैं लघेलोकलोक
जेतेसोकहै संतापतेते सुनै गुनै सीसधुनै
भोगसुषवादिहैं भगवान्तरमनास्ये
जीवसीवएकवास्ये आउहीमैं आउ
वास्ये अमीरसयादिहैं २५ दोहा स
तलोक पुनिसाततल चौदह भुवनवि
चारि जन्ममरन सबहोतहै सोमन
मैनहिधारि ३० यहवैरागविधा
है कहे अत्रनपविसतारि बिबेक
आदिपुनिकहतहैं तीन्हीं नेहविच
रि ३१ अत्रबिबेकवरनन अरित
बिंबपदपदप्रकासएकपदकीजि
यहबिबेकप्रमानजुगतिजाजी

ये ब्रह्मविवेकतजिसेकविवेकविच
रिये परिहांयहविवेकनिरधारद्वैतत्र
मजारिये ३३ चौपई घटमठएकस
तिकांजानौ पटसरूपसबतंतुबछानौ
कंचनआमुषनसबएके जलज्यौफै
नतरंगनसैके ३३ यौहीचेतनजगत
प्रकासे स्यावरजंगमविविधप्रभासे
मुकरमहलज्यौबिंबअनेका सुधवि
वेकअनेकनएका ३३ वैरागविवेक
कहैसमजाई समजैतैससैसबजाई
अबषटसंपतिनेद्वतांक जाकेक
तपरमंदपांउं ३५ अथषटसंपति
ननःचौपई मनबुधिवितअहंका
सरूपा कामकल्पनातिनहिनिरू
अंतःकरनकषायनसाई समसरू
स्वासनपाई ३६ अरिल इंडिय
संयोगसर्वथात्यागियेतजिविकार
बिचारज्ञानरसपागिये बाहिनी
वृत्तिएकनिचलमई परिहांसम

द्विद्विजानि श्रौतर्षपरतितर्ष ३७ वेदा
अंतरिद्रुदित्यागसम बाहिरदमप्रका
स बाहिरभीतरिविषयतजि उपसम
यहनिवास ३८ अस्ति लोकमोहि
अह जोहनेकनहीतानियै असनपि
पासारूपद्वंद्वनहिआनियै अस्तुतिनि
वा आदिवादि सबधरमहे परिहायह
कल्पपतिव्यवहार भारसब भर्महे ३
४ श्रीगुरुज्ञानप्रमानज्ञान अरु है ति
नको सुप्रियनद्यानसेवनर भेदहै य
हसर्धानिरधार जानिजियजुगतरे पा
रहाकहैगहैलहैसर्वथा मुक्तिरे ४०
समाधान यहजानिआत्मानित्यहै संसै
अरु निपरीतधरेनहिचित्तहै जैसीबे
त्तचित्तेरनैक न हंहातीही परिहादे
हमाइसदात्रिकोही धर अथमुमुक्षु
वरजन दोहा जगकेबंधनज्ञानते मु
क्तिहोनकीआस आसवासविसवास
तजि सोमसोदापरकास धर अरुधर

अरूकांमप्रनित्यागिपदरथतीन सो
 अधिकारीसोच्चिकोमहांज्ञानीप्रवीन
 ३ यहअधिकारीमोषिको साध्यातको
 धिकार विषेकहैंसनवेदप्रनि ध
 प्रयोजनसार धध सोर्ष कहिअ
 कारीभाव श्रीगुरुज्ञानप्रतापते ३
 नेआनंदगुनगान भगवानभावसि
 हरषसौ धध ईती श्रीअरुतधाराप्र
 अअधिकारीनेदतरननेनाम भगवां
 नदासनिरंजनीकथितेप्रथमोप्रभा
 व १ होहा इतिप्रप्रभावप्रभावके
 मनमेंभयोऊरनास कहतसुनतसुष
 पाईये निरमलब्रह्मविनास १ अथ
 विषयवरनन होहा आत्मचेतनरू
 फे बुधिसंगजीवज्ञान गुरुगणित्तिपं
 नसमान पदसोईविषेप्रमान २ जैसे
 सुरजकीकिरन जलथलसबमेंभास
 सुषअच्छाप्रतदा चहैसुद्धसरूपप्रका
 स ३ अरिल सीतकालज

अनिहत्तहैनहिताहि १३ यौहीबुल
प्रकासहै सासुसुमतिप्रमानसनबं
धगपानवेदांतहै अंनअंनकरिजं
न १४ बोधकरूपीवेदहै बोधै
जीवसरूप जीवजीवतामेटिकै ई
सहीईसनिरूप १५ चोपई दृष्टाक
रिसबडिसप्रकासै डिष्टाज्ञानडिष्टि
सबनासै डिष्टिउपेव्याडिष्टासार यौ
सनबंध वेदनिरधार १६ दोहा
सनबंधीसनबंधहै वाचिलछिप
रमान वेद वाचिसनबंध कहिस
नबंधिलछिनिदान १७ अथप्र
योजन चोपई प्रापतिब्रह्मप्रयो
जनसारअबकछेताकौकरौबिच
र विधिबिसेषसोईअवधिकहावै
अवधिउल्लेधिप्रयोजनगावै १८
साधि जाकाजतनकरतनिसवासुर
सोतोपायागंवै जतनीजतनऐक
ऊईभित्तिया यहप्रयोजननाव

शुभ जलतरंग ऐकै भई पात्ता गलि जल
 मांदि जीव जल योही मिला ओ प्रये
 जनकाहि चो पई ज्यो कोई पा
 की पाक बनाने पाके पाक जिपति पा
 द पावे रुपा कलेस करन त बनाने
 योही ब्रह्म प्रयोजन भासे २२ गांव
 नांव पूछत जो जावे नाब निरूपन गा
 व सुपावे गांव ही गांव की या निरधार
 भया प्रयोजन कार जसार २२ यो गु
 रू शास्त्र सेवन कीन्हो ज्यो त्पले परम
 पद चीन्हो ज्यो त्कलु और ज्यो रन
 ही भाषी यह प्रयोजन नीति प्रकासे
 २२ सोरगा सो साधिक साधन शिध
 कर्न करों वन सब थक्या लष्या अन्न
 त सो निध यह प्रयोजन सिधता २
 ध दोहा सो सरूप प्रापति भया प्रग
 ट पूर्ण काम जो सरूप सोई त हो य
 ह प्रयोजन नाम २४ ऐते साधन प्र
 गट जुत परमाता सो जान

धकारी श्रवनकौ षटविधि श्रव
नबधोन र्द सोरग कहे चारि
श्रनुबंध साखरीति विचारिके जों जे
मंदरसंधि निगडनीव जों की जीये
२७ ये चास्योदिगबंध विज्ञानपान
द्विहकरनकौ श्रवनसुनेतजिसंधि म
हामेषिपदपाईये २८ श्रुतिसमिरसि
अनुसार सारसारवरनतकस्यो भग
वानज्ञानउपचार ममितमानअमित
नतजि २९ इतिश्रीअमृतधारायंथ
चारिअनुबंधवरननेनाम भगवा
नहासकअतेद्वितीयोप्रभाव २॥ ७
॥ दोहा ॥ तृतीयेप्रभावबधोनियह
श्रवनसुननकीरीति सोविधिरसौवर
निहों होईपानप्रनीति १ श्रवनवर
नन चौपई उपकरमअरुउपसंहा
र अस्यासभासअपूरबधार फलकी
प्रापतिसुनेनिदान अरणबादउपपति
बधोनिय २ षटविधि श्रवनकरै जो

हकौ परसै लोई लख बर्म व
 धानों आगे पंच भेद प
 १. जो जाती है पत्रिके
 गई आदि अंतरे कर्त्त
 रम कहि संहा रनां रउ ल
 ल आदि अंतरे कर्त्त
 मानों बुद्ध बुद्ध ज्योई
 भविचारिये अटम रजो
 गसरूप लेते नुतपति न
 धारिये जन्म की जुगति
 ने भरियो पि कारन परहि
 हारीये भगवान जगजो
 ब्रह्म मान मध्य मधि भय
 हारिये ई देला आ
 है मधि है तसो होई वेद
 है सम ऊ बि रता कोई
 अभ्यास है कहिये ता

रूप यह जुगति जीव जोईये
 तान रूप र जो पई सर

कहै वेद विचारि साधसंत पुनिकहै
प्रकारि हौं हौं ब्रह्म २ सब सोई ब्रह्म
पान पुनि ब्रह्म ही होई एं सर्वषतु
मिदं ब्रह्म ब्रह्म वद ब्रह्मैव मिति श्रु
त काष्ठ पपां ए सकल मेके सो औसा
हेरामुराया इति संत चोपई मेरेहद
अपतानासी भास्यो ब्रह्म सर्व प्रका
सी अब अज्ञान डिमि नही आवै एक
ब्रह्म सब ब्रह्म रहवै १० कंचनके
अक्षयन होई कंचनता भूले जम
दोई गुरमिति ज्ञान भया प्रकास स
रब ब्रह्म उपज्यौ आभास ११ होहा
में निरमल निरमल सबै निर्मल डिष्टि
प्रमान यह अभ्यास प्रकास जब त
बहु जान ही ज्ञान १२ ज्ञान अभ्यासे
एकहै ज्ञानी करै प्रमान्ह तनुइसी
कान्ह कहै कान्ह समानो कान्ह १
४ चोपई तीजै अंग अ पूर्व कहौ
जाके कहत मुक्ति पद लहौ ब्रह्म वि

नांकोई आन बनावै यह अ पूर्वनामक
हवै १५ कंचन विन आ भूत गंनै म
का विना कल सप्रमानै जल विना के
ई जगत बषांनै यह अ पूर्व और न अ
नै १६ जल विन फेन त रंग न गाते प
सरूप विन सूत रहवै जल विना व
ब कल पैकोई यह अ पूर्व और न सो
१७ सोरग ज्यो म करी सै सूत सां चा
ऊग भेद है योही बल अ भूत एक
एक सब एक है १८ अरिह्य यह अ
पूर्व जांनां सजिप एक ही सबे बल
परमान आन ही सो कहि तातें फल ज
होई कहत सोहो सोइरे परिहां ज्यो मु
जा दसिब एक है तन ही कोइरे १९ न
फल तै फल जाई ताई मन ता ससो सु
रनर भाव विलाई चित निरव ससा
अथ वरम अरु काम मोक्ष फल चा
है परिहां ऐ चाल्यो फल त्यागि मुफल
हिनिहारि है २०

जानित्वा नैव गुरुके प्रतापतै मर्न कौ
भ्रमनास्यो आशुहीमै आशुभास्यो
आनंदश्च भै प्रकास्यो सो अहंके
पतै मनप्राणप्राण जेते देह ई
द्विय बुधिसेते सुनै गुनै नासै तैतेश
क्यो पुनिपापतै भगवान् भगजाग्यो
श्रवनमननपाग्यो अहं भावभाजे
बचो तृपतापतै ३० सोरग यटा
बबि श्रवनबयां अद्वैत ब्रह्मनिस्थ
रिकै गंगा एक प्रमान घाट भेदतै भेद
ही ३१ जैसे पंकज पंकनली पात
लबकली नाउ भेदन हीसेक यौ
ही ब्रह्म अद्वैत है ३२ दोहा यटा
श्रवनबिचारिके कहौ वेद अ
सारि भगवान् जान भगवान् है
मुष सुनि उरधारि ३३ इति श्री अ
मृतधारा ग्रंथ षट्प्रकार श्रवनवर
नने नाम भगवान् दासक श्यते तृती
यो बिश्राम ३ १०७ दोहा अबचे

प्रभावमें पंचीकारणनिरूप सिद्धिप्रहै
सोकहैतत्प्रज्ञानंशून्य रूप शक्तिजने
चप्रज्ञासोखा सिद्धिदैर्घ्यपञ्चोत्रां
सर्वएकहीएकहै शंशयभयोनि
न सोधनपण्डित्त्वको चक्षोप
श्रिषिप्रज्ञायकरिगुरकौल्लेपां
पचीसमाहिकौल्लेपां कैसैउतप
इनकीभई कैसैफेरलीनलात्तई
कारणकारजभेदवत्तानो मेरम
कोभरमनसावो गुनबिजागइंदि
सबकहिये उतपतिभेदभ्यंनकौ
हिये ध दोहा सिद्धिप्रहसिद्धि
कीयो गुरश्रानंदमनभाई हरषमां
कैकहतहै सुनौसिष्यमनलाई
५ गुरुज्ज्वाचर्चरश्चरित्त्वं पंड
हंमबिधमनजाननुवसिष्यरेउत
पतिभोगविलीदृष्टिकरिदिष्यारे पं
चभूतशून्यसूतश्रुविद्यारूपहै परि
होसबैश्रुतसतजानिसुब्रह्मश्र

जानित्वा कौं गुरुके प्रतापतै मर्नव

भ्रमनास्ये आशुहमिं आशुना

आनंदश्च नैप्रकास्ये सोश्रहं

जापतै मनप्राणप्राण जेतदे

द्वियबुधिसते सुनैगुनैनासै

क्योप्रनिपापतै भगवान

श्रवनमननपाग्योश्रहं

बच्योत्रयतापतै ३०

बविश्रवनबयांश्रधै

रिकैगंगाएकप्रमान

नही ३१ जैसेपंक

पल्लवकली नाउ

हीब्रह्मश्रभेद

धिश्रवनवि

बुसारि भग

रमुषसुनि

मृतधारा

ननोना

योविश्र

नौबीधो भ्रम जात है देस देस मिलैं
 ही काल ३ का ही बसत भेद २ जा ही
 सै चक चात है लक्षि ३ भासै चबि
 छेद जासै भगवांन भ्रमनासै जीव ईस
 तात है १२ दोहा देस काल अरु बस
 बंध जीव कौ जांन बाचि २ कहिल
 लहि सुधम मोषि परमान १३ देस
 ल अरु बस्तै जीव अरु वरन जांन
 तीन प्रछेद २ त जि जीव सीव परमान
 १४ तीन भेद पुनि ईसमें तातै भयावि
 प बाचि भेदमें भेदसो लषि २ निरं
 द १५ चोपई प्रथम देस अ
 कहिये हिर्न ग्रभ पूजै सो लहिये
 सविराट बघांनौ काल बसत ७
 जांनौ १६ दोहा उतपति अ सधि
 काल द्वै ती जै प्रलै बघांन ती न्यौं गुनसौं
 सुहै सतर लज्जत मप्र
 भेद प्रछेदसौ चेतन
 चित्पगि करि लषि धरि

अभूत १८ जीवर्षसद्वैवाचिहै वषे
पञ्चम्वरनजान लषिडडंनकीएक
है ततत्वञ्चसीसमान १९ अज्ञान
एकद्वैभांतिकौबिछेपअवरनजान
बिषेपअगौकडुं प्रथमअवरनजान
२० अथआवरनशक्ति कवित्तु मु
करकेमहतगहलभयास्त्रानजैसेफ
टिककेप्रवतसौगाजबलहास्यैहै
केहरिकुबुधिरूपपस्यैत्रुमजालक
पद्मत्वोप्रतिव्यवनूपसंशौशसामा
स्यैहै कपिज्यौंकुबुधिमानैकरमबंध
बंधजानैनलनीज्यौंलग्यौकीरआपयौ
बिशास्यैहै यौहीचिंतगुनभासमा
याबुधिचिदाभासभगवानद्वैबिलास
हौंहीहौंनिहास्यैहै २१ दोहा आपु
आपयौंभक्तिके छायामायामान गुरु
कहैसिषिसुनितहै जीवब्रह्मजगजान
न २२ अरिल्ल अकेहरेवनमाहिठौं
हेबंदरगत्यौ बंदरविनांविबेकमर

को उखलुसता करित लखै यौ माया अ
 लनही सब बंध है परिहां उखलु
 खता करि सहे लहे सब बंध है अरु जो
 जैसे रजु को सरप है अर्थात् रोप प्रसा
 पुनि बिचारुगे कीये यह रूप
 निदान अथ चेतनिमें परंपंचत्वा
 रयं चतुर्त है वेद नेति अत्रु विकर
 त है लहत जमूरां नेद अथ व्याजीगर
 जीकरे जगु मोहन की आस नेद ज
 राल हत है यौ ही नेद विस्वास अर्द
 टचित्र बनाईये प्रथम अक्षर
 लगार्द यौ माया अर्थात् करित लख क
 व्वरु कहीई २७ विधि निषेद
 करे कैं कही लहौं सदे रूप रूप वि
 धनिषेद विसेष तजि प्राथमि ज्ञान अ
 प २८ निषेद रूप पी लैं कही वि
 पहलै प्रकास दोनौं पछाल
 तैं सरगुन निरगुन भास २९
 लन अकाशां मूलमिति श्रुते

रसना रसके भोगन करै उपस्थ आर
कर्म निरधरे धरु दोहा प्रथीतत्वतै
गठ है दै इं ड्री परमान गंध ज्ञान नास
करै गुदा तजै मल जांन धध सत
नके प्रभावतै ज्ञान इं ड्री भर्ष पंच र
गुन अंस प्रसंसतै पंच क्रिया पुंनिस
धध पंच बाई की वृत्ति है तिन को
नौ बघांन प्रांन अण प्रांन समांन है
द्याब्ज व्यांन प्रमांन धर्द उतपति
ज अंसतै पंच भूत अनुसार जो
न को धर्म है निहचे सुनौ विचार
कचित प्रांन की क्रिया प्रकासहि
रसनास उपजे क्षुध पिपास त्रिगु
के भाई कै गुदा बसिमलनासै अ
न है नाम जासै नाभी मै वसै समांन
न को पचाइ कै कंठ आसा आस
को उद्यांन है नाम ताको व्यांन व
ब अंग रस कं मिखाई कै पंच भू
त पाइ प्रगट है पंच बाइ भगवांन

पाइकै धट सोरग द्यौ

उद्योनबाइपुनिब

इतै प्राणलैजप्रमान समानजानिजल
अंसतै धर्ष प्रथीअंसअपांन अंन
भवतैप्रमानहै पंचततगुनजानइ
तमैप्रगटप्रकासहै ५० दोहा सा
धर्षकारणप्रगट वृत्तिभेदभएपांच
पंचभूतअनसूततै कर्मत्रिगुनके
संच ५१ सतगुनअंसप्रशंशतै
मनबुधिद्वैनिरक्षार अबसंभुचैतह
तहै पंचभूतअनुसार ५२ संकल्प
वृत्तिमनकरतहै सुभप्रुनिअसुभवि
चारि निःश्रेयैविवधिप्रकारकी । बुधि
वृत्तिनिरक्षारि ५३ वृत्तिभेदतैद्वैक
हे हैनिजएकसरूपपाठकपांचकवि
प्रअं कहीएकरमनिरूप ५४ ज्योपई अ
नईप्रीपांचैप्रकास पंचइंड्रीपुनिब
रमनिवासै पंचप्राणमनबुधिप्रकासै
दसअरूसातलिंगआभासै ५५ उ

लिंगदेहप्रगटभया गुरूनयायोजन
 कछुसिष्यकेशंशौभयो पूछैप्रध्न
 दानं ५६ प्रध्न पंचबाइगुरनुमक
 ही पंचरहीपुनिगुट दसविधिकै
 सकदतहै दत्तकिंधोवैमुट ५७
 उतर चौपई सिष्यकौशंशौगुरुसु
 नलयौ तबहिहर्षकैउतरदयो
 बाइतैनिकैजानी पंचशैरतकहौ
 बघांनी ५८ प्रथमधनंजयबाइव
 तांऊं देवदत्तकिकलसंमजांऊं
 कर्मबाइनागपुनिजांनि क्रियाक
 र्मपुनिकरौंबघांनि ५९ क्वित्तछ
 पैछेंद नागकरैउदगारकर्मपल
 पलनितगावै किकलक्रियायह
 जांनिछोकछिनछिनउपजावै
 बबहारप्रगटजमाहाईआवै बाइ
 निमतेककीदेहफुलावै सवै-
 धर्महै त्रिगुनमैविवहार नगवांनमानिसै
 धहैमुक्तिमुक्तिनिरधार ६० इहा सा

धारणकारण^{करण} सुक्ष्मसुक्ष्मज्ञान इनको
 नौंजोकहै जिनहिज्ञानप्रकास ६२
 कविहृत्पैलुंद आवास नासतेंप्रगतहै
 बाईधनंजयरूप देवदत्तसुभतत्ततैबाइसु
 बाईअनुपं किकलतेजतसतापआपकं
 रहावै प्रथीतततैप्रगतबाइसौअनाज
 कहावै पंचभूतअनसुतहैअनभावतै
 मान भगवानंजानसौग्यानहैऔरसद्वै
 ज्ञान ईश्वर पंचबाइमेंपंचही
 तरजान कारजकाररूपहै ज्योप
 निदान ईश्वर तातैगनतीपंचहै
 चारज्ञानदसधार सुषगवनदैतभै
 है वेदविदितिरधार ईध पंचतत
 सबाइहै कहीयेकानाकोभेद नि
 कहीप्रनिएकहि बर्नकहैअंवेद
 ५ कविहृत्पैलुंद प्रथमबाइआ
 सकीब्यानधनंजयजान देवदत्त
 द्यानबाइकीबाइकहावै बाइकि
 कत्वाप्रानजाननिजतेजरहावै

बाइसमानजानजलजुक्तिविचार
नागबाइअपानजाननिजपथीध
रा पंचभूतअनुसूतसबतह्योजा
नभगवान प्रथमबाइआकासकी
व्यानधनेजयजान हई इहा श्री
गुरजानप्रमानके शंशोदयोनसाये
यहैसीषशिष्यसुनितइ कहूँ पूछन
कैजाय ह० प्रथम चौपई सिषके
संसोउपज्योआई गुरक्रियाकरिदेउ
न्हसाई मनअरुबुधिदेई कंक
है कौविदचितचारिकरितहै ह०
चारिकहैसोकंनविचार कैसेतुमदो
ईकीनोनिरधार उईनकोनेदप्रगत
करिकहीए श्रीगुरजानमोक्षपद
तहीए ह० उतर सिष्यकोसं
सोगुरसुनितयौ तबताकोफिरिउतर
दयौ हैअरुचारिभेदसंमजोऊं तरे
मनकोतिमरन्हसांऊं ७० साधारण
कारणयहकहीए पंचभूतत्रिगुनतै

लहीए अंतःकरणेकनिरधारं चृत्तिभेद
चारिबिचार २१ आकासप्रथमश्रव
सनिवास चारततपुनिप्रगटप्रकास
नबुधित्तश्रहंकारकहावे चारित
कीचृत्तिलयावे ७२ सोरठा चितहे
सरूप चिंताबिबुधिविचारहे अहंहेअ
अनूप अहंकिततहांलंफुरै ७३
नउत्तपतिजालजांनि संकल्पवृत्ति
तकितकरै प्रथीअंसबुधिमान धरा
धर्मधीरजधरै ७४ दुहा सुषनांम
हे गवनरनिरधार मनबुधिएहेमुष
गवनचित्तश्रहंकार ७५ चौपई
हंकारमनमैनिरधार अहंसंकल्पए
बिचारा बुधिश्ररूचितएककरि
जांना चिंतातजिनिहे चैप्रमांनां ७
करनपंचवृत्तिगहै पंचततजे
गटलहे शब्दसप्रसरूपरसगंधा ५नहि
दिवहुभोगनिबंधा ७७ कर्ताक्रि
याकर्मआभासै मनबुधिमिलि

भोगप्रकाशे पंच जेदप्रनिश्रौरतयां
 पंचततगुनकर्मवतां कुं ७८ कवित्त
 आकासप्रकासभाशत्वोभको सरूप
 जात्रा अंतर इंडीनिवास अनभौप्रमां
 नीए वाइकोसरूपकांमचित्त
 वृतिहैअ लंमकोधगतितेजनांमअं
 हैतैवषांनीये मोहरूपीजतजांनौम
 नसौसरूपयांनौ प्रथितैप्रगतप्रषवुि
 धवृत्तिगंनीए भगवांनभयाज्ञांनपंच
 ततसोसमांनगुनकर्म २ जांनिसबमैस
 मानीए ७९ उह्म तिग २ बरननकरे
 विवधिभांतिप्रकास जोअधिकारीमो
 कौकौ होईप्रमसुषतास ८० सौर्ग
 सुद्धमदेहसुऐह भोगजोगविजोगवड
 स्थत्वहोइजबदेह द्वैमिनिभोगप्रति
 धता ८१ तिगदेहयइजांन स्थत्वदे
 हअगौकहं कहैभाषिभगवांन सु
 धज्ञांनगुरास्पतै ८२ इतिश्रीइमृत
 धाराग्रंथनिगदेहवरनननांमभगवां

नदासनिरंजनीकथ्यते च उरथोप्रवसाव
धः १८९ ७हा पंचमपंचद्विभागसौ
करुपांचपचीस पिंवल्लंमवधानकै
जीवज्ञानप्रतिर्दस १ अष्टाष्टालदेह
वरनन चौदह लिंगदेहमिलिकर्मक
वै तिनकर्मनकीदेहसुपावै पुनिकर्मस
रूपरहावै पापनकमिश्रतनरगावै २
चारिषालचौरासीजाती सुद्धमरूपअमें
बहुभाती पिंम ब्रह्मंडविचारिबष
नों चौदह सुवनजुगतिप्रमानों
३ पंचभूत हैकारनरूपा तिनसैंका
रजविविधिसरूपा दसअरूसातलिंग
आभासैं पुनिअष्टालपचीसप्रकासैं
धः ७हा पंचभूतजेमूलहै इसकी
द्वेषंड प्रगटजीवकेभोगकरचौपि
ब्रह्मं ५ सोरग अरधंअरधंविह
ई पंचहूनपुनिदसभए पाचौधरेउ
पंचौकुं पुनिबिकीए ई

पृथ्वै सतभाई पंचपचीसबिभागसौं
 ७ प्रह्व सोरग पंचपंचकेअंस मु
 प्रगवनसमजाईए श्रीगुरकहौंप्रसं
 स अंससौनासैसबै ८ उतर पृथी
 अंपअरूतेज बाइबित्नासआकास
 मेलि कठिनइवनतपतेज संचर
 मुषिरप्रमानहै ए चौपई अस्तमा
 सअरूनारीजांनौं तुचारोमहितपंच
 प्रमानौं रेतपितस्वदमित्तिनार रक्तस
 हितजलपंचविचार १० बुध्यात्रिषा
 निद्रागुनिरूप कान्तआ तसतेजअ
 न्य धावनधर्मवाईप्रसारा उठनच
 लनसंकौचविचारा ११ सिरअरूकं
 उहिरदैअवकासि उतरगुदाआका
 सनिवासि ऐकमुषिचास्यैमित्तिगव
 ना समिष्टिविष्टिउपजेद्वैभवना १२
 पृथ्वी श्रीगुरज्ञानसिष्यकौंदीन्हों सं
 मजिसिष्यपुनिप्रह्वकीन्हों कौंनमु
 पुनिकूनप्रवेसा ममतुवसरनि

करौ उपदेसा खंडंतर अस्थमुषिप्रथी
 कौ जंनौ मांस उदिक गवन पहि चानौ
 नारी रूप तेज कौ अंगा बुचा रूप दे जबा
 प्रसंगा १४ रोम सरूप सुनि आकासा
 चारि गवन मुषि ऐक प्रकासा तैरे तैरे सु
 प्रथाप कौ जंनौ पित तेज सो गवन बंधा
 नौ १५ खेदौ बाइ लार आकासा बरु
 प्रथी प्रकासा लुधस रूप मुषि है ले
 त्रिषा बाइ पुनि गवन कहै ज १६ नि
 न भै सुनि समानां काल जल आल सधि
 त जंनौ धावन धर्म बाइ मुष कहि ऐ प्रस
 गवन आकास हित ही ऐ १७ उमन ध
 है तेज सुभाइ चरन नइ वन गति आ
 इ संकौ चन प्रथी प्रमां नी गवन चारि
 प्रै करहानौ १८ सोरवा चारि चो तत
 अस्थ त जास तै जास की ऐ पंच
 स अनूप कहौ बुधि उन मां नतै
 १९ चौपई सिर आकास मुषि करि
 कंठ बाइ सो गवन प्रमां नौ रूदौ आका

स्थान लघुतैलघुवस्मनकरे कार
काननामि ३३ सौश्रवनीदसश्रंस
एकगेरब्रह्मंड मायाजगकारजस
कारनब्रह्मश्रस्वम् ३५ सतस
हैआत्मा जातैसतसौजोई सतस
प्यन्यारौकीये अस्तअविद्याहोई
चौपई जबसतसताभिन्यकरिनी
ही तबसबअस्तअविद्याचीन्ही
ब्रह्मानंदजगतयौदीग जैसेचंनषो
डसंगमीग ३६ चेतनिसताश्रवमें
भासे अर्वजगतचेतनमेंबास तूहै
ब्रह्मश्राननहीश्रानो अर्वब्रह्मवे
दतैज्ञाना ३७ अर्वखलुदंब्रह्मने
हनानास्तिकिंचन इतिश्रुते चौपई
अर्वसबदतैतूनहीन्यास सबमैतंत
सबनिरधार जुक्तिअहज्ञानलषायौ
गुरमितिसिष्यपरमपदपायौ ३८ य
द्विधिबहुविधि अर्वनहैसुनायौ
सिष्यकौंससोहरनसायौ सिष्यकहु

३९ पुहा श्रवणश्चैसुनिलिये

मनमनिमनतबिचा

सौगुरकहौप्रकास ६० उतरचौपद

श्रीगुरप्रध्नप्रध्नसुनिभयो मननबिचा

मननसरूपजांनितुव

श्रवणजुक्तिसव अंतरलिष्य ६१

अंतरत्याग

भगवानज्ञानमनमानियौ मननरसपा

ग धर इतिश्रीग्रंथइंमुक्तधारास्थानवेद

नाव ५ २३१

इह पंचप्रभावप्रभावकरि गुरुलया

योज्ञान श्रवणश्रौचरननकरौ मननर

प्रमान १ कारजकारनएककरि पिं

ब्रह्मंडसंमोड तरंगफेनिबुद नहीपा

लापुनिजत्तजोइ २ अरिह्न महाकास

घटाकासएकहीजांनिए घटप्रमभले

भेदभेदनहीमांनिए जीवब्रह्मनिहभ

मकहतहैवेदरे परिहांपिंमब्रह्मंड

पंड नही प्रच्छेदरे ३ कवित्त मननमन
 न जानमननही है प्रमान ज्ञान सो प्रका
 सा भां लक्षैत नही तासमें रवितै विमुष
 जे तैरे निदिन कहै ते ते त है र विसंग अंगर
 है तमनासमें जे जन विचार ही न कर म
 कृति सदा दीन होइ कं ही न मन लीन
 ब्रह्मानंद वासमें भगवांन प्रयाग्यांन
 मन नही है प्रमान जीव तो सी वै संमान
 वेद के स्मार्थमें ध त त त्वे सी स्यां म वेद
 सो र्हा मनन भास ज ब होई तव मन रू
 प न पाई ऐ अन मन मां हि सं भाई है त जे
 दिना सै नही ५ प्रह्न गुरु न वा योग्या
 श्रवण मनन व कुगे दसूं निज ध्यासन
 को नाम सिष्य पूछै श्री गुरु कहै ६
 उत्तर श्री गुरु ग्यां प्रमान सिष्य त ह्यौ ल
 हि कै क ह्यौ निज ध्यासन यह जानि अ
 लहं त है स व त ह त जे ७ कवित्त जे
 मै जीव जग मां ही मां नि मां नि रहे तां ही
 अहं अहं त जे नां ही ना स बुधि धारी है

मं. नमसरूपजांनैर्नृत्तिरुनपसुभावेजा
तिकुलनगौतंनैरनरतानहारीहै जैसे
अपिंरुतसौं विप्रकाजैसुद्र एह्यपतिरु
ताउर्वसी कहतमहागारीहै यहै भासि
जध्यास अद्वैतमें द्वैतनासंभवांन
जांनि भेदभ्रमजारीहै ॥ ५ ॥
देहआत्माग्यानवत अंतरजांनकरा
ई निजध्यासन अद्यासतै सोहंब्रह्मसं
ई ए सोहंहंसोएकहै द्वैतभेदनहि
सोयहसच्चपरोत्तहै अयंप्रति
हिजो ५ १० अरिजु ततपदहैसोईस
परोत्तिहिजांनीए त्वंपदजीवहिजांन
तत्त्वप्रमांनीए ततत्त्वत्त्वततएकहो
यांजांनरे परिहोनिद्यध्यासनकोरूप
दसैंजांनरे ११ देहआत्माजांनवै
नदेहआत्माजांनबाधितं इतिश्रुति
चौपई श्रवणममननिद्यध्यासनक
ह्यो निर्मलजांनसिद्धसुनित्तह्यो इति
नौजांनहृदैमेंधास्यो कसुपूछनके

हेतुविचारस्यो १२ निश्चयासन उपधार
 नयौयहै ब्रह्मविचारपस्यो उपमद
 है सा ज्ञानकारविचारन आगे सिद्ध
 सरूपमसारसपागे १३ प्रहस सोर
 तत्पदत्वंपददोर्द्विभ्रह्मंडविम
 गधुनि जीवईसस्वहो १४ धुनि असि
 दकंपाई १५ मवाकासघटाकास
 महाकासधुनि कहतहै तीनों भेदवि
 नास एककलौ सोई कहौ १५ ईश्वरहै
 अबज उतपतिस्थिततैकरै जीवतह
 अतपज ईन्हि एकताकंच तही उतर
 चौपई उत्पउतरगुरुप्रकासे सुनतसि
 कौससौनासे तत्पदत्वंपदतेसंम
 ऊंऊं समिष्टिविष्टिकौ भेदलघंऊं १
 ० हुहा जीवब्रह्म अरुईसकहि त
 तत्पदत्वंपदभास जीवईसकीएकत
 ब्रह्मअसीप्रकास १८ दृष्टांत सोर
 चूनाहरदीदोई रोचननामनही पावही
 ऐकरंगजबहोई तबरोचनरोचनसही

१९) रोचनमैधेनास चूनाहरही भेदनही
 हैपदएकही भास असी रूपदहोईतत्र
 दाष्टांत चौपई ततपदत्वंपदजावतकही
 ऐ तावतअसीपद भेदननहीऐ ततत्वंपद
 ततएकमित्तावै हैपदत्वंपदजावतकही
 टअसीपदपावै २१ उहा वाचि भेदमें भे
 दसौ त्वद्वित्वद्विनिरभेद वाचित्यागिका
 रत्वद्विधरि यौभाषतबेद २२ प्रथमचौप
 ई वाचित्वद्विकैंगरसंमजायौ शिष्यक
 हसंसे फेरिउगयौ वाचिद्विचारिकौन
 विधितजीये त्वद्वित्वताकैसैंभजाऐ २३
 तत्त्वउतरहुहा वाचिवाचिकरिक्कैक
 दौ त्वद्विकह्योनहीजाइ त्वद्विसरूप
 त्वरूपहै साषाचइववाइ २४ साषाच
 चिसरूपहै चइलक्षणांमि वाचित्व
 द्विसंनसंधयौ गान्ढेष्टिप्रमाण २५ अ
 यततपदवाचिचरननत्ररिल ततपद
 वाचिद्विसासप्रथमही गाईऐ
 पदकोभेदवाचिसंमकाईऐ

सुलहैल कौ भेदरे परिहासौ बरनै निर
 धरसार जौ वेदरे २६ चौपई ततपद
 सुधसरूच त्म निरविसेषसोहैनिहेन
 रम माया भेद भेदसोहहीए वाचिवि
 से षरनगाहीये २७ ईश्वरजगकौक
 र्मजांनै सरखरूपसर्वसुरमांनौ करुण
 मयभक्तनहितकारी यहैसरूपवाचिनि
 रधारी २८ कवित्त वाचकौविसेषजा
 नौतिनि २९ कौषांनौलयेनहीआपज्ञा
 नौईसबुधिधारीहै दानवकौनासनसु
 षासिनसुदेवनेकौसेवककौसेवकसु
 प्रीतियोचिचारीहै गोपीवा लबालहे
 लगिरकौउठाईलेतनिगमसुकहैनेतय
 हैभ्रमभारीहै वाचिकमित्तौहैवाचि
 गजगारखंचौयांचभगवांनयहैसांच
 जेद्रकौनिष्पारीहै ३० उहा निश
 वसिभ्रमसुप्रज्म नयोनिष्पारीभूप
 वाचिमिलैलहैईसता विसस्योअत्यस
 रूप ३० कारनताहैवाचिमै अतरजा

भाव भक्तवत्तताजोनिपुंनिलहो

रूपचतुरभुजतावही

सहीसहस्रनाम सेवकसेविधिजागमें

उर जनमकर्मसुम

उत्तमगुनब्यबहार ईसबाचिय

सुखसतोगुनधार उर बादि

मेंभेदबहु कहुकहैसुजाई त्वदि

निर्विकल्पमनुत्ता

ई उध प्रश्न चौपई सिष्यकहैगुरुकहै

विचार लक्ष्मिभेदकैसैनिर्धार बाचि

वचनमनप्राप्तिश्चत्त बानीमनसातहै

नतत्तश्च

मनसासह इतिश्रुतेचौपई ध्यानसरूपी

मनहिनश्चावै नामभेदबाचिनहिंगावै

हृसरूपसज्ज्वेदनिवारै

क्यौधारै उह

घ्रांसां इति श्रुते अलयरूपी लघ्यानजाई

ऐसीप्राप्तिकिनविधिपाई

अथप्रकाशे मेरेमनको

तर दुहा सिष्प प्रह्न उत्म कीयो लीयों
रु उर धारि लक्षित यि वत जुक्तिजे
पुंनिक लौ बिचारि इट चोपई श्री
रक है सुनो सिष्प मोई वेद वचन हो
बधिका होई सा द्वात कार की श्रुतिक
हावे निषेद भेद मन वचन ही गावे
इए उपदेस अरु पणुनि वेद कहत है
मन न मल करि ब्रह्म लहत है मन दे
ये मन सुनै विचारै मन ही सुवि सरूपि
नहारै धरे मनै वद पृब्ध मनै व श्रौत व
मनै व मंत लं इति श्रुते चोपई ताते म
कं नि मल कीजे इ प्री भोग चित न ही
जे सुध लक्षन होवै ऐसी साषा चं
नी ऐसी धर अष्ट लक्षन को क
चेतनि अंधि जांन निरगुण निर
धम प्राप्ति पूर्णिको मचि दाने दनं
नत है सरूप जाको कटस्थ प्रभा
को गावे गुण वेद वाको ई श्रत वे
संज्ञा अज्ञान दोई विज्ञान

श्रुतिस्मृतिविद् जोई पूर्ण निरव
द है भगवान् जय ह जा निमल मानि सबै
त्व सुचंद्र है

उहा सुधुनित मुक्ति है निरलेप
चल अज्ञान अज्ञान रूप चिद्रूप है
तद्वि अथ प्रमान धर जग कान्
कारन नही अंतर जांमी नाहि वाचि
वसै विसेष तजि तद्वि मन माहि धध
वाचि तद्वि ता करि कह्यौ सुधु रूप निरु
प भगवान् जयान भगवान् पद तत पद
तत्र नूप धध इति श्री श्रुत धारा ग्रंथ
तत पद वाचि तद्वि वर्न नौ नाम भगवां
नदास निरंजनी कथ्यते षष्ठौ प्रभाव द
२७ ह उहा तत पद रूप निरूप कै वा
चि तद्वि कहि दोई त्वं पद वाचि रू लक्षि
कौ कह्यौ छत है सोई १ प्रथम चौपई
गुरजी मौरा ति मर न सावौ त्वं पद वाचि त
द्वि समजावौ रवि प्रकास ज्युरै नि न भासै
तुम्हरी कृपा भूमयौ नसे

वाचिप्रथमसंमजंजं तापीहेंपुंनिन
क्षत्रदांजं त्वंपदवाचिदेहसौमिली
ज्युहपनमेंछायामिली ३ सदा रहेदृप
नमुषन्यारा अहंममत-अपांननिहारा
यौहीत्वंपददेहरहवे देहमांनिपुंनिवा
चिकहांवे ४ अश्वत्वंपदवाचिबर्नन
दुहा पं चकोसत्रैश्वस्था जातिवरन
आसर्म जनममर्नमुषदुपलहे प्राप्ति
कर्मकर्म ५ ब्राह्मनक्षत्रीवैसता सु
रुअंतजजास ब्रह्मचारीग्रहस्थपुंनि
नप्रस्थसंन्यास ६ षटविकारअं
कोसके सप्तधातमयमांनि सांमगे
अभिमांतके दीर्घहसुप्रमांनि ७ ए
रत्रिजगत्त्रादिदे चारिमांनित्रेहो
महीत्वय जातिपुंनि अंन कोसय
५ ८ प्रह्मसोरवा षटविकारवे
व सप्तधातकोनांमकहि श्रीगुरव
माव लघिविकारतजि ९ उत
प्रभावकहि अंनको

म विप्रतिप्येण्डिसुपचज्यु सोधरुप
तैंग १० दवित अंनदेदि कांरुहंतेप्र
मटविदारवट बाजीन उवस संवे चोद
हंनटदे जाइतेन सीदिवांरुवइरुहं
सिधप्रमांन विपरी लुंनंनंनंनंनंनंनं
मट है श्रीरुसि सुहंनंनंनंनंनंनंनं
रंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनं
कारनप्रुत्तपभासे कारजन्तिविप्रक
सैभावंनमुनिप्रुत्तपभासे संनंनंनं
१ उह प्रंतवाइवोदययह सुंनंनं
पासांनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनं
उरुंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनं
नंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनं
यन्निंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनं
नंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनं
करनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनं
नंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनं
नंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनं
यंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनंनं

चाचिप्रथमसंमजं कुं तापीछेंपुंनित्त
तत्तत्तां कुं त्वंपदवाचिदेहसौमिली
दृष्टपनमेंछायामिली ३ सदा रहेदृष्ट
ममुषन्यारा अहंममतः अणाननिहारा
योंही त्वंपददेहरहावे देहमांनिपुंनिवा
चिकहावे ४ अण त्वंपदवाचिबर्नन
दुहा पं चकोसत्रैः अणस्था जातिवरन
आसर्मे जनममर्नमुषडयलहे प्राप्ति
कर्माकर्म ५ ब्राह्मनक्षत्रीवैसता सुद
रुं अंतजजास ब्रह्मचारीग्रहस्थपुंनिब
नप्रस्थसंन्यास ६ षटविकारमंन
कोसके सप्तधातमयमांनि सांमगो
अभिमानके दीर्घहसुं प्रमांनि ७ सु
रत्रिजगत्त्रादिदे चात्यांनिजेहोइ
रासीलयजातिपुंनि अंन कोसय
५ ८ प्रस्थसोरवा षटविकारके
व सप्तधातकोनांमकहि श्रीगुरव
भाव लयिविकारतजि ए उत
षट्प्राचकहि अंनको

म विप्रतिष्येष्टिदसुपचज्युं सोशरुप
संनंग १० दवित अंनकेदिकाहकृतैष
मटविकारवटबाजीनठवत्संबेर चीला
हंनटदे जाइतेअंस्तीविधानुवृद्धतेल्ल
स्थिप्रमाजविपरीतर्णीअंस्तीप्रेतेष
मट है श्रीरिअंस्तिशुक्लसौपितातैप्रा
टअंसलोहीमासतुचरोत्तमातरतैरटनह
कारनअल्पभासेकारजविधिधिप्रका
सैभगवंनसुनित्रसैअंनदौसंबटहै १
१७हा प्रंतवाइदौधर्ययह चुंचापि
पासाअदिअंमरीअंनदीत्यागिकारि
उदरगुंजरसन्नादि १२ सदैया बाइदि
लासवित्ताससंबयहनीअपम्यैसभा
गनिसंता हायहलैसुषचादत्रलेका
स्देहदलैदिवहारअंनता उत्तमधम
करमदरैदरिदरमप्रै जालोइनियं
ता औपतिअत्तकरै यहजानिदिलैभगवं
ननिहंअंनकेता १३ उहा एतौकोसह
यौवरनीये संकल्पचृतिअनुसर ज

तत्तरंगसमं है सच्चै सुभषुनि असुभविच
१४ सवैया मनवृत्तिय है जलरूपल है
जितकित बहै वरुजोगा अजोगा रहे ज
सोइ तव नृप होइ सवै सुष जोइ त जै उष
सागा सुतवित प्रमांन यहै सुष जानि सु
नारिनि दान पगै रस भोगा जग वानस
रूपल है सुअनूप त जै भ्रम कं प मनो मै
रोगा १५ उहा मनसंकल्प सरूप है
छन भंगुर विचहार मनकै आगे बुधि है
ताको सुनौ विचार १६ बुधि धर मय
ह जानीये नह चै भोग प्रमांन सुरपुरन
रपुर नागपुर भोगरूप जग जानि १७ ज
पत्तप संजम साधिकै जंत्र मंत्र मनुत्वा
इ भोगत्वाल सात्व गिर है सो विज्ञान
सुभाइ १८ सोरग कासी करवत ली
ज जो कं ही नृप रू जी ऐ प्रवेश त्रिवेनी
कीज तुला तोलित न भोग बसि १९ ग
नपति गौरि नृपास सिव सक्ति कौ वृत्त ध
रै करै भोग की आसि विष्णो न धर मबंध

तव कृतं २० आनन्दकोसवर्षानि च
 त्मो है जीवसौ है आवरननिबन्धि
 नां ही नां ही कर है २१ अरिजु बंधमो च
 को ज्ञानत्व है न ही नै कही जीव इ सर्व ल
 हत है है कही निज सुषदी रासि च्छासि स
 न वस्त है परिहाय ह अज्ञान प्रमान अणु
 तार सत है २२ इहा पंचकौ स ए कौ स स
 म जीव वाचि प्रमानि पंचकौ स पं श्री वं
 ध्यो कीट कौ स पुं नि जा नि २३ तीन अ
 वस्था वाचि पुं नि ता कौ करू वषा नि जा
 प्रत है पुं नि सु प्र कहि सुष पति सुष वत मा
 २४ चौदह इं डी देव सब विषय भोग
 का स अस्थूल देह बड भोग जुत जा
 त कौ अव भास २५ प्रह्न सो रग सि
 ष्य संसौ करि लेह चौदह इं डी देव कौ
 गुरु तु म ए ह देव भोग इं डी सबै २
 तर चौ पई गुरु क पा करि ज्ञान प्र का
 सिष कौ संसौ ना सै अध्यात्म अधि
 त लषां कं अधि देव क कौ भे देव

२० अवनदंडी अध्यात्मकहीए दिस
व अधिदेवक हीए सच्चिषै अधि
भूतक जांना तीनों मिलै भोगप्रसांन
८ तुचा करन अध्यात्मरूपा पवनदे
अधिदेवनिरूपा सपरसहे अधिभूत
नवासा तीनों मिलै भोगप्रकासा २९ च
दुइं डी अध्यात्मजांनौ रूपविषै अधि
तवषांनौ रविप्रकास अधिदेवक हां
तीनों मिलै भोगउहरावै ३० अध्यात्म
रशानाकरितीनी रस अधिभूतभोगा
हिचीन्ही अधिदेवक है वनवसेया
तीनों मिलै भोगसुषलेया ३१ सोरठा
अध्यात्महैषांन गंधभोग अधिभूतहै
अधिदेव चतुर्जांन दुतीयनाम अस्व
निकुंवर ३२ अध्यात्महै वाकि बव
तव्यविषै अधिभूतहै अधिदेवक पा
वकपाक इनकौ धर्मसुकर्महै ३३
पांन अध्यात्मजांन ग्रहनविषै अधिभू
तहै ३४ देवप्रसांन अधिदेवक सोजां

शीये इध पद अध्यात्मरूपचतनविषे
 अधिभूतहै विजदेव अनरूप अधिदेव
 कपरमानहै ३५ उपस्थ अध्यात्महोइ
 आनंदभोग अदभूतहै देवप्रजापतिजे
 इ अधिदेवकसौनामहै ३६ अध्यात्म
 गुदजान सतविसर्ग अध्यत्सौ जमअ
 धिदेवकमान कमइंडीकेदेवसा ३७
 बोहा मन अध्यात्मरूपहै संकलनपवि
 येअधिभूत चंद्रदेव अधिदेवहै तीनों
 मिलि अन्नसत ३८ अध्यात्मसौबु
 धहै अदभूतकसोबोधबुद्धासौअध
 देवहै कमलनालकासोध ३९ तोरंग
 अध्यात्मचितजान अधिभूतकचिंतां
 बयै अधिदेवकजिवमान येत्रजानाम
 पुनिज्ञासकहि धरे अध्यात्मअहंका
 रअधिकृतिअधिभूतहै अधिदेवक
 रूइलिचार अंतरइंडीदेवकहि ४१
 चौपई अध्यात्मइंडीसबजानौ अधि
 भूतकसोबिषैप्रमानौ

दैवककहिये इंडी भोगदेवसबलहि
ये धर दोह सतगुनतैंसबदेवहै ध
शीरजगुनजान ग्यानदृष्टिकरिकैक
ही तमगुनविषैप्रमान धर जाग्रत
कौबरननकीयो सासत्ररीतिविचा
र यहभाससोसुपनहै दरपनमुषहि
निहारि ध४ ज्यौंदरपनमैदेधिये क
पनैसुषकौभास जाग्रतह्यायासुपन
कहि सोसुषपतिमैंनांस ध५ जैसैंदो
नांयूलभरि त्वागीवाससुवास यौ
हीजाग्रतवासनां सुपनांसुष्ठमनास
ध६ जाग्रतसुपनजाहानही सोईसुष
पतिनांम जीवइद्वैयेकहै निजानंदके
धाम ध७ पंचकौसत्रत्रवस्था जीव
वाचिपरमान तीन्योगुनपुंनिवाचिहै
सोपुनिकरौबषान ध८ चौपई हम
साधिकहमसांतिसरूपा हमपिंडत
हमजानत अनूपा हमदाताहमन
ककहावै जीववाचिसतगुनयौगा

धर्षं ह म कृता ह म भोगी रो गी संपति
 रा सु त न चि यौ गी त प ती र्थ ह म ज गि क
 जी व र जो गु न चा चि ध र्त्त है ५० को
 तो न यो ह म ह मों ने नि ज्ञा आ ल स क
 ल हि च धां ने गुर सा ख वा स ति क हि ले धे
 त म गु न चा चि जी व यौ धे धे ५१ दो हा
 वै बि रं नौ ध र्म है जी व ले त है मां नि
 जी व चा चि अ भि मां न मि लि अ ई स रू धे
 नि ५२ अ ज्ञा न आ च र न रू प य ह जी
 व जी व ता वा स स प त जे द आ च र्ण म हि
 षु नि क वौ प्र गा स ५३ स प त अ र्च न
 जे द दो हा अ थ म ये क अ ज्ञा न क हि ड
 ती य आ च र्ण नां स ल हि नि ले प ता ती स
 षु नि प रो धि सु ष धां म ५४ पं च म है प
 त धि ता लु टै सो क को नां स ग्पां न वि चा
 वि चा र य हि स प त म सु य को भा स ५५
 रि ल अ व धि ० कां र को षे त अ ग्प के री
 व अ ते सु द द स षु ध्र म तें भ्र मि र है ग
 ती द सों प्र मां न ग्पां न न व को क्ते परि हां

आप-आपयों नृत्तिनां स बुधिमनधरै ५
६ ऐक-अश्व-असवार-आपतिहिच्छि
नगयो सबेवहाइलधायताहिपूछ
तलयो ऐक-ग्याननवमानिभिनका
रजोइरे परिहानवकीसंघ्याकहैल
हैरूसोइरे ५७ देहा बडेपुरुषयेक
हतहैंफूहौकहौंनिदान सुनिप्रोत्ति
सेवनकीयोदसमप्रतष्यप्रमान ५८
पंचकोसमिथ्यानंदीजीवबह्योभ्रम
मान पंचकोससंचेकहै आपुआपु
बहेजान ५९ इयसुष नृत्योहीकिरे
पंचकोसकीपीर बिछेपसोकसंता
पतैं तहीनसुषकीसार ६० सबेया
योंगुरग्यानमिलैबलवानसबैगुनहं
नसुतततयायो भर्मचिताननहीको
ई-आनकहैसुषजानपरोत्तिबतायो
गुरजानकहैसुनिसिष्यत्वहैप्रतषिय
हैततत्वंसंमजायो कहै जगवानसरू
पसंमानसुजानअजाननहीकहुपा

गौ ६१ दोहा प्रथमपरोक्षिदिषाइके
 नहकरैप्रतषि परोषिप्रतषिद्वैबाचि
 जेतवप्राप्तिमुधलनि ६२ चौपईपं
 ससोनंदीप्रमोमें जीवजह्योकोरी
 रिजानै ब्रह्माविष्णुरूद्रसिद्धलेषे
 आधुनासतकरिषे ६३ अस्वार
 नगुरुवहस्यो मारिनाजनैदखौल
 यो गुरुगणपानज्ञानयौजानौ जनम
 मरनकोसोकनिसानौ ६४ दोहा
 रनपदप्राप्तिमेंयौयहनिरंकुसजान प्राप्ति
 लहिअप्राप्तिनहीसोतपतिप्रनाम ६५
 जीववचिवरननकह्योसुतिदुम्नतिअव
 भास अगवान्नापिसोशौनतै लषिप्रनि
 प्रकास ६६ जीववचिमेंयौबंध्यो
 कीरकपिभूति हिलकातेपुलञ्जस
 जीवडय्यौजति ६७ इतिश्रीगणेश
 तधारात्पदबाचिवरननानामसप्त
 भाव ७ अथ दोहा वाचिसरूपनिरूप
 कह्योगुरुसमजाई व सोसि

दलपिञ्जलहृदप्रनिगुनितै जहदाज
 दतीसरीकहिये करिबिचारगुरगमितै
 लहिये १६ जहदलक्षिनांपहलैजां
 वाचिलपिकौत्यागवषांनौ सतअरु
 असलसवैब्रह्ममा जहदकरैसवा
 नकेषंडा १७ अरिज्ञ जहदलपिनां
 नमानतुवसधिरे पिंडब्रह्ममअभाव
 भाचनहिदिष्यरे यहनिहचैअज्ञानरु
 नतमनमानिये परिहांयाकैअगैअर
 लपिनांजांनिये १८ अजहदकरौव
 षांनज्ञानगुरगमितै आपकरूपीब्र
 ह्मजक्तमैरमितै कारजकारनयेकमे
 नहीप्रेषिये परिहांअजहदयहप्रमान
 दतैदेषिये १९ दोहा जीवईस्वरन
 त्यागहैपिंरुब्रह्मंडनत्याग वाचिल
 क्षकौत्यागनहि अजहदमतयौंआग
 २० सोरवा कहीलपिनांदोइ जहद
 जहदवषांनिकै अात्मज्ञाननहोइ
 गात्यागतिआगतिरु २१ दोहा पंरुव

३ विभागकें सत अरु अत बिचार
 असत अरु रूप जगत्या गियें सत चेतनिउ
 धारि २२ चौपई ईस बाचि सब त्याग
 कीजे लक्षितनिधिई स्वरकी लीजे
 चिप्रनित्याग कहीजे जीवलक्षिकें
 लक्षितहीजे २३ कारजकारन बाचि
 कहीये बाचित्यागि करि लक्षि जु लही
 लक्षि पुं नकी लक्षि अरु पा स
 आनंद एक निरूपा २४ दोहा सत
 त आनंद ईस जो सतचित आनंद जी
 व वेदवेदियों कहत है लक्षित निरंतर
 सीव २५ अग्रि एककै तीन गुन बाहुक
 सन प्रकास जितने जहां उपाधि है ता
 तितनौ भास २६ ब्रह्मका उजहां बारि
 येत हो अग्नि ब्रह्मरूपा दीवामसात् तन
 सी गुनतीनौ अत सूत २७ यौ मायात्र
 इमैं बडोईसको भास पंम अरु व्यय
 तनकसी जीव अत परगास २८ म
 चेहि देखायाजिसी दीसै हाथ्य चास

वहईछायाचक्षुमें अतिसूक्ष्मपरका
रूपे मायाकल्पतईसहै मायाकल्प
जीव जीवईसमायानहीसदानिरंजन
सीव ३० महाकासज्यौंऐकहै घटम
येकउपाधि घटाकासमवाकासत
महाकाससौशाधि ३१ सायी को
ककुंभग्रं चनेरिधरिया सबमेंदीसै
न मायाजीवउपाधि मिलिजीवईस
रमान ३२ परित दोहा विवधिनां
कीजुक्तिकरि गुरुखवायौंज्ञान दे
कालकं त्यागिये सिष्यपूछैपरवा
३३ नुत्तर चौपई कृपाकरिकैज्ञान
पावे जातेंसिष्यपर्मपदपावे देस
ततजिबस्तविशेषा तीनोंत्यागिसु
प्रपेया ३४ सोयंदेवदत्तउतीयवाव
नहूपते दृष्टांतचौपई ऐकपुर्वक
कासीगयौ ताग्रहसतकैवालकभ
सोईपुर्वकेरिग्रहशायौ विप्रसंगकै
नपनिजायौ ३५ दोहा कासीकोव

कचलोउबकोनवतोमानि षष्ठिसदिसा
 पतिभयो सनबंधनवयहजानि न्हे
 ईहोपुरुषवोङ्गुङ्गुतो विप्रङ्गुतोत्पा
 कासीबासीआईयो विप्रभेदप्रकास
 ७ सगेतुभारेहैबडे सित्नेप्रेमअनुसार
 यहकोकहातैआईयो कहिउमविप्र
 चार ३७ जोवहकासीदेषियो सोयह
 भान देसकानग्रहसलतजिप्य
 ग्रहनपरवान ३७ देसदेससौनामि
 कालकालनहीयेक बसतबसतसौ
 नामिलै सबतजिगहियेसेकधर सोरवा
 दसयोंयेक सोअयंकरिलेघिये
 गिनयेद्वेदेस परोलिप्रतलिकरि
 है ४१ दृष्टात योंचेतनहैयेक
 सतचित्तअनंदरूपहै प्रोलिअप्रो
 विसेष अंडब्रह्मंडविभागहै ४२
 गिब्रह्मंडप्रोलित्यागिप्रतलि
 निचेतनिलस्योअअंड सोहहंसो
 कला ४३ चोपई अवनमनैनिजध

सनकीन्हां साध्यातकारपुनिश्रामे
चीन्हां गुरुगमिग्यांनगुरुसोकद
सुनतसिष्यकोसंसोबदो ४४ दो
श्रवनकह्योश्ररुमननपुनि निजि
निजिध्यासविचार जगवांनग्यांन
ग्यांनको सिषिपूछैनिरधार ४५
तीश्रीश्रमृतधाराग्रंथश्रवनमन
वरननेनामश्रष्टमोप्रभाव ७
७७ सोरवा नौमैनेमप्रभाव श्रप
नग्यांनकीवरतिको कछुपुछनको
चाव सिषपूछैहियेहरषसौ १ प्रश्न क
ह्योग्यांनकोरूप सिषिलह्योसंसोदह्यो
प्रश्नश्रनूपज्ञानश्रज्ञानश्रनूपहे
उतरचौपई गुरुकहैसुनिसिषिसुज्ञान
वरनसुनांकेग्यांनश्रग्यांन सातभूमिक
ग्यांनलगांके श्ररुश्रज्ञानसातवहरांज
३ दोहा प्रथमग्यांनकीभौमिका कहै
रूससुकाइ श्रज्ञानभेदश्रागैकरुं सुने
सिषचितलाइ ४ प्रथमभूमिकाज्ञानक

सा

केकात्रयो अरिन् ज्ञानभूमिकाकहौ
नहौगुरगम्पैतै

निरमते तनमनसाये जांनिसत्यपुनिपूरजा
परिहासवैपदारथत्यागान्ननासक्तिसरजा
द ताको अर्थ चौपई सुनिवैकथादो
नकछुदीजे तीर्थवासजायजोकीजे की
रबैरागमुक्तिपदपांऊं ग्यांनभूमिकाप्रथ
मलियांऊं ७ जोइछात्रुसोईबिचारी
सुनिपुनिकैसनमांहीधारी सोईबिचारि
होइतेरूपा तातैप्रापतिमुधिसुरूपा
पंचभूतजेभौतिककहिये तेसब असत
असतकरिन्हिये तातैसबैआसिकीना
सी भास्योतुरीयासरबपरकासी ए स
प्रभूमिकाज्ञानलयायो वेदा अतिबा
कतैपायो अबअज्ञानभूमिकासुनिल
जे समऊबिचारत्यागिपुनिकीजे १० अ
थअज्ञानभूमिकानाम बीज जाग्रत२

हाजाग्र ३ सुषुपनजाग्रत ४ जाग्रतसुषु
५ सुषुपन ६ सुषुपति ७ ताकोभेद
गोपई देहभावसबआपहीमांनैयातै
प्रेरअज्ञाननआंनै जन्ममर्तदेहबहु
रूपा येहीबडोअज्ञानअनूपा ११ सुषु
सुषुभोगभोगतानहै कूबोजगतसांचक
रिगहै गुरकोअज्ञानहिदेमहीधौ जीवअ
ज्ञानकूपयौपै १२ सातभूमिकाको
कबित्त सातहैअज्ञानअवसथाकहैलहै
योगयथास्वयंगगुरतावमथाभेदसौब
षांनियै येकबीजजाग्रतसुजाग्रत हैसु
सरीसोकहीमहाजाग्रतसोतीसरीप्रम
नियै जाग्रतस्वपनचारिपंचमसुषुपना
निहारिसुषुपनसांदि जाग्रतसोछठेछ
ठीवांनियै सुषुपतिसुषुसांहीभावांन
मितैनांहीनिरगुनसरूपजाहीसोसर
पजांनियै १३ दोहा कहीअवसथा
येसवै अज्ञानरूपपरकास येविच
असातौसजै वैसातौंइहैनिवास १४

सबही कही श्री गुरु ज्ञान
मिनमिनको अर्थ जो सिद्धि पु
१५ उत्तर चौपई बीरजपरे
रहाई

१६ असती वायलै

मममातामम भगनी जानै
मनमै नही आनै १७
तकहिये सुषडुषभेद
ये एक अज्ञानवक्रुतिविधिलहिये
जैसे बीजवृषपुतिकहिये १८
प्रतसो नोम कहावे
वृतिरहावे जातवर्न आश्रमही मानै
पंडितमूरखसखैरहानै १९ क
ऊलगतनिरूपा करमभक्तिपु
गअनूपा जोगजगिसुनकरमकरैह
म सुतदारा धनधांसअहंमम २०
प्रतमाहिसुपनपुतिकहिये

प्रगटलहिये मिथ्यामनसकल्पक
पावे यह जाग्रतमें सुप्रकवावे २
१ दोहा सुतवितपसुपरिवारसब नास
वंतपुनिजानु फुठवस्तसांचीगहै ल
हैसुप्रअज्ञान ब्रह्मलोकहौ आदिदे
सेषतागस्तेअंत अज्ञानअवस्थास
तिकहै सुप्रअवधामंत २३ चौपई
सुप्रमाफिजाग्रतपुनिहोई ताकोंची
न्हैबिरलाकोई केउकबेरनपतिभ
येकहै भोगवारताबहुतविधिगहै
२४ इंद्रकबेरवरनभयेमानै ब्रह्मा
संकरभयेबघानै होईआयेपुनिआ
गैकहै सुपनामाफिजाग्रतयोतहै २
५ दोहा आपापरभासैतही बंधमोच
नहींजान चंद्रहीनभादौनिसा योसु
प्रपतिअज्ञान २६ चौपई अज्ञान
ज्ञानकीभूमिनघाई गुरूकीकपासी
षसिषपाई अज्ञानग्यानकोरूपसुत
कोसिषपुछैसोज्ञानगुननको २७

अज्ञानग्यांतकी भूमिका कही गु

भगवाने ज्ञान अज्ञान पुनि

सिधपुछै सति भा ५ २८ इति श्री अ
मृतधारा ग्रंथ ज्ञान अज्ञान भूमिका
वरन नो नो मन व मो प्रभाव ए ॥ ५ १ ॥
सो र वा क हो अज्ञान सरूप जुक्ति जतन
करित्या गिये लहिये ज्ञान अनूप श्री गु
रूसो सम ऊ ५ १ ३ उत्तर अरि ल अज्ञा
न ज्ञान ये ज्ञान ज्ञान गुरू कहत है सप्त
धात की देह एक जो न हत है चेतन स
दा अने प देह व त मां निये परिहाय हई
बडो अज्ञान और न ही अंतिये २ अ
त्म सुख प्रकास निरंतर भास ही अजा
अजन मा एक नित्य प्रकास देह अस्त
अरू मां सरू धिर पुनि सुत्र है परिहात म
प्रकासै एक बा है सु क पुत्र है ३
कै प्रकास भां सब संह है वन चउर
दस मां हिन ही क कुं यंड है
देह यह म म त ह त है

६
०

नस्वरूपवेदबिबिक्कहतहै ४ दोह
 देहभावजोभावयह सो अज्ञानप्र
 न संक्षेपर अज्ञानकहि लहिसरु
 निगपान ५ अशुज्ञानवरनत दोहा
 असुधदेहमलवतसदा नही सोहै
 नबंध अहंदेहत्रिकालनही लहिस
 न आनुबंध ६ चौपई ज्ञानीज्ञानस
 पमेंहै देहग्रहमेंमसतनहै स्वयं
 परससाधुनहींकरे यौ ज्ञानीदेहह
 रहै ७ मानदंनहिंसातजिक्रोध
 मांवांतसबसौ अविरोध गुरुसेवनस
 चज्ञाननिवास मन आत्मनिग्रहप्र
 स ८ सर्वभूतजीवनहितकारी अ
 न्यभक्तिमनमें अतिप्यारी लोलप्र
 वतछेदनितजे ममसरूपतजि आ
 ननजे ९ सर्वअधिलवेदयौ गावै
 ज्ञानीगुरुपुनियौ समजावै यहज्ञान
 उगकर करियो अज्ञानमोहममतासो
 नरियो १० अंकोई सोनी पत्तजुहोई

५ यौजबज्ञानवंत
 ज्ञान अज्ञान भेद तव कहै
 ११ दोहा जैसे हरपन के निकटि तव
 भास त्रैति कुतै भासै सबै यह
 १२ निरवासी को मुक्ति प
 द्वै प्रकार की बासना
 १३ प्रथम चौपद सि
 जावो सुदमनीन क
 दान पावो कैसे जन्म मरन भ्रम छोटे
 १४ उ

मितिन अति है सबै चार
 बिचार निवार प्रथम भास प्रकाश क
 रि पीछे ताहि सिंहारि १५ लोक वासन
 एक है देह दूसरी जात अमी अंतर सो
 तीसरी चौथी साख प्रमाण १६ वासु
 ना कवित्त वासना बिचार कहौ गुरु
 ज्ञान ज्ञान तहौ कामना सरूप तहौ ल
 हौ रिषमतमें लोक को मितन चारै ल
 कला जत पता है

में जीव जंतु में अंतर ५ प्री विता से रूप
रंग रंग व से श्रुति है सुमृति प्रकार से प्रा
व ब्रह्म तंत में जन्म की दाता एह विधा
पूर ची संवारी तग वांत कौ बिसारि प
स्यौ जम हंत में १७ दोहा सकल ससु
चै गुर कहै तहै सुजांती होइ सिधिकौ
संसोदहन कौ भिनि भिन कही सोइ १८
अथ वासना ब्रह्म न प्रथम लोक वास
ना चौपई राजा परजा दरसन आवै से
की जे जो जगमन भावै गिरा मोहि
बस तर नही ली जे तजि बसती बनव
सजु की जे १९ इव्य त्यागि नैतान ही
घोले आसन अडग कब नही डो
धनि धति जग मां हि कहवै लोक
वासना देह धरावै २० अथ देह व
तां चौपई अह बुधि देह में मानै ज
भोग सांच करि जांनै ऊब जलु जव
फुरूप करूपा देह वासना पूरन व
२१ अति अंतर वासना चौपई

नमैं भोगवासनां चाहे मिले नहीं तो म
मैं दाहे बाहर त्यागमां हिमनगहिये
भीतरवासनां देहसुं लहिये २२ सा
वासनां दोहा सास्रवासनां जांनि
येह हीनभेद श्रवभास एकपा
वक्रपाठपुनि अनुष्टां धनपरकास
३ गीतासह श्रनांमपहि मांनतमन
मोद नित्यनेमकछपाठकरि कीजे
कलबिनोद २४ चौपई भागवत
दिखादिपुनिस्वारथ हरिबंसप्रहि
संसुलहौकछुस्वारथ श्रुतिसंमृति
के श्रथकहीजे यहैवासनाजन्मल
जे २५ अनुष्टांतवासनां चौपई श्र
ष्टांतकोरूपत्वघोकं कर्मनिमित्त
तिरूपनगार्कं कर्मकरेकरधर्मधर
तहै जीवश्रविद्याकूपपरतहै २६
तकालेकरिचरननधौवै फाईधौ
नुजलततनजोवै श्रापुकरैसोर्जनिम
ते श्ररसकलकौलघुकरिजांते

सौर वा गुरु क हो निरवेद निरमल ज्ञान
प्रसांन तै सिष्य पुत्रे य हे भेद निरवासन क
ह जिये १ प्रथम जो दुम शांत प्रसांन अ
काल फूल समि हे सबै जोग जुगति ही
जात जात कहत सौ बात है २ जैसे बीज
अच्छ अगनि जिनो नासै नही रही बात
पूर जोग अगनि विन क्या न है ३ उर दो
हा सिष्य पुत्रों गुरु कहत है जोग जुगति
बिबहार वेदांत मत सो अरहे पातंज
त अर विचार ४ पातंजल मत प्रथम
कहि नाम भेद बिबहार अष्ट अंग जे
अंग है तिन को सुनौ विचार ५ दोपई
जस अरु नेम भेद ई कहिये आसन अ
रु प्राणायाम ही लहिये प्रत्याहार धार
नो जो नौ ध्यान सहित समाधि व्रतानों ई
मान समुचे कहे व्रतानि मित मित अ
ब कहौ सुजांनि प्रथम ही जस की जुगा
तन व्रतं ऊं व्रत भेद जस पूनि गां ऊं ७
सौ अहिंसा सत्य अस्तय व्रत अज

एहहीन इहिविधिजमप्रसंनिय त
 जेजाखसुदीन ८ सुचिसरूपसंतो
 जुतलपतिईस्वरप्रतिधोन स्नाध्याय
 वकरिनेसपंचविधिजांन ए
 अस्तसाधिकै तीतकेबहुबि
 मसिधसुधासनपद्मकाचौरासीप
 १० चौथेप्रनायासकहितीन
 कास उतिममधिमदोइकहि पुनि
 तिष्टअवभास ११ पंचमप्रत्यहार
 कीवृत्तिनिवार जितकिततैमंन
 किये ब्रह्मभावनुरधार १२ सोह
 वृषुकारिये अंतरधीतनगाय कै
 लडोलैनही सुधधारनापाइ १३
 सोहोतहै सोकहतौमिटजाय एक
 कहीएकहै ध्यानमानसुधभाइ १४
 नमानअनिमाननही सोससाधि
 धि चारिबिघनसंसाधिमें सोगुरु
 हैसाधि १५ लयबिन्देपकघायतजि
 साखादनहीखाद चार्योबिघनिवा

विद्ये सोसमाध्यश्नुवाद ई चरविषु
कोकवित्त चाख्यो विषयनजेमेकहो
होनेदतेसैलयकेसरूप असेनिजम
नश्रानिये इसदृष्टिसमनागोश्रानि
ससपानेविषेध्रमभ्रमजागेसेविषेय
मानिधे सरगुनकीसुधि श्रवैसाख्यद
खदनावे भोगवासनासिजावेसोकया
यजांनये भगवानभागजागेचाख्येईवि
ब्रह्मजागेज्ञानकेषडगाप्रयोदेहनावही
नये १७ चापईसमाधिस मेंजवनिष्
श्रवै लयसरूपपरविषयनकहावेसमा
धित्वागिविषयनमनतांत यहविषय
विकेपरहोना १८ विविधितांतिकेभो
गकरते तिसबमनकेतयिधरेते सरगुण
ब्रह्मजुभजोश्रुतूपा रसाख्यदसेईस्व
दश्रान्पा १९ मनमेंभोगवासनावसे
जकुश्रमिनाथबुधिसुनिरसे जोगजुग
तिजाउपजेकवही तोकयापजायतसि
तवही २० दोहा चाख्योविषयननिवस्थि

उपजैसुधिसमाधि जैसैबेत्तीचित्रकीप
वनसकेनहीबाधि २१ करसमाधिवध
निकीय कमकमउतप्रति कर्मसंधिअ

बहैज्ञानकीगति २२ ज्ञानपि

कहौ जोगजुगतिकीरीति भ

जोगजोगपर

तीति २३ इतिश्रीअमृतधाराग्रंथअ

वरणनोतामएकदसोप्रभाव

धृष्ट दोहा पातो जलमतमेंकहे

बेदांतमतसुननकौ

१ प्रह्लादचौपई सिष्य

वै ग्यानजोगसोजोग

सो लहकनासंपूरनचेद जा

२ उत्तर दोहा

निजध्यानपरजंत

३ सौरहअंगकौकवित्त

देसकालआसमानों मू

रूप है सब कों कलै ब्रह्मासेष असेषधि
 दत्त सबद कर ता कों जातों अघंडान
 दध्रुप परमानों १६ दीहा आसन ब्रा
 मनव कृत है कहों प्रगट करि देइ सु
 ष आसन सो कहै सिधासन पुनि होइ
 १७ सुष सरूप चेतन्य है तहां करै आ
 रांम येह आसन आसन सबै प्राप्ति पुर
 न काम १८ अरिह्न सिधिसोई सब न
 तं अंधाधिपान है अब अज पररूप सु
 आसन मान है ता आसन में वै सिधिप
 ल्याइये परिहां ज्ञान सरूप अनूप तहां
 मन लाइये १९ अजनासी चेतन्य जगत
 को मन है दीसै जगत अनूप ब्रह्म को त
 लहै यह मल परमान तहां मन लाइये
 परिहां जयोग संयोग मूलबंध गाइये
 २० तमिता देह सुयेह अंग सब मोरिये त
 जिह अंग अमिमान ब्रह्मसों जोरिये २
 हा छे छिमिता होइ ज्ञान मधि जोइरे प
 रिहां देह समि किहे को मन र कट द

होइरे २१ करै ज्ञानकी प्रष्टि ब्रह्म
 नाना ज्ञान प्रतीति सुनातां होइरे सो
 दृष्टि उदार सो सब ललहत है परि
 न धैना सका अग्र जोगा में कहत है २२
 हा दृष्टि दृष्टि विभावतें जो उपजे
 दृष्टि सो ही परमान है नही नासा प्र
 द २३ प्राण वाय अपोन कौ वरनों
 प्रमान रेचक पूरक आदि दै पुनि
 सक परमान २४ चक्षु आदि जे
 करै ब्रह्म में नीन निरोध होइ
 २५ कौ प्राणायाम परबीन २५ प्यं
 ब्रह्मंड अभाव करि निषेद सबै परंप
 च नाम रूप सब असकल सो रेचक
 त सं च २६ सोहं हं सो वृत्ति करि
 सम्मान ब्रह्म भाव पूरन भयो यह पूर
 क प्रमान २७ सोहं हं सो एक वृत्ति रही
 देव ह शङ्क भयो ऊं भजल मधि ज्यौं
 भक यहै सुभाय २८ प्राणा प्र
 न यह विद्वैत करे व

पीडित करै तेन अज्ञानिदांत २० वि
 षय २तामेटिकै ब्रह्मभाव नुर आन म
 नमंजन प्रतिहार यह यह मोषिप्रसांत
 ३० जहो २मत जात है तहां ब्रह्म करि
 लेष सब साधारन एकता सुधधारतां
 पेधि ३१ अहं ब्रह्म अस्मि मही निरालं
 वपरकास परमां नंद आंतं दसौ ध्यां
 तमांत अवभासे निरालं भजौ वृति है
 ब्रह्माकार विचार ध्यांत मां न विसरे स
 वै सो समाधि नुर धारि ३३ ज्ञान समा
 धिसमाधि है यहै वेदांत जे जो न याहू में
 है भेद है सो पुनिकरौ ब्रह्मांत ३४ सो की
 सविकल्प है एक निरविकल्प सो पुस
 री भगवांत ज्ञान त्रिवेक समकै पुनिस
 मजाय है ३५ दोहा घोट स अंग प्र सं
 गजो क ह्यो गुरु समजाइ है समाधिके
 भेद जो सिध पु है मन लाइ ३६ इति श्री
 अमृत धारा ग्रंथ सोरह अंग जोग वर
 नानतो मां स छंद सो प्रभाव १२५१५

ब्रह्मदोहा जोगजुगतिबहुविधिक
 हीसहीगुरत्रास दोहसमाधि२कौ
 पूछनकीआस १ उत्तर चौपई
 रूपाकरिउत्तरदेइ सिधसुसमाधि
 कस्निइ दोहसमाधिकोभेदवतांज
 तांमसरूपगुनकर्मलयांज २ दोहा
 विकल्पसोएकहे निरविकल्पपुनि
 जाकोजैसेभेदहे तैसोकरौवधांत
 ईउ संप्रज्ञातिपहलेहीकहिथे स
 बविकल्पपुनियाहीलहिये सकलउ
 कौभेदलयांज तीनभेदपुनियाके
 जं ४ दृष्टानुभेदप्रथमसोकहिये
 ध्यानभेदपुनिहूजीलहिये निरविक
 ल्यसोतीजीजांनौ तीनभेदभिनपरमां
 ५ दृष्टानुभेदसोतांसकहावे स
 कलदृष्टिमैव्यापरदावे मोबिनदृष्टि
 नहीक्यूही सबकोदृष्टव्यापक
 ही ६ ज्यौजलफेनतरंगानसांही
 तचिनांवस्त्रपुतिनांही कंच

भूषणजैसे दृष्टाबिनादृश्यसबजैसे
 ७ होदृष्टासबसांदिप्रभृत सकल
 दृष्टिब्यापकअनसृत दृष्टानुभेदय
 हकहिसमजाई सबानुभेदपुनि
 सैगाई ६ अरिन शब्दानुभेदव
 हजानमानसबधंधरे दृष्टादृष्टिदि
 बभागनहीसनमंधरे केअसंगसब
 सांसंगकहैपाईये परिहांअसंपु
 यहजानबेदसैगाईये ए असंगोयपु
 रूपः इतिश्रुते निरविकल्पकौरूपक
 होसमजायकै असंगनहीअनसृत
 सेटिहैभाइकै सुप्रपत्तिसमकरिजान
 नहीबिचहाररे परिहांनिरविकल्पये
 हजानिसमाधिसुसाररे १० होहा सब
 विकल्पवाहरिकरेश्रवतचहुदैआ
 दि सबैकर्मकीकरनताकरतकराव
 तवादि ११ निरविकल्पअंतरकरै म
 नमैविकल्पत्याग दृष्टानुभेदसबदा
 पु विधिनिरविकल्पतापाग १२ दृष्टा

दृश्य बुधिविवहार सुमप्र
मोहिकरो निरधार

१२ बुधिकुटिलजबसबहती तबमैक
सेमो

१४ मनमत्तीनसोजबह

तबमैदृष्टारूप करैसंकल्प बिबि

दृष्टामैअनरुत १५ सोरब

सबदानुभेदपुनिजांत अंतःकरणप्र

काससौ निरबिकल्पपदमानहौ असं

गसबदृष्टिकौ १६ तमप्रकासनही

एकजांत अजांतसमानतही यहईतत

बिबेकअसंगसंगयौएकता १७ ज्यो

सुपनैनुपहोइ जाग्रतवैसतसंधतही य

हसिच्या जीयजोय समनबुधिमोप्रसंग

नही १८ तीजीबिकल्पत्याग दृष्टादृश्य

बिभागनही नही असंगवैराग जोसरू

पसोईसही १९ सोईजांतप्रमांतवैस

माधिभासैजहां जीवनमुक्ति सोनांस

बैकर्मकोनासहै २० जैसेचुमकजो

भूषणजैसे दृष्टाबिनादृश्यसबजैसे
 ७ होदृष्टासबसांदिप्रभूत सकल
 दृष्टिब्यापकअनसूत दृष्टानुभेदय
 हकहिसमजाई सबानुभेदपुनिअ
 मैगाई ६ अरिन शब्दानुभेदव
 हजानमानसबधंधरे दृष्टादृष्टिा
 बभागानहीसनमंधरे केअसंगसब
 सांसंगकहैपाईये परिहांअसंपु
 यहजानबेहमैगाईये ए असंगोभ्यपु
 रूपः इतिश्रुते निरविकल्पकीरूपक
 होसमजायकै असंगानहीअनसूत
 सेटिहैभाइकै सुषपतिसमकरिजान
 नहीबिचहाररे परिहांनिरविकल्पये
 हजानिसमाधिसुमाररे १० दोहा सब
 विकल्पवाहरिकरेश्रवनचक्षुदैआ
 दि सबैकर्मकीकरनताकरतकराव
 तवादि ११ निरविकल्पअंतरकरै म
 नमैविकल्पत्याग दृष्टानुभेदसबदा
 नु विधिनिरविकल्पतापाग १२ दृष्टा

दृश्य बुद्धिविवहार सुमपु
मोहिकरो निरधार

१३ बुद्धिकुटिलजबसचहती तबमैक
शीप्रमान साधुसंगतिनिर्मितभई सोमो
हिकरिजात १४ मंतसतीनसोजबह
तो तबमैदृष्टारूप करैसंकल्प्य विवि
धिविधि दृष्टामैअनसत् १५ सोरब्य
सबदानुभेदपुनिजात अतःकरनप्र
काससौ निरविकल्पपदमानहौ असं
गसबदृसिटिकौ १६ तमप्रकासनही
एकजात अजातसमाननही यहईतत
विवेकअसंगसंगयौ एकता १७ ज्यौ
सुपनैनुपहोइ जागपनुचैसतसंघतही य
हसिच्या जीयजोय समतबुद्धिमोप्रसंग
नही १८ तीजीविकल्पत्याग दृष्टादृश्य
विभागनही नही असंगवैराग जोसरू
पसोईसही १९ सोईजातप्रमांतदिस
माधिभासैजहां जीवतमुक्ति सोनांस
र्वकर्मकोनासहै २०

७

इलोहचेष्टाकरतुहै मनबुधिइं दी हो
 यक्रियाकरैरविदीपज्यौ २१ जीव
 नमुक्तिवर्ननकवित्त जीवतमुक्तिअ
 सामतिदीपचित्रजैसान्त्रचलसरूप
 तैसाचेतनप्रकासहै तपेनदीवीयता
 पदेहकौतजैसतापआपहीमै नहैअ
 पअहंबुधिनासहै सुधअहंधारीअ
 हंजपिअहंजारी नानाबुधिसोनिवारी
 हजीनहीभासहै जीवतमुक्तिरूपभा
 नोनसोअनुपव्यापकसकलरूप
 ब्रह्ममैबिनासहै २२ दोहा जीवतमु
 क्तिसमुक्तिहै जहांमुक्तिनहीबंध वं
 धसोद्विअज्ञानमहि नहीज्ञांसतबंध
 २३ बंधअत्मभावहै मुक्तिसुआत्म
 भाव अनात्मआत्मभावनही जीवत
 मुक्तिसुभाव २४ ज्ञांतीजीवतमुक्तिप
 द सतचित्तआंनंदरूप प्रांतधारनजी
 वतकह्यो मुक्तिसुज्ञानअनूप २५ र
 हैदेहमैदेहनही तीनग्रथिकारिभेद र

विप्रकाशसौ यौ भायत है वेद ३६
चौपई नुरै परै जिन ब्रह्मसिद्धि पानो जीव
ब्रह्म एक करि जानो तीन की ग्रंथि जाय
सबनासा संसै कम अहं नही भासा २७
प्रहम सोरवा तीनि ग्रंथि कौ भेद कहिये
गुरु समजाय कौ सुव सुषुवा नी वेद ज्यु
कौत्स समजाय २८ नहर दोहा गुरु
थ भेद जो भेद कहि सो पुनि कहौ विच
रि गुरु कहै गुरु जानतै सिष्य २९ धीरि
२९ संसै ग्रंथि बरनन सबैया जीवहि सी
ज्ञान न है वह दाह

आदि कछु पुनि अंत कछु कहि
कौन कहै है जो यदये

अनेक यद अविबेक सो
पागिर है है संसै ज्ञान त जे यह जान भजे
भावा न सुता भय है है ३० दोहा यह सं
सै की ग्रंथि है कही अल्प करि सो ५ गुरु
सास्त्र प्रति तिन ही निह चै कछु न हो ५
१ कर्म ग्रंथि बरनन कवित्त

६
०

बर

मत

कह्यौ ग्रंथितामै नू ल्यो महापंथ जपान
 रु अज्ञान पंथ दक्षि को मो धो ल है संचि
 त सं चै प्रमान परार बंध भोग मान किय मं
 न कृत वा न क लै ऊ क को ल है बने न ध
 र्म आश्रम है महाश्रम सुभा सुभ कर्म इत
 डो ल है भग वा न भ्रम ऊ ठै कर्म को भंडा
 र फटै सबै आस वा सट्टै ज्ञान मो अस्ते
 ल है ३२ सोरवा कर्म ग्रंथिय ह जा न ब
 क्त कर्म अभिमान ल है निह चै बंध प्र
 मान सब छूटे ते छूटि है ३३ अथ ग्रंथि ब
 र न न क बिन्न अ है ग्रंथिय ह जा नि अ हं
 अ हं कै बघां नि पंडित सु जा न जा नि आर
 उ अ ने क है अ हं राज अ हं रं क अ हं ता
 हि सब सं क अ हं २ प ज्यौं पं क सु प्र सु ष जे
 क है अ हं सा ध चो र अ हं २ जा न भो र अ
 हं सर्व धर्म धार अ हं २ जां अ सै को क है
 अ हं २ मान बंध भू लै जग जाल धंध भग वां
 न ज्ञान बंध त तु सो बिबे क है ३४ दो हा
 अ हं ग्रंथि जी च यौं बंध्यौ महा प्रेत प्र मान

भावतजिप्रेतमजि अहंसुडकरिजा
न ३५ जीवग्रंथिबधनसदा कहेप्रकि
कोनेद परैउरैसुषएकहे योभायतदेचे
र ३६ चौपई ज्ञानीजगसांनिन्नप्रसने
ज्योभोलातारेतरहोते जैसजन्तसेचद
अनूपा त्पहीजीवन्महिसनपा ३५ हे
हसहितविदेहकहावे ईदसुचित्तम
सोपाचे नृज्योर्वाजहोषेयेयो हेननु
परिजरापुनित्तमे ३६ कचेविषये
वेकहे ताकेरुषकेदित्तित्तमे ३
योविषहेअनूनरुपा यदनेकिऊने
विषया ३७ हेन कनेकनेयोरुषे
अहेकतेमलिनहे अहेकनेयोरुषे
यनायनहेन ३८ हेन कनेकने
विन हेनहेकनेयोरुषे अहेकने
मुकहेविषयवदनेकनेयोरुषे
नाने विनविनविनविनविनविन
केयुअहेकनेयोरुषे अहेकनेयोरुषे
हेनविनविनविनविनविनविन

हं २ मानत्रासै अहं नही पास है मिश्री ल
 सकर जैसो है त भ्रम कर्म कैसो भगवां
 न ज्ञान त्रैसो ब्रह्मादि निवास है ४१ सो की
 ज्ञानी ज्ञान मरूप ब्रह्म ब्रह्म पुनि ब्रह्म
 है करत कर्म अनूप इच्छा आदि प्रभा
 व जै ४२ दोहा इच्छा तीन प्रकार है सो पु
 निकरुं पनिरूप भगवां न ज्ञान सो ज्ञान है
 निर्मल परम अनूप ४३ इति श्री अनृ
 त धारा ग्रंथ जीव मुक्ति वरन नमो नम
 त्रियोदसो प्रभाव १३ ५५६ प्रथम दोहा
 कृपा करौ गुरु सिष्य पर करो ज्ञान प्रगा
 स परार बंध को भेद जो जीव मुक्ति निव
 स १ उत्तर श्री गुरु उत्तर देत है सिष्य को
 प्रथम विचारि इच्छा है पुनि निच्छता परई
 छा उधीरि २ अरि ल इच्छा प्रथम चषा
 निश्च न्यच्छा दूसरी पर इच्छा प्रमाण लह
 त है तीसरी सर्व भोग संजोग करत नि
 रसं कहै परिहां जल जब सै जल मां
 हनि पै नही पंक है ३ दोहा तीन भांति

काकैभयो सिषपुछै तजिसोग ४ उत्तर
 गुरुकपाकरिकैकहै सिषसुनिनिजधा
 म जनक आदिराजाभयेप्राप्तपूर्णकोम
 ५ शिषिवदेवसुषदेवपुनि जागिवतकज
 उभर्थ वामदेवताहप्रगत एविरकपद
 अर्थ ६ अर्जुनअरुऊधोनृपति ओ
 रजनकबहुभूप ब्रह्मज्ञानतैमुक्तिहै
 तितहीनबंधनिरूप ७ अरित इच्छाज्ञान
 प्रमानजांतिजोजनकहै सुतबिनतापरिव
 रअश्रुगजकनकहै सांमदोमलक्षि
 भेदसबकीजीतिसों परिहांमहामुक्तिपर
 मानज्ञानकीरीतिसों ८ परइच्छापमान
 जानजडअर्थहै सुषइषभोगप्रभावओ
 रकेअर्थहै इषअतिप्रभावनहीमन
 ओनही परिहांपरइच्छाबिबहारसमर्थ
 मानही एहदोहा परइच्छाकेभोगमें
 गिवतकसुषदेव
 मुक्तिमाऊनहीमेव ९

नसावे। जैसेकोतेसोसमजावे। सिषकै
संसोतुमतेनीसे तुम्हारीक्रियाज्ञानपरक
से १८ उत्तर सिषकोसंसोगुरुसुनितये
फिरताकोतबउत्तरदयो जोगभोगसा
धनतेहेई साधनभेदकहोपुनिसोई १
१५ दोहा उपसमसाधैजोगहै वैरागत्या
गप्रकास वेदांतकेश्रवतते निरमल
ज्ञानद्विलास २० सोरग दयाधर्मदृढ
होइ सोहीगुरुभक्तितै सबमेंरामसमो
५ सूत्रमाताज्ञानसो २१ अरिन जाग
बलिक्यसुषदेवसेवकरिजोगकी भई
भावंतात्मागिम्हारसभोगकी तातेउ
पसमचित्तसबैथाजेअरे परिहावेदांत
सुनिज्ञानमुक्तिबुपुहेअरे २२ दोहा वै
रागदोषनिग्रहतेहं तहां सर्वकोत्याग व
त्तररासोदेषियेज्ञानश्रवतते जाग २३
सनकादिकनारदरुषिबितरागहै सोइ
त्यागहोयेवैरागते ज्ञानमुक्तिपदजेअ
जनकआदिराजाजिते नहीजोग

वैराग वेदांतको श्रवतकरि मोक्षिअमी
रसपाणि २५ पुरवासाके प्रगटहै सुधित
सागु तनांस ततैकोधी कहतहै मुक्तिअ
तप्रमांत २६ सुधिरजोगुनजनकके
सतगुनसोसुषदेव गुनविभागतैभेदसो
ज्ञानसुक्तिनहीभेव २७ ब्रह्मनिरंजतजो
निधे गुनातीतप्रकास ज्ञानीब्रह्मसरूप
है नहीज्ञानअवभास २८ कवित्त ज्ञा
नीकोसरूपअसौगुनातीतब्रह्मजैसो
गीताकोबचनतैसोसोसरूपहैइरे माया
मननासजोही सतरजन्मकोहीकिया
भेदभ्रमनाहीअहंबुधियेइरे संचित्त
कुजेतेवासेअहंतासकर्मनासेअतंत
दीपप्रकासेज्ञानसधिसोइरे कियमांत
कतहांतपारधुभ्रमज्ञानभगवांतमत
मानज्ञानमैसमोइरे २९ अरित्त संचि
तबीजभंडारधारजलकीगिरे कियमा
तपरिहांतज्ञानकलसो जरे सेकेअंत
समांतरहे जेभोगहैपरिहांपारधुब्रह्मवहा

रज्जोनसेजोगहै ३० दोहा सेकेचोअन
 जमैनहीत्रिपत्तिहोइनरकोइ ज्ञानीज्ञा
 तप्रकासघनकर्मकलंकनहोइ ३१
 सोरवा आपरसोइकाजकीन्हीअग्नि
 प्रकासबहु जोकोईभूषसमाजरही
 अग्निमैसेकिलै ३२ इहिज्ञानप्रकास
 आपमुक्तिकेकारनै अहंदेहअंतास
 दीसंपरउपगारकों ३३ ज्ञानपत्तिको
 कबित्त ज्ञानीकोसरीरअसौतेलबिना
 दीपजैसोपारिबिनासीरतैसौजास्योपट
 जेकहै सरकोप्रकासज्ञानमाथानिसि
 सबेहानभौरभयैरे निज्ञानसेतोनहीसे
 कहै नदीतीरतरुनयाबेगसोउधरिग
 सौअबिबेकहै
 तासौबेदअज्ञकहै

३४

सिद्धतीइतीभ्रमनासैज्ञानीकोसरूपहै
 यामेनमानताहीजीवइस

धबुद एक आंही ज्ञान सो अरूप है बंध
मोक्षि गों सुध सता बस भौत न क सु
ग कहै कौन कहां छां ह धूप है भगवान
यह ज्ञान वेद वेद तसो प्रमान आप ही मे
आप ज्ञान अमीर सकं पहें ३५ दोहा
ज्ञान सरूप निरूप है गुरुत्व घायो ज्ञान
ज्ञानी कौ बरन न कस्यो अब पुनिकरौ
प्रमान ३६ कविज्ञ ज्ञानी कौ सरूप जा
न मोर मन है प्रमान पुती पुती सबेहां न ए
क ही सु एक है एक है सु एक ना ही पुजा
ती जाना स जा ही छिधि निषेद भ्रम ता ही
कहै कौ अने कहै भोग भाव सबै करै क
रे मन में न धरे अहं बुधि परि हरे तत कौ वि
वे कहै भगवान नै निसायो सिंधु बुद मे
समायो वेद कै सु वेद गायो साया चंद्र जे
कहै ३७ ज्ञानी के कर्म असे से त मंतरा
जे से नी ल पी त भ्रम ते ते वास्तवता सहे ध
त है सु घात ना ही देखै न ही दृष्ट ता ही अरु
न सु नैन का ही दीप जे प्रां प्रकास है मन

केतरेगजानैबुधिविडु

घानत्रापुमानैसबकोनिवासहे

इष्ट

वानभ्रसकैसाब्रह्ममैबिनासहे

दोहा कलासरूपीज्ञाने बटेबटेनि

ज्ञान आत्मज्ञानप्रमानज्यो कलासं

नकाम

सुकलाकहिआरकलासबकाल

हेज्ञाननिरूप

रूपनिरूपतनाहे ज्ञानप्रमानप्रमान

मानसुआरप्रमाप्रमानपलाहे आत्म

ज्ञानसुज्ञानसुज्ञानतह्योभगवानसु

प्रवलाहे धर्म दोहा अमृतधाराग्र

पह कह्योबेदप्रमान अचुनदास

कामगुरुततसेवकभगवान धर्म

धर्मसंगप्रतापतै श्रीगुरुज्ञानप्रका

सुधिनिरंजनज्ञानतनाहे किन्होब

नबिनास धर्म इर्जनकोमरदनक

ह्यापराकमसोइ कामकोधअरु

भ्रम निर्मलमुक्तैषोऽधु प्रप
निरंजनजांतिये ब्रह्मानंदप्रमान
जनरंजनतानही सोसरूपभावांत
ध परंब्रह्मपरमात्माहैपरोक्षिपद
स ज्ञानश्चिपरतत्तकौकीनोंग्रंथ
प्रकासधु सौकीजातिविचारवै
सिधबुधिउर्ध्वर इनविचारसौमुक्ति
हिबंधबंधनिरवार धर्मे जेस
मीकंटिलनरलोभीलेपटकर तेही
ज्ञानसमीपनदिरहैदुर्वज्जूर धु
कुंडलिया तिनकोज्ञानसिष्यइयेजि
नकांनिर्मलचित जिनकांनिर्मलचि
त कबिज्ञहितज्ञानविचारै गुरुइश्व
रसमज्ञानज्ञानः फिदैमैधारे अस्तु
तनिदात्यागसबमनवानीकरिजित
तनकौंज्ञानसिष्यइयेजिनकांनिर्मल
चित धु दोहा संमतसतरसेअवाइ
सा संमतसंख्याज्ञान कातिकगतृती
याप्रथमहि पूरनग्रंथप्रमान धर्ष थां

कांस्रमांनैः क्षेत्रवाससुनाम
 हांप्रथमप्रगत सोभाधैभगवान
 अर्थमाहिभ्रमकछनहीभ्रममांनै
 सोऽ सुधसोचसोपाइहै साधूसि
 जोहोई ५१ छंदभंग अक्षरकटि
 त अर्थविपरजयहोइ इमनकोन
 षवकरैकोबिदकहियसोय ५२
 हममताकोषडिकैदेहबुद्धिकरि
 सहसभावपरभावनहि तिनह
 कास ५३ अंकसमुच्चैजानयहस
 थकोनाम वाईसअंकतेअंकदे
 पाचौसतपरमान ५४ इतिश्रीअ
 तधाराग्रथसकलबिबेकपरका
 विवेकदीपज्ञानीकोरूपबस्तनतो
 मभगवानदासनिरंजनीकथिते
 दशोप्रभाव १४: ६१: १००० ग्रंथ १४
 वकीगणाती ॥ २८०१ अष्टाष्टांग
 गग्रथलिष्यते अष्टांगजोगवतीसा
 नरुन जानैसंतजोहीयवि

अबगतिनीला अगम अपारा धर्म का
रनधरेनुसंत ओतारा १ अवरणवर्णर
पनहीरेषा जागति सुरनर मुनिनहीपे
षा अबगतिगतिक छवरनिनजाई
सेससह अमुषनिसिदिनगाई २ अस्तु
तकरै पारनही पावै केही नरजसगुन
सबगावै रहै अपार पारनही पावै सत
पुरमिलिक छु भेद लघावै ३ ॥ देवा ॥
अबगति गतिकै सै लिये मन बुधि चित
सौं हरि ॥ आपा मे टिसत मुर मिलै पावै
दरसह जरि ४ ॥ जोग ॥ ५ जोगी कर्म
गजो करिही क्रीया जोग चोरा सी परि
फिरि २ आवै फिरि जाई कर्म ही कर्म
फल पाई ५ होयतिह कर्म नाम लो
वै तो भो सागर बडुरिन आवै कर्म
कर्म बंधो संसारा कर्म ही तै अटक्य
होभारा ६ देही के कर्म नीन नुवाई
के कर्म न बटै भाई जब लग मन के
मनयोवै तब लग मन निर्मल नही हे

जब तनकी क्रिया मिटि जाई तब प्रभु
नै सहज ही आई। मनकी क्री
षदाई। तनकी क्रिया जूं वी डुमदाई
॥ दोहा ॥ कहै कबीर तनकी या कौ
टिकै। मनकी क्रिया कौ राधि। प्रया
या अभिमान तजि। सतनाम सुषभा
ए ॥ चौपई ॥ तनकी करनी देखु
मन करनी सतनाम मिनाई तास
नी नही होई अष्टांग जोग
सोई १० तातै उत्तरो भव जलपारा स
की यातै होय नुचारा सत्य की यातै पा
नयेऊ सत्य क्रियातै सादिबमलेऊ
सत्य की यातै सतगुरपावै सत्य की या
तनाम मिनावै सत्य की यातै संसै जाई
त्यकी या जीव नुकाई ॥ १२ ॥ दोहा ॥ क
कबीर सत्य की या निरबाण है। सो सब
ते भिन्दा। मनपवनाले ये कधरि। सत्य
नाम कौ चीन्हा ॥ १२ ॥ चौपई ॥ अब मै सां
जोग कौ कहैऊ जोग

नहेक येक २ जोगके चारि २ तत्तन
जांनैसंतसो होय सुतत्तन १४ अष्टां
ग ॥ जोगको यह बिचारा सबमैयेकना
मततसारा सोही कहीये तत्तनबती
सा अष्टांगजोगमैयेकोदीसा १५ अ
ष्टांगजोगसांघिकोंजांनै ओरत्तन
बतीसबघांनै ॥ तत्तनसाधिहोयजो
सूरा ॥ सो कहीये जोगेश्वरपूरा ॥ १६ ॥
॥ कहै कबीरसो जनभोसागुतिरे ॥ य
है करनी करै जो सारा ॥ सतकीयासत्य
आसधरि सतनाम आधार ॥ १७ ॥ ॥
॥ प्रथमजोगज्ञानहै भाई जाकेमि
लैपरमपदपाई निरात्मभडिभनहीहो
ई सतगुरुईसाहोईसोहोई १८ कर्मभ
र्मतजिसाहिबजांनै भलीबुरीकछुमन
नहीआनै निबीसीहोयबसैनहीकित
कुं जंगत्तबसतीयेकसमतकिं १९
होयनिरधारगहैततसारा बाहिरभीत
रिअत्तयअपारा यहहैग्यानजोगकेअ

गा। समकै सो जन साधु संगे ॥ २० ॥ दोहा ॥

तसे मया ॥ २१ ॥ चौपई ॥ हजा
बिचारे होयनि मोही आपोत्पारे

घ

२२ मातपितासुत

कामक्रोधमदलोभवुहावे

होयनिरवासी सो चसो लागे अनहद
सुनै आत्मा जागे २३ देहछोडिबिदेह
मनमो तो तहो हसा पावै पद निरवा
यहमत गुरू कृपासो पावै २४ विनबि
चार जगमै भरीवै २५ ॥ दोहा ॥ कहै क
बीरसो बिचारिकै सो पाप पुनि तै करिये
कतत कौ जातै जाय पुष्य दरबार २५ ॥
चौपई तीजा जोगबिबेध कहोंवे विना
बबेक पार नही पावै जाकै ससता मत
मै होई भली बुरी जाय कहो कोई २६
समझहि सर्वग बिचारे सबघट

ब्रह्मनिहारैः सबघटयेकतांमसमांतां॥
 औरसकलजगमिष्ट्याजांतां॥२९॥
 जाकैसतघटमांहीकोईकहोकब्र
 मांनैनांहीसतबंतहोयेसबसमावे
 होयविवेधीनिजपदपावे॥२७॥
 जबलगभनविवेधनहीतबलगा
 लीगततीरभोसाग्रकैभीतरैःश्रेसीक
 थीकबीर॥२९॥ चौपट्टी॥ चौथाजोग
 सीलकहदीन्होंबिनासीलनहीसा
 हबचीन्होंनिर्मलहोयसोसीलविचा
 रैसुधिवुधिव्याधर्मउरधारै३०
 मनकौसंमैजेकरिजौजांनैपांचौप
 कडियेकघरिआनैसतिसीलगाहि
 तजिसंसारासतिहीतैउतरोभोपारा
 ३१ होयसरोतरसंचाबघांनैभलीबु
 रीमनमैनहीआनैभलीबुरीसबत
 जैबिकाराचौथाजोगसीलततसारा
 ३२॥ चौथा॥ कहैकबीरसीलबिसान
 हीउमजैअनयडिहिनहीआवेवि

सीलनही कबरे। किततौ करे जपा
 ३३॥ चौपडे॥ पांचवां जो मसंतो
 वयांनो बिना संतोष बूडे अभिमा
 वाही अब छा होई सहज भाव
 होवै सोई ३४ मानै नही रंक अरु
 होय अमान का दुसौ न का जा
 के बाछे नही कोई होय अवा
 हिव सोई ३५ मन अस्थिर करि
 माये अनहद नाद सुएँ चित ला
 ये अनहद नाद जपै जन कोई सं
 शृंस मोई ३६ ॥ दोहा ॥ कहै
 रतिमेल पवन प्रकास करि सुष
 है समाग्र सत नाम संतोष बिन ॥ स
 लोक नही जाया ३७ ॥ चौपडे ॥ छ
 ग कहिय निवैरा जातै जम सौं
 वेरा सब घटमा ही जाके जोना हो
 सोही दरपत उनमांतां ३८ सुषदाई
 वही कौ भावै जल सरूप हो प्रअ
 जावै सीत न होय सति मन

होय रमता कौ पावे ॥ ३१ ॥ बिसा ॥ कहै
कबीर कंचन का चये कसम ॥ इष्टि
सचये क ॥ हजा भावन आनै ॥ ये कन
तकी टेक ॥ ध ॥ चौपद ॥ सत बांसह
जजोग है निका सहज भाव ले जसमै
जीता सहजै होय प्रेम नुप जावे पांचौ
बसिकरि सहज समावे ॥ ध ॥ नहै सं
सं होय लोभ नु जावे सो भोसा गबडु
रिन आवे नहै संसं हवे जो कोई संसं
काल डसै हे सोई ॥ ध ॥ होय निरलेप
का कु नही लागै सत सीतग है अंतर
जागै अंतर जागि होय डसीयारा क
है कबीर सहज मत सारा ॥ ध ॥ कहै क
बीर जग फूवा जोनै सतनाम ततसा
रत्रयामें सहजै सहज प्रगट जब हो
ई सहजै होवै नाम समोई ॥ ध ॥ आ
बां सुख जोग है नीका जो लग जगत
गोन ही फीका सुख ही तें नुप जै जुगार
ना सुख ही मैं खासा पुनि गाजा ॥ ध ॥

तो लो लो वै कोई अतलतल वै पि
ही होई आदि प्रथमों जो लो लो
तलतिरि कै बाहिर आवे धर
रतिले सुन्य समावे सहज
रपावे यह अष्टांग जोग है

अ गीत करै चि चार ॥ ४७ ॥ दो

॥ कबीरमान विनेष विचारि

सील संतोष समाय ० नाम गहे नि

मैर है सहज सुन्य धर पाय ॥ ४८ ॥ क है

कबीर सुन्य सनेही होय रहो जग सौर

स सुष सागर मै चर कोया सतना

बसुखासा ॥ ४९ ॥ इति श्री अष्टांग जोग

लंछाः अथ १५ सब की गणती ॥ ४९ ॥

अथ अथ प्रथमी अंश लिख्यते ॥ ४९ ॥

सब बाचा चौपई ॥ हे पोती तुम ग्यो न

समाना तुम सब ही की नुतपति जाना

थी परवांत कहो संमजूई के जो उ

न प्रथमी निरमाई १ जो न मांड प्र

वी मै आई सो सब नुतपति

कैसे कई अ कासकी बानी कैसे कई स
कलगत पांनी २ कैसे नयो क दो पर वं
नो कैसे नयो तीर निर बाना जहां लग
वेत छक हो ब पांनी सब गत प्रति तुम
भायो पांनी ३ अ सु मेर को क हो प्र
वोतां के जो जत सु मेर पुनि वां ना धा
हगो नी बिन ती क रं स का क हो
विषय तुम मे दी सत लोक के निज क
रि ना वो ले व ५
दुर्धम निज निष्टु छि कु पांनी सर
मेर में क हो ब पांनी सक लग मं जं
गत पांनी तां म मेर पु र्ब ध यो पांनी
अ ध र स व द अ का स व ना या वं
त स व द वा यु गु छि ध्या या कं जी त
ब र कं दो उ त पांनी नि म्ने त स व द
र पु नि वां नी ७ किं च त स व द
सां की न्हां स ती त स व द र जि म हि
न्हां अ क ह स व द अ का स जो क
८ अ नै न्हां प्र ग ट करि ली न्हां ९

रिदीन्हां तेजतैंकहे

प्रागटचीन्हां कंदतैंनीरमिर्ति करि
लीन्हां प्रातीतैंजीवनुतिप्रनिकीन्हां
ए सबनुतपतिआकासतैंआई धे
मिदासमैतोहिलिषाई नाभिकेचल
मैब्रह्मरहेऊ तिनप्रथिवीविस्तारब
नेऊऊ १० पंचासकोटिजोजनपर
मातां यहीप्रथिवीकोककुंठिकोतां
प्रथिवीमधिसुमेरुठिकोनां सुमेरुप
रिवैकुंठहिवोनां ११ अबसुमेरुकोव
रूपरिमांना चौरासीलाघजोजनमै
माहिगडोनां चौरासीलाघजोजनउ
परिवहराई सबहीउकतिककुंठसम
काई १२ अंसैसुमेरुपरबतहैभाई स
बकरिभेदकहुंसमकाई तासुमेरुप
रिअष्टमृगंधारा ताकोधरमनिकहुं
बिचारा १३ कौनहिकौनसुर्गहैभाई
ताकरभेदकहौंसमकाई हेमावंतस
गायेकवयेऊ

कैसें भई आकासकी बानी कैसें भई स
 कल उत्तपानी २ कैसें भयो कंदो पर
 ना कैसें भयो नीर निरबानी जहां लग
 ये सब कहो बघानी सब उत्तपति तुम
 भाषो गपानी ३ अरु सुमेर को कहो प्र
 वानी के जो जन सुमेर पुनि वानी ॥ ४ ॥
 ही ॥ हे गपानी बिनती करूं सका कहै
 विषे ॥ तुम भेदी सत लोक के निज क
 रि भायो लेष ॥ ५ ॥ कबीर उवाच ॥ चौ
 ॥ हे धर्मनिभति पूछि कु गपानी सब
 भेद मैं कहौ बघानी सकल मंजोनी
 उत्तपानी नाम मेर पुष्य धर्या गपानी हे
 अषह सबद आकास बनाया बंकी
 त सबद वायु उचि ध्याया कंजी त स
 बद कंदो उत्तपानी निर्मल सबदानी
 र पुनि वानी ७ किंचत सबद चंद्र
 माकी न्हो समीत सबद सरजिगहि ली
 न्हो अकह सबद आकास जो की न्हो
 तेहितै वायु प्रगट करि ली न्हो ८ वा

तैतेजसरजिकरिदीन्हो तेजतैकं
 गटचीन्हो कंठतैनीरमिर्धतिकरि
 नोन्हो पांतीतैजीवनुत्तिपनि
 सबनुतपतिआकासतैआई
 दोसमैतोहिलिआई नाभिकेचल
 अर्द्धरहेऊ तिनप्रथिवीविस्तारब
 जेऊ १० पंचासकोटिजोजनपर
 यहीप्रथिवीकोककुंठि
 बीमधिसुमेरठिकाना
 वैकुंठहिवाना ११ अबसुमेरको
 परिमाना चौरासीलाघजोजनभै
 डाना चौरासीलाघजोजनउ
 रिठहराई सबहीउकतिककुंसम
 १२ असैसुमेरपरबतहैभाई
 करिनेदककुंसमकाई तासुमेर
 अष्टमूर्गधारा ताकोधरमतिककुंस
 १३ कौनहिकौतसुर्गहैभाई
 ताकरभेदकहौंसमकाई हेमावंतसु
 येकचयेऊ हेमावंतसुर्गनिर्मयेऊ

१४ नीलातां सश्वर्गयेकवयेर्त्त नील
नांमदुजानिरसयेर्त्त स्वातीनांमतीजो
हेभाई उचनांमचौष्टानिर्माई १५ मै
खनांमपंचमांडिटाई छत्रवांगंधनाम
निरमाई मंदोनांमसपतमांआई महा
नांमश्वर्गेश्वरमांभाई १६ येतोश्वर
श्वर्गपरवांतां धर्मदासचुमनिजकै
मांता श्वरगश्वरगकितश्वर आई
सोसबभेदकछंश्ररथाई १७ ल
छिलछिजोजनश्वतराई सोमैनेद
कछंसमजाई सुमेरपरवतपरिव
धजमाई तहांकोबिलासकछंसम
जाई १८ जगिदांनवहोनित्यकरा
ई गनरांघफमुनितहारहाई पुन्यप्र
धानरहतहैभाई पापतयेकरतीव
हराई १९ सुमेरकेदछिनजंबुछि
छंआई लछिजोजनबिस्तारहाई
नाकेफलहसतीसांमांतां धरमदा
समैकछंनिधांता २० ताफलको

सचुचतहैभाई डारपातहोयनीचो
 डारपातहोयमुलससावे सोर
 समांतसरोवर आचै २१ तारससो
 उत्तपोनी सबकोईक
 हांनी तारसपरैकचनधाता
 कहंमैसबत्रिव्याता २२ जं
 नजंबुदीपहैभाई जमराजातहोवा
 कराई पूरबदिसभर्थषंडरहाई
 करनांतहोदीनहिहाई २३ इना
 तषंडकहंपरवाना रामषंडहैता
 विकेनां हरनांषंडहवैसहिदांता
 भद्रवनिषंडसही असथांता २४
 केतमालपुनिषंडकहांता उत्तफ
 हुकहोपरवाना नोउंषंडमैकहै
 बघांती धर्मदासतुमनिजिकरिजां
 २५ अबसातदीपकरिकहंवि
 कोनां लोकबेदसबकहै
 नकोनवहदीपहैभाई
 समझाई २६ कहै

१४ नीलानामसम्वर्गयेकवयेर्त्त नील
 नामदुजानिरसयेर्त्त स्वातीनामतीजो
 हैभाई उचनोमचौथानिर्माई १५ मै
 लनामपंचमांडिटाई छत्रवांगंधनाम
 निरमाई मंदोनामसपतमांभाई महा
 नामसम्वर्गश्रृमांभाई १६ येतोश्रृष्ट
 श्रृर्गपरवांता धर्मदासतुमनिजके
 मांता श्रृर्गश्रृर्गकितश्रृं तव आई
 सोसबभेदकहंश्रृरथाई १७ ल
 छिलछिजोजनश्रृंतराई सोमैनेद
 कहंसमकाई सुमेरपरबतपरिव
 धजमाई तहांकोबिलासकहंसम
 काई १८ जगिदांनवहोनित्यकरा
 ई गनगांडफमुनितहारहाई पुन्यप्र
 धांतरहतहैभाई पापतयेकरतीव
 हराई १९ सुमेरकेदछिनजंबुछि
 छुआई लछिजोजनविस्तारहाई
 नाकेफलहसतीसांमांता धरमदा
 समैकहंनिधांता २० ताफलको

रस चुचत है भाई डार पात होय नी चौ
आई डार पात होय मु न स सावे सोर
समात सरोवर आवे २१ तार ससौ
जमना उत पानी सब कोई कहै पाप
कीहांनी तार सपरै तै कंचन धाता त
मसै कहं मै सब विव्याता २२ जंबुत
ख जंबुती पहै भाई जमरा जात हो वा
संकराई पूर बदि सभ थै घंडर हाई
करना तहां दी नदि हाई २३ इनाब
त घंड कहं परवा ना राम घंड है ता
ही विके ना हरना घंड ह वै सहिदा ना
भदु वनि घंड सही असथा ना २४
केत माल पुनि घंड कहा ना उत फल
घंड कहौ परवा ना नौ उ घंड मै कहे
बघा नी धर्म दास तुम निजि करि जा
नी २५ अब सात दीप करि कहं वि
का ना लोक बेद सब कहै बघा ना कै
न कौ न बह दी पहै भाई ता करि भेद क
हौ सम ऊई २६

१३५ दीपनाममैकरं प्रकासा प्रथम
 संघलदीपबधनां पहोकरदीपदस
 रश्मसथांतां २७ तीसरसिलमलिदी
 पनिधांतां चौथापुनिकसदीपबधनां
 उत्तकादीपपंचमवहरांतां जंबूदीप
 प्रसृमांजांतां २८ तहांआयहमदी
 नौथांतां सप्तमांकरंचिदीपबंधांतां
 येतोसप्तदीकहिदीहां अब्दनने
 दकहूंमेंचीहां २९ कोटिजोजनजं
 वृदीपबनांवा तहांपुनिषारसमुद्रदि
 तावा धारसमुद्रविचिबसेजोगांउं
 वृदीपहैतेहिकरनांउं ३० तीतकोटि
 जोजनपरवांतां दीपपल्लवहवैसवि
 तांतां तहांवहांइच्छुसमुद्रहाई जो
 ननासहवैचकराई ३१ पंचकोटि
 जनजोरहिया यहविधिसिलमलि
 पहिकहीया महरासागरतहांनिर
 देकनासजोजनहैभाई ३२ सात
 दिजोजनकुसठांतां वृतसागरमें

बघांनो कुंचदीपनवकोटिनिधांनो
 तहांघीरसागरपरवांना बाराकोटि
 कजोक्हीया तहांदधिसागरनिरम
 या ३३ तेराकोटिपुष्करनिर्माई शु
 यसागरहेभाई सातदीपमैकहे
 बघांनो तिनकेनांसकहेअस्थाना ३
 लमत्नीदीपगडअस्थानो गरुड
 जतहांकरैनिधांनो ॥ ३५ ॥ दोहा ॥
 कबीरधर्मदाससं ॥ सैसबकरिक
 सातदीपसागरसपत्त ॥ सब
 अस्थाना ३६ ॥ चौपई ॥ उनमनि
 रिमनआसनकीन्हं मनकुपरिपत्र
 गहिदीनां पवनकुपरियातालडि
 पातालकुपरितेजनिर्मावा ३७
 जकेकुपरिसतगहिदीनां सतकुप
 सनधरमकीनां धर्मकेकुपरि
 जदीन्हो रजकुपरिकुर्मआसन
 ८ कुर्मोपरिजलनातिनिधांनो कू
 रायणरूपबघांनो पुर्वप्रतापसक

लहमजोनां धर्मदासतुमनिजिकरिमा
नां ३ए कर्मबिसतारकितनौहैभा
ई सोसबभेदकहोसमझई कहैक
बीरसुनिधरमनिवांती सर्वभेदमेक
रुं बघांती ध० जोजनकोटिसुखहै
भाई कोटिपचीसजोपीठिरहाई को
टिपचीसकृषिदेभाई जोजनकोटि
कीग्रीवांरहाई ध२ कोटिसातकोस
स्तकडिटाई सोसबभेदकहं श्ररप
ई कोटिकोटिकेनैननिदानां जोज
नकोटिकीजीनहींजानां ध२ च्यारि
च्यारिकोटिजोजनजांना कर्मकेच्य
स्वपावनिधानां कोटिकोटिजोजन
उनमांना कर्मकीदसुं आंगुंरीजानां
ध३ ॥ ३ ॥ कहैकबीरधर्मदाससुं क
हं बचननिजिसारप्रणीसुं हनौं कर्म
है पुषकेरभंडार ॥ ध४ ॥ चौपशै ॥ कहं
बचनभाषुनिजिसुना तुमसुं भेदकहं
समत्सा कर्मकोमुषपूर्वदिसआई

चारुंदिसचास्युपगम
 येताकूमकेरपरवांनां जिनदेव्यासो
 ४६ कर्मकीपीठिअष्ट
 तिनकोभेदमैकहूरिसा
 तिनकीसंख्याकेतकआई धरम
 ४७ कहैकवीरसु
 दासा सकलभेदमैकरुं प्र
 प्रथमतोआहितोपिंडरीघाई
 ताकोभेदकहूंअरथाई ४८ तीस
 जोजनकेचापंचालप्रि

चा

आई।भाषुभेदसुनौचितना

१६७

मोहितहोएन

भकहोअनुसारा॥५०॥कबी
 र्णवाचा॥साठिकोटिजोजनविस्तारा
 असेंआवुंलेबैवारा आवुंदिसाकर्म

चापिरहाई प्रथवीकेरिहपा नहै भाई ५
किंचितकूर्मजो नुलटै भाई तलध
रती ऊपरिहोय जाई कूर्मकीपीविसेस
बैगाई ताकै मस्तक सहश्रुडिहाई ५२
दोयसहश्रनेतरजोजोनी यहीविधिपु
निककुबघानी पंडहकोटिजोजनके
लेषा ५क५कफन विस्तारबिबेधा ५
उ सेसोपरिसूकरबैवारा सबप्रथवी
कोदीनोंभारा बराहडाटपरिप्रथवी
भाई कादोमांटीनागिरहाई ५४ अ
संप्रथवीदेखिहोजोनी भाषोंबचनले
होपहिचोनी अष्टकुलीपरबनिरमाई
तिनकरपरगटनामडिहाई ५५ रत
नेचलपरबतइकभाई हजाहेमाच
लजुरहाई तीजाकरबिजीयाचल
नाने चौथाउदीयाचलजुरहाने ५६
असताचलपंचमहैभाई मत्तीयागि
रबनानिरमाई सतवांपोनदाननिरमा
ई हरमदपरबतअष्टमवांने ५७ अ

कुलीपरचतपरवांना धर्मेनितुमसै
कहेनिधांना जलकेसंधिरसातलवा
। तेहिमध्येपातालप्रकासा ५८ म
तालनातिअनूसारी जुगचुती
कहंप्रकारी रिद्धिडंडमभावौप
वांना चालिसनांमप्रथमजुगजांना
ए अलधिनांमहजापदिचांना तीस
नांमदधीचपरवांना इतिभनांमजुग
भाषा दक्षिक्नांमपांचवाराया
अंधनांमछववांनिरमांउ श्रमन
मजुगसतवांफिटार्ने केयनांमअष्टम
निरमांवा आर्नेनांमनौमाठहरावा
२ लंगोसनांमजुगदसवांवांनी गोषदजु
गयेकादसजांती गोचनांमजुगषादस
वांना त्रयोदसतुंमनांमजुसंनां द्वि
लधनांमचतुरादसवांनी आदिनांम
पंचादसजांती तिवरीनांमजुगषोड
वांना त्रिविधिनांमजुगसत्रहवयांन
३ अष्टादसत्रिकटीवहरांना उग

सावसतीतशुभाजानां नामनिकोतबीस
वावांनी ५कवीसाबेटीजाजानी ६४
अटबुटनामबाईसपरवांना संधीर
नामतेईसवावातां धोरनाम चौबिस
वांमांना सोसबतुंमसूंकहेबघांना ६
५ नामपसेवपचीसवहराई मेवसेव
षट्बिसनिरमाई तिनवनामसतबीस
बघांना बट्छनामअचवीसागना
६६ अमितनामगुणातिसनिरमांवा
अवातिजुगतिसवावहावा घटना
म५कतिसवाकीन्हां कुन्हनावेति
सवांचीन्हां ६७ कुन्हनामतेतीसवां
भयेने उक्तिनामचौतीसवावयेने
पैतीसजजनामबघांनी षट्तीसाअ
सुनामाजानी ६८ ॥ ६९ ॥ कहैकवीरध
रमदाससुं जुगछतीसपरवांत येताजु
गहमभाषिने कहैनुनामनिधान ६९
भोगाजुगछतीसहै कहैकवीरसमजा
ये निजकरिधरमनिमांतीयो मैनाषे

पैपशा अब आगैस
धर्मदासदेसुनियौकां
चारुपुरीसुमेरकेचोई तिनकरने
कहं अरथाई ७१ पूर्वदिसअसरा
तेहिद्विस्ताकहं तोहि
चौबीसजोजनसहअबिसतारा

७२ तहांकोरा
देवतेतीसकोठिवैवा
सहअत्रवासीरधीसुखासा देवदे
७३ तेहिपुरकांस
अैरापतिहाथीतेहीद्वारा
पापरती

७४ देवकन्यातहांह
इंद्रप्रतपालकरतहतही
रंभाजिरतकरैतहकारा

७५ अैसोइंद्रनगरपर
मेतां भाषिकहेतुंमसुनौसुजोतां

सावसतीतशुगजांतां नामनिकेतवीस
वावांती ५कवीसावटीजाजांती ६४
अटबुटनामबाईसपरवांतां संधीर
नामतेईसवावातां घोरनामचौबिस
वांमांता सोसबतुंमसूंकहेवघांता ६
५ नामपसेवपचीसवहराई मेघसेव
षटबिसनिरमाई तिनवनामसतवीस
वघांता बटछेनामअववीसावांता
६६ अमितनामगुणातिसनिरमांवा
अवातिजुगतिस्वावहावा घटना
म५कतिसवाकीन्हां कुन्हनावेति
सवांचीन्हां ६७ कुन्हनामतेतीसवां
मयेने उक्तिनामचौतीसवावयेने
पेतीसजजनामबघांती षटतीसाअ
सुनामाजांती ६८ ~~दोवा~~ कहैकवीरध
रमदाससुं जुमछेतीसपरवांत येताजु
गहमभाषिने कहैनुनामनिधान ६९
भोगाजुगछेतीसहै कहैकवीरसमज
ये निजकरिधरमनिमांतीयो मैनाषे

चित्तलाये अंग

वक्रसंबंधात्

नां च्यासुं इति

दकलं चरथाई

ती अथती चरथाई

भाई चौबी लगे

धर्मती हि कहे

जपूनि इंड कर

ई सहस्रत्प्या

वंगना करै

धेनु बिस्तारा

कनप ब्रह्म को कहे

नहीर है निध्यानां ७४

रष बिसेवा इंड प्रतपा

देवा रंभा निरंत करै

तंगत हांधारा ७५

वोनां भायिक हेतुं

दिसि जमपुरी सुवांरा

हस्र बिस्तारा ७६

भाई जंमकेनामकहंसमजाई बंब
लनामजमहैपरमांता करमीनामजम
कहंसवयोनां ७७ नीलनामजमना
धूंभाई सुमनामजमदेउंचिन्हाई अ
स्तनामजंमकहंसबिचारा परतिनाम
जमकहंसवरीयारा ७८ अंधनामज
ममहाबिकारा जोजीवअंधधुंधक
रिडारा दगधनामजमजीवसतावै ।
बकारनामजमलेभरमावै ७९ त्रिह
लनामजमकरै चुणांडे मुद्गारनामज
महेंदुद उवाने जोकोईजीवसबदस
मावै करै हंडतहांटिकननपावै ८०
नामकदारजमहैअधिकारा नाममु
संडजमहैवरीयारा करिवरीयारसो
जीवमुनावै हाथबसनलेजीवबिका
वै ८१ हडफोडाजमसासतिदेई क
रिसासतिजीवहिहतिलेई सैंसैंनामजम
हैबिकारा जीवमुनावनसंभारा ८२
परमनामजमहैअधिकारी अगतितं

जमश्रगनिनुचारी श्रगनिनुचारी
देई येहविधिजीवइहकिपुनिले
८३ नामविकेदरकरिविकराई हा
भावकरिजीवकेलिनवाई जोग्यानी
सबदसमावे भीतरिपेचिदिसील
वे ८४ कालनामकल्पपतिहोइ दि
रिहैसमेई ग्यानीहोयकरिक
टउवावे करतकपटजमदावदिषा
८५ निघनांमजमतिघाश्रानी गुर
साधनतिघावांनी घातकरेपुनि
छरलेई मेदिगुरूजीवजमकंदेई ८
नामश्रुंजमश्रुंपसारा लयत
मजमकरदिहिविकारा नामज
बरीयारा चित्रगुपत्रजमहैसि
द्वारा ८७ इतनौजमपुरकेपर्वीनां
सर्वमेदमैकसोबषांनां दधिनदिसिब
नावतीभाई तहांकोराजकुमेरकरा
८८ पंचासतजोजनविस्तारा ता
निसुनौबिचारा मेघवरघातहां

५
१०

धैर्भाई कौटिआएवैमेघरहाई ८ए त
नदेवकी-आयसहोई तबहीमेघपुनि
रसेसोई येतोबरूनपुरीपरवांता जो
घासोकहाब्रघांता ए० सोरासहश्र-
जनउनसांतां पुरीउलंकाअतिसुष-
नां तहांदेवताराज कराई जगि-
मेदहोतहैभाई ए१ पुरीउलंकाधरम
रहाई पापनिकारिरहरिबहाई इतने
आरिपुरीपरवांता धरमदासतुमनिउ
करिमांता ए२ उंदीयाचलगिरनेदे
करावै सोसुमेरकी-ओटिरहावै अस
ताचलेमै-अस्तकरावै तासनेदबिर
लाजनपावै ए३ ॥ देहा ॥ कहैकबीर
धरमदाससंभुं तुमसंकहुं बिवेय ॥ स
रचस्तनमैभाषिहुं सत्यसत्यकरिने
य ॥ ए४ ॥ चौपदी ॥ सूरजचलनकहुं अर
थाई ताकरिमरमनजांन्योजाई नरकी
पतकयेकउधराई दोइसहश्रजोज
नचलिजाई ए५ ॥ सूरजचलनकह्योमै

तोही धरमनिजानितेहोनिजसोही जो
जन्तलिरथउचौरहाई अवरजनेदसु
नौतुमभाई एहै पुरीउतनेकाजवरथ
जाई दोयपहरिदिनतबदिचटाई ये
तासरचलनगतिसेई बिबिधिभाति
करिभाषातोही ॥९१॥ धरमदासउजा
जा ॥ धरमदासतबरेनिहोरा ॥ भेद-आ-
कासकहोबंदीचोरा ॥ कबीरउजोवा ॥
धरमदासतुमपूछिउनेषा सोमैतुमसु-
कहैद्विवेषा एउ धरती-आकासको
भेदबताये तुमसुंधरनिकछुनडुरांऊ
अदुतालीसलछिपदम नौजांनुं षड
बचोबीसउत्तरिअड बसांनु एउए कौ
टिसत्माएवपैसविलेवा सहप्रपच्या
एवइतनौ-आकासा सरजिकेरकहूप
खाना सेईभेदतुमसुनौनिधाना १००
भौमितैजितनौउचरहाई
कहै-अरथाई जोजन्तलिरुचौहैभा
ई जोजन्तलिरिबिस्तारहाई १०१
मंडतैकहुविकाना

रोषवांनो सर्जितैः लक्ष्मि जोजन चंद्र आ
ई इत नौ ही बिस्तार है भाई २ चंद्र सं
मंगल लक्ष्मि जोजन नाई इत नौ ही बि स
तार है भाई मंगल सं बुधि जोजन लाषा
इत नौ ही बि स तार जु नाया ३ बि स पत
बुध सं लक्ष्मि जोजन नां कं इत नौ ही बि
स तार हा कं गुरु तै श्रु क लक्ष्मि जोजन
नाई इत नौ ही बिस्तार है भाई ४ शुक्र तै
लक्ष्मि जोजन सनि आई इत नौ ही बि स्ता
र है भाई सनि चर सं लक्ष्मि जोजन आई
तहां ब्रह्मा की पुरी रह आई ब्रह्मा पुर सं जो
जन लाषा आगौ सिच की पुरी जु राषा १०५
सिच पुरी सं आगौ चलि जाई बिष्म पुरी ल
क्ष्मि जोजन आई बि स न पुरी मै धर मर हा
ई पाप मारि कै इ रि ब हाई १०६ बि स न सं
जोजन लाषा तहां वां स स ऊ धि सुर भाषा
१०७ लष लष जोजन अंतर रह आई तिन
परि अन ल पंष है भाई अन ल परि जटा
पंष आई जटा पंषि परि गरुड रह आई १
०८ गरुड पंषि परि सुं मर हाई सुं यौ परि

द्वासासन आर्द्र पद्मोपरि रूद्रासनगा
 रूद्रोपरि ब्रह्मासन भार्द्र १०७ ब्रह्मास
 केन्द्रागौजोर्द्र ताऊपरि सिंघासनहो
 सिंघासनपरियेकहैं अंडं अंडकेऊ
 रियेकहै डंडं ११० डंडकेऊपरि धजार
 तेहिऊपरि जोसुन्यकहार्द्र तेजक
 नातहोसुन्यकहार्द्र सुबरनपिलंगसो
 विचारि १११ अलक्षपुर्षतहांहै प
 धांनो विसनसरूपी आपनिधांनो है
 बहीसं अगमविकोनां विरत्नाहंसा
 बघांनो ११२ सबहीदेवतामंत्रस
 रूपसरूपकछनहीवेही सर्वत्रि
 कपुर्षपुरांना केऊपरसअथं
 तजाना ११३ दोहा ॥ कहैकबीरधरम
 निसुनौ तुमसौ कहैपुकारि ॥ अबभाषु
 सावली ॥ हिरदैकरिहूं बिचाहि ११४ ॥
 ब्रजलकाप्रथमआदिविसनही विसन
 रानीसुन्यो सुन्योकोपुत्रअंध अंध
 पुत्रसिवलिंग ११५ सिव

त्रिवुधि त्रिवुधिकीरांनीजलसमुद्र
लसमुद्रकोपुत्रअतिलत अतिलव
रांनीमावत्री ११६ मावत्रीकोपुत्रसद
सुद्र सदासुद्रकीरांनीसुतहैसक्ती सु
लहसक्तीकोपुत्रईसुर ईस्वरकीरांनी
तिपुरासक्ती तिपुसक्तीकोपुत्रकेसो
केसोकीरांनीगोतमदेवी गोतमदेवी
कोपुत्रबंबैरिष बंबैरिषकीरांनीहिर
मरदेवी ११७ हिरमरदेवीकोपुत्रमोम
रिष मोमरिषकीरांनीमधिमा मधि
कोपुत्रब्रह्मा ब्रह्माकीरांनीबंधनी
११८ बंधनीकोपुत्रकासिव कासिरा
नीचौदह ताकीउत्तपतिसकसंसार
प्रथमरांनीउद्यानक उद्यानकके
पुत्रतेतीसकोटिदेवता इसरीरांनीदेव
त्री देवत्रीकेपुत्रद्वैतअरदांनव तीस
रीरांनीकाद्वैत १२१ काद्वैतकेपुत्रअ
ष्टकुलीनाग चौथीरांनीबितता बित
ताकेपुत्रतीन अरुन गरुड सक्ती १२२

पंचदशरांती सुवरनभद्र सुवरनभद्रके
 पुत्रनिष्ठत्र षष्टीरांती सोमवती सो
 मवतीके पुत्र चंद्रमा १२३ संपत्तमरा
 नी सुलतांत देवी सुलतांत देवीको
 पुत्र सुरजि अष्टमीरांती कुसमांत कु
 समांतके पुत्र तोग्रह १२४ नवमी
 रांती मवतांत ताके पुत्र अनांबेको
 दशममाता दसमीरांती पद्मावती
 ताके पुत्र अग्रसी सह अक्रुरिखर
 १२५ अपारहीरांती रूपावती एताके
 पुत्र अवारि भारवना सपती चारुदंरा
 नी जोनता ताकी पुत्री चो सचिनाथ
 जोगानी १२६ तेरहीरांती रूपमाता
 ताके पुत्र अरिषांती अरिषांती चो
 दंडीरांती अंधका ताके पुत्र अंधक
 कृपा १२७ ॥ येति वंसावती ॥ चौपड ॥
 अवसत्तजुगकरक कुं वषांतो तप
 सोलासह अग्रवाड जोना अवतार
 अरसत्तजुसते तयेने

नरसिंघावयेउ ॥ १२८ ॥ सर्जिपर्वसह
श्रुत्सुतीसा ॥ चंद्रकेपर्वसह श्रुचा
लीसा ॥ मातसतातइकीसप्रमांतां ॥ आ
रक्षतिबरसनाषकीजांतां ॥ १२९ ॥ स
त्यहीसत्यवातप्रवांतां ॥ सत्यचातसे
चलहीनिधांतां ॥ दोहा ॥ सत्यमातसत्य
हीपिता ॥ असतनहीकोईजाये ॥ कहै
कवीरधर्मदाससं ॥ सबयेकहीसमज
ये ॥ १३० ॥ चौपड़ा ॥ असत्रीपरसतयेक
हीबारा तीर्थधामकहीयेनेमघारा
तहांदेवीकहीयेब्रह्मांती पुनिजो
बीसवाबीसबघांती १३१ पापनही
जोयेकोबाई सबकोईनावैसीसबना
ई येकवारजोबोवैभाई सातहीबार
खुंणैसोजाई १३२ सतजुगमैराजादू
सभाई तिनकरनांमकफुंअथाई
प्रथममांनधाताप्रवांतां राजाकुसम
इसराजांतां १३३ भीमराजतीजाजो
बघांता १३४ षोहचौथाप्रवांतां पंच

सचलिराजावहुकीनां सचहीप्र
 वीढ्याकरिचीनां १३४ षट्हरा
 जासिष्टसवाई सपत्तसहिरतांकस
 वडराई जाकीसमसरनाहंसहारी
 राजकंपसैकहंपुकारी १३५ सर्व
 देसजितकीयाउंजारी उतांतपात्त
 वसावत्तकारी हसवांधराजाहसदे
 षी इत्तनाराजासतजुगपेवा १३६ द
 सराजासतजुगप्रसातां अबत्रेताको
 कहुवषांतां सहप्रच्छितववारात्त
 षजांता अबतारतीपुतिथमवेतिधा
 नां १३७ वांक्तपम्परोसप्रीरोसां ये
 अबतारकहेउसैनां सपवेसोत्तम
 हंप्रभवेउं चंपपवेसदप्रतीसाडिट
 येउं १३८ संतषतात्तचोददपरवां
 नां वधेहजारदसआयेजांतां अम्प
 परसहवात्तकदेई अम्वात्तकहं
 जोहोई १३९ सुत्पजात्रिसवापंडक
 हाई विसवापोचजुपापरदई

कहं बोन जो जोनी जुगजुग बात क
हं मैं बानी १४० ये कबार बोवै जो भा
ई तीन दिवार लुं ऐतै जाई राजा बीस
तहां भये भाई तिन कर भेद कहं स
मऊई १४१ प्रथम राजारघु अतिनां कं
हजा धुंध माल तेहि वां कं राजा अंध क
कहं बघां ना राजा प्रीछित कहं सहि
दोना १४२ राजा तरकुल कहं बडरा
ई राजा हिर चंद सत बड भाई राजा रो
हं कहं बड भारा रुक सो गद मै कहं
पुकारा १४३ धर सो गद राजा प्रवीना
राजा बलि मै कहं बघां ना राजा संतीत
कहं प्रवीना १४४ राजा संतीत कहं
बघां ना १४५ राजा द्वितीप कहं ब
डराई राजा नलीस कहं बड भाई रा
जा नरकर कहं प्रचंडा राजा प्रजा दुष
अति बल बंडा १४६ राजा विष्णु मि
ष्ट अपारा अजे पाल मै कहं पुकारा
राजा दसरथ है बड भांरी राजा राम

चंद्र-अधिकारी १४६ राजाबिण्णिकक
नयेऊं प्रह्वनिराजाबिसवांवयेन
येराजात्रेतापरवांतां अब्दुपरकोव
हूंबघांतां १४७ वर्ष-आठनघचौस
विहजारा दोयेअवतारभयेनिरधारा
कृष्णबुधदोयेनांमकहेऊं बौरैहजा
रसरपर्वभयेऊं १४८ चंद्रपर्ववीस
जारवणेनं मोनससाततालतिरमयेन
आरबलेबरसहजारवघांतां असत्री
परसतवारत्रिमोनां १४९ पुंन्यजोबि
सवा-आठवघांती बौरैबिसवापापप्र
वांती येकवारबोचैजेभाई दोयेवार
लुणौतैजई १५० तीर्थदेवीकहियस
रचंडा राजाभयपचीसप्रचंडा प्रथ
मराजसोमकचलबीरा राजापंडुअधि
कहैधीरा १५१ नलघोषजुकहोयेव
भाई राजाजरजोधनबडराई राजाच
प्रचिजैसिरदारा राजासैनसमदअति
भारा १५२ सजासंतुतकहूचघांती

कहं बोन जो जोनी जुग जुग बात क
हं मैं बानी १४० येक बार बोवै जो भा
ई तीत हिबार लुं ऐतै जाई राजा बीर
तहां भये भाई तिन कर मेद कहं स
मऊई १४१ प्रथम राजारु अतिनां कं
हजा धुंध मात तेहि गोकं राजा अंध क
कहं बषां ना राजा प्रीछित कहं सहि
दोना १४२ राजा तरकुल कहं बडरा
ई राजा हिर चंद सत बड भाई राजा रो
हं कहं बड भारा रुकमोगद मै कं
पुकारा १४३ धरमोगद राजा प्रवीना
राजा बलि मै कहं बषां ना राजा संतीत
कहं प्रवीना राजा संतीत कहं
बषां ना १४४ राजा दिलीप कहं ब
डराई राजा तलीस कहं बड भाई रा
जा नूषर कहं प्रचंडा राजा प्रजा दुष
अति बल बंडा १४५ राजा विश्वामि
ह अपारा अजैपाल मै कहं पुकारा
राजा दसरथ है बड भारी राजा राम

अधिकारी १४६ राजावैणिकक
 नयेर्क प्रद्वनिराजाबिसवांवयेर्न
 राजात्रेतापरवांतां अब्दुहापर
 बषांतां १४७ वर्षेआवतनषचौ
 हजार दोयेअवतारभयेनिरधारा
 छबुधदोयेनांमकहेर्क वारैहजा
 स्वरपर्वभयेर्क १४८ चंद्रपर्ववीस्व
 ऐर्न मोतससाततालतिरमयेर्न
 बलवरसहजारवषांतां असत्री
 सतवारत्रिमोतां १४९ पुंन्यजोत्रि
 वाआवबषांती वारैबिसवापापप्र
 येकवारवोचैजेभाई दोयेवार
 तैजदि १५० तीर्थदेवीकहियस
 डा राजाभयपचीसप्रचंडा प्रथ
 मराजसोमकचलवीरा राजापंडुअत्रि
 कहैधीरा १५१ नलतवाषजुकर्नयेचव
 भाई राजाजरनोधनवडराई
 प्रचिजैस्तिरदारा राजासंत
 भारा १५२ राजासंतुतकह

कहं बोन जो जोनी जुगजुग बात क
हं में बानी १४० येक बार बोवै जो भा
ई तीत हिवार लुं ऐ तै जाई राजा बीस
तहो भये भाई तिन कर भेद कहं स
मऊई १४१ प्रथम राजारघु अतिनां कं
हजा धुंध मात तेहि वां कं राजा अंध क
कहं बषां ना राजा प्रीछित कहं सहि
दोना १४२ राजा तरकुल कहं बडरा
ई राजा हिर चंद्र सत बड भाई राजा रो
ह कहं बड भारा रुक मांगद मै कहं
पुकारा १४३ धर मांगद राजा प्रवीना
राजा बलि मै कहं बषां ना राजा संतीत
कहं प्रवीना राजा संतीत कहं
बषां ना १४४ राजा द्वितीय कहं ब
डराई राजा नलीस कहं बड भाई रा
जा नृषर कहं प्रचंडा राजा प्रजापुष
अति बल बंडा १४५ राजा विष्णु मि
ष्ट अपारा अजैपाल मै कहं पुकारा
राजा दसरथ है बड भारी राजा राम

चंद्रअधिकारी १४६ राजाबिणचकचै
 मयेऊं प्रह्वनिराजाबिसवांवयेउं
 येराजात्रेतापरवांनी अब ह्यापरकोक
 हूंबघांतां १४७ वर्षेआठनवचौस
 विहजारा दोयेअवतारभयेनिरधारा
 कृष्णबुधदोयेनांमकहेऊं बोरैहजा
 रसूरपर्वभयेऊं १४८ चंद्रपर्ववीसह
 जारवणेनं सोतससातताततिरमयेनं
 आरवतबरसहजारवघांतां असत्री
 परसतवारत्रिमोनां १४९ पुंन्यजोबि
 सवाआठवघांनी बोरैबिसवापापप्र
 वांनी येकवारबोचैजेभाई दोयेवार
 लुणौतैजई १५० तीर्थदेवीकहियस
 रचंडा राजाभयपचीसप्रचंडा प्रथ
 मराजसोमकचलवीरा राजापंडुअधि
 कहेधीरा १५१ नतघोषजुकहोयेबड
 भाई राजाजरजोधनबडराई राजाचं
 प्रविजैसिरदारा राजासैतसमदअति
 भारा १५२ राजासंतुतकहूबघांनी

हं बोल जाओनी जुगजुग बात क
में बांती धरे एक बार बीवै जो भा
ती तहिवार लुं ऐतै जाई राजा बीर
महां मये भाई तिन कर मेद करुं स
मऊ दि १५१ प्रथम राजारु अतिनां कं
हजा धुंध मान तेहि वां कं राजा अंध क
करुं वर्षां नो राजा प्रीछित करुं सहि
वां नो १५२ राजा तरकुल करुं बड र
ई राजा हिर बंद सत बड भाई राजा रो
ह करुं बड भाग रुक मांग द मै कं
पुकारा १५३ धर मांग द राजा प्रवां नो
राजा बलि मै करुं वर्षां नो राजा संती त
करुं प्रवां नो राजा संती त करुं
वर्षां नो १५४ राजा दिनी प करुं ब
उसाई राजा नली स करुं बड भाई र
जानु धर करुं प्र चंडा राजा प्रजा दु
अति बल वंडा १५५ राजा विष्ठा
ह अघारा अजै पाल मै करुं पुकार
राजा द सर प्र हे बड भा री राजा रं

चंद्राधिकारी १४६ राजावैणिककचै
सयेऊं प्रह्वनिराजाबिसवांवयेन
येराजात्रेतापरवांना अब द्वापरकोक
बघांना १४७ वर्षे आठनषचौस
दोयेअवतारभयेनिरधारा
बोरैहजा

१४८ चंद्रपर्ववीसू
सांतससाततात्तनिरमयेउ
असत्री

१४९ पुंन्यजोबि
सवाआठबघांनी बोरैबिसवापापप्र
येकवारबोचैजेभाई दोयेवार
१५० तीर्थदेवीकहियस
डा राजाभयपचीसप्रचंडा प्रथ
राजापंडअधि

धीरा १५१

राजाजरजोधनबडराई राजाचै
राजासेनसमदअति
१५२ राजासेतुतकछबघांनी

राजाधनमुजकहं अतिग्यांती राजा
बिचत्रकहं परवोना राजामोरधज
सत्यवयोनां १५३ राजासत्रुसत्रुनेके
राउ राजाहरिचंद्रसतकहार्ने राजा
दुधीष्टतधरमकोपूता राजाधनक
सारअरजुनविष्णाता १५४ राजाजु
गधीरकहबडदार्ई वीरब्रह्माराजा
अधिकार्ई राजा श्रीचितअतिअ
धिकारा जनमेजयपुनिकहं मुवा
रा १५५ हतदत्तमहाबाहुपुनिक
हीये हंसधुंजराजाबडलहीये राजाचं
प्रबजैअधिकारा राजाकरनघनुंअ
तिभारा १५६ राजाभीमकह अति
राउ राजाकंसमहाबडदार्ने इतनारा
जाहापुरभयेने धर्मनिचितसमकि
रितियने १५७ अबकलिजुगको
हंविचारा अरिताषवतीसहज
रा कलिजुगपर्वइतेनिरसयेने स
जिपर्वसहेश्रकहेने १५८ चंद्रपर

सहंश्रदोयभाई मांनसतातजोयेकदि
डाई सांहातीनआपनैहाथा बुझसंने
दकहंविष्याता १५ए आदूबीसासो
परमांनो बिरताकोईजुगतैविधोनां
असत्रीपरसतइकईसबाग गंगासहा
रतीर्थबिचारा १६० धर्मजोबिसबा
आरिक्हाई कर्मरुधरमजुणोतरहा
ई सोलाबिसबापापअधिकई बोवै
सातयेकजुणोजाई ॥१६१॥ गुरुपुनिधूत
सिषकूंजांनी ॥ सिषपुनिधूतगुरुपहिचो
नी ॥ दोहा ॥ बापजोधूतपुत्रकूं पुत्रजोधू
तहीबाप ॥ करैकबीरसबहीबहे ॥ तातै
सहंसंताप ॥ १६२ ॥ चौपई ॥ यहकलिजुग
काकहाबिकोनां सकलमरमजोहम
हीजांनो अल्लराजतकरनांमसुनोउं सर
बनांमकहिकैसमजांउं १६३ सात
बांहाकहीयेबडराई सकिकेचोरक
हीयेतिहवई राजाईइद्वतिबडराउं
राजापोएहंसनेहिवाउं १६४

उत्तमानी राजा ब्रह्माकरनुतपांनी राजा
छद्मवनहैबडजांनी राजा बाह्केरनुत
पांनी १६५ राजा हरप्रहरनबडरांतां
राजा विक्रमकररजधांतां राजामहद
पुतिकरुबघांतां राजापतकपारसर
जधांतां १६६ राजा सुतपांतकबड
रां राजा छत्रपातरजवां राजा भो
जबडेअधिकारा राजा छत्रधरकह
सुवारा १६७ राजा रोहितकहं प्रवांतां
राजा टटिककहं बघांतां राजा ब्राक
हं प्रवांनी धरतराजमैकहं बघांनी १
६८ राजा इंद्रजीतयेकतां राजा चंद
कहं तेहिवांनु इतने राजा कलिजुग
नयेउ धरमदासमैतुमसौकहेउ १६९
आरराजा गिनतीनही आवा धर्मदा
समैतोहिबतावा चेनागरुअपराध
जोकरई पहलीपितापुत्रजोमरई १
७० गुरनहीमानैअछिरनेई सोजो ज
नअछिररहेतेई विप्रचेदकीतिंदा

ही सातेविप्रविद्यानहीधरही १
 १ बिहीनविप्रजोबेदहिहोई ताते
 द्याजायेबिगोई कलिजुगत्रीया
 तमेंजांनी ओरनेदमेंकफंबघांनी
 २ कलिजुगत्रीयाबहुतपुतिबक
 घटमेंबुधिअधिपुनिधरई गुरुके
 चनसंधूरिहावे गुरुकेचचनसुं
 बहावे १२३ अपनासनमेंबहुत
 ती गुरुअरुसाधसंवाजीवांनी
 लगारनआपदितधरई गरभ
 कीयेनरकमेंपरई १२४ गुरुके
 बिनमुक्तिनहोई कोटिनगपान
 किनकोई बहुतगरभकायाको
 ही गुरुसंकपटकरि नरकमेंपर
 १२५ गपानीहोयेगरभनहीतोरा
 गहैसबदकाडोरा बांसनबेद
 डाकरई छत्रीहोयेसंग्रामन
 १२६ कलिजुगत्रीसीरतिहै
 तीअपनीकरैबडाई बा

प्राबुधिवतावै नरकंघरिघरिभीषसंगा
 वै १७७ कलिजुग औसी बातिपिया
 री पुत्रबापकुंटेहै गारी निंदाकलि
 जुगबकोपुनिकरई सबदश्रगयेकोन
 हीधरई १७८ कलिजुग औसाकहुं श्र
 गूता बापसुतापुनिसरिहैपूता कलिजु
 गकेन्यवेचैबापू करिश्रभिमानजोथा
 पैश्रपू १७९ येहीबिधिप्रांतीनकमैव
 हैई करनीबिनांतरकबहुंसहैई सब
 दपाइ नरकरनीकरिहै निश्रप्रांतीनौ
 जलतिरिहै १८० सहश्रमधोहोयहैके
 ई सबकीरितिपकरिहैसोई सहश्रम
 धिकोइहैसरा सहश्रमधिपिंडिहैपूरा
 १८१ कोठिनमध्येजोगीहोई कोठिमधे
 प्यांतीकोई ॥१८२॥ दोहा ॥ कहैकबीर
 धर्मदासहं ॥ सबकरकेहैनेबिबेध ॥ व
 चननहीषालीपरे ॥ मोहिपुर्षनेपदेस ॥
 १८३ ॥ इतिश्रीप्रप्रीबंद संपूर्ण ॥ अंश
 १८६ ॥ सबकीगणती ॥ ३०३३ ॥

रघुनाथजीकीबुजनि॥गोषिर्नुवा
 ॥चौपड़ा॥कौनसागुरुकौनसाचेला
 नसारमतारमेंश्रकैला कौनसासिष
 नसीसाधा कौनसासुतकौनसीदिह
 नश्रवतीकौनसुमरती कौनसीक
 ० नसीकरती कौनसाहितककौन
 पा कौनसाश्रनहृवाजे बाजा
 नसागुदुदु कौनसाधागा कौनसुडेले
 वनतागा कौनसीतंगरीकौनसापथा
 नकमंडुतकौनसीडीवी ३ कौन
 सभोजनकरौवी कौनसाआसाकौ
 साबासा कौनपुरसकहांकरैतीवासा
 नसाआसनकौनसाछला ४ कौन
 मतित्रिअपरमभला कौनसाडिंरुके
 साऊंडा कौनकपाठकौनब्रह्मंडा के
 सीसेतीकौनसीसीजी ५ कौनपुरष
 नेछेहेरंगी कौनसीचकमककौ
 चुरा कौनसाकायरकौनसापुरा कौ
 नसीपथरीकौनसाकाफा कौनसरेसर

जांमगीराघा कौनसाकुतककौनसी
चुरी कौनपुरसबोलेनरहरी कौनडौ
राकौ नसातोरा ७ कौतआडबंध
कौनलपेटा कौनबावरीकौनअंगो
छा कौनसीडाडीकौनसीमुछा कौन
सापंजापुस्ता ८ कौनमंमत्ताराघोनु
स्ता कौनपाचडीकौनसीधुनी कौन
जगोटाबोलैसौनी कौनसाबेदकौत
कतेवां ए काकछुलेवाकाकछुदेव
कौनसीछुरीकौनसाभ्यांन कौनसब
दलेवेवोदिवांन कौततोवकौननगा
रा १० कौनपुरसबजाकेनहारा कौन
करतानकौनसहनाई कौनतफीरी
कहैनभाई येताजोकोईजांनै ताहे
गारषंनषांनै ११ ॥ कबीरउंजाच ॥ ये
पद ॥ कंअवधुसबदगहसुरतिहेचेना
रमतारांमजोरमैअकेना सिषहैसाघा
मुत्नहैदिचा सारअवना १२ सोहंगसुमर
नी ततहैतिकनामहचापा सबदही

अनहदवाजैवाजा गमहैगोददुअंग
हेधागा सहजसुईनेसीवेणनागा
१३ कायासीनेगरीसक्तोक्तसापंध्या
असकसंडजघुद्याडीवी शंणपुरस
भोजनकरैगोबी सुमसाआसासुमसा
बासा १४ अतषंनहांकरैनीवासा दि
जैहडंडा धरमहैऊदु चोदहकपाट
अकीसुब्रसंडा १५ सातकीसेलीसं
थोककीसीगा सतपुरसबोलेबहार
गी चित्तहैचकमकचोकाहैंचुरा रमे
सकायरनजैसपुरा १६ प्रेमकीपधरी
रुमकाकाफा नोतमसरेसरजांसगी
राधा क्रोधहैकुतकछम्माहैछरी सत
पुरसबोलेनहरी १७ डरदोराकोपकी
पीन तकडतोडाफकडुफैंटा अंम
डबंधमायातपेटा बरनबाबरीसरन
अं गोला
करहैकुबरीपंजापुसता
राधोउसता फ

जां सगी राघा कौन सा कुत क कौन सी
छुरी कौन पुर सबो लेन र हरी कौन डौ
रा कौ न सा तोरा ७ कौन आड बंध
कौन लपेटा कौन बावरी कौन अंगो
छा कौन सी डाडी कौन सी मुछा कौन
सापें जा पुस्ता ८ कौन मरं म तारा घोन
स्ता कौन पाच डी कौन सी धुनी कौन
जगोरा बोले मौनी कौन सा वेद कौन
कतेवां ए काक छुलेवा काक छु देवा
कौन सी छुरी कौन सा म्यान कौन सब
द ले वे वे दि वांन कौन तो ब कौन न गा
रा १० कौन पुर सब जा के न हारा कौन
करता ल कौन सह नाई कौन त फीरी
कहे न भाई ये ता जो कोई जा नै ता हे
गार घं व घां नै ११ ॥ कबीर उवाच ॥ दे
वर्ष ॥ के अ व धु सब द ग रू सुर ति है चे ल
र म तारां म जो र मै अ के ला सि घ है सा घ
मु त है दि च्छा सार अ व न १ सो हं ग सु म
नी त त है ति क नो म ह च्छा पा सब द ही

अनहदवाजैवाजा गमहैगोददुःख
हैधागा सहजसुईनेसीनएलागा
१२ कायासीनगरीसतलोकसापंछा
ब्रह्मकमंडलघुद्याडीबी प्राणपुरस
भोजनकरैगोबी सुमसाआसासुन्यसा
बासा १४ अतर्वेजहांकरैन बासा
जैहंडा धरमहैऊं दु चोदहकपात
अकीसुब्रह्मंडा १५ सातकीसेलीसं
थोककीसीगी सतपुरसबोलेबहार
गी चित्तहैचकमकचोकाहैंचुरा र
सकायरनजैसपुरा १६ प्रेमकीपद्य
रुमकाकाफा नोत्तमसरेसरजामग
राधा क्रोधहैकुतकछम्पाहैछरी स
पुरसबोलेनंदरी १७ डरदोराकोप
पीत तकडतोडाफकडफैंटा अंम
डबंधमायातपेटा बरनबावरीसर
अं गोछा दयासोडाहीमुक्तिसेछा
करहैकुछरीपंजापुसता ग्यानमैरम
गसेनमना फतेफावर्द

जां मगी राघा कौंन साकुतक कौंन सी
छुरी कौंन पुरस बोले नरहरी कौंन डौ
रा कौंन सा तोरा ७ कौंन आड बंध
कौंन लपेटा कौंन बावरी कौंन अंगो
छा कौंन सी डाडी कौंन सी मुछा कौंन
सापें जा पुस्ता ८ कौंन मरंम तारा घोन
स्ता कौंन पाच डी कौंन सी धुनी कौंन
जगोटा बोले मौनी कौंन सा वेद कौंन
कतेवां ए काक छुलेवा काक छुदेवा
कौंन सी छुरी कौंन सा म्यांन कौंन सब
दले वेवे दिवांन कौंन तोव कौंन नगा
रा १० कौंन पुरस बजा के न हारा कौंन
करता न कौंन सह नाई कौंन त फीरी
कहे न भाई येता जो कोई जो नै ताहे
गोरष बंधांनै ११ ॥ कबीर उवाच ॥ चै
परी ॥ ऊं अ ब धु सब द ग रू सुर ति हे चे ना
र म तारां म जो र मै अ के ना सि ध है सा धा
मु त्त है दि च्छा सा र अ व न १ सो हं ग सु म र
नी त त है ति क नो म ह च्छा पा सब द ही

गंगामी बिदेहंस० १४ जपोनामनि
 कोसदाईकवीर मिलैलोकवासाहरे
 कालपीरं अमैवासजाकोसोहैअंतर
 जोगी बिदेहंस० १५ हरेमलंमंताकरै
 हैअनंदा उबारैउबारैम्हाकालफांद
 अभीरंगं सोहैसतनामी कवीरंक
 वीरकवीरंतमामी १६ करीअरजदा
 सोनसुषनानदासा सुनौप्रभुमेरेकवी
 रधरमदासा कवीरंकृपालेम्हासुष
 धामी मोहंमोहंकवीरंतमामी १७
 कवीराष्टकंपसकैकहैसुषधामी लंदी
 चरफलंमहाप्रेमबांती पढंतंमुदं
 लेखैवेसुनावै कहैदीनदासोतिफंदा
 नआवै॥१८॥इतिश्रीकवीरसाहिबजो
 प्रथमोअष्टकसंपूर्ण॥१अथकवीरसा
 हिबकोद्वितीयेअष्टकलिष्यंते॥मोआ
 दिबलंअनूपंअनामं भईआपईछो
 रचेसर्वधामं नजानामकोउकरैकौन
 प्यालंनमोहनमोहंकवीरंकृपालं १

रघुरेतजो भर्मना लं नमो हं ॥ १५ ॥ स
दा दा सपै तो कृपा युं वि चारो ॥ पा कु व
द्युपै हृदै प्रीति धारो ॥ तजो स्वामी श्रे सो
सो हनिष्ठु मा लं ॥ नमो हं ॥ १६ ॥ क
बी राष्टकं जे सुनै वो सुनावै ॥ पढे प्रेम जु
ता सो मुक्ता कहावै ॥ धरै सत प्रीति करै
कंच मा लं ॥ नमो हं ॥ १७ ॥ बिनै दा स म
स जाद की चित दी जे ॥ प्र प्र भु दा स को
दा स तो मोहि की जे ॥ सदा दी न के तो ह
रे दुष जा लं ॥ नमो हं नमो हं कबीरं कृ
पा लं ॥ १८ ॥ इति श्री छित्तिये कबीर श्र
ष्टक संपूर्ण ॥ अंश ॥ १९ ॥ सब की गणती
३० ॥ २० ॥ अष्टक त्रतीये छित्तिये अंश
नमासी कलाती तको मादिर ही तं व
रिष्ट न सब रियां न बी जान महतं रं
कार मस्मि सदा काल धुन्यं र संते इति
रां मा जे दान भित्यं १ स्वयं सा श्रुतं के व
तं जे ये सरूपं ति जानं द मखितं मखं
डं सरूपं सुधा शृष्ट पुजं मिदं अर्कं ५

दं सद्योदित अर्बुदे सत्ते जात्रिंदं २ गुणं
निर्गुणं बर्णो अमरहितं स्थितप्रज्ञगु
ह्यं समचित्तसततं महदादिमेको गु
णान्तितनित्यं षष्ठं चतुष्टयशब्दा
द्विकं ३ षष्ठीतेज आकासतोयस
मीरं नचकिंचदांतरव्यापकं कवी
रं मनासंमनादिश्रुतीहंबदंति कवी
रादिशब्दंगिरानिगदंति ४ उद अस्ति
तीतंपरापारमीसं तुरियादिमेको स्फु
र्तवागीसं दया आदिदेधर्मसंपन्नज्ञा
नं लोभादिरागादित्तमनासभानं ५ म
वयंसमत्ते निर्गुणं निर्विकारं अनादिम
व्यक्तं गगनोपिकारं पक्ष्यानपक्षंतच
देशकालं नमामी कवीरंगिरासूत्रम
त्ते ६ ईदं जक्त सर्वसहाई ज्ञानं
मृगावारिपत्रपंभ्रसंप्रज्ञात्ते ७ भो
वरदयात्ते जनीतं दकारी मत्तं सबद
विश्वे चपोषं अघारी ८ बुद्धीमेकच
दानपादाविंदं नमोष्णीं नंदमेकार

चिंदं सदादासभूरंमुनेग्रेनकारु म
होरात्रपभ्रंजनात्वेममाहू ई त्वयादा
शदाशस्पपादावुरेत् सतांधन्यतस्यक
रोतीचपांनं कीयोवलकधीसंचतत्त्व
तज्ञानं मदासोहडुस्तरसुगोपदपराने
ए पादोदिकंक ० ० सुसुस्योनपाह्नं वि
नंभ्यापकंसास्वतंविश्वेसकाह्नं जिता
बादकासीसनिंदाप्रहारी प्रज्ञोत्समयोम
ध्रिजपादवारी १० महारोधघोरंनरेसा
नमीसा तोयंचवारिजबहनिदनीसा म
हाघोरमधिमतंगंमतंगंचधीसा मृगाधी
सपस्यंकरीशबूचीसा ११ महाभेचसुल
तानसिरजाबजाई कदमखाखकिव
लेखुदेत्वंषुदाई मुरसदमहरवोनसा
हबद्विगारं गुन्देगारबदाहतकसीरवा
रं १२ तुहीहंकमुरसिदमदफीलभंजा
तुहीरव्यआलंमनफरसोघगंजा तुही
गुफतगोयंम तुहीजिंदपीरं तुहीआ
फतावकरीमाकवीरं १३ बिनयेमेक

सततंचकरूनोनिधाने। सदासंग्यसंतो
चधेयचज्ञाने। रागस्यधिसंबंदीछोरंत
पामी। सदानंदरूपेकबीरं भजामी॥
५॥ इति श्री तृतीये अष्टकं पूर्णं
प्रथमं ॥ २० ॥ सबकी गणती ॥ ३१ ॥
अथ सबद पारखालि च्येते ॥ ३२ ॥
प्रई ॥ निसदिन अनहदसी गीवाजे सदा
रहेउन मुनिकै छाजे सुरतिसबदमैरहे
समाई कहै कबीरास्ततोन कहाई २
चहोतदीनाका सुताजाग्या घोलकपा
टनामसैनाग्या धनिसतगुरजिनराहच
ताई कहै कबीरसबबिपतिमिटाई २
घटमै भयानामकाहेला मुलगाद्यातब
घेनमघेना मोहसायाकीकाटीपासी
कहै कबीरमटीचौरासी ३ स्वामीसो
संसारसुन्यारा सोसाहिबकाकहीयेपा
रा आसातजिकररहेनरासा कहै कबी
रतबदेधैत्सासा ४ हाशुवीकरागतमै
कंथां निर्गुणहोयकरपकडैपंथां ज्ञां

नचराकीघटमेंजूपी कहैंकबीरसो
क्तिसरूपी ५ फाटाटुटाकंथापहरै
मनसाममताघटमेंघेरै म्माकीचौकी
सांनबडाई कहैंकबीरयहदेहनुवाई
६ मनराजाश्रगुणमेभीजै ज्युंवाली
घटीककुंधीजै निर्गुणसेनाजोसरही
कहैंकबीरवैकैसेतरही ७ फांसीली
याहाथमेंसाया ज्युंवाघाणवकराकुं
षाया पडाहियामिसावैरोई कहैंक
बीरअैसापुषहोई ८ मायाकाजोरा
हैयफंदा कोईकोईउबस्यायासेबंदा
स्वासउसासेसुमणसुंलागा कहैंकबी
रद्विषैसबभागा ए जैसैअपणीकी
याकुंडालना कोईकोईबंआद
जनटालना कहैंकबीरकुंडालना
मेले निभैहोययाजुगमेधेले १० यो
संसारकुंडालनामाही तासैअपणीधरध
रघाई कहैंकबीरकोईबाहिरआवे
ताकुंसायानहीसतावे ११ बेवारकरैअ

मैदीनसंबवीता कहैकबीरयु
रहायरीता १८ जागसताबीअब
क्यासोवै टालाटोलीमैदीनघोवै छी
दअनेकएककुंधावो कहैकबीर
निर्भैहोयजावो १९ बाकागटकोवै
गालीजै पिछानैहिमिमाणादीजै स
नमूषजं कैसोईसूरा कहैकबीरसा
हिबकापूरा २० सारशुबकाप्याल
ऊले निर्भैहोययाजुगमैघैले कहै
कबीरक्यासंसैकीजै नाम पीमाना
भरभरपीजै २१ आवपहरजोनाम
पूकारे घटकाबैरीचूनचूनमारै अ
गमपण्यकीराहबुहारै कहैकबीरन
हजमकैसारे २२ मूषसंबचनकहै
घारा हीहूत्तरकटोनसुंनारा नुजड
कीराहैलीजै कहैकबीरधधानही
घाई २३ घंटबादसुंनारासुना नि
दिनसाहेबसाहेबकैना कहैक
रसमुजकरदेघो आंतवस्तसुंनोहि

सुरतिमदु

खवलागी। मतकी दुबध्या लबही जा
गी। २५। साधी।।

जाय।

सबदपादका संपूर्ण
गएती।। ३१३५। अष्टौ

निके
अष्टौ

मत

इसनामरोगके बीचमै

बना।

तीमैदीनसंघवीता कहैंकवीरयुं
 रहगयासीता १८ जगसतावीश्रव
 क्यासेवे हाजाटोनीमेदीतघोवे छो
 इअनेकएककुंध्यावो कहैंकवीर
 निर्मैहोवजावो १९ वांकागहकौवे
 गातीजे पिछानैहिपिमोणांतीजे सु
 नमूधजं केसोउरुग कहैंकवीरसा
 हिलकापूरा २० सारशरुकाप्याल
 केने निरनैहोययाजुगमैधैले कहैं
 कवीरक्यासंसेकी जे ताम पीयालो
 तरतरपीजे २१ श्रावपहरजेताम
 प्रकारे घटकावैरीचूनचूनमारें श्र
 गमपद्यकीराहबुहारै कहैंकवीरनी
 हजमकेसारे २२ मूषसंघदनकहैं
 वाग हीइरक दोऊ संन्यार उजड
 कीराहैतीजे कहैंकवीरधधानही
 धाई २३ इंदवाइसंन्याररहना तित
 दिनसाहेबसाहेबके ना कहैंकवी
 रसंमुक करदेयो श्रानवस्तसंनोहिले

घोः २५। सुतमंडुलमैताली लागी। सुती
सुरतिमडु कदै जागी। कहै कबीरपीया
लव लागी। मतकी दुबध्या तबही भा
गी। २६। स्त्री। कबीरडोरी लागी
मरमत्या। नादरहा गरणये। सुरतिव
हागति होए रही। प्रघरप्रतन जाया। २७
जुतिआ। सवदपारु। संपूर्ण। प्र
२१। सबकी गणती। ३२३२। अष्ट
चित्त। सबही पलकमै हमफिरो। देव्या
है घृषपिछानिके। येक रोग गालित
पलकमै। हायो है जालिम आनिके
रा देव्या है घृषपिछानिके। येही अग्नि
घरघर जरे। इसनांमरोगके बीचमै। दे
वीसभी दुनियांमरे। २। देव्या है सुषना
नपिछानिके। दिलबीचमै म्यानांकी
या। इसनांमरोगके बीचमै। मृये है बुज
रक अलिया। ३। असी सहंश्र एक लय
इस रोगमै मरिमरिगये। कतमाद्येही
नाम अ पना। भिनभिन्न करिके धरि

कमें॥ बतषंडमें अदेषहैं॥ तहती क
करिदेषोसजन॥ यहरो गइतकै एक
है॥ १७॥ १८॥ श्री सीकी आसहैष तकमें
सुतिकै बमाईषुसहै॥ १९॥ श्री सीकी सुरा
तहै स्या लोकमें॥ देवतसनी बावृकहै
२०॥ नौनाथचौसीसिधफसे दताफ
सेइसरो गमें॥ अपतेतामकै वातै गो
रषफसेहै जोगमें॥ २१॥ सनकाटिकव
सिष्टव्यासजसविगाने अतिकहै॥
नकसेनहीइसरो गसे॥ बहोतेऊको
उतसहै॥ २२॥ ग्यानीहैसेकरषत्वकमें
इइकहीरोपीनही॥ २३॥ कहनेकैताई
कहो कथाकरु॥ इसगलीसैनिकस्थान
ही॥ २४॥ कुरांनवेदचै सांनो अष्टद
सब प्रांतिये॥ येसबनिसांनीनामकी
इतमेंनफामतिजांनिये॥ २५॥ काजीर
पंडितषत्वकमें॥ येइतमवेदबघांत
तेकरतेहकीमी सबनपै॥ अजराको
नहीजांनते॥ २६॥ कहतेसकतजग

रोमीया। पित्त इत्ना जसब का करै। तहती
 ककरि कै देखै नही। इसरोग मै हमही म
 रै। २६॥ इसरोग मै घर मै रहै। अरु जज
 म हो छादान दे। इसरोग मै सुनियै सजन
 घर छाडि कै बैराग लौ। २७॥ माता पि
 ता कौ छाडि कै। तर्क करै कुल कां सपे
 आठौं पहर मरता सजन। अपने गुरु के
 ना सपे। २८॥ इसरोग मै जपत पकरै। इसरो
 ग मै सीतै चढै। इसरोग मै मोनी रहै। इस
 रोग मै बिद्या पढै। २९॥ क्या कहु सुनिये
 सजन। इस घलक मै गफलत परी। दीद
 मरकम कौ तजि दीया। सुनिदपै तिश्चै क
 री। ३०॥ जिसरोग मै फसि फसि मरै। करते
 नही मासूल है। सुनिदपै काय मरहै। जा
 सै घलक मै नृति है। ३१॥ उमति अचर
 ज ओलिया। ये सब अकलिसै ही नहै।
 इसरोग मै मजफ सबै। इसरोग मै दोही न
 है। ३२॥ दिल सै दुई कै सै छटै। आसक
 कोई अिसै कहै। इसरोग कौ उवादे कै स

जन देषो दुई फिर कि तब है ३३ १ ता ^स
हमारा ये सजन उलफति निदारी ना
करै फांसी कटन की हम कहै मानै द
रद तो क्या करै ३४ मेरा सुषन है मह
रिका करि कौनै जरे पहि छां नितुं पुसी
तेरी है सजन मानि अगना मानितु
३५ इस ककारु समजि करि दिल सै सु
ज ^ज नदी बुझार मेरे मिलन का सोख
है इस रोग कौन जल डार ३६ धूबी स
भी कि मति लीये देषो सजन तु मध्यां न
धरि वे कि मति हो ना है तु जै सब धूबी
यौ पैतर क करि ३७ दो ज क भि सदि
त सै गिरी मौला गिरी सब गई मौला
जि सै कहती घलक आप है दी दम तु है
३८ जैत ॥ मेरे सुषन कौ सुनि सजन इस
रमज कौ पहि छां नितुये इस घलक कौ
अपनी घाब मैं ना जां नितुये १ मेरे सुषन
कौ सुनि सजन पर धोर मज कौ तोलिके
कौन तेरा कौन तू देषी चस मैं घो लिके

१॥ अजब हरचसमें दृष्ट कि कैं छौं कि कैं
 परबस्ती तहती ककरि देखो सजन ॥ ५ ॥
 हां कौन तेरा सोबती ॥ ३ ॥ आये हो संगी
 त कौन की ॥ रहना है संगति कौन की ॥ त
 हती ककरि कैं देखतु ॥ चलना है संगी
 त कौन की ॥ ४ ॥ आये तुम्ही रहते तुम्ही
 चलना है आपो आपसो ॥ इस धनकमें
 आये सजन रोते हो कि सके वासतै ॥ ५ ॥
 जो दोस्त होय आपनारो ना बुजै जरूर है
 नही दोस्त आपना तो रोवना क्या मंजूर
 है ॥ ६ ॥ कुंजा नतामैं कुं सियार कुं ॥ मां तत
 दि बमै सही ॥ तहती ककरि देखो सजन
 हौ सतेरी सबगई ॥ ७ ॥ इस बुकवे कौं आ
 पना जानता तु सोच है ॥ तहती ककरि
 कैं देखतु ॥ आ घर कैं ताई योषा घ है ॥ ८ ॥
 आसिष सुघन सम-ज्या नही ॥ जाहलौ
 मैं अटकते ॥ भूति अपनी आदिकौ ॥ द
 रदर फिर हो भटकते ॥ ९ ॥ कभी दुंढते
 महेज दमसी तमै ॥ कबहु कैं सके जाय

त

१. प्याश दो सँ मिलता नही। आवते हो
 तगं माय के ११. कभी डटते कुरांन
 मिनहन तक रोकिता बसौं धीर निक
 में आवसो तो सो जा मिले किता बसो १२
 करिके इजम की ता लवी पटिके इत
 म आनिम कु वार स नमिना मुदाय का
 आत्म कु वा तो क्या कु वा १२ तुम म
 टेहें इजम यत्न कमे रोसन करन को
 नाग दे इस्मा नी मै तु नि धे स जन पुदा
 य का क्या कां महे १३ रो जे नि वा जे तु
 म करो और न्र जां धो मा सी तमै तह
 ती क करि दे धो स जन अपने सरे के व
 चि मों १४ स्यार ग सैन जी क पुदा य के
 तुम सुरे ची बिबल नाव तो मु जि कों
 दे साहे स जन या न्र जां कि सें सु ना व
 ते १५ तु कि कों इजम सें इ वा
 नमं क जैसे धार कों अपनी ग जे
 वा सतौ फ स वते हो और कों १६ तु
 कों सें म हु वा जैसे न वं ग को रो

आबते उजाला देखे कै तुम गँजे
 आपनी १७ बंदगी की टट्टी करी
 सी करी कुरान की महर आइना
 तुजि कौ पराई ज्वांत की १८ मू
 में सोधी नहीं दि नरैने की
 तामुसा फर देयि कै चरचा
 की १९ मू ते होर ता भिस्त
 जकर ते तुम चलते किस मति
 बधी रते के अंदर हम मिले २०
 बही धनक भूली फिरै रता है व
 फेर का रता बतावै हम तुके जो
 ह्यात माने आस्का २१ करि कै मु
 द आपना तक दीर पै कायस की
 परि कै इलम के बन में नमीदा
 कह दीया २२ नष्ट छता है मुरीद
 कौ मुरसद मुके बतनाइये तौ
 जाहल कळे कु येँ इन कौ क्या सम
 जाइये २३ तसबी फेरै दस्त में अह
 जाम बंदगी करै पीया न दे ध्या मू

मौजतया ते अन्वरनकरै २४ दंड
नचनेके पीरको जरावते उपदेसमें
प्रवरतु जिकोहे नही पायावसे किस
देसमें २५ कंककहे न जीहे औरष
नकते नरपुरहे कबक कहते व
ससजन सुदायका धरहरहे २६ त
जीकहे तो कसपुकारते औरहरहे
कचरते बंदगी तुलारी सुनिसजन
म अंजोर तेजावनै २७ सांघहे जे
लजम का कारेइ कहहे दिलवीच
दरअना जेनावे नही दपोसरे के व
के २८ जिस जेसा म कच म
इक क्रीमी नही इरागली जे
सजम सांघहे तो लावुही २९
नही कनीकी वाउली
नही जेना जाहे लोकेशु
नहरत जेदयाकी वाकसु
केसेही लीकी जेनही सुनि
म सुवनसमके लही सायेना

ली २ सुप्रतही सुप्रि...
तजिदो... मेरे सुप्रतको सुप्रि...
मति होय जाल मपो...
दांता नही तैका मका की व...
आसिकों के तजिसुप्र...
मैकी गली ४ इस बा...
ले कुसियार होय देयो न...
परावीना सही जो सक...
गली ५ इक बीजत्र ना...
रोग जल सवर पस्या चौदे...
राज करि संतोष बित हो ज...
जिस सक के भस सका...
गालि वज्जवा जिसको दवा...
ली छे चार नो ५ धन कुवा...
रौकी दो... ती नली सम फिपे...
तीन काल सुप्र है नही मां...
मांति ये ८ अत लहक म...
तन गधार हना तथा सर्व व्या

व्यासमधिक। जातिमनसमकीय
 हसजा। जोनहीसमकेरमकंकुं। उस
 मैंतो कहना क्या रचा १० देवो सुषत
 सरमधेका। गफलतपडी समजान
 हो। देवैसुनी आतमपडी। सिरक
 व्याजककनही ११ जातेक्या मेदप
 द्वायका मयी अंगर चरकीतकी। सि
 २ रायातिनागर्ध। सिरमधेसेपवीतक
 १२ जैसे है मोती ओसका। होतादपे
 १३ नोहका। असा है रहना प्रलको
 करना गुरी क्यारचा १३

३२१२
 जीवनो
 सुजस जाग्रतको ए विवेकी।
 को ए सुद। अति चंचलको ए
 जरना को नो द्यतारको ए सतगुर
 रमे गहिये कही गारवाईका ता
 हा। अकम। गुरको ए तत्ववेता

ए कर्ता पुरस बुधिवान्कहा करै
 संजन्मसर्नमिते मोषिब्रह्मकोची
 ह्ना ग्यान जानिबोकहा सांधि
 पाधियैकहा मनपवन सुचिकौ
 डैसैसंजमी पिकतकौण सुत्रुमि
 समि बैरीकौण आतस अध
 ए क्रोध सुराकौण कामक्रोधजित
 अम्रतपीबोकहा हरिक
 था संतउपदेश रसनासुअम्रतपा
 बोकहा मिष्टवचन नृमलभावा
 हरिकथाज्ञान उपदेश गरवा
 ए निर्लोभी दालिडकौण अस
 षी चतुरकौण डिष्टिपदार्थसुचि
 नकरैसो सुषिकौण सुषडुषादि
 आत्मवितरेक जानैसोसुषी
 षीकण सुषडुषसीतउसनपुध्या
 साहरषसोगइनसुमित्या जाणैस
 धनकहा जोवन चंद्रमांसस
 लकहा संतजन नर्ककहा ग

बं

वास धनकहा पराधीन मुक्तिकौ
ए स्वाधीनः सुषकहा सत्संगत
संतकौण परनुपगारी मित्रकौण
जोपापकर्तारोयै बचनकीसोभा
कहा सत्तचैन बुरोकंण हरिचि
मुष तिरैकंण पुनवत चिंताक
हा स्वरूपजांतिवैकी जांतिबोक
हा संसारमिष्ट्या पूजियैकहा संत
दुलभकहा प्रीतनिभादिबो सुमरी
यकहा संसनांस तजियैकहा प
रश्रोणुण पापकोमूलकहा लोभ
व्याधिकोमूलकहा रस दीरघरोग
कहा जन्ममर्न उपाईकहा ग्यान
भक्तिवैराग दुषकोमूलकहा मूर
षसंधीत तीर्थकहा सत्संग सुभक
हा सबसंमित्रता धनकहा सद्वि
द्या मृत्युकहा श्रीजस करियैक
हा मनबसि पढीयैकहा भगवत
वचन सुनियैकहा हरिकथा जी

नयेकहा॥ लोभमोहा॥ मिनषदेहकी
 भाकहा॥ हरिभजना॥ मृतीकोफर
 कहा॥ बीछुडचे॥ तपकोनेकहा॥ ७५
 डीविषे॥ साधमित्याकहाहोया॥ बुधि
 निरमत्ता॥ बोवैकोण॥ मानबनाई॥ त
 रेकोणप्रमात्मा॥ १४॥ इतिश्रीप्रत
 नोत्तरीसुपूर्णा॥ ग्रथा॥ २३॥ सबकीप
 एती॥ ३२॥ २६॥ अथैपचीकरण
 लिखते॥ ऊंबलश्रमातीनमुक्त
 आत्मासुआकास आकाससुबा
 यु वायुसुतेज तेजसुजल जलसुप्र
 ष्ठी आकासरोएकभाग सबदबा
 युमैद्वयभाग वायुमैसबदसोआ
 कासरोभागजाएजे सपरससोबा
 यु तेजमैतीनभाग अग्निसुजलसु
 बदहोयसोआकास वंहीगरमत्ता
 गैसोवायु चमकैसोअगति जल
 सैचारभाग जलमैसबदहोयसो
 आकास वंहीगरमत्तागैसोवायु

रसजलको

चमके सो अगनि प्रथी मै सब
 द्रोपसो आकास वंही गरम नगे
 सो वायु हीने सो अगनि प्रथी मै
 दसोजन गंध नु गंध सो प्रथी आ
 कास सि स्कंज हिरदो वदर कं
 बर वायु प्रकृति पंच
 आवत पसाण संको चने वलन
 तेज प्रकृति पंच आत्सले प्रा
 द्यात्रपा कांल जल प्रकृति पंच
 विंडु प्रित्त प्रथी प्रकृ
 तं च हं म मांस उचानाडी हा
 पंच नाग आकास आकास
 धी क्षा गं तो आपरे रायी जे से त
 धी नागरी आर पांती कीवी कं
 वायु ने हीयो हरि वंते जनुदी
 उदर जल नुदीक कंबर प्रथी
 नी वायु आधी आर आपरे
 प्रोधामन आधी आर पांती
 कं नं जे मदीवी परसत

उच्छ्वेतो

द्यौः तैजसनुदीयो ज्वलने

संकोचनप्रथीनुदीयो

जभाग्नाधौ आपरैराधीयो घृष्ट्या

धी आधीभाग्नारांनुदी

दीयो निद्राआकासनुदीवी त्रिष

वुनुदीवी कतिजलनुदीवी अ

नस यौ जलभाग्नाधौ

रा बिंदुआपरैराधीयो

स्तीआकासनुदीवी ससेवायनु

पीततेजनुदीयो रक्तप्रथीनु

यो प्रथीभाग्नापरैराधीयो ह

आपरैराधीयो रोमआकासनुदी

नुचावायुनुदीवी नारुतेजनु

मांसजलनुदीयो अतहक

आकासरोसरूप श्रोत्रआका

सरूप सबद्धआकासरोसरूप

वाकआकासरोसरूप मन

सरूप नुचावाइरोसरूप पाणी

सरूप सपरसवाइरोसरूप

तते जरोसरूप नेनतेजरोसरूप पगते
जरोसरूप रूपतेजरोसरूप बुधज
नरोसरूप जिभ्याजजरोसरूप स्वा
दजजरोसरूपः त्रिंशः जजरोसरूप
पः नासकाः प्रचीरोसरूपः गंधप्र
चीरोसरूप अहंकारप्रचीरोसरूप
पः गुदाप्रचीरोसरूपः मृत्युः
देवता सतसंस्कृतो बिकल्प
चंद्रदेवता बुधितिश्रेष्ठे ७ प्रसादे
वीचतको सुकरता ईश्वरदेवता श्रे
हंकारग मरुददेवता सोत्रश्र
ध्यात्मसही सबदसोही अधभुत
प्रग हिंसादेवता येही त्रकुटीयेही
सुत सुतुचा अध्यात्मसही सपरस
हंश्रदभुत वायुसहीहे देवता येही
त्रकुटीयेही कृत नेत्र अध्यात्मसही
द्विष्टसही श्रदभुत भाणसहीहे दे
वता येही त्रकुटीयेही सुत जिभ्या
सहीहे देवता स्वादसही श्रदभुत व

श्रुति

रणसहीहैदेवता॥येहीत्रकुटीयेही
सुत॥घ्राणश्रद्धात्मसही॥शंखसही
श्रद्धासुत॥श्रुसनीकंवारहैदेवता
येहीत्रकुटीयेहीसुत॥इतिज्ञानइ
शीतिरनीये॥बाकश्रद्धात्मसहीब
कवादसहीश्रद्धासुत॥श्रुसहीहै
देवता॥येहीत्रकुटीयेहीसुत॥हस्तश्र
द्धात्मसही॥धरलेणश्रद्धासुत॥इ
सहीहैदेवता॥येहीत्रकुटीयेहीसुत
पगश्रद्धात्मसही॥गवतसहीश्रद्धा
सुत॥उपीइसहीहैदेवता॥येहीत्रकु
टीयेहीसुत॥तिगश्रद्धात्मसही॥भ
गसहीश्रद्धासुत॥परजापतहैदेवता
येहीत्रकुटीयेहीसुत॥गुदाश्रद्धात्म
सही॥मलसहीश्रद्धासुत॥जमसहीहै
देवता॥येहीत्रकुटीयेहीसुत॥इतिव
रसइशीतिरनीये॥मनश्रद्धात्मसही
संकलपसोश्रद्धासुत॥चंद्रसहीहैदे
वता॥एहीत्रकुटीयेहीसुत॥बुधश्र

तेजरोसरूप नेत्रतेजरोसरूप पग
तरोसरूप रूपतेजरोसरूप बुध
नरोसरूप जिभ्याज्जरोसरूप
ज्जलरोसरूपः त्रिंशः जलरोस
नः नासकाः प्रथीरोसरूपः गंधप्र
थीरोसरूप अहंकारप्रथीरोस
पः गुदाप्रथीरोसरूपः अमृतुके
देवता मनसां कलत्रिक
चंद्रदेवता बुधनिष्ठे अक्षर
वचिनकोसुमरणेश्वरदेवता अ
हंकारगार भद्रदेवता सोत्रअ
ध्यात्मसही सबदसोही अधभुत
प्राणदेवता येही त्रकुटी
सुत सुतुचा अध्यात्मसही सपरस
हअदभुत वायुसही हे देवता
त्रकुटी येही सुत नेत्र अध्यात्मसही
दृष्टसही अदभुत भाणसही
वता येही त्रकुटी येही सुत जि
सही हे देवता स्वादसही अदभुत

राणसहीहेदेवता॥येहीत्रकुटीयेही
 सुत॥घ्राणअध्यात्मसही॥शंभसही
 अटभुत॥असनीकंवारहेदेवता
 येहीत्रकुटीयेहीसुत॥इतिज्ञानइ
 षीतिरनीये॥बाकअध्यात्मसही
 कवादसहीअटभुत॥अग्नि
 देवता॥येहीत्रकुटीयेहीसुत॥हस्त
 अध्यात्मसही॥धरजणअटभुत
 सहीहेदेवता॥येहीत्रकुटीयेहीसुत
 पगअध्यात्मसही॥गवतसही
 सुत॥जम्बूइसहीहेदेवता॥येही
 टीयेहीसुत॥तिगाअध्यात्मसही॥
 गसहीअटभुत॥परजापतहेदे
 येहीत्रकुटीयेहीसुत॥शुदाअध्या
 सही॥मलसहीअटभुत॥जमसही
 देवता॥येहीत्रकुटीयेहीसुत॥इति
 रमइषीतिरनीये॥मनअध्यात्म
 संकलपतोअटभुत॥चंद्रसहीहे
 वता॥एहीत्रकुटीयेहीसुत॥बुध

ध्यात्मसही निश्चैहै अदभुत ब्रह्मा
 सही है देवता येही त्रकुटी येही सु
 त अहंकार अध्यात्मसही क्रम
 सो अदभुत रूप सही है देवता येही
 त्रकुटी येही सुत चित अध्यात्मस
 ही चितवन सो अदभुत ईश्वरस
 ही है देवता येही त्रकुटी येही सुता
 ॥ इति श्री पंचोक्तस्य पूरण ॥ ३
 ॥ २० ॥ अथ ॥ २४ ॥ सज्जकी गायत्री ॥
 ॥ २५ ॥ अथ लिखते कृतानां च
 नमैरहै कैतौ ग्रहमाही मों निरहै कै
 तरेगावे कैत बैठिरहै क कुं नाहि
 सोलै कैत बैठिना छांडिकै नुठि भावे
 कैत अन्नत जेपी वै छीरही कं कैत
 वान अमान गगनि छावे कबीरक
 है स्वबिबे कविनां कछु नाहि पारे
 तेरे हाथि आवै १ कैत सरहो वै जीत
 वं दीयों कौं कैत कायरहो कै हारि
 नावे कैत दान देवै कछु नाहि लेवै

तत्प्रतिमायापिकेंसनल्लवे के
गोपहोलेकहंनंहिजेवे केत
श्रीश्रुतिप्राविन्हावे कबीरकहै
विचेधबिना कछनाहिप्यारतरेहा
श्रिआवे २ केतराजकरेभवन
नकुका केतराजकेकाजकोत
जभागे केतनाहिपोषेतनत्रास
केतततपोयेवहूकरिरागे के
पासराषेकछसंचिहीके केतहो
यनिरासकोपीनत्यागे कबीरक
स्वबिबेधबिना कछनाहिप्यार
तरेहाश्रिलोगे ३ केतकासीब
सकरितततजे केतहारकाजाय
केदेहदोगे केतनामलेवैनहिने
हीसुं केतनामबिसारिकेध्यान
गे केतसोयरहैसुयनीदमाही के
नीदतजेआगेजामजागे कबीरक
हैस्वबिबेधबिना कछनाहि
रेहाश्रिलोगे ४ सुयसुयसहे

ध्यात्मसही निश्चैहे अदभुत ब्रह्मा
 सही है देवता येही त्रकुटी येही सु
 त अहंकार अध्यात्मसही कर्म
 सो अदभुत रूप सही है देवता येही
 त्रकुटी येही सुत चित अध्यात्मस
 ही चितवन सो अदभुत ईश्वरस
 ही है देवता येही त्रकुटी येही सुत
 ॥ इति श्रीपंचोक्तसप्तशतिका ॥ ३
 ॥ ० ॥ यथा ॥ २५ ॥ सबकी गराती ॥
 ३२५ ॥ अष्टो लिखते कृताना व
 नमैर है कैतौ ग्रहमाही मों निर है कै
 तदेर गावै कैत बैठिर है क कुं नाहि
 डौले कैत बैठिना छांडिके नुठि धावै
 कैत अन्नत जेपी वै छीर हीकं कैत
 प्रांत अपान गगनि छावै कबीर क
 है स्वविवेक बिना कछु ताहि पारे
 तेरे हाथि आवै १ कैत सूर होवै जीतै
 इंद्रियों कौ कैत कायर होवै हारि
 जावै कैत दान देवै कछु नाहि लेवै

तत्प्रतिमायापिकेंसनलावे कैत
गोपहोलेकहुनाहिजेवे कैतती
एअट्टिप्राविहावे कबीरकहेस्व
विवेधविना कछनाहिप्यारेतेहा
शिश्रावे २ कैतराजकरैभवनत
नकुका कैतराजकेकाजकौता
जभागे कैतनाहिपोषेतनत्रासदे
कैतततपोठैवहूकरैरागे कैत
पासराषेकछसंचिहीके कैतहो
यनिरासकोपीनत्यागे कबीरकहे
स्वविवेधविना कछनाहिप्यारे
तेरेहाशिल्लागे ३ कैतकासीब
सकरितनतजे कैतहारकाजाय
कैदेहदागे कैतनामलेवल्लिनेम
हीसुं कैतनामविसारिकेध्यानपा
गे कैतसोयरहेसुयनीदमाही कैत
नीदतजेआगेजामजागे कबीरक
हेस्वविवेधविना कछनाहिप्यारेते
रेहाशिल्लागे ४ दुयसुयसहेकछ

गोहिकहै सीतलरहैतजिकोपहै
ती नांतांनेषबनावृत्तिलकब्र
या कंठीमात्तागदडीटोपहैजी
अरेध्यानगुफामैबैविहीकै त्रिवि
कीयासबलोपहैजी कबीरक
रहनीग्यानबिनांबेकांमज्जफटी
तोबहैजी ५ जैसैघंटाबांधैसूरवि
नां नहीधेनकं होवैवोपहैजी जै
सैसूरहोवैनहीरणबिनां कटसेती
बांधैधोपहैजी तीरथवरतआच
रक्रिया सबअेसाहीयाटोपहैजी
नहीसाधहोवैबिबेकबिना कबी
रप्रगटनागोपहैजी ६ उपनमी
वैथैकनीरहीसां नहीफलहोवैउ
कसारहैजी घाटा।मीठाभिन्नतको
ई तीक्ष्णकोईकटुप्रारहैजी पठते
सबैवैकगुरसेती घटघटसुभाव
निन्यारहैजी कोईअरशीधमीका
ममोही कबीरकोईनिराधारहै

७ अजन देवे कौन जाही कौ
 गनी केने न विशाल है जी देवे
 ह् चिरता मोर पंथो सो है मा
 न है जी श्री प्रभु मै कौन सुगंध
 वै चाहे सब छित पा ल है जी देवे
 न बिबेध बिबेधियों कौ कबी
 स्वभाव का व्यात्व है जी ८ सूरों क
 न सिखावता है रण माहि असी क
 नां जी जुवती न कौन सिखाव
 संग स्वामी तन का जार नां जी
 सां कौ कौन सिखावता है नीर ह्
 कभिन्म बिचार ना जी कबीरयो
 न सिखावता है तत्त्व सु कौ तत्त्व
 धार नां जी ९ नही अप बिच
 बिबेध करै धोखे कौ सब ही ध्याव
 कही ये कौन सेती सब ये कही
 उस ही मै खिब जावने है बैकुं
 गा लोक की स। स कथा तन मे सब
 कौ सम जावने है कबीर कहै ह

हैं कौन बूके नागौर के डोलस
हाव न्ये है १० दो कुंटी न भू ले फि
रे ताहि फिर तागे उतही कं सब
जाव न्ये है करे आस जैसी कहै ग
र जैसी उहां से जाय नही फिर भू
व न्ये है निस दिन ग सना मही
कों मन मां हं करिके भाव न्ये है
कबीर कहै हं हैं कौन बूके नागौर
हर के डोलस हाव न्ये है ११ भांज
न होतै एक भूमि से जुं नांन रूप जु
दे जू दे गाईये है कं डी कर वाता स
ब प्या ना जो बूके ताहि बईये है
नांन रूप कं दे धिन ही भू लीये जी
सब ये कही भूमि तै भाईये है तै से
षांति आर्यों चिदा नंद मयी कब
र जैसी मे पाईये है १२ कहते हैं पट जं
तं त मयी पट माही ज्यंतं त लयाईये
है आडा सुधा तं त बि चार लीया
त ब पट का नाम न गाईये है जैसे नां

से

गया है रूप नही अज्ञान लेश बल
 ये है कबीर श्रेयों लये जानिके
 आत्म में जक्त न पाईये है १३
 एक के अंक अने कहावे मि
 भिन सबों का रूप है जी बेमात के
 संजमात लिये मिस सब हू मैं त रु
 जी मिस अंक जैसे जग ब्रह्म तैसे
 ल्यों प्रातिप्रत च्य श्ररूप है जी
 बीर बिबेध से जात लीजे ॥ इष्टि
 द सोई भर्म कंप है जी १४ बिबेध
 आरकी गमन ही अरु एक ही
 सब तावते है गुरु हं द के फंद में
 दरहा देयो कै सी क बात बनव
 तत मन बिधे में र मिर ह्या निरप
 न्यार सुष चावते है गुरु ज्ञान क
 बिचार कहै सो तो फो कट ज्ञा
 कहावते है १५ हिं हू प्रभात अ
 घनान करे माटी के महेश कुं पूज
 है सु सल मान फजर निवा जप दे

वेचमसीतमैगुंजताहैं बेदकते
बकीफेरडोंडी पंश्रबोलतेकान
हीबूफताहै कबीरकहैयहजक
अंधाहूया सतिमरुमनहीसऊ
ताहै १६ उरमहोवैजैसैजलसेती
फिरजलहीमांहिसमावतीहै जल
हीमेंवतीतकीलोलकरै जलबो
डिनहीकरुंजावतीहै जलबोडि
नहीकबूओरहोवै दिसदसहूमें
फिरआवतीहै कबीरकहैदेही
देपिलीजै देहीसौंदेहकहावती
है १७ जलकीतरंगतोजलहीहै
नीकैकरेदेघोनहीओरहैजी १८
जानासतरंगसोफेरनही कहेसं
नसबैसिरमाडहैजी तैमेंसबदेघो
चिदानंदहीमें चिदानंददेघोसब
ओरहैजी कबीरचिबेकसौंजी
नलीजै नांसरूपतोमनकीदार
जी १८ प्रवतनुचाइगघानर

ऐतोपाचुंइडीज्ञानहैजी वा
 पांनः पादउपस्तगुदा
 इपांचप्रधानहैजी मनबु
 चित्तः अहंकारः च्यास्यं
 नः अस्थानहैजी दसचारचो
 कोसाधीजो कवीरसोईनिरखो
 १७ सवृशापरशरूपरस
 ध विद्येज्ञानइडीकीजांनियेजी
 कल्पग्रहणगौनः अंनंदद्विस
 ईविद्येकर्ममानियेजी संकल्प
 श्रैः अनुसंधानगरभः अंतहक
 वषांनीयेजी कवीरकहैतब
 वै तबइतमैचित्ततः आनी
 २० प्रवणफीकेबिनासुने
 बिनांइष्टिष्टिगनकं जानीये
 साफीकीबिगंधजैसे बिना
 अधरवषांनीयेजी लंगोप
 केबिनांगतिजैसे बिनांनघ
 नापहेचांनीयेजी पटना

काकचीरतैसैं छिनहींमनोहरबां
नीयेजी २१ व्यंजनफीकेविना
लौंनजैसैं गिरवरफीकाविना
यांतिहैजी निसपतिफीकावि
तांनिसजैसैं सरसीफीकाविना
पानियेजी जुधफीकेविनासर
जैसैं विनारूपभूषनकौंजाति
येजी पडताफीकाकचीरतैसैं
छिनहींमनोहरबांणीहैजी २२
कुरंगकापणजुंनदसती चा
त्रगकाखानोतीरसैंजी दीपग
सैंपणपतंगकी चौहीराकाजैसैं
हारीसैंजी लागापनकंवलक
मांतसैंजुं सिमुकानिहारोच
रसैंजी पणआबसैंदेषोमीनक
जुंसतरासकात्युकचीरसैंजी
२३ साषी तेईसंतजनसुघडहै
जांनोमध्यजिहांन सारासारविच
रजे पनमध्यरात्रैजांन १ हरिय

जो

सारे लकरी मीना लिखारे नीर
जी मकरी जोरत कं त जि न
सुरा जोरत में धीर कं जी चंद्र
त्याग चकोर करे हंसा मान
वर तीर कं जी मकं ट मू जी
बुद्धो डि देवे तो सतरां मकं
कं जी २४ साष्टी ज्यो कुं रा
त जै चात्र क स्वां ती तीर
वकत जै पतंग जो तो सतरां म
कचीर २५ चात्र ग की यापन स्वां
जी उ सै चो डिन ही और चात्र
है कि यापन पतंग चिरा क मे
वारि फेरि कै तन कं दाह ते है
सुहाय न ही पन चो डिते नर दो
प्रकै पन को वाह ते है नालति न
सदी नर दे ही कं कचीर जि हां ति
यू क है तो है २५ साष्टी मीत च
कोर मरा लत मधु प सुहाये त जै त
तेह नर होय त जै कचीर जे ।

कैमकुडैवेह ३ पणछांडिच
 जगजीवनो तिसमरनाहीब
 रहकहेजी धरकधरगदे
 आत्मसारा इसजीवनमें
 चाषवहेजी मिटिजाइअसे
 नजीवनमें लगेआजजरो
 ननकहेजी मनछांडिगही
 तहाअदोरी कबीरसोईजगफ
 हैजी रहसायी जोपनगयो
 कहरहो कहैकबीसंसार
 कजीवचिनजीवनो अरुह
 धरकार धसाधसंगगुरसं
 मिलनित्यानित्यविचार व
 हैहितकबीरजे तासोपणउर
 धार ५ आत्मकी आचतेए
 कसीहै सतिपकरोकोईआनि
 कैजी अपनीबिरांनीनागतो
 जरिजेहोलीजोमानिकैजी को
 सनिबिगांतीआपनीक्यातजो

नसों

कबंधनजानिकेजी होजगा

ऊभोगीजावे कलीरकहेंबयं

कैजी २७ साषी सोईलियले

पतो सोईलधपरिहाटि कैं

घायेमरे सति कोई जोलो

टि टि बेरी लोहाकंचनकेरी

उयेकहीबंधनजातीयेजी नो

क्या आपनी पारकी है होने

कफहचानी येजी व्यागवही

तयेकहोवे होजगा दोउतक

मानीयेजी यातेहोयेउदासबंध

गलीजे कचौरजासुधकीपानि

हेजी २७ साषी सोईचंडीलो

की सोईकंचनजाति दुप्रदा

हैएकसी विदुजतकहेंचघाति

७ कोईवेविजतसंजतसंन

वे कोईपंचअरातिततखकाम

तहें कोईउरववा कुआकाम

नी कोईजावरुफातकम

ईहोयवाडेसुरी अर्धकाले कोई
तीरशबरतोंफस्तेहैं कबीरक
हैं आत्मप्राणविना एसबधोषे
मेंधस्तेहै २९ कोईमूलबांधे
करैसिध आत्म कोईप्राणअप्रा
नकंगहतेहैं कोईइंगलापिंगला
स्वरफेरै कोईनासाअगुहलहते
हैं कोईफेरदिष्टिदेधैत्रिकुटीमें
कोईअतहदमेंचकिरहतेहैं क
बीरकहैं आत्म प्राणविना धो
षकेनेहमेंब्रहतेहै ३० नरना
रकौछाडिनदासफिरै सोतोसंत
हमनसानारिमोगी अलषक
प्यासलेबिहभारी तनचीतरहै
जैसेपिंडुरोगी अर्धप्राणप्यारेकी
सुध्यनहीं भोजालककेबसिसंसा
रमोगी कबीरकहैकोईनाहिब
केवेतोमनकेजोरभएजोगी ३१
गुरप्रेमकाअंकपढायदीया त

बपटनैमैकचूनाहिवाकी बाव
 नचिरागजरावदीया पटथोति
 महलमैदेखजाकी चारिवेदतव
 तन्नासपासिचने स्वसंमवेदजप्र
 रन्नासनजाकी सततामवेन्तर
 कधीरभएसबफरासभएवदे
 नूरषाथी ३२ दीदारदेयोरोसन
 प्पारे गुलजारयेहीअरुनहीके
 ई दरगाहमैपीरमुकामसदा तु
 मसंजरहोछाडैदिलदोई आ
 पनाआपमैरूपतयो जीवजा
 निजमानिचेतनदोई ओजूद
 मोजूदकधीरबोले पहेचाति
 अवाजकायमसोई ३३ कोई
 ज्ञानकथैकोईध्यानधरै गुररु
 पनुचारिसुनावताहै कोइजाग
 करैकोईसोतिरहै अनहदअ
 लेषवतावताहै सुरकिनुरकि
 कैअतिपरै घटघटका नेदन

पावता है रहे जीवजुगति के संज्ञा दया
कायं सकबीरबतावता है उध
तयत्तबमोह डचांमकांजी दानं
पांतीका भोगात्तावता है मत्तनीर
ऊरे लोफुमां सबडे आप्रकं अंस
बहावता है नाद बिंद कैबी चिक
लोत्तकरै सोतो आत्माराम कह
तावता है अस्थान ये ही कहा दुं
ते हो दया दे सकबीरबताव है उध
संसार में शाध गुर सिष जेते मुख
राम कहै करै जप माला एक ना
महि को सब ध्यां न धरै पीवै जो
गजुक्ति सु प्रेम प्याला सब आप
ही आप्रकं मूल रहै भएतां मन्त्र
मल में मतवाला उसनां मकी
आदि श्रौ लै सोतो बांज का पूत
बेचन बाला उध घट घट में राम
का धाम है तुम डुं डते राम का धा
मक जी गुर पांन से तीष्वर दै

रनही बुकै देखता हूँ वे आरंभ हैं
 जी मजल मुकाम निहान कं जा
 कुंगे जांत ते नही दिल ज्यो न कं
 जी सत गुरु कबीर कं पी करे ।
 नस दिन रहो आरंभ सं जी ३७
 बंदी छोड साहिब कं या दि करे
 ही छोड जिहां न का ध्यावना जी
 आसारंग मौरंग मिलाये लीये आ
 सा फेर गुजर नही पावता जी पा
 च चोर का जोर हमें सें होवे देखो प
 लं मेघर मुशावता है कबीर कहै
 पछितावो जी देखो काच का
 बासन फूटता है ३८ तन मसीत
 मै मत मुला कर चित्त कै चोतरै
 बांग देवे इमान मसीत निर्वज
 म है हवा हक की तसबी हाथ ले
 वे कोइ सेवगता लंबदार होवे क
 फर काषोज घोवे अका
 ल करान कं पी जलेवे अलब

कायम कबीर विचारि कहै अगम मुकाम भंग म्प

श्री प्रबंग सकलमें व्यापिर ह्यु
त्ममध्यमलयेनकोई। ज्ञान सत
नकल्योनकरिधोवती। लोपतेपो
तनेत ह्यनकोई। सतक वीरगल
तोनगुर ज्ञानमें। बंदे आत्माची है
सोउत्पहीई। धपु। अहमकफकी
रकीजातिपूछे। अहमकसोजाति
बतावताहै। फकीरसंनेहकरै अ
हमक। अहमकसोनेहमिटावता
है। फकीरसै औरकहै अहमक।
अहमकसो औरकहलावताहै।
फकीरकी जाति अजातिहीहैनी
कै जानिक वीरजातावताहै। धई।
कोईकहैसिखलोककं जायहै। को
ईगणलोककाध्यानहैजी। कोईक
हैब्रह्मलोककं जायहै। कोईबै
कं वब्रह्मनिहैजी। कोईकहैसत
लोककं जायहै। कोईकहैसिख
मुकोमहैजी। कबीरकहैप्रतत्प

विना सब बात न के एक चीन है
 जी धृष्ट ब्रह्मा की आदि के बल
 है दादर संसांड मसानिये जी सी
 गारिष सो तो मिगनी जन की र
 ते व्यास व ध्यानिये है जी बालमी
 क की आदि तो बाबी है संकर पि
 ना को जे धिये जी कबीर क

ब्रह्म न सो कौन ब्रह्म
 चल गतो योजन
 पुदान ही हाधि
 कै तहां घर क
 कै बैचि जावे
 मोई जात न सु
 रि मुदा हासा

बलना क च
 धृष्ट गगनि में दोन चोगा

गक वे रहे दारफ की मंगतरह
 शुक के पाय के सत के ध्याय
 के शेष भगवंत की सरतरहता

सरनकेबीचमें आपसाहिवबसे
देषदीदारकछुनाहिकहनां क
हैंकबीरसंसारहैपेप्रतजी गुरु
देवकेसबुमेंगरकरहतो ५०
बंधनबुतबमुक्तहवा जबकौ
नतरै जाकौकनतारै श्रुहका
रतजैनिरवैरहोवै जबकौनमरै
जाकौकौनमारै मरनाजीवनाते
उसकहै जोआपकंआपबिसार
हारै चेतमहोवोउठिजाजदेवो
दयाहीपकजोतिकबीरमारै ५२
कोईजोगीहोवजोगसातेहै कोई
बैजतेजलमंजारहैजी कोईपंच
श्रुनिमानीउरधबाहु कोईती
रधचुरतिआचारहैजी कोईब
लचोरीडंमीवांनप्रस्त कोईरहै
तेहधआरहैजी कबीरबिसारके
आपहीकं सबनलीबयासिरभा
रहैजी ५२ तुमजांनतेहोहमको

नहेजी उमश्रुबहमकोपहिचान
 तेहो हसबिनाउमसंकोकहे दु
 हभेदकं तोउमजानतेहो तुमह
 समैरहोहमनुममैबसे अबम
 दकाहकं मानतेहो कबीरक
 हेहमउममैआनिके बेटिकेने
 दबमानतेहो पूरु सिमासाबादी
 कहेकर्मसही बिसेसबादीसमै
 कहतेहै बादीन्यायकहेकर्तार
 मानू पाताजलीजोगागहेतेहै सं
 धिवादीनित्यअनित्यगावै बेदांत
 बादीबुल्लनहतेहै कबीरकहे
 गुरेहुंदषट् निरहुंदसोईतजि
 रहतेहै पूध अघ्रापतिचीजको
 क्यात्यागो प्रापतितजैसोईत्या
 गीहै सररासितुरंगकं क्याफेरै क
 टतरफेरैसोईबागीहै जगभोग
 कागावनाक्यागावै अएभोगा
 गुरवकीवासना

सरनकेबीचमें आपसाहिवबसे
दृष्यदीवारकछुनाहिकहनां क
हैंकबीरसंसारहैंपेप्रतः गुरु
देवकेसबु मेंगरकरहतो प्र
बंधनबु तबमुक्तहवा जबको
नतरै जाकोकंततारै अहंका
रतजैनिरबैरहोवै जबकोतम
जाकंकौनमारै मरनाजीवता
उसकंहै जोआपकंआपबिसा
डारै चेतनहोवोउठिजाशदेवो
दयाशीपकजातिकबीरमारै प्र
कोईजोगीहोयजोगसातेहै के
बैजतेजलमंजारहैजी कोईप
अज्ञनिमोनीवरधबाहू को
रषचरतिआचारहैजी कोईव
सचोरीडंमीवांनप्रस्त कोई
तेहधआरहैजी कबीरबिस
आपहीकं सबतलीवयासिर
रहैजी पूर तुमजांनतेहोहम

है जी तारन मे जैसे चंद्र सौ है
 वन मे जैसे सिव है जी बेट क ले
 पिंडर चा कली रक्की क छनी
 व है जी ५८ तीर थ से लें सब
 नी है जी हो ले न ही क चु न्हा ये
 यो प्रित मा स क ल की ज ड है
 जो ले न ही बु न्हा ये दे यो पुरा
 करान स ब चा त है जी या घ ट
 प ड दा यो लि दे यो अन तो की
 दि क बी र क है ए स ब
 ट ह पो लि दे यो धु ण सू त
 स तो सू त है जी सू त अरु वं घ स
 को यं ला णा तो सू त
 त है क हौ जी दूस रा कि स त र हो यं
 सी का नां म फे रि कै व स थ स्या
 के क हें क्वा सू त यो यं इ त ना ही
 स व ज क्त् अ र बु ल्म में ज्यं त करि
 थि क वी रा यं दे धा त का पा त्र
 धा त है जी धा त अ

कोई है जी दे दे वह मोह भ्रम
का दे श दे ला बागे च रह ल से व
विधो व ते है भ्रम न ते मूर्ख होय
रुह त ज द भ वं नी रा वि लो व ते
है इ हा कि सी का क ख न ही धि
इ ता है पुं त्य आ प ना ही क ख षो
व ते है आ डि नि त्य अ नि त्य सं ला
गि रं ह उ नी अं त स मे व ही रा व ते
है ६७ न ह म न त वा व ता सब
हो कं स न कुं न वा व ता कोई है
जी ये न अ उ री आ प्रे म से ती पु
आं डि के अ न ता कोई है जी ज
त क कुं मो त ले जा व ती है त
आ प ते आ प ता कोई है जी स
आ प ते आ प ता कोई है जी उ
कुं न वा व ता कोई है जी ६८ व
वा ल की मो न कुं दे व ते हो व
आ प ना है न ही जा व ना है व
व से मो न का उ व ना है व रि

फेरिसमानता है ह्यं...
 कचुकरता है मैतें का...
 वना है दरियाव-श्रुषंड...
 उलीनही ओवना है नही...
 है द्रुप जैसे नौनकी...
 तहो सागरके आहकं...
 है उहां जायकें आवत...
 है आपने रंगमे राती है...
 रहे समकै नही वह...
 चारमें मांती है सागर...
 आह नही वह बी चही...
 वती है एव दुरद्वारि...
 हली जे इसराह करि सा...
 जी दुषसुषसूं न्यारा...
 निहिहं सिये वेलिये...
 वै मुक्ति की आसकै...
 किकंन पाईये जी अंत...
 यो जो वना है उली...
 ही जाईये जी एर घर

गुनैकीया हूंमैंकात्यागतांसा
रहेंजी घरबारकहोकहाकहता
हैं हूंमैंमैंमूर्खसुारहैजी हूंमैंकं
जोईत्यागिरह्या सोईत्यागतासा
रविचारहैजी अज्ञानीमतमें
सुषकहाउलीजानहीसुषतिव
सहैंजी पुर वरफकीपूतरीस
बेउली कैसाजोगकमायूरह्या
अज्ञानकेनीरकेदेषनेकंतन
उपरिजायकैआयुरह्या दानपु
मतपस्यायज्ञकरै दे वदेवतास
बेमनायुरह्या जिनजानकासर
जसंगिलीयाउलीआपमैंआ
पसमायुरह्या॥७३॥मंगनरहोनि
तिआपनेहात्ममें ओम्केघ्यात्त
सैचितनलावो लावोगेचितरहै
नहीहित बढैअनहितकेतोसंम
कावो तोहिकहाहमनीअरुबु
रीसं सुद्धिकलासंआपबचावो

जनसत्तरोगगहोएहध्वानो और
पायनहीसुखपावो॥७४॥अल
लबैतअल्लु यारोईसहदीस
तुमजाततेहो कलमापढाकु
नपढो पढिपढिकैधूबबधो
तेहो यारवैग्राघटबीचतेरे अ
यारसंयारीवांततेहो कबीर
हैदरबेसहोके अपनेबेसकं
हीपहिचानतेहो ७५ सुदीहो
बुदायकंयादिकरो पढोपाक
हिवकाफलतांजी केतेफल
हैकेहोफलिगारे ऐकरैनिकाहं
तापेषनाजी कारुद्विनजोसाउ
योसेती हमजेतेहजोसाजहां
तांथा सतगुरकबीरबिचा
कहै क्याकलरीसंगुडफोडुड
था ७६ जागिजागिसुहाग
चाहीयेरे येगंसगुरूनैबसा
दीया पीयांतागिबेरा

भाग्युलै दिविऽष्टिपुर्षे जे
पुचीन्हो घटघटसुंघटनिहारे
देखो आपसाहिवजहांबासकी
न्हो जाडिऽकहिऽकटकिमितो
यहकूलनां आपकबीरकीन्हो
७७ नांवकाषेलऽल्लेखहैरे ।
लषपावैसोईजांतताहै तनमत
कीमितताहरिकरै सोईपुंसु
प्रपावताहै कहैकबीरजुगत्
लिरहा मायासोहसंमूलगुमा
वताहै ७८ बंदतैघटऽकौ
नबोखै उसबोखताकंपहिचा
नप्यारे तुछाकधहांआयाकहं
जायगाकहांकहोजांतवाले च
कुचोरतैनूरवरप्रताहै येकबंद
कीजिंदजगतसारे तैघटघोर
असवारपवन। तुदेधिमैंदांतमें
चांतप्यारे दिनचारिचांतका
खेलनारे देखैकोंतजीतैदेखै

हारै देखै किसका चामच
 नाक घौरा देखै कौनमें दानमें
 हे मारे बाजी ८ श्रायु लगी सब
 जर कवा देखै कौनहि मति सं
 घडारे ज्मा लें प्राप कबीर
 वाजिलीया उसें जानता है जग
 रे एए लख लख जुना ननु
 बौर हक हक हीये में हक हैरे
 न्ह फे कु न्है निलाय कहे
 डिडु ट्या अहम घहेरे प्राप
 प्राप नू नायर ह्या यात नही में
 लब हैरे लो लाय कबीर कं
 यादिकरो दंम दम साहिब बर
 हैरे ८० कोई जोगी जंगम
 रे कोई सिरडी सिपती बकते
 कोई पीया के सागर धायना
 बाहिरिनि। तरित कते है को
 सोफी आत्म दंडे ते है को
 मन में बकते है

चिपारो हमतुसन्हीहोसकतेहै
८१ अज आत्माज्युंकात्यु उली
येमनअनेकसाहोयंरह्या चंता
चाहिमें सारवि सारदीया मतिही
नदेषोगतिप्रोयरह्या घृतहाप्रिया
केन्हीआईयाजी देषोनीरबिलो
परह्या सोबिचारबिनांकहांपा
ईयुजी अचिचारसंमुखहोयर
ह्या ८२ पापअरूपुष्पकेबीज
देई बिपानअगनिमेंडारियुजी
पांचचोरबिबेधसंखस्यकीये
बिचारनगरमेंमारियेजी चिदानं
दसागरमेंजायेउली मनचितदो
उलेडारियुजी जबअपकहाअ
रअरकेते भोजनकेपारउतारि
येजी ८३ देसदेसफिरेफिरिअ
केसातोषकादेसमेंसुषुपाया संते
प्रबिनाउलीसुषुकहो मनजहांत
हांयेहजायअया जितितिततहां

दंडलदयह सोनिचारदिलेधक
संगाय्या पंचप्रपंच अनित्यजो
न्यां चेतमसरूपसुचिन्ताया ८
ध सोई आपसं आपमे आपसुज्य
सोईसाधअगाधअथाहहेजी पा
पनपुत्पन आपजहो तहांपथनमे
जनराहहेजी न्हे तन्हेपंडअपा
रजहो तहांहेतनददकीचाहहे
जी नगीकतहरिहजुरिसदनली
पारनपारनथाहहेजी ८५ चिंता
चाहिकैहाथिबिकायरहा सोई
देधिसदासोताजहेजी चांडिनांज
कुंतुंमबीचारिदेधो भूसांहसने
कहाकाजहेजी उनीकाल्हिही
काल्हिकीजांनीयेजी हरिनजले
कादिनआजिहेजी साधसंगामेज
नसुधारितीजे कहेकहांकिसी
कीताजहेजी ८६ कोईरांमरही
मकरीमकहे अरहं

जेसा है हींदुरक जैनी जोपाद
रम्यानका एक परेषा है वेद क
तेव पुरांन कुरांन सखनका एक
बिबेसा है अमरकबीरके दीनद
यासससा परै मैनी लेया है ७७
दोउसुर चलै सोभावसेती नभ
सुउलटा आवैता है बिचिंडग
लापिगलातीनतारी सुषमंनिते
भोजनपावैता है पूरककरैकुंभ
कभरैरे चककस्यंकरिजावैता
है कायंनकबीरका ऊलनाजी
दयाभूतिपरैपिचितावता है ७
७ अणीदिलसहरिकुंदेपियजी
जौं दंसकाका अजबकीता आ
आबोलताथा आख्या चालताथा
दंसदंसजगायकैदंसलीता भाई
बंदकीदंसकी प्रीतिवोछी प्रांतव
लंतकायाकंडारिहीता अणीमन
कीदोद अमयारे कायागटस

नेहलीता दासकबीरबि
ज्यानेदंमराव्याजानैज

जोषिकै

भापारै सि

कीहिद्वैबिचधारे दीर्घशे

कौनहै श्रुतिऔरसं

श्राधधिकौनहै ता

जनसतरांमहैबुद्ध

बचारे ए० जाकेबस्यौरता

को तामतिधीरकोपार

विरक्तहोहुकीग्रहश्रम

नी

चहुंनुंचकौब्योरैतहीकोक जो

नजैजाकोनासैअंधेरा जनस

औरनि

बेरा ए० पाकजी

तिसजांन

कैहसाराकौनहोवै कसरतकरै

छप्रमेटनेकं सुषटंमकैसंगदी
 दाहोवै कोईचनकहैवेचनक
 है जीवजानिकै आपकं आप
 मोहै बुरैजेककबीरकीदया
 कैंहैतमैएककाएहोवै ए२
 जतिदीदरसुरतिऐहीनहीसुन
 तेइतरीओरजोती आपबिसा
 रकध्यांतधरै देखैजतिजंईसो
 तोमनमोती असलकंछोडिन
 कलगाहै करैनेमआचारअने
 कधोती कबीरकहैएकनाम
 बिनां पिंरुतभूलेषटिपटिपो
 ती ए३ सतनांमकबीरकाधं
 महैवे नाम अजनाममुकांम
 तेजैसहैजी जबरुतनांरुतमल
 कसनाहृत सेनाममुकांमते
 सहैजी ओलीयाअमीयागोस
 कतेबीया एहतोराहसबयेस
 हैजी कबीरकीराहपरकोई

ॐ सोईसांचा दरबेस है जी ए
४ दरबेस है इतकं सेट करे
जब रासीत उपरै वैचित राये व
रषत बंदगी कै जोर सेती वह प्र
पहता मुदा मचाये इस लोक
कै प्रेम कं होडि करे अजाब स
बाब दोनु नाये सतक वीर दया
की जो सांच सधुन हटे नाये
ए प्र सांच जाते जब सांच नहीत
जीये सब ऊंच जहां न बहाय दे
वै तन मन कं साबुत करे दिल
दार कै दिल कुं हाथ लेवे जांन सा
न जहां निरास करे प्रेम प्रीत ली
यां गुरगंम सवै उस दीन गरीब
की नाव कं सत गुर क वीर जो
आप वै वै
गाईये

कजी

बुगकागकीचालनितायकै
 सतनांससुनायकैहंसकीया
 धरमदासकबीरकंबुजनीया
 विषुष्टोमिअमरतअषायपी
 एणुअमरतअषायकैपजीये
 छोईजांनकैसबैरसमारदीजे
 पुरगाम्यतैनांसकंजपीयैरैप्रम
 प्रीतसदासंभारकीजेदरघो
 महलमैजाईयैरैअमरभयाजु
 गजुगजीजेपुरुषकैपगकंपर
 सिकैरैकबीरसंजायअसिष
 लीजेएणअसिषकबीरसंजा
 यमिलोतबकालजंजातसब
 दरभागेप्रमप्रीतहीयामैराधी
 रैसुरतिनिरतसंमनरागोपी
 संगसदाअनंदकरैबिधीयाकै
 संगमैजाहिराषेसाहिबकबीर
 दयाकरैजोसांचसुषनहरदम
 भाषेएणसतगुरकबीरवता

नरनारगंभीरजोहान
सरवीरसरीरमैषोजयके व
चंद्रस

सबदकी

गहोकोरपुरसु
कबीरकेचरनमेमा

१०० श्रीजीक्याबकनैक
कछलपलेच

कछनेहरानेहसां

बकबकथकेबु

बुफहारै कायंमकबीरकाफ

जी एहपीबछकेताकेपंथ

१०१ सतगुरकबीरसुप्रीत

गी बदनमामंजगतमेहायरहा

कछमातमुत्तकसुकोमनाही त

तमनतीश्रापनाषोयरहा भूना

लोकफिरै ईसश्रासकीकुंईसश्रा

सकीकादिनदोपरहा सतगुरक

बीरसुप्रीतलगी

शिवरात्रि १०२ संवत् के गठलंक
हता चक्रुं वारसमुद्रकानीरथा
जी जाके वीस नू जादससीस
हता कुं न करन साबीरथाजी
दुवृण सिंघासन बैठताथा जग
मग जडा न का सीरथाजी धरम
दान कहैं काल कै किदीय जां
निररक स का तीरथाजी १०३
करे बैशु सिक जादि साहिब कौ
तैरे जाग भले नर देह मीली हु
लतीन की सहिबी दोष प्यारे वा
ती एक पल क्रमें उठि चली गा
फिले गुमांत करे कतीहें तैरे स
रपर गा जता काल बली धरम
कस कहैं चेत चेत अंधे सतगुर
बतावते जात नली १०४ गांव
दघोडा गजरा जघमें नौ बत
सांत परावने की ने जा कौ जव
जी न कर किरहे रागरा कल

तगावनेका॥जाकेलावनेसु
 संगचढै॥भूपतिसबैमनभाबने
 धरसदासकहैजेतजेतअ
 कदीनअकहैहीजावनेका
 १०५।गढकीटषजालाधरेरहैंगे
 रहैगीघाईयातोबघाना॥सिखे
 सिपाईकाजोरनहीं॥लगाव
 नगौनहींकोकजातां॥कीयेकर्म
 संगचलै॥जमरायकेसंगलोज
 रजांतां॥धर्मदासकहैतेरीकौन
 चली॥कहैकितगयेरांवाणरां
 णा।१०६।मस्तकमुडायकेसाधकुवा
 रेकृयाकर्मआचारजूकी॥तीर
 थजावेप्रसादल्पावेकंठीमालासू
 रसारहैजी॥घरघरदेवेप्रजालेव
 काहूपेनहींकरतउधारहैजी॥क
 बीरकहैफिरगानकथेआवेनहीं
 धकारहैजी॥१०७।कंठीमालाप्रसा
 दकंवेचकेजीजोरिप

गोय रही ॥ १०२ ॥ रांवन के गढलेंक
इता चकुं वोर समुद्र कानी रथा
जी जाके बीस नू जादस सीस
हता कुं न करन साबी रथा जी
सुब्र ए सिंघासन बैठता था जग
मग जडाव का ही रथा जी धरम
दास कहैं काल कै कि दीया जं
नितर कसका तीर था जी १०३
करि बेझा सिक् यादिसा हिन को
तेरे भाग भले नर देह मीली सु
लतांत की सहि वी देषि प्यारे वो
भी एक पलक में उठि चली गा
फिल गुमांत क्ये कती है तेरे स
र पर गा जता काल बली धरम
दास कहैं चेत चेत अंधे सतगुर
बतावते बात नली १०४ गां व
ठघोडा गजरा जघ्र में नौ बतनि
सांत घरावने की नै जाफौ जव
बीच फरकि रहै रागरा काले

वत गाबनेका ॥ जीके लाज नसक
रसंग चढै ॥ भूपति सबै मन भाजने
का धरमदासक है चेत चेत अंध
एक दीन अरु कतै ही जावनेका
१०५ ॥ गढकोट बजाता धरेर हैगी
धरीर हैगी घाईयां तो बघांता ॥ सिले
पोस सिपाईका जोर नहीं ॥ लगाव
नगौत हीको कबांता ॥ कीये कर्म
तेरे संग चलै ॥ जमरायके संग तो ज
रुर जांता ॥ धर्मदासक है तेरी कौत
चली ॥ कसै कित गये रां वणरां
णा ॥ १०६ ॥ मस्तक मुडायके साधु वा
करे कृवा कर्म अचारजूकी ॥ तीर
धजावे प्रसाद ल्यावे कंठी माला सुं
दरसार है जी ॥ घर घर देवे पूजा लेवे
का हू पै नहीं करत उधार है जी ॥ क
बीर कहै फिर ग्यांन कथे आवै नहीं
धकार है जी ॥ १०७ ॥ कंठी माला प्रसा
द कंवे चकै जी जोरि पईसाना जकूं

ते है। घर घर में गुजरांन करे उस
गाडिजमा में देते है। महंगा होय
बसो लिबे चै गिण गिण देवे जुडे
केते है कबीर कहै फिर ग्यान क
येहम बाला ही पन के चेतै है। १०४
चुप चुप पर हो गई कर जा वो बडे करा
दमी हो करामात पाई चतुराई जा
हर फिन करो तेरी बोली में पहि चं
न पाई अंध अंध में जनम गुमावते
होगान ध्यान की भूलि अडग छाई
सत कबीर विचार कहें गंधी बोल
ता है जैसे भांग घाई १०५ में डीयां
मंड फछांडि देवै दुक बन में ऊं प
डा ब्यावट टीका रूप सिंगार जिन
कं चाही ये जी सो तो आसिक होय
लटी की। रुकास का टुक डाय
के जी का लासु हा करिषट पटी का
फकीरी राह कवनि उली पग धर
हैं निकै सैं हूध छु चीका ११० कं पाहे

काचीचांमकाजी॥जिसकेधीवडूंसबको
 ईयावतेहै॥चांमपकायचडसकीया॥
 जिसकेनीरकौंदोसलगावतेहै॥जरह
 कपीडाकंत्पागदेवैमोथमुसककूंयाव
 तें कबीरकहैयेभूलिभारी॥तजिसुद्धि
 न्त्रमुधकौंपावतेहै॥११॥कोइराभिजटा
 सिरयाथमेलेकोइओहिवागंमररहत
 नगाकोइगूहडीछपातिलकदीयागे
 लेकंठीकंवमुजहुंडदगा॥कोइकांन
 फडं॥यमुद्राजपहरैप्रेहसांनफिरेबि
 रहबिरोगपगा॥कबीरकहैंअपसोच
 यारोवायडंडफिरेमानोंभूतलगा॥
 ११२॥बांबीबंधेनगपूजनेतैसीवीसिब
 गमेंअटकेहैसीयासूनीबंधेरोजाक
 सेंरसबादीरसपरठटकेहै॥रांमं
 जपूजाआचारबंधेजैनीप्रतिमामु
 थपटकेहै॥कबीरकहैंसबकेदबादी
 वेकेदसोहीजिनऊटकेहै॥११३॥॥॥॥

२
०
अथ ग्रंथ मोक्षारण लिखते ॥ चोपदेश
धरमदास विनवैकर जोरी ॥ सतगुरु
सुनौ बीनती मोरी ॥ मोक्षारी के सी वि
ध्वष्टे ॥ जमबंधन के से करि टटे ॥
मोक्षी या ववार नही पारा ॥ तामें अट
क्या सब संसारा ॥ सोक्षी या वकं ए वि
धियावै ॥ पार पुरुष कौं के से पावै ॥
करूं न वातिके जोग कुमां ऊं ॥ देहूं
दांन के तीर धं ॥ ऊं ॥ करूं जग के
इंक्षी साधूं ॥ वरत करूं के हरि आरा
धूं ॥ ३ ॥ करूं अचार साधनां साधूं ॥ वा
हरि फि रूं के मन कं बांधूं ॥ जो तुम क
हो सो ही मैं करि हूं ॥ वचन तुम्हार हि
रदा मैं धरि हूं ॥ ४ ॥ मो सागर दुष मे हो
मोरा ॥ ट्टे जनम मरन का मोरा ॥ ससै
रहित करो मोहि खांमी ॥ तुम सब घट
मैं अंतर जांमी ॥ ५ ॥ सुनि धर्म हस मै स
तिवतां ऊं ॥ भवसागर को भर्म मिटां ऊं
ससै रहित सदा तुम हो ऊं ॥ तुमरी राह

रतसबजमकीफांसी॥ भक्तिवरत
मिलीयाश्रवितांसी॥ हरिआराधन
कीयावाता॥ कहंनेदतोहियात
नजाता॥ १३॥ हरहरनांमसदासि
वकेरा॥ तासंमिटेनभोकाफेरा॥ व
होतश्रीतिसूंसिवकंधावै॥ रिधि
सिधिप्रववहोतसोपावै॥ १४॥ मन
चित्तसंतहचैकरिधरिही॥ कैला
समेंसेवासाकरही॥ फिरकेका
लकपेटैश्रीनारिदेयभोसाग
रमांही॥ १५॥ तातैसंसैंबूटेनांही॥
भवसागरभैरमेंजीवजाई॥ सिव
साधनकीहेयागती॥ निरभैपद
नहींपावैरती॥ १६॥ जाकंसुमरैजो
गीजती॥ चौरासीनरमेंउतपती॥ ह
रहरकीयाकथासुणाई॥ आगेंश्री
रुनांकुंभाई॥ १७॥ साखी॥ सिवसा
धनकीयागती॥ सिवहेनोकारूप॥
दिनांसमकियाजगतसब॥ पस्या

कंसाशुचोपद्रवहरिहरिनां
 विष्मकाहोई। विष्मलिहमनायेस
 कोई। विष्महीकंकरलाठतलावे
 कहेजीवकेसेफलथावे। श्यासल
 मांहीविष्मबिराजे। मांणीबांणी
 विष्मनहींगाजे। सकलभोगविष्म
 लेही। भोगकरेजशभरमेदेही। २०
 हरिहरिनांमविष्मकांनान्या। सुभकर
 न्प्रभुभकरमदोरायाहनमेंकरे।
 लोलसहायीकरेभोगजीवननर
 माणी। २१। वहोतप्रीतिकरिविष्मको
 वे। सोजीवविष्मपुरीमेंश्रावे। वि
 पुरीमेंनिरमेंनांही। फिरिकारिदेने
 मांही। २२। हरिहरिनांमविष्मका
 षी। न्प्रवहरिकीसुनिश्रीकंसायी
 इसायी। हरिहरिनांमविष्मका
 न्प्रजीवकीयासबजेरचोरासीन
 , दामिटेनभवकाफेरा। २४। चो
 ईसुनिलेधरमदासतुमसाधू।

कवहीमहिआराधूहरीहरब्रह्मा
कोहैनांउंरजोगुनव्यापरह्योसब
गंकां२५जगतकहैब्रह्माहैक
रताभरममांहिसबहीवहमरता
ब्राह्मणकूं पूजेसंसार। सोजीवहो
यनभोसंसार। रहीपटिश्विद्या
जगभरमावै। भगतिपदारथह
धिनआवै। पोथीपाठकरैदिनरा
ती। एसबहीभर्मकीउतपाती२५
आपभरममैनिरनैनांही। बहेजा
तभरमकैमांही। ओराकूंरसिधाप
एदेही। तासूंमित्तैतपरमसनेही।
२६। वापपुंन्यकालेषाकरिही। वि
तांभगतिचौरासीपरिही। येब्रह्मा
कीहेकरतूती। ब्राह्मणपूजेहोय
नमुक्ती। ब्रह्मसाखी। सरगुनभगति
हैजगतकी। निरगुनलियेनकोय
सरगुननिरगुनदोमिते। नकिरह
तिघरहोय। २७। यात्रिगुनकीभक्ति

मूलो धर्मदासाइनके ऊपर

म. २

पद्मी धरमदास सुनिसंत सुजां नों नि
रगुनका अत्र कलं बजां नों निरगुन
नां मनिरंजन नाडी तानें सब जुत पति
वनां डी प्रथम निरगुन संनया ऊंकारा
तासौं तीनों गुन विसतारा निरगुन सैं
नयो मन प्रचंडा ताको वास सकल
ब्रह्मगा ॥ ३ ॥ ऊंकार मन व्याप निरं
जनानां विधिके कीये लंजना भांति
भांतिका घाट सवारा कहं लग्पवर
नूं वारन पारा ॥ ४ ॥ साके अंस सकल
श्रोतारा ॥ १ ॥ म ह्म तामें सिरदारा ॥ २ ॥
रण व्याप निरंजन होई तामें फेर फार
नहीं कोई रूप ॥ सरगुन निरगुन की क
रे सेवा ॥ भगति करै अरु पूजे देवा ॥
करै अचार विचार न जां नौ सो मेरे
मन क बून जां नौ ॥ ही मन बोधे मन म
हि समावे ॥ निज मन कूं कोई न ही ॥ ५ ॥

मन कों धोध करै जो को ई मन प हों
चावै पडुं चै सो ई ॥ ३७ ॥ जाय निरंज
न मां हि समावै ॥ आ गें ग मन का हू
पावै ॥ ऐ सैं ती न लोक सब भू टके
घरे स मां तें सब ही भ टके ॥ ३८ ॥ रि स
मुनि गें गं इ फ देवा ॥ सब मिलि क
रे निरंजन सेवा ॥ सिध साधिक साध
जो न ये ऊ ॥ इन के आगे को इत ग
ये ऊ ॥ ३९ ॥ ब होत प्रीति न कि वि आ
री ॥ मिलत त ॥ मिले अधिकारी ॥ जा
य निरंजन सं हो अ ने टा ॥ काल रू
प धरि करै समे टा ॥ ४० ॥ या ही निरंज
न के र प सारा ॥ ता में उर ज्या सब सं
सारा ॥ जहां तहां रा ये बिल न माई ॥ र
च नां अ नंत अ पार ब नाई ॥ ४१ ॥ धर
म दा स तु म न ग ति स ने ही ॥ इन में जि
न अ ट का वो दे ही ॥ जन म धर त हू
टें न ही नाई ॥ ता तें आ य क हों ग हों
राई ॥ ४२ ॥ गु प ति न कि जां ए न ही ॥

कोश्री सुरतिसनेही पावे सोश्री धरुवो
 हा इनसू नगती गुपतिहे धरमलि सुने
 सुजांना भगति करे नर भेनही। सोही
 भक्ति परवांना धधा चोपई। हे स्वांमी
 में नां हि न जांणी। गुपति भक्ति मोहि क
 हो वषांणी। तुमया भक्ति कहां संव्या
 नां सोही वात मोहि क हो सुजांनां धध
 तुमरी भगति कों ए विधि पावे। कों ए
 भांतिकी भक्ति कहां वे। कीजे नगति
 कों न प्रकार। ताके स्वांमी कहो विच
 रा। धर्ष भक्ति रसब जगत वषांनै। न
 जांनै। सोनि श्रेमो

हा। भोवारी भर्म दुष
 नक्ति क सं

इक है कव
 तल

तु...ते न... ७७... आदि त... तिव
तो गी के री ग श्री गुप्त न जुग में के री
जोग करे... न गति कु मा वे... अछि
एकनां मधुनि... वे... ३ उरते
रं कार, तासे उ... न सक... न सारा
रहे... धर ब्रह्म के नां ही... तां ए
न को = तां ए त नां ही... तां हे मेरी
ग... त्वारी ता कुं को जां ऐ संसारी ता
के जोग खरन... जीवकी
... बलावे... तिव सं... धिकन
... जां न... तां ति कुं को जां ऐ
... नो... न वतां वे ती न ले...
... वि... जाये... पूर... कर हमारी...
... न... = जोग वे बहोरि न ही अ
... ने धर सनिक... वरन अ ब
... न... न... चरनां सन व
... न... न... न... न... न... न...
... न... न... न... न... न... न...
... न... न... न... न... न... न...

केला ब्रह्मा होय होय यक
सकादि कसो नह चकरहे अ
रनिरंजन मांही निरंजन संवे न्यारेनां
ही। धर्मी मेरा तेद निरंजन पारा। ताके
अंसस कल श्रोतारा। यहां लाई कोइ
विरला जांने। श्रोगे कहौ कोइ एहि धिमां

भगति करै नर लो दीह
भगति न जांणो कोइ। भगति छने

। निरलै घर दू पावत
। ५७। भगति करै तब भगति कहा
भगति सूरहित न कोइ पावो। भगभु

भगके मां
ही। भगसं नारा कोइ नां ही। नारी जुग
तुमकं दिखता ही तहां सुरतिरहे
। भुगंते भगभ्ररु भग
फिरि रजौंणी संकट आवे
नकि जुक्ति को जांनां। ताका श्र
वागव ननि सांनां। ईश

सबहोई विना भगति सब जाय वि
गोई भगती नेदब होत हे भाई नि
रमल भगति नकारु पाई ॥ ६२ ॥ तुम
जो पूछी भगति प्रकारा ताको नेद
सुनौ अब न्यारा भगति होय नही ना
ने गाये भगति न होवै घंट बजाये
६३ ॥ भगति न होवै मूरति पूजा मूरति
पूजे कहा तो हि सूजा विमल रंग
वे शूरुरो वै छिनइ क प्रेम जनम
यो वै ॥ ६४ ॥ जैसे साहिब मानत नां ही
ये सब कान रूप की छां ही मन ही गा
वे मन ही रोवै मन ही जागे मन
वै ॥ ६५ ॥ जो लूं भीतरि लगन निला
तो लग सु रति कब नही जागे सति
साहिब की बबरिन पाई कौण की
भगति करो रे भाई ॥ ६६ ॥ जो रठिकां
एण जाणत नां ही ॥ ६७ ॥ ठही मग न रहे
मन मां ही कहन सुनन कौ भगति
कहावै भगति भाव सुपतै नही

वैर्षा प्रेमत्न गतिविन भगत्तेन
 संगति पावेन ही कोर्षा अपनांसा
 कौन ही जांनो ॥ विज देव्यां सब क
 षांनोर्षा त्रैसै भूलि पस्यो संसारा
 जत्न पारा सत्न गति कुंन ही
 त्रैसै है सब जीव अनागेर्षा धरम
 तुम हो बुधिवंता भगति करो सति
 वो संता ये क पुरष है अगम अ
 सब घट व्यापक सब संन्यारा ७० ॥ ता
 कंन ही जांनै संसारा जाकी भगति
 तसारा भगति करे उतरे मोपारा ॥ सु
 तिनिरति करि से वैसारा ७१ ॥ या वि
 गति पदार्थ पावे ॥ मुक्ति होय मोव हो
 रिन अथै ॥ मोसागर सं उतरे पारा ॥ फिर
 जंगन ही लेओतारा ७२ ॥ त्रैसी भ
 मुक्ति को दाता जाकी गति न ही लि
 विधाता भगति ही भगति ने द बहो
 या हे भक्ति सब न संन्यारी ७३ ॥
 हा भक्ति पदारथ अण सफलानु

रिरहिवासा पावे पूरण पुरसकं। ज
 नही लेओतार। ७४। जो पद्मिधस
 कहै सुनौ गुसाई। पूरण पुरषवसै किं
 ई कैसी विधसों सेवा कीजे। कैसै
 रणकं वलचित दीजे। ७५। कौण
 तिसाधूसो नगती। सतगुरमोहि
 तावो जुगती। सतगुरुवाच पहि
 प्रेमअगम जो आवै। साधरेषिसु
 मुखहोय ध्यावै। ७६। चरणधोय
 रणामृत लेवै। प्रीतिसहित संत
 नकंसैवै। अंतरछोडिकरैसिव

। याविधिभोकाडषमिटाई। ७७।
 जोसाधूप्रमगतिजोएँ। तासाधुकीसे
 ओएँ। प्रमपुरषकीभक्तिदिहावै
 तिनिरतिकरितहांपडुंवावै। ७
 । तासंप्रीतिकरोचितत्ताई। छांडो
 रमतिअरुचतुराई। तबहीपर
 षकौंपावै। भोतरिकैजगबहो
 रिनआवै। ७८। भोतिरणसंसान

ही तो ही जो छल होय तो जीवों के
किसी बात को संकल्प करने में किसी
भगति नह वै करि लिर ल्या ॥ ४ ॥ क्षर स
दस प्रवै चित ल्या जी संकल्प ले र मो
हि दे हो लिषा श्री निरगुन रहित लुसा
रा नो नो कैसे क्षर लिक रं ति हि वां उं
५ ॥ हे स्वां मीया न्न चर ज बा लान ग
तिकर न को दान न घाता सरगुण न
ति करे संसार ॥ निरगुण जो गे स्वर
आ धारा ॥ ६ ॥ न हो नू के पार ब तां य
तुम के सी बि धित हा मन ल्या या ॥ सति
बात मो हि क हो गु सां श्री के से सु र ति
लगा उ धा ई ॥ ७ ॥ सरगुन निरगुन पा
र न को ई मे रै मन ब ड से से हो श्री सत
गु र सं से दे हो नि वारी ॥ मे जां उं तु म री
ब लि हारी ॥ ८ ॥ निरगुन सरगुन मे द
ब ता वो ॥ ती सर न्पारा मो हि दि वा वो
मे रै मन प्रति या व त नां ही ॥ व हो त फि
कर उ प जी मन सां ह

मसमर्थसाईं छिटकरिपकरोमो
रीबांही सरबजुगतिदिषलाबो
मोही अंतरकछनराषोगोईं तु
महोसतिसतितुमबातामैंजाच
कतुमसमरथदाता देहोमोहिमैं
मांगूंसाईं सोही लिखावो मिटे दि
लदोईं ७७ दोहा सतसतसमर्थ
धनी सतकरो प्रकास सतलोक
पडंवायहो छूटे भोकीआस ७
७ नोपुई सुनिधरमनिसबक
हूं संदेसा तुमकोंहोयनभोका
ल्हेसा भोत्पारणसंमरथहेना
रा वाकंनही जाँऐ संसारा ७८ जो
गेस्वर जिही गतिनहीं पावै सिध
साधिककी कौंए चलावै भगति
दोयजगतमैं भारी धूपहनादस
दाअधिकारी एव और भगतिनहीं
इनसमकोई रामकृष्णप्रगटनहीं
गोईं दोनूं जनांदोयवरत साध्याए

क एक इष्ट आराध्या ए शक्तिजुग
 भगति करी धूरा जा नां च बर बर
 देह समाजा निक सं गृह सं ला हरि
 गय उ नार द के उ प दे स म ये उ ए द
 कु वै मांस प्र ग ट हरि आ य आ राज ही
 या वै कुं ट प ठा या सा टि ह जार बर स
 की या राजा राज हां डि वै कुं ह विरा जू
 ए श एक द्यो स फि रि प्र लै आ ई न हां
 सूं फि रि दे ह गि रा ई सां मी श्री मुक्ति ज
 ही नी पर म पर व ग ति तो हू न ची नी
 ए धा काल पुर स स व रा ये घे री अ म र
 पुर स ग ति जा म न हे री जे ले भ ग ति
 भ ये जु ग मां ही स त्प पुर व ग ति पा व
 त ना ही ए प्सा स र गु न भ ग ति करे या
 पा वै निर गु न मां ही नां हि स मां वै जो
 सा जो ज ही ग ति पू री दे व नि रं ज न ज
 यह जू री ए र्द जो ति स रू पी ता का नां
 उं च्चारि मुक्ति हे ता के वां उं सा लो की
 सां मी नी क ही सो रू पी सा जो जी त ही

ए७॥ चारि मुकति जाकें घर होई
ताको पारन पावै कोई॥ ताकें पैसो
रश्मिं नां॥ कैसी न गतिक हाक
हूं ग्यां नां॥ ए८॥ होह॥ धूकी गतिको
सो कहि॥ धरमदास सुजांन॥ अपर
म पारन पावही॥ पूरण पद निरबां
ए॥ ए॥ चोपई॥ सुनि धरम निदा
कथान न्यारी॥ बड़ी न गति प्रहला
द विचारी॥ हरनां कुसदां वन व
लकारा॥ ताकें घर लीनो॥ श्रोतार
१०॥ तपकें काज मये बन मांही॥
कोई बात की संसै नांही॥ प्रभवंत
होती तानारी॥ इंद्र अवाज सुणी अ
धिकारी॥ १०१॥ नन बांणी संसई अ
वाजा इंद्र सए को लेहराजा॥ हर
नां कुंस घर जनम धाराई॥ सो इंद्र
सए लेहै भाई॥ १०२॥ इंद्र कुंस संसै
उपजी भारी॥ ग्रमवास संदे हंडा
री॥ या सुल इंद्र की यो अ धकारी

अपणों देस लेगयो नारी ॥ १०३ ॥ तनलि
न नारद श्राये न तहां इंद्रससका जो
जहां इनको ग्रमन चीरो नारी नगलि
होय सबको सुख दाई ॥ १०४ ॥ नही मां
हि ग्यां न तहां ही नां नारदा ककामन
इकी नां डिठता ली न ग्रम के मां ही
बरषह जा रहते ते बांई ॥ १०५ ॥ फिरि नारी
अपने घर आई इंद्रको जीति हरनां
कुसपाई जहां जनमती नौ प्रहलाद
रां मरट नरसनाले सुवादा ॥ १०६ ॥ श्रे
सीरट न लग आई नारी तासमन गलिन
को अर्थकारी के तो कस ह्यो सि
र अपनो तो कुन दुख व्याप्यो सुपने
१०७ ॥ हरनां कुसके मन नै आई तेरो
रां म मोहि दे हो लताई ॥ अंत फारि ली
नो ओतारा ॥ निरसिंघ रूप तहां तव
रा ॥ १०८ ॥ फिरि कै इंद्रासत प कुंचाया
सरगुनां ति जोणि समजाया ॥ श्रे सावर
तरां मद्रट गहीया तो ली इंद्रासन सुं

प्रलहीया १०९ ॥ ज्ञेसे भगति भये ज
मांही ताकी गति तुम कूं सम जाई
इंद्र सण को राज सुणां उं महा भोग न
ले सुषपाउ ॥ ११० ॥ सतरि होय चौक
० जुगता बंधन मो का होय न मुक
ता बला लगति की कथा सुणाई
तो शेर क हूं तो हि नाई ॥ १११ ॥
इंद्र राज सुष भोग के ॥ किरि भ
वसागर मांही ॥ या सरगुन की भग
ति सं ॥ निरभे क ब हूं मांही ॥ ११२ ॥
चो परं धर मदा स हूं चित लाई
सत गुर सं सें दे हो मिटाई ॥ सरगुन
भगति मुक तिन ही होई ॥ हे ना ये
क है विंदोई ॥ ११३ ॥ या सं दे ह मिटा
वो मेरो ॥ तुम सं मरथ मे बं दा तेरा
को सरगुन को निरगुण क हीये ॥
नित्य चित्त मे द ता ल हीये ॥ ११४ ॥
सकल सिष्ट का हे सं भये न ॥ यह
निज जुगति न का हूं क हे उ जो मे

है या तुम शरीर सत्त्विक किंवा रजसु

ये लक्षण विचारी ११५ ॥ ये सत्त्विक
हो तो आया कौण ब्रह्म है कौण है ना
या शरीर छेडि तिरंतर भाष्यो ॥ जो स
नेदक चुन ही गयो ॥ ११६ ॥ भ्रमति ने
दक हो मोहें स्वांमी सुमद्य दमें न
जांमी जीव का जिन्ना दे जग सांही
श्रव मो कंक कु सं नैं नां हो ॥ ११७ ॥ सत
गुर में अधीन तुमारा तुम ही जो के
त्यार न हारा ॥ ११८ ॥ दोहा ॥ निरसं संप
दक हा है मोहि कहो समजाइ फिरि
जो मैं नर मूं नही लहारहें लोनाय ॥ १
१९ ॥ कहें सुनें सुख कु पजे जो मैं श्रवे
नां हि ॥ सो घर मोहि लिखा य हो का
र है सिर नाय ॥ १२० ॥ चोपई कहैं क
र सुणौ धर्म दासा ॥ श्रवनि जने क
प्रकास ॥ सुरतिलंगा य सुणौ मम
णी ॥ छांनि ले हो ज्यो जां नो पांणी ॥ १२१
सुष्ठम गति श्रति नारी कीणी ॥ सो ज

प्रलहीया १०५ ॥ अत्रे से भगति भये ज
गमांही ताकी गति तुम कूं सम जाई
इंद्रा सण को राज सुणां उं ॥ ह्य भोग न
ले सुष पाउ ॥ ११० ॥ सतरि होय चौक
डी जुगता बंधन भौ का होय न सुक
ता ॥ वना लगतिकी कथा सुणां ई
पूछो और कहूं तो हि नाई ॥ १११ ॥
इंद्रा राज सुष भोग्य कैं ॥ फिरि भ
वसागर मां हि ॥ या सरगुन की भग
ति सं ॥ निरभे क ब हु मां हि ॥ ११२ ॥
चौ पई धर मदा स वृ ह्ने चित लाई
सत गुर सं सै दे हो मि टाई ॥ सरगुन
भगति सुक ति न ही होई ॥ है ना ये
क हैं वि दोई ॥ ११३ ॥ या सं दे ह मि टा
बो मेरी ॥ तुम सं भर थ मैं बं दा तेरा
को सरगुन को निरगुण क ही ये ॥
निम सि न्त मे द ता ल ही ये ॥ ११४ ॥
सकल सिष्ट का हे सं भ ये उ ॥ यह
निज जुगति न का हु क हे उ ॥ जो मे

है या तु निरीसिक विनिनर

ये तुं गति विचारी ॥ ११५ ॥ ने संसार
हांसों आया कों ए ब्रह्म है कों ए है सा
या अंतर छे डि निरंतर भाषो ॥ सो
ने दक छु न ही राषो ॥ ११६ ॥ भगति ले
दक हो मोहि स्वांमी तु मघ ट में अत्र
जांमी जीव का जि आये जग मां ही
अव मो कें क छु सं सै नां ही ॥ ११७ ॥ स
गुर में आधी न तु मारा तु म ही भो के
त्पार न हारा ॥ ११८ ॥ दो हा ॥ निरसं
दक हो है मोहि कहो सम का इ फिर
तो में नर मूं न ही त हां र हो लो ला या ॥ १
१९ ॥ कहें सुने सुष कु प जे तो में आ
नां हि ॥ सो घर मोहि लि या य हो का
र है सिर नाय ॥ १२० ॥ चो प्र ई कहें क
र सु णों धर्म दा सा ॥ अब निज ने क
प्र का सा ॥ सुर तिल गा य सु णों म म
णी ॥ छां निले हो ज्यो जां नो पां णी ॥ १२
सु छ म गति अति नारी की णी ॥ सो ज

गनां हि न क ह ची नी आदि न सं
त न म धि न मा या उ त प ति प्र ले हे
ती न का या १२२ सु त्त सि ष र न ही
त त न मू ला का र न सु क्त म न ही अ
स धू ला आ दि ब्र ह्म ना ही ऊं का
रा न ही नि रं ज न न ही श्रो ता रा १२३
नो श्रो ता र न चो वि स रू पा पु न्य न
पा प न का रू था पा सु यं ब्र ह्म न ही
सो हं जा पा का ल अ का ल न आ
पूं आ पा १२४ न हि त व सु त्त सु
मे र न भा रा क र म से स नां ही आ
ता रा अ च्छि र एक न ही रं का रा
ति र गु न रू प न ही वि स ता रा १२५
सं ग ति न जु ग ति न आ दि भ वां नी
ये क न दो य न ज्ञां न अ र्पां नी जा
प न था प न अ ज पा को षी आ द न
सु वा ल क कृ न ही हो षी १२६ अ क
थ क था वि प्री ति व षां नी सु नि ध
र म दा स त्त नै म श्र णां नी न ही त व

क

नां धरमदास कहें सुनौं गुसांई। इन ब
सन बनवे की नांहीं। १२६। कीया उ
दास येक सब गोर। तुम ह ते के कोई
शोरा सति सति सति मोहि कह्यो।
संसे रहित सोई पद लहीये। १२७। उ
चा करि पूछौं स्वामी। साध संत तुम
प गुसांई। कहें कबीर सुनौं धर्म दास
सकल नेह मैं कीया प्रकासा। १२८।
जो प्रतीत होय जीव ते रौ। नो कूं मेदि
रण रहें मे रौ। धरमदास चांको सब मा
अस्थिर अमर अषंडित काया। १२९।
नक्ति मुक्ति उपजी है जासु। प्रेम ल
निलगावो जासौ। अब मैं तो हिल
उं जागा। बूटे जनम मरन का धागा। १
२। जनम मरन है अति दुष मारी। ता
संतो तो हिले कं उ बारी। मैं प्रापे कै

था पूनां ही देविले हो तुम वा हरि मं
ही १३३ दोहा ॥ अब तो हिन्दे बत
उं निरमल गोर निम्पार सब के परै
सबन के ऊपरित हां है ये कंकार
१३४ दोहा ॥ पुरुष कहौ तो पुरुष
कृनां ही ॥ पुरुष नया आया भौ मां ही
सबद कहू तो सबद कृनां ही ॥ सब
द होय माया की छां ही ॥ १३५ दो वि
न होय न अधर अधर वाजा कहौ क
हाये गाज अधर गाजा ॥ मरत सागर
वारन पारा ॥ नां जां नौं के तो विस ता
रा ॥ १३६ ॥ तामें अधर भवन इक गा
ज अधर हनां म अधर इक लागा
नां म कहू तो नां म न जा का ध स्थानो
म काल है ता का ॥ १३७ ॥ हे अधर नां म
अधर के मां ही ॥ न ह अधर को जां
णत ना ही ॥ धर म दासत हां वा सह
मारा ॥ काल अधर काल वार ही मारा
१३८ ॥ ता की न गति करै जो कोई ॥

मोसंख्येदेजनमनहोई।१३॥ दोहा
मोसागरजरमें नहीयाप्रतीतिहमारा।
नहश्चैकरिकेंमांतीयों।तुरतउतारुं पा
रा।१४०॥ चोपई॥ हेस्वामीयेअकथक
हांनी।अगोसुणीनकाहूजांनी।जो
गेखरनहीपावैपारामैंकहाजांनो
जीवविचारा।१४१॥ अचरजगतितु
ममोहिबताईताकीगतिकाहूनहीं
पाई।ताकीभगतिकरूंकोणभांती।।
रूपसरूपनपूजापांती।१४२॥ कोणजु
गतिसंभगतिकरीजे।अगमवोरकैसे
करिलीजे।तुमजांणोंमोकंलेजावो।।
तनमनछांडिदेहसुयपावो।१४३॥ अ
वकचुमोहिसुहावतनांहीं।सुरतिस
मायगई।तुमसांहीं।यहांवहांतुमस
मर्थदाता।मोकंजांतेपरीयावाता
१४४।नामंकबीरधस्योसोकाहे।क
हाकारणदेहधरिआये।सतकवी
रनांममैंजांण।सोनोमैंक्यूकी।१५॥

दोसहेभाई धरमरायरायेअटकाई
गुपतमसाराहेअतिभारी ताहिनजं
नैनरअरुनारी १५६ सिवगोरषसेपा
रनपावे औरजीवकीकौणचलावे
नोनाथचौरासीसिधा समअिबिनांजु
गमैरहेअंधा १५७ रिषीमुनीअसं
षनभेषा सतिवोरसुपनैनही देषा
जोकहंतोपतीयावतनांही बहो
तकहंसमजायमनमांही १६० को
ईजोगजुगतिमधमाता कोईकहैह
मलिष्याविधाता कोईमुनिदिसाम
नल्याया मूनीहोयकैमूलगुमाया
१६१ सतिपुरषकीजुगतिनपावा हि
रदैधरैनसतिकोभावा कोईकहैह
महेभजनीका काजअकाजलिये
नहींजीवका १६२ कोईकहैहमप
डेपुरांनं ततअततसबेकलुजंनं
कोईकहैबिद्यापरवीनां सकलबि
अरिकीयाहमचीनां १६३ कोईक

हसतप्रवसिराया। तपहेमूलकोर
 बसाया। कोईकरमकूंकहेअप्रिक
 करमही। सुउतहेंगेषारा। १६४। को
 कहेभगलिष्यासोहोश्री। सागलिष्या
 मैटनही। कोश्री। कहलंलूंकककंयाही
 सबकही। नेदहंमाराकोइनलही॥
 १६५। सबसंहारिमांनिहमबेला। येस
 वजीवकालघरपेला। १६६। दोहा॥
 सोहीकालसोहीहृता। नगलिमुक्ति
 ताहाथि। मेरोकहोनमानेंपरपंची
 बरसाथ। १६७। निरंजनहैनिरबांण
 पदकहतबडेबुधिवंता। जोगीजती
 तपीसिंहासीकोइनषाबेअंत। १६
 सातसुंन्यमैरभिरह्या। सुरलिसात
 साथि। त्रैसीअगमअपारगति।

नाथा १६८। चोपडी।

सुंनकासंकल्पसारा।

कोइनन्यारासातसुं
 बतांउतामैग्यानसक

उतपनिपरत्तैयाकैमांही॥यागतिसं
कोइम्पारोनांही॥प्रथमञ्जमीसुरति
निजठोरा॥तहांतिरंजनकीनौदोरा॥१७
१॥वहांजायञ्जमीलेआया॥तासंञ्ज
रबीजउपजाया॥सोहीबीजरक्तमै
धरिया॥ऐसीविधिसंउतपनिकरि
या॥१७२॥बीजहीजलकारंगकहा
या॥तासंरचीसकलकीकाया॥इ
जीमूलसुरतिसंगा॥घटघटमांहि
बणावैरंगा॥१७३॥तीजीचुंमकसुरति
अपारा॥नौनारीमैकीयापसारा॥को
मतहांवहतरकरही॥रूंमरूंमजुग
तिसबधरही॥१७४॥चौथीसुंन्यसुर
तिहैंभाई॥धरमदासमैतोहिलिमा
ई॥पांचमीसुरतिअवणकेवांई॥वि
गरीफिरैजहांकीतहांई॥१७५॥छ
वहीसुरतिविकानांभाषूं॥वांमवां
खादतहांचांषूं॥सोतोरेहैकंवके
द्वारा॥बांणीभाषैकरैउचारा

को इन जां ऐंता काम मी ॥ ज्ञानी ध्यानी
 सब ही भर्मा ॥ सात सुरतिका कल्यादि
 चारा ॥ धरमदास कबुवार नपारा ॥ १५
 ॥ सात कंवलका भेद बतां जं ॥ कंवल
 लक्ष्मी जु गतिलि ध्यां जं ॥ मूल कंवल
 है मूल दुवारा ॥ चारि पांषरी का वि
 सातारा ॥ १५ ॥ तहां विनायक देव
 विराजा ॥ चारि पांषरी कंवल अस
 हाजा ॥ ताऊ परिकंवल है हजा ॥ ष
 टदल में ब्रह्मा की पूजा ॥ १६ ॥ तीजा
 कंवल पांषरी आठा ॥ ना नी मां हि ना
 लिसो सावा ॥ चोथा कंवल हिरदै अस
 ध्यानां ॥ लक्ष्मी सहित बसें भगवांतां
 १६ ॥ पांचवां कंवल ठिकां नां भाषीं
 कंवल द्वारसिव सक्ती रायूं ॥ छठवां कंवल
 वक्रुटी तीरा ॥ दोदल मां हि बसे दोबीरा

१८२ चंद्रसर प्रकासाघटका ये सब
व्यालनिरंजननटका सातवां कंकन
ब्रह्मां फके मां हीं तहांनिरंजनहसरनं
हीं १८३ सातकंवलका कदाठिकां
नां धरमदासबड भागी जां नां १८४
दोहा सातकंवलरुसातसुंम सा
तसुरतिअसथां नां अकी सब्रह्मां
डलगा अापनिरंजनग्यां नां १८५
चकवराजनिरंजनां वां वगं व नर
पूरि रसातलब्रह्मां फलगा कं न्नि
कटक कुं हरि १८६ चो पई सुनिध
रमनिसबजुगतिवषां रंगी तुमअप
नेदिलमैकबुजांणी अदिअंतसब
तोहिलियाई उतपतिप्रत्नेकी गति
पाई १८७ उतपतिप्रत्नेसिरजन
हारा मेरा मेदनिरंजनपारा जा
संजगतनका हूमां नां जासं तोहि
कहौं मैग्यां नां १८८ जोकोइमां नैक
ह्याहमारा सोही हंसनिजहोयहमा

रा॥ अमरक रूफिरि सरन न होई। ला
 को घूटन पकरे कोई। १८७॥ फिदि
 के नही जनमै जगमांही। काल न
 काल तहां दुषनांही। सुख सागर सु
 षमूलन बतार्ई। बड भागी हंसा कोई
 पार्ई। १८८॥ अंकरी जीव होय ह
 रा सो नो सागर संहें न्यारा। प्रेम प्रीति
 करे मन लार्ई। ता कंया पद दे कुं ली
 पार्ई। १८९॥ सुरति वंत सांचा जीव
 होई। सरनितु म्हारी गहें सोई। १९०॥
 दोहा प्रथम दिठ प्रतीति होय होय
 जगति अंकरी। भाव प्रीति सेवा क
 रे देहोपान भर पूरा। १९१॥ चौपई।
 अहो स्वामी मै कंची जां। अदि अंत
 की सब सुधिली न्हां। तुमही वार तुम
 ही हो पारा। तुमही संहें पज्या संसारा
 १९२॥ तुम हो सकल जगत संहें न्यारा।
 तुमही हो निज पैली पारा। उपत प्रग
 टहम सब विधि जां नां। तुमही हो ज

हं पद निरजांतां शब्ध ज्येसी ज्ञम
गमतहांनांही में रूपने वृजी मन
मांही प्रणदया करी तुमसाई मे
रे मन कहु संसे नांही शब्द मोत्सा
रण तुमहंसनु वारण धरु धरु दो
ऊके धारण संमरद्य सब गति पाई
तेरी श्रव सब संसे नागी मेरी शब्
पु नये तुनाथ तुम्हारे ज्ञायों मा
या छटि पर पद पायां बुद्धा का
ल निरंजन मोरा जनम मरन का
दृष्टा मोरा शब्द श्रव में मो सं ब
हो रिन ज्ञां तुं तुम्हारे चरण कं वल
चिंतनां तुं येती गुगति न का रूपा
ई सो साहिब तुम मोहि सुनाई शब्द
जां निपरी तुमरी मोहि वता तुमस
मां सु शेर नही दता चौरा सी लो
की नां मारा बसा रिन जनम न हो व
मारा २०० सम कि बूकि करि हं सि
व फाई छोड़ी कुल की ताज बडा

रद तो रि दी या छि न मां ही ज ग में को
 क ह को तां ही ॥ २० ॥ शं कर पणों ॥ स्वार थ
 प्राये ॥ पर मार थ क ज कु छि र ले पा ये
 ये सब ज ग त नि रं ज न मा या प्रां च
 ती न सं सब उ प ज्ञा ॥ २० ॥ प्रां च
 त त ती नूं गु न भा री ॥ इ त सं सु ग ति दि
 या ई न्या री ॥ प्रां णी प ज न ज सी न्या का
 सा ॥ सब मै ते ज की द्या पर का सा ॥ २० ॥
 राज स सां ति क लां म स जां नां ब्र ह्मा
 वि ह्न म हे सब कां णां ॥ २० ॥ धा हो हा ॥
 पां च ती न परै नि रं ज ना ये मा या का
 वा वां ता सं सब र च नां करी भां ति
 नां ति का चा टा ॥ २० ॥ चो प ई ॥ क हे क
 वी र सु नो ध र्म दा सा ॥ सक ल ने द मै क
 या प्र का सा तो सं न्द्र त्र क ह्न रा या
 जो क बु ह्ना सो सब भा या ॥ २० ॥ ही ॥
 न्द्र व तु म भ ग ति क रो डि ट ता ई ॥ वी
 डि दे हो कु ल ना ज व मा ई ॥ १ ॥ कु
 ल म र जा दा यो वै भो सं र

को कहैं। सिवविरंचनहीं जांति। गु
रसतगुरकंचीन्हकैं। पङ्कचैपदनि
रवांन। २१४ चोषई॥ धरमदाससु
णि जुगतिवतां जों। चोकाश्ररती
तुमकंलियां जों। अग्रचंद्रणकाचे
कादीजे। जोतिवरायश्ररतीकीजे
२१५। पांचततपांचहेवांती॥ बाह
रिनीतरिजोतिसमाती। मांणिक
दीपककाजुजियारा। एकवातसूज
गविसतारा। २१६। सेतहीनरियर
सेतसुपारी। सेतपांनिलेहोसुषभा
री। सेतमिठाईसेतद्वारा। याविध
चोकाकरोविसता। २१७। मेवांक
कपूरमगावो। कदलीदलसोनीले
श्रावो। पहोपफूलसुगंधसवारो।
भांतिश्विंजनश्रनुंसारो। २१८। तन
मंनधनसबश्ररणकीजे। प्रेमस
हितश्रैसोसुषलीजे। पांचततकैं
नोजनदीजे। ब्रह्मश्रात्माकूं त्रपति

१ २१७ का काम को सुप्रबेह
सुप्रकरिकें मिले बिदेही मिले
रह देह कि रनांही नूक ले हो जा
न की मां २२० अब कह ले कं नां
रही नुग ले द ती सा सब कह की
गत गर का जाही न जा गर जा वि ध्य
न त गे जो को सा गर २२१ सति सति
या न ग ति ह मारी जे कां स म जिक
रे न र ना ही न कि क र मु क त क ल न
वे ह म र स ति न क मे न् ज वे २२२ क
दे क पी र स नो ध र्म दा सा घं ट क र्म न
र म का कां २२३ न र म क
र म ने नार स न ही या नार मे कं कि
म न ग र का प र त प सं नि टि ग वा स
प ली धं २२४ नो ल र न द गूं थ
२ स त ग र को नु पं दे स जं मां ने प्र
निक रि सो प कि चे ह म दे स २२५
सु प त ने ह र्म मां ध र्म दा मा
व्या न र्म का प न या प का सा म न व

२२ हीनहञ्जलरसंज्ञरभाया। अञ्ज
रञ्जदिल्लंमीउपजाया। अञ्जदिल्लंमीकी
याञ्जमरपसाराफेलिरह्याकाहूनही
नारा। २२७। सोहंकलाञ्जमीकेसांहीसि
तबीजकलकैतिहिंवां ईसितबीजसू
लेहेमाया। तासंरचीसकलकीकाया।

। संभयउ। पारस

। २२७। दोहा। पारस

। अञ्जवेजाया। गुपतप्रगटजोगुपतहती

या २३। नहञ्जलरसंज्ञ

ञ्जल

नसंमायाऊपजी। मायातरगुणरूप। पां

ततगुनमेलकें। बांधोसकलसरूप। २३

मायाब्रह्मजीवतत। सतरजतमत्रेदेव

मवहीनकं चोक्तं करिनहन्नृक
 व २३४ जो चाहे से ही मिले मानों मो
 प्रचार याही नेदजाणां विना कोइ
 बुतरेपार २३५ जो वारा नर्मतबमिटे
 सिं सूलन होय हंसहि रंमर होय त
 व पत्तानप करे कोय २३६ कहें कवी
 रधर्मदास सं छुटनहीं संसार यामेरी प्र
 तीति करि तात्पर्य कुलप्रवार २३७

अधर नहीं असमान नहीं ध
 रती हैं मराठी या कीय कही बिसरां
 न संसर्ग कहे समजायके र नहीं ब
 जल कर मूलकारत हांवां नहीं कहे
 को नर पर एक नडती या नां हता
 कहणांनी सलां संमर्थ सांई
 मसुमेर सिधु भत वनां ही नहीं तव
 यता अधर अकासा चंद्र सर नां ही
 नासा व नहीं कूरमसे सवारा हा

> नादिनहिं गहश्री गहश्री हसं हि साठ
 वौननपांणी अगमगमका हूनही जां
 धांपाननध्यांननलगी समाधी धर
 नही उपज्यावादी नही निरंजनन
 तारा चोदाजमनही की यापसारा ध
 डससुतनही रचनां राच्या कालत्र
 लफूचनही सांचा सकतिन भगति
 गनुपजाया मननां जननां धननां मा
 याही अंसनहंसल वंसनकीनां चीन
 चीननकाहू चीनां में नही तूनही मो
 हनमाया कारण सुखमथूलन कर्त्या
 ॥ नां बाहरिनां भीतरि होशी पांचती
 येनही कोशी जेतिन नूरनरूहनर
 कती खासा सोहं सुरतिन सकती ॥ १॥ न
 सुषमनालागी कोरी अंधरतारकहां
 जोरी ॥ ए ॥ ह्येती वसततवनां ह
 नही तहां येको दोयमें काहे संकप
 ॥ या अचरज हे मोहि ॥ शं संद्रथ उवा
 प पक्षी अंधरमाहि इकनिक स्यातारा

गेवञ्जवाजभईतिहिंवारा।नापिदेहो
इकजागामोरी।अधरसंयेकअइडो
री।११।मोरीमां हीवाससमांनी।अग्र
सुगंधअमीकीयांनी।जागावहोतअ
नूपअमोला।तहांआयकेवांणीबो
ला।१२।बैठिककरणकूंऊठीइकखा
सा।याहीगेरमेंकरिहूवासा।वासले
केंआसासाधी।उनआसाइककरी
समाधी।१३।करिसमाधिलोलागी।
तबही।आसाउतपनिकीनीजबही
उठीअवाजगेवसंबांणी।जबआसा
मेंवासबसांणी।१४।नीतरिहीकी
नांबिसतारा।फोनीसुच्छमअगअपा
रा।आसाअमीबीजअंकूरा।आसा
उपजीआपहजरा।१५।नीत्रहीकी
नांबिसतारा।पांचअमीऊपरअसवा
रा।आसाउतपनिकीयाउतपांनां।ता
सूंनुपजापांनविग्यांनां।१६।आसारं
रकारधुनिलागी।रंकारअधरसूंजा

गी॥ आसा ऊंकार वणाया आसा संजप
माया ॥ १७ ॥ आसानां मनिरंजनधा
या बिसतारा ॥ आस
यहोय वैवा ॥ कालरूप सबन सं
॥ नीत्र
नीत्र अकुलांनी तव आसा कंब
नां ॥
१७ ॥ आसा दुतीया कीया पसारा येक
दोय होय अंतर कारा ॥ या आसा की अ
कथ कहांनी ॥ आसा बोली इंसुत बांनी
खेयेती जुगति समझि हो ग्वांनी ॥ गुपत
भेद में क हं बघांनी ॥ अब्बा हरितु मक
रो बिस्तारा ॥ कुक महमारे काज सवारा
श दोहा ॥ संनृथ काया कुक मह है ॥ कीयो
ग्वांन बिसतारा ताकी जुगति नगं महै ॥ र
चनां अगम अपार ॥ २२ ॥ चौपई ग्वांनी कु
रम मिलाया दो भाई ॥ रचनां अगम अपार
रवनाई

३ पवनपचासीकीनां॥ अगमभेदकाह
नहीचीनां॥ पाछेजलकारंगवणाया॥
याभेदकाहूनहीपाया॥ २४॥ जलरंग
मांहिभयाअंकुरा॥ तांमेंमदनपुरस
कानूरा॥ एकबूंदअंमीकीआई॥ मर
नपुरसकंअंगिजगाई॥ २५॥ मदनपुर
सदेष्यामुषतूला॥ अंमीअंकुग्यांनक
मूला॥ जलरंगमांहिअंमीजमाया॥ सो
हीबीजमदनकीकाया॥ २६॥ कुरम
ग्यांतीकंलीयाबुलाई॥ जलरंगकौ
पूछेतुमजाई॥ लेहोसबदहमारा
मांनी॥ रचनांरचोमिलेतुमग्यांती॥
२७॥ कुरमकुंकमकरिलीयाबुला
ई॥ श्रीलोजलरंगग्यांतीकेपाई॥ तु
मलेजावोसतिप्रवांतां॥ रंगछुतीस
कीयाजलग्यांतां॥ २८॥ जलकारंग
कीयाछुतीसा॥ सबकायाकोजल
हेईसा॥ पवनपचासीजलकेसंगा॥
भांतिभांतिकाकीयाहेरंगा॥ २९॥ वसु

धासवैकरमकेपासातबहीवएँतव
आवैआसा। सुएँगपांतीइकमसएँतरेमो
रीतुमहीअरत्मावोकोरी। इएँतहंर
चोसंमर्थअसथांनांकहैकरमसुनो
अस्थिरगपांनां। देहोवसुधाजोयोमैतो
हीसंमर्थइकमभयहैओही। ३१। कू
रमसक्तिअतिभारीमाया। रचनांरच
सुधारोकाया। बडीअपरबलसकति
हमारी। अधरमंहिरचीफुलवारी। ३
२। देविसंमृथअतिसुषपावै। जोरची
येसोसंमर्थभावै। ३३। दोहाकहेंगपांती
बिनतीसुनो। कररुतुभारोनांव। जलना
हीबासोकरो। तहोतुह्यारोधांमा। ३४। दो
पई। कहेंकरमसुनो। गपांतीविचारा। ए
कसंननिजसुनो। हमारा। वसुधाजमाह
मारेपासा। जबदेहंजवआवैआसा।
३५। करलनुइकीनो। ॥ सा। ता।
निकसीइकस्वासा। ताइसा।
राभाईसपतपत . . .

सोहं सोहं बोले बांणी। स्वासा जलके
भीत्रांणी। तामें निकसे चंद्ररुस्त
रावहोत प्रकास भया विधि पूरा। ३७
सेस वाराह उद्रसूंश्याया। या विधिरच
दोयकी काया। धरती कूरम उद्रसूं
श्याया तापी छे निज अरर हाई। ३८
तेज अंग कूरमत व भय उ। बिजली
निक सिवा हरि हो गय उ। उद्रगण नि
क सिपवन प्रचंडा। नौलस उद्रगण
करे ब्रह्मा। ३९। ब्रह्मांडकी सोभा
भारी। जुगतिरकी नी फुलवारी। सब
अस्थान गगनिके मांही। न्यारे मिले
की या जहां तहां ई। ४०। सब ऊपर संम
थ अस्थानी। तहां गये कूरम अरु गं
ना। संमर्थ मुख प्रगासी बांणी। ये रच
नांके सी विधि गंणी। ४१। सुणे कूरम गं
नी संकहाणां। जल रंग संकही ये अ
सबेनां संमर्थ फुक मकी या है जैसा
करो जाय जैसा है तैसा। ४२। जल संव

यो कुरमके तां प्रीजे वे सुं

त्र श्रोर को नां ही । ध्र । ता सं छो टां हे पां
नी प्रता दो नूं मिलि कै सा धो जुगता । जल
रंग तुम हो पुत्र हमारा । सं म्र थ कु क सक
रो बिस्तारा । ध ध चंद्र सूर दो य वीर बन
ई । इन सं रचनां हो य न्न ध का प्री ये ता सं
म्र थ क ह्या सम जा ई । पां नी कूर म नैं व
च न सिर ली या च टा ई । ध ध दो ह्य । सं
म्र थ का न्न स थान की । सो जा न्न ग म न्न
पारा । जां ऐ कूर म न्न रु पां नी श्रोर न पा वे
पारा । ध ध । चो प ई । वै सं म्र थ है न्न ग म न्न
पारा । गु प त प्र ग ट का सिर जन हारा । न्ना
सि पा सि व हो दी प व ण या । ता में न ग ति
मु क ति उ प जा या । ध प । सुर ति सा त का
क ह्या न्न स थानां । सं म्र थ नैं त हां दी नां पां
नां । न्न मी सुर ति मूल के मां ही । मूल सुर ति
सूं नि क सी छां ही । ध

५ ज्योति सुरतिकी नां प्रकासा सुंमस
रोवर जलमैं बासा ॥ ४९ ॥ जलकी सुर
तिपवन कामेला तेज सुरति अगनि
का येला सात सुरति सम्रथ के पासा
अैसी भांति भया प्रगासा ॥ ५० ॥ ताकै
तले सकल अस्थानां जल जांणै के
कुरम अरु ग्यां नां सो अस्थान अरु
कहै सम ऊर्ष कुरम ग्यां नी जल रंगी
मन भाई ॥ ५१ ॥ दोहा कुरम ग्यां नी जल
रंगी ॥ ये ती नूं सिर ताज ॥ सम्रथ नै मा धे
धर्या दीया अ भै पद राज ॥ ५२ ॥ चौपई
चले कुरम जल रंगी ग्यां नी विचारा ॥
५३ ॥ धरो ठिकांणै करो समहारा ॥ सत सुकृति
गति भारी ॥ गगनि मां हि इक अठारी ॥ ५४ ॥
तहां सम्रथ की नौ अस्थानां ॥ कुरम ग्यां
नी जल रंगी गति जां नां ॥ सात सुरति सं
म्रथ के पासा ता सं भया सकल प्रका
सा ॥ ५५ ॥ ताकै मां हि सात है सुंम ॥ सात
हं सबै ठे उन मनि ता का तै सा सकल अ

या ऊँकार शब्द
ऊँकारसंभवकृत्तिकी वास

का

कैतलेन्द्र

कुरमकी

सबकी डो

मदासब्रजो बड भागी येतो हे श्रधर
कासा श्रधर नाम कही येना कासा
श्रधर मकला कछु वारन पारा दे
ही को भाषों बिस्तारा देही जो जनको
दे श्रधर एवै रसातल सुरग पताल
ता एवै ई श्रधर पणी देखी सो मै भाषी
तुम संगो यक छून ही राषी ई धावे
सतलोक संश्रायत देषत सब
बिसतार सो मै तुम संभाषि हूं सक
ल करम सिर भार ई धावे पणी श्र
हो साहिब पूछों कर जोरी या तुम क
ही श्रधर की जोरी कहो सुमेर के तो
बसतारा कौण हंस कंरो कण हारा
ई ई सो स्वांमी सब कही येवा ता तु
म सब देखी संमृथदाता कहै कबी
र सुणों धर्म दासा श्रधर शुमेर का सु
णों प्रकासा ई पु कंचन पुरी सुमेर क
ही जे निन्यर का भेद लही जे तहां को
राज निरंजन कर ही महातेज पुरष व

रही। ईषाताको राजसिद्धं प्रहृष्टहृष्टी

हृष्टी। चोकी एकत्र

ताकी ल

॥ यारचनां षुदित्रापसवारी ॥

ॐ हीरालालजवारनमोर्त्ती

उडगणकी जोती। येतो हे चोकी बि

वहोतरूपवकुतउजियारा। उणे विडी

सोभानिरंजनराया। अदिसक्तिरावी

तिनमाया। दोमिलिकीया। सकलविस

तारा। इनकी रचनां अगमत्रपारा। ७१

मुक्तिच्यार उपरिचिराषी। ताकीते

हिसुणं उंसायी। सालोकी सांलीपीनां

ऊं। सारूपी साजो जीवं उं। ७२। च्यारिसु

क्तिनिरंजनकेरी। अगमत्रसतकारु

नहीं हेरी।

। महिमां सबजुग कहही। ७३

हावषाणोकेतीसक्तिरोकहीबाटाहंस
चलेतहांश्रोघटघाटा।७४।जोकक्षसं
संहोयजीवतेरै।पूछोफेरिमितांउंफैरे
शोरसुमेरगतिअगमअपारादिषिस
वकहाविचारा।७५।तोहिकहीसंछे
पसुणांईबहोतकहंतोकोपतियाई
जुगकाजीवनजाणैकोईतेरीगतिमो
हीसंहोई।७६।सतिवहीसतिसमजाई
धरमदासमसतिराषिच्छिपाई।७७।सिंह
धरमदासतुमंफिहो।यासुमेरविसतर
संमथकाघरइरिहै।अगैअगमअपा
रा७८।सुनिधरमदासतोसंकहं।सति
करिकैप्रतीति।तीनलोकजिनवसि
कीया।याहीनिरंजनरीति।७९।सिंह
धरमदाससुनिवचनहमारा।तुम
जिनमूलायादिवहारा।रुकेजीव
कसनावेपारा।तुमहोहंसहंसपति
सारा।८०।सिंह।तोहिकहंविच्य
रा।करोहंसहनसबसूंनारा।प्रि

सनुतर

उैइकजाता

तमसंमृशदातः कुरसक

२॥

सबकेतलेकौन

सबकेऊपरिकौनबिध

उयेउधरतीतलेकौनअसथांनांनि

जकेमोहिसुनाबोपानां॥७३॥केसीबि

धहैसोसबभायो॥सोसंअत्रकखनरा

यो॥७४॥होहा॥कहैकबीरधरसहाससं

मुणितलकोबिसताए॥निअरतोसौ

कहैरचनांअगमअपार॥७५॥चोप

धरतीतलेकहीयेपाताला॥ताकेतले

तलातलताला॥ताकेतलेकहीयेअ

ताला॥ताकेतलेचोतालंपचताला॥

७६॥ताकेतलकहीयेघटताला॥तले

रसातलसातंताला॥रसातलत

७७॥पाणीहैआकासअधारा

जड़ है रसातल धारा सात तल बक पां
णी आधार दार चनां हे अगम अपा
रा ५८ का हकी जाणन की नां ही ध
रमदा सरा यो मन मां ही पांणी रंग कु
रम अरु ग्पां नी दार चनां सब ही उन
गांणी ५९ अर क है विन देषी कोई
ता की कही सति न ही होई अ कलि
दार क कु कां मन आवे देषी जु गति
कहा को द्र पावे ए० ये तो हे विस ता
रसातल कुरम कला हे अ कलिक
ला कल पांणी धरणि पांणी अ का सा
पांणी मां हि कुरम का वा सा ए१ कुर
म पवन प्र चंड अ पारा जल में पै ति
कें अ प स वां रा रसातल ब्रह्मं रु अ
का सा सब को पिता कुरम हे ई सा ए
र कुरम पिता का हू न जां नां ता ते जी
वन ये हे रां नां ग्रु न वा स में अ य समा
नां अ ग म ने द का हू न ही जां नां ए२
अ व र च नां सब उ त प नि के री ता

तिनकाहूहेरी॥याकेदुरमअं
मीउपजाया॥ताकेतीतरिदेठिकपाया
एधसुद्धमरूपधस्योबलवानां॥तब
हीउपज्योभीत्रग्यांनोतासंजगकीयावि
सतारा॥सोअवभाषोंजुगसुधारा॥एध॥
यासवरचनांकुरमबनाश्रीकुरमसक
लकेपिताअहर्मशीबसुधा॥

काही॥अपरमपारगुणालेबाही॥एई
सेवायुक्तपरकूंश्याया॥सिखजोणि
रमकीगुया॥सबकीनोरिकुरमसंला
गी॥कुरमडोरिअधरसैंपांणी॥एध॥अ
धरनोरिसंभ्रयघरजागी॥धरमहास
णोंबडभागी॥येसलभेदबतायातो
अबतुमचीनिलेहोनिजमोही॥एध
यहांदहांदूसरकोनांहीं॥आपहीबा
हरिआपहीमांहीं॥यासबबूऊए
वाता॥सुकृतहंसकोईकोईराता॥एध
अबसुणिलेतुशेरबिचारा॥उपज्या
कुरमजगतविस्तारा॥ताकोतो

८ कृ बिचारा। वृजेंतैहोवैनिरवारा। १००
० देहा कुरमसकतिअतिअपरबल
नेदलियेनहिंकोय। पांचतीनसूंज
गभया। भाषिसुनांऊंतोय। १०१। चो
पई कुरमकलातबकरीअपाराता
काअवसुनितेहोबिचारा। येकसमै
तेजघरआया। तासूंसक्तिभईम्हामा
या। १०२। मायासूंभयाऊंकारा। ता
सूंतीनंगुणविसतारा। ऊंकारतैम्ह
ततहोई। ताकाभेदनपावैकोई। १०
३। पांचतनऊंकारवणाये। आवंमि
लित्तीनूपुरछाये। जेअस्थूलनये
जगमांहीं। इनआठनसूंनारानांहीं।
१०४। इनआठनकीयाबंधानां। अग
मभेदकाहनहींजांतां। चारियांनि
चौरासीलाया। सोसबजांणैंकुरम
कीसाया। १०५। सबघटव्यापककु
रमविराजा। येसबठाठकुरमका
साजा। कुरमभेदपावैजोकोई। सं

धरकंपकंचैसोही॥१०६॥दिनाकु
 वाधरनहीजाई॥सिधसांधिककरे
 टिउपाईसुनिधरमजिकऊसतसं
 सा॥जीवनकंइत्तनवादेसा॥१०७॥दो
 हा॥संमर्थलगपहोंचैनहीं॥बिचहीरहे
 लायाकरमनेदजांएंगबिना॥काल
 हंपुरयाथा॥१०८॥चोपई॥अहोस
 षोंकरजोरी॥सतगुरसंमेंमेवो
 मोरी॥कैसेततभयाउतपांनी॥निन्यनि
 न्यभायोमोहिर्पनी॥१०९॥सुनिधरमा
 नसबजुगतिवतांउं॥ततनकीउतपति
 नांउंतीनूगणाकाकहूंबिचारा॥धे
 कएकसुणिन्यारान्यारा॥११०॥चारिषां
 निभाषूंमेंतेही॥हृष्ट्रेकरितुमजांणों
 मोही॥प्रथमतंतकहीयेआकासां॥ऊं
 कारसूंभयाप्रकासा॥१११॥तासूंपवन
 ततभयाभारी॥सबमेंबरतिरहोनरना
 ।तासूंभयातेजअधिकारा॥ताकोहेज
 गमेंउजीयारा॥११२॥तासूंजलततजुग

अपारा ताकी रचना है संसारा तासौ
प्रथी तत निरमाया ये सब रची कर
सकी माया ॥ ११३ ॥ तीनों गुण का कहूं सं
देसा रजस तत मती नू गुण नेसा रज
गुन जो प नया है ब्रह्मा तासूं धर म क
र म नया नर्मा ॥ ११४ ॥ सतो गुन विसरू
प सब जागा भोग अनेक भोग लो ला
गा तमो गुण म्हा देव प्रचं ना षंड पिंठ
व्यापक ब्रह्मांडा ॥ ११५ ॥ तीनों गुण का क
हा बिचारा तीन पांच मिलि नया प
सारा चारिषां नि सम जो धर्म दासा ॥
जैसी भांति नया प्रकासा ॥ ११६ ॥ प्रथ
म अचल षांति है भारी तापी छे अंड
ज अ नू सारी पिंड ज उष म ज पी छे
होई चिंत्य नै द नि ये न ही कोई ॥ ११
७ ॥ कुर म ज ड सब की उत पांती जीव
जंत कुर म की जाती कुर म बिना धरै
न ही काया जो मिली या सो मिल त च
निश्रया ॥ ११८ ॥ तत प्र कि गुण मां ही ८

कार चनांकुमत्रापणीछापका।
सीभांतिवण्णसंसारधरमदास
मकरोविचार॥११॥उत्तपनिपरले
वजुगहोईसंमर्षभेदलिखेनही।
ईकालकरैसबकोसंधारायेको
वहोयनहीन्यारा॥१२॥प्रलेमांहिप्र
जबहोईसंमर्षसुखनिदुरमरहैसो
केतीबेरनयायेकाजाफिरि२कु
मकीनयेसाजा॥१२१॥आदिअनादि
नारकेपारासंमर्षनगहैबासहमारा
रमदासतुमजांणीवाताकरमपिता
संमर्षदाता॥१२२॥जिंहिं२भांतिभा
यासंसार।सोमैंजांणोंसकलविचार
अधरडोरिवैगमेंदेखा।उत्तपनिप्रले
गंणोंलेखा॥१२३॥भेदविचारिसकल
गोहिनाया।कुरममूलत्रोरसबसा
यासंमर्षमूलनकुरमकाहोई।ताका
रमलिखेनहीकोई॥१२४॥कुरमभेद
निष्पावतनांही।हंसाजायकुरम

बांहीं अधर मोरि को पावत नांहीं भर
 में जीव चौरासी मांहीं ॥ १२५ ॥ अधर मो
 रि लागी अस मां नां धर मदा सवे सम
 जोग्या नां विच्य ही म ड्रा बवे द्वा भा
 री को इन पावे नर अरु नारी ॥ १२६ ॥
 अं मर घर संम्रथ का भाई सो में तुम कूं
 दीया लिखाई जु गति विनां जीव पा
 वे नांहीं बहे ज्याय भरम के मांहीं ॥
 १२७ ॥ भर्म हीं भरम बहा संसारा सं
 म्रथ को घर पै ले पारा ॥ धर मदा सतु
 म करो विचारा ॥ को संम्रथ है सिर
 जन हारा ॥ १२८ ॥ ~~हेतु~~ ॥ भरम करम
 त दिन नही नही मरति का मूल ॥
 धरम निरंजन तब नही नही कुर
 म अस्थूल ॥ १२९ ॥ चौ पद्मी धरम दा
 स पूछत है वाता ॥ कहो खांमी तुम
 संम्रथ दाता ॥ ता दिन संम्रथ कैसे र
 हेउ ॥ तब कछु बोलवाणी नही क
 हेउ ॥ १३० ॥ तब कछु उत्तपति हती मा

व्याख्यातनिवारणकोकहसकेबोअ
 गमअपारा॥१३२॥मेदेवीलंगकूसमजा
 प्रीमोकंसंमृथदीयालिषाहीतोखंजु
 गतिसकलहंसभावी॥एरेअंनकचुन
 राषी॥१३३॥होहा॥संमृथकाघरहरि
 हे॥अधरमोरिकेपासजिनदेवीतिन
 हीकही॥कोकहैसकेबिचारा॥१३४॥
 चौप॥धरमदासतोहिकहूबिचार

जीतअडोत्तअगाधा॥निरसंसेपद
 जीणाधागा॥१३५॥अतिसुखमगतिको
 इनजाणोअबिनदेवीकहोकोणबया
 द्विष्टिसुष्टिमैअदेनाहो॥सुरतिनि
 ॥१३६॥सुरतिनि
 रतिजाकीकिटधारा॥सोही

अगमविचारा सुनिधरमतिकरुंस
तिवाता सबके ऊपरिसंम्रथदाता
१२७ अमी सुरतिमिते अंकूरा मूल
लसुरतितारतहां पूरा मूलसुरति
अमीधारसूंकीनां तबसंम्रथने अ
मीकूंचीनां १२८ अमीमांहिइक अ
कउ प्रायातासूंरचीकुरमकीका
या अमीमांहि वैठिकतबधरिया
याविध्रऊक मकुरमकूंकरिया
१२९ कुरमकां मधेनेउपजाई अ
मीपीवैसदासुप्रदाई अमीपीवैअ
मीधुएऊरही अजरबीजतहांउ
तपनिकरिही १४० अजरबीजम
दनकरिआया मदनपुरसकूंआ
णिजगाया जागेमदनउघारेनैनां
सुनतरहोसंम्रथके वैनां १४१
संम्रथऊक मकुरमसिंधारा ब
सुधादीनी दीयोसिरभारा संम्रथअ
सकुरमकूंदीनां कुरमअसहंसस

वकीनां॥१४२॥जलरंगकरमलीयावु
लाईरचनांश्रधरश्रधाएचलिश्राई
इसत्रिधसंसवठाठबृणयाश्रिगमलेह
काहू नहीपाया॥१४३॥सवप्रश्रसग
यासबफैली॥उतपनिश्रसीहोयनांसे
ली॥सबबसुधाहैबीजकेनांही॥श्रगम
भेदकोपांवेननांही॥१४४॥धवघटमेंगह
रादरियांनानिरभैजुगलिकोईनहीपा
उं॥संमथश्रंसहंससबभयेवाकरमपं
नीमदनसंगरहेउ॥१४५॥श्रधरधारसों
श्रमृतश्रायाधरसदासमेंतोहिसुणां
या॥गुपतप्रगटजाणोंसबमायाश्रंस
हंसफैलिगईकाया॥१४६॥दोहाश्रध
रकोरिकातारमें॥लाभपातारश्रपारासि
धसाधिककीगमनही॥क्याजाणेंसंसा
र॥१४७॥कालकरमतहांवहांनहीं॥न
हीपापतहांपुन्याश्रापहीसंमथयेक
लानही॥सुन्यमहासुन्य॥१४८॥मो

कठणिषांमेकीधारा॥ चलतै२सब
शक्तिमरे॥ पङ्कचैसुरतिनिरतिनही
मरे॥ १४९॥ निरनेहोयधरैते॥ पाउ॥ तहां
वहांजमकोलगेनदाउ॥ सुनिधरमा
नइकअगमबिचारा॥ कायाभेदक
धारा॥ १५०॥ एकबूदसंकाया
जाणेंकुरमकेंसंम्रथधणी॥ वूं
मांहियेबस्तसमाई॥ ताकीजुगा
तनकाहूपाई॥ १५१॥ अंधरमेरिसं
म्रथअस्थानां॥ ताकेनीतरिअडु
तग्यानां॥ येलेज्ञानकुरमकंचीनां
उपजतकुरमज्ञानकंचीनां॥ १५२॥
ग्यानकुरममेंआणिसमाया॥ तासूं
किनईहामाया॥ मायामेरिलगी
तारा॥ सोहंसोहंकरैपुकारा॥ १५३॥
३॥ सोहंमेरिआईधरमांही॥ सुषमा
नतारलगायातही॥ तहांऊंकारअ
स्थानां॥ धरमदासनिरनेंकरिग्यानां
१५४॥ त्रिगुनपांचततऊंकारा॥ आ

पंजरसवारा। श्रावमिलेत्तोस्त
यपूरा। प्राहीजोतियाहीहेनूरा। १२२
दसूरत्रिकुटीकेघाटासुषमनिने
सवारीबाटा। दोयदोयत्तानिएकव
। अगमभेदकोइपावतनांही।।

१२३। जेमनिप्रीतिमांहिइकसंगा। जगप
हेकेतगीरंगा। घाटतीनत्रिविधक
। तीनसक्तिसेउपजीमाया। १२४
लापीगलासुषमनिनारी। चंदसूररा
षवारी। चंदसूरस्वासासंबहेह
होयभेदसोकहेही। १२५। चंद
गनिबीजजोअर्शीग्रममांहिकं
होयभाई। सूरलगनिबीजजोप
ही। जानौपुत्रदेहसोधरही। १२६।
सुषमनिघरजोबीजठरिआया। दोय
नपुंसकंताकीकाया। जैसेसकन
गतउतपांनो। धरमदाससमकोय
जोना। १२७। अरेअनेकजुगतिकीका
। धरमदासजोगैसबमाया। समूथ

रकोजां एतनांही॥ ये बांणीसमकोम
नमांही॥ १६१॥ दोहा॥ धरमदासतोसं
कहों॥ कोयाकरेंबधांण॥ सबकोपु
रषाकौंणहेतोहिपरीकहुजांण॥
१६२॥ दोहा॥ हेखांमीमेंजांणीबा
तातुमहीसतगुरसंमूषदाता॥ श्री
रबतावतवारुंबारा॥ सोखांमीया
कौंणविचारा॥ १६३॥ देहधरेप्रगट
तुमझांनीरहेविदेहकारुनही
जांणी॥ सोकारणतुममोहिसुणाया
मेंजांणीमेंतुमरीमाया॥ १६४॥ रहेअ
देहयहांतुमतबही॥ अबमोहिअं
णिसुणाईसबही॥ म्हापुरषपूरणप
दतेरा॥ सबसंदेहगयाअबमेरा॥
१६५॥ तुमबिनसंसेंकोणमिटावे॥
कोअैसीविध्यमोहिसमजावे॥ अ
मनिगमतुमसबैतिषाई॥ नहचैव
ततुम्हारीपाई॥ १६६॥ तुमहीवार
रसबजागा॥ तुमहीअधरमांहिसे

गा। अधर कोरि सुमो हिलगाया जां
 परी सब तु मरीमाया ॥ १६ ॥ अधर
 रिमें तुम कूं देया। यहां बहो जां नि
 सा सब लेया। अधर जगति ककु
 हीन जाई। असी संमथ कोरि लिखा
 ॥ १६ ॥ दोहा ॥ अधर तार के तार भौं ॥
 नगा तार इक ओर। चलतैं सब
 अधर गम अधर गोचर गेर ॥ १६ ॥ ए चोपई
 सुनिधर मनिमें सब गति जांणी अधर त
 सुं अई बांणी। सो बांणी सहज घर म
 ही। कुरम वास कीया हेतां ही ॥ १७ ॥ वा
 सहज सुं न्य सुंचली जो धारा। सहज
 घर सुं नया पसारा। सहज सब ज
 गत बयांणी। सहज नेद कोई नही जां
 ११ अधर मह रिलो लागी रहै। स
 हजनां मता ही सों कहै। सहज सुं न्य सुं
 बांणी। तीन लोक प्रथी में जां
 ॥ १७ ॥ अता बांणी अधर के संसारा के सैं
 पावे नेद हमारा। अधर कोरि जां एं न

हीकोई बिन जां न्यां सब गये विगोई
१७३ कुरम वेवे सहज घर मांही जां
गोंपांनी और को नाही च्यासं वेद स
हजसं आये सोही वेद ब्रह्माने पाये
१७४ पहिले उतपनि नई अपार
निगमनां मतातें अनुसारा वेददी
याजगकं नरमाई ब्रह्माकी नीच
ने राई १७५ संमथसों कही इस एन
ही अंतसमें को करे सहाई आप
ध और सें सजावे याही बात मोहि
चरज आवे १७६ बूडे जात भरम
मांही सति फुंठ कबु जाणत नांही
वन अतप बहोत अहंकारा स
नांही मूढ गवांरा १७७ में मेरी
में फुल्या फुंठ ही लागि सकल
भूल्या धरम दास तुम करो पुक
जो समके सो उतरै पारा १७८ तु
में भाषी सत्य बाणी तुम मेरी ग
हरे जांणी में ही की नां बहोत

रा। काहे भूलिरह्या संसारा १७१। कड
 तो फेरिन मां नै कोई डर मति हसर क
 डनयोई। येक कहें मुखसं सब भाई।
 कहतं जुगगया सिराई १७०। जैसै
 येतेसै गयोर हे जीव सो ब्रह्म न भये।
 ब्रह्म ब्रह्म सब ही कहै भाई कोण ड
 स्य सो षवरिन पाई १७१। एक ब्रह्म
 रंजन राया। तीन लोकमें ताकी माया
 येक ब्रह्म है ऊंकार। रिष मुनि देव
 सब करे विचारा १७२। एक ब्रह्म सं
 हं सब मां ही संमथ कूं को जाणत न
 ही। येक ब्रह्म है रंकार। त्रिदेवा सं
 या ही पुकारा १७३। सिव समाधिल
 ईतां ही। ए संमथ कूं जाणत नां ही। ब्र
 ह्मा विष्णु ब्रह्मा मां ही। करि पालेता
 की गमनां ही १७४। त्रिदेवा ये ब्रह्म का
 वो ब्रह्म नेद को ई नही पावे। श्रोख ह
 तत हे पांच। जिन काया कूं करि मां न
 सांचा १७५। निरगुण ब्रह्म नितर नदं

श्रवैः सरयुणकं सब ब्रह्मवतावे
केते श्रोतारजगतमै नये उराम
कृष्णसबको ईकहे उ॥ १८६ ॥ एता
ब्रह्महे श्रगमश्रपारा ब्रह्मभेद
नसबसून्यारा श्रैसो भूलिपस्यो सं
सारा सत्यसत्यमैकरुं पुकारा ॥ १
८७ ॥ धरमदासतुमश्रंसहमारा या
संसारसूहो कुनियारा धरमदास
मैतोहिसुणया येसबही संमथ
कीमाया ॥ १८८ ॥ संमथइनसबही
सून्यारा धरमदासतहांबासहमा
रा सोही वोरतुमकूं पकूं चाया ब
कूं स्यो जगमै धरौ नकाया ॥ १८९ ॥
जीवतमुक्तिताहिको नां उं संमथ
कूं जांणो सब वां उं पहिले संमथ
कूं पहिचांने श्रापजांणिसबहीमै
जांणो ॥ १९० ॥ श्रैसैग्यांनरूपकरिजां
णो सबघटमांही येकपिछांणो श्रा
पकूं जांणतनांही संमथपूरिरहा

सबमांहीं ॥ १ ॥ ए ॥ श ॥ षो ॥ जे ॥ वा ॥ हरि ॥ सो ॥ कित
पावे ॥ फिरि ॥ जीव ॥ ग्र ॥ भ ॥ में ॥ आवे ॥ १ ॥ ए ॥ २
दोहा ॥ चौरा ॥ सी ॥ बंध ॥ सा ॥ क ॥ ठि ॥ णा ॥ क ॥ ही ॥ न
मां ॥ नै ॥ जी ॥ वा ॥ सं ॥ म्र ॥ थ ॥ कूं ॥ के ॥ सै ॥ मि ॥ ले ॥ ॥ ब
न ॥ नि ॥ रं ॥ ज ॥ न ॥ पी ॥ वा ॥ १ ॥ ए ॥ ३ ॥ चो ॥ प ॥ ड ॥ अ ॥ ध ॥ र
नोरिका ॥ क ॥ हूं ॥ वि ॥ चारा ॥ जो ॥ जां ॥ एं ॥ सो ॥ उ
तरे ॥ पारा ॥ वि ॥ न ॥ जां ॥ ए ॥ पां ॥ सब ॥ ज ॥ म ॥ का ॥ च
रा ॥ क ॥ व ॥ हूं ॥ नौ ॥ सूं ॥ हो ॥ य ॥ न ॥ न्या ॥ रां ॥ १ ॥ ए ॥ ४
धर ॥ म ॥ दा ॥ स ॥ तु ॥ म ॥ करे ॥ पु ॥ कारा ॥ क ॥ हें ॥ क
बी ॥ र ॥ हं ॥ स ॥ हो ॥ य ॥ सारा ॥ हं ॥ स ॥ हो ॥ य ॥ के ॥ ध
र ॥ कूं ॥ जा ॥ ई ॥ हो ॥ य ॥ हि ॥ रं ॥ म ॥ र ॥ मो ॥ र ॥ ड ॥ हा ॥ र्श ॥ ॥
१ ॥ ए ॥ ५ ॥ सु ॥ ष ॥ सा ॥ गर ॥ अं ॥ ए ॥ द ॥ ध ॥ र ॥ पा ॥ वे ॥ ॥ ३
ष ॥ ड ॥ र ॥ म ॥ ति ॥ क ॥ ऊं ॥ नि ॥ क ॥ ट ॥ न ॥ आवे ॥ प्र
ण ॥ त ॥ त ॥ ज्ञां ॥ न ॥ सब ॥ भा ॥ र्था ॥ तो ॥ सूं ॥ अं ॥ त ॥ र ॥ क
कु ॥ न ॥ रा ॥ र्था ॥ १ ॥ ए ॥ ६ ॥ सं ॥ म्र ॥ थ ॥ प ॥ द ॥ ध ॥ र ॥ म ॥ दा ॥ त
स ॥ तो ॥ हि ॥ दी ॥ नां ॥ जु ॥ ग ॥ जु ॥ गं ॥ अ ॥ म ॥ र ॥ अ ॥ ट ॥ ल
तो ॥ हि ॥ की ॥ नां ॥ या ॥ ही ॥ जु ॥ ग ॥ ति ॥ मु ॥ क ॥ ति ॥ को
मू ॥ ला ॥ जा ॥ सं ॥ मि ॥ टि ॥ जा ॥ य ॥ सं ॥ सें ॥ मू ॥ ला ॥ १ ॥ ए ॥ ७
सो ॥ ल ॥ सं ॥ तो ॥ ष ॥ द ॥ या ॥ दि ॥ ल ॥ आवे ॥ सो ॥ हं ॥ ध

७ रसंम्रथकोपावै धीरजगपांनहोय
 बैरागी बहोतगरीबी आत्मजागी
 १ए८ सुरतिसनेहीसां चाहोई ता
 सूंबसतधरोजिनगोई अधरमेरि
 ताहे देहो लियार्ह हंसहोयकैघ
 रकूं जाई १ए९ धरमदासतोहिदी
 नलियाई संम्रथकी गतितैसबप
 ई कहें कबीरसुनो धर्मदासा संम्र
 थसूं नया सब प्रकासा २००
 संम्रथगति अति निरमली निरम
 ल अति प्रकास निरमल लगनि
 रमल नया कोई कबिरनादास
 २०१

मूलगपांनकहूं उपदे
 सा आसूं मिटेह भवकालेहसा
 गपांनदि गपांनदो कुकरलेषा गपां
 नीहोयसोकरै बिवेषा १ मूलगपांन
 दो कुतेनारा धरमदासतुमकरोबि

चारात्रहोसाहिवपूछोंमनलाशीम
लग्पांनगुरदेहोबताशी२तवनही
पवनश्रकासातवनहीपांचतत
सातवनहीरजतमसतश्रौ
तारातवनहीश्रदिश्रंतविसतार
॥श्रदिश्रंतदोनूहैवांनी॥मूलग्यांन
विरलाजांनी॥४॥दोहा॥कहै
वीरधरमदाससं॥तुमगहोमूलन
नासबनायाकेऊपरै॥कऊंजो
श्रमांन॥५॥चोपई॥कछूंश्रपार
रजोपावै॥मूलग्यांनजाकेघटश्र
मूलग्यांनमूलहैवांनी॥मूलग्यां
नकाऊबिलैजांनी॥६॥मूलग्यांन
णिजोपावै॥श्रजरश्रमरहोयले
सिधावै॥नहश्रचुर२हैवांनी॥स
बतैमूलनश्रगमहैग्यांनी॥७॥दोहा॥
हैकवीरधर्मदाससं॥गहोमूलन
सारासबग्यांननकेऊपरै॥मूल
निजसारा॥८॥चोपई॥ताहिमूल

गई बांगी तीन लोक प्रथीस
ग) ते बांगी अटके सबकोई
प्रमूलन राघोनिजगोई ए राघो
न फलन ही काया अग्रमूलन रा
निजदाया कायालापरहेस
प्रांती मूलग्यांन का कबिरलेजां
१० मूलग्यांन जांनि जो पावे
प्रारग्यांन मन कबून आवे मूल
प्यांन अग्रमहे बांगी औरग्यांन स
बजंर वषांती ११ जहां लग बांगी
कष्ट सर रा मूलग्यांन हे गहरगंभी
रा नही बाली भाषा में आवे नही का
गद जो लंघे लषांते १२ लंघे
पठें नही आवही भाषा में नही आवे
हि कहें कबीर धर्मदाससू कैसै पा
वेताहि १३ ताक जो जक
रे जो कोई पावे मूलमूल सो होई हो
यमूलन क बहन ही आवे नही प्रथी
मेनांम धरावे १४ धरनांम संसार

स्वाशा। अधरवस्तुहे नृगमलिभा
। अधरधारणे रहे स्वमाई योजी हो
सो पाई ॥ १५ ॥ दोहा ॥ कहें क
। योजी हो सकल जि

नामूल्यं शंखप्रचेकरौ पावैपदनि
वांन। ईशो पाई ॥ मूल्यं पांन नृग्र
वांनी ॥ श्रीरं पांन सब कूटा जांनी
लगमूलन पावै भाई सब लग
हंसा लोक लजाई १५ मूल्यं पांन हे
नृगम नृपा रा। धरे नां म नृरके संसा
। इनका योज करे सब कोई ॥ नृग्र
मूल रा योजी जगोई १६ ॥ दोहा ॥ क
बीर धर्मदा संसा। छांडो सकल
रा मूल्यं शंख नह चै गहो उतरौ
लक्ष्मी रा १७ ॥ चो पाई ॥ वार पार
बन ही होई ॥ नृग्रमूल योजे जो को
। जो योजे कोइ नृगम नृगा धानां म
रहे न बाधा रहे ताके
ग्यांन निरं मय उा सा थीर

संश्रद्धाई बांणी। तीन लोक प्रथीमें
जांणी। तें बांणी अटके सबकोई॥
अग्रमूल राषो निज गोई। ए। राषो
मूल फल नही काया। अग्रमूल रा
षो निज दाया। काया लाग परहे स
व प्रांणी। मूल ग्यांन का क बिर ले जं
नी॥ १०॥ मूल ग्यांन जां नि जो पावे॥
अोर ग्यांन मन क बून आवे। मूल
ग्यांन अग्र गमहे बांणी। अोर ग्यांन स
व ऊंच वयांती॥ ११॥ जहां लग बांणी
क छे सरीरा। मूल ग्यांन हे गहर गंभी
रा। नही बोली भाषा में आवे। नही क
गद जो लषे लषावे॥ १२॥ होसा॥ लषे
पटें नही आवही। भाषा में नही अ
हि। कहें कबीर धर्म दास सू। कै सें पा
वेताहि॥ १३॥ चौपई॥ ताका षो ज क
रे जो कोई पावे मूल मूल सो होई हो
य मूल क बहू नही आवे। नही प्रथ
में नांम धरावे॥ १४॥ धरे नांम संसार

जो लनागा अधरवस्त है अगमविभा
 गा अधरधरमें रहे समाई योजी हो
 यमूलसे पाई ॥१५॥ दोहा ॥ कहें क
 वीरधर्मदाससं योजी हो सकलजि
 हानामूलशंष्ट प्रचे करे पावे पद
 रवांन ॥१६॥ चौपड़ी ॥ मूलग्यान अग्र
 हेवांन ॥ और ग्यान सब फेंग जांन
 जब लगमूलन पावे भाई तब लग
 हंसा लोक न जाई ॥१७॥ मूलग्यान
 अगम अपारा ॥ धरेनां म अटके सं
 रा ॥ इनका योज करे सब कोई अ
 मूल रा यो निज गोई ॥१८॥ दोहा ॥
 हे कवीरधर्मदाससं ॥ छोड़ो सकल
 रा मूलशंष्ट नह चै गहो ॥ उत्तरो
 लपार ॥१९॥ चौपड़ी ॥ वार पार
 बनहीं होई अग्रमूल योजे जो को
 जो योजे को अगम अगा धानां म
 रहे न बाधा रवे ताके स
 ग्यान निरमय उसा वीर मे नीप

सबभयउ। श्रोरग्यांनसबपालोका
रा। ताकोसुमरनकरेसंसार। २१
रोह। कहैकबीरधर्मदाससंसा
षापत्रकछुनांहि। ज्ञेसोततजो
पावही। सोहंसाहममांहि। २२।
जोपई। धरमदासकहैकरजोरी
कहोमूलमूलकी। मोरी। कहोमो
रितापरिचहिजांउं। तोमैंदरसनु
म्हारापाउं। २३। पायेंमूलरहुसु
षवासा। लोकबेदकी। छटैआसा
कहैकबीरकुलजातिगुमावो।
येहोमूलबहोरिनहीं। आवो। २४।
नहीं। तहांभाषापंथअकेला। न
हीं। तहांगुरुनहीं। तहांचेला। नहीं।
तहांग्यांनध्यांनकी। षांनी। नहीं। त
हांसबदसबदकी। बांनी। २५। नहीं।
तहांपांचततका। वासा। नहीं। तहां
पांनी। पवनअकासा। नहीं। तहांगा
वनहीं। तहांगंउं। बसती। ऊजड। न

ही तहां नां नुं रई दोहा ॥ कहैं कबी
र धर्मदास संज्ञे सो ततह मारा जो
कोइ हंसा पाय है सो ही उतरै है पार
खाचो पई ॥ धरमदास तव विनती
लार्श अरथ सहित गुर दे हो वताई
देषुं पुरष की देहा कौन जतन वे
र है विदेहा रघार है विदेह का हू
नहिं जांती देह धरे तुम प्रगटे अंन
अहो धरम नितो हि कारण संसार ही
आवा स करन गंभान में तो हि सुनावा
रण कहैं कबीर कहूं जो सही जो
षो जै तो आप ही अही आप ही गुरु आप
प ही चैला आप ही पंथ आप ही मे
ला ॥ ३० ॥ आप ही आसन आप ही मू
ला आप ही कली आप तहां फूल
आप ही माली आप फल लार्श ॥ अ
जर देह आप निरमाई ॥ ३१ ॥ कहैं क
बीर जां नैं जो कोई आप ही गुरु आप

आपही अजर सिद्धि करनेही ३२।
आपही अजर काया निरमाई। आप
पही दरपन सुन्य कहाई। अमर पुर
ष सुरति होय आई। कदल ब्रह्म त
वही निरमाई ३३। तब ब्रह्म मानु हो
तानही पां नी। तब नही जीव सीवर
जधानी ३४। ~~दोहा~~ कहैं कबीर
या ततहै। सब ततन को सार। पंच
तत जो आईया। प्रगट भया संसार
३५। ~~दोहा~~। मूल पांन पावे जो को
ई अजर अमर हंसा जो होई। अजर
अमर है अगम ठिकां नां। पावे मूल
सबद निरवां नां। ३६। नही तहां धूप
नही तहां क्वां ही। तहां ग्रह द्वार माया
सुत नां ही। जैसे तत हवे तिंहिं गांई
कहैं कबीर मूल सो आई ३७। अ
जर अमर सो हंसा होई। जैसे भेद पा
वे जो कोई अमर होय बहोरि नही
आवे जो मूल सबद काले पाया

धीः प्रपन्नैः प्रेषधुरैः चित्तलाई मूल
 ३ पापदुःपीपलः कं माईये नाया ची न्हे
 डाः सातः ॥ हि मूल हे सो शी ३
 ते जो देखे कहें कव
 ये करे विवेक ले
 वे निकट को हरि ब
 जे सो अपही आई सं
 कहाई अपही मरे
 या अपही संसे माया
 श अपही डरे अप कर प
 ही तत अतत कहाई ॥ आ
 न्ह तंता ॥ अपही निगम क
 करि मंता ॥ धर कहें कबीर ज
 ॥ कोई अपही सिष्य अप गुर
 ॥ शी हरि कहंतो बहोत सुष पावे
 निकट कहंतो मार न ध्यावे ॥ धर
 निकट बस्त पावे नही कोई ॥ अग
 निगम नटके नर तोई ॥ निकट ब
 नर चित्त कृतावे ॥ अस्थिर होय न

१ षडिपावै ४४ पावैवस्तजोश्रगम
श्रपारा श्रजरश्रमरहेलोकहमा
रा इतीयालोकश्ररनहीहोई बो
लनहारजगतगुरसोई ४५
कहेंकबीरतबपायहो तबधरि
होचितपोय सोहंसागहरगंभीर
है ताकूं यहमतहोय ४६
गहरगंभीरकहावैसोई मूलग्यान
जाकैघटहोई मूलग्यानकापावैले
या श्रगमनिगमसोकरैबिबेया
४७ नांकडंगयाननांकडंश्राया
जोदेखैसोहीठहराया देषनहार
सहीहै नाई जिनश्रगमनिगमकी
सबसुधपाई ४८ कहेंकबीरये
ग्यानहमारा सबहमहीमैहमश्रा
धारा इतनीबातलियैजोकोई लो
कबेदतैन्याराहोई ४९ नांवगंव
कानेदजोपावै श्रजरश्रमरहो
यलोकसिधावै पावैलोकदेखैसु

षवासाः अगमति तस्मिन् स कर्मो धर्मो
वासाः पूर्णो ह्ये कर्त्तव्यं यथा तदर्थं
सर्वतलनको सारं चैव वस्तु च यत्
ल्लहे। बोलनहार अमान। पृथ। लोप
३। वाकेरुसरे अल्लं जेया। सनये
ईजांते कहे अल्लेया। कहे अल्लेय
ल्लेयातह। प्राज्ञान्तकल किंरं स
वृमूलगुगादे। अशांते सवदश
कासकी। बोनी। पोती लोय सोप
वेप्रंन। बो जेयेयतत मन भरती
कहे कदी ल्लो डांती ति रती। पृ ३।
मुनि कै धर सदा समन मांती। अग
मम्यांन उप ज्या अजांती। सार्थ रं स
नी सव को अगान्ने मनम्यांन कानि
मनपांवे अममं ज्ञा पकंते अकं
इ मूनम्यांन विन मुकनि रती
अरप्यतरे ये मवदते इ
रती अरजांते अर
मवदते अरजांते

मूलग्यांनहैप्रमसंतोया। ५६॥ दोहा
कहैकबीरपुकारिकै। मूलग्यांन
कालेषकोइकोइहंसापायहै॥
जाकैहिरदैविवेय। ५७॥ चौपई
मूलग्यांनअगमहैग्यांन। औरग्यां
नसबऊंठाजांन। मूलग्यांनज
सपूरनचंदा। औरग्यांनताराय
नफंदा। ५८॥ फंदिजावैकोइपार
नपावै। मूलग्यांनविनजनमगु
मावै। जहांलगनांवहीपकीबा
नी। तहांलगदेयोजमकीयांनी
५९॥ उलफेजीवमुक्तिनहींपावै
मूलग्यांनलेयानहींआवै। कहै
कबीरसुनौधर्मदासा। मूलग्यांन
हमारपासा। ईवधरमदासविन
वैकरदोऊ। कहोमूलबहोतसु
षहोऊ। अजरमूलसबनसमऊ
ई। कहंमूलबाहरिवहींजाई। प्र
वरतिग्यांनदुमदेहोसुनाई। मूल

पतच्छिपार्श्वसूत्रग्यांनः
 नक्रेभांथा॥प्रवरत्तिग्यांनतुम
 रिराया॥ईरामूलग्यांनप्रगह
 होई॥वंसतुमारजालैंनहीकोई
 नितुह्यारघरहोई॥तातैं
 जायबिगोई॥ईरामायावसि
 बहोतहीध्रौ॥तातैंहंसालोक
 न्द्रौ॥याहीबिरोधवंसनपरप
 ही॥कहैंकबीरकैसैंसतरही
 धाबहोतैजीवनरककौषांनी॥
 धरिबोलैनांतांवांनी॥अंत्रक
 तरनीबहोतन्ननिमांतां॥तेजीव
 नरकनिधांतां॥ईध्रकहैंक
 वीरसुनोंधर्मदासा॥तितंजीवनको
 मपुरवासा॥वंसबीयांलीसतु
 होई॥मूलग्यांनबिनजाय
 ।ईहीवंसबीयांलीसराजमेंधांथा
 लग्यांनन्नपनैंघटराया॥जहांजे
 तहांतेसातांतां॥तहां२

वषां नां ॥ ६७ ॥ सांचा घट योजि जो ले
ही ॥ तहां ग्यान पुनि ते सा देही ॥ जा घ
ट देवो बहो त समाई ॥ तहां ग्यान तु
म देहो दिहाई ॥ ६८ ॥ कहें कबीर जा
णो जो कोई ॥ तन मन धन अर पै पुनि
सोही ॥ मूल ग्यान जा कै घट होई ॥ जो
जन जाय लोक में सोही ॥ ६९ ॥ हेहा ॥
तन मन वारे संत परे करे न सोच अ
सोच ॥ मूल ग्यान हिर दे गहें ॥ सब घट
एके लोच ॥ ७० ॥ तन मन अर पै संत
पर सोही संत निज आय ॥ मूल ग्यान
गहे भोतिरे ॥ फिरि नही जन में आ
य ॥ ७१ ॥ चो नही ॥ मूल ग्यान जो पावै
भाई ॥ सोहं सा सत लोक सिधाई ॥ मू
ल ग्यान गहो अगम अ पारा ॥ धर स
दा सतुम करो विचारा ॥ ७२ ॥ करो
विचार परम पद पावो ॥ तब मूल ग्या
न काले ष समावो ॥ पावै ग्यान ध्यान की
षांती ॥ मूल ग्यान का ऊ बिरला जांनी

श्रमं न जां गिले बा जो पद द्वै सो ही ज
 गमै गुरु क हावै विन पर चै कणि हा
 कर ही वंस तु ह्यार निंदा अनु सर ह
 धा वि च्य ही गुरु श्राप ही हो ई विन
 चै सब जाय बि गो ई उ धा दो हा ॥
 है कबीर धर्म हा स स्त । ते भर में सं
 सारा श्राप ही गुरु क हा व ही ते अट
 म ह्यार । उ ई चो प ई अट के जी
 पार न ही पावै स ही स ही करि ज
 भर मावै मूल ग्यां न अ ग म कौ
 ना । विर स्ना हं स पावै पर वानं
 आ पाय प्र वानां त न मन धर ही क
 कबीर सो प्रां नी ति र ही पावै ग्यां न
 सकी वाने । कहें क

। छटा मूल ग्यां न वाने ही है सारा
 बी सब ह जुग मों हिं प सारा अं थ
 में नी जुग स मा जां वै । सु मर न प्र वां
 न हं स न वर श्रा वा । उ ए । सा धु सा ध
 ष करि ली जो मूल ग्यां न

दीजे मूलग्यान तुम दे हो दिहाई करी
या करित ब्रह्म दे हो सुनाई ॥ ६० ॥ कहैं क
बीर सुनौ धर्म दासा ॥ मूलग्यान है अग
मनि वासा ॥ हंस होय शब द जो पावे
पुतीया भाव कब न ही आवे ॥ ६१ ॥
कटघोज करे न ही कोई ॥ ह
वे नर तोई ॥ कहैं कबीर मूल जो पा
वे ॥ डार पात सब हरि बहावे ॥ ६२ ॥ ह
म ही मार हम ही है मूला ॥ हम ही क
ली कंबल में फूला ॥ आप ही धरती
आप अकासा ॥ आप ही अगनि आ
प प्रगासा ॥ ६३ ॥ आप ही पवन आप
ही पांती ॥ आप ही अंक्र धरि चारु
षांती ॥ क ऊं मूं द्या क ऊं प्रगट पुक
रा ॥ क ऊं मुं नी होय मुनि जो धारा ॥ ६४ ॥
आप ही कांम आप ही जांवन ॥ आ
प अंक्र आप विन सांवन ॥ कहैं
कबीर जांनै जो कोई ॥ आप ही अ
जर अमर है सोई ॥ ६५ ॥ आप ही अम

श्रोतरिया ॥ श्रापही ग्यां न ध्यं
 पुनिक रिया ॥ श्राप से श्राप लिखे
 कोई श्राप ही देही ॥ श्राप छि देही
 ही साषी सब ह भूले नर लोई ॥ भू
 ग्यां न छो जे न ही कोई ॥ भूल ग्यां न
 तन के पासा ॥ साषी सब दजग में
 गासा ॥ ७५ ॥ भूल ग्यां न तुम ले हो
 चारी ॥ पावो लेष करे कणिहा
 ॥ कहैं कबीर भूल जो यावै ॥ श्राप
 तिरै श्राप जीव मुकतावै ॥ ७६ ॥ जे
 यां चढै श्रकासा ॥ विनां भूल
 नही वासा ॥ हे से जीव फिरे विन
 ला ॥ ऊंठा ग्यां न कथे सब भूला ॥
 ए भूल एक कुरम है भाई ॥
 भूलत हों ते श्राई ॥ कहैं कबीर सु
 धर्म दासा ॥ विनां भूल पावै नही
 सा ॥ ए वै श्रव भाषूं काया श्रस
 भूला ॥ भाषूं ग्यां न श्रगमनिज
 पदम ये क कुरम की का ॥ श्रष्ट

रमतहांतैश्राया॥ए१॥सातूंसागर
सपत्तपत्ताला॥चोदाभवनमधिह
जुवालाकहैकबीरसुनोंधर्मदा
सा॥इतनांमैंनहींपावैवासा॥ए२॥
अडसठितीरथदेवतेतीसा॥दा
तायेकमंगतासबदेसा॥मांगीमु
क्तिक्हाधूपावै॥विगसैंकुभजल
मांसिमावै॥ए३॥चोदाभवनमा
धिहैपांनी॥अगनिपवननहींमांसि
समांनी॥तामैंपांचततगुनतीनां
बसतयेकअग्रमोहिदीनां॥ए४॥
अगैबसतकहेउभाई॥कहोवै
अठकौनउपजाई॥कहैकबीर
सुनोंधर्मदासा॥मूलग्यांनमूलप्र
गासा॥ए५॥अष्टधातकीसबका
या॥कहोअस्थूलकहानिरमाया
अष्टकुरमवैतहांरहाई॥कहाभई
उतपनिकरिभाई॥ए६॥पांचततवे
कैसेंभयेउतीनूंगुनकैसेंनिरम

ये जातवनही कायाको अखूला
बकहोरहेततका मूला एजातव
ये कायाहतीन भाई लब्धै कहां र
हे समाई जेवेतानही पावेले वा कहै
कबीर मूल कहं देया ॥ एषतारा मं
डल सब को ईंधाद्वै ॥ मूल ग्यान के सै
जीव पावे ॥ बहोत कतारा है ॥ आका
सा ॥ एक चंद्र नो बंरु प्रगा सा ॥ एणी ॥
ऐसा ग्यान पावे जन को ई ॥ मूल ग्या
न संप्रचा हो ई ॥ विगु सै रिव चंद्रा कहं
जाई ॥ चंद्रा उदै रिकहां समाई ॥ कै सै
भयो दिवस के सै भई राती ॥ कै सै भ
ई क्रम की लल पाती ॥ इतना ग्यान
विचारे भाई ॥ कहै कबीर मूल नि
ज पाई ॥ १०१ ॥ एक कुरम की घर नो
काया ॥ बाण पालंग देह निरमाया
नु पालंग ऊपर ॥ मिरवां नो ॥ ती नलो
क धर म का णो नो ॥ १०२ ॥ पालंग ती
सहज कूं दी नो ॥ पालंग ती

ई हांकीनां॥निरमलपवनतहांरहेस
माई॥कहैंकबीरसुनिधरमनिभाई॥
१०३॥कहैंकबीरसुनौधर्मदासाम्
लगांनमूलसुषवासा॥एककुरम
काकहूंवषांनां॥सप्तकुरमतहां
गुपतच्छिपांनां॥१०४॥एककुरमकी
इतनीकाया॥वेहीभावसबऊपर
आया॥जेठकुरमपदमञ्जुस्थूल
मूलगांनकंबलकोफूला॥१०५॥
तहांफूलफलजोलागा॥अष्टकुर
रमतहांपुनिजागा॥अष्टकुरमत
हांभईकाया॥चारिकुरमचारि
कासाभया॥१०६॥कहैंकबीरसुनौ
धर्मदासा॥मूलगांनहैअगमनिवा
सा॥चारियांनिनुनहींतेआई॥कद
लम्बुह्मनुनहींनिरमाई॥१०७॥पद
मयेककुरमअसथूला॥तहांहै
कदलबुह्मकोमूला॥उपजीनाति
अकासहीध्याई॥लहलहकंबल

तहांनिरमाई॥१०॥ जहां३कवल्लत
हां२फूलनयेछातहांतहांकायानि
रमयेउकहैंकवीरसोहीभलिजा
नीमूलग्यानजाकेहिरदिसमांनी॥
१०॥ कायाग्योबलितेजोकोईहस
तीपंछीचीटीहोई। होइअबैलभैस
अरुगाईनरदेहीसबकुपरिआ
ई॥१०॥ नरदेहीजोपावेप्रांनी॥ गह
ग्यानजोअगमनिसानी॥ पांचतत
हाथिकरिलेही। तीनूगुनप्रचक
रियेही॥११॥ छलवांअगमकहावे।
सोही। जोजनसमकेपावेओही। पां
चततलेहाथिसमोवेतीनलोक
कीवातहाथिजोआवे॥१२॥ मूल
ग्यानलाकुपरराया। तिहिपावेको
ईसंतसुनागा। कहैंकवीरसुनोनर
प्रांनी। मूलग्यानमूलहैंबांनी॥१३॥
तातैंअरुअरुतमनिभयेउमूल
ग्यानसबही॥१४॥

हांकीनां॥ निरमलपवनतहांरहेस
माई॥ कहेंकबीरसुनिधरमनिभाई॥
१०३॥ कहेंकबीरसुनौधर्मदासा॥ मू
लग्यांनमूलसुषवासा॥ एककुरम
काकहं वषांनो॥ सप्तकुरमतहां
गुपतछिपांनो॥ १०४॥ एककुरमकी
इतनीकाया॥ येहीभावसबऊपर
आया॥ जेठाकुरमपदमअस्थूला
मूलग्यांनकंवतकोफूला॥ १०५॥
तहांफूलफलजोलागा॥ अष्टकुर
रमतहांपुनिजागा॥ अष्टकुरमत
हांभईकाया॥ चारिकुरमचारि
कायाभया॥ १०६॥ कहेंकबीरसुनौ
धर्मदासा॥ मूलग्यांनहैअगमनिवा
सा॥ चारियांनिजुनहींतेआई॥ कह
त्मब्रह्मजुनहींनिरमाई॥ १०७॥ पद
मयेककुरमअस्थूला॥ तहांहै
कदलब्रह्मकोमूला॥ उपजीनाति
अकासहीध्याई॥ लहलहकंवत

तहांनिरमाई॥१०॥ जहां२कबललत
हां२फूलनयेउ। तहांतहांकायाति
रमयेउ। कहैंकबीरसोही। सतिजं
नी। मूलग्यांनजाकेहिरदेससांनी॥
१०। कायाग्यांनलियेजोकोई। हस
तीपंछीचीटीहोई। घोडाबैलमै
अरुगाईनरदेही। सबऊपरिआ
ई॥१०॥ नरदेहीजोपावेप्रांनी॥ गह
ग्यांनजोअगमनिसांनी॥ पांचतल
हाथिकरिलेही। तीनुंगुनप्रचा
रियेही॥११॥ छत्रवांअगमकहाले।
सोही। सोजनसमकेपावेओही। पा
चततलेहाथिसमावो। तीनलोक
कीवातहाथिजोआवे॥१२॥ मूल
ग्यांनताऊपरराया। तिहिपावेके
ईसंतसुनागा। कहैंकबीरसुनोंनर
प्रांनी। मूलग्यांनमूलद्वैवांनी॥१३॥
तातैअरुअलमनिभयेउ। मूल
ग्यांनसबहीनिरमयेउ। मूलवांन

७ मूल है काया। मूल सब दत्तै लोक ब
नाया। ११४। जो षो जै सो पावे मूला।
पावे मूल अगम अस्थूला। पर चा
होय सब दत्त सारा। बिन पर चैव
हा करै गवारा। ११५। बिन प्रचै लोक
नहीं आवै। भरम्या जीव पार नहीं प
वे। ११६। देहा। लोक लोक सब क
हत है। दे बिन आया कोय। मूल ना
वनि जग हर हो। आवा गवन न हो
य। ११७। जो परी। वार पार सब पर
चा होई। पाव गपान अगम निज सोई
साधु सेवा जां ऐं जो को ई। अगम गपान
न जा कै घट होई। ११८। अगम गपान
की जु गति जो पावे। सो साधु की सेवा
ल्यावे। जो साधु को भाव पहि चानै
सो साधु की सेवा ठानै। ११९। देहा
साधु साधु पहि चान ही। सो ही लोक
कनि वासत न मन अरये गुरु को
जग सहोय उदास। १२०। जो परी। मू

ग्यान योजि हो भाई। सो साधु निज
 बहस माई। ताके देह नही है का
 । जिन मूल ग्यान काले पाया ॥
 २१। पावे लेषा साधु कहावे। सो साधु
 वन मुक्तावे। कहैं कबीर सुनो धर्म
 । साधो सब दकाया के पासा ॥१
 २२। काया तल जां रों जो कोरी सो साधु
 प्रसथिर घर जोरी। सथिर होय बहो
 रिन ही आवे। साधु कुमाई जो चितला
 । १२३। साधु कुमाई लगम अपारा।
 ही साधु जिन तन मन मारा। कहैं क
 बीर सो साधु कुमाई। सो धे मूल और छि
 टकाई। १२४। जानि कै करै शृष्ट मूल
 पा। मूल ग्यान गह हिर देवि से या रहे लो
 बहो रिन ही आवे। जो मू
 लेषा पावे। १२५। मूल म
 ई दुतीया भाव क
 दास तु मलेषा ले हो भ
 डा दे हो। १२६। भर मेहं

पुनियच्छेमोहिनारचठावेहंस
मारात्लेषामावे सोहीहंसलोक
कंश्रवे १२७ वंसतुमारागुरुकहा
वे सांचकहंतामाराध्यावे १२८
कहेंकबीरधर्मदाससंस
बदकंषोजिबनाय विनांसबद
कहंसा हाटेजमपुरजाय १२९
जातिपांतिकुलबोवेदोई
शरुपरुपाहंसहोई हंसहोयजी
वनमुक्तावे फंदाकाटिलोकलेख
वे १३० कहाहंमारासांनैकोई सो
हंसानहीजायबिगोई शरुपरुछ
जोकोईपावे ज्योरग्यांतसबहीवि
सगावे १३१ कहेंकबीरसुनोधर्म
सा बोजोग्यांतमुमन्नगमनिवास
धरमदासतज्जग्यामांती टेके
रतयसमग्रहन्नी १३२ तव
रुपुंविनतीलाई ज्जगमग्यांत
सावसुपाई केसंनयोसबद

नेवा के सैं करुं तुजारी सेवा ॥ १३३ ॥
 जिहि सेवा पुरष सुख होई नेवा पुर
 षवता वो सो ही तन मन ले सैं आगे
 धरि हूं अब ध्याना बुक बू नही करि
 हूं ॥ १३४ ॥ कहैं कबीर तो रे मन आई
 सो ही करो जातैं लोके जाशो एक बूंद
 सैं सब की काया ॥ कं कं पुत्री कं कं
 पुत्र कहाया ॥ १३५ ॥ कं कं साता कं कं
 विटीया होई सुत होय वैटी सो
 ही कं कं पुना कं कं बहू कहाई कं
 कं नां नां कं कं अजीया अर्धा ॥ १३६ ॥
 एक बूंद तैं ये ताल गाँवो ॥ कै सैं सब
 दरमारा पावो ॥ तो रा कुल पायां उ
 अमि सांनी सेवा पुरष मल करि
 नही जाना ॥ १३७ ॥ ऐसी चाल चलै
 जो कोही काल दलाता कूं नही होई
 कहैं कबीर सुनो धर्म दासा सेवा सु
 धि पुरष प्रगासा ॥ १३८ ॥ उपजे लहरि

णिचहावे तनमनवारे सोचलिआ
वे तवचटिपेही गुरुपदपावे १३
ए मूलग्यांनजाके घटहोई वारेत
नमनदोनकुलषोई १४०
तनमनवारे संतपर मूलग्यांनसु
षहोय कहें कबीरधर्मदाससौ
कायामायादोय १४१
मूलग्यांनघटपरचे आवे काया
माया अनिचहावे कहें कबीरसु
नो धर्मदासा तंकारमेनी कहुं प्र
कासा १४२ हूजासेदनही तवक
हीया मूलग्यांनयेही मतरहीया
साही सबदयो जोहो प्रांती मूलग्यां
ननेहो पहिचानी १४३ मूलप्रवां
नअगमहे भाई मूलग्यांनकाऊ
बल्ले भाई कहें कबीरधरमनिसु
निलेहो साही नेरसाधनकंदेहो
१४४ धरमदाससुमकरो विचारा
यो जा ग्यांनमूलनटकसारा वाहीमू

लतैं आईवांनी ॥ आईवाणी सब हसहि
दांनी ॥ १४५ ॥ जो पांवे लेह सह मारा न
ही तो जायको लसुळ हसल ॥ मूल गुणां
न ऊपर निज आदीं श्रीरग्यांन सब
चले बहाई ॥ १४६ ॥ मूल गुणांन संतन
के पासाको लिप्यांन जगमै प्रकासा
अहोसाहि बसक जिनती तांनुं ॥ मूल
ग्यांन काले व्यापांनुं ॥ १४७ ॥ कहैं कवी
रसुनौ धर्म रसा ॥ अचर सब दजुगमां
हि प्रकासा ॥ अहोसाहि बबे नवौं क
र जोरी ॥ सत गुर कहो सब दकी मोरी
१४८ ॥ कहो लेरिता पर चहे आंनुं ॥
जेमै मूल गुण मारा पांनुं ॥ पांनुं मूल
अगम की वाणी ॥ तब प्रमो धूं चो रस
वांनी ॥ १४९ ॥ चारि यांनि पर अचर
आवा नर प्रांनी का हू बिरले
नर प्रांनी है सुष्ठम काहा ॥ तामै ग्यां
नव सै ओ गाहा ॥ १५० ॥
मब हो तब डग्यांनी वं

व
हदानी लखर मांभ्यां लखर हर
कबीर पावे जो कोई १५१ सो
पावे जाकं पुरष जो देही लखर
दयक करि लेही पावे नेदुतरे
पारा मांन रहे काया स्ववारा
र ले हो विचारि पार पद पावे
को साधू लखर घर लखर लखर
घर की लखर महे मोरी लाधे हंसा
घाट किरोट्टी १५३ कहें कबीर सो
प्रगट लखर मोला सत सबद साधू मु
षवोला सत्य सबद सुनें जो कोई
निरंतर होय कै लागे सोही १५४
ये प्रान्त हंस्काले पा माया मंदक
हुव फल बसेषा वंसतु मारा माया
कुंधावे विगडे हंस लोक नही लखर
वे १५५ सांगि सांग कणिलेही
लखर मांभ्यां स काल कं देही पंथ में ह
लखर ये कणिलारा करे लखर दो जग
बिसतारा १५६ सो पापी के से निसत

ही बहेत भांति जो कहे लिये सहा रही।
 जसब नीयां हलवा लिये सहा रही। बोल
 बसत दगा जो कह रही। रखा पास ग
 चै हो रिहरि जो कह रही। जैसा कणि
 हार हंगा जो कह रही। रखा हो हा कहै
 कवी र्धर्मदास हं जैसा होय कणि
 हार। कह्यो हं स्या लिये कों अटके
 जमके हार। श्रुति चो पश। पहरी द
 त कणि हार कह्यो। संगी साष्टांगो
 हन ल्या जैसा लो भगति काल की।
 ई जाम लिये सैना जैसा ई। अ
 पनां धातु करि नरीयर मोरा। बाप
 धनी को को न निहारा। अंधानर अरु
 अंधी लारी। अंधे न कि नही आयह मा
 री। ई ई नैना सिकाम सत गकांतां
 भूले कि रैष सम नही जानां। बांधि जी
 व जम ल्यो धाकीनां। अंधेतर पुरय नही
 चीनां। ई ई ये सब बणीयां करै पसा
 रा। जैसे लोभ अटके कणि हा

का करे बहोत बिसतारा धरमही
नता करही पसारा १६३ आय
तहां कहें प्रवांनों सबद प्रछाका
फुनजांनों चोकारो टमिंवाइपां
नां येही जुममें आय प्रवांनों १६४

सबद हमार नपाय है ॐ
समूह अर्थात् बिन जानेनां ऊब
रे कहें कबीर सुजांन १६५

ये सब बनीयां करे पसारा वे
चत बस्तन त्यावे वारा ॐ से मुग
धर्मांन सूं नले सांणिक छोफिकं
कर मन चले सांणिक छोफिकं क
र मनमांनों कं कर ताहत सबे डि
हंनों मन च्यत कं कर का फुनजां
नों कं कर सूं सब जगति पटांनों
१६६

कहें कबीर भूले क
गिहारा भेदन का हू पाय अपनों
लाख चकारों चोका करे वनाय
१६७ चोकाको बिसतार खना

सवदकालेषा जं न न पावै सव
 लेषा यो जै जो को नी पार सव दन
 अचर सो ई ई ए अचर मे न ह
 प्रचर सारा निहि ना वै को इ हं स
 हं मारा हं स हे अलि रे धै सव बां
 अचर सव द करे पर ह चां नी ॥ १७०
 प्रचर प्रो द क ते व क रि हा रा न ह अ
 चर ग हे लु ते रे पारा क हे क वी र
 ह नि लि चो वै ॥ अ प ति रे अोर न
 कूं सारै ॥ १७१ ॥ ती न लोक ज म जाल
 पारा ने स अ र म अ ट कर म अ चारा
 अचर जे द स व ड नी भु लो नी ॥ स
 व द अ व का क न ही जां नी ॥ १७२ ॥
 प्रथे मो हं सा हो ई ती न जी तै पु नि
 ई जि हि तै हं स लोक कूं आवै ॥
 प्र स्थि र पां न मां नु ष जो पा वै ॥ १७
 र नि ज मे ज वि चारा सो
 हं स हे अ ग म अ पारा ॥ १७४ ॥ इ
 जं न म अ न पां न संपू र णा ॥

लोक

पंचमं मीरसंग करिसोर्न
 रति मूरति बुधि गद्दे बांती जतः
 जतन करिका योचिते रा नषस
 षस कल संवा स्या देरा १ सक्श्रो
 जर संवां स्यानी का क. जकरो म
 हरम उ स पी व का र्चु वृ द्द तै ए छ
 वि की नू र्ज मो ति मा शे लि ष ही
 हां २ करी त्पार ता ल व जी व मे ला
 पांच म ही नां मु म क ति षे ला ज व र श्र
 ग न्नि क व द्द न चा षी त्द व ल पी व
 कौ न वि ष र ग षी ३ श्र र्धे पा व श्रो
 धे मु ष र ही या श्र र ज श्रा प नी पी व
 म्क ती या श्रा जी ज हो य पु का र पु क
 र्श्र व तो सा हि व प ल न वि सा रूं ४
 श्र व के का लो मे रैं तां ई नि स दि न वि
 ज म ति क रूं गु सां ई पु नी यां से ती
 ने ह न ल्या उं दि न न रि रा ति ते रें गु
 मां उं ५ गु न मां उं पी या प्रे स सं

में कसो करारा ॥ ११ ॥
था तब अति धरु ॥
को लोलक ॥
नीयं मिलिकी ॥
बाव जब लागी ॥
लक्ष्मी ॥
वे जो दिजेदि ॥
दोय चारि मौर ॥
डो घुघर मेल ॥
नहीं जाँने ॥
नैन हल ॥
रंक एक ॥
घोई लड ॥
ति आ ॥
गई तल ॥
मजां ॥
११ चाप ॥
कां म ॥
में नां ॥

काले १२ बरदसूरतिबदन्नमलपु
वे नेकी निजरे कासांग ननावे
जीवनांते मरनां घृव फरामोस
कीन्हां महबूब १३ जोरकरे वहदो
जगकरनी जानतनांही बरयां सर
नी गजचुरंगपटं मरमेवा नेतषवा
ससाहिबी सेवा १४ केतजोषमा
हिलदीया कादरन्नपनां यादन
कायां दाहीपकरे छां हनिहारे दे
धिन्नारसी मूठ संवारे १५ दीनछो
फिडनीयां हिलदीया जहरघोरि
मृत करिलीयां अजबन्नवाज
एकनहीमांती मैलीसंगतिवेवा
प्रांती १६ रातिगुमाईतरनीसंगा
दिनडनीयां मैकेत्योरंगा हालवे
दरेप्यामाथाका गरनगुमांनकरे
कायां १७ ज्वांती घोईजिन्याकौ
हारा साहिबन्नपनां क्यूनसंभार
पकडे नाडे सीसकरकं पै बल

बलमयः रिसुगच्छ
 याजबपुरजनके
 चसमचुवेपांनी
 लठरांनी छंचेला
 कहें श्रोरश्रोर
 जीजसकुल
 साविभूतव
 छीनघरली
 न्हां २००
 उघरेश्रदबग
 रुकबीलोक
 नरहे ११
 कौकबीरव
 वबलके
 लारं २२
 वीरहाए
 चरे ३३
 अजरा
 हेवांनव
 संश्रेंदंनरा

लसबमेरा २४ रोके हलकसास
नही आवे पकरेसी सबऊतउम
पावे कहांवे सेजकां मनी सुषा ॥
तेरा कौन बिटावे दुषा २५ कहांवे
प्रेसपरोहितसंगी ॥ सेजगलीचासे
जांचंगी ॥ कुंटसलीतातो बदमांमां
कहांवे मांलचंद्र के जांमां २६ चु
वाचंद्रनजगसुषासन तेलतं
बोलकहांवे वासन ॥ प्रभुबंदगी
तबनही करी ॥ कौनचुगावे सुस
कलिपरी २७ तबतुमकांमकुमा
येसेसा ॥ अवाफिलसुषचाहेके
सादिलकामालिकदिलमेंसुनें ॥
सांवांबोयगोकुंकहांलुनें २८ की
याअपनाअपहीपावे ॥ साहिवकुं
कादोसलगावे ॥ रोवेषवासपा
ससबठाने ॥ कौनचुहुंबंधनपरेग
हे २९ ॥ अजरायलसों कहावसा
॥ कौनसरी ॥ दरदके ॥ नाई ॥ कां

गारो लोकरै सब को राजा प्रापनी स
बनेषो शीतल तब दोषार मलेही आ
ये। तो साया सातर लखिलां दो। सब
लेषो स्या घाघ मै ही आ। संग चल्या सो
जीवत कीया। रश होहा। पातेरी बुं
न्यादि हे बं हे दिले में लखो जो या करो
कुमाई बूब सी। साहिब तां सिल होय
उश कछु न रहे संसार में। फनां फनी
करि जांति। कलि सांवी। की बंदगी।।
या गो रु मै दां ल। रश सबै कहा वेल स
करी। सल ल ह कर कूं जाया। से ल ध मं
का सो सहे। से जा गीरी वा या र ध। इति
श्री न सी य ल नां मां ग्रंथ संपूरणः।
अथ मूल की सी ही लिखते।। चाप
ई ध र ग द स ज ब वि न ती की न्हां। ग्यो
नी ने द कं जिन्य नी कां। नरी य र के र
क हो लि र मा नु। लेषा मूल ने द मै पा
उ श अ हो ध र म नि
के न्द्र ल

गुप्तनामजोश्रगमश्रपारा नही
 कोइपावेघोजगवारा २ गुप्तनां
 महेपुरषहीकेरा पावेहंसछांमैज
 महेरा दछालेयनांसनहीपावेफि
 रिफिरिचौरासीमेंश्रावे ३ पावेमू
 लपुरषकेबीरा गहनकालविष
 मकीतीरा मूलनांमहंसनिसतारा
 पावेगमजबहोयसम्हारा ४ नांम
 प्रतापहंसजोपावे घोजैमूलसत
 लोकसिधावे श्रहोसाहिवइतनी
 गमजीवकेसेपावे कैसेकैसतलो
 कसिधावे ५ लेषामूलमेंश्रगमही
 भाषा श्राननेदमेंगुप्तहीरावा पं
 चतनगुणतीनसमानां कैसेनरछां
 हैश्रनिसानां ६ श्रहोधरमनिघोजी
 होयसोसबकबुताके घोजमूलपु
 निजमसुंवाचे ७ नांमप्रताप
 नेइसहीहै चीन्होंकोइनजाय क
 रेंकलीरसोजांचही गहैमूलचि

तलायाह। चोपई। अहोसाहित्यक
 नीगमजोनहीपावै। नमस्तकारनिस
 दिनलोलावै। शोरगमजगोजनक
 रही। सोप्रांनीवै। सैजिसरही। ॥ ॥
 तोनजीवकैसैसुकलावै। पोसाहित्य
 मोहिभेदवतावै। अपनाजामसंने
 होवचाशी। तुहरेकारनपटिरहे। गो
 लाई। शो। अहोधरसनिहसरेनांससं
 मुकतिनहोई। शो। वैहंसाजायचिगा
 ई। नांसहमाह। अंसनकेनाई। उनें
 हंसलोकनहीजाई। शो। अंसममयी।
 नांसहमाहा। कैसैहंसाउत्तरेपारा।
 जबपावैसूलनांसप्रवासां। इमगनां
 मलेकरैपयां। नां। १२। मूलबिनइम
 हीलेलावै। सोहंसानोकरही। अंव
 पावैमूलसुनिजपेकदीरा। सोई। नय
 भौजलतीरा। २३। पावेननप्रपदति
 सतारा। सोहीपेकेडेपुनिनें। ॥
 १४। वेलाकहैकवेरदनें। ॥

मूलत्रयपार। जोकोइहंसापावही। प
ऊंचैलोकहमार। १५। चोपरी। अहो
साहिवजुगन२तुमहंसमुकाई। ता
दिनमूलकौनसीवांई। जुगन२तुम
हंसनुबारा। होताकहांतबमूलनं
मारा। १६। अहोधरमनितुमकछून
जांनां। बोतबचभाषोअग्यांनां। जु
ग२मूलप्रवांटे। आई। मूलहीसंसब
हंसबचाई। १७। विनांमूलएकोन
हीवांचा। फिरि२चोरासीमैनांचा
प्रथममूलजोपुरषवषांनां। जुगजु
गमांहीहंसचुटांनां। १८। जुग२लेषा
मूलप्रवांनां। हंसापऊंचैलोकवि
कांनां। अहोसाहिवचटिकेमूल
प्रवरतिसमाई। ताकागुनमोहिदेहो
बताई। १९। कैडुवैकैवांचेभाई।
कौनभांतिलेहोमुकताई। चटिके
मूलप्रवरतिसमाई। सोसाहिवके
सीगतिपाई। कैसीगतिताजीवकी

होशी जो चट्टिके मूल प्रवर तिजित
 देशी नर हो धर मजि चट्टिके मूल प्रवर
 तिगहले शी प्रवर की जरा पत्नी ता
 देशी २१ देह मली लालख कर जागे
 धर मराय के कले लमो। सुठ ठो डे ड
 पलेय उदा शी जव चौरा सी नर मे
 ना शी २२ शिवार बार पडे ग्रन वसे रा
 येको जल महे लन मे ड। जहां लग
 जो एा है लि स नारा। नर मे जीव पुनि
 बारु बारा। २३ रा मल सू चू कि मर क
 विसि परा शी। २४ व मर क ट मित छे
 कै जां शी जहं जहां जाय तहां तहां धा
 । बहो ल नालिक रित्रा सदिषा वै॥
 धा ३३ सै चर जो ही संक नां कर ही। ज
 माल चू कि मर क ट विसि पर ही॥
 चू के डु व ल ह सरी रा। त व मर क ट
 निच्छां डि सरी रा २५ ३३ सै मूल चू
 नर क परा शी जै सै मर क ट आधा
 सु मा शी २६ ॥ देहा ॥ चारि बो

मूलश्रृंगार जोकोइहंसापावही। प
कुंचैलोकहमार १५ अहो
साहिबजुगन२ तुमहंसमुकाई ता
दिनमूलकोनसी। वाई जुगन२ तुम
हंसनुवारा होताकहांतवमूलनं
मारा १६ अहोधरमनितुमकछन
जानां त्वांतवचजायोश्रृंगाना जु
ग२मूलप्र ताहेश्राई मूलहीसंसव
हंसवचाई १७ बिनामूलएकान
हीबांचा फिरि२ चौरासीमैनांच्या
प्रथममूलजोपुरुषवधांना जुगजु
गसांहीहंसचुटांना १८ जुग२लेधा
मूलप्रवांना हंसापकुंचैलोकवि
कांना अहोसाहिबचटिकेमूल
प्रवरतिसमाई ताकागुनमोहिदेहो
वताई १९ केइकेकेवांचेमाई
कोनभांतिलेहोमुकताई चटिके
मूलप्रवरतिसमाई सोसाहिबके
० सीगतिपाई केसीगतिताजीवकी

दोरी जो चहिके सुख प्रदरा गिचि
 देरी नरहो धरुमनि चहियु प्रदर
 तिगहलेरी करुपनो जरा प्रलीला
 देरी २२ देहमलीता तस कल
 धरमरायके फलेनमो सुख हो
 मलेय नवाडी लभचौरासी सररी
 नारी २२ बार बार पडे शन बसेरा
 येको जनम होय नमे डग जहं लभ
 जौणी है बिसतरा भरमै जीव मुनि
 वारु वारा २२ माल सूचुकि मरक
 टषिसिपराई सखमरकट मिलते
 कै जाई जहां जहां जायतहां तहां धा
 वी बहोत भांतिक रित्रापदिषावे ॥
 २४ ॥ ३ ॥ से गुर प्रोही संकनां करही ॥ ज
 समाल चूकि मरकटषिसिपरहं
 जो चूके दुषसहसरीरा तब मरक
 निचांडिसरीरा २५ ॥ ३ ॥ से मूल

२३ ॥ दोहा ॥

9 अटेहंसा मूलमें आग्रसमाय मूल
 लके चक्रे हंसा नरमें जमके हा
 धिविकाय २७ सृष्टी आसास
 बदका लगी कालका मोरि क
 हे कबीरमें कहा कलं फंदमें प
 आ बहोरि २८

अकलिपीरहे मनमुरीद
 हे असलिगदाई तनसईद विचार
 अस्तीवा विप्रवास घाती दो जगी ही
 मति किताव तक्वरइसमन गुसा
 हगंम देव हलान नपसंसेतांन
 वेही ननां वाक ईमान प्रोही नाल
 ना कतही नांदल प्री दरदवंददर
 वस वेदरदकमाई मनीगाफिल
 मुदी गुमरा बेरतोसा बेयेरबकील
 ईमान गुसलमान वेईमान बेफुर
 नोन जोरी गुनस सांचिस्त दो
 जगप्रोग वेलमयंम हे जोमहरम

ननीकी॥वेबद्वंदी

जोरीपनीती॥ब्रूऊआरूपाना

वानांरूपादवादेकतिवेद

रितेगांनीमरवांनी॥अदलिपात्त

साही॥दमेंवरकत्तिलावात्तूती

कत्ति॥अवेतवेगुलांमाअसीत्त

कंसलांमादांमांजोहरी॥वीनां

सराअकलिकंकलांमाकलांम

कंसलांमा॥महरमासूरासाहिवन्

राअत्तमहदासाहिववेहदांराह

पीरांवेराहवेपीरां॥अवरदीनावे

ववेरेवेदीना॥मुरीदीहिजरीनांहज

नांमुरीदी॥फकीरीसबूरीनांस

बूरीनांफकीरी॥वावाअदमा॥मा

माहवा॥सकामदीनेचठातवा

पहलीरोटीफकरकंदवा॥नांहे

फुटेकंकाहूटेतवा॥फकर

हेलेअपनीहवा॥कमाईयांक

नांकासाईयांजनालाहाजरां

४ जूरि साहिवनरपूर गरुसात ७२
 सदहक दिखदरीयावमहोवति
 बेदाहदीदारअलाह सुपाकमहं
 मद एकबातधैराइमानमुसलमां
 न जिनकामनसंजन जिनकावेडप
 पार सुनताहेयारां फकीरांकुछि
 कहताहे पटीएहिंदसथांनी हेसा
 वधांनी पढोमुसलमांनी रहेआवा
 दांनी करारकेमाथेदरार दरार
 केमाथेलकरी लकरीकेनाथेफ
 कीर गुरुमहरवांन चेलापहलवां
 न अकगतिकबीर कुदरतिकमा
 ल आवेमोजेकरेनिहाल

संतदाससनगुरुकेचरण तिनको
 गऊंसोदिठकरसरणां जातेउपजे
 ग्यांनविचारा छेकरमभरमव्य
 ७ वही १ बऊस्यंजकजजमनहीश्री

अंतिमको निजालक्ष्यमांजं जिज
 को आग्निहिरक्षैर्धैरैः लोकहितार्थ
 थभाषाकरं श्रीश्रीभगवांनविं
 चही माष्यो सो विरञ्जनासदसौ
 श्यो सो ज्ञरक्ष्यसही समजा
 यो व्यासव्यासक विमुमुही पता
 यो श्रीसो सुधक होपरी चतश्च
 ! च्छोदितसुपलसो जागे सोही
 तश्च जङ्गलिसतरे सहंश्च
 सीरिधमनहरे श्रीभगवां
 आपये माष्यो तातैनां मभागवत
 राष्यो ज्ञापमिलणाको पंशुवता
 ! यासारगवकुतन हिरपायो ५
 हा ॥ व्यासदेवजो भागवत भा
 दसस्कंद ॥ तिनमें ये कादस
 ! नैनलहे जूंश्चर्धर्षो चोपई
 कादसकती सञ्चध्यायः तिनको
 रो कहों सुनाय ॥ यडकुलनास
 सेगायो ॥ बहोतभांति

उपायो ७। हरिपुर पंथ कह्यो सुनि
चारी। जन कह्यो जोगे सुरन विचारी।
सो नारद बसु देव ही कह्यो पायो।
ग्यान प्रमपद लह्यो ॥ ७ ॥ छठे कृष्ण
उद्धव प्रस्ताव। तेई सकरिनि जग
न सुनाव। द्वैयादव विना सबिसत
र। येइ कती सग्यान निज सार ॥ ८ ॥
श्री सुष देव करत शरंभ। प्रोता
नृपति अडिगत जिअन। तव सु
प्रजीये कीयो विचार। ग्यान विना
नांही उद्धार ॥ १० ॥ तातें ब्रह्म ग्यान
समुकां उं। प्रथम ही दिटवै राग
उपां उं। पंषी उं डै पंषु डै जैसे। ग्या
न वैराग मिलै हरि जैसे ॥ ११ ॥ राजा
सुनौ जगत सुष जैसे। जिन सूना
ग्य नरमत नर जैसे। नये कोटि ल
पन कुलयादव। ज्यंघन घमडि च
हंदि समादव ॥ १२ ॥ तिनको वज्रत
भांति बिसतार। गिनती करत लहे

।नवनव्यापकैः कवलक

।नवनिधितहांबसेरालीयो।१३

हरिसुधरमासभासंजारीवेते

हांव्यापैकासीतिनकीसमता

उं।तीनलोचनैककं

नपांउं।१४।तिनकीबातकहतः

वश्रेसी।पलकमांहिसुपनांकीजे

।च्यारिघरीभैसबसिघारे।जंबु

दबुदापवनकेमारे।१५।महस

तहांकोलिकहारे।आपहीआपस

कत्नसिंहले।विप्रआपकोकी

व्याज।दिसबकसुदेवकेकाज।

१६।नोगनकौवैरागजनायो।उरुव

शदिहारासुमुजायो।प्रथमनीम

अरजुनहैअनी।उष्टनृपतिअरु

न्याहनी।१७।याविधिभूकोभार

तास्ये।नांवरूपजसकौबिसता

।जाकंगहिपडंचेभोपारा।आगे

नहोदिअपारा।१८।बकत

तिकरिन्द्रदभुतकरम॥थाप्पोजम
तभागवतधरम॥याविधिसवके
काजसंवांरे॥तवहरिजीवेकूटप
धारे॥१७॥दोहा॥श्रेसीसुनिन्द्रदभु
तकथा॥यडकुलकोईजश्राप॥
प्रह्नकरीराजातहां॥त्विवेतिन
कोपाप॥२०॥चौपदी॥राजाउवाच
तेतोविप्रभक्ततेसारे॥प्रमदांनीन्द्र
रुसेवकभारे॥विप्रकोपकीनोंक्यू
पूरन॥जातेनासभयेसबतूरन॥२१
कौंननिमतिश्रापसोकौंन॥कहोकर
पाकरिकरुनांनोंन॥येकमनांया
दवतेसारे॥श्रापहीश्रापकौंनविधि
मारे॥२२॥श्रीसुषुतवाच॥भूकोभा
रहरनकेकाजा॥भूश्रवतारलीयो
ब्रजिराजा॥बहुविधिभूकोभारउ
तासो॥तबमनमैंगोपालविद्यासो
२३॥जेलगहेद्यादवकुलसारे॥तो
लगनहीं॥भूभारउतासो॥ममश्राधि

नरहैंतेसरोसातेनिकुकरबनेल
मारेरुआहजोबोईरुआहजो
तातेवकीजेजतजदिसाणी।उभोवकु
बांसवतेबनमाहो।मजनिमते
पायसरबांशी।।ककरनापमें
गनिउकावे।।तासुकरपपशकनज
रिजावे।।तेहो।।ककरपनवदिसाप्राप
कोधकरसनिने।।ककरनी।।कपाएई
करिविरसा।।तेहो।।ककररायेठह
रायोकरहृदित्त।।नालो।।आयेसकल
रिषी।।पुरओ।।ना।।विकं।।टेवेत्रकर
वायोगौ।।नार।।प्र।।चिवन।।अंगीरावि
स्वामिं।।त्र।।इ।।वासा।।अशुअत्रेअगति
कसिपल।।मदेवअरुनारदाअ
वरवकुतरिषवकुतविसारद
रुततहांसवेमुनिंसेवेवे।।यउकु
मारतहां।।कलकरिपेवे।
नितासेववनायो।।वस्त्रा
अधिकारयो।।रणअति।

चरननलागो॥ प्रहे प्रसनधरेतिन
श्रागो॥ येवनिता प्रहे द्विजेराजा॥
सुनमुषहोतलगे अतिलाजा॥ ३०
निकटि प्रसवश्रायो हे याको॥ क
रोविचारश्रापमैताको॥ तुमत्रि
कालदरसीसबजाणो॥ कहाज
णोसोहमहीबयाणो॥ ३१ तवकरि
क्रोधवचनअसनने॥ कुलनास
कमूलयेजनै॥ जातेतुमवकुमद
संमाते॥ इष्टबुधिहोउसबयहांते
३२ वैनसुनतमनमैनेश्रायो॥ त
वहीताउइहीछिटकायो॥ देव्योत
हांलोहकोमूसल॥ तवतिनजांन्यो
नांहीकूसल॥ ३३ तेसबवकुतना
तिपिच्छताये॥ लीयेमूसलराजापै
श्रायो॥ उग्रसैनसंबोलेवैन॥ अतिम
लीननहीजोरेनैन॥ ३४ सुन्योश्राप
अरुमूसलदेव्यो॥ जीवनसबनग
योकरिलेव्यो॥ मूसलरेतिचूरणक

रवायो ॥ कुश्मनप्रहृष्टैः सलं प्रवृत्त
यो ॥ इति तत्तत्तु ॥ कुलोत्पत्तिवृत्त
ताकं निगत्मगयो ॥ इत्यस्य लालिभू
रनलहं रिनके नरो ॥ ज्ञाते तीर न
येत्रेण नारे ॥ इही ॥ इति तदयेकजा
लविसतस्यो ॥ इति तदयमस्य स
पस्यो ॥ ताके उ ॥ इत्येह सोपायो ॥ व्या
धियेकसो वा तलनायो ॥ इति हस्ति
वातसकलसो जांती ॥ इति तमं ह्नि
हिरदोभं शोनी ॥ इति पिप्लो गुरुम
थाकरणं ॥ इति मं नशां हि सकलसं ह
रणं ॥ इति येषु विध्य सकलश्राममन
भोर्दी ॥ ताकं फेरिस्के क्लूकोर्दी ॥ नि
श्रयश्रेणी थापी व्याप्राय ह कुं ल
षो उं द्विजके प्राप्ता ॥ इति दोहा ॥ इति
राग निरूपी योगानकजि सुपरे न
म्यानक है ॥ अबजो ललो ॥ नार
वसुदेवा ॥ धवा ॥ इति प्री माग
पुहाणे ॥ इति दससह ॥ ॥ ॥

र संहितायां एकादशस्कंधे जपुक्
ग लक्ष्मणनिरूपणो नाम अष्टमोऽध्या
य ॥१॥ श्रीसुद्योतवाच ॥ द्वाराव
ती आपजहं पालक ॥ तहं नदधि
प्रापको तालक ॥ नारदतहं निरं
तरश्रावै ॥ कृष्णदेवकोदरसनपा
वेश ॥ जीवनमुक्तिभजेति जाको
बंधो जीवतजे क्योताकं ॥ जाकोस
कललोकमें काल ॥ जहंतहं नि
सदिनबेहाल ॥ शंभानवतनइं डी
नराजा ॥ यहतनहरिसेवाकी साज
बंछे जाहि ब्रह्मसुरराजा ॥ कृष्णदे
वसेवाके काजा ॥ शंभैसी देहभा
गसूं पावै ॥ हरिकीसेवाक्युं छिट
कावै ॥ पत्नमें कटे कालके पास ॥
हरिकुं पावै हरिकादास ॥ ध्यायेक
वारसुसुदेवके जौन ॥ नारदकीयो
कपा करिगोन ॥ तिनबहुविधिपू
जाविसतरी ॥ तापी छें बां नीउचुरी

५॥ वसुदेव उवाच ॥ हे शुक जी तु म
 रो आगमनां सुखं त्वं हि न के सुख
 को भवनां उपख्यं सुखं त्वं न कीद
 जं जिनके प्रसन्नक म न यही जे
 ही श्रीरदेवदेवो सुखं सुखं कों ॥ तुम
 से साधु प्रगट्य रहस्य बको ॥ जिनके
 हिरदेविराजे रां न ॥ त्वं नै हो हि
 को न हि ही कां न ॥ त्वं नै फल
 दायक सख देवा तेलो लहे जै सि
 करि सेवा ॥ ज्यो कर ले प्रण को
 को ई ॥ श्याय करे न्या भासे सो ई ॥ ८
 तुमसे साधु सहा सुख दार्शी ॥ जिनकी
 महिभां कहि न जाई ॥ जदि प्रस
 में नयो कृता रथा ॥ प्रहो देव त
 थां पिहिना रथा ॥ ए ॥ जो भागवत
 धरम सुने जीवा ॥ जनम मरन त जि
 पावे पीवा ॥ जिन आचरने न तुम
 कंदेवा ॥ हरि प्रसनयो भाषो भेवा ॥

मोहोसमकिनपरी॥ तबमेंहरिहीपुत्र
करिबस्यो॥ ताहीतैंहूंनाहीउधस्यो॥
११॥ तातैंअबमेंतुमरीसरनां॥ सोक
बूकरोमिटैज्योमरना॥ कहांलौक
हूंजगतकेडय॥ जसैंसुपनैहूंनाही
सु॥ १२॥ जहांजहांजायतहांतहांका
ल॥ हरिविनजीवसदाबेहाल॥
सेबचनसुनैजबनारद॥ तबतोबो
लेप्रमविसारद॥ १३॥ श्रीनारदउच
चधनिबसुदेवधनितुवबांती॥ जा
करिपूछेसारंगपांती॥ कोईहोयस
कलजगघातक॥ बिहमधरमेंतैरह
नपातक॥ १४॥ प्रवनकीरतनश्री
दरध्यान॥ अनुमोदनऊकरैसयां
न॥ सोपुनीतहोवैततकाल॥ बहोरि
परैनहींजमकेजाल॥ १५॥ तुमयेक
योबडोउपकार॥ मोहिसुमराद्योसि
रजनहार॥ जाकोप्रवनकीरतन
ब्रैसो॥ अंधकारकंसूरजिजेसो॥

र्हीनुमश्कं वृत्तं तदाह तदाह ॥ १ ॥
 जातेन ह्येवमवकाशेन विषये
 वसुतुल्यं जगत्तुल्यं तद्विज्ञानं तु नृणाम्
 जनकं च रेखांशुं च विद्वि ब्रह्म परा
 नभयो ॥ जनमज्जं नसं लोसवगये
 अथ च तदपत्तिं कुरु संकलिनकी
 पूरन प्रीतिरांशुं च विद्वि नकी ॥ १६ ॥
 स्वायंभुवुः सितं च शिरसा जाता
 कोतनस्य प्रीतिं च तदा जाता को
 अगतिं च सुतुल्यं च योनां प्रीजन
 मताही तैः कुरु ॥ १७ ॥ तं कोरिष
 च देवस्य च तदा शीलितं प्रयत्नयो
 ब्रह्म विद्वान्सातां च सुतये कसत
 भयं च तदा कुरु च देवके च ही न
 वा ॥ १८ ॥ तिस्रं च वदुं च तैः संस
 जाके हिरे देवसे तिस्रं सा जाते
 भरतस्य च देवके च ही न
 नां मतिं च तदा शी ॥ प्रथम
 त भोगाये चो शासमकि

लीयोजोग मनकमवचनकरी
हरिभगती तीजेजनमभईपु
निमुकती २२ तिनमेंन वनव
षंडनरेस एकहअसीकरमनु
पदेस नवतेमहाभागअधिका
री सबतजेसेवेसदा मुरारी २३
तजेअनरथअरथविसतारे
याविधिवहोतजीवतिनतारे
देहअतीतदिगंमरनेष सदा
हिरदामेंयेकअलेष २४ कवि
हरिअंतरिषप्रबुध पिपलाय
नआविरहोतंसुद्ध डरमलच
मसकरभाजननांम २५ ननवकी
योब्रह्ममेंधांम २६ आपआदि
संसारपसारा सबकंजांनैसिर
जनहारा छैतभावसबकीनौ
षंड याविधविचरेसबब्रहमं
२७ सुरअरु सिद्धअसुरगं
व किंनरयचनागनरसरबस

कल्लोकमें अंछा चारी। आइर
हितसबमें अधिकारी। अक्षयसे
नामजनक के सत्रा। एक बार लि
नकी नीज त्रा। रविसी सो नित लि
नकी देहा। आवत देखे नृपति लि
देहा। राजा बिप्र अग्नि अदि प्रा
यो। आगे के लेवे कूं आये। ज
म अंनिधरे सिंघासना। क
क्रमते वैवे आसना। स
कर्म पूजा की न्ही। करि दंडे।
दछना दी की। सर्क आभर
तर बहोरंगा। ते सब सो नित लि
के संग। अंगान विचार ब्रह्म
असे। ब्रह्म पुत्रसन का दि
तव कर जो रिभयो नृप बाहे।
लो वचन प्रेम अति बाढो। अ
तब नृप के आनंद बढो। क
रही संहाला। प्रेम मगन होय
यो वानी परमर साला। अश चो पई ॥

ध
ग
विदेहउवाचतुमपारषदप्रमह
रिजीकेमेंजांनैसबहीनमेंनीके
जीवनकेउधरिवेकारजसक
ल्लोकमेंविचरोशरजत्र
धनिमेंधनिमेरोश्रवताराजाते
पायोदरसतुम्हारनांजांजोनि
जीवयहपावैमानुषजनमकव
हूयकश्रावै३४याविधिनरदे
हेवकुगहेदुत्तमसाधुसंगतिन
हीलहे॥जिनकेंसंगमिटैभवबं
धांनैनश्रनंतलहेनरश्रधा३५
प्रांननाथहरिहिरदेविराजे॥छ
टेकर्मनर्मनयनाजे॥श्राधोषि
नहोवैसत्तसंगा॥सोककरैजग
तभयभंगा॥३६तातैममसंदेह
मिटावो॥प्रमथेमसोमोहिसुनावो
भगवतधरमकहोविसतारी॥जो
मेंहोंसुनिबेअधिकारी॥३७॥जिन
तैमिटैजगतनैजारी॥बकुरिश्रापकं

तमुरारीयेसुलिल्लननसुल्लन
 यो॥तवहीनांनहेवैलसुनाये॥
 षादोहगा॥नृपद्वैसंख्यप्रचरनयो॥
 गोमर्मन्नेसा॥लखरजाप्रसनकरी
 बोल्पोकविजोगेरा॥कविहरु
 वाचा॥चोपरी॥रजप्रह्मकरीतु
 प्रैसी॥अहुजंगीदुखतहेजैसीनि
 नैपद्वेकहेदेवता॥हरिकेचरण
 लकीसेवा॥धनाकाकंछोडि
 नरंजोशीप्रहकोकूलहोतहेसे
 हांजहांजयतहांडवभारी
 फांशिककंठरेनटारी॥धश॥
 नातेंकहोंभागवतधरसांमिले
 छूटेलेभारसां॥श्रीमुखश्रीभग
 नसुनाये॥आपुमिलणकोपंथ
 वताये॥धशाभूरयंरुहोवेकोई॥ जो
 नपंथतपावेहरिसोही॥प्र
 होयबिलंसनहींलागे॥भ
 सूहोजीयजागे॥धश॥०

दिनु ध्यावेकोई या हरि पंथन कछ
मेहोई हरिकी भगति सबन तै न्या
री कोटि विघन तैं टरै न टारी ॥ ४४ ॥
हरि मिले नैको मार गयेहा ॥ हरि न
जि मुँकति होय हे देहा ॥ मन क्रम
बचन बुधि अरु चित ॥ होय सुनाव
कृतै जो नित ॥ ४५ ॥ सो सब हरि ही स
मरपन करे ॥ यों भगवत धरम बि
सतरे ॥ जब ये जीव हरि ही बिस स्यो
तव ही हरिकी माया अरु वस्यो ॥ ४६ ॥
तवै आपनौ सरूप तुलायो ॥ आप मा
नित नमै मन लायो ॥ द्वैत नावतव ही
तैनुपय्यो ॥ ताही तै ये मरि मरि जनम्यो
४७ ॥ तातै बुधि सेवै हरि चरण ॥ जातै
मिटै जनम अरु मरण ॥ सो धिले यउ
तम गुर देवा ॥ हरि कं जांनिकरे तासे
वा ४८ ॥ सो ज्यो ज्यो आचरण बतवै
त्यो ही त्यो हरि संहित लावै ॥ कपटन
नजेत जे सब काम ॥ छूटे जगत मिले

तबरां ५५ हैन
 राजा ५५ नास्यो सै ५५
 जैसे म् राम नोर ५५
 रते दो न्गो उ प्र नो ५५
 परि हे सो सो हे ५५
 मो हे ॥ तो सं क ५५
 मन दि ठ रा धि ५५
 रि के ज त म न ५५
 हे सु म रे स ब्र ज ५५
 न ह सं गा ५५
 प ५५
 व त न रो म ५५
 व द न्द्र ५५
 व र थै नै ५५
 गा वै ५५
 लो क वे ५५
 न म त लि ५५
 स स रि ता ५५
 र हं स ५५

नञ्जकासा जो कछु देवे सो हरि
गसा ॥ ५५ ॥ हरिको रूप सकल मै
नां ॥ जहां तहां प्रनां मही ठानै क
ब्रह्म भूति न भासै नां ॥ नयो
अनन्य भजे भगवां नां ॥ ५६ ॥ ज्यो
ज्यो बढे कछु अंनुं रागा ॥ त्यों त्यों
शोर सकल को त्यागा ॥ त्यों त्यों
नु भव ज्यो प्रतिग्रासा ॥ तोष पोष
अरु नूष बिनासा ॥ ५७ ॥ या बि
ध कर ते साधन भक्ति ॥ हरि जी सौं
बाढे अंनु रक्ति ॥ तब कछु शोर
भूति न ही भासे ॥ तब ही हरि दे
ब्रह्म प्रकासे ॥ ५८ ॥ ब्रह्म एक दस
हूँ हि स देवे ॥ छैल भाव करि क दे
न लेवे ॥ भजि भगवंत भये तउ रु
पा ॥ जां नै सकल ये कनिजिरुपा
पूण ॥ त्रैसे अंग भागवत मां ही ॥ सो
हरि मै है जग मै नां ही ॥ ६० ॥ दोहा
ये सुनि कवि जी के वचन ॥ की जी

मविहं ह। अत्र मसि मांग वल

रुसिगिहाईश विदेष्ट

वाचाचोपरी। प्रभजीकहोभा

तलक्षिणांजिनल्लिहोवेरांमवि

एाकोरांअनसंदिद्वेदिहरा

कोनशचरेजिंनविधिभाये न

शकोरांसुभाबल्लिनलिनके।

भावनांहीइहल्लिनवेरांवोले

रियोगेसुदहजोत्पकेवचनव

होतविधिइल्लेईशहरिरूवाच॥

थावरजंभमसुभिसुशूलायेकप्र

सल्लकोतूलासोइकश

आधरुशोआत्मानसंग

निराकादशईशहरिजीतैउपजेये

दोई। अल्लनह रिहीमेंहोशीता

अबल्लहरिकोजांनोईतभाव

कबहुं बहीअंनोईशज्योसागर

बुदबुदातरंगायेसबजगतजग

पतिसंया। याविधिजांनिभ

व नश्रकासा जो कछु देषै सो हरि
दासा ॥ ५५ ॥ हरिको रूप सकल में
जांनै ॥ जहां तहां प्रनांम ही ठानै क
बहु भूति न भासै श्रानां ॥ तयो
श्रनन्य भजे भगवांन ॥ ५६ ॥ ज्यो
ज्यो बढै कृष्ण श्रनुं रागा ॥ त्यों त्यों
श्रोर सकल को त्यागा ॥ त्यों त्यों श्र
नु भव ज्यो प्रतिग्रासा ॥ तोष पोष
श्ररुत्तुष बिनासा ॥ ५७ ॥ या बि
ध करत साधन भक्ति ॥ हरि जी सौं
बाढै श्रनुरक्ति ॥ तब कछु श्रोर
भूति न ही भासै ॥ तब ही हिर दे
ब्रह्म प्रकासे ॥ ५८ ॥ ब्रह्म एक दस
हूँदिस देषै ॥ इत भाव करिक दे
न लेषै ॥ भजि भगवंत भये तडरु
पा ॥ जांनै सकल ये कनिजिरूप
५९ ॥ त्रैसे श्रंग भागवत मांहीं ॥ स
हरि में द्वै जग में नांहीं ॥ ई० दोहा
ये सुनि कबि जी के बचन ॥ कीर्त्त

प्रथमविदेहाश्रवभाषोभागवत्

वाचाचोपशोप्रभूजीकहोम

हरदेदितरा

धेभाषे

एणसुभावनिरंतरतिनके

बोले

रियोगेसुरदूजेनृपकेवचनव

हरिरूवाचा

येकप्र

श

धेहरिजीतैउपजेये

दोईश्रंतलीनहरिहीमेंहोईता

तैश्रवदूहरिकोंजांनैधैतभाव

कबदूनहींश्रानैईश्रज्योसागर

बुदबुदातरंगायेसबजगतजग

तपतिसंगायाविधिजांनिभयोजे

प्रीत॥ सोहरिजनवृत्तमहेंबीरा॥
६६॥ जाकोहरिसौनहचलप्रेमा॥
६७॥ हरिजनसंगतिनितिनेमा॥
सबजीवनप्रकरुणांश्रानै॥ सब
उधरेहिरद्वेषोंजानै॥ ६८॥ जोकोइ
तापरदोषहीगंनै॥ ताहितजेकैज्यौ
त्योंबानै॥ निसदिनरहेगंमरंगराता
सोहरिजनमधिमहेंताता॥ ६९॥ जोमू
रतिमैहरिकोंजानै॥ मनबचकर्म
श्राननहींश्रानै॥ जाकोंपूजेहितचि
तलाई॥ कच्छनमांगेसहजसुभाई
७०॥ पैहरिजनननजेहरिजानै॥ स
तगुरबिनांनहींपहिचानै॥ सबश्र
तमांनहरिकेजानै॥ सोप्राकृतिज
नसाधबषानै॥ ७१॥ बडुरिकहूंउ
तमहरिनक्त॥ जाहिप्रषिद्धजेश्र
सक्त॥ इसप्रसतैकारजसारे॥ तेह
रिजनभवदुषनिवारै॥ ७२॥ कृष्ण
वसैताकेगुरमांहीं॥ श्रोवसतिक

सुजांनेनांही॥ जोकसूकहैसुनैंश्रु
रुदेषै॥ इंद्रियकृतमायासबलैषै
उरसोहरिजनउतमहैदेवा॥ ताते
मिलेनिरंजनभेवा॥ जोजनब्रह्मवि
चारहीपायो॥ आपसमफिसुषमां
हिसमायो॥ ७ ॥ जनमरुमरनदेह
केजांनै॥ सुधात्रिधाकंप्राणहीमं
नै॥ तृष्णाबुद्धिश्रुभयसोमनके
यहलक्षिणाउतिमहरिजनके
पधकरमवासनांश्रुसबको
मां॥ तिनकोभूलिनजांनैनांमां॥
वासदेवमैकीन्है॥ वाससोकही
येउतमहरिदासा॥ ७ ॥ जिनके
जातिवरनकुलकरमां॥ लोक
नवेदनहीश्राश्रमां॥ भूलिदेहश्रु
भिमांननश्रावे॥ सोउत्पमहरिदा
सकहावे॥ ७ ॥ किसीबसतप्रम
मतानांही॥ श्रुसतकोश्रुभिमांन
नमांही॥ सबभूतनप्रसमताश्रां॥

ऊस्योऽप्यत होय भव रोगाः पूजा तै
मोसौ चित्त लगावे मेरो निजानंद प
द पावे ॥ मगन रहे मेरे आनंद ॥ बहे
रि नही व्यापे दुषदंदा ॥ ६ ॥ या ही तै य
ह भव विसतास्यो ॥ नीतरि अंस आ
पनों डास्यो ॥ इंद्रिय दस अरु मन वि
सतारे ॥ वक्तु भांति के विषे पसा
रे ७ ॥ सोयह अंस इंद्रिय न मनसो
भोग भोग वै सब ही तनसो ॥ आपु न
लि भोग न मन दीन्हो ॥ तव अणि मां
न देह को कीन्हो ॥ ८ ॥ भोग निमति
कर म विसतारे ॥ तिन के फल दु
ष सुष भय भारे ॥ तिन कर म नितै
जो निअनंता ॥ जन म मर न को लह
न अंता ॥ ९ ॥ प्रत्ने अत्र धितो नर मे
निरंतर ॥ तीन होय पुनि माया अं
तर सृष्टिस में बहो रूतन पावे ॥ न
वसागर को अंत न आवे ॥ १० ॥ भर्म
त भर्मत प्रलय अत्र धि आवे ॥ तव

सबनासकालमनभौ। नवस
तवरषनहृषेजलधरालेजुसधेत
हांहादसदिनकराशशब्दुल्लोत्र
गनिसेसमुषनिसरे। प्रलयपवन
मितिजहांतहांपसरो। सारेलोड
नसमंतवकरे। बडुस्यो। प्रलयप
घसंचेरे। १२। हाथीसंडिधाहृष
वरषे। योत्रषंडवीतेसतवरषे
तवहोवेविराटकोनासा। १३।
करेप्रक्तिमेंवासा। १३। जोत्र
होवेब्रह्मांकीतोऊब्रह्ममाहिन
हीगंकी। जेहरिनक्तिहरिहीतेया
वे। १४। प्रक्तिमेंसंकलसमावे। १४।
पवनकरेतवगंधहीषीना। न्मि
होयतवजलमेंलीन। त्पहीरसव
हरेसमीरा। तातेमिलैतेजमेंनीरा
१५। अंधकारजवरूपहीहरे। ते
जतवेपवनहीसंचेरे। बडुरिसप
रसहीहरे। अकासा। पवनकरेतव

नमेंवासा १६ कालकीयोतवस
ब्रह्मीनां तामसञ्चहंकारन
मनीनां तामसञ्चहंकारमनमिले
राजसञ्चहंकारदोगिले १५ इंधी
यञ्चरु राजसञ्चहंकारही सत्वञ्च
हंसोकीन्हञ्चहारही बुधिदेवसा
तिकञ्चहंकारा हततकीन्होंसं
हारा १६ महततप्रक्तिहीमिले
याविधिकालसकलकोगिले
ऐसीहीविधिबारंबारा उतपनि
परलेञ्चंतनपारा १७ येसबहरि
कीमायाकरे उपजावे प्रतिपाले
हरे मेंतुमकुं संघेपसुनाई बड
होंकरोप्रश्ममनभाई २० दोला
ऐसीसुनिमायाप्रबल उपजो
नृपकेभीत तबपूछीआधीनडे
तातरिवेकीरीति २१ राजा
ऐसीप्रबलईसकीम
या जिनयेसकललोकनरमाय

ताकृतुमसेगपानीतिरौ।हमसेदेही
कोनिसतरौ।रशताकौ।सुधहि।तिरौ
येदेवा।सोकरिकपाबलाबहुनेन
येसुनिबचननिरपत्तिकेसुहा।त
बबोलेचौथेपरबुधा।रश।प्रबुध
वाचसकलमनषसुधनिजे
जाकरैकरमशरंनहीरन
तैकेवलनुषअपारा।अन
अरुशगैविसतारा।रक्षामा
धनबहुषअपारा।निस
चित्तौकोअधिकारा।सोह
तिडरलमनही।शवे।जोअ
तोथिरनरहावे।रशान्तही
कुटमसुतदारा।पलकमां
हिठहिजायपसारा।ज्योपंथमां
मिलानांहोई।धरीकमांहि
छरेसबकोई।रहीजेकचूय
करमकमावे।तिनतैजोनि।
निधुषपावे।इनमेंकोईन

न छुटावे। श्राप श्राप कूं सब को ५
जावे। २७। याही विधि नरखरपुर
लोका। शिर नर है विधि ऊँ वोका
छोटे बड़े तीच बहो भांती। तिनके
मनकी मिटै नकांती। २८। मद्मद्
र श्रु चोहे मांतां। कां मक्रोध श्रु
लोभस मांतां। त्रिष्णा बंधे कछु न
ही जांनें। श्राप श्रापमें जुधही ठां
नें। २९। कालही पाय उहां तें परे
बहोरि श्राय यहां ही श्रवतरे।।
यो विचारि वैरागनु पावे। तबही
सोधिगुरसरणै श्रावे। ३०। सबदब्र
ह्मसकल जो भाये। पारब्रह्मनि
हिरदेराये। श्रेसे गुरविनगपानन
पावे। तातें सोधिगुरुपै श्रावे। ३१।
ब्रह्मजांनितासेवा ठांनें। श्रातस
कपटकांमनां भांनें। तातें सीधे भ
क्ति के अंग। तिनतें हरिजीतजे न
संगा। ३२। सबतें मनको संगमिटा

वे। उलटिसाधुसंगलिरुलावे॥
 अरुदीननपरिकरुजां नगुनें। स
 ममित्रताकतमलरुनां नैं। र॥
 सोचपाटतधमो। निलति र्ग। वह
 विधिलेवेगुरस्लिरुमा। लुत्तच
 र्यश्रुकोमिलरुहनां। हंस्यात्पा
 गहंदसबसंलुजां। र्ग। अयेकायेकी
 आश्रमनहीं। जोधो। नरुदकके
 बलकलसां। नहांतहांचेतन
 आत्मदेसे। र्ग। तमनियंतांले
 षे। र्ग। अकिर्केसरक्षकरै। नि
 दारागदो। सपरहरे। दिहवचनं
 रुमनकं। र्ग। एमदमसतसंतोष
 नछंमै। र्ग। जनमकरमंश्रुगु
 नहरिजीको। रुदासुनै। उधारनजी
 के। त्योंही। कहेनिरंतरधावे। सोही
 करैहरिही। जोधावे। र्ग। जपतप

दारासुतज्ञानां जोकचुसोस

रिही नबेदे या विधि सकल करम
 कों छेदे ३४ था वर जंग हरि मवे
 जानें परि सेवा साधन की गानें मि
 ले प्रस प्र हरि गुन गावे तिस दिन
 कहत सुनत सुष पावे ३५ पल
 पल प्रीति बहे हिये फूलै गुनत
 संहालत तन कों भूले ह जो ना
 वन कबहु उपने प्रेम मगन जा
 गत शुरु सुपने ४० असे प्रेम भ
 क्ति कों पावे पल पल तन पुलक
 त के आवे कबहु हरि चितवन
 तें रोवे कबहु हसे आनंद त हो
 वे ४१ कबहु नांचे कबहु गावे
 लाजरहित ज्यो ज्यो मन भावे क
 वहु गुन सुमरत मिति जावे स्वा
 स श सुवा हरि न ही आवे ४२ या
 विधिले वे गुरसूस द्या गुरु सिष
 निकी येह प्रछा ब्रह्म परायन
 ता जन के रे माया नू लिन आवेने

॥४॥शाहोहायेनमिदचनविदे
 केन्द्रिदेवहोलांनंदाप्रमक
 ब्रह्मकीजोहूहेनवफंद
 घाविदेहनुवाच॥चोपशी॥ब्र
 तातिनमेंरधिकारी॥तुमहो
 हमेंहृदैविचारि॥तहेंकहोब्र
 कोरूपा॥जोलेजाहिमिटेभव
 पा॥४५॥प्रमत्तसाब्रह्मभगवां
 ना॥येसबयेककिश्रौहेंनांनं॥स
 बजीवनकूंनिकरुनायन॥त
 बबोलेपंचमपिपलायन॥४६॥
 पिपलायननुवाच॥सुषेमशूल
 सकलसंसारजाकीसकतिसक
 लेविसतारा॥उत्तपतिप्रलेकरैव
 हयाके॥काहुहुतेंजनमनहीत
 कौ॥४७॥जाग्रतसुपनसुषोपति
 तुरीया॥बहुंमैंसदायेकरसपुरी
 याइंश्रीयदेहहुदैश्ररुप्रांनं॥
 चेतनिहैवरतांनं॥४८॥

ये जटलोहा बरतै चूमक संग
बहुत बिधि निरतै सो भगवान
ब्रह्म पुनि सोही सो प्रमातम जानै
कोई धरण मन अरु बुधि चित अ
रु प्राणा इंद्रिय देह सब द अ नि
मांतां कोई ताहि प ऊंचिन ही स
कै जात जात वार ही थकै ५०
जे सें पावक लोहत पायो पावक
समांते जति न पायो सब प्रकारे
सब कूं जाले पर पावक पर जोर न
चाले ५१ यो सब इंद्रिय द दे अ च
तन ताकै संग हूतै कै चेतन श्री
रस कल अरु रथन कौं जानै कौन
सकति जो ताहि पिछांनै ५२ तैले
अरु अ विचारै बेदा पर प्रत दिन
जाणै बेदा ये नही ये नही ये नही हे
ई याके परै सत्य है सोही ५३ सु
षम थूलन जा वै बरनी गगनि प
वन पावक जल धरनी नही मन बु

चित्तं अहंकाराच्चिदात्मं दम
 पाराधु धानां सो बालं
 ज्ञानां सो बिल्लैना सो
 तिरीयापुरय कलीवन होई
 नरनागं अस्वरन ही सो ही ॥ ५ ॥
 कतपीत सित अशिल न हरिता
 तिवरं न आशु न ही धरता ॥
 न उसन न चंदन सुरा दिव
 नराति निकट न ही हुरा ॥ ५ ॥ सु
 षड्यरहित बसे स न मां ही ॥ आप
 आपले पे कडु नां ही ॥ बंधना
 आत मंत्रं सा सुन्य सरोवर वि
 लसे हंसा ॥ ५ ॥ गगनि पवन पाव
 नीरा ॥ धरनि बंध सब कीये
 रा ॥ पंचवस्तये पांचौं बंधा
 परसरूप रसगंधा ॥ ५ ॥ इंद्रिय
 दस अरु तिन के देवा सांत
 सतां मस नेवा ॥ मन बुधि चित
 हतत अहंकारा ॥ येक प्रक्ति

ये जह लोहा बरते चूंमक संग
वहुत बिधि निरते सो भगवान
ब्रह्म पुनि सोही सो प्रमातम जांने
कोई ॥ ४७ ॥ मन अरु बुधि चित अ
रु प्राणा इंद्रिय देह सब द अ नि
मां नां कोई ताहि पडुं चिन ही स
कें ॥ जात जात वार ही थकें ॥ ५० ॥
जे सें पाव क लोहत पायो ॥ पाव क
समां ते जति न पायो ॥ सब प्रकारे
सब कूं जाले ॥ प्रपाव क पर जोर न
चाले ॥ ५१ ॥ यों सब इंद्रिय रु दे अ चे
तन ॥ ताकें संग कृतें कै चेतन ॥ श्री
रस कल अरु रथ न कों जांने ॥ कों न
सकति जो ताहि पिछांने ॥ ५२ ॥ तैले
अरु थ विचारें बेदा ॥ पर प्रत कि न
जांणें बेदा ॥ ये न ही ये न ही ये न ही हो
ई याके परे सत्य है सोही ॥ ५३ ॥ सु
षम थूल न जावे वरनी ॥ गगनि प
वन पाव क जल धरनी ॥ न ही मन बु

धिचित्तं अहंकारा ॥ चिदानन्दमय
 सबके पारा ॥ ५५ ॥ नां सो बालं बृध
 नही ज्ञानां सो विनसेनां सो ह्
 वा ॥ तिरीया पुरष कलीवन होई ॥ सु
 रनरनागं अस्वरनही सोही ॥ ५५ ॥
 रकतपीत ॥ सेत असित न हरिता
 जातिवरन अश्रमनही धरता ॥
 सीतन उसनन चंदनसूरा ॥ दिव
 सनरातिनिकटनही ह् ॥ ५६ ॥ सु
 षड्ठरहित बसे सब मांही ॥ अं प
 ही अापले पै कं नांही ॥ बंध भाव
 सो अात म अंसा ॥ सुन्यसरोवर वि
 नसे हंसा ॥ ५७ ॥ गगनिपवन पावक
 अरुनीरा ॥ धरनिबंध सबकी ये स
 रीरा ॥ पंचवस्तये पांचौं बंधा ॥ अं
 सपरसरूपरसगंधा ॥ ५८ ॥ इंद्रिय
 दस अरुतिनके देवा ॥ सांतकरा
 जसतां मस नेवा ॥ मन बुधिचित्तम
 हतत अहंकारा ॥ येक प्रक्तिके स

कल्पसारा ॥ ५ ॥ येकब्रह्म

रण विनञ्छासबकोविसतराण ॥

ज्यो भूवमें बडु घट उपजावे ॥ भूव

रहे भूवमां हि समावे ॥ ६ ॥ तेसबघट

दीसे विधिनां नां ॥ ते भूवछोडिनही क

छूयां नां ॥ त्यो सब जगत आदि मधिञ्च

ता ॥ और न क छूयेक जगवंता ॥ ६ ॥ सो

नही उपजे विनसे नां ही ॥ बाल जो वां

नी परे नही छां ही ॥ बढे न घटे चले न

ही डोले ॥ रोषन तोषन मोनि नही वेले

६ ॥ जहां तहां पूरण प्रमञ्च नूपा ॥ चि

दानंद विग्यान सरूपा ॥ देह भेद बहो

धासे सो है ॥ ग्यान विनां सारो जग मो है

६ ॥ जैसे पवन येक ही प्रां नां ॥ दस इंद्र

य संग दीसे नां नां ॥ उदनी जखेद जरा

युज अंडा ॥ चारिषां नि पूरण ब्रह्मं का

६ ॥ लिंग देह जहां देह ही जावे ॥ प्राण

वाय तहां आं णि समावे ॥ सब दस पर

सरूपर संग धा ॥ मन अहंकार बूधि चि

धाई श्लिंग देह इलही बवंको है
 मिले निरंजन सो है निजा वसि
 यपति जव श्रौचा लजये देह लिंग
 छिटको वै ई ई अहंकार गिता क
 नांही मान अरु बुद्धि चित सब जां
 तव अद्वैतये कहे सो श्री दैत भाव
 नको ई ई जान बुद्धि चित
 प्रहंकार न रहे। जागें प्रसन्नता सो
 ॥ जो कर नौ लो सो लोकीयो।
 पावे ली नौ दीयो। ई प्रजा तैं सो ह
 रि जां न न हारा। एते द्विजी जे ब्रह्म
 ॥ प्रबं सव स हि तही रहे।
 तातें देह फिरि क हिले है। ई पालि
 र सहित वाप लो। ताहि मिते न
 वसा संनां। तातें हरे चरन नचि
 वै। ओर सकल बंधन छिट
 गाय विधि सबै चित मलना से। रि
 मांनि तब ब्रह्म प्रकासे।
 थम भक्ति नही जां नौ। तो वह कर

जोगकौं वॉनें॥ ७१॥ करमयोगतैं उपजै
भगती॥ तबहरिचरनबढेआसकी
तातैंहोयब्रह्मप्रकासा॥ छूटेकाल
जालनवपासा॥ ७२॥ दोहा॥ येपिप
लायनबैनसुनि॥ करीप्रह्ममथले
सकरमयोगश्रवकरिहृया॥ कहे
प्रयोगेस॥ ७३॥ चौपई॥ विदेहजन्मा
च॥ करमयोगश्रवकहोगुसाईमै
आयोतुम्हरीसरनाई॥ जाकेकाये
कटेसबकरमां॥ उपजैज्ञानहोय
नहनरमां॥ ७४॥ दुतीयेप्रह्मकहोतु
मयेहा॥ याकोमैरेअतिसंदेहा॥ ब्र
ह्मपुत्रसनकादिकचारी॥ ब्रह्मप
रायनब्रह्मविचारी॥ ७५॥ येकबा
रकृपाकरिआये॥ पितासमीपइस
मेंपाये॥ येप्रह्ममैतिनसौकीन्हं॥
उत्तरनदीयोहिरदैधरिलीन्हं॥ ७
हीन्हं॥ बोलेसोकौनैकारनयेभा
योभोसागरतारन॥ अँसंबचननृप

ओ॥७७॥ अवि रहो तजुना ज
 राजा सुनों करम गति गहनों॥ जाते
 जहां तहां बनें न कहलां यह ज्यो
 है त्यों वेद छुटां नो तातें याहिन
 कोई जानें॥ ७७॥ अह प्रगत करता
 हरि देवा॥ रिषु लक्ष्मण सुरम लहे के
 नेवा॥ नेवल है विन मिटेन मरना
 लहे नेव पादे हरि चरण॥ ७८॥
 तातें तुम हो लेत बबाला॥ तातें क
 होन करम द्विसाला॥ अत्र मै क
 रूं सुनों चितलाई॥ जानें जाहि ग्या
 न अदिकाई॥ ७९॥ करम जोग है
 तीन प्रकारा॥ क्रम अ क्रम द्विक
 रम पसारा॥ हरि निमतिसो लक्ष्मी
 करमां॥ हरि विहीन सो सकल वि
 करमां॥ ८०॥ सो अ क्रम जो दो क
 गी॥

उपजेगां तमितै भै भरमा ॥ ८२ ॥ कर
मतजन कौं कर मग्रावे ॥ तातै वेद
न समण्यो आवे ॥ पहिलें शुगादिक
फल भाषें ॥ आगें सकल हरिक रि
नाषें ॥ ८३ ॥ ज्यौं को इ बाल करोगी
होवै ॥ श्लेषदिक कटकनां वसुतिरो
वै ॥ ताकं लाडु पितादिषावे ॥ श्लेष
दिका जलो भ उपजावे ॥ ८४ ॥ श्लेष
दिको फल लाडु नां ही ॥ श्लेषदिपी
यें रोग सब जां ई ॥ तौ सुरगादिक लो
भदिषावे ॥ कर मनास कं कर मक
रावे ॥ ८५ ॥ सुरगादिक फल पडु प
तिवां नी ॥ तोरै प हो प हो त फल हां नी
तातै करे वेद के करमां ॥ हरिके हे
तव डो ये धरमा ॥ ८६ ॥ और कच्छ फ
ल भूलिन जां नै ॥ हरिके हेत कर म
सब वां नै ॥ मैं करता यौं क दे न भाषे
जो कच्छ सो हरिको करि राषे ॥ ८७
या विधि प्रेम न कि उपजावे ॥ तव स

बकरमशापहीजावे॥तबहीप्रगटे
ग्यांनप्रकासा॥मिलेरामच्छूटेनवपा
सा॥४४॥वेदकपंथकहोमेंतोसो॥
श्रवसुनितंत्रपंथपुनिमोसो॥हिरदे
गांविकाटीजोचाहे॥सोविधिसोपू
जाश्रवगाहे॥४५॥वेदमित्ततभाव
तहोपूजाजातेमिहैसकलभरम
हूजा॥श्रीगुरतेंप्रसादहीपावे॥सोजे
ज्येसबविधिहिवतावे॥४६॥जामूर
तिपरिश्रंछाहोई॥हरिहीजानिके
पूजेसोही॥श्रतिपवतरहोयकरे
श्रसनांनो॥मनकीतजेवासनांनो
एशवायश्रपांनछीकजमुवाडी॥
रपवनगुंनरहनकांई॥सनमुषवे
ठिकरैतनरछा॥श्रंगन्यासमंत्रप
ठिश्रंछा॥४७॥श्रामनसोधिसोजुमे
वाकी॥सबलेवेतेतजेनवाकी॥वि
ह्नरूपप्रतसांमेंश्राने॥श्ररधपादश्र
ठविष्टरवांने॥४८॥मूलमंत्रक

करे। और न क ह्व व च न उ च रे। सक
ल अंग हरि जी के ध्यावे। संघ चक्र ग
दापद ममन त्यावे। ए५। नृषन व
सन पारषद् सहिता। हस्त बदन दे
षत दू ष हरिता। विबधि भांति अ
सनान करार वै। बकु सुगंद माला
पहिरावे। बकुत भांति करि नोगल
गावे। गंध धूप आरती सवांरे। घंटा
आदि सब द बिसतारे। ए६। या विधि
मंत्र नसौ सब करै। ता पीठे अस्तुति
बिसतारे। बकुरि करै डंडो त प्रनामां
पढे मंत्र ते वै हरिनांमां। ए७। वा हरि
वस्तु मिलै ते आंनै। और सब मनसौं
पूजा आंनै। तनमं भये निरंतर सेवै
वह प्रसाद माधे सो लेवै। ए८। बकु
रि देव को हिर दे धरे। मूरति सयन पि
ठारे करै। या विधि हरि के आत्म जा
नै। जथा सकति सपर्यावांनै। ए९। अ
से सेवै तनु पूजे ग्यानां वेगै आणि मिलै

गतीं गमं न पायत बहो वै सुकती ॥
 १००॥ उभै प्रतमां हरिकी सेवो सा
 धू प्रतधिक सो हरि देवो १०१॥ दोहा
 ये सुनिब चन वि देह वै न्वा न्यो म
 न्मै प्यार ॥ तव गुल न्द्र रु कर मन स
 हित ॥ पूछे हरि न्द्र वल्लारा १०२ ॥ इ
 त श्री भागवते न्द्रा पुराणे येका दस
 स्कं देव सु देव नारद समा दे जायंती
 पारव्या न तृतीयो अध्याय ॥ ३ ॥ २२४
 राजा उवाच ॥ चोप ई ॥ न्द्र व न्द्र वतार
 काथा बिसुतारो गु न्द्र रु कर मन स
 हित उचारो ॥ जे जे लीये ले हि गे न्द्रा गे
 न्द्र व है सब ना यो न्द्र नुं रा गे ॥ श मे सु
 न नृपति जन क के वै न्द्रा ॥ कृपा सिंधु
 करु नां के न्द्रै नां ॥ सब सा तये डु म लि
 से नां मां ॥ बो ले ब चन प्र म न्द्र नि रां मं
 २ ॥ डुर म लि उ वा च जो न्द्र नंत के गु
 न न्द्र वतारा ॥ तिन को नृपति न हे को

करे श्रीरुक्मिणीवचनचौरे सक
लश्रंगहरिजीके ध्यावे संघचक्रग
दापद्ममनत्यावे एध नृपनव
सनपारधरसहिता हस्तवदनदे
षतदृषहरिता विवधिभांतिश्र
सनानकरावे बकुसुगंदमाला
पहिरावे बकुतभांतिकरि भोगल
गावे गंधधूपशरतीसवांरे घंटा
श्रादिसबदबिसतारे एह याविधि
मंत्रनसोमवकरे ता पीछे श्रुति
बिसतरे बकुरिकरें डंडोतप्रनांमां
पदेमं क्रमेवै हरिनांमां एध वाहरि
बस्तमितैतेश्रांनै श्रीरुक्मिणीसो
पूजाछांनै तनमंनयेनिरंतरसेवै य
वह प्रसादमाधेसोत्वेवै एध बकु
रिदेवकौं हिरदैधरे नूरतिसयनपि
होरैकरे याविधि हरिकेंश्रातमाजां
नै जथासकतिसपर्यावांनै एए श्रे
संभवतचपजेप्यानां वगैश्राणिमितै

नगवांतां पानकं जियह साधन
गतीं पानकं यत बहो वै मुक्ती ॥
१००॥ उभै प्रत्तमां हरिकीसेवो सा
धु प्रतसिक सो हरिदेवो १०१ दोहा
ये सुनिज चन विदेह वै वाद्यो म
नेमै प्यार ॥ तब शल नरु कर मन स
हित ॥ पूछे हरि अदतारा १०२ ॥ इ
त श्री भागवते महापुराणे येकादस
स्कं देव सुदेव नारद समा दे जायंती
पारव्यान तृतीयो अध्याय ॥ ३ ॥ २२४
राजा उवाच ॥ चोपई ॥ अब अब तार
काथा विस्तारो ॥ गुन नरु कर मन स
हित उचारो ॥ जे जे लीये लेहिगे श्रीगै
अब है सब भाषो अनुरागो ॥ शंभे सु
न नृपति जनक के वैनां ॥ कृपा सिंधु
करुनां के श्रेनां ॥ तब सातये दुमति
सेनां सा ॥ बोले बचन प्रमत्त निरां म
रापुर मलि उवाच जो अनंतके

ए पारा भूमिरे नुं करिकोई गनें सो
ही कहा सकल गुन भनें बहुरिके
गुन अ वतार अनंता बाल बुधि जो
चाहे अंता ताते कछु येक में भाये
तेरे हू देन संसै राये ॥ ४ ॥ पंच नृत
निरमल ब्रह्मं फारा व्योनी रमां हि
ज्यो अंडा ता में अंस आपनो धारा
सो हे आदि पुरुष अंतारा ॥ ५ ॥ जिन
की देह फुते सब देहा देह मां हि व
रते सब येहा तिन के अं मनते सब
अंगा इंद्रिय अहं बुधि बहोरंगा ॥ ६ ॥
सतरजतम ते सकल पसारा ॥ उत
पति अरु पालन संहारा ॥ प्रथम हि
रजते ब्रह्मा कीयो सातिक जनम वि
ष्म को दीयो तां मस करि संकर उप
जाये ॥ तिन सौं सकल लोक निपजा
ये ब्रह्मारचै विष्म प्रतिपाले ॥ हरे स
प्रयो भव पंथ चाले ॥ ७ ॥ बहोरिसुनें
हरिके अ वतारा ॥ भव सागर के तार

नहराधरमपिताञ्जलुवृहत्तिमात
 तहांनरनारायणजिह्वाकाण्यञ्ज
 तमपांननक्तिविसत्तरेजासौला
 गजीवजिसत्तरोप्रवृद्धं प्रगटकरे
 आचरनांनारदाद्विलिखितेवेचर
 नां॥१०॥पिकब्जारसुरपतिमनञ्चान्मो
 ममलोकहिलेहेयोंजांन्यो॥तवति
 निकामहीआग्नादीन्ही॥हांससंगि
 सेनांसबलीन्ही॥११॥रंभादिकञ्चंप
 चुराञ्चपारा॥तिरन्विष्टिपवनवसं
 तमसारा॥ब्रह्मीबंडसवैचलिआये
 नरनारायणवेठेपाये॥१२॥नरिभ
 रिबांएनिहनेसरीरा॥निरफलभ
 येञ्चगनिज्योतीरा॥तवतैसंसंसं
 यर्हरंलो॥प्रापञ्चगनिजीवनगति
 मांजो॥१३॥हरिञ्चप्राधइंइकरतजो
 न्यो॥हसिवोलेतिनकोभयभांन्यो॥
 मतिनैकरोपंचसैरवीरा॥दिवानरि
 नवप्रान्तसमीरा॥ १०

तिथकरावो। हम आश्रम सुफल
करि जावो। ये सुनिश्चिने दांन के वै
नां ते सब जोरि सके नहं निना। १५
तज्या नारनि वाये सीसा बोले
वचन जांनि जगदीसा। हे प्रभू ये
कछु नही अचंभा। तुम हो प्रकृति
पुरुष केषंभा। १६। निरविकार नि
रगुन निरभेदा। जिन कौं जांनि सके
नही बेदा। निजानंद प्ररन मुनि सा
रे। ते सेवत है चरन तुम्हारे। १७। तुम
रे चरन सरनिजे आवै। तिन कौं सु
ख हो बिघन पठावै। तिन को लोक
दा बिपगनी चै। गये चहे तुमरे पद
ऊंचे। १८। ताते बिघन करे सब देवा
मिटती जांनि आपनी सेवा। और कि
सी कूं बिघन न करहीं। ताते तिन्हें दं
ड सब भरहीं। १९। परितु वजन हिन
बिघन सतावै। बिघन निसीस चरण
दे जावै। जो त्रिभवन पति तुमर्य वारे

कहा करे जो विघ्न विचारे ॥ २० ॥ ता
तुम्हरो कहा अचंभा ॥ बुधांत्र
श्रुत्वा लसनिंद्रा ॥ सीतलसनवर
प्राश्रुतंद्रा ॥ २१ ॥ जिह्वासिसनादिक
विसतारा ॥ इनके गुन तेजलधि रूप
रा ॥ ताकौ बहोत कष्ट करित रौंगो प
द क्रोध बूडते मरै ॥ २२ ॥ तिनको तप
सब भिष्या होई ॥ ३ ॥ लोकमें ये कन
कोई ॥ तातैं सब साधन कंकरै ॥ तुम
री नक्ति बिना नही तिरै ॥ २३ ॥ या विधि
देव बचन उचरै ॥ तब हरिये क अ
चंभा करै ॥ अति श्रुत छ बिनारि
अनेका ॥ मन मोहनी ये कतै ये का
२४ ॥ ते सब सेवा करत दिषाई ॥ मां
मौरं मास खिन सौं आई ॥ तिनके गं
ध रूप सब मोहे ॥ चंद्र उदे उडगन
ज्यौं सो हे ॥ २५ ॥ तिन सौं हरि जी बोले
बेनां ॥ यन में ये कले कुसुम में नां ॥ सु
रा लोक को भूषन रूपा ॥ जातैं ये स

वप्रमञ्चनूपा॥२६॥तिनसवहरिकौ
कीयोप्रनांमां॥लीन्हीयेकउरवसी
नांमां॥करिप्रनांसपुनिवारंवारा॥
पङ्कचैसकत्तइंद्रदरवारा॥२७॥ति
नइंद्रहीप्रसंगसुनायो॥विसमय
त्रासइंद्रमनश्चायो॥बहुरिलीयो
हंसंश्चवतारा॥चारिभयेसनका
दिकुवारा॥२८॥दत्तकपिलश्चरु
पिताहंमारा॥श्रावकुंब्रह्मरूपवि
सतारा॥हग्रीवमधुप्रांननिवारे॥
ताकरिहरिवेदकुधारे॥२९॥सतेव
रतराजाहरिनक्त॥ताकौहरिजीकी
योविरक्त॥बिनहीप्रलयप्रलैदि
षायो॥महुरूपहोयज्ञानसुनायो॥
३०॥बहोरिवराहरूपहरिधास्यो
हरिनाम्पश्चतिदृष्टहीमास्यो॥बोरी
कृतीमहीजलमांही॥करिउपायध
रिआनीजहो॥३१॥कूरमहोयमंद्रगि
रधास्यो॥अमृतकाठिसुरकारजसा

॥ ग्राहगहो गजराजमुकास्योति
 रिजीततकालिउवास्यो ॥ २ ॥
 बालवित्यादिकजेरिवराजा ॥ ३ ॥
 गुह्यसमयश्रीकारविराजा ॥ ४ ॥
 कैकाजैइकबारा ॥ समिधेनिदौते
 बनहिंपधारा ॥ ३ ॥ तहांगायकेपण
 नरिया ॥ तिनमेंआपआपसब
 रिया ॥ हांसीकरेइइतहांधरो ॥ त
 तिनहिरदेहरिहीसंमरो ॥ ३ ॥ ज
 वआतमकौकोइनांही ॥ तवतुम
 थउधारेइमांही ॥ तोतैअबहम
 अनाथा ॥ कस्नांसिंधगहोक
 रिहाथा ॥ ३ ॥ इतनीसुनिआरतिक
 ॥ तहांउठिध्यायेसारंगपांनी
 तवहरिकरगहिसबनउधारा ॥ वा
 लवित्याउधरनअवतारा ॥ ३ ॥ व
 लहत्याभयइइसंहास्यो ॥ तवहीह
 रिप्रगटउधास्यो ॥ सुरवनिताजवअ
 ॥ तवतैहरिसरनिहीअनुं

सरी ३५ तव हरि जी ते सकल उ
धारी अ सुर मारि सब विपति निवा
री पुनि निर सिंघ रूप हरि धार्यो ॥
अ सुर हिरनांकु सिजिन मास्यो ३६
जन प्रहलाद लीयो हे राषी जाकी
प्रगट कहे सब सायी जब जब अ
सुर प्रबल अति भये देवन के अस
थल हरि लये ३७ तव तव सब म
नंतर मां ही ॥ विष्म कला अवतार
धरां ई मारि अ सुर सब दुष मिटो वे
सरनांगति सुर नर सुष पावे ३८
वांवन रूप इंद्र के काजा ॥ सिंघ्या
कुल्य श्लीयो बलिराजा ॥ तीन लो
क ले इंद्र ही दीये ॥ बलिकी भक्ति
आप बसि भये ३९ बक्रि अ धर
नी उपजे राजा ॥ परसरां म प्रगटे ति
न काजा ॥ इ क ई सबार करी निह पि
त्री ॥ भूमै क हं न राष्यौ षित्री ४० ब
क्रि नये द सरथ सुतरां मां ॥ जै हें प्र

सैलजिनतारोरां वृणाञ्चदिदृष्टसं
 हारे। धृञ्चाप्रगैरांमकृष्मञ्चवतारा
 भूकोप्रबलहरेगेलांजिदुकुल
 जन्मकरमतेकरिहै। जिनसूलाग्
 जीवनि सतरिहै। धृञ्चाप्रदुरदेवि
 जगपनकेकरता। जीवन्नारिउद
 केनरता। वैधिरूपहरिजीतबध
 रिहै। जगनिदापायइदिसतरिहै
 धृञ्चाबजुरिधरैगेकिलकीरूपा।
 अतिअपराधकरैगेभूपा। कलि
 केअंतसकलसंहरिहै। बजुरि
 प्रवृत्तिसतजुगकरिहै। धृञ्चासे
 बिहमकरमञ्चवतारा। कोईकहे
 तनपावेपारा। कस्येकमेंतुमसं
 कहे। अरेकोटिअनंतनरहे। धृञ्चा
 इनकंकहेसुनेअरुगादे। प्रेमस
 हितनिसबासुरधादे। सोनवसाग
 रमेंनहींरहे। पावेग्यांनप्रमपदलहे

सरी ३५ तव हरिजीते सकल उ-
धारी असुरमारि सब विपति निवा-
री पुनि निरसिंघ रूप हरि धार्यो ॥
असुर हिरनांकु सिजिन मास्यो ३६
जन प्रह्लाद लीयो हेरायी जाकी
प्रगट कहे सब सायी जब जब अ-
सुर प्रबल अति भये देवन के अस-
थल हरिलये ३७ तव तव सब म-
नितर मां ही ॥ विष्म कला अवतार
धरां डी मारि असुर सब दुष मिटो वे-
सरनां गति सुरनर सुष पावे ॥ ३८ ॥
बांवन रूप इंद्र के काजा ॥ सिंघा
कुल्य श्लीयो बलिराजा ॥ तीन लो-
क ले इंद्र ही दीये ॥ बलिकी भक्ति
आप बसि भये ॥ ३९ ॥ बजरि अंधर
सी उपजे राजा ॥ परसरां म प्रगटे ति-
न काजा ॥ इंद्र क ई सबार करी निह मि-
त्री ॥ भूमै क हं नराय्यो वित्री ॥ ४० ॥ ब-
जरि नये दसरथ सुतरां मां ॥ जै है प्र

अभिरामसामरऊपार

दुष्टसे

धनप्रगौरामकृष्णव

कुल

जिनसूना

निसतरिहै। धधप्रसुरदेधि

ताजीवनमारिउ

वैधिरूपहरिजीतबध

गनिरापायंडबिसतरिहै

बजरिधरैगेकिलकीरूपा

प्रपराधकरैगेभूपाक

प्रतसकलसंहसिहै। बजरि

जुगकरिहै। धर्मासे

अवतासकोईकहै

तनपावैपाराकव्येकमैतुम

है

हैसुनैअरुगावैप्रेम

सोनवसा

ध०। दोहा ॥ ये वैनां सुनिद्रुमलिके ॥
कीनी प्रह्मनिरंदा प्रभुजीतिनकी
कौन गति जेन भजे गोविंदा ॥ ध० ॥

इति श्री जगत्पते महापुराणे येकाद
सस्कंदे बसुदेव नारद संसादे जा
यंती योग्या व्यास चतुर्थे अध्याय
॥ २७ ॥ विदेह उवाच ॥ दोष ॥

जेन ही करै हरिजी की सेवा ॥ जिन
की कहो कौन गति देवा ॥ तिनके
त्रपतिन सुपनें आवै ॥ निस दिन त्र
ह्माग्रगनि जलावै ॥ श परिजो बडु
विधि धरम उपजावै ॥ तो मोहि कहो
कछु सुषपावै ॥ ये कहि बचन ज
नक ज बरहे ॥ नृस्यमें चमसनां म
तव कहो ॥ चमस उवाच ॥ हरि
जीवि प्रबदन तै करे ॥ बाहन तै वि
त्री विसतरे ॥ जांघन हूंतै वैस उप
जावे ॥ सुइति नमें चरन तैं आये ॥ उ
ये ही भांतिकी ये असरमां ॥ ता तै

भजनसभनकोधरमां॥तेआपही
करैप्रतपाला॥आपहीयोषेदीनद
याला॥ध॥त्रैसेप्रभुकोजेनरविस
रै॥तेअपारअपराधनिकरैजेगुरजे
हीपित्रजेही॥स्वामीजेहंकितिघ
नीहोई॥ध॥तितनअपराधनिअधमे
गतिजावै॥कवहुनूत्तिसुषाहीन
पावै॥सुइजोषिताअंत्यजआदी॥
तितकौंहरिकथाश्रवनादी॥ईते
मनमेंअभिमाननधरै॥तातैतुमसे
कपाकरै॥यातैइनकोहैउधारा॥
परैऊंचनकोवारनपारा॥अ॥विप्र
रुषित्रीवैस्यत्रेवरनां॥उपनयना
दवेदमैषकरनां॥इनसंबहीनके
तेअधिकारी॥तातैहौं॥हिबहुतअ
हंकारी॥ईतातप्रजकौंजांनैनांही
सुहीपितबांनीमैभरमाई॥विष्मनज
नउत्तमअधिकारा॥पायोताहिनत्न
धैंगवारा॥अ॥करमअक्रमविक्रम

दयां ना जग्यमाहनाहाककुश्री
नां २१ बकुस्योवहांकृतेंकुडावे
श्रीसोतातपूजसोपावे हरिकीसर
नेंश्रीवेकोई सारीविधिसमकेइक
सोई २२ केजेतिनकीसरनहीश्री
वे अनिप्रायसारोसोपावेवेहरि
जनश्रुहरिहीनजांनैं श्रीपुहीकूं
पंडितकरिमांनैं २३ तातैतातपर
जनहीजांनैं पटिपटिवेदश्रुनर
यहिगंनैं धनश्रीसोजोकरेउधा
रा सोधनघोवेवृथागवारा २४
जोधनहरिकैका जलगावे सोत
वप्रेमभगतिकेपावें तातैहोय
ग्यानप्रगासा तबहरिमिलेमिटेन
वपासा २५ श्रीसोधनलेमूढश्रुयां
नां देहकाजियोवेभरमनांका
लनिरंतरहरतनदेधें बकुसद
मंतदूरिकरिलेधें २६ महमांसम
धमेंश्रीनीजें श्रीरभूतिककुंनां

तहां ऊं आं पुं लो ईं अं आं तां
पां न घां न तें अध गतिं जो जो ॥ १ ॥

वनितारितुं दां न ही देवो ॥ सोर ॥
लिक ऊं नां वन लैवै ॥ सोईं जो ल ग ए
सुत हो ई सुत के न ये त्पणी ये सोईं
॥ सो स क ल व रं ज को धं रं ॥ ता
भू लिन पा वै म रं मां ॥ भू रं हं न शु
ति व घां नै ॥ मूर व न्ना पृ ही पं डि
मां नै ॥ शि णा ता तें व कु त क रं न रं रं
श्री य म न हि क व हू न हि शं नै ॥

जीवन मारें ॥ ते व हू ज

न म ति न्हे सं हारें ॥ शो धा व रं ग श स
व घ ट मां ही ॥ ये कै हरि हू जो का रं नां ही
ति न को शो ह करें त न पौ शो दा रा सु त
आं नि सं तो षे ॥ श न ही मूर व न ही
ग्यां नी ॥ प टि प टि गं थ हो जिं न्द्र लि
ते न्द्र सा धि रोगी स व जां न ॥ ति
सों ग्यां न न मां डे ग्यां नी ॥ रं रं ते स व क
आ प नौं घा ता ॥ सु प नें कं न ल हे कु रं

यमयविक्रान्ध्ररक्तवरनत्रेता
जुगमांही॥त्रगुनमेघलागलिपहि
राई॥पीतकेससरवादिकहा
रुगजुजस्यांमत्रयमयनाथा॥ध
तवतिनहितजग्पादिककरै॥वे
वहितकरमनविसतरै॥सर्वदेव
मयहरिकौजांनै॥तवहरिसवयौ
पूजाठांनै॥ध५॥प्रसन्नग्रनचुरगाय
कहीजे॥विष्णुचुसाकपिजग्म
नीजे॥सर्ववेदश्रुकरमविजयं
ता॥श्रेसेनांमकहेसबसंत॥ध६॥ह
परपीतबसनघनस्यांमां॥संघादि
कश्रायुधश्रभिरांमां॥चारिबाह
भृगुनताधरनां॥लक्ष्मीचहितव
कुतश्रभरनां॥ध७॥चं॥वरछत्र
श्रादिब्रह्मसैनां॥महारजिलक्षणा
सुषेदेनां॥वेदतंत्रपथसेवाकरै॥स
बश्ररपनपूजाविसतरै॥ध८॥वासु
देवसंकरयनदेवा॥प्रधुमनश्रनि

रुद्रश्च मेवा जारायणनगरोनश्च
नंतां जितकोकोईलहनश्च तां
धए विस्वरूपविस्वेशुरस्वांभीस्व
र्वात्मसबश्चत्रुजांमीं ब्रह्मतभोति
श्चस्तुतिश्चनुस्मै विधिसौंहापरस्व
जाकरै। पूजा कलिजुगपीतपितंम
रधारी। कृष्णदेवघनस्पांममुरारी
सहितपारषदब्रह्मशंभरनां। स
रवनकीरतनपूजाकरनां। पशुं
श्रीयमनब्रह्मभरेविकारां। तिन
तैराथैचरनतुम्हारा। सबविधि
सबतीरथकोवासा। सुमरतहीपु
रवैसबशासा। पूरासिवकिरंचिम
रनरमुनिधावै। जाकोनेदखेवन
हीपावै। रायिलेतसरनहीजे।
वैजनममरतसबद्वयमिठांवे।
केवलदीनहोतनुदोरे नबयाप
रकेपारउतारे। श्रेयचरनतुम्ह
रोगायो ताका। मरगनदी। नई।

५ अति डरलभ सुरवंछे जाकौं
श्रीसोराज छोटिकरिताकौं दसर
तनक बचनसतकरनां बनकौं
गवनकी योजिनचरनां पूष हेम
मृगदयंता मन नायो जो जाके
पीछे उविधायो जो भगतनकेयो
आधीनां ऐसे चरनसरनमेंली
नां पूई ऐसे विधिकलिप्रस्तुति
करे बकुविधि हरिनां मनउच
रे सुनेकहें सुमरे अरु धावे ते
ततकालततकें पावे पूष य
विधिजे जुगजुग हरिसेवे तिन
नकौं हरिग्यानही हेवे ग्यानप
यनिजतत्वसमावे जहां जाय
बकुस्यो नही आवे ५० जे कलि
गके युनकौं जानत ते बकुवि
प्रस्तुतिकौं जानत जैसो पमस
कलिमांही ऐसे और जुगन
३ पूष सतजुगध्यानजगप

हाहापरप्रतिमापूजेरामहीक
केवलनामंदि कगावे सोसो
फलततकालहीपावे देवेयान
वसागरमंदिनिरंतर उपततत्र
परेनही अंतर नामेदमिपुनत
मउचारनयेकजिह्वजसकल
कोतारनही यानकनारोप
लिमांही जनेहुं लनेमवकरो
हीतामंजेद निरुक्तचरोनिनि
रामजेवतकामने लनेमव
कृतिनेजेवतकामने लनेमव
कामनेजेवतकामने लनेमव
रामनेजेवतकामने लनेमव
नहेलनेजेवतकामने लनेमव
तरोनेजेवतकामने लनेमव
हीजेवतकामने लनेमव
हीजेवतकामने लनेमव
देवनेजेवतकामने लनेमव
मुडनेजेवतकामने लनेमव

जे उपजे ते भक्ति ही करे ताते तहां
ब्रह्म त उधरे ई ५ अरु जहां तांम
परणी कनमाला कांवेरी पयसु
ना विसाला अरु सरसुती पच्छि
म बां हनी गंगा आदि हरि पुत्र बां
हनी ई ई जे मां न वपी वै जल इनको
हरि होय हरि दे मलतिन को ते स
र्वथा हो हि हरि नक्का साधू संग हो
य आसक्ता ई ७ भूत कुटं मपित
र रिय देवा इनके रिनी करे सबसे
वा सोन रिनी हरि सेवा कर ही जे स
बत जि हरि को अनुसर ही ई ८ जो
विधित जि हरि चरन न आवे तिन
के मल हरि हरि वहावे ब्रह्म ह्यो म
ल नुपजे न ही कोई उपजे क दे हरे
हरि सोई ई ९ ताते सब विधिको फ
लमेका गहाये हरि पद छां डि अने
का सबके प्र नुस ही सुषदाता सर
वांगति पालक विष्णुता ७० जब ज

वज्रजोसरनेंश्रायोः तबहं । ३६ ।
नतिनहरिपायोः तातेहैरुपाय
परहरि येः श्रीभगवान् नारायण हरि
रये ॥ ७१ ॥ श्रीसेसुतिजें ॥ ७२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नकहिरदेश्रुतिनदरुके ॥ ७३ ॥ संफ
मेद्योसकलनक्षेत्रे ॥ ७४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नसूतोसोजोग्यो ॥ ७५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
कृपूजाकीश्री ॥ ७६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
चुनादीनी ॥ ७७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वही ॥ ७८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
जनकविदेव्याः सवत्याग्यो हरि
केचरनदं ननु अनुराग्यो ॥ ७९ ॥ ॥ ॥
ध्रुवह्यपदा मृगानयोः तरिभवसिं
धुवह्यमे गयो ॥ ८० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
हंबडभागी ॥ ८१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
अनुरागं श्रारसकलकोतजिह्वसं
गातवण्यहोब्रह्मप्रसंगा ॥ ८२ ॥ ॥ ॥
रुतुमतो वकीवसुदेवा नयेकि
रथकरिहरिसेवा तुम्हरे ॥ ८३ ॥ ॥ ॥

जगसारा॥ जिनके हरि लीनों श्रवता
रा॥ ७६॥ इसन श्रा लिंगन श्रा लापा
श्रासन भोजन सैन मिलापा॥ हरि
सों पुत्र जांनि चित दीनों॥ तातें सुफ
ल जनम तुम कीनों॥ ७७॥ कपट ब
सुदेवरुसिसपाला॥ दंत बक्रस
त्यादिकराला॥ बैर नाच कृष्ण ही
चित धास्यो॥ तिन कं कौं हरि देव
उधास्यो॥ ७८॥ कंस मरन श्रति म
नमें श्रां न्यो॥ कृष्ण बैर निश्चै जीव जां
न्यो॥ पूतनां श्रादिसब नये विडवा
पाये मुक्ति मिते सब दुषा॥ ७९॥ ते
जो प्रेम प्रीति सों सेवै॥ तिन कौं क्यो
न परपद देवै॥ श्रवतुम पुत्र बृधिम
ति श्रां न्यो॥ कृष्ण देव कौं ब्रह्म ही जां
नों॥ ८०॥ माया करि धरि नर देही॥
पार ब्रह्म तुम जां न्यो॥ ये ही ब्रह्मो दे
व्य भूमें श्रध भारा॥ मेहन काज धस्यो
श्रवतारा॥ ८१॥ प्रमपुनी तजसही वि

सतरहो जासो लाग्य जीवति उल
ही जे जे इतसो हेत लगो वै जे ते ल
कल परम पद पावे ॥ ४ ॥ श्लो सी हनि
नारद की वांनी ॥ वसु देव देव ली
श्रुत मांनी ॥ आ प ही उ कुं सु कि
करि जां न्यो ॥ हरि में भाव ब्रह्म को
मां न्यो ॥ इत्या इतिहास कथा जे
माये ॥ सावधान सुनि हरि दे राये ॥
सो सब भव बंधन छिटकावो ॥
पजे ग्यान परम पद पावे ॥ ४ ॥ दो
हा ॥ ये भाव्यो संघे पसो ॥ हरि मिल
को द्वारा ॥ हरि उधो संमाद श्रवा व
रनो करि बिसतार ॥ ४ ॥ इति श्री
भागवते महापुराणे येकादस स्कं
देवसु देव नारद समादे जाये तीये
पाव्यान मंत्र मो श्रध्याय ॥ ५ ॥ ३ ॥
नारद वसु देव समाद समाप्तता श्र
ष्टक म उधो संमाद प्रसता व प्रस
ये ततत्र ॥ श्रीसुकवाकि ॥

बहु रिसु नौ नृपश्यात्मा विद्या जाके
जांने मिटे अविद्या मिटे अविद्या
ब्रह्म ही पावे ब्रह्म ही पाय फेरिन
ही आवे १॥ तब ब्रह्मासन कादिक
संगा ॥ नारदादिरंगे हरिरंगा ॥ सक
ल प्रजापति नृगुमरी चादिक ॥ म्हा
देवतीने भूतादिक २ ॥ सुरसमुह
संगले सुरपती ॥ पवन अस्वनी
सुत ग्रहपती ॥ बसुं अंगारा सुर ३
रि भूदेवा सांध्यादिक अरु बिस्व
देवा ३ ॥ रिषी ग्रंथ वपितर अरु ना
गा ॥ चारन सिध नरे अ नुरागा ॥ अ
पसर अरु गुह्य कविधा धर ॥ किं
नरय आदिक माया धर ४ ॥ कृष्ण
देषि वे कारन सारे ॥ आनंदि त द्वारि
का पधारे ॥ केई नांचे केई गांवे ॥ के
ई वाजे बकुत बजावे ५ ॥ केई जै जय
सब दउ चारै ॥ केई कृष्ण जसही वि
सतारै ॥ या विधि करे बकुत उहाहा

हरिप्रेमप्रवाहाई। श्रीशुभ

गवानमनुजतनधारी। दरसनसक
नहरनमुरारी। लोकनसाहिजस
विसतरै। प्रवनादिकनिसक
लश्रघजारे। प्रानिधरिधिप्ररन
वती। जाकेसमनही। नमरा
। जामेंब्रह्मादिचलिआये।
देवकेप्रसनपाये। सुरग
तनकीमात्ता। सादितकीने
नदयात्ता। पावतप्रसन्नपतिन
होवै। चित्रलियेसेसमुषजोवै
ए। चित्रपदनिबद्धस्तुतिकरै। उ
तमश्रथनिजसविसतरै। सहित
वीनतीश्ररुपरनांमां। प्रसभयेस
प्रनकांमा। श्येदेवाउवाचहेप्र
श्रचरनसरोजतुम्हारे। मनकम
बचनचितश्रहकारा। इंश्रीयवृ
धप्रानंश्ररुदेहा। बंदतहैंहमपर
दयेहा। ११। जाकेोंप्रानघचनमन

सोधे सावधान निसदिन शारोधे
 भाव सहित अमि अत्र ध्यावें ते उ
 या विधि प्रगट न पावें ॥ १२ ॥ धनि धा
 ने ह म ध न्य भा ग ह मारा ॥ प्र ग ट दे षे
 प्र स तु म्हा रा ॥ जि न के ध्यां न की र त
 न प्र व नां ॥ ब क्क रि न हो वै श्रा वा ग
 व नां ॥ १३ ॥ तु म अ द्वै त द्वै त ये क स्यो
 अ प नी मा या स ब वि स त स्यो ॥ तु म
 ही में उ प ज्यो सं सा रा ॥ स दार है तु
 म रे श्रा धा रा ॥ १४ ॥ तु म ही मां हि ली
 न स ब हो ई ॥ तु म कौं प्र सि स के न ही
 को ई ॥ रा ग र हि त ज्ञा नं द स रू पा ॥
 अ जि त अ मि त चि द रू प अ नू पा
 १५ ॥ ब क्क अ ध्य य न प्र व न अ रू दं
 नां ॥ की या उ पा स न त प अ स नां नां
 त्या ग ज्यो ग जि ग्पा दि क जे ते ॥ अ त
 म सु द्ध करै न ही ही वे ते ॥ १६ ॥ तु व गु
 न प्र व न प्र त अ ध ना से ॥ ज्यो त म मां
 हि सूर जि प्र का से ॥ ता तैं ज न म क

रमगुनधरो दीनबंदु दीनक उ
 धारो १७ जोतुसचरनकं वल्लसु
 निधांवे भवभयभीतनपल्लि
 टकांवे अरुनिजभगतनिरंतर
 सेवे। नयनहीसमुक्तेनहीकर
 लेवे १८ अरुयेकनिवेकंटा
 मित्ता हिरदेधरेतुवचरननि
 चिंता बक्रियेकसेवेसहकाग
 येकनयेचाहेनहकांमां १९ जा
 वनमुक्तिनयेइकसेवे। प्रेमभा
 वसंअतिसुषलेवे। येकैजिग्गादि
 कनसौंभजे। सरवदेवमयतुमक
 जजे। २०। येकैवरनआदिआप्रमा
 तुमरेहेतिकरैसबधरमां। येकैये
 करूपकरिधावे। द्वैतभावकव
 रुनहींलावे २१। येकैतुमप्रति
 मांकसेवे। येकैनांमनिरंतरलेवे।
 येकैप्रवनकीरतनधांनां।

येविधिनांनां २

साधे सावधान निस दिन श्रा रोधे
भाव सहित अग्नि अत्र ध्यावै ते उ
या विधि प्रगटन पावै १२ धनिंधा
नेह मधु न्य भाग ह मारा प्रगट देवे
इस तुम्हारा जिन के ध्यान की रत
न प्रवनां बडुरिन होवै श्रा वाग
वनां १३ तुम अद्वैत द्वैत ये कस्यो
अपनी माया सब बिसत स्यो तुम
ही में उपज्यो संसारा सदर है तु
मरे श्राधारा १४ तुम ही मां हिली
न सब होई तुम कौ प्रसिस कै न ही
कोई रागरहित ज्ञानंद सरूपा
अजित अमित चिद रूप अनूपा
१५ बडु अध्ययन प्रवन अरु दं
नां की या उपासन तप असनानां
त्याग जोग जिग्यादिक जेते श्रात
म सुद्ध करै न ही ही वेते १६ तुव ग
न प्रवन प्रत अघना से ज्यो तम मां
हिसूर जि प्रका से तातै जनम क

मगुनधारो दीनबंडु दीनलकु
धारो १७ जोतुमचरनकंकलकु
निवमयभीतनपलहि
टकोवै अरुनिजभगतनिरतर
सेवै। नयनही समुकेनही ककु
॥ १७ ॥ अरुयेकनिबैकुंडनि
ताहिरदेधरेतुननरननिनि
तावकु रिवेकसेवैसहकांमं
नयेचाहेनहकांमं १७ ॥ जी
नमुक्तिनयेइकसेवै। एमभा
अतिसुखसेवै। येकेजिपादि
नसो। सजे। सरलदेवमयतुसकुं
शे। येकेवरनआदिआप्रमा
रेहेतिकरेसबधरमां। येकेये
करूपकरिधावे। इतभावकब
नही। जदि २१ ॥ येकेतुमप्रति
कुंसेवै। येकेनांमतिरंतरलेवै।
प्रवनकीरतनधांनां। कहां
येबिहिलांनां २२ ॥ यों

ध तुमयेसबकेकरता॥ नपजावन
प्रतिपालनहरता॥ तुमआधारस
कलकेखांमी॥ तुमफलदाताअं
तरजांमी॥ ३४॥ जोकछहोयसक
लजुगमांही॥ तुमकरताइजाको
नांही॥ परिककुलिपतिहोऊनही
देवा॥ कोईलपिनसकेतुवनेवा
३५॥ सोल्हसहंसयेकसोआठा॥ जि
नकेहिरदैप्रेमअतिकाठा॥ हाव
भावसंप्रीतिबढावै॥ मदनबांन
बऊनांतिचलावै॥ ३६॥ तुमतोह
बसिहोवैनांही॥ नहचलनिजान
दपदमांही॥ औरछोडिहूबैवेको
ई॥ करतवासनाबंधेसोई॥ ३७॥ ये
द्वेनदीप्रगटतुमकीनी॥ जिनकी
महिमांपरेनचीन्ही॥ येकगंगच
रननकोनीरा॥ प्रसतनिरमलक
रैसरीरा॥ ३८॥ इजीतुवकीरतेकी
सरिता॥ त्रिभवनजहांतहांविसतर

ताप्रवचनकरतन्त्रंतरमत्ननासै
निरमलहिरदैब्रह्मप्रकासे।।३९।।
ब्रह्मप्रकासमयेनेनांही।।येलेये
कमेकमिलमांही।।येहेनदीनन
जेजेपंडितातिनकौकालकरैन
हीषंडिताधवा।।तातेकृपानाष्ट
वकीजे।।साधूसंगहमकौनितिही
जे।।जिनमेंकथानदीहमपावै।।
जातेतुवचरननचितलावै।।४१।।
सुकुणुवाच।।येलेसिवसकौदिक
संगा।।अस्तुतिकरीबहुतप्रसंगा
बहुस्यौंविधिइकवचनसुनाये।।
जाकेकाजसकलमिलिआये।।४२
ब्रह्मउवाच।।हेप्रभूहमतववि
नतीकीन्ही।।धरनीभारभरीतवची
न्ही।।तातेतुमलीन्हों।।अवतार।।स
कलउतास्यौभूकोभारा।।४३।।मे
दिअधरमधरंसविसतस्यौ।।सव
संतनकोकारजसास्यौ।।अरुकीर

तिबहुविधिविसतरी॥ नवसाग
रतिरवेकौकरी॥ ४४॥ त्नेश्वतार
भूपयह्वंसा॥ सकलजननकोमे
द्योसंसा॥ बहुविधिकीन्हेकरमश्र
पारा॥ जिनसोंलाग्यजैहेंनवपारा
४५॥ अरुयहुकुलहिजप्रापवि
नास्यो॥ नहिरहिहैंदिनद्वैहेंनास्यो
तातेंदेवकाजसबकर्यो॥ करवे
कंकुच्छिनांहीउबस्यो॥ ४६॥ गयेव
रषसतश्रधिकपचीसा॥ तातेंहम
बिनवैजगदीसा॥ श्रवकरिकृपाच
लोनिजलोका॥ करतपुनीतहमा
रेवोका॥ ४७॥ हमहैंदासतुम्हारेदेवा
निसदिनकरेंतुम्हारीसेवा॥ श्रैसीसु
निब्रह्मांकीबांनी॥ तबहसिबोलेसा
रंगमांनी॥ ४८॥ श्रीनयाबांनउवाच
मेंसबसुनीतुम्हारीबांनी॥ तुमरो
कारजनयोयहजांनी॥ पयहकु
ल्योहंपहरौ॥ तोनाससकलन

मैं कस्तूरधर यह सब व्याख्या
 मदमता नयेर है सो सेरी कला ॥
 तजे सब प्रत्यय वानै ॥ जी साय
 मरजादा ना नै ॥ भूणे ॥ तले गेवा सहे
 तनु पजायो ॥ प्राप सब लक्ष्मि प्रनले
 यो ॥ अख प्रन सब हल दै नै विन
 ऊं ॥ पीछे तु व लोक जसे ॥ अं ऊं
 ५१ ॥ असे सुने हरि जी के वैनां ॥ हिर
 बटो ॥ सब ही न के चै नां करे प्र
 पति विनती ॥ एरो अ प्रने ॥ लोक
 पधारे ॥ पूरा ॥ तदन र पति की सभाम
 जारी ॥ बेटे य दु कुल सहित मुरारी
 दारावती ॥ उठे उत पाता ॥ तिन कंदे
 धि कहि हरि वाता ॥ पूर्ये उत पात
 उठे चहुं बोरा ॥ अति भय राय कदी
 रा ॥ अरु द्विज प्राप नयो कुलं
 ताते भली देषी ये नां ही ॥ ५४ ॥
 ताते अख यहां न ही रही ये ॥ तजी
 जीयो जो चहीये ॥ अति पुनी

तिव कुविधिविसतरी ॥ नवसाग
रतिरवेकौकरी ॥ ४४ ॥ लेखवतार
भूपयहवसा ॥ सकलजननकोमे
द्योसंसा ॥ वकुविधिकीन्हेकरमञ्ज
पारा ॥ जिनसोंलाग्यजैहैंभवपारा
४५ ॥ अरुयडकुलहिजप्रापवि
नास्यो ॥ नहिरहिहैंदिनईहैंनास्यो
तातेंदेवकाजसबकर्यो ॥ करवे
कंकुच्छिनांहीउवस्यो ॥ ४६ ॥ गयेव
रषसतअधिकपचीसा ॥ तातेंहम
बिनवैजगदीसा ॥ अबकरिकृपाच
लोनिजलोका ॥ करतपुनीतहमा
रेवोका ॥ ४७ ॥ हमहैंदासतुम्हारेदेवा
निसदिनकरैतुम्हारीसेवा ॥ श्रेसीसु
निब्रह्मांकीबांणी ॥ तबहसिवोलेसा
रंगपांणी ॥ ४८ ॥ श्रीनगचानुजान
मेंसबसुनीतुम्हारीबांणी ॥ तुमरो
कारजतयोयहजांणी ॥ पयहकु
ल्योहंपहरो ॥ तोनाससकल

केमेंकरूं॥धए॥यहसबयादवव
कुमदमता॥नयेरहैसोमेरीसता॥
सोहितजेंसबप्रत्यगनै॥ज्योसाय
रमरजादाभानै॥पू॥तातैनासहे
तनुपजायो॥आपसबनविप्रनते
पायो॥अबइनसबइनकौबिन
सांऊं॥पीछेतुवलोकनमेंआंऊं
पू॥असेसुनेहरिजीकेबैनां॥हिर
देवठो॥सबहै॥नकैचैनां॥करैप्र
निपतिबिनतीसारे॥अपने२लोक
पधारे॥पू॥तबनरपतिकीसनाम
फारी॥बैठेयडुकुलसहितमुरारी
द्वारावती॥उठेउतपाता॥तिनकंदे
थिकही॥हरिवाता॥पू॥येउतपात
उठेचऊंकोरा॥अतिभयदायकही
सेघोरा॥अरुछिजआपनयोकुल
सांही॥तातैभलीदेवीयेनांही॥पू॥
तातैअबयहांनहींरहीये॥तजीये
वेगपजीयो॥जोचहीये॥अतिपुनीतये

त्रप्रभासा॥ तहांवेगचलिकीजेवा
सा॥ ५५॥ येकवारदक्षप्रापहीदीयो
सिसीकेक्षरोगतबनयो॥ जबसे
सिसप्रभासहीन्हायो॥ छद्योप्राप
प्रमसुषपायो॥ ५६॥ तातेंश्रवप्रभा
सचलीजे॥ जहांजायश्रसमानक
रीजे॥ तिरपतिदेवपितरनकौक
रिये॥ विप्रभोजनबहुविधिविस
तरिये॥ ५७॥ तिनकौंदांनबहुतवि
धिदीजे॥ सरधासहितप्रनांमहीकी
जे॥ तिनप्रसाददुषपरहरीये॥ ज्यो
नावनसोंसायरतिरीये॥ ५८॥ ऐसी
सुनिहरिजीकीवांनी॥ सबजादव
नभलीकरिमांनी॥ तबचलिवेकौ
सकलविचारे॥ अपनैरथनसवा
रे॥ ५९॥ तबउठवहरिकौनिजदा
सा॥ देषिसकलविधिभयोउदासा॥
चलियेकांतहरिजीमेंआयो॥ चर
ननिषदिक्केवचनसुनायो॥ ६०॥ ७

देववज्राच देवदेव ईश्वर जोगे स
प्रवतकी रतनहरन कलेला प्रभु
कुलकं संहारहि करिहो। अत्रु
समृत्यलोकपर हरिहो। ईशानि प्र।
प्रापमेटन संमरथा। निही मेदो लो
कौन अरथा। मेरे जीवन चरन हू।
जैसे माननुदिक आंधारा। ईशानि
नाथ अब जैसी की जै। संग आपने
कौन जै। तुम्हारे सब आचरं अ
पा सब कौन अतिकल्पान सरूपा। ई-
जिन कौं पाय और सब त्यागों विभव
षडुषसे लोंगों। आसन गवन
सन असनां। जागत अरु सोवत वि
धिनां। ईध। सदा निरंतर को मैदासा
क्यों पलत जौ तुम्हारे पासा। यह मा-
या नयते नही कहौं। तुम बिन-
निमि बिन ही रहौं। ईध। गंधवसन मा-
ला आभरनां। तुव ऊतीरन कौ मैध
। महा प्रसाद निरंतर पोष्यो। दर्सप

७ सर्वकृविधिसंतोष्यो ॥ ६ ॥ ॐ सोमं नि
जदासतुम्हारे ॥ माया करिहैं कहा
हमारे ॥ माया नय अरु तुमरे हेता
हो ॥ हिदिगंबर अरु उरधरेता ॥ ६ ७ ॥
इंद्रिय देह प्रांन मन साधे ॥ सावधान
न तुमको अरोधे ॥ ब्रह्म विचार सदा
मन लावै ॥ तेजिन रूप तुमारो पावै ॥
६ ८ ॥ हम कक्ष कर्म अकर मन जांनै
ऊरु दे प्रांन वैरागन अंनै ॥ तुम्हरे भ
गतन के मिल संग ॥ भवत रिहैं सुनि
तुव प्रसंगा ॥ ६ ९ ॥ तुम्हरे कर्म बचन
परिहासा ॥ आसन गवन रूप प्रका
सा ॥ कहत सुनत सुमरत सुषमांही ॥
भवसागर हमर हिहैं नांही ॥ ७ ० ॥ ता
तैं माया नय नही अंनौ ॥ आपुही स
दा मुक्ति करि मांनौ ॥ परितुम बिनां प्रां
नत जि जांही ॥ तातैं मोहि छांडिये नां
ही ॥ ७ १ ॥ दोहा ॥ एउद्वनिज भगति
के ॥ सुनें बचन गोपाल ॥ तब करुनां

यकरि कृपा। बोलैव चंलरि सख
 उश। इति श्री भागवते महापुराणे
 त्रेकादशस्कंदे श्री भगवत
 समादेशं च मोक्षार्थं ॥ ६ ॥ ४३ ॥
 श्री भगवानोवाच ॥ त्रिपदा। इत
 गउठवयहयौं ही। ज्योतै कह
 वात है त्यों ही। सिव विरं। चिर क
 दिवे सा। बंछै मम वै कं बप्र दे सा
 । भूमें भार बलोजब मारी। तब भू
 पासि सुकारी। ब्रह्मादि कने विन
 ती करी। तातै सलुज देह भें सरं। य
 श्रुको सलु जार ललास्यो। सकल
 नको कारज सास्यो। श्रुकी नों ज
 सतार। तातै जीव जाय भव
 । यइ कुल श्रापनी योडु जिपा
 श्राप श्राप मे कै है नासा। श्राजि ह
 सप्तम दिन मां ही। सिधु द्वारिकारा
 । ध। जब हमें तजि हों य लो
 । तब पावे गो। इष्ट जल

लजुगन्त्रानिश्चिष्टतहोई जातैं अ
वकरिहैंसवकोई प्र तातैं सुनिउठ
ववडनागा अवतुमकरिसवही
कोत्पागा मोमैंसदाचित्तिएरकरो
समद्रिष्टीहोयभूमैंविचरोई जोक
खुकहनसुननमैंश्रावे अरुमनबु
धिजहांलौंजावे सोयहसवमनको
कृतजांनौं विनअंगुरमायाकरिसां
नौं ७ जिनयेसकस्तसत्यकरिजांनो
जिनकेनेदभयोहैंनांनो ताभेदहि
अमकरिनहीजांनैं विधिनिषेदता
हीतैंठानैं ८ विधिनयेदजोनाषेवे
दा सोताकौंजाकैहै भेदा भेदमिटें
विनकरैनत्पागा तातैंयेईकीयेवि
नागा ९ ज्यौंज्यौंतजेसुधीत्योंहोई
तातैंवेदवतावेदोई श्रागेजायुबु
डावैसारे जेआपहीकृतैंविसतारे
१० तातैंयहसवमिथ्याजांनैं ऊंच
नीचगुनदोषनमानैं ईश्रीयअरुम

निहचलं करो अहंकार ॥ १२ ॥
 रिहरो ॥ ११ ॥ सुषिमं शूलं सर्वकल ॥ १२ ॥
 एक ही आत्मके आश्रय ॥
 आधर ब्रह्मके जानों ॥ ऐसा विधि
 मय मानों ॥ १२ ॥ या विधि वे
 अर्थ कों जानों ॥ ब्रह्म रिद्धि दे न ह
 ल करि आनो ॥ दो कुल लोक की आ
 छांडो ॥ या विधि अंतराय लक्ष्य
 मो ॥ १३ ॥ जितनी या के आसा हो ई
 तितनो विघन करे सत्को ई ॥ ज्यों
 वे आने ल्यों ल्यों मिटे बि
 के पासा ॥ १४ ॥ जब ये होय आत
 मां ॥ जब कहुं नही आसा को धां मां
 घनन के करता देवा ॥ ते ही
 लटि करे ता सेवा ॥ १५ ॥ ताते विधि
 वेद सब नां यो ॥ आसा छोटि फि
 हरि रायो ॥ ये क ब्रह्म करि सब
 यो ॥ ह जो क ब्रह्म नू लिन ले यो ॥ १
 जिन पायो ब्रह्म गीयां ॥

विधिनयेदनहीनांनां॥परितिनके
नितहीविधिहोई॥कदेनियेहन
परसैकोई॥१७॥वैसुषडुषगुनहो
षनजांनै॥बालकसमश्राचरनन
ठांनै॥परिविधिसारीसेवाकरै॥
अरुनयेधआपहीपरहरे॥१८॥
सबप्रसुद्रदेसदाअतिसांति॥ग्यां
नविग्यांनसहितनितदांति॥सब
जगब्रह्मजांनिधिरहोई॥बडस्यै
जनमनपावैसोई॥१९॥असुकज
काच॥असेसुनिहरिजीकेबैनां
अतिडुस्करअरुअतिसुषदैनां
तत्वसुननकीबाढीप्यासा॥तबबे
लेउछेनिजदासा॥२०॥उधोउनच
जोगसरूपजोगउपजांवन॥जोगदं
नजोगेसुरभावन॥तुमयेत्यागक
होमेरेहित॥सोडुसकरआवैनां
हीचित॥२१॥क्योंहोवैविषीयन
कोत्यागा॥पुत्रकत्निवादिक्अ

॥यह तनये धनये सुत जेरे।
हबनिताये ग्रहये चेरे।
विधिमम अहकार समुद्रादि
रहोमें मतिको चु जात मुरी
अति नरमायो ताते जिने
नही अयो रश अत्र लु लो
पदे सो मेरे उर क लु लो
प्रवे सो ताते अत्र लु लु विधि स
कावो मम उर पूरन र्पा न ल लो
जाते सब ल जितु म कौं शं उं।
बहु स्यो जगत जन मन ही अं कुं।
दू जो ले सो न ही को ई जाते ल
को हो ई अत्र लु लु दि क त
धारी जेते तु व सा या ब सि को ये
ते ताते सा या ही कौं दे से। कर म
नोग भले करि ले से। र ही ताते में
न तु म ही सर नां। सो की जे पां उं तु
॥सुं अ मार ग स म ऊं त ल जे
॥हं तुं स चृ त्य क हो तु म ते से।

मबिनकहा और का ग्याना
मत गुरु तुम भगवांनों देव सिध
निको इन देखो विषे बुधि म
मतिन की लेखो २८ के ई गुरु ड
प्रसील के मूढा सब दश्रगाधन
नमजे गुहा के ई गुरु सेवत मरि
ताई तिन सेवत क बु फलन ही
पाई २९ एक गुरु निये रष्या न हो
ई तिन के सिधन समजे कोई के
ई अस्थान भ्रष्ट गुरु रूपा सिधन
को बोरै सब कं पा ३० के ई प्रव
रति पूर भुव पूरन के ई धरम ही
न विषे के चूरन के ई गुरु अंध के
इ गुरु कांनों के ई गुरु लो न मोह गुरु
कांनों ३१ प्रम ग्यांन ये समजे नां
ही विषे बंध संमार समाई तुम रो
अदिन अंसन पारा ग्यांन रूप स
वही न तै न पारा ३२ सो ही तिरै ग
हो कर जा को माया क बु न स के क

जैसे अगति कुतै बकुदी व्याहरी
सदार है तुम्हरे आधारा निलि
विषोषो सिरजन हारा ॥ ३ ॥
कों से वै नां ही ताते परे प्रमद
ही ॥ ३ ॥ या नवके ड्यक हे नज
पसो निरंतर मैं तिन मां ही ॥ ३ ॥
कों सरनां गति जां नों हे करि न्य
सकल मे नां नों ॥ ३ ॥ मेरे लज
धन तु वचरनां ॥ मन बज्ज कर म
यो में सरनां ॥ ३ ॥ से सुनि जु हो के वै
नां ॥ हसि करि जो ले अं जु जे नै नां ॥
३ ॥ श्री गवां न बवा चा ॥ उद्व मे क
हे दे रंग पां नों ॥ सत्य कहत कं नां ही
आं नां ॥ या जग साध भये हे जेते ॥ ३ ॥
पही आप कु धरे ते ते ॥ ३ ॥ आप ही
नलो बुरो महि चां नें ॥ छो डे बुरो
नले कों वां नें ॥ गुरु आप नों आप ही
हो री पसु पं छी ॥

रिनरतनञ्जेसोहेनीको ब्रह्माञ्जा
दिसब निकोटीको जातैब्रह्म
विचारहीपावे वक्रस्यौजगतज
नमनहीआवे ३७ एकपदद्वै
पदत्रेपदयेका चोपदादिवक्रपा
दञ्जनेका मेंवक्रचांतिसिष्टिबि
सतारी तिनमेंप्रीयेनरदेहहमा
री ४० मोहिपावेसोयाकरिपावे
आरसबनिदुषसुषजोगावे या
मेंमेरोकरेविचार सावधानहोय
वक्रतप्रकारा ४१ भाईयेतो जह
हेदेहा ई प्रीयादिअरुसकलसने
हा अपनेअरथनिगहें सोयेसक
तिकौनकीलहें ४२ अरुसोवत
जबसुपनांपावे तबतोई प्रीयतन
छिटकावे सुपनमांहिसुषडयकूं
लहें जागेंवातसकलकोकहें ४
३ जातैमेंतोयेतननांही मेंतोवास
कीयोयामांही तोवनितासुतबि

तपरवारा। मेरी तो नही सकल प
सारा धर्षये तो सकल देह संग
जाई। सो ये देह कहे में लांही। तते
सुपन मां हि नही को ई लला तो स
कल और ही होई। ५५। अरु चाई
में तो वह नांही जो तन दी सें सुपनां
मांही। जातें वह कु थिर न रहावे ॥
वा कौ तजिया में फिरि चाड़े। ५६। वा
तें यह यातें वह जंटी। यह इट्टा
गहो में मूंठी। जो इन दो कु देह कौ लहे
ई दी न के सब अरथ निगहे। ५७। इ
दी बुद्धादिक अरु बां नी। जा कौ को
ई सके न जां नी। सो में नित्य निरंतर ये
का। उपजे बिन से देह अने का। ५८।
नाई सो में कहा तें आयो। कि न तन
दी नौं कि न उपजायो। अ व तो में हे दे
ह अ धारा। पल कौं रहिन सके निरध
रा। ५९। ये दो कृतजिको में रहूं। सो हे
सत्पता हि दिटग हौं ॥

करै विचारा ॥ त्यां जे देहादिक परि
वारा ॥ ५० ॥ सो जहां तहां तें ते वैग्या
नां ॥ कब्रूक चुन जां नें श्रां नां ॥ या
विधि श्रापु श्रापु कौं तारे ॥ लहे ब्रह्म
भव डय निवारै ॥ ५१ ॥ यह विचारि
मांन वतन होई ॥ पूजा नू लिन पावै
कोई ॥ तातें तें मांन वतन पायो ॥ क
ब्रू एक में तो हिल पायो ॥ ५२ ॥ तातें
तजा सकल को संग ॥ मन क्रम व
चन हो कुनिह संग ॥ सब तें परै श्राप
कौं जां नौ ॥ सो श्राधार ब्रह्म के मांनौं
५३ ॥ जहां तहां देयो उपदेसा ॥ या वि
धि ब्रह्म पर बेसा ॥ जे सें जहां तहां ले
वै श्रां नां ॥ ब्रूतक संत नये परवां
नां ॥ ५४ ॥ तिन में कहूं ये ककी बाता
जो इतिहास कथा विषया ता ॥ दत्त दि
गंबर श्रुय डुनू पा ॥ तिन को हे संब
द श्रु नू पा ॥ ५५ ॥ विहा ॥ सुनि उद्व ब्र
तिहार श्रु व ॥ नाथों परम श्रु नू पा ॥ व

तात्रियजहंश्रुप्रह्मक
रीयडचूप। पूर्णचोमर्दी। एकसमय
भूपतियडनांमां॥ गयेसिकारचो
दिनिजुधामां तवतानगरनिकटि
हेसूता। देष्योयेकपरमश्रद्धतापुप
निरभेनिहचलडछाचारी। तेजनि
ध्यानतरुनतनधारी। करिप्रनांमव
कुतपरकारा। जडभूपतिजबवच
नउचारा। पुणजडरु उवाचा। हेप्रभ
पूरनपरमदयाला। कहो। कृपाकरि
हो। कृपाला। श्रेसीबुधिकहांतुमपा
ई। जातैंबिचरोसहजसुभांई। पूण।
नयेश्रकरताश्रछाचारी। ब्रह्मक
समसबचिंताटारी। सबजगनिस
दिनयहबिचारे। धरमरुश्ररथकां
मबिसत्तारे। ईश। सोऊनहीं। उपजेडुय
पावें। तिनसौं। लगिसबश्रायुगुमावे
तुमसंमरथसबही। बिधिजांनौं। कृया
निपुनप्रीयेबेनवयांनौं। ईश। सबनि

सरसतरुनतनसुं प्रवृष्टपुष्टकी
इलियेनदं प्रनाकुच्छिवंछोनाकु
छुकरो जडुजभमतजमीपेविच
गे ईश त्रह्माकांमलो नदोलागी
सकल्लोगदाफेंतिनश्रागी तुम
श्रानंदमेंदाफेंनां ही ज्योगयेंदगं
गादिकसांही ईश देहश्ररथसब
हकेत्यागे रहोश्रनिदतसोकितल
गे संगनकोई देषो देवा को ईलह
नसकै तुवनेवा ईध तातेंक होऊ
नाकरिनाथा भवजलबूडतपकरो
हाथा यों जडु नूपवीनती करी त
बश्रबधूतगिराउ चरी ईध श्रव
धूत उवाच सुनिय डु नूपपरमब
डु भागी जाकी मति हरिसंश्रनुरागी
बडुते हे मेरे गुर देवा जिनतैं में जां
न्यों सब नेवा ईध परिमेंमतो श्राप
तैं लीनों तिनमें मोसों किन ऊनच
नों ते गुर सकल सुनो तुम मोसों

रिजनजांनिकहतेहोतेसो। ६७। धर
 नीगगनिपवनअरुयांनी। अनल
 चंद्रविकपोतहीजांनी। अजग
 रसिंधुपतंगरुभृंगा। कुंजरमधु
 हरेतारुकुरेगा। ६८। मीनपिंगल
 कुंरुवस्त्रा। कन्यासरकरताअरु
 व्याला। मकरीभृंगीयेचौबीस।
 इनतैसीव्योसुनिऊनरेसा। ६९।
 प्रथमधरनीमैगुनदेव्यो। सोमैपेर
 मतत्वकरिलेव्यो। सबैरेहेधरनीअ
 धारा। तापरिसूक्तकरैअपकारा। ७०।
 ठोरठोरअतिउत्पमअंग। तिनकुं
 करैबहुतविधिभंगा। ताकेपरव
 तहृक्षअनेता। परऊपकासैवेव
 रतंता। ७१। परअपराधकछूनहीं
 जांनै। उलटिआपउपकारहीवां
 नै। ऐसीसीअधरनीकीलेवै। जोन
 नहरिचरतनकोसैवै। ७२। प्रांतवा
 यज्योलेयअहारा। स्वादकुस्वादन

अर्द्धपारा यौहरिजनअहारहीले
स्वादकुस्वादनहोचितदेवे ७३
वेनअहारविचारनआवे स्वाद
कुस्वादनमनवहरावे तातैयेतो
लियअहारा जेताहोवे प्रांतअधारा
७४ अरुज्योपवनफिरेजुगमांही
सुखअसुखलिपेककुं नांही नांतां
नेदनमेंसंचरे प्रायेअप्रीयेगुन
दोषनधरे ७५ यौविधिदनगहेते
कुजोगी मनकरसबचननहोवेसो
गी नेदअनेकनमेंअनुंसरे परिक
छनेदफिदेनहीधरे ७६ अरुज्यो
पवनगंधसंजोगा लिपतनयोजां
नेंसबलोगा परिसोपवनसदाइ
करूया लिपेनकवरुअसोअनं
पा ७७ पंचभूतनिरमतत्तोदेहा
सकलविकारनहीकोगेहा तां
जोगालिपतनहोई अरुलिपतज
सोई ७८ ज्योसबहिर्नमेंये

अकासो अरु सवहिनको लो
 वासा सवजुपजेविनसेवरुंही ॥
 गगनिनलिपेकालतिहुनांही ॥
 त्योबहुविधिसवजगतपरुंही ॥
 निदेये आतम आधारा जो गच्छ
 दीसेजटहेसोही जाकेसंगहेजेत
 नहोशी ॥ ७० ॥ ज्यो आतम देहनसेहे
 मातमजहांलहांलेये ॥ एक
 तनकहं आदंशुलां लिसेंनहि
 मनहीमहतां ॥ ७१ ॥ सोपरमात
 प्रातमयेका कहे नदेये अलिअ
 ज्यो जोगगतिप्रद नहेंहोशी ॥
 बाहरिभीतरिजहांतहांसोशी ॥ ७२ ॥
 हिबेकेहेनातरयेका थो आत
 मरुबहुतिबिहा ज्यो बहुमेहप
 दंमनीजरयेवहुवा सुरजांम
 नी ॥ ७३ ॥ परिननलियतिकदेनही
 शी ॥ ओरलिपतिजांनैसबको
 प्रातमसेहेहकनंसा ॥

तैपावेन्द्रता ८४ परिश्रतर्मलि
प्रतिक्रुं नांही साधुविचारैयौम
तमांही येन्द्रवरगुनतोहिसुनायो
श्रवनाद्यौजोजलतैपायो ८५ नि
तनिरमलश्रोरनमलहरे तापमे
टिसीतलताकरे सबसुप्रदायक
सीतलरसवंत येगुनजलकेसेवे
संत ८६ तेजवंतश्रतिदीपतिशुका
चोभरहितजहांतहांनिरमुका
स्वादरहितसबभजनकरे श्र
गिनितलिपेसंचनहींधरे ८७ तौ
हीज्ञानतेजमयहोई ईश्रीयादि
दी कसंपतिसोई जदिपबक्रुबिधि
जोजनकरे स्वादरहितगुनदो
प्रनधरे ८८ काहूकृतैचोमनह
होई काहूकेगुनमिलेनसोई उ
दरप्रमांनलेयश्रहारा कछुय
जांनेसंचयसारा ८९ गुपतरहे
शीरनिजनावे कीन्हंप्रगटप्रग

के आवे पर अछा आहु तिको लो
 इति नके पा पर हे नही दे ई ॥ ७ ॥
 म्मुनि गुपति आपु ते र हे लो लो लो
 ता को भ्रम दे हे उत मनो जत न हि ग
 ऊ हो ई पर अछा ते ले वे सो ही अइत
 सो अग निये कर सये को अइत नि
 धि दी से का वृ अने का ल्यो अइत अ
 एक सब मां ही ॥ ने र दे ह ह क ल ल
 नां ही ॥ ए श दी वाम सान प्र ग ह ल्यो
 हो ई ज्वा ला जा ति तिये सब के ही ॥
 परि ते दी से जो के ल्यो हं ॥ अ ति दि न दे
 ह जा त हे यो हं ॥ ए श जे से सि स ल दे ज
 टे क ला ॥ ल्यो ल्यो दी से दि न दि न ल ल
 शर न के करि दि न दि न ना से ॥ स क ल
 मि टे ते न ही प्र का से ॥ ए धा ल्यो वा ला
 दि अ व स्या आवे ॥ हो करि त रु व
 क्र म ही क्र म जा वे ॥ त व आ त मां दे
 धी ये नां ही ॥ परि हे स दा का ल ति कं सा
 ही ॥ ए धा ज्यो र वि करि न न सो ज ल ले

७

६ वै समय पाय बकुस्यो सब देवै प
रि क बरु अग्नि मां न नशनें तीयो
दीयो अपही न हि मां नै ॥ १६ ॥ यो मु
निक है सु नै अरु देवै सकल अर
थ ई प्रीय कृति लेवै ॥ नित अत मां
अकता जां नै ॥ सब तजि ब्रह्म वि
चार ही मां नै ॥ १७ ॥ ज्यो घट जल प्र
ति बिंब तसूरा ॥ लिपति देषीये प
रि हे दूरा ॥ त्यों अत मां देह सन बं
धा ॥ मूल प्रष्टि जां नत है अंधा ॥ १८ ॥
अब कपोत की कथा सुनां ॥ तेरे
मन को भर ममि हां ॥ कं ॥ ये क कपो
त कपोतनी संग ॥ बन मै की नौं ग
ह प्र संग ॥ १९ ॥ अप अप मै अति
आसक्त ॥ अठ पहर मै पत्न वि
रक्त ॥ मन सौ मन अंग न सौं अंगा नै
ननि नै न बटो बरु रंगा ॥ १०० ॥ आ
वन गवन असन अस्थी नां सयन
बै न सारी विधि नां नां ॥ मिले सकल

न कौं करै॥ निर नैर हल लकल
 डुरै॥ १०१॥ सो कपोत वनित कलि
 यो हाव भाव तन मन हरि लदे
 निता जो बंधे सो ल्यावे॥ कछु सहि
 विधि पावे॥ १०२॥ सो अरु सनी
 ज्यो तु सरा जा॥ छप नो लदे लकल
 का जा॥ तन मय नयो निगल ह
 प्रां नने हूँ तै तां हि प्रीत्य कहो॥ १०३॥
 ताकी त्रीया अंड न पजाये॥ लिन में
 नइ नो मिलि लाये॥ तब हरि भाया
 निर मये॥ को मल अंग हं मते ह
 ॥ १०४॥ तब दो क मिलि तिन को ये
 बिऊत भांति तिस दिन संतोषे॥
 को मल ल न ल सुने सु अइ सो अ प
 अंग न सो वे प्र सो॥ १०५॥ हरि की
 बरुत सु लाये॥ आपु अ पु मे
 ल लु धाये॥ पुत्र सं नै हर है अ
 ॥ हिर परि काल न लिये अ न
 गो॥ १०६॥ ये क वार वाल

४ सोमानवतनुनगुमावै जाकरि दे
वनिरंजनपावै ॥ ११८ ॥ दोहा ॥ येना
षीगुरआठकी ॥ सिष्यामेंतुवदास
अवअवरनकी कहतहं ॥ ज्यं च
टेभवफास ॥ ११९ ॥ इतिश्रीभगव
तसुहापुराणे येकावसस्कंदे भग
वतउद्धवसंवादे अत्रधृतीच
रितिसौपायानसप्तमोऽध्या
यः ॥ ७ ॥ ११९ ॥ अत्रधृतौवाच
नोपश्री ॥ जेईद्रीयसुषकचकहा
वेतेतोसुरगहनरकहआवे ॥
ज्योसूकरककरसुषमांही ॥ त्योही
देवओरकचनांही ॥ १२० ॥ अरुजोसु
षआपहीतैआवे ॥ करमलिव्योस
कोइनमितावे ॥ ज्योकोईदुषकोन
हीचहे ॥ परिदुषआयआपहीरहे
२ ॥ त्योहीसुषआपहीतैआवे ॥ वि
नजानेनरबहुदुषपावे ॥ तातैबु
धसुषनांमनलैवे ॥ होयअकरता

हरिपदसेवो॥३॥ स्वादकुस्मात्क
उतकेंथोरा॥ जोहरिजीपदवेतिस
वोरा॥ ताकोनचिररहेउदकात्रिज
गरवृत्तिगहेहरिदासा॥४॥ जोवृत्त
अहारनआवै॥ तोधिररहेसकल
नल्यावै॥ करमअधीनदेहकोजा
नै॥ मनकर्मवचननउदिजडांलै॥
५॥ अतिसंमर्थइंडीयसनदेका॥ प्र
कबुउदिमकरेनयेहा॥ न्हचलव
सनिरंतरसेवै॥ यहसिच्छाअजरा
रसौलैवै॥ ६॥ इसनप्रसनप्रसन्न
रा॥ अधिकअगाधग्यानसेनारा॥ त्रा
रपारकोइथाहनलेहे॥ येगुनमुनि
सागरकेगहे॥ ७॥ जोवरमावृत्त
नीरप्रवेसासायरकबहुवहेन
लेसा॥ ग्रीषममेंकबूहीननहोई॥
सदासमृद्धैआपतैसोही॥ ८॥ त्योंको
ईबहुविधिअरचावै॥ भोजन

वे ब्रह्म त भक्ति ब्रह्म तै मिलि से वे
५ अरु ये के ले जाहि उतारी निंद
दि क ठां नै इ क नारी परि नाराय
ण मुनि मु न मां ही रा ग दोष क च्छ
उप जे नां ही १० वनिता वस्त्र कन
क न्ना नर नां ब्रह्म विधि माया के
आ चर नां इ न मै आ य परै जे को
ई अग्नि पतंग समां नि सो हो ई
११ जो ल गि मुनि सम के निज देहा
जा चि अहार लेय ब्रह्म गेहा जातै
क हं अ नुं रा ग न बढै यह सिध्या
मधु कर तै पढै १२ छोटे बडे ब्रह्म
त विधि ग्रं था ति न तै सार ग हे हरि
पं था ज्यं मधु कर ब्रह्म फूल नि मां
ही वा स ग हे फूल न कौ नां ही १३
सो मधु कर है विधि को कही ये दो
ऊ पा सि तै सिध्या ल ही ये ब्रह्म त प्र
हन तै ले त अ हारा उ प्र मां न ये क
ही वारा १४ इ जे दिन क च्छ सं च्य न ध

निरत्ने ब्रह्मविचारही करे। सं.

भूलिकरे जो कबही। मधुमांठी

बिनसैंत बही। १५॥ फुत्तली ५०

की जो होई। पग कृबुध परसै

। परस करत होवे दिहलेंध

करिद करनी संबंधां। १६॥ ४५

निबनिता कंतजै। पंडित कृ

भूलिन नजै। भजतैं होवे कुरि

येकही मिलि मारही गजना

॥ जो कोई धन संग्रह करे। सो कोई

श्रैरै परिहरे। ज्यो मधुमांठी मधु संग्र

मधुहो सो उदि मबिनुल हो। १७॥ ४६

गीत सुने नही श्रैरा। गयो चहे जो

रि की ठोर। श्रैर सुनत होवे गति श्रै

गीत हिरणां की जैसी। १८॥ ४७

गति सुनिब कूरंगा। अंगी रिष

गनिका संग। अबलाधीनि मुकति

। तिनके सबद सुनो मति कोई

मुनि जिहा श्रै सक्ति

कुखादसकलपरिहरे जिह्वारस
तेंहोवेकाला जैसैंमीनमरैतत्काला
ला २१ जेमनिसकलश्रयनपरि
हरे जायइकंतवासकंकरै सह
जैहोयइंद्रियसबधीनां परिहस
नांनहींहोयअधीनां २२ रसनां
सबकूंफेरिजिवावे तबहीरस
संज्ञोगहीपावे जोसबइंद्रियजी
तेंकोई परिहसनांकरमेंनहींहो
ई २३ तोलगसकलवृथाकरि
जांनी रसनांजीतिजीतिकरिमांनी
तातेंमुनिरसनांबसिकरै औरस
कलसाधनपरिहरे २४ योजेये
कयेकबसिभये तेसबजमकेह
रेगये परिज्येयेकपंचबसिहोई
ताकेडषजांनैंगासोई २५ बडरि
येकनईगनिकापिंगला तातेंमें
गुनसीष्योभला सोतुमसौनाषत
हैराजा जातेंसरेतुमारोकाजा २६

जनकविदेहपुरीमेंवासा।।नो।।
 गलारूपनिवासा।।येकवार।।
 रवनायो।।धनीपुरमनमें।।हल।।
 रष।।बैठी।।निकसिनवनकेहाल।।
 आगेचलैलोकवाजारा।।को।।
 लो।।आवतोदेव्या।।यह।।आवेगोये।।
 रिलेये।।र।।जबवह।।आगेको।।चलि
 जावे।।तवेपिंगलाशोरको।।ध्रावे।।
 शौर।।आय।।आय।।चलिजांही।।सो।।
 षपावेजीवमांही।।र।।कल।।
 नातरिकोंजावे।।क।।बहु।।व्याकुलवा
 हरिआवे।।अरधराति।।श्रीसी।।विधि।।
 यो।।लोग।।वजार।।चलतथकिगयो।।
 र।।तवदे।।मगन।।मनेरथ।।भ।।
 ता।।दु।।अतल।।अनुं।।भ।।अपनो।।
 सकारकरिमांन्यो।।सबतेंहीन।।आ
 पकोंजांन्यो।।र।।तवताको।।इवड।।
 गनही।।उपजे।।निरवेदा।।

कुखादसकलपरिहरे॥ जिह्वारस
तेंहोवैकाला॥ जैसेमीनमरेतत्काला॥ २१॥ जेमुनिसकलश्रयनपरि
हरे॥ जायइकंतवासकंकरे॥ सह
जेहोयइंद्रियसबधीनां॥ परिरस
नांनहींहोयश्रधीनां॥ २२॥ रसनां
सबकंफेरिजिवावै॥ तबहीरस
संजोगहीपावै॥ जोसबइंद्रियजी
तेंकोई॥ परिरसनांकरमेंनहींहो
ई॥ २३॥ तोलगसकलवृथाकरि
जांनी॥ रसनांजीतिजीतिकरिमांनी
तातेंमुनिरसनांबसिकरे॥ श्रोरस
कलसाधनपरिहरे॥ २४॥ योजेये
कयेकबसिभये॥ तेसबजमकैह
रेगये॥ परिज्येयेकपंचबसिहोई
ताकेडषजांनैंगासोई॥ २५॥ बडरि
येकनईगनिकापिंगला॥ तातेंमें
गुनसीष्योभला॥ सोतुमसौंभाषत
होराजा॥ जातेंसरेतुमारोकाजा॥ २६॥

जन्कविदेहपुरीमेंवासांलांसपिं
गलारूपनिवासायेकवारश्रंग
रवनायो।धनीपुरषमन्मेंहराम्ये
रषाबैठीनिकसिनवनकैद्वारा॥
श्रगेचलैलोकवाजारा।कोईन
लोआक्तोदेव्यायहश्रवेगोयोंक
रिलेये।२४।जबवहश्रगेकौंचलि
जावे।तबैपिंगलेश्ररकौंध्यावे॥
श्रौरश्रायश्रायचलिजाईस्योस्यो
उषमावेजीवमांही।२५।कबहुउचि
नीतरिकौंजावे।कबहुव्याकुलवा
हरिश्रावे।श्ररधरातिश्रैसीविधिभ
यो।लोगवजारचलतथकिगयो।
२६।तबवैभगनमनेरथभई।चिं
तादुषअनलअनुंभई।अपनौंत्रि
सकारकरिमांस्यो।सबतैहींनश्रा
पकौंजांस्यो।२७।तबताकोईवडभा
गाजातैउपज्योदिटवैरागा।जोत्न
गनहीउपजैनिरवैदा।तोलगनही

हरिचरनां जातैमिदं जनमश्नु
मरनां जाको नजे ब्रह्मसिवसेषा
परिसोत्तिन कंक देन देषा ॥ ४४ ॥
सेप्रभूकौ जे नर सेवै ॥ तिन कंरी जि
आप कौ देवै ॥ सो प्रभू में नही ॥
आराधौ ॥ कीयो नर ए नर ए
नही साधो ॥ ४५ ॥ अब मैं आपनि
वेदनिकरो ॥ और सकल नर तै परह
रों ॥ अपने पति हरिजी के संग ॥ सदा
रमों ज्यो श्री नर धंगा ॥ ४६ ॥ कहां ओ
र सुरनर प्रीय करि है ॥ जे वासुरे आ
पही मरि है ॥ अरु जे सुषको ई धिर
नांही ॥ देखत सकल पलक में जाई
४७ ॥ मेरी इच्छि दुषी सब आवै ॥ काल
अधीन कहां सुष पावै ॥ तातै में सब
नह चल जांनी ॥ कृपा करि है सारं
गपांनी ॥ ४८ ॥ जिन मेरै वैरा गुण पायो
अपने चरन कंवल चित लायो ॥
यह हरि कृपा बिनां नही होई ॥ जो वै

रागल है नरकोई धरं जातैं सब न
 वबंधन नासैं ॥ क्रिदेरमापति आप
 प्रकासैं ॥ में तो मद भागनी जैसी ॥ त्रि
 भवन मां हि नहं कोइ जैसी ॥ पूजा ता
 कों कै सो हरि को न जनौ ॥ कै सो का
 ल जाल को तज नौ ॥ परिते दीन बंडु
 गोपाला ॥ पतति उधार नपुं मदया
 ला ॥ भू ॥ तिनहीं आप कृपा ये करी
 जिन मेरे उर जैसी धरी ॥ अब लेया
 प्रसाद ही सीसा ॥ निस दिन भजौ च
 रण जगदीसा ॥ भू ॥ जितने या देही
 निरबां हौं ॥ सो ऊनहीं आरं मसमां
 ऊं ॥ सहज मां हि जो हरि जी रूपा वै ता
 कर या देही वर तां वै ॥ भू ॥ या नव
 कृप पस्यो निति प्रां नी ॥ विषय आव
 रण ये दिष्टि चि पां नी ॥ तापरि अजग
 र काल गिरास्यो ॥ यौं नर वकृत पां
 सि सौं पास्यो ॥ भू ॥ ताको हरि विन कें
 न बुटा वै ॥ आप ही को नहं ॥ अटन पा

३ वैश्वरूपही आपकौराये ॥ जब
सबवस्तु हिरदै सौं नाये ॥ ५५ ॥ जब
ही हरिकी सरणि ही आवे ॥ तब ही
आप ही आप तु मावे ॥ वैश्वनिजा
नंदमय देवा ॥ कहा करे कोतिनकी
सेवा ॥ पूर्ण परि सब जगत काल छिट
कावे ॥ हरिकी सरणि आप सुषपावे
ताते और सकल कंत जौं ॥ प्रेम ना
व हरि चरण न न जौं ॥ ५६ ॥ या विधि
आप ही आप उधारूं ॥ श्रवण ही
नवसागर में डारूं ॥ यौं पिंगलाप
रमगति पाई ॥ उरु लोक की आ
समिटाई ॥ पूर्ण सीतल कै सज्या मैंग
ई ॥ प्रमन्न नंद ही प्रापति नई ॥ यह
ध्यामें ताते नी नही ॥ नली जं निउर
श्रुत रकी फी ॥ ५७ ॥ जो लग आ सब
रे नर कोई ॥ तो लग सुषीक दे नही
होई ॥ जब ही सकल आस छिटका
वे ॥ तब तत काल परम पद पावे ॥

ईगदोहा॥ यहगुरुसत्रहका ॥
सिध्यामैसमजायाअवश्या
कहतहो॥ सुनियोहितचिन्ता ॥
ईइतिश्रीनागवनेम् ॥ १० ॥ ॥ ॥
दसकंदे नगवतउठवसेवादे
वधतइतिहामोपधाना ॥ ॥ ॥
तानांसश्रमोअध्या ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
अवधतनुवाया ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
तकरिसंग्रहकोले ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
विसतरौजिबर्त ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वैतवअपारा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
रपंषिक ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वक्रतहितनाया ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
निदुषदं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नयो ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
जातैसंग्र ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
यवात्तद ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
तिश्री ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
जातौ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ममजातै ॥ १५ ॥ ज्योलागानत ॥ ६ ॥ ५
वंग ॥ वसेंगुहामैरहे ॥ असाव
धान ॥ अतिथोरोबोलै ॥ गत्यादिक
अंतरनहीबोलै ॥ १६ ॥ ग्रहअरंभ
प्रकोमूला ॥ जेअरंभैतेनरभूला
सरपपरायेग्रहमैरहे ॥ याहिविधि
मुनिअहिसिद्यागहै ॥ १७ ॥ येकअ
पनिरंजनदेवा ॥ जाकोकोईलहन
है ॥ नेवा ॥ आपहीतैमायाविसतरै
सतरजतमबहुनेदपसारे ॥ १८ ॥
बहुअरिआपहीसबसंग्रहै ॥ निजानं
दमययेकैरहे ॥ तातैयेसबमिथ्या
जातै ॥ याकोकरतासोसतिमानै ॥
१९ ॥ येसिष्यामकरीतैलेवै ॥ सबसै
परैब्रह्मकोसेवै ॥ जहांतहांयेमन
कोंधारे ॥ निसबासुरकबहुनहिंद
रे ॥ २० ॥ रागदोषनैक्योहीहोई ॥ होत
रूपताहीकोसोही ॥ भुंगीकीटकुतै
येलीन्है ॥ त्योंमनहरिचरणधर

कीन्हों॥२१॥ ये चौबीस गुरुनकी
सिद्ध्या तोसोंमें नाथी दिदि च्या
श्रवत नतेंसी ओ सो कहों तिरोंस
बन्ध्यांन ही दहूं॥२२॥ मेरी देहसे
हिस मुजावे॥ क्रि दे ग्यांन बैरागल
पजावे॥ ज्यों बालापन गयो बिलाई
त्यों ही श्रवये जो वन जाई॥२३॥
श्रावे जुरा मरनता श्रागे वक्र वि
धि दुष देहसों लागे स्वान श्रंगाल
नको ये भक्ति तासों प्रीति न जो रे द
धि॥२४॥ पुत्र कलि त्र श्रथ पसुरे
हा॥ कुल कुटुंम बक्र सेवक जेहा॥
तिनसों मिलि जा देही सेवे॥ सो ही
श्रंत महा दुष देवे॥२५॥ श्रागे कों व
क्र कर मजु पावे॥ श्रव जम केंदर
वार पठावे॥ रस निमति धै चें निति
रसना॥ प्राण सदा चाहे जल श्रसना॥
२६॥ नैन रूप श्ररु सब दही श्रवना॥ इं
श्रीय च है नारिकोर वना॥ तुचा सप

रसनासावकुगंधाचरनगवनकर
करिहे धंधा २७ याविधिसबमिलि
लूटेताकों बंधोदेहसूद्वेषेजाकों
तातैनेहदेहकोतजिये सदानिरं
तरह कौनजिये २८ हरिजबमा
यागुनविसतारे तबनांनाविधिदे
हसवांरे तिनतिनमनसंतुष्टनभ
यो बकुस्योमानवतननिरमयो
२९ ताकोंदेखिवकुतसुषपायो ता
मैअपनौंधामबनायो तबहरिजीबो
लेयेवांनी ज्योपरगतहैवेदबयां
नी ३० मोहिलहैसोयाकरिलहै या
करिसबसुवबंधनदहै जबमैरहि
तकरैउपाया तबमैयाकोंकरुंस
हाया ३१ तातैअतियेडुर्लभदेहा
श्रीभगवांनरचोयेगेहा अतिडुल
भकेकुजतननपावे जोपायोतोधि
रनरहावे ३२ प्रतिदिनमृतिनिरंत
रग्रासै येकदिनांतनकालबिनासे

जुररोग न्येसोकनिधांनं जांमैप
 लकसुधीनहिंप्रानां॥३३॥तातैता
 हिपायकरिराजा करिलीजीयेञ्च
 पनौकाजा जातैयह छूटेसंसार।
 जाकेडुषकेवारनपारा॥३४॥निस
 दिनदेवनिरंजनभजीये॥कैनेनी
 तबिधेसबतजीये॥विषीयाषांन
 पानसुतदारायेसबदेहनिवारुं
 बरा॥३५॥तातैत्यागसकलकोकी
 जेहरिकेचरनकेवलचितदीजे
 याविधितनैतैसिच्चापार्शतबमें
 औरसकलछिटकार्श॥३६॥भूमें
 बिचरोंकेनहसंगा॥यातनहुंको
 छोडौसंगासदारहुंहरिचरननि
 वासाबहुविधिदेवौंसकलतमा
 सा३७॥बहुतगुरुनतैपूरनंपानां॥
 जहांतहांलेवैसाधुसुजांनं॥छूटेञ्च
 हंकारअरुममता॥हिरदैआनिवि
 राजेसमता॥३८॥निरगुनसरगुननेद

मां दोहू तै न्यारा ॥ दोहू प्रकासदा ॥
आधारा ॥ ज्यो येक का वन्ननलप
रजरे ॥ सोहू जे परकासत करे ॥ १५ ॥ प
रिसोन्ननल दोहू तै न्यारा ॥ स्वयं प्र
कास आत्म आधारा ॥ बकुछ सोब
कुका वनिसंगा ॥ पां वै उतपति थिर
रुनंगा ॥ १६ ॥ ज्यो द्वैत नये माया
कीये ॥ ते आतमां आप करि लीये
तिन बसि जनम मरण डष पावे
लहे अनंद जवही छिटकावे ॥ १
७ ॥ तातें बकु विधिकरे विचारा ॥
आत्मजां नै सब तै न्यारा ॥ येक अ
जनमां अरु अविनासी ॥ चेतन घ
न पूरण सुषरासी ॥ १८ ॥ तन उपजे
बिन सैंबरताई ॥ परम अ सुद्ध सु
धनही कांई ॥ सकल विकारनको
संघाता ॥ प्रगट हीसे आवत जाता
१९ ॥ मोसों यासों के सोसंगा ॥ में चेतन
ये जठ बकुरंगा ॥ यों विचारे त्यागैत

नममता ॥ आत्मद्रिष्टि सकलमेव
 ता ॥ २० ॥ या विधि हिर दे हो यष्टि र
 नां मिले ब्रह्म बूटे भर्मनां ॥ प्रशा
 अरण्य सधिरगुर देवा ह्रजा लि
 प्रकरे नित्य सेवा ॥ २१ ॥ गुर के वल न
 प्रवन मंथानां ॥ या विधि उपजे नाव
 क म्पानां ॥ उपजे काठ तन के गुन दे हे
 कर म बीज को ई न ही रहे ॥ २२ ॥ त ज
 ज्यौ पाव क तेज समावे ॥ ई धन जित्ना
 न पल कर होवे ॥ त्यों आत लाल लस
 यहो ई ई धन कर म लसा करि दो
 २३ ॥ अरु जे मुटय ह विधि जाते ॥ ले न
 बहु विधि कर मन कौ लो नै ॥ ले कर
 मन के फल भोगा वें ॥ जल म सरन को
 अंत न पावे ॥ रक्षा ॥ जहां जहां जायति हि
 तहां काला ॥ जिस दिन स दार हे वे हा
 ता ये जग दीखे ज्यों को त्यों ही परिये को
 पल रह न द्यो ही ॥ २५ ॥ औरें और होयें
 साकारा ॥ तिल संग

क बहूपां न हिर दे न ही आवे जन
म २ मरि मरि दुष पावे २६ कर म न्न रु
जो कर म नि आ च रे सुष न्न रु जो सु
ष नो ग न क रे ॥ ये चारूं दी सें पर तं
त्रा ॥ ता तैं स ब त जी ये य ह मंत्रा २७
जे पं डित श्रु ति स मृ ति जां नैं ॥ त त्व ल
हं वि न कर म नि ठां नैं ॥ ते मूर ष दे हा
न्न नि मां नी ॥ आ प ही आ प क हा वे
ग्यां नी २८ ॥ हरि जन संग न क ब हू
करे ॥ त त्व न सु नैं कर म वि स त रे ति
न तैं न ले जो क च्छ न हीं जां नैं ॥ त त्व
ब च न सु नि हरि हिर दे आं नैं २९ ॥ ज
दि प न्न त सु ष नि कों जां नैं ॥ न्न रु षि
न नं गुर दे ह नि मां नैं ॥ परि सो त त्व न
स म कै ते हू ॥ जा तैं त्व हे न न कि को नैं
७ ३० ॥ आ यू ची न यौं करैं न्न भा गे ॥
आं न ही न वि षे संग जा गे ॥ कर म संग
यों जन मैं मे रे ॥ फि रि फि रि काल पा स
भव परे ३१ ॥ काल मृ ति ता कों निति ॥

गुप्ते ताकौं कहो कह हा सुष झूले
कोई मारन कौं लीजे सुली निल हि
परो स्नेका जे। त्रय अरु ता कौं ले सो
ग भुगावै। सो धूक हो कहं सुष पावे
अरु त्यों ही न सुरपुर लोका। मर पछ
रनिं रा नय सो का उरु तिन देहे ति
अतन बडु करै। सिधिन होय विघन
अति परै। ज्यों वेती मैं विघन अलेखा
त्यों सुरगा दिल है कोई ये का लक्ष्मी
रुजेल होते ऊधिर नां ही। दिप्रत नि
न सि जाय पत्न सां ही। यों हां जाय क
रै बडु कोई। अरु जो अंतराय न ही
होई उरु तव सो सुरग लोक कौं जावै
कै करि देव देव सुष पावै। अपने पुं
न्यान को उपजावो। उत स जाय विगां
न ही पायो। उरु बडु गं डल गां न कं
करै। बहू सुंदरी नारि मन हरे। अं
आ होय तहां चलि जावै। सति ल विमं
न विलंब नू पावै। उरु अं मृन पां न

१ हानितिकरै बस्त्राभरणदेहबहु
 धरै यौनितिमानबहु तसुषपावे
 परिवेकीक बुचिंतन आवै जेतो पुं
 न्ययं हांको होई तै तो रहे सुरगमें
 सोही पुं न्यधीन होवै पुनि जबही
 कालतहां तै टारै तबही ३५ सो
 सुषक होत ज्यो क्यो जावै ता सुष
 कीक कहु कहत न आवै रहो चहे
 परिक्यो करि रहै काल अधीन म
 हा दुषल है धरै को ई सुषपावै क
 कुंके तो छी निलये होवै दुषते तो
 सोत जि सुरग भूमिमें आवै पीछे जो
 निन्नंतन पावै ४१ ये नाथी विधि
 की गति तो सो अब निषेद की सुनी
 यो सो सो जो वृ संगमें प्राणी परे तो ब
 कुनांति अधर मनिकरै ४२ बंधै
 कां मई दीय अधीन अस्त्री लंपट
 लो भी धीन बहु जीवनकी हंसा क
 रे प्रेत भूत गण नुसरै ४३ मेंही

स्योसबमाही॥तिनके प्रेक्षण
मेजांशीवक्रिश्चायथावरलन
जनम२वक्रसंकटदहैं॥४४॥ल
जेकरैजेसबजलजलम
परै।करमकरैतिनतैतनधरै॥
धरैधरिवक्रुडुषसैमैरै॥४५॥नाते
वृतिमैसुषनाही॥नादेब्रह्मलोक
जांशी॥लोकपालसबलोकस
येतैरहैब्रह्मदिनजेत॥५॥होसो
ब्रह्माउन्नतनरहै॥तीनरब्रह्मका
गहै॥अगतिरहैसैरैसैपही
नबहैनहचल्लजलैत॥हैं॥५५
चंद्रयेकरसचलै॥अज्ञादा
सिंधुनटलै॥मृत्युनिरंतरात्रको
सैमैरेकालरूपतैजांशो॥४६॥ता
नसुषपरवरती॥सुषचाहैसो
गहैनिरवरती॥अरुयेइंइीयकरम
उपावै॥सोअतमईंइ॥वसिहोईंता
मैडुषसुषपावेसोईं॥परिअतमअ

२ करताजानों भोगरहितताहीतैमां
 नों पूरे करमरु भोगादिकहैंजे
 ते ईश्रीयश्रुगुनकृतिसबतेते॥
 जोलगत्यहईश्रीयगुनबंधा॥ तोल
 गमितेनतनसनबंधा ५१ तनसन
 बंधमितेनहींजोलौं नांनंभावब
 कृतविधितोलौं नांनंभावरहैज
 है बलगत पराधीनश्रातम तबलगत
 ५२ पराधीनतबलगतयेरहै तोल
 गकालनिरंतरगहै तातैजेपरबृ
 त्तिरतहोवै जुगजुगजनम२तेरोवै
 ५३ प्रथमकृतोमैयेकनिरंजन
 ताहीतैउपज्योयहश्रंजन काल
 श्रात्मा लोक रुवेदा धरमसुभाव
 बकृतविधिनेदा ५४ येसबमाया
 सत्तिनकोई तातैबुधिश्रनुरक्तन
 होई येकनिरंजनश्रातमजानै त
 बसबसंकटनयकेनांनै ५५॥
 लोक रुवेदवासनांतजे ईश्रीयदे

हविषे नही भजो मन पऊं चै सो लिय
लेषो मन अतीत सो जहां तहां देवो ॥
पूई ब्रह्म रुद्रात्तमयेक विचारो ॥
या विधिस कलन उपाधि ही जो रौ ॥ तज
ही यह ब्रह्म कौ पवो ॥ छूटि है तब हो
रि नही आवे ॥ भूषाये आतम अरु देह
विवेका ॥ या कौं जो नये क को ये पण ॥ कि
सब चन कहै जब कुरमा ॥ उरु वल पुर
करी जब प्रसा ॥ पूई ॥ उधो उ वा चा हे
भू जो ये सारी नरमा ॥ ईं पी ट देह विधि
गुन करमा ॥ अरु आतमा ॥ ईं नी ह कर
बंधा ता कौं नयो कौं ल विधि बंधा ॥ ए
अरु जो वस्यो ग्यां ल दौ ल है ॥ छो डि उ
पाधि देह में रहे ॥ सो बस्यो क्यो लि पति
न होई ॥ अरु कौं करि जांनी ये सो ई ॥
ईं ॥ कैसें विचरे कैसें रहे ॥ कैसें जीवें
कैसें कहौ ॥ कैसें पहिरे कैसें सो वै ॥ कैसें
सुनें कौं न विधि जो वै ॥ ईं अरु आतमा
येक है नांही ॥

करता जांनों ॥ भोग रहित ताही तैमा
नों ॥ ५० ॥ कर मरु भोगादिक है जे
ते ॥ ईशिय अरु गुन कृति सब ते ते ॥
जो लगयह ईशिय गुन बंधा ॥ तोल
गमिटेन तनसन बंधा ॥ ५१ ॥ तनसन
बंधमिटेन ही जो लौ ॥ नां नां भाव ब
हुत विधितो लौ ॥ नां नां भावर है ज
बलग ॥ पराधीन अतम तब लग
५२ ॥ पराधीन तब लगये रहै ॥ तोल
गकालनिरंतर गहै ॥ तातै जे पर च
तिरत होवै ॥ जुग जुग जनम ते रोवै
५३ ॥ प्रथम फुते मै येक निरंजन ॥
ताही तै नुप जो यह अंजन ॥ काल
आत्मा लोक रुवेदा ॥ धरम सुभाव
बहुत विधि नेदा ॥ ५४ ॥ ये सब माया
सतिन को ई ॥ तातै बुधि अनुरक्त न
होई ॥ येक निरंजन अतम जांनै ॥ त
बसब संकट नय के नांनै ॥ ५५ ॥
लोक रुवेद वासनां तजे ॥ ईशिय दे

हविषेनही भजो मनपङ्कचैसोमिष्ट
 लेषो। मनश्रुतीतसोजहांतहांदेसो॥
 पृथ्वीब्रह्मरुश्रातमयेकविच्यारो
 याविधिसकलउपाधिहीजारे। तल
 हीयहब्रह्मकौंपवे। छूटिद्वैतब्रह्म
 रिनहीश्रावे। भूषायेश्रातमश्रुदेह
 विवेकायाकौंजांनियेककोयेका॥

करीजबप्रश्नपृथ्वी॥ उधोउवाचादि
 नृजोयेसरोनरमां ईडीयदेहजिसे
 गुनकरमां श्रुश्रातमाश्रुनीह
 बंधा ताकौंनयो कौंनविधिवंधा
 श्रुजोवस्थोंग्यानकौंनहे छोटिल
 पाधिदेहमेंरहे सोवस्थोंक्योंस्त्रिपति
 नहोई। श्रुक्योंकरिजांनीयेसोई॥
 ई०५ कैसेंविचरेकैसेंरहे। कैसेंजीवें
 कैसेंकहे। कैसें
 मुनें कौंनविधिजोवे॥ ई०
 येकद्वैनांही। येकमु।

करता जांनों ॥ भोग रहितता ही तैमा
नों ॥ ५० ॥ कर मरु भोगादिक है जे
ते ॥ ईशिय अरु गुन कृति सब ते ते ॥
जो लगयह ईशिय गुन बंधा ॥ तो ल
ग मिटेन तनसन बंधा ॥ ५१ ॥ तनसन
बंध मिटेन ही जो लौ ॥ नां नां भाव ब
हुत विधि तो लौ ॥ नां नां भावर है ज
बलग ॥ पराधीन आतम तब लग
५२ ॥ पराधीन तब लग येर है ॥ तो ल
ग काल निरंतर ग है ॥ ता तै जे पर च
तिरत होवै ॥ जुग जुग जनम ते रोवै
५३ ॥ प्रथम फुते मै येक निरंजन ॥
ता ही तै उ पजो यह अंजन काल
आत्मा लोक रुवेदा ॥ धरम सुभाव
बहुत विधि नेदा ॥ ५४ ॥ ये सब माया
सतिन को ई ॥ ता तै बुधि अ नुर कन
होई ॥ येक निरंजन आतम जां नै ॥ त
ब सब संकट नय के नां नै ॥ ५५ ॥
लोक रुवेद वासनां त जे ॥ ईशिय दे

। नजोसनपञ्चैसेफिब

विचरै

कव

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

ईड्यदेहविये

अरुअतमाअनीह

ताकौनयो कौनविधिब्रंवा

उहेउ

पाधिवेहमेंरहे सोवयो कौनजिपनि

नहोईअरु कौंकरिजानियेसोड

कैसेविचरैकैसेरहेकैसेजावि

कैसेकहो।कैसेपहिरैकैसेसावकैसे

सुनैकौनविधिजोवेहअरुअनस

येकहैनाह।येकमुहिकोये

येकै बंधे क्यो येकै मुक्ता ॥ येतो बड
येक क्यो उक्ता ॥ ६२ ॥ गुन अनादि अ
तमा अनादी ॥ तातै येतो बंधन अदी
निति मुकति क्युं कही ये देवा ॥
मोहि ब्रता वो भेवा ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ ये उ
ध्वनि ज भगति के ॥ सुनि करि निरम
ल बेना ॥ ता कौ प्रसु उतर कह्यो ॥ हरि
जी करुनां नैना ॥ ६४ ॥ इति श्री भागवते
महापुराणे येका दस स्कंदे श्री भगवं
त उद्धव संवादे जोगनांम दसमा अ
ध्याय ॥ १० ॥ १२० ॥ श्री भगवांत उवा
चा ॥ चोपरी ॥ सुनि उद्धव अ व परणी
नां जातै भेद मिटै तु वनां नां ॥ बंधरु
क्ति तोहि समजां ॥ तैरो सब अ ग्यां
न मिटां ॥ १ ॥ बंधरु मुक्ति जे कही ये
कोई सो तो सकल गुन नतै होई ते
गुन माया के जानौ ॥ इन कै परै अत
मां नौ ॥ २ ॥ सो करु मोह जन मरु सुषां भे
अरु मरनां दि क बड दुषां ये सारे मां

। ज्यों सुपने दुष सुष

क। तिनमें ज्ञातम कौन ही ये क। ते
 सब बुधिरु मन कौं होवै । ईश्वर देत
 प्रगटते सोवै । धामन बुधादि क। ह
 ही रहे । जा कौं प्रगटस षोपति कहे ।
 तब ज्ञातमां निरंतर होई । परिता कौं
 सुष दुष नहिं कोई । ५ । ज्यों सुष पात
 ज्ञात रहै तो विवहर पीछे लेइ है ।
 परिता कौं कोइ नहिं विकार । य सब
 माया के विवहार । ही परि ज्ञातमा
 आपमें मानै । तामें सुष दुष वडा लेधि
 जानै । परि ज्ञातमां ये कर स नित्य । वं
 धमोषिये सकलै अनित्य । ७ । रहद
 जानौं मेक ज्ञविधा । अरु हजी जो क
 हीये विधा । ये दो ऊहे मेरी सकत । ५
 नमें सबहिं । नकी आसती । ७ । विंधन
 कस्यो चाहें जा कौं । प्रेरि ज्ञविधा
 पर्व उंता कौं । १२०

कं ताको विधासक्त्यपवाज
जे दोऊ मुक्ति अरु बंधा ते मम स
तिनके संबंधा ज्ञात महे सो मे
रूपा सब ते न्यारो परम अनूपा
० ज्योसि सके प्रतिबिंब अने का
परिते ब्रह्म तनही सब येका अरु
जाजा को घट बिन साई सोही सो स
सिमां हि स माई ११ त्यों सब ज्ञात म
मेरो अंसा परिघट संग लहे ड संसा
विधासक्ति जाहि द्यौं जबही घट
को नास करे सो तबही १२ सोई सो
तब मो कौलहे और सकल मोही
में रहे अरु प्रतिबिंब घट न हूं मांही
सदा अलिपति कऊं नांही
१३ परिघट संग लिपति सो होवे
अरु त्यों लिपति और हू जोवे त्यों
ज्ञात मांसकल ते न्यारा सदा अलि
पति न लिये विकारा १४ परिया
नमें आप बंधां जो ताके संगल

नांतां श्रवमैवंधमुक्तिं जज्ञे

सबसंदेहहृदहो ॥ १५ ॥ कते

मैद्वैकोवासा परमात्मज्ञानपर

पासा ज्यैद्वैपंशीरहैतरुगं ही

नि। निस्तिपतिकं कं नं हं। दिज

चेतनियेकसमांनो। सखासूययेक

हीसथांनो। श्रापकृतैतिनद्वारा

कायो। तिनमैयेकतरुही। चित्तो

यो। १७। देहवरधि के सुषफलप्राप्ते

तातैं डषश्रापही श्रावे। तत्त्वतः का

जकरमंबककरै। तिनमै जगजुग

जनमैरुमरे। १८। देहमरै मरनें क

रिजांनै। देहजनमतें जनमही नां

नै। श्रैसैसदावकृतडषपावै। हेमै

सोश्रातमांकहावे। १९। प्रमातना

देहतसमांही। सुषफलकवकृष्ण

वेनांही। तातैंकच्छकरमनहीगंहे

तिजानंदमयेन्हचत्तरहै। २०। यो

परमात्मज्ञानमज्जांनै। देहछती

५ त दो कृते माने सुषफलशासत्रारं
ननितजे मुक्ति होय परमात्मम
जे २१ ज्योतनमां हि मुक्ति परमात्
म विधापाय वसै त्यों श्रातम तन
में है परितनमें नां ही श्राप ही जांनि
नयो धिरमां ही २२ सुपन देखि
ज्यो जागै कोई सो सो सुपन विचरै
सो ही परिसो सुपन देह श्रु सुपनां
मिध्या जांने नरम तै नुपनां २३ श्र
रु ज्यो सहित श्र विद्या होई सो तन
में नही परि है सो ही ज्यो सो वत सुप
नां तन पावे ताको श्राप जांनि म
न लावे २४ तनमें बंध मुक्ति जे जी
वा बंध जीव मुक्ता सो सीवा बज्रस्यौ
कहं मुक्ति के लक्षण जिन कं जां
ण होय विचक्षण २५ देखै सुणै
कहै कछु करै सो कछु कदे नहि
र देखै सकल श्र रण्डं डीय कृति
जांने श्राप ही एक श्र करता माने

रही प्रव कर मन्त्र धी न सर
कर म करे ईं डी य मन सी रा
वास का यो न ही ज्ञानै मूर व
म ही कर ता मां नै ॥ २७ ॥ ब्रह्म रि
ति श्रे सी र है ॥ अ हं कार या त
द है ॥ आ स न अ स न अ ट न अ र
इ स पर स अ द्वां न रु वे नां ॥ २८ ॥
इं डी य न कौं बर ता वै ॥ आ प न द
ऊ न प्री ति ल गा वै ॥ रहै मां हि परि
प ति न हो ईं ज्यौं अ का स प व न र
तो ही ॥ २९ ॥ वि द्या नां म स ह थि पा
दि ट वै रा ग सां नि ध र्वा ईं ता सं व
टे सं स य सा रे जा ग्य स क्त न न
द नि वारे ॥ ३० ॥ ईं डी य प्रां न वृं
त मां ही ॥ क ब हू क बू वा स न
ही सो ज दि प त न हूं मैं इ सै ॥ पा र सा
प्रु कि न त न हीं प्र सै ॥ ३१ ॥ एक इ ह त
न पी डा करे ॥ ये क ब हू त प्र जा वि स
त रै ॥ परि बु धि रो य तो ख न हीं ॥ अं

करनदेहकृतिमिथ्याजांनै॥३२॥वि
धिन्मयेदजोकोईकरै॥किंवाकहे
ग्रंथविस्तरे॥मुनिकच्चनलोबुरो
नहींदेये॥गुनअरुदोषरहितस
मलेये॥३३॥विधिनेयेदहेनाहीं
कबुकरै॥नांकच्चकहेनहिरदे
धरे॥निसदिनरहेब्रह्मरसमंत॥
इच्छामेंज्यौंजडुनमंत॥३४॥श्रे
सेचहनमुक्तिकेमांनै॥अरुमुमुक्षु
कोसाधनजांनै॥मुक्तिभयोजोचा
हेकोई॥येसबसाधनसाधेसोई॥३५॥
जिनसबसबदब्रह्महैंजांन्यौं॥प
रिनिजतत्वनहींपहिचांन्यौं॥इनसा
धननिमांहिरतनांहीं॥जाकेश्रम
सबमिथ्याजांई॥३६॥श्रावदब्रह्मब्र
ह्मकेकाजा॥हरिजीअरुहरिनग
तिनसाजा॥नातैंब्रह्मविनांश्रमश्रे
सैं॥बंज्यागायसेईयेजैसैं॥३७॥बंज्या
गायइधबिनहोई॥पराधीनतनुरा

येकोशी अस्ती नारि पुत्र अस्ती
 धरम बिक्रं नौ धन अधिकार्शरिष
 ज्यो इ नमै दि न दिन डुष हो शी क
 बरु सुष पावे नही कोशी मोहि
 विनां त्यो सब विधिवां नी वेज ल
 बंधन ही को जांनी अण नो ले ल
 उत पति संहारा सब प्रति फल ल
 विविधि प्रकारा किं वा जल ल ल
 रम बड तेरे जावां नी में नां लो ले
 रे ४० मेरे नां नां विधि सबंधा नां
 बां नी में नां ही बंधा बंधा नां नां
 हि वि चारे न्ह फल जां नि न पं जु न
 धारे ४१ या विधि जां नि ल ड ल प
 कारा बड ल नां ति क रि व ड ल वि
 चरा जहां त हां तें मन दी नि चारे
 पूर ल्ये क व ल स में धारे ४२ जात
 जि ह जे नां नां अरथ मत अण क
 नही संमरथ सो म महेत क र म
 ब करे

रुनदेहकृतिमिथ्याजांनै॥३॥बि
धेन्यवेदजोकोईकरै॥किंवाकहै
ग्रंथविस्तरे॥मुनिकछूनलोबुरो
नहींदेये॥गुनअरुदोषरहितस
मलेये॥३॥बिधिनेयेदहैनाहीं
कबुकरै॥नांकछूकहैनहिरदे
धरे॥निसदिनरहैब्रह्मरसमंत॥
इच्छामेंजौजडुनमंत॥३॥ध
सेचहनमुक्तिकेमानै॥अरुमुमु
कोसाधनजांनै॥मुक्तिभयोजोचा
हैकोई॥येसबसाधनसाधेसोई॥३॥
जिनसबसबदब्रह्महैंजांन्यो॥प
रिनिजतत्वनहींपहिचांन्यो॥इन
धननिमांहिरतनांहीं॥जाकेप्रम
सबमिथ्याजांई॥३॥इबदब्रह्मब्र
ह्मकेकाजा॥हरिजीअरुहरिनग
तिनसाजा॥नातैंब्रह्मबिनांप्रमले
सैं॥बंज्यागायसेईयेजैसैं॥३॥बंज्या
गायइधबिनहोई॥पराधीनतनुरा

१
 श्रीऋषि सती नारि पुत्रऋष्याऋ
 मबिह्नं नो धनऋधिकार्शस्य
 इ नमैदि नदि नडु षहो श्रीऋ
 ह्र सुष पावे नही को श्री मोहि
 नां त्यो सब विधि बां नी केवल
 धन ही को जां नी इण मोते जल
 पति संहारा सब प्रतिपालन
 वेवधि प्रकारा किं वा जन मव
 मव कुते रे जा बां नी मै नां ही मे
 ॥४०॥ मेरे नां नां विधि सबंधा जा
 बां नी मै नां ही वंधा वंधा बां नी ला
 चोरे न्ह फल जां नि न पंडित
 ॥४१॥ या विधि जां नि व कुत प्र
 व कुत नां ति करि ब होत वि
 जहां तहां तै मन ही नि वारे
 ए ये क ब्रह्म मै धारे धर जो त
 हजे मां नां अरथ मन धा
 न ही सं मरथ सो म म हेत कर म स
 ब करै प्रेम म गन फल ज स परि हरे

७७ धृ॥ ओरै करम अकर्म बिकरमां
७० बंधन जांनित जै सब भर्मां जाह
तै उपजै मम भक्ति ताही में राधे
अनुं रगति ॥ ४४ ॥ सरधा सहित सु
नै गुन मेरे ॥ जिन तें करम न अवि
नेरे गावै सुमरे अस्तुतिकरे ॥ प्रे
म सहित निस दिन बिसतरे ॥ ४५ ॥
जे कछु धरम कांम अरु अर्थ ॥ करै
सकल सो मेरे अरथ ॥ मम अधीन
निरंतर रहै ॥ मन क्रम वचन अं
न नही गहै ॥ ४६ ॥ या विधि होवै नेह
चल भक्ती ॥ मन बुधि मोसों करै
आसक्ती ॥ तब मेरे निजरूप ही जां
नै ॥ तातैं नां नां नेह ही भांनै ॥ ४७ ॥
७६ तब ताही पद समावै ॥ जातैं जनम
फेरि नही पावै ॥ परियह सत संग
ति तैं होई ॥ सत संगति बिबुल नहन
कोई ॥ ४८ ॥ भगत न बिनां भगति
नही पावै ॥ भगति बिनां नही मोमै

शिवै॥ तासैसतसंगतिकोंकरै॥ ह
जो जतनसकल परे हरे॥ धए होहा
ऐसे सुनि हरिके वचन मनमें वा
ही पास तब नकन अरु नकि के
लखित पूछे दास पु० ॥ नु नु नु नु
वेसै है उ नु नु नु नु नु नु नु नु
जाव उ नु नु नु नु नु नु नु नु
तकके नु नु नु नु नु नु नु नु
वो नु नु नु नु नु नु नु नु
गने नु नु नु नु नु नु नु नु
बउठ व नु नु नु नु नु नु नु नु
वो नु नु नु नु नु नु नु नु
व नु नु नु नु नु नु नु नु
धिसं व नु नु नु नु नु नु नु नु
रहित व नु नु नु नु नु नु नु नु
कि दे नु नु नु नु नु नु नु नु
धिरर है नु नु नु नु नु नु नु नु
दाचार सं नु नु नु नु नु नु नु नु
ईहान ही नु नु नु नु नु नु नु नु

विचारही करें॥ धरमशापनेँ दिहत
धरें॥ सावधानरुहितविकारा॥
धीरजवंतदयाश्रधिकारा॥ ५५ सोक
मोहश्रुषुध्यापिपासा॥ जुरामृत्युज
तेषटपासा॥ श्रापमांनश्रुपमांन
जांने॥ श्रोरनकौंबहुमांनहीवां
नें॥ ५६ जोकोईसरनांगतिश्रावे॥
ताकेंज्यौंत्पोंग्यांनउपावे॥ सबकौ
मित्रसुभासुभजांनें॥ इहविसवास
सकलभ्रमभानें॥ ५७ ममशाधी
नदीनहोयरहै॥ साधनकेवलक
देनगहै॥ मोहीकौकरताकरिजांनें
कबहुभूलिनश्रापाश्रांतां॥ ५८
जदिपबेदरूपमेंगाये॥ वरणंप्रम
कुलधरमब्रताये॥ तोहुविधिनेये
दसबतजै॥ इहनिश्रैममचरनन
नजै॥ ५९ इसोभगतिनिजभक्तक
हावे॥ ताकेसंगभक्तिकोंपावे॥ दे
सरुकालरहितसर्वात्मचिदा

दमयप्रभूप्रमात्म॥६०॥त्रैसोजांति
जांनिमोहि नजे॥शोरसकलसंक
लिपंततजे॥सोमेरोकहीयेनिजनत
तासोंनिज्ञरुजेअनुरक्त॥६१॥अस
जेत्रैसोमोहिनजांने॥परिअत्यंतप्र
तिकोंवांने॥लेकरिमोहिसकलपरि
हरे॥तेजनमोहिआपुवसिकरे ६२
येनगतनकेलक्षएकहीये॥मेरी
रुपाकृतेंतेलहीये॥तिनकंपाय
नक्तिकोंपावे॥भक्तिपायममचर
ननआवे॥६३॥तातेंमोहिचहजेको
ईममसंतनकूंसेवैसोईअवमैंक
रुंभक्तिकेअंगा॥जातेंपावेमेरोसं
गा॥६४॥ममप्रतेमामेंमोकोंभजे॥मन
कमबचनफलादिकतजे॥हितसं
प्रसपरसप्रचरिया॥असतुतिअरु
दंडवतसपरिया॥६५॥मेरीकथावि
भैअतिसरधा॥मोबिनकखूनकरे
पलअरधा॥मेरेजनमकरमगुनगा

वे सदा निरंतर मोकों ध्यावै तनु अ
 रुतनु के पीछे जेते मोकूं सकल
 मरये तेते जनमाश्रमी आदि जे प्र
 वक्तु तउ छाह करैते प्रवा ॥ ६७ ॥ नि
 रति गीत अरु वक्तु विधि साजा
 कीरतन वक्तु विधि चरचा ॥ जांगर
 णादिक वक्तु विधि अरचा ॥ ६८ ॥
 असे वक्तु भांति उछाहा ॥ सब
 रवणिसब विधि निरवाहा ॥ मथुरा
 दिक हरि धां मन जावै ॥ वक्तु भां
 करि प्रेम बटावै ॥ ६९ ॥ अरनकं
 रचाही सिधावै ॥ वोर वोर प्रतिमां प
 धरावै ॥ वक्तु विधि करै बाग फुल
 ई ॥ कीडा सथां न सहित चतुराई ॥
 पुरमंड वक्तु भांति करावै ॥ ज्योह
 अरु हरि ना कन भावै ॥ आपमां हि
 जो सकति न होई ॥ तो कतुदि मठां
 सेही ॥ ७० ॥ वक्तु विधि महिमां कहै क
 हावै ॥ अरनसौं मिलि कै रिकरवावै

मंदरादिक ब्रह्मसंतिबुहारे। ब्रह्म
विधिसे चैधूलिनिवारे। ७२॥ चित्र
विचित्रचोकाविसतरे। होकरिदा
सशापही करे। सोनरहित कचुडि
भनआने। जो कचू करे सोनही ब
षाने। ७३॥ मो कौ करे आरती जासौ
ओर कचूनही देखैतसौ। सम परसा
दप्रातिसौ लेवै। प्रीतिही नजिभनन
ही देखै। ७४॥ थो ही ज्यो ज्यो उपजे प्रेम
त्यों त्यों अधिक बढावै नेम। सम भक्त
ने करहै अधीन। तनमन धनसौ नि
तलोलीन। ७५॥ अरु मेकादसठोर
निभडा। सम पूजा करिहरै अभडा
सूरजि अगनि विप्र अरु गाई। भक्त
नेष आकासरुवाई। ७६॥ जल अरु
धरणी आपमें त्यों ही। सब निमाहि सम
पूजायै ही। विधा त्रयी सूर की पूजा
मो कौ छुं डिन जांनै पूजा ७७। बरया
राज सकरि उपजावै। सांति कसीतस

वरतावे। तामसग्रीषमसकलवि
से सकलजगतकौंश्रापुप्रकासे
७८। तातेमेरीपरमविभूति। श्रेसे
जांनिकरेअसतूति। पावकमांहि
होमकरिजजे। विप्रनिअतिधिना
वसोंभजे। ७९। तिर्णजलादिगाय
नकीपूजा। भक्तभेषमेंश्रीरनद
जा। भक्तभेषनिजबंधवजांनै। अ
तिप्रसन्नहोयपूजावांनै। ८०। ज्यो
अपनेबंधूसंबंधी। तिनसोंप्रीतिस
वनहेसंधी। तिनकौंबहुतजांतिक
रिसेवै। तनमनधननिहचलकरिदे
वै। ८१। ज्योहीभगतआपनैभाई। कौसे
जांनिकरेअधिकार्श। तनमनधन
सोंप्रीतिबढावै। जिनतेमेरेनेदह
पावै। ८२। हिरदेअकासध्यानसों
सेवै। श्रवअधारपवनचित्तदेवै
जलकंजलअरुफूलफुलादी।
भूधरणीपूजेमंत्रादी। ८३। भोगनसों

ही भजे मो विचित्रंतरा
 सब भूत नमें मो कों जानै। तब
 सन यह पूजा वानै ॥ ६४ ॥ इन सब
 नि पूजा करे। मेरो रूप द्वि दे
 रूप चतु सुज श्रा युध चारी ॥ स्पं
 सरीर पीतंबर धारी ॥ ६५ ॥ सीरु सु
 कट सुन कं कल करणों। को सुभ
 बकु विधि श्रानरणों। त्रि सो रूप
 ननि में धावै। सावधान है प्रारि
 ॥ ६६ ॥ या विधि वाय कं पसर
 जपत पदां न दया बरत याग। मेरे
 करे सो करे। मो छिन श्रार हिर दे
 नही धरे ॥ ६७ ॥ इन साधन नि करे नर
 जो ई। प्रेम भगति मम पावै सो ई। ये सा
 धन करतें बकु जांती ॥ साधु मिला प
 होय दिन राती ॥ ६८ ॥ तिन तें श्रैसी जुग
 ति ही पावै। जातें गपान भक्ति उर श्रावै
 तातें गपान भक्ति को कारण। ये क भग
 त भव सागर तारण ॥ ६९ ॥ ता

नसौंचितलावे। जिनतेंमेरीभातिही
पावे तिनकेविणजमक्तिकोनित।
कबहुअरनअवेचित। ए० मेंउ
नकोवेमेरेहैसोई असेनेदनजाणें
कोई जोकबुकहेकरोंमेंसोई ज
दिपमेरेमननहीहोई ए० मोहिमि
लाणकोयहउपाया ब्रह्मविधिषो
जतअरनपाया साधसंतमिनि न
किहीकरही सोहीयेकजगतजल
तिरही ए० भक्तनबिनांभक्तिनही
पावे भक्तिबिनांनहींमोमेंआवे मो
मेंआवेबिनांजहांजाई तहांतहांका
लनिरंतरथाई ए० येअतिगोपिम
तोहेमेरे अरुमेरेअधुनचिततेरो
तातैयहमेंतोसोकह्यो आगेकह
बेनांहारह्यो ए० धा... ब्रह्मरिगो
पिअपनौंमतो कहुं तोहिसमजाय
जातेंछूटेजगतनय। मोमेंरहेसमा
याए० पुः ७। नमः जगत्सर्वकार्यं

येकादसखंडेश्रीभगवतउ
 संवादेयेकादसमोअध्या
 ॥११॥॥१५॥श्रीभगवानुवा
 ॥चोपइ॥उह्वसतोगोपिदुनि
 पावेमोहिमितेनवतेरोअप
 लणकोपंश्रदियांउं॥श्रीरैस
 कुपंश्रपियांउं॥१॥जोगकही
 प्रकारासांखिप्रकृतिअरु
 विचारावडविधिवरसाअ
 धरमांसकनत्यागहोवेनेहक
 मां॥श्रवेदादिकविद्यावडयाठ
 हांलगहेतपअतिलांतां॥होअ
 सरवापीकुंमां॥अंलादांनसम
 वरूपा॥अयेकादसीअदिव्रतजे
 गुपतमंत्रमेरेहेकेते।

जाअचरणांतीरश्रतनति
 मजमकरणां॥ध॥श्रीरैसमदम
 रिकजेते।साधनसकलशुक्तिकेते
 इनसबहीनतेमोहिनपावे।सा

सौचित्तलावै ॥ जिनतैं मेरी भा
पावै ॥ तिनके बिण ज भक्ति को नित
क बहुर श्रर न श्रवै चित ॥ ए० ॥ में
नको वै मेरे हे सोई ॥ सो मेरे न जांणै
कोई ॥ जो कष्ट कहे करों मैं सोई ॥ ज
दिप मेरे मन नही होई ॥ ए० ॥ मोहि मि
लण को यह नुपाया ॥ बड विधिषो
जत श्रर न पाया ॥ साध संत मिलि न
क्ति ही कर ही ॥ सो ही येक जगत जल
तिर ही ॥ ए० ॥ भक्त न बिनां भक्ति न ही
पावै ॥ भक्ति बिनां न ही मो मैं श्रवै मो
में श्राये बिनां जहं जाई ॥ तहां तहां क
ल निरंतर घाई ॥ ए० ॥ ये श्रति गोपि म
तो हे मेरो ॥ श्ररु मेरे श्रधी न चित तेरो
ता तै यह मैं तो सों कह्यो ॥ श्रागे कह
बेनां हार हो ॥ ए० ॥ दोहा ॥ बडुरि गो
पि श्रप नौं मतो ॥ कहुं तो हि सम जाय
जातैं छूटे जगत नय ॥ मो मैं रहै समा
य ॥ ए० ॥ इति श्र ॥ भागवतें द्वापुरां

नपलमां हिमिला वै पू उनतै मनके
गनच्छे ममचरननमेचितन्ह
वहों टै तातै मोहिनपावे उनतै पा
वेबचनसाधके सुनतै ईसाधूने
सेबचनसुनावे सत्रुमिं त्रुसुषुषु
जनावे सारअसारकालहकाला
साधुदियावे सोततकाला ७ सब
तै मनको संगमिटावे मेरेचरण
कंवल्लिपटावे ऐसीविधिनव
सागरतारै मेरेजनततकालउध
रै ८ जैतेतिरेतिरैगेतेते अरुवजं
तिरतहैंकेते तेसबसाधूसंगतै
जांनों इजोअोरउपायनमांनों ९
मृगजातुधानअसुरादिक चा
रणसिद्धनागगुहादिक अूपसर
विद्याधरग्रंधरबा जिनजिनपाय
तेतेसरबा १० वैससुदअंतजिअ
नारी बऊराजसतांमसअधिकार
जगजगजैसतसंगतिआये तिन

मनकौ ॥ ऐसीविधियेकनिकौ
येकनिसाधुरूपउधारौ ॥ १७ ॥ सा
मनकेमलहरुं ॥ सोमनअपने
ननधरौ ॥ ऐसीविधितिनकौंउ
॥ जहांत्यारौंतहांमेंहीत्यारौं ॥ १८ ॥
संगसोमेरोसंगसाधूसक
मेरोअंग ॥ तातेंदोकसाधूसं
॥ कैदोकमेरेतनमानौं ॥ १९ ॥

गायबृहन्नगनागा ॥ औरमूढबु
बडभागा ॥ ममसतसंगतिप्रेमतिन
बांध्यो ॥ भावनक्तिमोकंआराध्यो ॥
२० ॥ औरंकबुसाधननहींजानौं ॥
अवरनब्रह्मरूपकरिमानौं ॥ परि
नकोहितमोसोभयो ॥ तातेंसबम
नकोमलगयो ॥ २१ ॥ प्रमहीबिनां
नमोकौंपायो ॥ अतिअपारभवड
प्रमितायो ॥ जाकौंजोगसांखिबृह
नां ॥ जगपवेदविद्याविधिनां ॥ २२ ॥
करिसंन्यासबहुतडुषसहै ॥ तेक

मोकोंकदेनलहै। सोकोंतिनदुख
मैपायो। जोकेवलमोसैमनअये॥
रशरंमसहितपायोमोहिलबलो॥
कनेअरमधुपुरीतवहै॥ तगो
गोपीमेरेहेतपायमूरछानईअचेत
रधबऊर्यौंसमकिंमहादुषगये
निसवासुरममचरननधाले॥ गि
हिसोडिसवदुषमयदेयै॥ लेक
दकुलकचनलेयै॥ रपुजेनिमने
संगपलसीबीतै॥ तेहीतिनकं
लपविदीतै॥ मेरेगुणनिसुलैअर
गावै॥ लीलारूपहिरदैमैध्यावै॥ गह
कवलविरहमहादुषरोवै॥ कल
तपेदसौंसिसजोवै॥ कवलप्रान
जनकीभायै॥ ममइसनआरातेरा
मैरुनीदभूयतिससकल्पाराइ
ओरवेहगुणरहोनकाई॥ तिनकेड
घतेइपैजांनै॥ कैमैतीजोकहादयां
नै॥ रठ॥ विरहैप्रचंडअननअहि

कारा सकलविकारनयेजरिच्छार
प्रेमप्रवाहसकलमलक्षाले यो
मोविचिकेअंतरदाले २५॥ तव
येउपजीपरमअनूपा ॥ भूलीअप
भईममरूपा ॥ ज्यौंजोगेसुरब्रह्मही
ध्यावें ॥ कैकरिब्रह्मअपविसरावें
३० ॥ अरुज्यौंसरितासिंधुसमावें ॥
नांवरूपगुणनेदगुवावें ॥ त्योंवैन
ईरूपसबमेरो ॥ हेतभावकचूर
होनमेरो ३१ ॥ पापजौंनिअबला
तेसारी ॥ अरुश्रुतिकीमरजादादा
री ॥ निजपतिछोडिकीयोविन
चारा ॥ अरुतिनमोकौंजांन्यौंजा
रा ३२ ॥ ब्रह्मभावकबहुनहींजा
न्यौं ॥ तिनप्रपूर्यमोहिनितमंन्यौं
परितोहूनवसिंधुमिटायो ॥ सत
सहंसरणीममपदपायो ३३ ॥ तातें
मुनिउछवबडभागा ॥ लोकवेदस
बकोकरित्यागा ॥ जोहैसुन्यौंसुनन

कों जो ईश्वर वृत्ति निरवृत्ति जो कस्त
हो ईश्वर स्वतन्त्रिये कसरण मय
शयो। छैत नाव मन ते दि स ल यो
जहां तहां मम रूप ही देखो। का पाप
र कछु और न लेयो। वृथा चिंता के
करि मो कों पै हो। जाते जगत् न मन
नहीं श्रे हो। यों हरि जी वांणी वि मन
री त व उ ह व श्रा सं द्र क व क। व दं
उ ह व उ ह व। प्र क तु न य न व न
को क ह्ये। म्ये से रे न न म र द्या। नु म
री श म्ये वे ल क न व। र नि नु। नि द्ये।
सै सु म प व वे उ उ नु म ह्ये। श्रु ति म न य म।
भा ये तु न ह म ह्ये। इ ल क रि म। म।
नि म न न न न ह्ये। थि र क। म।
प न क क के। इ न क रि म। श्रा। नि। द्ये।
धो म वे द्या। व। न। न। न। न। न।
न व म न न क। इ न क रि म। म।
इ म म। इ। न। न। न। न।
न। न। न। न। न।

नां॥ जाते तु वच्छेदे नर्मनांतां॥ प्र
श्रापनिरंजनयेका॥ श्रोरकछनही
ऊतो अनेका॥ ४०॥ बक्रुरिकीयो
या विसतारा॥ रच्यो देह बक्रु अंग
कारा॥ तामें श्राप प्रवेश कीयो॥ प्रो
रुसवदसंग करिलीयो॥ ४१॥ सो
बदचक्र आधारा॥ प्रानांमकी नौ
श्रागारा॥ मणि पूरक पस्यांतीनां
चक्र विसुधमधिमांधांमां॥ ४२॥
रिप्रगटवैषरी बांनी॥ जेथे लोक रु
वेद वषांनी॥ सुरलघुमात्रा अछर
जेते॥ नां नां भांति विसतरे तेते॥ ४३॥
लोक मां हि शोरे विसतारे॥ वेद मां
तिरे सठि है सारे॥ परितिन कौं बक्रु
बिधि विसतारा॥ जाको कोई लहन
पारा॥ ४४॥ जैसे अन्न लकाठ मथिका
हो॥ ईंधन पवनसंग बक्रु वाटो॥ यो
समवाणीको विसतारा॥ जाते प्रगटो
सकल पसारा॥ ४५॥ ये विसतार सब

जैसे चेतन रूप ह्यारो ॥ ६ ॥
दस परकारा सुत्र ह्य
बुद्धि चित अहंकारा ॥ ७ ॥ अत्र
ममाया गुण जां नौ ॥ सब द्विजल
को मां नौ ॥ जो अहे तये क
धारा ॥ तिनकी नहौं माया विस्तार
॥ ७ ॥ तिनमें भै बडु जां ति अभा
॥ अत्ममधि मनी च प्रकास्यो ॥ ८ ॥ अ
धता तै करि लये सुषडु अहे ति
फल नये ॥ ९ ॥ अये संसार ये कहे
सै ॥ येक बीज तै बडु बन जै संता
अधारा ॥ अरु ये कही
लंपसारा ॥ १० ॥ जैसे बस न
मय होई ॥ वो तपो त पूजे नही क
॥ ११ ॥ सो यह भवत रुहे ये का द्वै फ
न फूल रुसाया अनेका ॥ १२ ॥ यह स
तन अधारा परितो फूचे त
तै न्यारा ॥ सो चेतनि है मेरो असा
मूलिन मां नूं संसा ॥ १३ ॥ अये सं

ई है औ सो मे नाषत हों सुनी यो तै सो पा
परु पुंन्य बीज द्वे या के मून अरु पार
वासनां ता के पूर अदि ही के त्रिगु
ण त्रिय सा अति न तै पंच भूत पर
साषा उपसाषा मन ईंद्रिय दस सब
दादिक सर वै पंचौरस पूर कफ अ
रु वात पित्र त्रिय बल कल सुष अ
रु डष प्रगट्ये द्वे फल तामे द्वे पंषी
को वासा प्रमात म अरु अत म पा
सा पूष जे मूरष ये ने दन जानै तै व
ऊ नांति वेद विधि ठानै तिन तै हो
वै व ऊ विधि बंधा जुग जुग डष पावै
ते अंधा पूष जे ये देह कृषिक रिजां
नै आप ही पंषी न्यारो मानै वेद सु
मृति सब माया देखै सकल अतीत
आप को लेखै पूही तब ये विधि न
षेद छिटकावै सुष अरु डष के नि
कटिन अशवै सकल मां हि आप ही
कूं मानै नेद देह कृति माया जानै

। चेतनसकतिब्रह्मकरिदेवैः॥ ३॥
रसकलमायाकरित्त्वैषैः॥ पदिकहस्त
कलनेदतत्रपावैः॥ जबसतशरक
सराणहीश्रावैः॥ पूजासतगुरजिलान
पावैकोई॥ ब्रह्मादिकभावैसोहोई
तातैगुरकीसराणहीश्रावैः॥ दिहउ
पासनांभक्तिबटावैः॥ पूणःगुरसेजा
कोईसोप्रजावाजातैउपजैमेसेभा
वाः॥ गुरसेवातैपावैभगती॥ गुरसेत्वा
तैसकलविरकती॥ ६॥ गुरसेत्वा
ज्ञानहीलनहै॥ गुरसेवातैकरसलेन
है॥ गुरसेवातैप्रमप्रकासाः॥ गुरसेजा
ममचरणनिवासाः॥ ६॥ मोहिमिल
एकोयहउपाई॥ गुरसेवाविनश्रो
रनकांई॥ तातैगुरकीसराणहीश्रावैः॥
तनमनधनसौहितनलगावैः॥ ६॥
तातैउपजैग्यानकुठारासबपांसिन
कोंकाटिनिहाराः॥ त्रिगुणलिंगसरीर
उपाधि॥ जोश्रातमकुंलभीव्याधिः॥

पांनकुठारसकलसोहरैयाविधि
श्रातमनिरमलकरैपीछेंग्यानधा
नसबत्यागे॥निसदिनयेकब्रह्म
अनुंरागे॥ईध॥तबसोब्रह्महीमां
हिसमावे॥ब्रह्मरैजगतजनमन
हीआवे॥तातैनुमसबसाधनत्या
गे॥निसदिनयेकब्रह्मअनुंरागे
ईध॥देहा॥येउइवतोसोकहो॥
नवमोचनममग्यान॥अबब्रह्मरै
साधनसहित॥नाथोंपरमनिध्यांन
ईईप्रतिश्रीजागवतेमहापुरांकेये
कादसकंदे श्रीभगवांनउइवसं
वादेइदसोअध्याय॥१२॥८८१॥
श्रीभगवांनउवाच॥चोपई॥सु
निउइवअबपरमगियांन॥जातै
पावेपरमनिध्यांन॥जातैग्यानहो
यसोकहो॥याविधितुवअग्यान
हीदहं॥१॥सातिकराजसतांमस
नेहें॥उइवतेगुणमायाकेहें॥सुय

उपसवति नही के जांनों। तिन तै परे
आतमां मांनों। २। ता तै नर सांति बल्लं
गहे। सांति क करि रजतम कों दहे।।
पीछे ब्रह्म सांति छिर होई सांति क
ति उपागे सो ही। ३। त्रै सी विधि नी न
गुण दहोत ब क्के ब्रह्म ब्रह्म में रहे
ज्यो ज्यो होय सांति क अधिकार तै
त्यों प्रेम भगति विसतारा। ४। सकल
वसतु सांति क जब भजे। तब ही ते
सांति क गुण उपजे। सांति क ज्यो ज्यो
त्यों त्यों भकी। त्यों ही त्यों अन्यत्र निर
की। ५। तब रजतम दोक मिटि जांवे।
ता तै तिन के गुण नही आवे। हर यम
सोग मांन अप मांनों। निंदा आल स
प्रभ गु मांनों। दीरग द्वेष आदि कहें
जे तो हं द सकल रजतम के ते तो ता
तै जब ये रजतम जाई। तब तिन के गु
ण उपजे नांहीं। ७। ता तै सांति क संगति
करै रजतम की संगति परि हरे। मूल स

लकोसंगतिकारणसंगतिवैरै
गतितारण॥६॥देसरुकालपुत्र
लपांनग्रंथरुकरमजनमञ्जरु
नग्रभाधानादिकसंसकारमं
जापयेदसपरकारणयेदस
कौहोवेजैसेगुणविसतारैता
कौतैसेसांतिकतोसांतिकउपजा
राजसतोराजसअधकावे॥१०॥त
सतोतांमसविसतरेजैसेयेदस
सैकरैजाहीजामेंजोगुणहोई
तेमजाणैसोही॥११॥परिसो
तेमसाधवषांनैसोवैसांतिक
तेमजांनैजोअतिनिंदितमोगु
सोहैजोराजसकचूमधिमजो
॥१२॥तातैयेदससांतिकसेवैरा
सतांमसनांमनलेवैराजसतां
सजोहितहोईतोहूसबछिट
वैसोही॥१३॥सांतिकसंगतैज
जेसत्वत्योंत्योंलहैनगतिको

त्व। जो लगदिठउपजेदिष्पानां॥
येसकलयेकनगवांनं॥१५॥
श्रुदोनोंदेहनिभरमजांले।सत
वेसतरपुपनसममालें।ल्लदे
ब्रह्ममांहिथिरहोवै।सांतिकक
कीघोरनजोवै।श्रुज्योवांसनतेंउ
पजेअनल।श्रुहोवैमारुतनेंप
रबलासबवांसनिकोंदाहेसोहं॥
आपहीबऊरिउपसमतहोईसो
साधनयातनतेंहोवै।होयप्रचंडया
तनकोंघोवै।बऊरिआपउपसं
मतहोईसाधनलेसरहेनहीको
ई।१७।गणांतीतसोकहीयेजोगी
लीनूंकालब्रह्मरसभोगी।सोबऊ
सोभवमेंनहीं।श्रुवै।मोहिमेले।मो
मांहिसमावै।१८।तातेंसबसाधनछि
टकांवै।येकनिरंजनमोकोंध्रावै।
तवहरिकीसुनिअदनुतवांनी।
नउरुवयेषसवयांनी।१९।-

नदी च। हे प्रभू यहाँ श्रेयो कहीये
 पां नांदि कत जें सुख लहीये परिजे
 विषय सुयन कों चाहें तातें बड
 शरंभ समाहें २० तेवापुरेस
 दा दुषसहें कबहु भूलिन सुष
 कौलहें परिते तो विषय निदुष
 जानें जानि बूझि क्यो उदिमगंनै
 २१ ज्यो बकरा मारन कौलीयो ले
 छेरी नमै ठाडा कीयो वह निल
 जक छनहीं जानें तिन सों मिलि
 व्रथादि कगंनै २२ अरु जैसे
 गरद भ अरु कृता तिरस कारते
 पहें बहता सुषके हेत सब निश्र
 धीनां सदा हिरदै डुर बल अति दी
 नां २३ वेतो मूठ क छनहीं जानें
 तातें विषय उदिमनिगंनै येतो
 नरजानें सब वाता देषे जगत च
 ल्यो सब जाता २४ प्रथमतो सुष

ईश्वरुजेदिनांच्यारिहरिजातेक
कुंतैतोषांननपावे।रघुकाकति
रंतरग्रासलजावे।येकदिनांजग
द्वारपंवावे।तहांनरकहेंबहुना
परकारा।जिनकेदुषकोअंनन
रा।रही।आगेचौरासीभयभारो।अ
ययनकोंबहुदुषविसतारे।अ
भवजलकेदुषअपारा।कहें
हांलौंवारनपारा।रघुअैसीलल
विधिमांनवजांनै।तोहूक्योंआर
भनिवांनै।आपआपकोंदुषनप
जावे।आपआपजमद्वारपवावे
रहसोयहसकलकृपाकरिकहें
मेरेउरकोसंसोदहोयोंकहिकेंउ
द्वजबरहे।तवहरिजीप्रत्यउत
रकहै।३॥प्रीभगवांनउवाच॥
उधवयेआतमअविनासी।प्यांन
सरूपसकलसुधरासी।सोतवह
यातनेमेंआवे।तवस्वाधीनदिये

षपावे ३० बज्रस्यौतनहितउदि
मगहै नहीपावेतो दुषकौलहै
याविधिसुषदुषजबहीजांनै त
वहीदेहश्रापकरिमांनै ३१ श्रे
सैंबढैदेहश्रहंकारा तवहीराज
सकोश्रधिकारा राजससहित
जबहीमनहोई तबयेहीसुषजं
नैसोही ३२ तवसंकल्पविक
ल्पनिकरै निसदिनहिरदै विषे
रसधरे तबजासुषहीसुनैश्ररु
देषे तववसिकै निजसुषकरि
लेषे ३३ तवहिरदैसैंबाढैकां
म ग्पांनविचारनरायेनां म ता
तैंबज्रराजसश्रधिकारा राजस
तैंमनगहैविकारा ३४ तवराज
सकोवेगप्रचंडा ग्पांनहीमारि
करैसतयंका तातैंग्पांनसुनैश्ररु
जांनै श्ररुश्रोरनिसौंश्रापुवघां
नै ३५ परिसोकांसनहीवहरावे

लेक रिप करि कर म कर दो वों परि
 ज रिप या नर की बुधा रज त म तै न
 ही पावे सुधी । उर्द्ध ति कृ नि स रि न ह
 ष वि चारे । उर तै सं क त कं स नो
 लोरे । सा व धां न श्राल स न ही करे ॥
 क म क म म च र न न चित धे रो ३७
 आ स ए जी त करे व सि प्रो न ॥ नि ह हि
 न उ र र थो सं म धां न ॥ अ रु म म सि य
 चार स न का दि । स क त त त्व ह्यं
 न न की आ दि । ३४ ॥ ति न वि चारि क
 रि जो ग ही भा ष्यो ॥ सो तो य हे श्च र स न
 ना ष्यो ॥ ज्यो ही ज्यो मन हू जो त ज्ये ॥ अ
 रु ज्यो ज्यो म म च र ए नि भ ज्ये ॥ ३५ ॥
 या ह ॥ तै त व मि टै वि कारा ॥ या ही ति
 वृ डै सं तारा ॥ या ही तै म म च र ए
 न पा वै । व डू ख्यो ज ग त जन म न ही
 उ र वै । ३६ ॥ जा तै पर म जो ग ये रा ष्यो ।
 जा तै जे रे रि ष नि ना ष्यो ॥ ज व ये तां नी
 दो ले क ल ॥ त व उ डू व जन की जी

न
प्रश्न ११॥ उच्च उवाच ॥ हे प्रभुजी
कौंसमैकेहिंरुपीतुमभाव्येयेण
नश्चनूपासनकादिकनि कौन
विधिलह्यो ॥ क्योपूछोकेसैतुमक
ह्यो ॥ ४२ ॥ ग्यानसहितसबमोसोक
ह्यो ॥ मेरेउरकोसंसेदिहो ॥ जबयेउ
ध्वकीन्हीप्रश्न ॥ तबबोलेकरु
णांमयकृष्ण ॥ ४३ ॥ श्रीकृष्णउवा
च ॥ ब्रह्मपुत्रसनकादिकचारी
मनतैउपजेब्रह्मविचारी ॥ जन्म
हीतैजिनगहीनिरहती ॥ मनब
चिकरमतजीपरहती ॥ ४४ ॥ प्रश्न
करीतिनब्रह्माश्रमो ॥ यसोनेदजे
सोवतजागो ॥ अतिसुप्रमजांनीनह
परैउतरकहोकौनउच्चरे ॥ ४५ ॥
सनकादिकउवाच ॥ हे प्रभुब्रह्म
ब्रह्ममयदेवायाकोहमैबतावो
नेवा ॥ विषेवासनांचितहीगह्यो ॥
चित्तप्रीतिकरिक्केमिलिरह्यो ॥ ४६ ॥

दोऊ मिले आपमें जैसे नीर लयी
रपर सपर जैसे भिनि नये विन मु
कन होई क्यो करि नि न्य होय ये
दोई ॥ ४५ ॥ ये बाणी ब्रह्मा उर धारी
उतर देन कौं वहुत विचारी ॥ परि
तोऊ उतर नही आयो ॥ जातें कर
मनसो मल लायो ॥ ४६ ॥ तब ब्रह्मा ये
बुधि विचारी ॥ जाहि नहि कोई ता
ह मुरारी ॥ तातें कसो चित वत सेरो
हंस रूपमें प्रगद्यो नेरो ॥ ४७ ॥ हंस रूप
तातें दिषायो ॥ जातें यह आस यस
मुजायो ॥ के जो हंस बृति कौं गड़े ॥ सो
ही याके नेद ही लं है ॥ ४८ ॥ तब तनि
मोहि देखि सुय पायो ॥ ब्रह्मा मिलि उ
चि माए निवायो ॥ करि विनती तब
बचन बयांने हे प्रभु तुम को हंस न
ही जानें ॥ ४९ ॥ तब तनि सौं में जो क ल
क ह्यो ॥ तिन के उर को सं सो द ह्यो ॥
ही वस न ह्यो ॥ इत तो सो ॥ ५० ॥

नके सुनियो मोसों ॥ ५२ ॥ तुमको हो
यों प्रच्छो जबही ॥ ग्यान कही उत्तर
में तबही ॥ हंस हरि जबह सि करि
बोले ॥ कृपानिध्रान तब अंतर
घोले ॥ ५३ ॥ मनको संसे सबै मिटा
यो ॥ विद्यमां निपर ब्रह्म बतायो ॥
हंस उवाच ॥ विप्र कृ प्रह्न करी तु
म जैसी ॥ करणों नही संभवै तैसी ॥
५४ ॥ वस्तु विचारि द्वैत नही कोरी
तो याको उतर क्यो होरी ॥ अरु जो दे
हरूपक कहिये ॥ तो कृक च्छ द्वैत
नही लहीये ॥ ५५ ॥ पंचभूत निरम
सतन सारे ॥ जे कच्छु जहां लगविस
तारे ॥ तातें सकल ये कहे नाहीं ॥ ५६ ॥
जो कौन विचारो मांहीं ॥ ५७ ॥ पुरुष प्र
ष्टि देखें तें येका ॥ प्रकृति द्विष्ट कृन
ही अनेका ॥ तातें प्रह्न करी तुम जैसी
वक्तनि मां हि करी जै जैसी ॥ ५८ ॥
रु जो दी सें तत्व विचारा ॥ तो नही प्रह्न

तिपुरषविसतारा। जो कछ्ही से सुनी
ये कहियो। मन अरु बुद्धि जहां लौं ल
हीये। पूछ। सो सब में ही ह जो नां ही ॥
श्री सो ग्यान धरो उर मां हीं नां म रूप
ते सकल विकारा। आदि अंत सधि
मां टी सारा। पूए। त्यों ही आदि अंत
सधि मां हीं में ही ये क हेत क छ्नां ह
हेत दिष्ट सो दुष को कारण ब्रह्मादि
ष्ट निज सुष विसतारणा ई०। लगे त्रं
गन सं दुष ल होत व सुष जब ते त
जि जल ग हे। ज्यों ही हेत दिष्ट सो दुष
ये क दिष्ट सो ही निज सुष। ई०। अरु तु
म प्रष्ट विरं चि ही करी। सो में हिर दे
आप नें धरी। विषय न मां हि चित।
मिल र हो। अरु विषय न चित ही दि
ट ग हो। ई०। हे पुत्र ये यों ही सत्पा परि
ते आत म मां हि अ सत्पा विषय चित
ये दो ऊ माया। आत म ल त्प निरं जन
राग। ई०। विषय न सो ज ल चित ल

गावे तबही चित नित्य सुषपावे ॥
तब विषय न के ध्यान ही धरे ॥ ति
न के हेत कर म बिसतरे ॥ ईध ता
ते ये क मे क मिलि रहे ॥ ऐसे जन
म जन म दुष स हे ॥ ता ते श्रा त म मे
रो अंसा मेरी सर नि ग हे त जि सं
सा ईध ॥ बा हरि कृ ते विषय पर
हरे ॥ अरु चित ते चित वन ना क
रे ॥ विषय रु चित वृ था करि जा
ने ॥ ति न ते परे श्रा पु कों ॥ मां ने ॥ ई ई
ब्र ह्म स रूप ये क अ बि ना सी ॥ ग्पा
न रूप चेत न सुष रा सी ॥ मन अरु
बु धि चित अ हं कारा ॥ इं द्री य विष
य दे ह बिस ता रा ॥ ई ५ ॥ ये भ्र म रूप
स क ल हे मा या ॥ अ लि श्रा त मा अ
प बंधा या ॥ ऐसे जा नि स क ल छि ट
का वे ॥ श्रा प ही मो हि ये क करि ध्य
वे ॥ ई ६ ॥ जा ग्र त सु प न सु षो प ति व
षां नों ॥ ते श्रा च र ण बु धि के जां नों ॥ ति

॥ सदायेकर

सपरमन्नूपं ॥ दण्डं ॥ सांतिकं ॥

जाग्रतहोर्षी राजससुषुपनत्वहैस

वकोर्षी सुषुपतितां मसगुणैतंत्रा

अरुबुहित्पङ्कं पावौ ॥ ७० ॥

करूपञ्जातसति कुंसां ही ॥ साधी

लिमेक कुंसां ही ॥ तातैति कुंसां

नतै न्यारो निजानंदमय रूपह

॥ ७१ ॥ तातैति र होय करै नि

सहजे बूटै विगुणपसापादि नति

॥ ७२ ॥ अस्मिन्नां ॥ तातैति लेखजांशो

नां ॥ ७३ ॥ तातैति निजानंदजिह

॥ ७४ ॥ कालअसंखे स्थापयपाय

॥ ७५ ॥ सैजांनित्तै अस्मिन्नां कितै न

॥ ७६ ॥ सुपनि को ॥ धांजां ॥ हृदयतेहं

॥ ७७ ॥ निरं करै विरली ॥ वोशै न दन्दी

॥ ७८ ॥ माता ॥ नजसहजे गोवां हि समी

॥ ७९ ॥ कर्कोदित्तै न देन ही पावौ ॥ ७९ ॥

॥ ८० ॥ अज्ञान अज्ञान जितने ॥ ८० ॥

नांनां विधिकरैः प्रवरतिमां हि व
ऊत विधि जागे परिजो जां नि हे
त नही त्यागे प्रधु सो निति सो व
त जागत जां नो ता को में इ द्यां त
व धां नो जे से सयन करै नर को
ई सो व त सुपन लहे पुनि सो ई
उ ही व ऊत भांति करै विवहार
लेन देन जल पां न श्र हारा व ऊ सै
रे नि धरे ते सो वै दिवस न दे ल्यो ही
वि जो वै ७७ जे से ई के ई हि न र
ता जागत सो व त स क ल वि तां ते
व ऊ रू वै ह जे सी म ति श्र नो रा ति
नि व स की नि द्र भां नो ७४ क दे
नो वै जा ग त र है सा व धां न श्र ल
म हा ग है जे से का ज श्र प नो ई रे
यो रा दि क ध न को न ही ह रे इ ल
परि ज व य हां जा सि क रि
इ स क ल वृ था क रि लो जे नो
म य वा क ल वि व त र है

जागे सो सारा ॥ ४० ॥ आप ही सब मिथ्य
करे जां नैं ॥ कब हू नू लिन सति कति
मां नैं त्यों ही वेद धर मंत्रा चरण ॥
अरु जे सुष जिन के हित करण ॥
४१ ॥ ते सब सुपन रूप विवहारा ॥ पं
डित छो डैं सकल पसारा ॥ भ्रम तै ह
स्यो देह अनि मां नों ॥ ता तैं वरण ॥ प्र
मते नां नों ॥ ४२ ॥ ता तैं करै बडु त बि
धिकर मां ॥ सुष निमत विस ता रे धर
मां ॥ परिते सकल वृथा करि जां नों
सुपन जागण सम करि मां नों ॥ ४३ ॥
जे देहादिक सकल पसारा ॥ चेत
न करि बरता वन हारा ॥ सुष दुष जे
ग करै अरु जां नैं ॥ आप ही सुयी ॥ दु
प्री करि मां नैं ॥ ४४ ॥ बडु स्यो जव ही सु
पन कों पावै ॥ बडु विवहार न सों म
भ्लावै ॥ तब हू जां नैं सकल पसारा
आप परि सुष दुष निव हारा ॥ ४५ ॥
न डरि सुयो पति मां ॥ ४६ ॥ जा श्री म

नबुध्दितश्च हंकारतकांशं तव
शतमांनिरंतररहे। जागेंसकल
वातकौंकहैं। ६६। त्नायोदीयो
अरुअयोगयो। जहांतगैपीछें
अनुमयो सोअतमांयेकरस
रहे। त्रिंकांलकीजातनिक
हे। ६७। योंअविनासीअतमये
क। पूजोमायाभेदअनेक। तीन
अवसथातेहैंमनके। तिनतिन
कंलींनंगनजेहैं। तीनंगुणमाया
केतेहैं। ज्येसाबिधिनिश्चयसोजं
नैं। निसदिनहिरदेविचारहिं
नैं। ६८। सकलउपाधिनकोअ
शर। ग्यानषडुगकाटैअहंका
र। हिरदेमांदिमेंताकौंनजे। सा
वधानकेकदेनतजे। ६९। येसारे
तगल्लमकरिजांनैं। मनकोकृति
मेथ्याकरिमांनैं। ज्येयेकनिकौंउ
पतनयेपे। नथयेकनिकुंविनम

तपे ध्ये एं शसो हीरी तिस कल वं
जां नै सुपन समाने हिरदा में सां
अगनिसहित ज्ये ल करी हो प्री ज
ल कले करि करे को ई एं शसो
भांति हे दी से श्री रा ॥ धिर परि चं च
न सब ही टोरा त्पें ये जगत रहे धि
रनिता परि अति चंचल सब कल
अनिता ए इयिक ब्रह्म में सब आ
भास्यो ॥ त्रिगुण पाद्य वक्र ने द
स्यो ॥ सुक्ति रूप गुण में जो भोगी ॥ दो
बहु भांति विचारे जोगी ॥ ए ध्यानां
जगतें द्विष्ट नुतारे ॥ सां चडु जां नि हि
रदे नही धारे ॥ त्रिभा छो डैने प्रल
रहो ॥ मन वच कर सक बु कर न ज
गहो ॥ ए प्री हार हित ब्रह्म रत भो ॥ 5
गा नि जानंद से हो वै जोगी ॥ सं से दि
रथा जां नि सब त्यागे नि च ल हिर
दे ब्रह्म अनुरागे ॥ ए ही प्रो जो रहे देह
रुमां ही तो कृ कि रि नर न ज न जे नां

ही जो ये देह जाय जो आवे वै वै उ वै
वै श्रुषा वै ॥ ए ५ ॥ श्रो क क च्च करे वि
वहारा ॥ परिसे सिद्ध न जां नै सारा नि
श्रुत्तर है निरंजन मां ही ॥ देहादिक
क च्च जां नै नां ही ॥ ए ६ ॥ ज्यो को ई त न व
सत्र निधरे ॥ बकु स्यो सुरा पां न कौ क
रे ॥ सो निज बस्त्र नि जां नै नां ही ॥ प्रथ
म बंधे ता तै न ही जां ई कर म कर है
या तन के जो लो ॥ सहित ई प्री य नि
वर तै तो लो ॥ कर म हिं ता के तन कूं पो
षे ॥ पां न पां न सौ निति सं तो षे ॥ १०० ॥ ये
गी ब्रह्म मां हि थिर रहे ॥ देहादिक की
सुधिन त्ते हे ॥ जै सैं सु प न दे षि क रि जा
गे ॥ ता सु प नां सौ न हिं श्रु नूं रा गे ॥ १०१ ॥ तै
सैं मो ह नि सा तै जा गे ॥ क कुं न लि प
ब्रह्म श्रु नूं रा गे ॥ देह थ कां ब्रह्म मि
ति रह्यो ॥ भव के बी ज स क ल त न द
ह्यो ॥ १०२ ॥ सो भव मे व कु स्यो न ही श्र
वे ॥ ब्रह्म मित्यो सो ब्रह्म समा वै ता तै

देह आदि विसतारा। भरम कृति जो
 त्रिगुण मय सारा ॥ १०३ ॥ त्रिगुण अत्र
 तीस ब्रह्म कौंसे वै ॥ विषय न को क
 बुनां मन ले वै ॥ विषय चित हो ऊ
 न्रम जां नौं ॥ ब्रह्म मां हिरहि दो नौं नौं
 नौं ॥ १०४ ॥ संकल अतीत आप कौं दे
 यो ॥ सब घटये क हेत न ही ले यो ॥
 ब्रह्म रु आप ये क करि मां नौं ॥ हेत ना
 व क ब ह न ही अ नौं ॥ १०५ ॥ नि स दि
 न ब्रह्म वि चार ही करो ॥ परिवल से
 रो उर में धरो ॥ मम आधी न निरंत र हो
 या विधि जगत बीज सब द हो ॥ १०६ ॥
 जातें ब कुरि न भो में आवे ॥ ब्रह्म रूप
 हेय ब्रह्म समा बो ॥ ये में तु म सौं क हो ॥
 ब चार ॥ सां खि रु जोग सकल को सार ॥
 १०७ ॥ मेरो गुह्य म तो अति जां नौं ॥ द क
 त नां ति हिरदा में अ नौं ॥ तु स रो हित
 मन मां हि वि चार्यो ॥ में हं वि स हं स
 त न धां स्यो ॥ १०८ ॥ में हं ब्रह्म सकल को

दोहा॥ येक उछवतो सौं कहो
 ग्गोननिज सार या कों गेहे निज प
 दल है। छूटे सब संसार ॥ १२१ ॥ ५

श्री भागवतै न्हा पुराणे येका दस
 कंदे श्री भगवान उछव संमादे।
 हंसीता यांगनी दस सो श्रधाय ॥
 १३ ॥ १००० ॥ श्री सुप्रो उवाच ॥

वृक्षे सो सुनि हरि जी को ग्गोन ॥

कि उधार क भरम सब भानाये

द्वव उर दिठ करि धारी परिक

छ प्रसन्न कृष्ण सौं करी ॥ १ ॥ उछव

वाच ॥ परम दयाल दयानि

कं बडो बतायो नेवा ॥ भाति

तै पई ये हरि चरण ॥ छूटे ज

त जनम न्नु रु मरण ॥ २ ॥ परि न्नु ब

येक प्रसन्न कों कहो ॥ मेरेया संदेह

हि दहो जेब कु विधि श्रुति समृति

जांने ॥ ते तो बड साधन निबयाने

३ ॥ मुकति हेति बड पंथ निक है ॥

बं कुलें मिलि गहैं ॥ ता तें ते न
 अत्र से या भक्ति समा के कल
 जा जा पंथ तु है प्रभू पद है ५
 कु सों भव सागर न ही न्द्र र्दे ॥
 पंथ कृपा करि कहो ॥ निरी
 कल मूह ता दं हो ॥ प्रा तु क वि न
 न ही क हे ॥ ज्यो न ल हे ले तु
 तै ल हे ॥ उ ध व न्द्रे ती र्छी वी ली
 उ तर की क र्ण व न्द्रे ती ॥ र्ही
 न ग वा न उ वा च उ द्द व क ल य र
 ज व भ यो ॥ ह व ये त त्क र्ण न के
 यो ॥ पु नि मे दृ हि स से य ह गाना
 सा सं सुर ति त त्क व द्या नां वी नि
 र ति पु लि द्र त्पा प हां यो ॥ अ गु वा
 स्वा यं भू पा यो ॥ सा त ह्ना रि य ५
 गु जि न न्द्रा दी ॥ अ र्क स्वां य भू म
 ॥ ती न अ द्र न ते
 नां नां वि धि के भे द
 न र्अ सुर सि द्ध गं

5 दोहा॥ येक उरु वतो सौ कहो॥
 10 ग्पाननिज सार या कौं गेहे निज प
 द ल है। छूटे सब संसार ॥ १२ ॥ ५
 श्री भागवत महापुराणे येका दस
 स्कंदे श्री भगवानु उरु व संसादे।
 हंसीता यांगवी दस सो अध्याय ॥
 १३ ॥ १००० ॥ श्री सुप्रो उवाच ॥
 ५३ ॥ त्रे सो सुनि हरि जी को ग्पान ॥
 भक्ति उधार क भर म सब भांन ये
 उरु व उरु दिठ करि धरी परिक
 च प्रसन्न कृष्ण सौ करी ॥ १ ॥ उरु व
 नाचा ॥ परम दया ल द्यानि
 मो कं ब डो ब तायो मे वा ॥ भा ति
 कुतै पई ये हरि चरण ॥ छूटे ज
 त जन म न्त्र रु म रण ॥ २ ॥ परि श्रु व
 येक प्रसन्न कौं कहो ॥ मे रे या सं दे
 हि द हो ॥ जे ब डु विधि श्रु ति स मृ ति
 जां नै ॥ ते तो ब डु सा ध न नि ब यो नै
 ३ ॥ मु क ति हे ति ब डु पं थ नि क हौ ॥

रुतेह बकुलें मिलिगहैं तातें ते उ
 पंथ असे या भक्ति समाके कबू
 सौं धाजा जा पंथ तुमहें प्रभू पईये
 बकुलें भवसागर नही अईये।
 सो सो पंथ कृपा करिक ह्यो मेरी।
 सकल मूढता दहो। पु। तुम विन
 येह जो नही कहै। ग्यान लहे सो तु
 म तै लहे। उदवत्रे सी प्रेसी बांनी
 तव उतरकी कृष्णवबंधांनी। ई।
 यो नग्नो ननु वाच उदवकल्पस
 म्यन्व नयो। तव येत त्वलीन के
 गयो। पुनिमें सृष्टिसमै यह ग्यानां।
 ब्रह्मासं सुरतित त्वबंधांनां। प्रसि
 ई सुरति पुनि ब्रह्मापहायो। प्रशुवा
 विक स्वायं भूपायो। सात महारियं
 भृगुजिन आदी। अरु स्वायं भूम
 नं मन्वादी। ही। तिन अष्टनतै ये वि
 सतारा। नां नां विधिके नेद अपारा।
 नर अ सुरसिद्ध गं इवा। विद्या

धरजचादिकप्रवाणसपतदी
पनरबहुपरकारा॥ किंनरकिंपु
रयादिन्नपारा॥ सतरजतमतिन
कीउतपति॥ तातेंबहुविधिभई
परकृति॥ १०॥ तिनतेंनयेबहुत
विधिनेद॥ तिनतेंसोहीजांनैवेद
वेदतत्वसोकितकरहो॥ आपस
भावसमातिनिकहो॥ ११॥ ज्यो॥ ज्यो॥
तिनकेनयेसुभाव॥ त्योंत्योंजांन्योंसु
रतिकोभाव॥ त्योंहीत्योंआचरनन
करे॥ त्योंत्योंआपसुमृतिविसतरै॥
१२॥ परंपरायजेतिनतेंहोवें॥ तिति
नकेकृतसंमृतिजोवें॥ तिनतेंआप
करेबहुग्रंथ॥ नांनानांतिचलावे
पंथ॥ १३॥ ज्येसीविधिउपजेपायंडा
प्यानधरमहोवेसतघंठा॥ ममसाया
करिमोहितहोवे॥ तातेंतत्वपंथन
हीजोवे॥ १४॥ आपनीअपनीरूचिअ
नूंमानां॥ करेकरमअरुनायेपानां॥

नां विधि साधनं क्व गवैति न
न कल्पा एव ता वै श्रुये के वज्र
धर मनि नाये तिन ते मुक्ति मु
के कं श्रुये ये के कहे ज सही विस
रीये जाते सकल दुष न ते तिरीये
ई जा को ज सया जग में जो लो सो
नर रहे सुरग में तो लो ये क ई हां ही
कां म वषां नै श्रुगे सुरग नर क न
ही जां नै श्रु जो त न ई हां करे भोग
न कों य हां ही छे डि जा य या त न कों
श्रुगे सुष दुष लहन को शी ता ते भो
ग करे सब को ई श्रु श्रु से गंधन
क हि भ र मां वै धर म राय की सब
रि न पा वै ये क क हे स म द म श्रु रु
स त्प इ जे सा ध न स क ल श्रु स त्प
श्रु जोग गंध वज्र सा धि वषां नै
ति न ते मू ट मु क्ति कों मां नै सां म रु
दां म डं ड श्रु रु ने द इन कों ग हे ये
क प टि वे द श्रु न्याय सहित सब

उदिमकरे॥ उत्तिमधरमजांनिउर
धरे॥ दांनभोगउतमकरिभाये॥ १५
हेमुक्तिसाधनकरिराये॥ २१॥ येके
जज्ञदांनतपगहे॥ येकेजमनेमनि
सग्रहे॥ येकेतीरथवरतमनधरे
कङ्ककहांलौं बडुविधिकरे॥ २२
तिनतेंसुरगादिकफलपावै॥ वी
ननयेयहांफिरिअवै॥ बडुस्यौं
नीचजौंनिबडुलहे॥ नरकनि
मैंकेईदिनरहे॥ २३॥ अरुजबर
हैंसुरगकेसांही॥ तबडुंकखुमु
षपावैनांही॥ कामक्रोधनिदां
पिमांतां॥ रागदोषअंछाअनिमां
नां॥ इत्यादिकनिग्रसेनितिरहे॥ त
तेंकोनभांतिमुषलहे॥ भगतिवि
नांविधिलोकहीजावे॥ कालतहां
हुंतेंढहाजावे॥ २४॥ तातेंउद्वभ
रमहैसारा॥ सुषममचरणनिके
आधारा॥ जिनमेरेचरणनिचित

जुग

२४

धस्यो साधनसौधिसकलपरहस्यो
 र्हतिनकौं उद्वजोसुषहोशी। जो
 सुषक ऊंनपावेकोशीसोसुषकह्ये
 सुन्येनहीश्रावे। सोहीयेजांनैसोपा
 वे २७। सोपावेसोमोसोपागें। शोरस
 कलश्रासेंकोंत्पागें। समश्राधीन
 निरंतररहै। इजीसकलबासनांद
 हे २८। सकलवस्तुकोकीन्होंत्पाग
 श्रंतहकरणधस्योवैरागं। समह
 रसीनितिसीसलचितं। समचितव
 निहिरदेदिठबितारण। ताकौंदसं
 दिसासुषरूप। सोसुषजोश्रतिपर
 मश्रनूपा। जोजनमेरेसुषकौंजांनै
 ताकेमनकितऊंनहीमांनै। उंता
 केसबश्राधीनैरहै। परिसोमोविन
 कछनगहैं। ब्रह्मलोककौंकदीन
 नैवें। ईइलोकपलचितनदेवै। ३१
 संवभूराजनैननहीं। देयें। सप्रपमा
 लसुषनितिरणलेयें। जोग

मादिक अष्टा जोगीजिनहितस
 कष्ट अरु तिनहुं कौक बहून
 ही लेई अापहु तै नितसे वैतेई
 किनिकट ही रहे सदाई परिमे
 जन बुवेन काई अरु में ही येक
 प्रीयेताको ममचरणनिचि
 जाको ताही तै मेरे प्रीयसे
 ई ताबिन और प्रीयेन ही कोई
 अरु त्यों मेरो सुतविधि नही प्यारे
 नही संकर जो रूपह मारो नही प्री
 ये त्यों संकर यण भाई प्री अरु रंग
 त्यों नही साई अरु यौ नही प्रीयमे
 री ममदेह जै सो तुमसो परमस
 नेह तुमसे नक महा प्रीय मेरो
 ताके रहुं निरंत नैरे अरु ई अरु
 हत अरु सीतल हिरदय समनिर
 वे रसबनिपरि सुहिरदय ब्रह्म अक्षि
 देये सब मां ही ब्रह्म विचारत जेपल
 नां ही अरु में ताको प्रथम ही त्यों क

सौ त्रिगुणपासबंधनविसतरौ ॥
 परितकेत्रैसोबलभारी ॥ काटीसा
 यासक्तिहमारी ॥ उष्येतेपरसबत्रे
 गुणतजै ॥ उलटिआयममचरणनि
 भजै ॥ अरुसबसुषताकेवसिरहे
 सोतजिमोहिकछूनहीगहैं ॥ ३९ ॥
 बकुतनकेभवबंधनहैं ॥ नाम
 प्रगटक रमेरोकहैं ॥ तिनतिनदैं
 ममचरणनित्यजै ॥ सदासबतिते
 आपछिपावै ॥ ४० ॥ अहंकारमम
 तानही ॥ अंनै ॥ मोहिछेडिइजोन
 हीजानै ॥ गुणांतीतताजनकेपाहे
 येतनधरै ॥ किरूंमैआछैं ॥ ४१ ॥ सांनि
 कगुणधारीयहदेह ॥ करूंसुछता
 चरणनिबेहानहकंचनतनक
 नहीरक ॥ मोहीसौनितहीअनुर
 क ॥ ४२ ॥ सीतलहिरदेविगतअनि
 मांन ॥ कबहुंकांमचलेनहीबूधि
 मोहिसेयपाईअतिसुद्धि ॥ ४

कि इतै नितिनिस पृहर है ते जनमे
ते जकौ लहै ता सुषकौ सुषजा
इति शोरसकन समकै नही

५५ निस प्रहजन निसृह

अहा वंत के निकटिन आवै॥

अपन के बसिमान व होई ईं ईं टी

इति सके नही को ई॥ ४५॥ परिआ

आन होय मम जब ही॥ विषयक

नर करिस के तब ही॥ विषयसत्रु

मै सकल निवारुं॥ आपमिलां उं

व जय टारुं॥ ४६॥ पावक

सौ ले अ सम होय प्र

जसम॥ प्रग

रेषा पर है ४

मापको

पमोहि सो

ह्यांग॥ बडु

धटा॥ सांधि

वेद पठै देवै

इंद्रियमनवांधे। श्रोरसकलधरम
निकोंसाधे। तोरुमोहिकदेनहीपा
वे। भक्तिमोहिततकालमिलावे।
मेकभगतिमोकोंबसिकरै। हूजेते।
अतिअंतरपरै। पूरा। सरधासहित
करैमसभक्तितासोंमेरीअतिआ
सक्तिमेंब्रह्माआदिसकलकोईस
मोबिनश्रोरसकलअनीस। पूरा।
सोमेंभगतिनकेआधीन। तेमोसों
ज्यो जलसोंभीन। जो चंडालभग
तिमेंआवे। ताहीतननिरमलता
पावे। पूरा। बरणाआप्रमपदबंद
नकरै। तापदरै। गिसीसपरधरै। ती
नूभवनसदाबसिताके। मेरीभग
तिविराजेजाके। पत्र। विद्यापटेध
रमबहुकरै। जीवदयावहुविधि
बिसतरै। सत्यवंतअरुदिहसंतोय
कबहुंकहुंकरै। नहीरोय।
एसहितपूरै। नतप.

यदेहादिकबंधे॥

देजेते॥ सब आचरण करे जो तेते॥
५५॥ परिजो मेरी भक्ति न होई॥ तो नि
रमल नही होवै कोई॥ विनरो मांचइ
वें विनचेत॥ आनंदासु कलावि
ननेत॥ ५६॥ तोलौ साधु भक्ति नही
कहे॥ भगति विनां उर सुधिन लहे॥
इवै प्रेम तैं जाको चेत॥ कबहूरो
वै मेरे हेत॥ ५७॥ कबहू गदगद व
णी होई॥ कबहू ऊंचै गावै सोही॥
कबहू सुधर सुधर सुर गावै॥ कब
हू प्रेम मगन रहि जावै॥ ५८॥ कबहू
निरत प्रेम बसि करे॥ कबहू हसे
गुणनि बिसतरे॥ लोक वेदकी ला
जन जानै॥ ज्यों उन मत सकल यों वा
नै॥ ५९॥ जो ज्ञे सो मेरो जन होई॥ त्रिभ
वन सुधि करत है सोई॥ सकल भव
नके पाप निवारै॥ सकल भवन कौ
सो जन त्यारै॥ ६०॥ जो सैं हेम मलिता है

ई बंके जल मां हि सोईये सोई ल्यो
रुजत सर्व कुत विधि कीजे हेम ही
बहो भक्त सो ही दीजे ही पत्तिके ई
विधि सुधन होई कोटिन जल ठक
रे जो को ई सोई हेम अग्र निरुद्धे
दे करि फूंकत पति अति कडे धर
ताते कोई मल नही तर्क कपले कु
रूप को गहे तौ ही जल न कने बने
कोई परि अज्ञ मानति सनके ई
ई मेरी भक्ति मंनि जब अखे तब
सब कर ममलिन तरे वकडे नि
मल होय तहे निज रूप न के वने
तजे भव कं प हं अजे अने
कि करै मे सुख निरुद्धे तरे
रे अवा एव रतन मय अने
जो जो अरे वा मन नने तब
तौ हिरै दे प्रका मने तरे अने
रे सब अंन वन अने अने
हे निरभय निजाने अने अने

नैननिमां हिरो गजो होई तातें क
बून देवें सोई पुनि ज्यो ज्यो श्रेय
दिहिल गावें त्यों त्यों दिष्ट होत नि
त श्रावें ॥ ६७ ॥ त्यों त्यों सकल वस्त
कों देवें ॥ श्राप ही परम सुखी क
रिले ये ॥ तातें भक्ति रूप दिट्ठं ज
न जातें देवें देव निरंजन ॥ ६८ ॥
जो संसार सुषन कों ध्रावें ॥ सो संसा
र मां हि बहे जावें ॥ अरु जो ध्रावें
मेरे चरणों पावें मोहि मिटे नवम
रणों ॥ ६९ ॥ तातें सब साधन भ्रम जं
नों ॥ स्वपन समां नि हेत करि मां नें
मन क्रम बचन सकल कों त्यागो
नि सदि नम म चरण न अ नुरागो
७० ॥ जेया जु बहे चहें ॥ छिटका
यो ॥ अरु चाहे मम चरण नि श्राये
ते तिन की संगति परे हरे ॥ जे नर जु
वती संगति करे ॥ ७१ ॥ जु वती सुषनि
सु नैन ही श्रवनां ॥ नैन न देवें करे

नगवनां कवक भूतिहिरदेनही
 श्रंनै। मनवचिकरमनिरंतरं
 ७२। श्रेसोबंधनकहोनहोई॥
 कोटिनसंगकरैजोकोई। जैजै। श्रि
 तश्रुजोषितासंगी॥ बंधनकरै
 होतपरसंगी॥ ७३। तातैतिनकेसं
 गहीतजै। सावधानममचरणनि
 नजै॥ निरनयवोरकरैश्रसथान॥ मो
 विनुसंगतजैसबश्रान। ७४। मेरो
 ध्याननिरंतरकरै। प्रेमसहितहि
 रदामेंधरे। कृष्णवचनसुनिहिरदे
 राये॥ उद्धवश्रोरप्रह्मकौभाये॥ ७
 ५। उद्धवउवाच॥ हेप्रभूतुम्हैकौण
 विधिध्यावैकौनरूपमेंचित्तलगा
 मैतोमुक्तिसेईतुवचरणं। परिजो
 हेमिदयोमरणं। ७६। कृपासिं
 संकरुणंकरो॥ ध्यानजोगवांणी
 सतरो। सुनिउद्धवनिजजनकी
 तबप्रीहरिजीश्रापबध्यानी॥ ७७।

श्री नगवान उवाच ॥ मेरो रूप जोग
तजान ॥ जोग बिना नही उपजे जां
न सब साधन को साधन भूप जीव
ब्रह्म को होय सरूप ॥ ७७ ॥ उचवते
कौंध्यां न सुनांउं ॥ जोग सहित सब
अंग वतांउं ॥ जोग सहित सोध्यां न
ही करै ॥ तो मन बेगै रज ही परिहरै
७८ ॥ सम आसन में अस्थिर होई जं
घन पर रावै कर दोई ॥ देह समां नि
चले नही डोले ॥ नासा द्विष्टिक ब
नही बोले ॥ ७९ ॥ इडा पूरि कुं न क
थिर धारै ॥ पुनि रेचक पिंगुला निर
सारै ॥ बकु सौ पुरि पिंगुला द्वार ॥ इडा
निसारै बारंबार ॥ ८० ॥ मेरो है तहिर
दा में धरै ॥ ईं डी यन्न रथ सकल प
रहरै ॥ उचव द्वै विधि जोग कहवै
ता नेद ही सत गुर तै पावै ॥ ८१ ॥ मं
त्र सहित सोनां मस ग्रभ ॥ मंत्र बिना
सोक ही ये अग्रभ ॥ तातै जोग सग

सेनांमासोउतमहेप्राणंयांसा॥८३॥
पूरेरायेरेचककरैकंकारमंउर
रधरेघंटानादतुल्यउरधावे॥ता
सोमिलिकैप्राणचलावे॥८४॥योत्रि
कालत्रभ्यासेकोशीप्राणमांसती
मेंधिरहोईवकुसौंइदेकंवलकं
धावे॥अष्टपांयुरीसोविगमावे॥८५॥
उंहेसुषतैंउरठैकरैतांकेसपिस
रजिहीधरै॥सूरजिमेंप्रणमसिआ
ए॥सिसमेंअनलतेजमदपाना॥८६॥
ईअनलमधिमसूरूपहीधावे॥त्रि
मप्रीतिसोमनहीलगावे॥अंगुष्टस
मानिचत्रुभुजरूपीअतिसीतलसु
यदंनेअमूर्प॥८७॥नोतनसजलमे
यतनसोमासडित्तुल्यअंबरन
धिंममेदहातिसोभानिधिअंन सु
नमकराकृतकुंडलसुनकांनन
पकंठकोस्तुमसनि
अदृशतालचिनवि

रुचक्रगदाञ्चरुपदम॥हस्तच्यारि
ह्रसोभासदम॥८॥हेममुकटही
रामणिजस्यो॥अतिसोभायमान
सिरधस्यो॥भालितिलकञ्च
वरनैन॥भक्तिप्रसादसुधाको
न॥ए०॥करकंकणञ्चंगदमुद्रि
का॥पगनंपरकटिमैचुद्रिका॥
ञ्चकुसवज्रधजाञ्चरैविंद॥चि
चरणदहेड्यदं॥ए१॥नयमणि
गणञ्चतिप्रभाप्रकास॥उरञ्च
नञ्चधतमनास॥शौरसकलञ्चंग
निबहुनूषण॥जिनकेध्यानमि
सबहूषण॥ए२॥बैसकिसोरप्रम
मुकुमार॥नयसषध्यावैवारंवा
चरणनितैप्रतिञ्चंगहीध्यावै
गहेयेकहीछिटकावै॥ए३॥यूँले
नयतेंसियाप्रयंत॥निसदिनहिर
ध्यावैसंत॥शौरवासनांसवपर
रेमेरेरूपञ्चडेगचितधरे॥ए४॥या

कोई १०००॥ ब्रह्मरिभूगनिही मां हि
समावे ॥ तब ही पतंगानां मगमावे ॥
श्रेयसै श्रातम ब्रह्मविचारै ॥ येक जां
निकै हैत निवारै ॥ १०१ ॥ श्रेयी नांति
विचार ही करते ॥ निस दिन ब्रह्म
मां हि मन धरते ॥ त्रिगुणाकार सक
ल नरम भागै ॥ होय ब्रह्म सो वत
सो जा गै ॥ १०२ ॥ हो करि ब्रह्म ब्रह्म
मिति जावे ॥ जहां उं लें ब्रह्म स्थान
ही श्रावे ॥ श्रेयी विधि ब्रह्म उ य निव
है ॥ मेरो निजानंद पद त है ॥ १०३ ॥ वे
ह्य ये पैं डो तो सों कहौ ॥ जा करि हरि
पुर जाय ॥ परिया मै विघन श्रनेक
है ॥ ते नावों समुजाय ॥ १०४ ॥ इति
जागवते महापुराणे येका दस स्व
दश्री भगवांन उ उ व संवादे च
रदसो अथाय ॥ १४ ॥ ११० ॥ श्री
भगवांन उवाच ॥ चैपरी ॥ उ उ व जे
पंथ समुजां ऊं ॥ ता मै ब्रह्म ते विघ

जो ईश्वर प्रणही बांधे

भ्रमणनौ चितता कौ सिधिवि
पन है नित। जो तिन सिधिन कौ परि
है सो मम चरणनिकौ अनुसरे
कतिन सौं कब ही रहै नु नाई सो स
रम सकल वृथा ही जाई जैसे क
समचन मन धारि उठवकी नी प्र
सधि चारि अ॥ उठव उवाच के प
र करधार एत देवा अरु सिधिनिके
के विधि नेवा। तिनके नाम कृपा क
स्कि हो। जो गतिके विघनन कौ द
हो धातु वन्नाधीन सिध्य है सकला।
तुम्हरी कृपा होय जन अकल। उठ
व प्रसहिर दै मै धारी। तब बोले गो
पाल मुरारी। पू। श्री नग वांन उवाच
उठव सिधि अष्टादस कहिये। मम
धरण कस्ति जे लहीये। तिनमें अष्टा
सधि प्रधान दसमधि मते क सं न सं

कोई १०००॥ ब्रह्मरिभ्रगनिहीमांहि
समावे॥ तबहीपतंगानांमगमावे॥
श्रैसैश्रातमब्रह्मविचारै॥ येकजां
निकैद्वैतनिवारै॥ १०१॥ श्रैसीनांति
विचारहीकरते॥ निसदिनब्रह्म
मांहिमनधरते॥ त्रिगुणाकारसक
लनरमभागे॥ होयब्रह्मसोवत
सोजागे॥ १०२॥ होकरिब्रह्मब्रह्म
मितिजावे॥ जहांउंलेंब्रह्मस्थान
हीश्रावे॥ श्रैसीविधिब्रह्मउपनिद
है॥ मेरोनिजानंदपदत्तहै॥ १०३॥ हो
हयैपेंडोतेसैंकहौ॥ जाकरिहरि
पुरजाय॥ परियामेंविघनअनेक
है॥ तेभायोंसमुजाय॥ १०४॥ इतिश्र
भागवतेमहापुराणे॥ येकादसस्कं
दश्रीपगवांनउद्भवसंबादेचतु
रदसोअध्याय॥ १४॥ ११०॥ श्रीम
यज्ञोपनिषत्सु॥ चैपई॥ उद्भवजोग
संभ्रमसंभ्रं॥ जासैंब्रह्मतेविघन

बतों कं॥ जो ईश्वर मन प्राण ही बांधे
सा बंधान छे जोग ही साधे॥ शमो नै
धरे अपनौ चित॥ ता कौं सिधिवि
घन है नित॥ जो तिन सिधिन कौं परि
हरे सो मम चरणनिकौं अनुसरे
शतिन सौं कब ही रहे लुभाई सो स
रम सकल वृथा ही जाई जैसे क
मवचन मन धारि॥ उठव की नी प्र
मविचारि॥ उठव उवाच के प
रकार धारणं देवा॥ अरु सिधिनिके
के विधि नेव॥ तिन के नाम कृपा क
रे कहो॥ जोगनिके विघनन कौं द
शो॥ धातु वन्नाधीन सिध्य है सकला॥
गुहरी कृपा होय जन अकल॥ उठ
व प्रसन्न हिरदै मै धारी॥ तब बोले गो
पाल मुरारी॥ पू॥ श्री॥ भगवान उवाच
उठव सिधि अष्टादस कहिये॥ मम
रणं कस्ति जे लहीये॥ तिन सैं अष्टा
धि परधान॥ दसम धिमते करुं बयां॥

ई जाते देह रूप नृण होई कि
कूं न हो श्रावण कोई नृणिमां
मसिधिये जांनों म्हा मोहनीमा
पामांनों ७ जोतन करे महाबिस
तार जहांतहां कछु वारन पार म
हिमांनांमसिधिसोकहीये कवल
मूलिनताकें गहीये ८ जोया देह
नृत्तिलघूकरे मुष्टिनश्रावेदिष्ट
नपरे सोयहलघुमांसिधिकहावे
ममजनयाके निकटे नश्रावे ए
जेजेई प्रीय भोगनकरे जहांतहां
कछु विषयनपरे तिनसब भोग
निताकरिलहीये प्रापतिनांमसि
धिसोकहीये १० येकठोरकूबेवेर
हेदेयेसुनैसकलकीकहे ताहि
गोचर रहनकाई सोप्रकासिकसि
धिकहाई ११ ई प्रीय देह बृद्धि
प्राण तिही लोकजनको अस्थां
निनकोओं पूरे लो जांने ताहि

रतासिधिव्रतानैः १२ विषयसुख
 निकोंकदेगहै। जातेअतिअंन
 तरहै। नामअवसितासिधिकहा
 वे। मेरोनक्तिनिकठिनहीजावे॥
 १३। जोजोअच्छामनमेंलयावे। सो
 सोसकलपलकमेंआवे। वसिता
 नामसिधिहैसोही। मेरोजनआदरे
 नहींकोई। १४। अष्टसिधियेअतिप
 रधान। यनतेंमधिमनायोंअंन। त
 नकेगुणव्यापेनहींकोई। नामअनु
 र्भिकहीयेसोई। १५। हरिअवणसुए
 सबवेना। हरिइसदेयेसबनेना। म
 नकेवेगमैनेजबध्यावे। कामरू
 पबडरूपबनावे। १६। परिकेतनमें
 करैप्रवेशासिधिछठीपरकायाप्र
 वेसा। निजअच्छातेंतजैसरीर। सोख
 छंदमृत्संहेवीर। १७। मिलिअपसर।
 नविचरेदेवा। देयेतिलहीलहैनिजदे
 वा। सोसुरकीडाइररुतं ..

फल हैं क दे न ग ही ये ॥ १४ ॥ जो संक
 ल्प करै सो होई ॥ यथा संकल्प
 ये सोई ॥ जहां गयो चो हेत हां जावे
 अ प्रतिहत गति सिद्धि कहावे ॥ १५ ॥
 ये दस मिलि अष्टादस कहाये ॥
 और पंचतुच्छ न हिये गहीये ॥ ब
 रत मान अरु नूत भवधि ॥ सब
 कछु जां नै लख्य अलख्य ॥ २० ॥ य
 हे सिद्धि त्रिकाल गपान ॥ आगे सि
 धि बंधानों आंन ॥ सीतल नुसन
 आदि कजे हं द ॥ तिन ही निवा
 रे रहे अ हं द ॥ २१ ॥ विष अरु अग
 स्तर जजल धं भा ॥ जातें होवै यि
 सो अ चं भा ॥ प्रतिष्ठा सो सिद्धि कहा
 वे ॥ हरिजनता के निकटि आवै ॥
 २२ ॥ वे अष्टादस अरु ये पंच ॥ मि
 लते ईस सकल परपंच ॥ ये में मू
 लरूप उ चारी ॥ साया ब कुत नही
 विसतारी ॥ २३ ॥ मम धारणां क देत

श्रावै। योगीनकंबुविधिविचला
वे। जोतिनतैविचलेनहीकवही॥
तोममचरणनिपावैतवही॥ २४। जा
धारणाकृतैजोश्रावै। जैसेंजोगीकं
विचलावै। सो। सबउह्वतोसोंक
हूं। जोगपंथकेविघननिदहें। २५।
सगुणरूपजोकच्छ्विसतारा। सो।
नां। विधिरूपहमारा। ताहिताहिमा
हिमनल्यवै। तैसीतैसीसिधिहीपावै
रही। संबदसपरसरूपरसगंधामंच
भूतकेसुषमबंध। तिनमेंजाजामें
मनलावै। ताताकेरूपहीमिलिजा
वै। २६। महतनुमेंमनहीलावै। पंच
भूतसायाकरिध्यावै। जाजासायामें
मनधोमें। तहांहीतहांमनदेहवधा
वै। २७। पंचभूतकेजेपरमांनुं। तिनमें
जोगीधारेध्यांनुं। तातासमेंलघुदेह
हीकरै। काकूसंककुंगह्योनपरै। २
८। सांत्तिकश्रहंकारमनधो

मेरोरूपविचारै। तत्रजेईश्रीयनेग
न्यकरै। ब्रह्मतमंतिविषयनविस
तरे। ३०। तेतेसुषयेजोगीपावै। सो
वहप्रापतिसिधिकहावै। मेरोसूत
ररूपमनञ्जानै। तातेंत्रिभवनकी
गतिजानै। ३१। ज्योकरदीवालेघर
देषे। योंत्रिभवनञ्चरणपेधे
मेरोकालरूपमनधारे। सबव्या
पकसबईसविचारै। ३२। तातेंसि
द्धिसतापावै। त्रिभवनजानै। यों
वरतावै। जहीसोंजोहीकरवावै
ताकेअंतरत्योंउपजावै। ३३। अ
दिपुरयसोमेरोरूप। तामेंधारेचि
तअनूप। तातेंसिद्धिअवसथा
पावै। विषयनविनअनंदबटा
वै। ३४। निरगुराब्रह्ममंहिमनधा
रै। सबकरतासबईसविचारै। ता
तेंवसितासिद्धिहीलहे। सोहीसोप
वैजोचहै। ३५। सुधसत्वमयमोहि

विचारे। तामें जोगी मन कंधारे। ता
 ते सुद्ध आ पकू होई। घट उरमी न
 व्यापे कोई। र्ह। गगनि आधार प्रा
 ण मन धारे। सब दरूप उरमां हि
 विचारे। तब जहां लगे पवन आ
 कासा। सुनें तहां लौं वचन निदा
 सा। उपा ने न नमें सूरजि कंधारे ॥
 अरु सूरजि में नें न विचारे। अ प
 रि। उं मो हे कौं लेये। तब सो तिहं
 लोक कूं देये। उपा पवन सहित मो
 में मन धारे। जहां तहां मम रूप वि
 चारे। अ सें मन कौं जहां चलावे। म
 न के बेग जहां ही जावे। उपा सो रे मे
 रो रूप विचारे। तिन ही तिन में कौं
 धारे। चाहे नयो रूप तब जोई। बार
 न लागे होवे सोई। धवा कस्यो प्रवेस
 ही चाहे जा मे। ध्यान आपनों अने ता
 में। तब तात न में जावे अ सें। अंग फू
 ल ही मां ही जें सें। धश मूल

बंध लगावै। प्राण चलायसी समें ल्या
वै ब्रह्मरंद्र होय गवनिही करै। जो
मन होय ताहि अन्नू सरै। ४२। सुरग
देव सुरबनिता ध्यावै। तब ते सहित
बिमांन ही अश्रवै। ता योगी कौं सुष
उपजावै। सो जोगी अन्नंद बधावै। ४
३। जो जो बस तु हिरदा में धारै। ता ता
को प्रभू मोहि विचारै। सो ही सो पा
वै तत काल। जब ही चाहे काल अ
काल। ४४। सकल नियंता सब को
ईस। नित स्वाधीन सकल को सीस
जोगी अश्रै। सो कौं ध्यावै। ता की अन्न
न को ई मिटावै। ४५। ग्यान रूप सब
अत्र जांमी। ध्यावै मोहि सकल को
स्वामी। अत्र पनी जां नै जनम मरण
की। ग्यान अत्र काल रु सब के मन क
४६। प्रकृति गुण नितै न्यारो जां नै।
अरु तिन कौं स्वामी करि मां नै। ध्या
वै मोहि सदा अहं द। तब को ई न ह

व्यापेहं द॥४७॥सबमें व्यापक सक
ल अतीत ॥ लिपेन सूर अगनि ज
ल सीता असें मो कौंध्यावे जोड़ी ॥
सो लघि ए पावे तोड़ी ॥४८॥ जो मेरे
अवतारने ध्यावे ॥ शायुध छत्र च
वर मन लावे ॥ ता कंक कंन पराज
य होई ॥ सब दिन मां हि विराजे सोई
४७ ॥ यो धारण करे मम जोई ॥ सिधे
न पावे योगी सोई ॥ परिये अंतरा
य है सारे मेरे न न ह रि निवार ॥
५० ॥ मो तै ये इन तै में नां ही ॥ ता तै मप
जन निकटिन जांई ॥ मोहिन लहे
जे इन ही लै वै ॥ मोहि न जै तिन कुं ये
से वै ॥ ५१ ॥ मोहि सो उ तपनि सब ही
की मैं प्रतिपाल करूं तिन तिन की ॥
मम आधीन सिधि अरु जोग ॥ सांघि
रुग्यां न धर मधन भोग ॥ ५२ ॥ सब की
जीवन सकल को स्वांसी मैं सब हि
न को अंतर जां मा ॥ स

नंदः विष्णुं न प्रकासी ॥ अदिन अ
तम धिन ही जाको ॥ कोई नेद लहे
न ही ताको ॥ १ ॥ तुम ही सकल जगत
उपजावो ॥ तुम प्रतिपालो तुम टि
न सावो ॥ तुम सब वाहरि अरु सब
मां ही ॥ सदा अलिपति लियो कं
नां ही ॥ २ ॥ जहो तहां तुम ही होये क ॥
ये सब भरम जो अष्टि अनेक ॥ हे ७
भूये जग अति विसतारा ॥ ऊंच रु
नीच विबधि प्रकारा ॥ ३ ॥ अरु या जी
व सति करि मां न्यो ॥ विषय न सो व
हुं नांति वंधां न्यो ॥ याके ये क अष्टि
केयो आवे ॥ कैसे सकल ब्रह्म को ध्या
वो ॥ ४ ॥ पां नवं तनु व जन हे ते ते ॥ ब्र
ह्म अष्टि देष त हे जे ते ॥ ताते तुम अ
व करुणा करो ॥ निज विभूति मा
सो विसतरो ॥ ५ ॥ तिन में देखि सब
निमें देखे ॥ तब अहे तब ब्रह्म करि ले
यो ॥ मुनि उह व के उत सर्वे ना बोले

हरिजीकरु... श्रेण ई

उद्धव प्रश्न मनी तु
मकानी ताते परै ब्रह्म गति ची
नू। यह प्रश्न श्रुत ही करी
तामों में जा विधि उचरी ७ ताही
विधि श्रुत तो हि सुनां ऊं श्रे में ब्र
ह्म प्रष्टि उपजां ऊं के रव श्रुत
उव करयेत जब ही जुरे मारथ
के हेत ८ तब श्रुत न के रव सब
देये सकल बंधव श्रुत ने करि ले
ये यन सब हि न कों जो में मारें
आप ही आप न रक कूं डारें ९
श्रे सा विधि श्रुत न्यो श्रुत हंकार आप
ही मां न्यो मार नहार तब में ता हि
श्रुत न समफाये ताको सब श्रुत
न मिटाये १० प्रश्न करी श्रुत न
तब श्रे सी तुम्ह मो सों की ही हे जे स
ताते उत्तर कों उचरें या विधि ब्रह्म
प्रष्टि कों करें ११ उद्धव में सब हि न

कोत्सामी अरु सबहिनको अत्र
जांमी अाप फुते सबको उपजां उं
सबपेधौं सबको बरतां उं ॥१२॥ स
कलरहे मेरे अधानां मोही में स
बहोवेलीनां ताते सबमें हुजानां
हो अो बिभूति जां नूं मननां ही ॥१३॥
परिते सो वसेय करिक कलतिरी
हंत इहिको दहं सवरथिकनि
माहि रथिकति नमें कालसक
लमें रथिक ॥१४॥ सोमें प्रकृति त्रगु
एक अदी पंचभूतमें भूता
दी सुतरसकल वेदनमें जां नों
बडेन माहि महंतत्वही मां नूं ॥१५॥
सबसुष्यमति माहि जीवदेयो ॥
सबइरजजन माहि मनलेयो वि
दजगपनमें ब्रह्मा जंमौं ॥ ऊंकारा
मंत्रनिमें पां नें ॥ १६ ॥ तं वि माहि
गायत्री लक्ष्मी अकार अचरके
धिरंदा सबदेविके मधि पूं द्या ॥

सकलवसुनिमैमैवैसंदर॥१७॥ली
नकंठयेकादसहरमैविष्मनांमहा
दसदिनकरमैतिनमैचृगुजेसपत
म्हारिष॥तिनमैमनूंजेसबैराजरि
ष॥१८॥देवरिषनमैनारदजांनौकं
मधेंतेधेनिमैमांनौ॥सिधनमैमैक
पिलसरूप॥पंथिनमांहिगरुडम
मरूप॥१९॥प्रजापतिनमैमैकंदा
धि॥तिनमैमकरजहांलौमैधि॥वा
दनमैश्रध्यातमवाद॥सबन्त्रसुर
निमैमैप्रह्लाद॥२०॥सबपरका
सकमांहिदिनेस॥जधिरधिगण
मांहिधनेस॥तिनमैसोमसकलजे
उडगैण॥सबधातनमैमैकंकचन॥
२१॥गजनिमांहिमैगजश्रहरावत॥
मैन्नंगैजेसिधियुपजावत॥तहां
वरुणजेसबजलजंत॥नागनमैमम
रूपसूनंत॥२२॥नरनमांहिसगरूप
नरेस॥अपनमैवसिकपरवेस॥क

वैश्रवाह्यं नमैः जानौं। इन्द्रधर नतिनः
 मंजममानौ। २३। सकलमृगमैमैमृ
 गरौज। सरैतनिमैंगंगासिरताज सर
 रबश्राश्रमनिमां हि सन्यासावरण
 निमां हि विप्रममवासा। २४। सकल
 सरनमैरूपसमुद्र। सकलधनुक
 धारिनमैरुद्रमैरुंधनुकश्रायुध
 नमांही। परमनिवासमेरुतेनांही
 २५। जेअतिगहनहीं मालयतिन
 मैमैपीपलसबबनासपतिनमैमै
 परोहतमां हि बसेष्ट। तहांवरहस
 पतिजेब्रह्मसिरेष्ट। २६। सैनापत्पन
 मां हि सैनानी। धरमप्रवृत्तिकंब्रह्मा
 जानी। सकलश्रवणदिनमैजव
 गोहिजानौं। पितरनिमां हि श्ररज
 मांमंनौं। २७। ब्रह्मजगपसबजगपन
 मांही। बरतश्रुहसमिकोनांही
 द्वाष्टश्रुगतिजलसूनिवांनी। श्र
 समनयेषटसोदिकजानी।

तुरहेह न्यातमाविचार॥ ब्रह्मचा
 रीनमैसंतकुमार॥ असत्रीनमैस
 तरूपांराणी॥ पुरषनमैस्वायंभू
 मनूंजांनी॥ २५॥ सावधानतिनमै
 संबैतसर॥ अत्रयवोरतिनमैउर
 अंतर॥ मैहंधरमन्त्रमयकोदां
 नगुह्यनहीप्रीयेमौनिसमांनि॥
 ३०॥ तिरियापुरषसंयोगीजेते॥
 ब्रह्माकृतेंउरेंसबतेते॥ सकलवं
 नरनिमैहनवंत॥ कृतिनमांहिम
 मरूपवसंत॥ ३१॥ मारगसरमांसनि
 मैजांनो॥ निषत्रनिमैअज्ञाजितमां
 नो॥ देवतनअसरहितजेहंइ॥ क
 मलैकोससबहिनमैसुंइ॥ ३२॥ जु
 गनिमांहिसतजुगसेनांमाविदन
 मांहिबेदमैस्यांम॥ व्यासनिमांहि
 व्यासहैपायन॥ तिनमैतुमजोवि
 स्मपरायन॥ ३३॥ कलिनमांहिक
 विष्णुकहीजांनो॥ अहिवंतमम

महतनमानौं विद्याधरतिनमां हि
सुदसन। पद्मरागतिनेमैजेमनिग
न। ३४। सबत्रणजातिनुमैकुसजा
नौं। होमवस्तुमैगोघृतमानौं। तिन
मैधनजेसबबिवसाय। जयमारग
सबतिनमैन्याय। ३५। त्रंगसमाधि
योगत्रंगनिमैमैहौंक्षमांक्षिमांवं
तनमै। धारजमैहौंधीस्जवंतामैव
लतिनमैजेबलवंता। ३६। छलनि
मां हि छलमैहौंजूप। मेरेहेतिकर
मममरूप। वासुदेवसंकरधनवी
र। प्रद्युमनरुद्रनिरुधसरीर। ३
७। नारायणहयग्रीवमहीधर।
नरहरिन्द्ररुजमदग्निपुत्रवर
ब्रह्मरचनमैपूजाजानौं। वासु
देवतहांमोकमानौं। ३८। तिनमै
धिरताजेसबभूधर। पूरवचितनां
ममैन्द्रपसरामैहंविष्णाकसुगंध
व। धरणांमां हि गंधमै

रसजलमांहीसबदशाकासरि
वससितारनिमेंपरकासतेजस्व
नूमेंपावकजांनो॥विप्रभगतिनि
मेंबलिमांनो॥ध०॥बीरनिमेंअसु
नबक्रमांनो॥उतपतिअसथित
मोतैकरिजांनो॥ईडीयमनबुद्धि
दिकजेते॥मेरीसकतितैवरतै
तेते॥ध१॥सबहिनहैसबअरथ
निगहों॥तेजडतिनमेंचेतनरहों
सबदसपरसरूपरसगंध॥तिन
तैपंचभूतसंबंध॥ध२॥ईडीयम
नमहतत्वअहंकार॥त्रिगुणसहि
तयेप्रकृतिविकार॥प्रकृतिरूप
रसजहांकबुजेतो॥मेरीरूपसक
लहेतेतो॥ध३॥मोबिनककंक
कक्षेनांहीमेंहीप्रगटरह्योसबमां
ही॥जोप्रमाणकरोंमेंकबही॥तो
तिनपारहीपांउतबही॥ध४॥परिम
मनिरमतजेब्रह्मंरु॥तिनकौगिन

तपरे मही यें डाता तें कहौ विभूति
कहां नौ ॥ जो कछु मेरो रूप तहां नौ ॥
४५ ॥ अरु अब युगति विभूति ही क
हूं हेत दिष्टुं त्रैसी विधि दहौं ॥ ल
जाते जज्ञ मां धन दां न ॥ सुंदर तीयी
स्वरजरु ग्यां न ॥ ४६ ॥ बल सो भाजरु
धीरज जहां ॥ मम विभूति जौ नौ तहां
तहां ॥ ये विभूति तो सौं कछु कही ॥
अति अपार कहि वे कों रही ॥ ४७
मन धिर काज करण ये जौ नौ ॥ यह
अपान कदे मति मां नौ ॥ ईं डी य बु
धि देह मन प्रां न ॥ निश्चलं करि देयो
भगवां न ॥ ४८ ॥ मन ते सब आकार
उतारो ॥ चेतनि मेरो रूप बिचारो ॥ ये
कअंधित जहां तहां सो ईं ॥ आपा
पर हू जान ही को ईं ॥ ४९ ॥ त्रैसो जां नि
ब्रह्म कौ पावो ॥ ब्रह्म ही पाय जगत न
ही ॥ आवो ॥ अरु तन मन ईं डी य अरु
प्रां न ॥ धिर करि जिन जिन धस्यो मम ध्यां

न॥५०॥ ताकेबहुतनांतिश्राचरनां
जपतपदानवरतादिककरणां
काचोकलसभस्योजनजैसें॥पल
पलसरवीजावैसबतैसें॥५१॥ ताते
वचनकायमनप्रांन॥सबकौंब
धिकरैममध्यांन॥मोहिध्यायमोमं
हिसमावै॥तबसंसारमोहिनही
श्रावै॥५२॥ दोहा॥ जो उध्वतोसों
कह्यो॥येविभूतिकोग्यांन॥त्योंही
सुषिमस्थूलसब॥देयोश्रीभगवांन
५३॥ इतिश्रीभागवतेस्वापुराणे ये
कादसैस्कंदेश्रीभगवद्उध्वसं
वादेविभूतिकथननांमयोडसो
अध्याय॥१६॥१२१६॥श्रीशुकउवा
च॥चोपई॥दासनिमेंउध्वनिजद
स॥जाकेहिरदैग्यांनपरकास॥तिन
जीवनकीहितमनधरी॥तातेंप्रस
कृष्णसोंकरी॥१॥उध्वउध्वच॥प्र
तुमकलपश्रादिउचाह्यो॥भक्ति

निमतिधरमविसतास्यो। वरणाश्र
मन्त्रादिकनरजेते। तिनिधरमनि
सोलागेतेते। २। तिनमैकोईनगति
हीपावे। कोईकरमसिंधुबहजा
वे। तातैतुमकरुणांमयदेवा। भा
यो नरधरमनिकोनेवा। ३। करम
करतज्योउपजेनकी। तुमरेचर
नबदेअनुरकी। छूटेकालजाल
भवकुंपालहेतुहारोब्रह्मसरूप
ध। जद्यपिपुनिविधिसोविसतास्यो
जबप्रभूहंसरूपतुमधास्यो। परि
बहूकालकहेतेभयो। तातैधरम
लीनठेगयो। ४। हेंकछुओरक
हेंकछुओर। तातैजीवनपावेवो
र। तातैतुमकरुणांकरिभायो। व
देजाततेजीवनरायो। हेअरुयह
तुमहीजांनोदेवा। तुमबिनहूजो
दननेवा। तुमहीकहामुनोउरधरो
तुमहीरा। योतुमहीदिसो। ७।

हकीसनामंकारी॥ वेदजहांनिति
 मूरतिधारी॥ तहांहूयहकोईन
 हीजांनै॥ त्योंबंधेत्योंसबैबघांनै
 ८॥ अरुयेकैसैकरिमनआवे॥ क
 रमकरेतैभक्तिहीपावे॥ अरुतुम
 याहीकौंतनधारो॥ जातैनिजधरम
 निबिसतारो॥ ९॥ जोबैकुंटपयां
 नोंकरिहो॥ येनिजधरमनहीउच
 रिहो॥ तापीछेकोईनहीकहिहै॥
 येनिजधरमगुपतहीरहिहै॥ १०॥ ता
 तेंअबतुमकरुणांकरो॥ यहनिज
 धरमबैगिबिसतरो॥ जैसेसुनिउह
 वकीवांनी॥ आपनबोलेसारंगप
 नी॥ ११॥ श्रीगणेशंनउदाच॥ धम
 धमउहवजनमेरे॥ हूजोनहीबरा
 बरितेरे॥ मेरोनिजजनकहीयेसोई
 हेतपरायेवरतैजोई॥ १२॥ तातैतुम
 परकारअकस्यो॥ मोतैपरमधरम
 बिसतस्यो॥ उहवपरमधरममम

नकी। और सकल तै करै बिरकी ॥
१३। भक्ति बिना जो कोई धर्म ॥ सो स
ब जानो परम अर्धर्म ॥ जब में प्रथ
मकीयो संसार तब नहिं कृतो कर
म बिसतार ॥ १४। जे ई जे मानव तन
धरे ॥ मोहि से यते ई ते उ धरे ॥ छि क
स्य कृत्य लहे म मं धां मां ॥ ता तै सो क
त्य जुग से नां मां ॥ १५। ऊंकार रूप ल
ब बे व ॥ त्रै से क क कृते न ही ने द ॥ स
ब ई शीय मन निश्रु ल करै ॥ मे रो ध्या
न निरंतर धरे ॥ १६। त्रै से सब पाप नि
मर हरे ॥ सब मेरे चरन नि अनुसरै ॥
त्रै ता विषे भये मति मं द ॥ विषय न
तै मां नो आनंद ॥ १७। नित नि मति व
कृ उ दि म करै राज स तै पाप नि बिस
तरे ॥ तब तिन हेत बे द बिसतारे ॥ व
कृत भांति के कर म नि वारे ॥ १८। वर
ण प्रस के ने द उ पाये ॥ नारे नारे कर
म ग्राहये ॥ अप नो धर म ता गि जो करै

सो नर जाय नर कमें परै १७ ॥ ३ ॥ सैं व
कुविधि नये दिषायो घोरै कर मनि
में ठहरायो तामें भाष्यो ज्ञात मभ
जन मो बिन प्रार क र म को त जन
२० ॥ बकु खौ बकु शारं न न च है ॥
राज स तैं न ही निश्च त्तर है ॥ तिनके
हेत ज ज उ प जायो ॥ बिस्म रूप क
हि सब नि सु नायो २१ ॥ बिस्म ज ज न
की जे ता मां ही है त प्र ष्टि ज्ञा नि जे न
हैं ॥ मं सु य क तैं वि प्र उ प जायो ॥ च त्री
वा क्क ने क तैं बनायो २२ ॥ जं घ नि
बे स प द नि तैं सु द्रा पह नी चै श्री रै
स व च्चु द्रा पु नि ग्र ह स्थ जं घ न तैं
कीयो ॥ ब्र ह्म च र य उ र सं भ व ती
यो २३ ॥ ब क्क स्थ त्नु उ प ज्यो व न व
स ॥ म स क क क तैं र चो सं न्या स ॥ ता तैं
स क ल पि ता में ये क ॥ मो तैं नु प जे स
क ल ज्ज ने क ॥ २४ ॥ ता तैं मो हि मे टि
जो करै ॥ सो सो सब बंधन विस तरै

जाजा अंग फु तें जो उपज्यो। त्यों त्यों ता
को लषिण निपज्यो। २५। कुंचे अंग
फु तें जो कुंचो। नीचे अंग फु तें सो न
चो। तिनके व फु विधि भये सुभाव
ता तें उपजे नां नां भाव। २६। समदस
सत्पषिमां संतोया। सदा दया लन उ
पजे रोय। तप अरु सोच निमृत म
म भक्त। इन लक्षण निविप्र अतुं
रक्त। २७। क्षमा तेज बल उदि मधी
र। सर उदार अचलगंभीर। विप्र
भक्त मेरो दिट भावाये चत्री के भ
ये सुभाव। २८। बुद्धि आस्ती कै दान
अदंभ। विप्र भक्त उदि म अरं भ
वै स नमो ली न्हे ये लक्षण मंद बु
द्धि फिर महा विचयण। २९। गाई रु
ति हं बरण कों से वै। तिन तें कच्छल
हे सो ले वै। सत्प संतोष कपट ता
नां ही। ये लषिण सुइ निमां ही। ३०।
मिथ्या वाद अरु सोचि अरु चोरी। बु

हिनासत्तिकहिरदैकठोरी॥ कांमक्रो
ध्रुत्तरुलोभविकार॥ वरणनीच
केयेपरकार॥ ३१॥ कांमक्रोधमदत्र
स्मारहित॥ सत्यक्षिमांपरस्वारशू
सहित॥ जीवदयान्तरुत्तजेन्द्रधर्म॥
योसबकोसाधरणधर्म॥ ३२॥ ब्रह्म
चरयकेधरमहीकहं॥ तातैभक्ति
उपाईचहों॥ विप्रखत्रीवैस्पत्रिव
रण॥ इनकौंसकलवेदविधिकर
ण॥ ३३॥ प्रनाधानादिक संस्कार॥
तिहंवरणकौंये आचार॥ जबतै
बहु रिजनेउपावै॥ तबतैगुरकेनि
कटिरहावै॥ ३४॥ बहुविधिगुरकी
सेवाकरै॥ वेदपठैअरथनिउरधे
जनेउमेषलाकरजपमाला॥ डंड
कमंडलअरुमरगछाला॥ ३५॥
दंतबस्त्रतनमत्ननिनिवारै॥ सीस
जटाहस्तनिकुसधारै॥ आसनचंच
लकदेनकरै॥ लोकवारताहिरदे॥

नधरे उही सुत्रपुरिय...
होसरुजप...
मैव...
कह...
द्व...
ही...
व...
करि...
रे...
वि...
करा...
ल...
गुर...
ध...
य...
र...
ज...
श...
ग...

तजात॥ भोजनसें नराति प्रभाति॥
 ध२॥ नीचे भांति गुरु सेवा करे॥
 अंजुलि सोपी छे अनुसरै॥ ज्येसे
 बरत अष्टांडित धारै॥ मन हूं मैं न
 हिं भोग विचारै॥ ध३॥ ज्येसे गुरु कु
 ल बरतै सो ई॥ जो तन गि वेद समा
 पत्त होई॥ पुनि ब्रह्मा के लोक ही
 चाहे॥ तो ग्रह स्थान ही संवाहे॥
 ध४॥ गुरु कौं देह समरपण करै॥
 वेद विचार हिर दे मै धरे॥ गुरु अरु
 आप अगति सब मांहीं॥ सेवै मोहि
 अवर कछु नांहीं॥ ध५॥ जुवती
 अरु जुवती नुंके संगी॥ इनको क
 दीन होय प्रसंगी॥ दरस परस बा
 नी परिहास॥ त्यागे हरि मांति अति
 त्रास॥ ध६॥ सोच अच मन अरु
 असनांन॥ संध्या पास नगत अति
 मान॥ तीरथ सेवा जपत्त पत्रिया
 तजे इ स संभाषण इव्या॥ ध७॥ म

श्रुवचनदेहवसिकरे। मेरो नज
नहिरदा मै धरे। श्रुममभजनम
र्वको धरमाभजनविनां सब धर
मश्रधरमा॥४६॥ त्रैसे ब्रह्मचर्य ब
रतधारी॥ दिठतपनिसदिनबेद
बिचारी॥ विगतपापत्रैसीविधि
होई। मेरी भक्ति नहै तब सोई॥४
७॥ त्रैसीविधि भवसागरतजो। मे
रे परमरूपकं नजो। श्रुजो कंक
होय सहकां मातो सो करे जुव
ती श्रुधां मा। पूणे। कै नहकां मग
हैवनवास। कै अधिकारपाय स
न्यासा। श्रुजो उपजे मेरी भक्ति॥
तो नही करे कंक आसक्ति। धरिय
है ब्रह्मचर्यको धर्म। यातेइजो
सकल श्रुधर्म। श्रुवग्रहस्थको
धरमसुनां। सकलग्रहस्थनकं
समजां। पूरा ब्रह्मचर्यजो नही व
रावे। तो ग्रहस्थ आसर्मै आवे। श्रु

ते वेद पठे सब जवही ॥ गुरु दधिणा
देय युनित वही ॥ ५३ ॥ गुरतै आजा
ले उर धरै ॥ तव विधि सौं असनां
नही करै ॥ तव देखै उत्तम कुल
धिणा ॥ करै विवाह तिरीया विचय
णा ॥ ५४ ॥ ज्यो देखै अपनो अधिकार ॥
सो ही करै विवाह विचार ॥ विप्र
विवाहे चारूं बरणां ॥ विप्र छोडि
षित्री को करणां ॥ ५५ ॥ बेसि विवाहे
बेस्य अरु सइ ॥ सुदरये कइ जुं चि
त चुइ ॥ उत्तम सो ज्ये कै करै ॥ बउ
तन कइ नही विसतरे ॥ ५६ ॥ सुरति
अध्ययन जज्ञ अरु दांन ॥ तिहुं बर
ण कौं ये कसमांन ॥ दांन ग्रहन जज्ञ
करवां बन ॥ अधिक विप्र कूं वेद
पढां बन ॥ ५७ ॥ परिये तीन बरत है
असै ॥ अगनि मध्य जल बरया जैसे
इन तै ब्रह्म ते जन ही रहे ॥ ता तै इन
को विप्र न गहे ॥ ५८ ॥ करि कै सिला

देह निरबाहे। तातें अधिको नही स
 बाहे। विप्र देह पूरन तप पईये। सो
 विषयन संग नही भगमईये। पूर्ण बज्ज
 तभांति तप कष्टही करीये। हरि ज
 जि हरि ही कों अनुसरीये। सिलांबर
 ति करि राधे देह नही ममता जुवती
 सुतगे हाईं प्रतिपत्न नों रजतम
 नांही। मोही कूं देये सवमांही। जीवन
 मुक्ति होय सो विप्र। मेरे चरन न पावे
 धिप्र। ६१। जोकोई ममन किही करे।
 ता कों कष्ट आपदा परे। सो आपदा
 मिटावे कोई। सो मेरो हितकारी होई
 ६२। ता कूं मैं उधासूं छैसैं। नावने सों
 अंभो निधि जेसैं। परि धित्री निज धर
 म विचारे। सकल पालनां हिर दे धारे
 ६३। धित्री सबके डयनि हरे। सक
 ल जीव प्रतिपालन करे। सो धित्री
 सुरलोक ही जावे। आसव सहित महा
 सुय पावे। ६४। जो आपदा

तो सो बनि क बरति कों करे। जद्यपि
षड ग बरति हे कंचा। परिसो अति
हिंसा तेनी ची। ईधु जोषित्री कों परे
विपती। तो सो गहे विनज की बरती
किंवा विप्र बरति कों गहे। अथवा
मृगया करि निरव्वहे। ईही वैस्यही
परे आपदा कवही सुद बरति हे
दारे तवही अरु जो विपति सुद कं
परे तो प्रतिलोमै बरति ही धरे। ईधु
या विधि जब ही भिंटे विपती तब
ही गहे आपनी बरती पंच जत्रये
प्रति दिन करनें ग्रह स्थान कों नाही
परे हरनें ईषा करिकें पाठ रिषन कें
जजै करिक छु हो म देव तनि नजै
मृत निव्वनिरु म्मार्ध सों पितर। जल
अनादि सक तिसों सो नर। ईणी ति
नम बहि नमें मो कों जानें और सब
नपरिकरुणां आणें जो सहज ही कि
हंधन पावे किंवा न्याय कुतें उप

जामें ॥ ७० ॥ तसों लो ग आपनो पौधे ॥
शेर जज्ञ करि मोहि संतोये जिते ला
गति ग्रह में होई तितो ही धन राधे सो
ही ॥ ७१ ॥ शेर सकल मम हेत ल गावे
भूलिन डूजे मार ग जावे ॥ जद्यपि रहै
कुटंब ही मांहीं ॥ तोरु लिये क दे क
रुनांहीं ॥ ७२ ॥ निश दिन हिर दे करे वि
चार ॥ मिथ्या मानै सब परवार ॥ लम
त्री पुत्र बंधू सब श्रेयें ॥ जल के निक
टि बटा उजै से ॥ ७३ ॥ ये सब यों प्रति दे
ह लिखा वै ॥ ज्यो निशो पति लपनां पा
वे ॥ ज्यो जोगै वारं वारा ॥ तै लिये धिरे
सुपन ब्यो हारा ॥ ७४ ॥ यो ही यें प्रति
दे ह ही श्रावे ॥ देहत जें सब जित ति
त जां वै ॥ अस्यो ही सुर गादिक लो
क ॥ पायें हर य गयें अति सो क ॥ ७५ ॥
तातें सकल वासनां देहें ॥ अति अ
समान नवन मे रहै ॥ अहंकार मस
तान ही लोने ॥ सब माया लें ॥ ७६ ॥

जाने। एही। सबै करमनि मेरे हित
करे। मो बिचित्र तराय पर हरे। प्रे
म भाव दिट उर में रोये। और सक
ल हिरदा संनाये। प्रप। ये कही प्र
ज नये बन जावे। किंवा ग्रही
मां हिरहावे। जैसे ग्रही मुक्ति क
रि मने। और कच्च हिरदे नही अ
ने। प्रप। अरु जो होय नवन अा स
का। जुवती सुतादिक नसौ अरु क
विषया लंपट नसनां अा सुरा ग्या
नर हित करमनि मे चातुर। प्रप। अ
पही पर बिस ता हिन जाने। और न
की चिंता उर अा ने। भाई बर धपि
तर हे मेरे। मो बिन दुय लहे बहो ले
रे। हरे। ये अरु बलान घु संतति जाव
मो बिन दोय कहा गतिता की ये
नाय मो बिन सब बाला कों क
जावे अति बेहाला। ६१। मो बिन
ही कों न पूलियाले। कों न बिधि इ

कूटालोत्रैसैनि सदिनश्रानेच्यंता।
कहंनहीहोवेनहं च्यंता। ८ शकवे
नसुषपावैयालोक। प्रस्योरहैंचिंत
बहोसोक। याविधिचिंताकरत
अपारानरकहीजावेवारंवार।।
८ इदोहाब्रह्मचर्यग्रहचर्यको
मेंनाश्रयोत्रेधरमायातेंउहवश्रोर
कछ्। सोसवजांनिश्रधरमा। ८४।।
इतिश्रीभागवतेमहापुराणोत्थेका
दसस्कंदेश्रीभगवदुद्धवसंवा
देवगाश्रामधरमनिरूपणानंम
सप्तदसमोअध्याय।। १७।। १३००० ।।।
श्रीनगवानुवाच।। चौपडं।। अत्र
मेंकहंधरमवनवास। अरुअधि
कारसहितसंन्यास। जातेमेरीभग
तीमावे। भक्तिपायममंचरनही। अ
त्रैशिवरपपचासकृतेंउपरंत। त
ववनजायरहेइकंत। नारीसुत।
नमेंरहेनदेही। जेबिदेव ग

लेही २ कंदमूलफल वृत्तिहीक
रे बलकलनृगछात्तातनधरेन
णपणिक्रीमेजसंवारे। ईडीयन
केसबन्नरथनिवारे। इकेसरो
मनवहरिनकरे। देहदंतमलन
हीपरहरे। अग्निसेनत्रिकालसना
नामलनउतारे। मूसलसना। ध
ग्रीषमरितुपचाअग्निमाधे। तर
यामेछायानहीबांधे। सीससकल
जलधारासहे। सीतकालजलसा
यीरहे। ध। असीनातिकरेतपक्ष
करा। हंदनव्यापे। जौजलपुकरा।
अगनिपक्करितुमुक्कफलादि। ने
जननघृपवित्रअनादि। हीमूसल
ऊषलकेपाया। केदंतनिसौं
बोटेधांन। देहजीविकाआपुहीअं
ने। अधिकनगहेनसचयजाने। ७
तिनही। तिनसौंमोकौंजजे। औरज
जवनजासीतजे। अग्निहोत्रअरु

एमास त्योंही इस अरुचातुर
 मास ६। इन सब हिन कों मम हित
 करे सो बिन और फि दे न ही धरे।
 यों तप करि मो कों आराधे। प्राण दे
 ह इंद्रिय मन बांधे। ए यों कै सुध
 ल है मम भक्ती। और त्रिगुण विस
 तार बिर कती। यों तव ही मम च
 रण नि पावे। कै कम ब्रह्म लोक
 के आवे। शो अरु जो ऐसे कष्ट ही
 करे। परिकाम नां हिर दा में धरे। ता
 सम मूर धरु जो नां ही। ताके बर्था
 सकल प्रम जां ११ यों पचह त
 रि बर्ध नि पाछे। गहे सुध संन्यास ही
 आछे। सकल कृया के त्याग ही
 करे। मन सों मम सेवा अतु सरे। १२
 कर्म रचित सब लोक नि जां नै। ता
 नें धिण भंगुर करि मां नै। ता ही ऊते
 करे सब त्याग मन वच कर मसों।
 दिट वेराग २३ वेद बहि

तो कौं जजे ॥ कुं चिज कौं सर्व स
जे ॥ जब को ई संन्यास हि करे ॥ तब
ही सुर बिघन निबिस्तरे ॥ १४ ॥ परिये
बिघन गणों क च्छनां ही ॥ मेरे चरण ध
रे नुर मां ही ॥ जो क च्छक कं वस्त्र हि
ये ॥ तो को पीन श्रोर सब नाये ॥ १५ ॥
दंड क मंडल कर मै धारे ॥ ज्यो मल
त्से न ही श्रोर विचारे ॥ देषि देषि ध
रणी पग धरे ॥ वस्त्र छां निज लपान
ही करे ॥ १६ ॥ सत्य वंत बां नी कूं बोले
हिर दे विचारिक दे न ही डोले ॥ मे
निधारि बां नी कूं दंडे ॥ श्रु काया
के क्रम ही बंडे ॥ १७ ॥ प्राणों यों मम
ही बसि करे ॥ सब ई शीय श्रर थि
ये पर हरे ॥ श्रु चहन न ही ता मां
नेष धरे जती सो नां ही ॥ १८ ॥ नि
करे सप्त घर वि प्र ॥ श्रोर क कं
छगहन चि प्र ॥ सो कु बि प्र चतु
धि जे ते जांति रहे ॥ नि द्या कौं ते

१७ विप्रकही जेदसपरकाराति
नको तुमसों क हं विचारा देवदि
प्रविप्रिरेषही जांनों विप्रविप्ररु
रुषित्री मांनों रगे विस्प सुइरु
मेक विंडाल पसरुमले व विप्र
चिंडाल निचानित्यरु पठे प
हवै सकल अरथ अरु तत्ववता
वै र जत ई डीय सीतल संतोष
देन विप्रसो निरगत रोष तप अ
रुस्य अहं स्या करे दिन दिन घट
कर मनि अनुसरे पर काल लोप
क बहन ही हं रियी बुत्ताण क
ही यतु है सो ई विनहिं स्या फ न म
लने लावै तिनहं सो दिहं वर
तावै र अवरया र्मान उमन म द म
ने विप्रविप्र निनिय भा वि गंते न
स्वादिक नि करे आगे र गां म द म
जेतन मोहा र्ध न निय
आरे न सत्रा वि

अरु जो उतम बनि जही करे ॥ पस
राषे येती बिस तरे ॥ २५ ॥
ब्राह्मण कहीये ॥ तातै ले निचा
नही गहीये ॥ तेल लौं एष्ट तह धर
लक्ष्या ॥ तिल अरु नीलि मही मध
मद्या ॥ २६ ॥ इनको बिन ज कर तु
हे जोई ॥ सुदर विप्र कहीय तु हे सो
ई ॥ सब भूतन के दोह हि करे ॥ सब
के छि इन देषत फिरे ॥ २७ ॥ प्रति
दिन हंस्या सौं अधिकार ॥ विप्र क
हा वैसा मंजार ॥ नक्षत्र नक्षत्र
कार जकार ज ॥ गमि अगमन ल
ये अना रज ॥ २८ ॥ कृतघनी सकल
पसुनिके लषिण ॥ सो पसु ब्राह्मण
कहे विचक्षण ॥ बापी कं पतला
वबुरा वै ॥ वन वागादिक नासक
रा वै ॥ २९ ॥ संध्या अरु सनां नजानै ॥
असो विप्र मले छुवयां नै ॥ निंदक
लोनी परधन हरे ॥ निरदय कूरपि

सुनता करे। ३०। सोचिं डाल विप्रक
रिमानों। ३१। सैदस विधिविप्रनजा
नों। ताते उत मने सा करे। ३२। ओर स
कल हरि परे हरे। ३३। सात घर न
ते भि सा पाए वै। ताही करि संतो
ष उ पां वै। सो ले जावे न दीत डागा ता
ते क लु ये करे वि भाग। ३४। को ई मा
गीत कीं देई। के जल मां हि प्रवाह क
रे ही। विचरे धरणी छे न्ह संग। क
दे न क लु सं वारे अंग। ३५। तन स
न ई डी य नि ग्रह करे। मेरे रूप हिर
दा में धरे। नि स दिन रहे आत मारां
मा विषय सुषन को सुने न नाम।
३६। सम दर सी अरु धी र ज वं त. स
दार है निर न य ये कंत। मेरे भा व न
यो अति सुछ। मर्ग वि दे यी ज्यो ज न्ह म
३७। ३५। आ पु ही मां हि वि चरे ये क ॥
क दे न दे धे नू ल्लि य ते क। आ न स अं
स ब्र त्त को नां ने। व ध मु। ३८। दे

ममानें ॥ ३६ ॥ बंधन जब ईशियन
वसिहोई ॥ मुक्ति ईशियन बंधैसे
ई ॥ ज्ञेसैं जांनि ईशियन जीतै ॥ मो
हि सुमरितै काल विदीतै ॥ ३७ ॥
दो हू लो कतै होय बिरक्त ॥ तिन
हू नही होवै आसक्त ॥ पुर ग्रामा
दि आये जो परे ॥ निश्चा अरथ प्र
वेसही करे ॥ ३८ ॥ देसप बित्रसे ल
बनिसरिता ॥ बांन प्रथ जहां आ
चरेता ॥ तहां तहां नितही चलिजा
वे ॥ तिन आसर्मन निश्चा पावे ॥ ३९ ॥
तिनतै लहे सिनाको अंन ॥ तातै हो
वे मन प्रसन्न ॥ ताहीतै निरमल ताल
॥ उपजे ज्ञान सकल मल दहे ॥
४० ॥ ईशिय अरथ निसत्यन दे
॥ अण भंगुर सबन सुर लेये ॥
तै सब तै गहे बिरक्ती ॥ नही उ
दमनही बिये आसक्ती ॥ ४१ ॥ ये
कारक तजानै ॥ आत

मविधेसुपनसममानै॥कदेनहिरदे
 चितवनिकरो।मनबचकरमदूरि
 परहरे॥४२॥श्रेसीविधिजबउपजे
 श्रान।होयविरक्तजैसबश्रान॥
 मेरीभगतिहिरदेमैश्रावे।तबसब
 वर्णाश्रमछिटकवे॥४३॥विधिन
 वेददोऊभरमजांनै॥वेदशुभृत्य
 कीसंकनमांनै॥प्रतिपरिवुधिवा
 लंसमरहे॥विधिनवेदककु कह
 नगहे॥४४॥सबजांनैपरिज्योउन
 मंत।चेतनइमदीसैजडवंत।प्रधि
 तबांरतनहीहोई।कबहूवादन
 ठानैसोई॥४५॥बाहरिमधियेकस
 मरहे।कबहूकोईपधिनगहे॥ज्यो
 ज्योकहैसुनैत्योंत्योंही॥तत्वसतो
 नहीत्यागैक्योंही॥४६॥काहूतेंउद
 वेगनश्रानै॥प्ररुकाहूक्योंश्रापत
 बनेनिश्रादिसहैडरवेना।
 धरनिरंतरचैन॥४७॥

क

नी

पमाननकरे मनकरमबचनम
नबिसतरे पससमानिवैरादि
वांने सकलविकारदेहकेभांने
धृष्ट ज्योत्नातमअपनेतनमांही
सोहीसबमेंइजोनांही ज्योवक्रुध
टनिमांहिससियेक घटनिसंगज
नीयेअनेक धए तातैइष्टअनिष्ट
हीकरे सोसबआपहीकृंविसत
रै तातैआतमबुधिहीराये भेद
देहकृततेसबनांये ५० समय
समयभोजननहींआवे। तोरुक
बनमनमेंत्यावे। करमरचितस
बरेहनजाने। तिनहींतेसबसुष
कयमाने ५१ तेसबसुषडुपकर
सरीर ज्योत्नातममेंज्योमृगनीर
केवलअहारहीननहींनाये। उ
मरुकरिप्राणहीराये ५२ प्राण
रायेहोवनिचार। नहेमोहिबूँ दे
मार। जोमेरी अंछातेआवे। न

बहु स्यो सो भवमें नही आवे मेरो
निज निरमल पद पावे ॥ पूण ॥ अरु
जाके उपजे वैराग ॥ कस्यो च हेया
भक्तको त्याग ॥ परि मम भजन यु
गति नही पावे ॥ सो सैत गुरकी स
रण ही आवे ॥ ६० ॥ सरम ही विना
न हे सो भक्ती ॥ पावे मोहि होय भ
व मुक्ती ॥ गुरकं ब्रह्म रूप करे देखे
मां नव बुधि कदी नही लेये ॥ ६१ ॥
सरधा सहित अस्त्या तजे ॥ मन क
र्म वचन निरंतर भजे ॥ जो लग ब्रह्म
विचार ही पावे ॥ तो लग गुरु तजि
क हं न जावे ॥ ६२ ॥ पीछे ज्यो चा
त्तोरहे ॥ परहंस के धरम निगहे
परिजिन व हरि पुजीते नां ही ॥ ६३ ॥
वत्परप्रविचार तमां ही ॥ ६४ ॥
चल बुधि न ग्यां न वैराग ॥ ताको
कल वृथा हे त्याग ॥ नेष दिषा
जीवका करे ॥ ताको दोष कह्यो

ही परे, ईध। देवपित्ररिय भूतनिने
धे। तिनको कृण अ पणै सिर राधे ॥
अंतर गतिमें ताहि छिपावे। अ पही
बैं चै बंधु उपावे। ईधुं सो सुष कौन
लहेया लोक। अरु ल्यो नृसु होय
पर लोक। ये हे वरणा प्रम के धर्म
इनते भगति लहे दहि क्रम। ईई।
अब चारों के धरम प्रधान। न्यारे न्यारे
करों बघांने। सम अरु अहंसा सं
न्यासी कौं। मुति विचार तप बनवा
सी कौं। ई९। ग्रह में दया जज्ञमम क्र
म ब्रह्म चरय गुस्से वा धर्म। ब्रह्म च
रय तप सोच संतोष। सकल सुह
रव कित ऊं नहि रोष। ई१०। मेरो न
जन सकल ममकार हो। ये सब हि
नके धरम साधारण। ग्रेही देह ब।
निता सति दांन। भूत्निन गघन क
रे दिन अंन। ई११। या वि
अपने धरम। ॥ ११ ॥

रम॥सबमेंजांनेमेरोभाव॥काहू
परिनहींधरेश्रुभाव॥७०॥सोपा
मेरीदिठभक्ति॥श्रोरसकलतैंक
रेबिरक्ति॥तातैंउपजेमेरोज्ञा
देषेमोहिमिटेसबश्रान॥७१॥
सोकेपावैममरूप॥बडरिन
वेयाभवकृप॥जेहेसकलब
श्राम्रम॥तिनकेयेमेंभावेध
७२॥भगतिसहितयेमोहिमि
भक्तिबिनांभवसिंहवहावै॥
सोतत्वलहेतेतिरे॥श्रोरसक
नितजनमेमरे॥७३॥दोहा॥
इवतोसोंकह्यो॥वर्णश्रा
धरमा॥जातैंममभकीलहे
बंधनकर्म॥७४॥इतिश्रीभा
स्हापुराणोयेकादसस्कंदेश्र
वदुइवसंबादेवरणाश्रम
निरूपणनांमश्रुष्टादसमो
७५॥७६॥७७७८॥श्रीभगवांन

च॥ चोपई॥ उद्धवये वरणरुद्र
 प्रमा॥ तिनकेमें सब भाषे धरमा॥
 इनमें रहे मम भक्ति उपावै॥ ताते
 मेरोग्यां नही पावै॥ श॥ ज्ञानही पाय
 सकल भ्रम जांनै॥ वरण प्रममि
 था करि मांनै॥ सब साधन तजि मो
 कंधावै॥ प्रोर कबू हिर देन ही ल्य
 वै॥ श॥ ज्ञानी केमें ही हों साधन
 रु मेरो ही निति श्राधन मो ही क
 रि मो कैं श्राधे॥ तन मन इं डी य
 मो सों बांधे॥ मो बिन सुरगादिक
 नही लेई॥ मेरे ही चरण निचित दे
 ई॥ मो बिन मु कतिक देन ही गहे
 मो बिन सकल वासनां रहै॥ ध॥ में
 ही हित में ही ताको प्रिये॥ मो बिन
 ताके अति अ प्रिये॥ जो हे सहित
 ज्ञान विग्यांन ते ही जांनै मो हि सु
 जांन॥ ध॥ ग्यांनी ते मेरे प्रिय नां ही॥
 सराव से मेरे मन मां ही मै ता

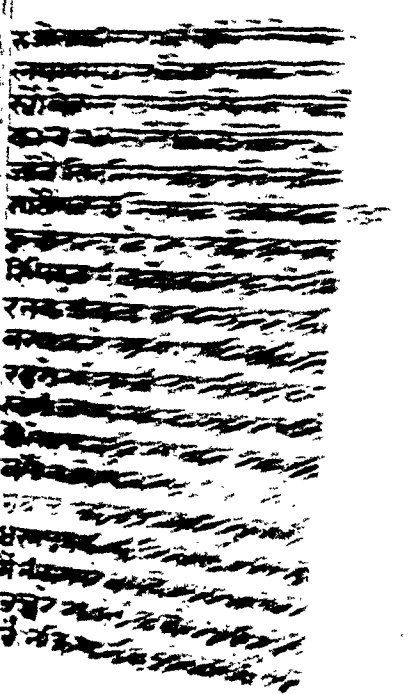
रोहै सो ईह जो नही परस पर कोई
ई जप तप तीरथ वरत चरु दान
कहों कहां लगते विधि नाना ते सब
करे नही फल जैसे सो ग्यान कला तै
हो वै जैसे ७ ता तै ज्ञान हिरदा में ध
रो ओरों साधन सकल निवारो स
बमें रूप आय नों जा नों मोहि जाति
प्रभू सेवा ठा नों ८ हो करि सहित
ग्यान विज्ञान देवे सकल ये क न
गवां न ब्रह्म तेने जम मरूप समये
जहां जाय कोई नही आये ९ जब
ही प्राणी ज्ञान ही पां वै तब ही मम
निजरूप समं वै ग्यान विनां नही पा
वै मोहि ये निजमतो कहतु कृतो हि
१० उद्वव तो में विवधि विकार ज
नम मरण सुषुषु परकार ते सम
सयातन के जा नों सो तन माया नृ
म करि मां नों ११ आय ही सुद्व निरंज
न देवो है त अतीत ये क करि लेवो

येजेसकलप्रगतदेहादितेश्चान-
ममेंहतेनश्चादि॥२२॥अरुअंतक
रहेकछुनांही॥अबअग्ग्यानकुं
वरतांई॥ज्ञानदिष्टकरिदेथेजव
ही॥त्रिगुणरहितश्चापहेतवही
१३॥जेसैरजुमांहिअहीकहे॥अदि
नकुंतोअंतनहीरहे॥भर्मतेमध्यस
दमतिमांने॥हेनांहीपरिहेसोजांन
१४॥त्योंदेहादिकसकलभ्रमदेयो
श्चापहीसदाब्रह्ममयलेयो॥त्रैसो
मुनिहरिजासोंज्ञानही॥उह्वज
नप्रक्षीभगवांनही॥१५॥हे
प्रभूग्यानरुपाकरिकहोमेरेनां
जांभर्मकेंदहो॥अरुत्योंहीनाथोवि
ज्ञान॥भक्तिश्चापनीपरमनिदांन
१६॥जाकौंचाहेंसकलमहंत॥जा
तेंहीयजगतकोअंतजाविनज्ञां
नध्यानकछुनांही॥साधनसकल
वृथाहीजांई॥१७॥जाकौंपायमुक

तेनहीलेवे॥ औरसुषनिपरिद्विष्टि
नदेवे॥ ऐसीभक्तिहृपाकरिक
अपनेजनहिअरेनिरबहो॥१७॥
येभवसागरविकटअनंत
अरमतनपावेअंत॥ तापरितपैत्र
विधिसंताप॥ तिनमेंपरेआपही
आप॥१८॥ तातेंजीवमहादुषपा
सुषठांनेसोदुषकेआवे॥ ताकौ
आरक्षिकनांहीं॥ मेंविचारिदेयो
रमांहीं॥२०॥ तुमरेचरणछित्रसिर
धारे॥ सोसमस्तसंतापनिवारै॥ ताकौ
दसूदिसअमृतवरये॥ ताकेदस
आरसबहरये॥२१॥ ज्योंकाहूकं
गालहीलीजे॥ ताकेसीसच्छित्र
जे॥ सोकेअपमहासुषपावे॥ अरुअ
रनकेदुषमितावे॥२२॥ त्योंतुवच
णछत्रसिरधारे॥ सोअपनेसबदुष
निवारै॥ निरनेतीनोंलोकनिमां
तासमआरकहूकोनांहीं॥२३॥

रुजोताकीसरागहीश्रवैतेतेसक
 लपरमसुषपावै।थानवकंपप
 स्योवेहालातापरिडस्योमहाश्रही
 काल॥२४॥तातैविषईविषैसुष
 जांनै।तिननिमतवकुउदिमठानै
 तातैसदाश्रमितपावै।जाकोकव
 कुश्रंतनश्रवै।२५॥ताकौंकपाक
 शिपियुषपीवावै।काठिकंपतैमि
 रतकजीवावै।वचनश्रमृतकी
 बरषाकरो।श्रपणोगुणनिवांधिन
 रहरो।रहीतुमहीजगतपिताजग
 स्वामी।जगपालकजगश्रंतरजांमी
 श्रैसेवचनसुनेभगवांन॥तवउध
 वसौंभाष्योपांन॥२६॥श्रीभगवांन
 उवाच॥उहवप्रश्मकरीतुमजोई
 धरमपुत्रकीन्हीतिनसोई।सरसजा
 मेंनीश्रमपरे।हमकौंसुनतवचन
 उचरे।२७॥तेईश्रवमेतुमहीसुना
 र्ते॥भक्तिग्यांनविज्ञानजनांर्ते॥२८॥

तेनहीलेवे॥ और सुषनिपरिद्विष्टि
मदेवे॥ ऐसी भक्ति कृपाकरिकहे
अपनेजनहि औरेनिरबहो॥ १४॥
येभवसागरविकटअनंत॥ जामें
अरमतनपावेअंत॥ तापरितपेअ
विधिसंताप॥ तिनमेंपरेआपही॥
आप॥ १५॥ तातेंजीवमहादुषपावे
सुषठांनैसोदुषकेआवे॥ ताकौंइ
जारदिकनांहीं॥ मैंविचारिदेव्याज
रमांहीं॥ २०॥ तुमरेचरणछित्रसिर
धारे॥ सोसमस्तसंतापनिवारै॥ ताकौं
दसूदिसअमृतवरये॥ ताकेइस
आरसबहरये॥ २१॥ ज्योंकाहूकं
गालहीलीजै॥ ताके
जै॥ सोकेअपमहासुषपावे॥ अरुअ
रनकेदुषमितावे॥ २२॥
एछत्रसिरधारे॥ सोअपनेसबद
निवारै॥ निरभैतीनोंलोक
तासमआरकहूकोनांहीं॥ २३॥



हिन वेदे ॥ प्रेमसस्त्र उरगंघा ही नेदे
ॐ सें जब मम भक्ति ही लहे ॥ तब अ
सेष कब नही रहे ॥ ५२ ॥ साधन
लहे सो सकल ॥ काल कर मत्ते ही
अकल ॥ जब मो विषे चित कौं
जब कै सात्तिकर जतम मोरे ॥ ५३ ॥
रमै स्वर्ज ज्ञान बेराग ॥ इन कौं सह
जिल है बडु भाग ॥ अरु जो मेरी यु
क्ति न पावे ॥ देह गोह सौं चित लगावे
५४ ॥ तब हो वैर जतम अहिकार ॥
धे अ धर्म परे संसार ॥ बंध मु
तही कारण ॥ बोरै चित अत ही ता
५ ॥ मो मै धारे मो कौं ल है ॥ भव मै धारे
व मै ब है ॥ ता तें धर म ज्ञान बेराग
रता अादिक जै भांग ॥ ५६ ॥ ते समस
मेरे आधीन ॥ ता तें हो वै मम लो ली
सेवत मोहि सकल ये पावे ॥ मो वि
नको ई निकटिन आवे ॥ ५७ ॥ मेरी
क्ति कहा वै धरम ॥ उरु व ड जो स

प्रधरमायेकब्रह्मदरसनसो गपना ॥
 आद्विधिन्नोरसकलत्रज्ञाना ॥२॥
 अरु उरुव सोहे बैरागा जो समरा वि
 प्रयनको त्यागा ॥ अरु ये शूर्य सिद्धि
 अणमादि ॥ ममसेवककी सेवक आ
 दे ॥ पूणा ताते जे मम सरण ही आवे ॥
 ते ही मुक्ति मुक्ति सुय पावे ॥ ई० वि० ॥
 असे अश्रुत बेनजब कहे ह्यपक
 रिहः एतव उरुव जनहर धि करि
 की नही हरिसो प्रसन्न ई० उ० उ०
 चौ० हे प्रभु प्रण क रणा क रणे ॥
 दी ॥ अ वि वि वि वि स त्त र्णे ॥ ज्यो त्तु म ध र म
 भक्ति कृत नाये ॥ ब्रह्म टि टि के ॥
 न ही राये ॥ ई० अरु बैरागा दि म
 जा ए भरे उ व सं दे ह मि टा ये ॥
 सकल तत्त्व ज्ञा नाये ॥ हो य अ र न
 रि करि नाये ॥ ई० य म क र्ण ॥
 परकार अरु लो क हो ने म न्नि म न्
 रा अरु सम कौ न कौ न र म दे वा ॥

नषिंमांश्चरुधृत्तिकोनेवा॥६५॥कौं
 नसरताश्चरुतपदान्॥कौंनसतिः
 कोफं ववषांन॥कौंनत्यागकोधन
 हेदृष्ट॥कौंनजज्ञदक्षिणावैरिष्ट॥
 ६५॥बलश्चरुदयालाभश्चरुसुष
 विद्यालज्जासोभादुष॥पंडितमू
 र्यग्रहसतपंथ॥स्वरगनरक
 संबंधुकुपंथ॥६६॥कौंनदरिद्रकै
 नधनवंत॥कौंनकृपणकोर्दस्वर
 जवंत॥श्चरुइनतैंउलटिहेजेती॥
 चरुसमश्चदमश्चादिकसबतेती॥
 ६७॥मोसोंदेवकृपाकरिनायो॥रायो
 तत्वश्चतत्वहीनायो॥यौंसुनिबहु
 उह्वकीप्रश्म॥तबकरुणाकरि
 बोलेकृष्म॥६८॥श्रीभगवांनउवा
 च॥हिंस्यारहितसतिःश्चसतेया॥संग
 विवरजितसबकोहेयै॥नज्जामौति
 चासतिकथीरा॥बलचर्यश्चरुक्षि
 मांश्चनीरा॥६९॥येद्वादसयमगहेनि

हृती अरु त्यों हाद सनेम प्रवृती सो
चस्क पटर हित धरमा दर जपत
प अरु मम पूजा सा दर १७ वे ती रथ
अटन अति थको पोषे गुर सेवा
अरु दिठ संतोषे परि उपकार हो
मघिस तारे भुक्ति मुक्ति चाहे सो धा
रे ११ सम जो मो मे नि टा वृधी इम
ई दी य नि ग्रह मत् सुबी जो ह्य नि
उपजा धे को ई तिन ते जा को पु य नि
हो ५ १२ सकल से हे क कु म न न ही
आने ता को मम जन धि मां व धां ने जि
का ई दी य चंचल न हो ई तिन दो न्यो
को धारे जो ई १३ र स अरु अ व ल क
को न ही ग हे जा के मे रे जन धि ति क
हे भूत श्री ह त्या ग सो दां न भोग त ज
न सो त मन ही आं न १४ सो ही सुर
जो जी त्यो स्व भा व सो ही स ति स क
ल म म भा व सो को ली ये व च न म
म ति सो वि नुं वे लै सक च अ म नि

५५ करमनिमें जो होय अंग सो
 वहै परसो चहै अंग सो है त्यागत
 जे फल करम सो धन ईष्ट प्रमः म
 मधरम उई जगपरूपमें हों नही
 ज्ञान सो दधिणं देयममज्ञान॥
 प्राणं यो म प्रमबल कहीये जा
 करि बड़ो सबु मन गहीये ५५ भा
 ग्य जो ममये श्रुत्यहि पावे चेतनि
 जानंदके आवे मेरी नक्ति येक ये
 लाभ नक्ति विना सो सकल अलाभ
 छट जातें नेदमिटे सो विद्या उर्व
 ह्नी सकल अविद्या लजामानि
 अकरमन गहे ममजनता कूल
 ज्या कहै ५६ नहकंचन निरपे
 धि निरलोभा इत्यादिक जे गुण ते
 सोना सो सुयः जो सुषुषु अतीत
 पुंन्यन पाप बुझन ही सीत ६० वि
 धयन की अछा दुख जौं गुण सं
 पन अछा सो मानौं बंधु मुकति की

उक्तिहि जानै। समजनपंडितताहि।
 ब्रह्मणै। ८१। अहंकारजाके जगत्त्रा
 वि। अत्रपनेकहै देहगेहादि। सोसम
 स्तमूरयही जानै। आतैं और भांतिम
 तिमांनै। ८२। जाकरिमोहिलहै सो
 पंथ। जोपरवरतिसोसकलकुपं
 थ। नितिसंतोषीसीतलहिरदय॥
 सति कच्यतसवनपरसुहृय॥ ८३।
 यहैस्वरगसुयको भंडार। अरकनि
 मेंसामसन्नधिकारासतगुरएकहि
 नूकरिजांनै। औरसकलयेवैरीमां
 नै। ८४। सतगुरहैसोमेरोरूप। जातैं
 जीवतजैग्रहकुंष। सतगुरबिनवं
 धनहींकोई। सतगुरबिनसोवैरीसो
 ई। ८५। मानवतनसोहीग्रहकहीये।
 ताकेग्रहं ग्रेहीकेरहीये। सोदरिइ
 सोत्रह्मां वंत कृपणई। दीयनब
 सिबरतंत। ८६। विषयनअनासक्त
 सोईसः

मोक्षसंभयपरिहरो तुमरीत्राग्पाक
हीयेवेदाताहीमैदीसतुःहेभेद॥१॥
विधिनयेदसोवेदबयानैताहीति
सबकोईमानैतुमहरीत्राग्पाकयैभ
मनेये। जातेविधिनयेदनहीदेये
अरुयेप्रगटदीसेदेव। विधिनये
दकेषऊविधिनेव। परगटविधिव
रणरुत्राप्रम॥ तिनकेविवधिभां
सिजेक्रम॥३॥ जिनकेप्रगटफलसु
रगादी। अबकोनहीयेपंषत्रनादी
अरुनयेदप्रगटप्रतिलोम। अत्रव
द्यादिकजेअनलोम। ४। बरगानिमै
संकरहेजेते। अरुतिनकेक्रमैपुनि
तिते। तिनकेफलपरगटनरकादी
कहेहुतेफलजायनबादी॥५॥
जाकेफलहिवेदयेकहें। ताके
करिनरसोहीनहें। अरुनयेदप्रव्य
देसघयकरनप्रगटविधिनयेद
जापाल। अरुनोविधिनिभेद

ही सत्य॥ तो सुषुप्तरुद्रुष फलवत्तु
सत्य॥ कोई स्वर्ग नरक नही जावे
तो ब्रह्मश्रम करि विधि न करावे॥
७॥ अरु कहा कही थे वारं वारा॥ तु
म्हरे वचन न श्रान प्रकारा॥ ये तो क
होतुम्हारे वेद॥ जाते विधि न वेद के
वेद॥ ८॥ देव पितर मुनि मानव जेते
वेद नयन करि देये ते ते॥ विधि नि
षेदतिन के फल जाने॥ अरु त्यों ही
त्यों ते ऊठाने॥ ९॥ सकल तुम्हारी
आपामां ही॥ ज्यों ज्यों थापे त्यों वर
तां ही॥ सो मिथ्या क्यों कही ये वेद॥
या को मोहि बताने वेद॥ १०॥ हे विधि
वचन बढे संदेह॥ वै हे सति कि धी
प्रभू ये ह॥ ये पूरण संदेह मिटावो॥
एक जांति के वचन सुनावो॥ ११॥
या विधि परज्ञान विसतारो॥ अरु
नेरचे जीव निसतारो॥ मुनि ज्ञेसी
हृदकी बांणी॥ तव बोले श्री सारंग

पांती १२॥ अथ नगवाननुत्प्राच ॥ उठ
वपरग्यानश्रवकहौं तेरे सबसं
देहहीदह्लंमेंभायेहैंतीननुपाइ
क्रमरुक्तिग्यानसमजाई १३ ॥ ज्यो
जाकोदेव्योश्रधिकारनाकोतैसो ॥
कीयेविचारजोभायोसबहिनसो
ग्यानतेनेवियईतजेनश्रान ॥ १४ ॥ ता
तैंक्रमक्रमसकल्लुडुंनें तैक
ग्यानमधिरहरांनें ॥ तातैवचनसक
लममसत्य ॥ विधिनयेदनुनहींश्रम
स्य ॥ १५ ॥ परियेसकल्लग्यानकेकारण
ज्ञानलहैतैसकलनिवारण ॥ येतुम
सीढीब्रह्मकीजांनों ॥ तातैकलुसंदे
हनश्रानो ॥ १६ ॥ जिनभवसुप्रज्योहै
त्योंजांनें ॥ ब्रह्मलोकलौंनस्वरमांनें
तातैतितकेउदिमदहै ॥ श्रोरसक
लतजिधिरकैरहै ॥ १७ ॥ तिनकोग्या
नयोगश्रधिकार ॥ धिरकैकरां ॥ ब्र
ह्मविचारश्ररुजिनविययइयन

ही जांयों ॥ अरु तिनके उदिमन ही
भांयों ॥ १६ ॥ परिममगुण सुनिकरि
सुषमांनै ॥ मेरो भजन नलोक सिं
नै ॥ ताकौं भक्ति योगहितकारी ॥
सो जांनै तत्व विचारी ॥ १७ ॥ अरु जो
विषयन के अधीन ॥ तिनके उद
मसौं नवलीन ॥ कथा सुनन कौं नह
अवकास ॥ अरु ममप्रीति नही अ
भास ॥ २० ॥ तिनकौं करम योग सुष
दाई ॥ इनतैं और न श्रेय उपाई ॥ ति
तीन्यो नायत हूंतोसों ॥ निहश्च
लचित के सुनीयो मोसों ॥ २१ ॥ प्रथ
महि क्रम योग विसतारौ ॥ विषय
जीवन कौं निसतारौ ॥ मेरे बक्र
विधि गुण विसतारा ॥ कथा प्रसंग
विविधि परकारा ॥ २२ ॥ तिनमें प्रीति
ननुयजै जो लो ॥ ममजन संग करै न
ही तौ लो ॥ अरु जो लो न बढे वैराग
विषयन कौं न मिटे अ नुराग ॥ २३ ॥

तोलों करम योग नही तजे। करम नि
 ही करि मो कों नजे ॥ अरु पने धरममाहि
 धिर रहै। कवहु भूनि नये दनि ग
 है ॥ २४ ॥ जज्ञमहो छावहु विधिकरै
 सकल करममहि न बिसतरे। म
 नतें इच्छा सकलमिटावै। सो जन सु
 रगनर कनही जावै ॥ २५ ॥ अश्रेयसां न
 भक्ति कौ लहे। तातें करम कालिमा
 दहे। उरु वये मां नवतन त्रै सो। सक
 ल सिष्टमेनां ही जै सो ॥ २६ ॥ सुरगनर
 कके वंछे या कों ॥ परिक्यों ही नही पा
 वेता कों। ज्ञान भगति यातन करि
 लहे। अरु सब न करि भव जल व
 है ॥ २७ ॥ जो त्रै सो मां नवतन पावे सो
 समस्त कां मनां बहावै। तजे नये द
 पकल ई कस अरु कां मनां हे त
 जे धर्म ॥ २८ ॥ अरु फिरि नही वंछे न
 रहेहा ॥ प्रमरतन नही थोवै येहा ॥ ज
 ह्यपि बहु सों नरतन पावै। परिक

गो जां न्यौं ॥ अरु तिन के उदि मन ही
गं न्यौं ॥ १६ ॥ परि मम गुण सुनिकरि
नुष मां नै ॥ मेरो न जन न लोक सिं
में ॥ ता कौं भक्ति योग हित कारी के
गो जां नै तत्व विचारी ॥ १७ ॥ अरु जो
विषय न के अधीन ॥ तिन के उद
म सौं न वलीन ॥ कथा सुनन कौं न ह
अवकास ॥ अरु मम प्रीति न ही अ
नास ॥ २० ॥ तिन कौं कर म योग सुष
दाई ॥ इन तैं और न श्रेय उपाई ति
ती न्यौं ना यत हूंतो सौं ॥ निह श्र
लचित के सुनीयो मो सौं ॥ २१ ॥ प्रथ
महि क्रम योग विसतारो ॥ विषय
जीवन कौं निसतारो ॥ मेरे बड़
विधि गुण विसतारा ॥ कथा प्रसंग
विविधि परकारा ॥ २२ ॥ तिन में प्रीति
ननुपजै जो लो ॥ मम जन संग करै न
ही तो लो ॥ अरु जो लो न बटे वै राग
विषय न कौं न मिटे अ नुराग ॥ २३ ॥

तोलौं करमं योगन ही तजे करमनि
 ही करि मोको नजे अपने धरममां हे
 धिर रहै कबहु ननि नये दनि ग
 हे २४ जज्ञम हो छाव क विधिकरै
 सकल करममहित विसतरे म
 नतै इच्छा सकल मिटावै सो जन सु
 रगनर कन ही जावे २५ श्रेयै संपात
 भक्ति कौ लहे तातै करम कालिमा
 दहै। उध्वये मां नवतन श्रेयो सक
 ल सिद्धि मै नां ही जैसे नती सुरगनर
 कके बंछे या कौं। पविद ही न ही या
 वैता कौं। ज्ञान भगवत द्य न न कनि
 लहे। श्रोर सब न करै म जल न व
 है। २७ जो श्रेयो मं ल न न या वै सो
 समस्त कां मनो द श्रेये ल न न ये र
 सकल ई क्रम न न न न न हे त
 जे धर्म २८ श्रुति रे न न न न न
 रहेगा ॥ प्रमरतन श्रेयो
 द्यपि व ऊ श्यौं नर ल न यां लः

धे॥ मेरे गुणानां मं नित ना धे॥ ५
 यों जद्यपि विषय नैर है परि मं
 वचन मत्प्रागे चा है सो निति
 क्रियोग सों जजे मो विच्य अंतरा
 तजे॥ पूणा तंत्र पंथ प्र जलिस
 रें॥ मम हित जो क हू सो सब करे
 बिधि सक लबा सनां ना से॥ मेरो
 रूप हिर दे पर का से॥ ई०॥ ताते व
 रूप मम जानै॥ हेत भाव मिथ्य क
 रिमो नै॥ संसय कर म भर म नै भ्रा
 हंकार तजि सो वत जागे॥ ई०॥ जह
 हां मो ही कों दे धे॥ मो विन ओर क
 न ले धे॥ औ सो कै म म रूप समा है॥ ३
 म ओर न ही प्रा वि॥ ई०॥ ता
 कै मेरी भक्ती॥ निस कि म न
 ए न अ नुर क्ती॥ ता कौ ज द्यु वि
 ना ही ज्ञान॥ अरु ना ही वैर म म ल
 न ई०॥ तो हू सो मो कौ अ नुर क्ती
 ति उ स तर भ व सा ग

मके धरमन करै। ब्रह्म त भान्ति तप
कौं अनुसर। ६४। निस दिन सांघिहि
पान विचारै। गहि वैराग सकल
अघ डारै। साधे जोग अष्ट परका
रा। दान वरता दिक् ब्रह्म परकार
६५। ये सब आप ही तैं चलि आवै।
मम जन के आधी न रह आवै। मेरी न
कि सकल सिरता जा। जैसे सकल
नरनि मेरा जा। ६६। भुक्ति मुक्ति प
लन ही परिहरे। मम जन की निति से
वा करै। असु जद्यपि में बहो विधिक
हं। भुक्ति मुक्ति कछु दीनी चहं। ६७
परि मेरो निज जनम ही लेवै। सकल
त्यागि मम चरण निसे वै। निरपेक्षिता
परम हे प्रेय। मो विन सकल बसत
को हेय। ६८। निस पृहता ये सुष
पार। जहां न काल क्रम अधिकार।
में निस पृह निसृह जो होइ। मेरो भग
तिक ही जे सोइ। ६९। मेरे समत धिया

ता सुख रहे सो ॥ सकल बिसु में नां ही जे
सो ॥ नि स पू ह जन मे रे सु ख पा वै ॥ स्पृह
वंत के निक टिन आवे ॥ ११ जे ये का
त भक्त है मेरे ॥ तिन के पुं न्य पाप न
हाने रो ॥ रा ग दो य हृ जित सम दर से
त्रि गुणा ती त ब्र ह्म कौ पर से ॥ १२ ॥
सैं ती न पं थ विस तारे ॥ इन कै ब ड
त जी व नि स तारे ॥ जे ई जे जन इन में
आवे ॥ ते ई ते मे रो प द पा वै ॥ १३ ॥ यो
ग भ क्ति अरु सां धि ये ती न ॥ ती न ए
क कहै प्र बी न ॥ इन कौ पा ये मो कौ
पा वै ॥ ये बि न पा ये मो मैं न ही आवे ॥
१४ ॥ ये सा धा न है ती नौ नी के ॥ इन
बि नुं अोर न तार क जी व के ॥ ये सा ध
न है मे रो स्पा ॥ इन तै त त न अोर अ नू
पा १५ ॥ मे रो गो पिर ह सि है योग जी व

प्रतारा॥३॥उंचोनीचोसबपरिहो॥अप्र
नेकरममांहिअनुसरे॥सोसोतिनति
नकोबिधिजानो॥तातैअरनवेदहं
मांनो॥धयेकछबसतुबुधिमतिदे
प्रो॥पसूजीवनिकोबंधनलेयो॥उप
जीबसुसमस्तअसुधापरिकहीभा
षेसुधअसुधा॥क्रमक्रमसकलहु
डावनकारणमैयहकीयोभेदुअ
रण॥पापछुडायधरमगृहवांऊं
याबिधिवंऊअरंभबुडांऊं॥दीये
समस्तजगकोबिबहाराथातैजग
कोवारिनपार॥चितजलतेजपवन
अकासा॥सबजगपंचभूतपरका
सा॥ब्रह्मादिकधारवरपरयंति
पंचभूतकरिसबवरतेताअरुये
कैअतमसबमांही॥तातैभेदक
हंकछनांही॥षापारितथापिमैभा
ष्योवेद॥ताकरिकीनेनांभेदति
नकेखारथसुषकेहेता॥बिबधि

उच्चारै फलनिसमेत ॥ १० ॥ देसकाल
एष्व्यसुभाव ॥ इनके भाषेनां नां
व ॥ येक नयेदयेक विधि भाषे ॥ ये
संकोच मांनिसबर भाषे ॥ १० ॥ जौनते
सकल मृगतहां नांही ॥ अरु ज
द्वजिसेवानकरांही ॥ परिजो क
मृगबक्ररहै ॥ परिमले छजहां
सागहै ॥ ११ ॥ अरु जद्यपितुरुकता
नांही ॥ परिमुग ॥ अदिकति
केमांही ॥ अरु जो मुगधादिकप
रे ॥ परिकदरजताहरिनकरे ॥ १२ ॥
रुकदरजतामेहीहोई ॥ परिजो
वेऊसरसोई ॥ सोसोदेसनिवे
कहीजे ॥ तिनमेंवासादिकनहि
जे ॥ १३ ॥ तिनतैं अरु देससुचिजां
ह ॥ तिनवासादिककौंवांनै ॥ अरु ज
कालधरमकोनांही ॥ सतक अ
भयेजामांही ॥ १४ ॥ सोसोकालनये
कहीजे ॥ उत्तमसोजामें विधिकीजे

ध्वचनतैत्योहं॥संघेतैपुष्यादि
कयोंहं।

बहुकालकोहोयअसुधाशर्दीकही।

धाम्मेंजोबरघाजलहो

व

सक्तिअनुमान

घृतहेमादिअनंत।२०।

जलमाटीबाईजथाजोग्यहोयसु

चारे फल निसमेत ॥ १० ॥ देस काल सु
गुण सुभाव ॥ इनके भावे नां नां भा
॥ एक नये दयेक विधि भाये यो
कोच मां निस बराये ॥ १० ॥ जौ नवे
कक्ष मृगत हां नां ही ॥ अरु जह
जिसे वान करां ही ॥ परि जो कक्ष
गव कु रहे ॥ परि मले छु जहां बा
माग है ॥ ११ ॥ अरु जद्य पितुरु कत हां
मां ही ॥ परि मुग ~~अरु~~ अदिक तिन
के मां ही ॥ अरु जो मुग धादिक परि
परिक दर जता हरिन करे ॥ १२ ॥ अ
क दर जता मे टी होई ॥ परि जो हो
वे कु सर सोई ॥ सो सो देस निवेद
कही जे ॥ तिन में वासादिक नहिं की
जे ॥ १३ ॥ तिन तैं और देस सुचि जां नैं
ते नैं वासादिक कौं वां नैं ॥ अरु जो
काल धरम को नां ही ॥ सूत क अदि
नये जा मां ही ॥ १४ ॥ सो सो काल नये द
कही जे ॥ उतम सो जामें विधिकी जे ॥

दिकजलादिकनिसुध

दिकतेहोयअसुध॥१५॥सुधअसु

ध्वचनतेत्योहं॥सुधेतैपुष्यादि

योहं॥तवहीपाककस्योजो

बहुकालकोहोयअसुध॥१६॥कही

सुमिसमानअसुध॥बहुतका

सुध॥भूमैजोबरयाजलहो

॥बहुतकालतैसुधसोहोई॥१७॥

भांतिशोरज्जानै॥सुधअसु

भेदपहिचानै॥विनुसनानसुध

लादिकास्नानदिकसुधजुवाना

दिक॥१८॥जीरणबस्त्रअधनकौसुध

वंतकौप्रमअसुधाशौरैसकल

क्तिअनुमानसुधिअसुधहीकीये

वधान॥१९॥सोसबदेसकालअनुस

विधिनयेदकोकीहोबिचार॥

पात्रवसत्रगजदंत॥तेलरु

मादिअनंतर॥२०॥कालअग्नि

तमाटीबाईजथाजोगपहोयसु

सुष

पावैसर्म॥३३॥धेमधरमसबहिनकं
येह॥मैटैसोकमोहसंदेह॥यानिम
तिमैनेदसुनाये॥धोरैधोरैमैवहरा
ये॥३४॥पीछेनरमकहिसकलनि
वारे॥ऐसीभांतिजीवनिसतारे॥ज
वनरविषयननुतमजांनै॥तबते
नमैआसक्तिहीठांनै॥३५॥तातैहिर
देउपजैकांम॥तातैतहांकलहेको
धाम॥ताहीरुतैक्रोधउपजावै॥तब
अबिवेषआपहीआवै॥३६॥सोअ
बिवेषहरैसबग्यांन॥तातैप्राणी
तकसमांन॥तातैकाजअकाजन
जांनै॥निसदिनबहुविधिचिं
नै॥३७॥सबपुरधारथहोवैहीन
निसदिनरहेदुषतअरुदीन॥ता
तैसमकैआपनआंन॥मिथ्याजी
वैबरषसमांन॥३८॥ज्योहोवैनुहा
रकीयाल॥स्वासनेतयोथोवै
ल॥कूंचिभरैअरुमैथुनकरै॥गं

मीसकरनरकहीपरै॥३५॥उबु
करककरजैसे॥विषयभोगनर
सोरततैसे॥मिष्टाविष्टेसकरसे
मी॥विषयलाग्नभूलेनरखामी॥
४०॥कुटंबभारनरबहेबहेमरे॥
नरकरुचौरासीमैपरै॥परउसुजो
लहेअगपानी॥विष्टेडवीकौकहे
वगपानी॥४१॥येनरतननहीविष्टेसु
गईये॥थाकरिब्रह्मविचारउकरी
अरुपुनिकहेकरमफलजेते॥
शादिकनांनोविधिकेते॥४२॥
कहिकहिरुचिउपजाई॥मेदिन
षेदनिविधिकरवाई॥जैसेश्रोषदि
पीयाये॥बालककौलाड
राये॥४३॥श्रोषदिकोफललाड
ताही॥श्रोषदिहूतैरोगसबजाई॥सु
हेतजोकरमनिकरे॥पुनिसुनि
त्वफलहीपरिहरे॥४४॥तबअ
तजिअरथहीपावे॥मोमैकैनिह

करमसमावे अरु एजवतें जनम
हीपावे तवतें आपही विषयक
मावे ४५ पुत्रकनित्रकुटंबरुप्रा
नां इनके हेतचहे सुषनां नां आप
आपकं करे अरु थ ति नकों मूर
षजां नें अरु थ ४६ असे या नवमे
निति नरमे कदे नजां नें सुषके म
रमें अरु ति नकों जो भरमत देवे
सदातिरंतर दुषित लेवे ४७ सोति
नकों कव हून बहांवे अरु थ रुकां
मनक देन दिटावे तातें में तो सब वि
धिजां नों के में करमरु अरु थ बधां
नं ४८ परिजेक लु सुरति मां हि सुन
थ अरु थ धरम अरु कां मवताय
ते ते सकल लु दुषनकारण हित
विचारकी न्हों उच्चारण ४९ असे
वेदतत्व नही जां नें मूरुषपुष्पत
वें न बधां ने फलनिहेत आरंभे क
रम ति नकों कदे न लु टे भरम ५०

कांमीक्रियएलोभअधिकार
सनांअकुलसदाद्विकारी।पु
मांहिफलकरिमांनै।कांमदि
तत्वनहींजांनै।धूमैनिनवे
हिरदांमांहीं।परितोहूतेज
जातैयहसबजगतपुसा
समस्तजाकेआधारा।धु
सक्रियायसबवरतै।चूंम
लोहज्योनिरतै।जाकीआ
हीमांनै।कोईमरजादानहीं
परऐसोमेंपरगटसबईसजे
लदेहमेंसीसापरितेकांमकर
मअंध।नामोहिदेवैअरुनहीं
पध।जैसेनैरोगमयहोवै।आगे
तबस्तनहीं।जोवैथ्योअगपानअंध
रमेष्टादेवैनहीं।निकटिमेंइष्ट।पपा
तेमोबिनुमममतौनजांनैहनिजीव
निजजादिकठांनै।तेफिरितिनहींहि
नैप्रलोकजनमजनमपावैभयसो।

रमसमावे अरु एजबतै जनम
पावे तब तै आपही विषयक
पावे ४५ पुत्रकनित्रकटंबरुश
मां इनके हेतचहे सुषनां नां आप
आपकं करे अनरथ तिनको मूर
प्रजां नै अरथ ४६ जैसे वा नवमे
निति नरमे कदेन जां नै सुषके म
रमे अरु तिनको जो भरमत देवे
सदानिरंतर दुषित लेवे ४७ सोति
नको कव फूनवहांवे अरथ रुक
मनक देन दिहावे ताते मै तो सब वि
धि जां नै कैसे कर मरु अरथ बय
नूं ४८ परिजेक सु रति मां हि सु
य अरथ धरम अरु कां मबताय
ते ते सकल सु डायन कारण हि
विचारकी न्हां गुच्चारण ४९ जे
वे दत त्वन ही जां नै मूरय पुष्य
वे न बयाने फलनिहेत अरं मे
रम तिनको कदेन छे नरम ५

शुभैतिनकेनिति

गंतपसाराश्रु

जाकी

चूमकसंग

कोईमरजादानहीभाने॥

ऐसोमेंपरगटसबईसजैसैसक

मन्त्रधनामोहिदेवैश्रुनहींबंध
 पधजैसेनैनरोगमयहोवै।।प्रागेहो
 तबसनहींजोवै।।यौंश्रुपांनश्रुधक
 रमेष्टादेवैनहींनिकटिमेंइष्ट।।५५।।
 तेमोबिनुमममतौनजानैहनिजीव
 निजजादिकठानै।।तेफिरितिनहींहि
 नैप्रलोकजनमजनमपावैनयसो

॥ ५६ ॥ जबयाके बडुहिंसा देयी ॥ ह
 निहनि जीवजीवका पेयी ॥ तिन
 ति कही येवांनी ॥ हिंसा जगपहि
 हि वषांनी ॥ ५७ ॥ पसूबधयेक
 भाष्यो ॥ अरु समस्त हरिकरिना
 ॥ जब प्राणीतामें वहरावे ॥ तब सु
 निवेदही सकल मिटावे ॥ ५८ ॥ यानि
 ति पसुहिंसा भाषी ॥ सो मूरघनत
 रिराषी ॥ तातें बडु विधिकर
 करै ॥ बडुकां मनां हिरदै न धरै
 ॥ पसुहंसा करिकें विवहार ॥ जे
 बहो परकार ॥ देवपित्रभूतनि
 ॥ उतरे सुषंछानही
 ६० ॥ सुपन तुल्य सुरगादिक भोग ॥
 तिनकें उतम सुनिया लोक ॥ तिन
 अंछा हिरदै धारै ॥ इव्यवर
 रमनि विसितारै ॥ ६१ ॥ विघन हो
 डुकरमनि मांहीं ॥ सुरगादिक डु
 नांहीं ॥ ज्योको ईसायर पारही

धनहितग्रहकेधनहिलगावे
 रापिचैपरेविघनजेकोई।तोदो
 सोई।त्यौजेबहुविधिक
 उपावे।तेपसूरहलोकतेजावे
 शं।सांतिकजेतेदेवनभलें।जहा
 कनराजसीजजें।तांसभूतप्रे
 तकोंसेवे।तनमनधनलेतिनकों
 वे।ईध।यहांजगपवहुतविधिक
 विप्रनिबहुतदयिणादीजे।ता
 सुरगादिकसुषपईये।तहांवहु
 विधिभोगभोगईये।ईध।पुनिज
 होवेतिनकोअंततवहुजेन
 मेंधनवंत।ऐसीनांतिकामना
 रें।तिननिमतिकसोविमनेरें।ईध
 तिनकोमेरीवानननावे।नकिक
 तैहिरदेअवे।जद्यपिवेदकसे
 चारै।धरमरुगणकांसविपुत्र
 ईध।परितयापिनेदुर्ग।दुर्ग
 कमकमइयेकनकुइवे

क ५६ जबयाके बडुहिंसा देषी ॥ ह
निहनिजीवजीवका पेष्ठी ॥ तिनके
हेति कही येबांनी हिंस्या जग्यहिमां
हिंसायांनी ५७ पसूबधयेकजित्त
में भाष्यो श्रुसमस्तहरिकरिना
ष्यो जब प्राणीतामें वहरावे ॥ तबसु
निवेदही सकलमिटावे ५८ यानि
मतिपसुहिंसाभाषी ॥ सो मूरधनत
त्वकरिराषी ॥ तातें बडुविधिकरम
निकरे बडुकांमनां हिरदेन धरे ॥ ५९
॥ पसुहंस्याकरिकें विवहार जेजे
यावे बहोपरकार ॥ देवपित्रभूतनि
कें जजे ॥ उत्तरे सुषश्रंछानही तजे
६० ॥ सुपनतुल्यसुरगादिक भोग ॥
तिनकें उत्तमसुनियालोक ॥ तिन
की श्रंछा हिरदे धारे ॥ इव्यपरचि
करमनिविसितारे ६१ ॥ विघनहोहि
बडुकरमनिमांही ॥ सुरगादिक
यांवेनांही ॥ ज्योकोई सायरपारही

परि सुर्तिको आसय नही जानै
कब औरें और बघां नैं ६८ स
ब्रह्म महादुर बोध ताको भू
न पावे सोध सुषिम थूल रूप है
के मो बिन ने दल है को ताके
प्राण रूप परा सेनां म पस्प तीव
न में धां मा ती जी कंठ म धि मां मूल
थी पर गट बै बरी थूल ७०
तिन को कोई नही जानै ताते
और बघां नैं अंत पार कोई न है
वे ज्यो सा थर था हो नही जावे
तिगं नीर अर थ है या को कोई
न जानै जा को में सब ही न में अ
मी सक्ति अनंत सकल को स्व
७२ सब में व्यापक ब्रह्म सरूप
पतनिक बहू प्रम अनू पा सो
पक सब हि न मां ही सब दरु
जा को नां ही ७३ कं म ल ना लि
तू जैसे सब दरु प सब मे रो ले

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ वाच ॥ चोपशं हे देवसंत
केते कहो कृपा करि मोसे ते ते
नको रचित संकल संसार जो
सेना ना बिसतारा ॥ शतुमतो श्रृंष्टा
वीसते कहते मेदि टकरि मन
॥ परिषुते रिषव कुबिधि कहै
श्रुति नितै सुनित्यो ही गहै ॥ २ ॥ के
कहे तत्व वीस ॥ श्रुत्यो के
पचीस के ई कहै षट् के ई चारि
कही भाषे सप्त विचारि ॥ के ई नव
कहे विवेक ॥ के ई भाषे दस
श्रुत्येक के ई तत्व वता वैषोड
० ॥ त्यों के कहै त्रीयो दसा ॥ के
भाषे दस श्रु साता ॥ ये रिष मते सु
ति विख्याता ॥ को न परी योजन

ले भाषे अपने अपने मत ही राखे
५ कृपा करी निज बने सुनावो ॥ स
सम तो सो मोहि जनावो ॥ सुनि उ
वके बने रसातल ॥ कृपा सिंधु बोले
गोपाल ही ॥ श्री जगवान उवाच ॥
हे उद्धव ज्योये सब भाषे ॥ जितने
जितने तत्व न राखे ॥ ते ते सब तुम
जानों सत् ॥ तत्व विचारें सबे अस
ति ॥ ७ ॥ माया देखि कहै सो जेते मा
या मां हि सति हे तेते मोहि देखि जे
तिन कौ देखे ॥ तो समस्त ई मिथ्या ले
खे ॥ ८ ॥ माया मां ही युक्ति विचारें ॥ अ
पनों अपनों मतो उचारें ॥ ये यों यह
यों यह यों नां ही ॥ कहें सबै मिति
आपुन मां ही ॥ ९ ॥ यह यों ही है ज्यो
में भाषों ॥ तेरी कही सति न ही राखे
या विधि मम माया भरमाये ॥ तिन न
नां विधि पंथ चलाये ॥ १० ॥ मम माया
की सक्ति अनंत ॥ तिनके पंथ न कोन

अतः ज्वसमदमनुरं तरं च
 त्वये भेदसकलमिति जावे ।
 १। जेते तत्त्वसकलमायाके जिं
 ये मते ताताके किमक्र
 गये । त्यों त्यों भेद ब्रह्म
 भये । १२। जैसे ये कवरष विस
 साकी संपत्ति ब्रह्म परस्कार ।
 साया ब्रह्म तै परसाया ।
 तिनके ब्रह्म विधि उपसाया । १३
 तिनको ब्रह्म भांति विसतार ।
 नफल विवधि परकार । अरु
 वरणैको ईश्वरों ज्यों
 त्यों होई । १४। थोरे होहि क
 ब्रह्म होहि मिलिये पर
 साया उपसाया मिल्य ब्रह्म विधि
 होवै । ते सब पंथ सति करि जोवै । १५।
 संसार वरषि विसतार । माया
 कार । तत्त्वसकल
 परसाया । अरु तिनके ब्रह्म वि

उप
धिसाया १६ तातैं ज्यौं बरणौं त्यों सत्स
परिसब माया सकल असति ज्यौं
ही ज्यौं जिनके मन आयो त्यों ही
त्यों तिन बरणि सुनायो १७ माया
करि बंध्यो अतम जातैं छोरै सो
परमात्तम ये है अरु जड चौबीस
तिन कौं मिलें सकल छुबीस १८
अरु जे मुक्ति बंध है दोई ते भरम
यास सति नकोई तातैं जीव ब्रह्म
हे नांहीं यौ पचीस जां नौं मन मांहीं
१९ सत्तर जतम गुण है जे ते जड स
रूप माया के ते ते रज उत्तपति सा
तिक प्रतपाला सांमसरूप ग्रसतें हे
काला २० राजस हूतें करम अधि
कार सांमस तैं अविषे अरु पार
सांतिक गुण तैं उपजे पां नां ये है
माया के गुण नां नां २१ अतैं परे अ
तमां मां नौं तातैं ब्रह्म रूप करि जां
नौं पंचबीस ताहीं तैं कहें अरु त्यों

मुनिश्चौरैंगहो ॥ २२ ॥ सो है कालगु
निबिसतार ॥ सुत्र सुभाव सो सक्ति
सार ॥ तातै काल रूप हरि जां नौ ॥ २३ ॥ ता
सुभाव महत त्व ही मां नौ ॥ २४ ॥ ता
तत्व अधिक नही गहै ॥ पंचवीस
छवीस ही कहै ॥ पर कि पुरष मह
त्व अहंकार ॥ तन मात्रा तै पंच पर
कार ॥ २५ ॥ करन रूतु चानै नर सद्य
ये पंचौ इंद्रीय है ॥ पांन पायु उप
एकर बाणी ॥ पंच कर म इं
यह जांणी ॥ २६ ॥ मन दस हू इंद्रीय
कौरा जा ॥ जाकी सक्ति करै सब का
॥ दित उल्लते जपवन आकास ॥
अर्वाइ सतीन गुण पास ॥ २७ ॥ गति उत्
गक्रम अरु वचना ॥ ये पंचौ इंद्री
यफर रचना ॥ तातै अष्टादश तैत
अधिक न भाये ॥ पांनी सत्व ॥ २८ ॥
ष्टि आदि ते माया येका पुरष स
कै तै नई अनेक तन मात्रा अरु म

इतत्वश्रहंकार॥ येहैं कारण
रकार॥ २७॥ पंचनूतश्ररुमन
श्रीयहस॥ कारयरूपप्रतिये
स॥ सतरजतमयेतीनपर
रच्योसकलविसतार॥ २
कारणप्रक्रियेजांणो॥
मतिरुसाषीमांनों॥ श्रंछास
षतैंपावै॥ मिलिसमस्ततवसृ
उपावै॥ ३०॥ सपतधातको
॥ श्रान्तमदिष्टाकेश्राधार॥
कलतत्वसप्रहिमेंश्राये॥ ता
निसप्रवत्ताये॥ ३१॥ पंचनू
उपजाये॥ तिनकेबहुविधिदे
बनाये॥ श्रापुप्रवेसकीयोहरि
में॥ चेतनहीसतहैंजिनजिनमें
३२॥ श्रैसीविधिषटकोविसतार
प्रापुमांहिबहुकरेंविचार॥
श्रापतेजत्रेयेतत्व॥ श्ररु
तसबसत्व॥ ३३॥ याविधि

सत्तारं जुंचोनीचोसकलसे

भूततनमात्रापंचमिच

श्रीयमितिसर्वपरपंचत्रिधाम

श्रातमामिलेदेससाततत्वस

तदसजानोतातमनश्रातर्मये

करिजानोतेजनषोडसतत्व

षाने। ३५। पंचभूतश्रुइं श्रीयपं

ब्रह्मजीवमनकोपरपंचांशे

रिपंथचलावैतेरहकोस

जगतवतावै। ३६। इंश्रीयपंच

चईभूत। श्रातममितिसर्वजग

त। श्रैसीविधियेकादसक

त्यैसुनिहिरदेग है। ३७। पंच

तमनबुधिल्रहंकार श्रातम

लिनवकोबिसतार। श्रैसीविधि

हूमारगकहै युक्तिविचारिहिर

दामेगहै ३८। प्रकृतिपुरुषकोल्हे

बेथ। इनकौंजानियेककोयेक

७ सुनितत्वनकौग्यान। ३९

छो परम सुजांन ॥ ३५ ॥ चरन जं
हे प्रभू जी ये गं न सुनायो ॥ मे
रे उर को भर म मिटायो ॥
न रूप अ विना सी ॥ सुद्वानंद पर
म परम परका सी ॥ ४० ॥ त्रै सो
त म तु म रो रूप ॥ परे गुण नि है प
र म अ नू प ॥ ज ड वि ना स म य प्र म
अ सु र ॥ उ य रूप प ल सु य न सु ह
४१ ॥ त्रै सी प्र क ति पु र य सो न्मारी ॥
तो ह न ई पर स पर प्पारी ॥ प्र क ति
मां हि अ त्त म मि लि र ह्यो ॥ अ रु अ
त म पर क ति क रि ग ह्यो ॥ ४२ ॥ इ न
में ने द न जां न्ये गे परे ॥ ये क मे क के
व अ नु से रे ॥ इ न में प्र क ति क हां लो
क ही थे ॥ कौं न अ त्त मा जो दि ट ग ही
ये ॥ ४३ ॥ क रि क रु ण बां णी वि स्ता
रो ॥ व च न बां ण सं सैं परि हारो ॥ तु
व मा या बंधो सं सार ॥ तु म ही कृ त
हो य उ धार ॥ ४४ ॥ तु म ही मा या क

नो। कृपा करोतवतुमही
 । बां नी सुनी न कति अ मने की।
 श्री कृष्ण विवेकी ॥ ४५ ॥ श्री न
 उद्धव ये पां न अ
 को ई एक ल है म म सा धा ॥ सो य ह
 न सु नां उं तो हि ॥ तू है सदा अ नू ब र
 हि ॥ ध र्ही उ र्ध व प्र क ति र चै सं सा
 र ॥ सु षि म थू ल वि व धि पर का र ॥ उ
 जै व र तै हो य वि नां सा ता मै अा त म
 पर का स ॥ ४५ ॥ उद्धव ये हे मेरी
 ॥ ति न स त र ज त म गु ण उ प
 त्रि वि धि स क ल वि स तार ॥
 क च्छ वार न पार ॥ ४६ ॥ त्रि
 धि क ह न कौं प रि व रू ने द ॥ जि न
 ल है नि त ये द ॥ अ ध्या त म ॥
 धि दे व अ द भू त ॥ त्रि वि धि रू प स व
 अ द भू त ॥ ४७ ॥ प्र ग अ ध्या त
 अ द भू त ॥ र वि अ धि दे व ल मि ति ॥
 द भू त ॥ ती नो मि ले पर स पर ज ब ही

तिनकोकारा तसीकेतवही पूती
मोंबिनांक छुनहीहोई तीमोंमिन
वरतैसबकोई तुचासपरसपवन
त्योजांनों करणरुसबददिसाकरि
मानों ३१ नासासुगंधश्चस्वनीसुता॥
जिह्वारसरुबहुणजलजुता चि
तचेतनांअंतरजांमी बुधिवोधनांब्र
ह्मास्वांमी पूर अहंकारअहंकृता
रुद्र मनमानिवोदेवताचंद्र वावि
धिविधिविधिप्रपंचपसार सकलपरै
श्रातमनिजसार पूर इनतीम्योवित
जगतनहोई तेश्रातमविनरहेनको
ई श्रादिसकलकीश्रातमयेक जा
तैचेतनिहोयअनेक पूध श्रातमख
यं प्रकासअविनासी चेतनरूपसक
लप्रकासी येसबश्रातमकेश्राधार
अरु श्रातमसकलकेपार पूध वि
न जगतनांक छुनहीहोई अरुश्रात
मजजांनैकोई मृतततैउपज्योअ

न

सो कहते हैं ये नहीं उपाधी

हो

प्रकरार्हो परिजो लो

नजे तो लगे निज अम्प

ननतजे जबही मेर सरणही अ

रथको गान ॥ उध्वकी नी प्रहम
तव ॥ हरिजन प्रमसुजान ॥ ईश ॥ उ
ध्व उवाच ॥ लोप ई तुम करि रव
त बुधि हे जिनकी ॥ कही ये देवको
न गति तिनकी ॥ सकल बियापी
तमाक ॥ क्यों करि पावे देह नरने
क ॥ ईश ॥ अरु सुभ अरु सुभ करम हे
जेते ॥ त्रिगुण रचित कही ये सब ते
ते ॥ तिन करम निम्ह करम बंधा
वे ॥ क्यों करि जो निरुजो नी आवे ॥
ईध ॥ अरु मर मरे कैसे करि देवा ॥ या
को मोहि बतवावे सेवा ॥ ये तुम बिना
नको ई जानै ॥ जद्यपि विद्या वेद
बयानै ॥ ईध ॥ जो कछु पढे बंध सो
होई ॥ ताते तत्वन जानै कोई ॥ या वि
धि उध्व पूछो ज्ञान ॥ तव हसि बो
ले श्री भगवां ॥ ईई ॥ श्री भगवां न उ
वाच ॥ उध्व यह मन परम बिका
री ॥ सब इंद्रिय न मां हि अधिकारी ॥

इं ड्रीयन कै मन ई सब करै। सुबहि
तब ऊ उदिम बिसतरै। ई प्रसोत
नत जिहू जेतन जावै। तहां ई तहां अ
तमां आवै। जिन जिन सुधन सुनै अरु
देयै। तिन तिन कौं उत्पम करि ले
वै। ई ८॥ तिन को सो मन निस दिन
ध्यावै। येतन ध्यान भये तहां जावै
वहतन पाय बिसारेया कौं। जनम
मरण कह्ये तु है ता कौं। ई ९॥ जा
तन में बांधे अविमान। छो डै पूर
बतन जो आन। जनम मरण यात
न कौं सो ई। हू जो जनम मरण नही
को ई। १०॥ जैसे सुपन मनोरथ जा
वै येतन छो डि और में आवै। तब
यातन की बुधि न रहै। बाही तन कौं
आपु ही कहै। ११॥ जनम अरु मरण
सुमृति को होई। आतम जनम मर
ण नही सो ई। और कछु आतम नही
मरे अरु कब कब नां ही अवतरे। १२॥

मैंमनकोअभिमानां॥

तनउपजतहेनांनां॥तेसबआ
केआधारा॥तनमनबुद्धिचित्त

॥७३॥तिनसंगतिआ
मकौंदुष॥तिनहेतजेबि

हीसुष॥उध्वसकलदेहहेजे
सदासकलबिनसतहेतेते॥

कालनदीपरवाहप्रचंड॥

रिपलकपरतनहीषंड॥जे

नदीनिरंतरबहे॥परिदेयन

हीरहे॥७५॥अरुज्येअरचिनि

तरजावे॥परिदीवादिकतिमेंर

अरुजैसेसबवरचनकेफर

सैतौपरिधिरनहीपल॥७६॥

सबदेहनि कौंजांनौ॥कालही

ग्रसतनिरंतरमांनौ॥जद्यपिअव

जातीलेषे॥बालकुंवारजु

दिकदेषे॥७७॥परितोफ्रमूर

हीजांनौ॥मैवहईहौयोंकरिमांनै

छात्ररु

द्वारु

श्रवताराबाल

।सौहीतेर्

परवसिपरंछोडिसवगये॥८३॥

तव वर धन दैवै च तन सो ही ॥ नैन न
र म ते ज्यो को इ दे वै ॥ तव सब धर
णी भर म ती ले वै ॥ ए ५ ॥ जैसे ये आ
त म धिर जां नो ॥ शोर स क ल चं च
ल क रि मां नो ॥ निश्च त म न क रि दे
षे ज व ही ॥ निश्च त न ब्र ह्म रू प त व स
व ही ॥ ए ६ ॥ जैसे सु प न म नो र थ मू ष
यो सब ज ग न्त्र रू वि ष या सृ ष ॥ प
रि ज द्यु पि ज ग स त्प न को ई ॥ तो ह्म
क दे नि व र त न हो ई ॥ ए ७ ॥ जैसे सु प
न स ति क छ नां ही ॥ परि जो लो है नि
श मां ही ॥ तो ल ग स क ल स ति ही जां
नो ॥ सु ष ड ष पा वै उ दि म वां नो ॥ ए ८
ज्यो न्त्र ग्पां न नी द व सि जो लो ॥ ज न म
म र ण नै मि टै न तो लो ॥ ता तें उ द्ध व
स व भ र म जां नो ॥ म हा न्त्र न र थ रू
प क रि मां नो ॥ ए ९ ॥ वि ष य न को उ दि
म छि ट का वो ॥ न्त्र रू जै है ते स क ल
मि टा वो ॥ जो ल ग न्त्रा प ही स म कै नां

ही। तो लगा है नां नां नै मां ही ॥ १००० ॥
 प्राप ही सम ऊँ नहिं जो लौं ॥ मम
 आधी न न हो वै तो लौं ॥ मम आधी
 निरंतर रहे ॥ जग उपहास सी स
 ब स है ॥ १०१ ॥ के ई ये क करै अप
 ई गहि बांधे अपां ना के ई
 धू के तन में ॥ डारे धूरि नीय के
 न में ॥ १०२ ॥ ये के डहे के मूढ डिगा
 ये के निनि दे चोट लगावै ॥ ऐसे
 विधि डष उपजावै ॥ ब्रह्म वि
 य के बैन सुनावै ॥ १०३ ॥ परि जो अप
 श्रेय विचारे ॥ सो ये को मन में न
 धारे ॥ ब्रह्म तक हते मन न
 ॥ सो न वत जि मम चरण न आवै
 १०४ ॥ मेरो पंथ डग की धारा ॥ जो
 डिगे सो उतरे पारा ॥ हरि के बैन
 कर जा नि ॥ उह व प्रह्न करी भय
 मां नि ॥ १०५ ॥ उह व न वा चा ॥ हे प्र चूत
 ये बैन सुनाये ॥ सो मेरे उर डु कर

ये जो असाधू वेका जिसका वे ता
तंस हे कौन विधि जावे ॥ १०६ ॥ मेरे हि
रदै ज्पां न वहरा वो ॥ सह न उपाय
मोहि समजा वो ॥ ते सह नौ उत म क
रि जां नैं ॥ अरु त्यों ॥ ओर निपा सि वधं
नैं ॥ १०७ ॥ परिते अाय परे नही सहे
अंत प्रकृति के बस्ये करे हे ॥ केवल
जेतु वचरण अधारी ॥ तिनके कोई
नही विकारी ॥ १०८ ॥ ते निति निश्चल
सीतल रूप ॥ निति अनंदित प्रमत्त
नूप ॥ तिनको कहे लिपे कछु नां
सदा बसेतु वचरण निमांही ॥ १०९ ॥
ओर सकल प्रकृति अधीन ॥ सदा वि
कार निश्रामें दीन ॥ तातें तुमही क
रुणा करो ॥ ज्पां नां दि क म महिर दे
धरो ॥ ११० ॥ दोहा ॥ जैसी की नही प्र
जब उद्वप परम मुजां न ॥ भाष्यो स
न उपाय तब ॥ भव नं जन भगव
१११ ॥ इति श्री भागवत महपुराणे ये

इसस्कंदे श्रीभगवदुद्धवसंवादि
द्वावीसमोऽध्यायः ॥ १७३ ॥
श्रीभगवानुवाच ॥ चोपई ॥ हिउध
वश्रैसोनहीकोई डुरजनवचन
दुमितनहिहोई डुरजनवचनवां
नजोसहै कनवचनदोभि
नहितहै ॥ ३ ॥ नोसोसाधकहां
वैयोविनमहुपदनिमुहिपावैये
चकसंभइलहैवोना अरुते
हैमरमरुयंनो ॥ ४ ॥ नोनतेइय
होयनतेयेइइवचनवांणलि
तैजैसोपरतेयेइउपयमुनाऊं
सहनसंभलइइरंगेऊं ३ ॥ सो
सोसुनोयेकइइइयजानेहोय
हिरदेपरकाननेचकयेइइय
नमयनार्थनकरेयेमुनाऊं
षीभकयेयइइइइइइइइ
मानोइइकइइइइइइइइ
तवतानिचकनाइइइइइइ

तिश्रपनीसबहीदही॥५॥सोश्रव
नोंसुचितहोयमोसों॥निजजनजा
निकहतहोंतोसों॥मालवदेसर
हेघरजाको॥षेतीवनिजजीवका
ताको॥६॥क्रोधवंततोभीश्रुकं
मी॥विप्रनिकेश्रपजसकोनामी
जाकैहोयद्रव्यश्रधिकाई॥श्रु
जोनहींदेयनहिषाई॥७॥श्रापन
कोंपीडाउपजावै॥पुत्रादिकषांते
नहींपावै॥देवरूपितरश्रतिथन
हींपोषै॥बहनभानजीकबहन
संतोषै॥८॥सोकदरजजोश्रेसोहो
ई॥तातेनीचोश्रोरनकोई॥सोकद
रजइजिश्रेसोभयो॥सबजगमेंजि
नश्रपजसलहो॥९॥ज्ञातिश्रतिथ
बंधवनिजतनकों॥इनहींहेतनष
चैधनकों॥पुत्रादिककलपेडय
लहै॥ज्ञातिभृतिडरवैननिकहै॥
१०॥पुत्रकलित्रश्रुकंन्याभाई॥ज

वितहेताको॥धरमका

नागपत्तैज

धरानमांहीबिसतस्यो

ध॥केसुराजविग्रहतेंगयो यो

ब्रह्मनातिषीणसबभयो॥जवता

यो॥शुभ्रुत

ताचितानिसदिनवस्योहिरदामै

सब करै विरुद्ध ॥ आपु आपु मैवां
नै जूध ॥ २० ॥ इव्य काजि अतिको
ही करै ॥ तिन कौं मारे आपु न मरे ॥
नहित प्रीय प्राण निछिट कावे ॥
पुही मूठ नरक में जावे ॥ २१ ॥ ताक
देव ब्रह्म त विधि ध्यावे ॥ परिया नर
देही नहीं पावे ॥ सो नर तनता में हजि
देह ॥ करुण मय हरि जी को गेह ॥
३० ॥ ता कौं पाय अरथ नहीं साधे ॥
सब तजि हरि कौं नहिं आ राधे ॥ मह
अरथ अरथ कौं गहे ॥ सो नव सिंधु
आपु ते ब्रह्म है ॥ ३१ ॥ ता तें हजो नहीं म
ति मंद ॥ परे दुय में तजि आ नंद ॥ देव
पितर रिष भूत सहाई ॥ पुत्र कलित्र
आपहित भाई ॥ ३२ ॥ धन ही पाय जो
इन्ह हिन पोषे ॥ और नूक कौं नहीं
संतोषे ॥ सो सब त्याग नरक में जावे
तहां मूठ नां नां दुष पावे ॥ ३३ ॥ सो त
न धन में हृथा गुमायो ॥ नव दुष ते

आपबचायो॥ जाहि पायबु

सी करे॥ तातें बडु रिनज

ब्रध॥ सो नरतनमें वृथा गमायो

डो॥ अरथ अरथ उपजा

बल आपु सकल मम गये॥

सिध वृद्धि अंग सब नये॥ ३५॥ अ

में अरथ कौन बिधि साधू॥ उर

धके सें आराधनाई जे अरथ

बजां नैं॥ तेऊ कौ॥ अरं ननवां नैं

ही॥ छोडे अरथ अरथ उपावैं॥

पक्ष पदुष पावैं॥ परिये

नहीं स्वतंत्रा॥ सकल देयी यतु हैं

त्र॥ ३५॥ तेजा की माया करि मो

नटवाजी के समि सब सोहे॥

सो प्रभू बडो बलिष्ट॥ ब्रह्मा

आदि सकल को ईष्ट॥ ३६॥ जेधन

अरु जेधन के दाता॥ जेकां स

कां स बिख्याता॥ अरु बडु

कर्म हैं जेते॥ मात पिता सुष

ईकेते॥३॥कहोकहांतैहितश्राच
रेंमृत्सुं गस्तजेनहींपरिहरें॥काल
रूपसत्रुहैजाकौ॥कहोकहांकोसु
षहैताकौ॥४०॥परिजेदीनबंडुन
गवांन॥करुणासाग्रपरमनिदान
तिनहींमोकौंकरुणाकरी॥जातै
ममउरझैसीधरी॥४१॥भवसागरतै
तारेंजाकौ॥देहिनांववेरागहीता
कौं॥तातैमोहिदीयोवेराग॥मेरेप्र
गटेपूरणभाग॥४२॥अबजोश्रायु
होयकबूमेरो॥ताकरिभजनक
रेंहरिकेरो॥यातनकेगुणसकल
निवारें॥मनतैसकलकामनांरारें
४३॥सकलसाधननुमोदनकरै
तथासुयौकहिउच्चारै॥जद्यपि
श्रायुश्रीरहेमेरो॥तोहृहरिकोप
हेनेरो॥४४॥नृपषष्टांगजबहीह
रिध्याद्यो॥येकमऊरतमेंप्रभूप
यो॥तातैप्रभुसमकोईनाहीं॥ज

प्रगट होय पलमांही ॥ ४५ ॥ अ
 चक्रमश्रवता कौं नजों ॥ ४६ ॥ जी
 कलकां सनांत जों ॥ ४७ ॥ निश्रे
 मनमें धस्यौ ॥ निशुक नयो सकल
 परिहस्यौ ॥ ४८ ॥ सीतल हिरदैत्र
 सब त्यागी ॥ निश्रल नयो विप्रव
 भागी ॥ अहंकार ममता क
 ही ॥ एकाकी विचरै नूमांही ॥ ४९ ॥
 य प्राण वचन मन गह्यो ॥ अंतर
 बाहरि संग ही रह्यो ॥ आप ही का
 कंन लयावै ॥ निष्या हेत ग्रह
 जावै ॥ ५० ॥ संसकार

॥ जीरण हूक बसतरत
 चुक बृह विप्र कौं जोवै ॥ तब
 उद्यघात की होवै ॥ ५१ ॥ केई ता
 कौं दंड बुडावै ॥ केई पात्रयो सिने
 केई लेयक मंडल करतै ॥ केई
 कसन देहिन घरतै ॥ ५२ ॥ केई धू
 लिभीषमें डारै ॥ केई मूह क्रोध करै

मारें॥ केई आसन कौले भागें॥ उरध
करि केई पग लागें॥ ५१॥ केई कंथा
कौ परिहरें॥ मारि मारि बां नी उच्चरें॥
केई बोसिले यजपमाला॥ केई ब
स्रजायले बाला॥ ५२॥ केई आंति
निकरि देवे॥ केई बोसि बोसि पुनि
लेवे॥ केई नी यज्ञ नले जांई॥ भोज
न करणें पावे नां ही॥ ५३॥ केई तनम
ष्टुं के मूतें॥ केई निदा करें बहूतें॥
केई कांनन लागपुकारें॥ केई सी
धूलि जल डारें॥ ५४॥ केई मूनि छुड
य बुलां वे॥ केई बोलत मौनि गहां वे
केई ताहि बांधि करि राये॥ जान
पावे केई नाये॥ ५५॥ केई करै ब
त अपमानां॥ निंदै बहू विधि मू
ज्ञ जानां॥ यह है चोर जानन ही प
दिन देखे नि सचोरी आवे॥ ५६॥ य
कोषीण भयो है वित॥ तातें यह
व्याकुल चित॥ सकल कुंड बय

रेकते॥परियाके

गहिरहो॥भ्रम्यौकरिक्रोधबंध
जेडारो॥काठमांहिदेऊपरिमा रे

तिकैडषभावेअसै॥देवश्राम

दे

कदेनश्रवैतनकोसुष॥परिसो

मसबजानै॥ईशतवतिनिभायी

वेक॥ निष्कक कहे वचन तब जे
तौ सौं भावत हों ते ई॥ ई३॥ निष्क
दुष सुष दायक लोग नये
श्रु नही देह नही सुरजेते॥ नां ग्रह
नही क्रम नही काल॥ ये समस्त है म
नके व्याप्त॥ ई४॥ जगत चक्र मैं मन ही
फिरावै॥ जीव महा दुष मन तें पावै॥ म
न ही करै विषयन को भोग॥ ता तें
होय करम संयोग॥ ई५॥ होवै सत
रजतम विसतार॥ जातें जौ निविष
धि परकार॥ ता तें दुष निरंतर लहे
देह जोग तें निस दिन दहे॥ ई६॥ ता तें
दुष दायक मन येक॥ संत करै या
परम विवेक॥ आप आत मास दा
अनीह॥ परि सो मन करि करै समी
ह॥ ई७॥ मन सौं बंध्यो अचि द्या मां ही
ता तें बंधन जां नैं नां ही॥ विषय समां
निविषयन कौं यावै॥ ता के संग जी
व दुष पावै॥ ई८॥ यो है जीव ब्रह्म के

रस परम प्रकासी

नमनहीक

म
तबसीवजावभेदनहीकोशी॥१०॥

कबूक

नबसिकीन्होंनाह

लवृषाहीजाशी॥११॥स्वरणादिक
देवैबहुदांनायेकादसीआदिह
तनांनो॥अपनेअपनेधरमनिक
रेंसमदमयंमनेमनविसतरें
१२॥विद्यावेदपढेउच्चारेणोरस
कलधरमनिविसतारेंपरिजोब
सिनांहीमनयेक॥तोमिथ्याआच
रणअनेक॥१३॥मनबसिकाजक
हेसबतेते॥विधिआचरणवेदमें
जेते॥मननिग्रहसोउतमज्ञान॥म

ननिग्रहविनसबश्रुपांन॥७४॥ता
तैजोमननेहचलकरे॥सोबिधिक
हेकौबिसतरै॥ताकौबिधिनरुते
कच्चांही॥सबबिधिहेमननिग्र
हमांही॥७५॥श्रुजेवसिनांहीम
नयेक॥तौबिधिकीनेहृथाश्रुने
क॥सबहिनकौफलमनवसिक
रणौ॥मनवसिकाजसकलश्रुच
रणौ॥७६॥मनकौवसिकरेजोकोश्री
इंद्रीयगुणश्रापहीवसिहोदी॥क
रिकरिजतनवकुतमरिजांश्री॥७
मनवसिभयेसकलवसिदेवा॥त
मौभवनकरैनितिसेवा॥सकल
वत्तिनतैमनवखिवंत॥मारिकरे
सबहिनकौश्रुत॥७७॥मनकौको
जीतनसकै॥वकुतनुपायनक
करिषके॥श्रेसेमनकौजीतेके
सबहिनमांहिप्रबलहेसोई॥७८॥
सोडुर्जेयरिपुवसिनहीकरे॥व

रिजुद्यादिक विसतै॥ बिरीमित्रव
 तविधिवांनै॥ अनिहित अरुहि
 तिनतैजांनै॥ ६०॥ तेअतिमुठसु
 नहीहोवै॥ मनजीतंविनजुगजु
 रोवै॥ दुषरूपजडमिथ्यातनकौं
 प्रापुजांनिकरिवांध्योमनकौं॥ ६१
 कुकीयोदेहसबंधी॥ तिन
 मूरयममताबंधी॥ यहमैथेसम
 मेरे॥ मित्रसत्रुवांनैबहुतेरे॥ ६
 तातैमूठमहादुषपावै॥ उपजिउ
 जिपुनिमरिमरिजावै॥ तातैदुषको
 नहीकारण॥ आतमकौंनवज
 रण॥ ६३॥ अरुजोसुखदुषदा
 मोकौंदुःखदेतहैजेते॥ तेसबसु
 यमोकौंनांही॥ देहयेकसबआप
 तमांही॥ ६४॥ तेदुषसुखदेहईपावै॥
 प्रातमकेककुंनिकदनआवै॥
 पितनकेसंजोग॥ करैजीवहीसु
 यभोग॥ ६५॥ तोऊमेंदुषदेउंका

कों रूप सकल मम देवों जाकें ॥
मन्त्राप कों क्यो दुष दीजे ॥ अपनो
हेत अप क्यो कीजे ॥ छ ई यात नम
हे महा दुष पांती ॥ अरु तिन हूमें
उपजां कुं ॥ दंत न भूति जीभ का
जे ॥ तो फिरि कहाति क दुष दीजे
॥ दंत नि अरु जीभ ही दुष देही ॥
सो तो सकल अप करि लेई ॥ इं ई
य अधिपति देवता जेते ॥ जो दुष दं
नि हौं हि सब तेते ॥ छ ई ॥ तो क अप
कोप क्यो कीजे ॥ परिगुपाधिक्यो सि
रपरितीजे ॥ कर दीजे मुख मां हि अ
सन सों ॥ सो मुख का टेक रही दसन
सों ॥ छ ए ॥ तो पावक अरु वासव जां नै
राग दोष ना वै त्यों वां नै ॥ यों सब इं ई
नके सब देवा ॥ करै अप में दोष रु
सेवा ॥ ए ॥ तेते सब जां नै त्यों करै ॥ गं
नी अप नै मन नही धरे ॥ अरु जो मुख
दुष दाता अप ॥ पूजे को क चूनां हं

पाप ए शोये सकल आपनो सु ना
व को ई को न आनी ये अ भाव ॥ अ
रु आत म में सु षडु ष ना ही ॥ उपजे
ज्ञान सकल मिटि जां ई ॥ ए श आप
भूति सु षडु ष करि ली नैं ॥ सब मि
टि जाय आप के ची कैं ॥ ता तें दो य
कौ न कौ धरी मे जो आपनो मन व
सि न ही करी ये ॥ ए ३ ॥ अरु जो ग्रह सु
षडु ष के दा ता लोक वेद क ही त वि
ख्या ता ॥ तौ आपन कौ को ध ही की जे
पर को षु ष आप कौ न जे ॥ ए ४ ॥ ग्रह
आ का समा हि है जे ते द्वा द्द सरा सि व
से सब ते ते रा ग दे भ्य आपन मे करे
ति न कौ सु षडु ष निति ही परे ॥ ए ५ ॥
ता तारा सि ज न म जे पावे ॥ तिन की सं
गति षु ष सु य आवे ॥ ना नें आत म सदा
अ ज न मा वार वार दे च निको ज न मा
ए ही ॥ ता तें सु षडु ष न न ही पावे ॥ नि
कट आत म के न ही आवे ॥

अपिसंगतिदुषपरे॥ आपक्रोधसे
सोंकरे॥ ए७॥ करिनहारतेंग्र
सौ॥ रागदोषभावस्योवांनो॥ अरुदुष
संगीहोयजोकरम॥ तेतोसकल
प्रहीभरम॥ ए८॥ यहजडदेहकर
सामांही॥ आतमनिकटदेहकेनांही॥
आतमचेतनिग्यानसरूप॥ परेंसक
नतेंपरमअनूप॥ ए९॥ तातेंक्रोध
कौनसोंकरौ॥ काकोदोषहिरदामें
प्ररौ॥ अरुजोदुषकालतेंकहीये॥
तोआपुनमैंकदेनलहीये॥ १००॥ त
नहीकालकृतेंदुषपावें॥ तेआतम
केनिकटनआवे॥ कालआतमात्र
असरूप॥ देहबिलषिणसकलअ
नूप॥ १०१॥ तातेंकालकृतेंदुषनांही
कालनयांनकदेहनिमांही॥ ज्यौले
अगनिअगनिमेंडारै॥ सोबहुअग
निअगनिहीजारै॥ १०२॥ अरुज्यौपा
लाकोकएलीजे॥ तेबहुतेंपालामें

जे। तोता। पाला कौं भय नांहीं।।
 दृपिर है सदाता मांहीं।। १०३। थों।
 हीयेक श्रात मां काल। सुषडः। या
 दिदेहन के ध्याना। श्रात म सब तै
 दाश्रती। अंछार हित अ निह अ त
 ॥ १०४। अरु श्रात मां परै तै परै
 दजहां लूते सब उरै। कोई श्रात म
 नही जां नै। सुषडः कौं न कौं न
 को वां नै। १०५। सुष अरु डष जहां लौं
 ते। येक पर कति ही के सब तेते।।
 पर कति आप ज डरुप।। चेत नि
 म ब्रह्म सरुप।। १०६। केवल मां नि
 यो संसार। सुषडः तन मन संक
 ल असार। मोह नि सां तै जागे जेते। नि
 भय भये त त च ए तेते। १०७। ता
 अब मैं भय नही आं ऐं। आप ही
 परै सकल तै जां ऐं। हरि चरण नि
 सेवा करै। ऐसी विधि भव सा
 तिरुं। १०८। जेई जे आये हरि के

७३
७७
रणं॥ तिनहीं तिनपाये हरिचरण
तातें मै हरिचरणनि भजौ॥ मन
मबचन शोरसबतजौ॥ १०॥ उ
वयौं दुजिभयो विरक्त॥ तनहं मै
नरह्यो अनुरक्त॥ बकुत असाधन
बकुत डिगायो॥ परि मनमैं कबू
ल्यायो॥ ११॥ ये नायेदस अष्टसत्तो
क॥ करि विचारमेयो नये सो क॥ त
तें उधव सुषडुषदायक॥ अतम
कौं कोये ते लायक॥ १११॥ सुषडुषदा
यक नाही कोई॥ जातें क हं है तक
बुहोई॥ सुषडुष भरमते जां नै सक
ल॥ अतमये क अजममां सकल
११२॥ भर्म बूटै ह जो कोई नाही॥ मे
रो रूप मिले मोमां ही॥ जब सुषडुष
मिष्टा करि जां नै॥ मनां मान हिरदै
नहीं अं नै॥ ११३॥ धीरज धरिमम चर
णनि भजौ॥ देहादिक की आसात जे
मबभवसागर कौं तरि आवै॥ मेरो

नंदपदपावै ॥ ११४ ॥ तातै उरुव
 चिक्रमासकलहैतकौंजां
 भ्रमसबतैमनकौंनिग्रहकरो
 अलकरिममचरणनिधरो ॥ ११५ ॥
 कौंकहीयतुहैजोगयाकरि
 ममसंजोगाअरुजोयागाथा
 कौंधारैसुनेसुनावैसदाविचारै ॥ ११६ ॥
 नकेनिकटहंदनहींश्रवै ॥ अं
 तकालममचरणनिपावै ॥ तातैया
 कौंसदाविचारै ॥ मेरोबलअंत्रग
 तिधारै ॥ ११७ ॥ दोहा ॥ येउरुवतोसौं
 कह्यो ॥ मनसंजमद्विदज्ञानाश्रवभा
 हैसांखिकौं ॥ सुनतमिदैंज्यैअंन
 १४ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणे ये
 दसस्कंदे भगवदुरुवसंभा
 देनिसुकगाताकथा ॥ नामत्रयो
 बीसमोअध्याया ॥ २३ ॥ १६५ ॥
 श्रीभगवानुवाच ॥ चोपहोउरु
 वतोसौंसांखिहीकह्यै ॥ ननरम

हि श्रम विन ह हौं ॥ जाहि सु न त च्छे
हेत ॥ देवे येक ब्रह्म अ हेत ॥ १ ॥ प्रथ
म हि महा पुर ष जे न ये ॥ ते यह सां
धि प्र ग ट क रि ग ये ॥ मुक्ति सां धि जां न
त ही हो ई ॥ सां धि वि नां न ही च्छे के
ई ॥ २ ॥ सो ही सां धि कहें मै तो सों ॥ नि
श्र ल मन के सु नी यो मो सों ॥ उ ध व प्र
थ म क्तो मै ये क ॥ मो वि न स क ल
न क्तो ते अ ने क ॥ ३ ॥ त व मै प्र क ति
आ प ते क री ॥ ज ड चेत नि हे वि धि
वि स त री ॥ ति न दो न्यो तें उ प ज्यो पु
त्र ॥ म ह त त जो क हि ये हे सु त्र ॥ ४ ॥ ये
क प्र क ति के त्रि य गु ण की हे ॥ त
धि ण नि न्य ति हं कौं दी के ॥ सु त्र ॥
तें त्रि वि धि अ हं कार ॥ न र मां व न कं
ब डो वि कार ॥ ५ ॥ पंच भू त जे प्र थ
वी आ दि ॥ अ रु पं चो सु धि म स द्य
दि ॥ तां म स अ हं कार ते ये ते ॥ र ज स
ते ज इं डी य स ब ते ते ॥ ६ ॥ सा ति क ते

॥ प ॥

गलोक देवन कौं दीयो अंतरिक्षु न
तन ग्रह कीयो भूमि लोक में मानुष
राषे अस्सुर अहिन कौं नीचै भाषे
शामहर लोक जनतपसत्यः नेक
च्यास्यो नमै सिधिन के अक जे त्रिगु
ण कर मन कौं करै तै तै नैक नि

मैंफिरे १२ तपश्चरु जोगतथासंन्या
स इ न ते निति चारुं मैं वास नक्ति
ते जावे वै कं व जो सब हिन करिस
दाश्च कं व १३ प्रबल काल है मेरो
सकल जगत न क्षण तिंहिं केरो सत
लोक मैं हूं जो जावे काल तहां उंता
कं या वै १४ क ब हू जाय क हू क
कं चे क ब हू काल ठ हा वै नी चे
सी विधि सब भर मतर है जन मैं मे
बहुत दुष स है १५ उत म म धि म न
चे जे ते छोटे ब डे थू लै क स के ते
जे क हू जहां लग आकार ते सब प्र
कृति पुरष विस तार १६ प्रकृति पुर
बिन शोर न को ई इं डी य म न गो च रे
जो ई प्रथम हि निरा कार में वै क ता
ये आकार अने क १७ अरु पुनि में
रहे हूं अंत ता ते अ ब हूं मैं वर तंत
जाकी आदि अंत है जो ई ता के म धि
मैं पुनि सो ई १८ ज्यो माटी के बहु घ व

भये॥ अंतही फूटि मांटी मिलि गये
 मांटी आदि मांटी ये अंत॥ तो मांटी म
 धिंबर तंत॥ १९॥ ज्यो कंचन के बडु ३
 आभरण आदि अंत ये कही ख
 णी॥ तो मधि हू शोर क चु नां ही॥ नां क
 मरूप मिथ्या कै जां ई॥ २०॥ त्यों जब दे
 ये त जि ओ हारा तब मै ही हों सब वि
 सतार॥ आदि रु अंत मधि मै ये क॥
 मिथ्या नां मरूप अनेक॥ २१॥ माया रु
 तें मह तत अहंकार॥ तिन तें होय स
 कल विसतार॥ बडु स्यो नास स क
 ल को हो ई॥ मह दादि क डुरहन को
 ई॥ २२॥ प्रकृति मूल अरु पुरय अ
 द्यारा अरु जो काल स कल कर ता
 र मेरी सक्ति तीन ये जां नौ॥
 क दे मति मां नौ॥ २३॥ या विधि न
 जाय विसतार॥ नर्द
 सार॥ परमांत मकी अ
 वरतें सकल निरं

मैकिरे १२ तपश्चरु जोगतथासंन्या
प्रान्तैर्नितिचारुंमैवास नक्ति
तैजावैवैकं व जोसबहिनकरिस
दाश्चकं व १३ प्रबलकालहेमेरो
सकलजगतनक्षत्रातिहिंकेरो सस
लोकमेंकं जोजाके कालतहांउंता
कंषावै १४ कबहुजायकष्टकरि
कंचे कबहुकालठहावेनीचे
सीविप्रिसव भरमतरहे जंनमेंमरे
बहुतदुषसहे १५ उतममधिमनी
चेजेते छोटेबडेयूतैकसकेते
जेकबूजहांलग्नाकार तेसबप्र
कृतिपुरषविसतार १६ प्रकृतिपुरष
बिनशोरनकोई इंडीयमनगोचरे
जोई प्रथमहिनिराकारमेंयेक ताते
येआकारअनेक १७ अरुपुनिमेंह
रहेहुंअंत तातैअबहुंमेंवरतंत
जाकीआदिअंतहेजोई ताकेमधि
मेंपुनिसोई १८ जोमाटीकेबहुघ

नये॥ अंतही फूटि मांटी मिलि गये
मांटी आदि मांटी ये अंत॥ तो मांटी म
धिंबर तंत॥ १९॥ ज्यो कंचन के बज्र
आभरण आदि अंत ये कही स्व
र्ण॥ तो मधि हू शोर कछु नांहीं॥ नां
मरूप मिथ्या कै जांई॥ २०॥ ज्यो जब दे
धेंत जिओ हार॥ तब मैं ही हों सब वि
सतार॥ आदि रु अंत मधि में ये क॥
मिथ्या नां मरूप अने क॥ २१॥ माया
तैं महतत अहंकार॥ तिन तैं होय स
कल विसतार॥ बज्र स्यौ नास सक
ल को होई॥ महदादिक कुं रहन के
ई॥ २२॥ प्रकृति मूल अरु पुरुष अ
द्वारा अरु जो काल सकल करता
र मेरी सक्ति तीन ये जां नौ॥ मो तैं द्वे
क दे मति मां नौ॥ २३॥ या विधि च ल्ये
जाय विसतार॥ नदी प्रवाह तु
सार॥ परमांत मर्क
वर तैं सकल निरंतर होवो॥

ऊर्यों प्रलय सकल को होई सुद्ध
प्रलर है नही कोई महाबलि छस
कि ममकाल ताको सकल जगत
ये व्याल २५ काल बिना से सकल
ब्रह्म ॥ कित कंक छन राषे षंड
अना वृष्टि होवे सतवरष ॥ ताते दे
हन को अकरष २६ ॥ छोटे बडे दे
ह सब तेते ॥ लीन असन में होवे जेते
असन भूमि में होवे लीन ॥ भूमि गंध
मिल्य होवे धीन २७ ॥ गंध लीन होवे ज
ल मांही ॥ जल सुद्ध रस मांही समां
ही रस जब ते ज मांही मिलि जावे ॥ त
जरूप में जाय समांवे २८ ॥ रूप पव
मांही मिलि रहै ॥ पवन ही तब सप
स गुण गहै ॥ सपरस लीन होय त
गगनि ॥ गगनि हीं सब द मांही होय
गनि २९ ॥ शब्द मिलैता मस अ
कार ॥ सो अरु इं डीय द सपर कार
सब मिलि राज सन्न हंकार ही ॥ ३० ॥

रि स क ल हो य संहार ही ॥ ३० ॥ दे
 रु मन सां तिक अहं कार ॥ मि लि
 रि स क ल हो य संहार ॥ अहं कार
 ह त त ही मि ले ॥ प कृ त्तित व म ह त
 ही गि ले ॥ ३१ ॥ प्र कृ ति काल में हो
 ली ना काल पुर य मि लि हो वै थी
 ॥ पुर य मि ले पुर यो त म मां ही ॥ पु
 यो त म क लू जा वै नां ही ॥ ३२ ॥ ने
 दा ने दर हि त त व ये क ॥ नि त्या नं
 द है त वि त रे क ॥ चे त न नि र म ल ग्यां
 न स रू प ॥ अ र ए अ वि ये पर म अ नू प
 श ता तै उ ह व मि थ्या है त ॥ आ दि अ
 हू अ है त ॥ ज ल बु द बु द स
 आ कार ॥ अ त्य म म धि म वि ब धि
 कार ॥ ३४ ॥ अै सै स दा वि चा रे जो
 कौं कौं न भां ति भ्र हो र्श ॥ र बि उ ह्यो म
 क हो त म कै सै ॥ न दी म ध्य दा वा न
 तै सै ॥ ३५ ॥ ये मै ना ध्यो सां वि प्र
 है त उ त प ति संहार ॥ या के

पाननसंसैरहे अहंकारदिहृगं
यहीदहे ॥ ३६ ॥ छोडे रूपरूपस
मांवे जाते बजरिनहु सकौं पावे
ताते या कौं सदा विचारै मो कौं जां
निश्राप कौं तारे ॥ ३७ ॥ दोहा उरुव
ये तो संकहो ॥ सांखिरुमांन विचा
रा अश्रव गुण वृत्ति नु कौं क हूं ॥ निं
न्यमिंन्य परकार ॥ ३८ ॥ इति श्री मा
गवते महापुरांणैथै कादसस्कंदे
नगवद उरुव संमादे सांखिनिरु
पणनांम चतुर्वीसोत्र ध्याय ॥
२४ ॥ १८ एही ॥ श्री नगवांन उजाव
चोपई ॥ उरुव अश्रव नाथौ गुण वर
ती ॥ तिन कौं जां नै लह निरवरती ॥
जा गुण तै जो लषिण होई ॥ निं निनिं
नि नाथौ सो सोई ॥ १ ॥ समदम धिमां वि
वेक सुधरम ॥ लजा मां निन करै वि
करम ॥ सति दयानही भूले सुहि
वृत्ति ममादिग में थिर बुधि ॥ २ ॥ जस

सोभाधीरजवंतापरउपकार
 दावरतंताबुधिशासतिकनि
 संग॥संतोषीअरुदांनअभं
 कोमलबिनयदीनचतुराईसी
 लहिरदयसकलसुखदाईश्रीसी
 तिबहोतसंपत्ती॥सांतिकगुणकी
 णोवरती॥ध॥आतमइनसब
 न्यारोचितनिकरिवरतांवनहा
 गासक्तिइदेवकुकांमाधनअ
 नलायाजसअभिरांमाधु॥त्रह्मा
 सग्रबबलवंत॥रिषुमित्रादिक
 दअनंताकरिकांसनांभजेवकु
 वापरमारथकोलहननेवहीव
 अरंभनिमैउतसाहासदाकवो
 सदाअतिचाहै॥बहुतवरतिरा
 श्रैसी॥येतुमसौभाषीमैतैसी॥
 हिंस्यालोभक्रोधअधिकार्शजिं
 तिहिं दीनरुदंभकुंवाई॥अमं
 कलहसोकअरुमोहा॥निंशअ

सभै पर जेहा ॥ ४ ॥ निस दिन चिंता उ
दिम ही न ॥ हिर दै आसा साहै सचिं
न ॥ ऐसी ब्रह्मतां मसकी बरती ॥ जि
न तैं क देन ल है निर बरती ॥ ५ ॥ उप
जे ममता अरु अहंकार ॥ ता तैं क
रै बिबिध बिबिहार ॥ ते सब मिलि
त मगुण की बरती ॥ तिन तैं बाढे
ब्रह्म पर बरती ॥ ६ ॥ धर मरु अरु
धकां मरु नुरकी ॥ अंधालो न त
या अकी ॥ धर म प्रवर ति पराय
ए जे ते ॥ ब्रह्मनां ति बिस तारै ते
ते ॥ ११ ॥ बर तैं अ पने अ पने धर म ॥ १२ ॥
य ग्रह अरु सुठ ग्रह कर म ॥ ते सब
मिलि त गुण की बरती ॥ जिन तैं ब
ह्र बिधि होय प्रवर ती ॥ १२ ॥ सम द म
अदि जु गति न र जोई ॥ साति क ल व
ए क ही ये सोई ॥ राज सकां मां दि क
अधिकार ॥ तां म स ज हां क्रोधा दि वि
कार ॥ १३ ॥ जब सु धर म सौं मो कौं त

इजीसकल कामनां तजे ॥ त्रियापु
रय भावै सो होई ॥ सांतिक प्रकृति
कही जे सोई ॥ १४ ॥ जब कामनां हि
र देखि लेवै ॥ अने करमनि मो
कों सेवै ॥ ये सुभाव राजसको कही
ये ॥ मुक्ति हेत कब हू नही गही ये
१५ ॥ जब हें स्या हिर दामें आनै ॥ नि
ज करमनि मम सेवा ठानै ॥ सो व
हतां मसवरति कहावै ॥ तातें म
म सुख कहे न पावै ॥ १६ ॥ सतरजत
मती न्योगुण जे हैं ॥ जीवही कों बंध
न सब ते हैं ॥ ते गुण मेरी अगपा करै
तातें मोहि भजे ते तिरै ॥ १७ ॥ चित्त
हू ते उपजे ये सकल ॥ इन कों त
जे आत्मा अकल ॥ इन कों छोडि
रहै मो मांहीं ॥ बडस्यौ उपजे विन
से नांहीं ॥ १८ ॥ करिसाधन रजत मप
रिहरै ॥ सांतिक गुण की बरति ही क
रे ॥ सांतिक सूरजि ज्यों परकासा ॥ अ

तेसीतलज्यौंचंद्रविगास॥१७॥सब
 कल्याणमूलसुखकारी॥निश्चल
 करणसकलदुषहारी॥तातैधर
 मग्यानसुखलहे॥चिंतासोकमो
 हभयदहे॥२०॥जबसांतिकतांम
 सनहींरहे॥राजसश्रायबसेराग
 है॥राजसरूपसंगबलभेदतातै
 मांनैकरमभयवेद॥२१॥जबसत
 श्ररुजबूटैदोईकेवलयेक
 तमोगुणहोई॥तबश्रबिबेकना
 सकश्रावण॥उदिमहरताजड
 ताकरण॥२२॥तातैसोकमोहको
 वासा॥निंशश्रालसनिसदिनश्र
 सा॥जबबूटैइंश्रीयनकीबरती॥
 हिरदैंनहींइहांउतपती॥२३॥चि
 तप्रसनसकलनिहसंग॥सोसा
 तिकममग्रहहैश्रंग॥जबतनश्र
 रुइंश्रीयमनबूछी॥धिरनहींहो
 हिलहैनहींसूधी॥२४॥वांनैबिब

धि कर म वि स त्तारा सो जां नौं राज स
 अ धि कारा ज व वि कार व डु वि
 धि मन ग है ॥ अ सा व सि नि रं त र र
 है ॥ २५ ॥ सो क वि द्या द चे त नां ही न
 सो तां म स उ दि म व ल छी न ॥ ज व उ
 प जै सां ति क को भा व ॥ त व स व हो
 वै दे व सु भा व ॥ २६ ॥ राज स तै अ सुर
 नि की व र ती ॥ भू त ग ण नि की त म
 उ त प ती ॥ सां ति क तै जां ग णों हो ई
 राज स पा वै सु प ना सो ई ॥ २७ ॥ तां म स
 कृ तै सु ष प ति ल है ॥ ब्र ह्म तुरी या नि
 रं त र र है ॥ सां ति क उ र्ध्व लो क नि कूं

२८ ॥ तां म स नी चे था व र आ दि ॥ या
 वि धि भ र में जी व अ ना
 ह्य धि मां न व जो हो ई ॥ ता में म र ण
 है जो को ई ॥ २९ ॥
 क ही जा वै ॥ राज स में म रि न र त न
 पा वै ॥ त

तीनों गुण तजिमो में रहे ॥ ३० ॥ मेरे हे
त कर सजो करे ॥ ता में इजो फल
नहीं धरे ॥ सो वैसांतिक कर मक
हा वै ॥ ता तें जीव महा सुष पा वै ॥ ३१ ॥
फल निमति मम कर मनि गं नै ॥ ता
कौं राजस कर म बषां नै ॥ हं स्या हे त
करे मम कर्म ॥ सो तां मस है बडो श्र
धर्म ॥ ३२ ॥ ने दर हित सो सांतिक गं
न ॥ देह ने द सो राजस जां न ॥ बाल
क मूंक तुल्लि जो होई ॥ तां मस गं न
कही जे सोई ॥ ३३ ॥ आत म दे हर हि
त जो ये क ॥ सो हे मेरो गं न विवेक
हे विरक्त बसी ये ये कंत ॥ सांतिक
वास कहै जो संत ॥ ३४ ॥ गृह में कही
ये राजस वास ॥ तां मस जुं य सुरा श्र
वास ॥ था वै र चल मम मूरति जहां ॥
निरगुण वास कही जे तहां ॥ ३५ ॥ सं
तिक कर्ता सो निह संगी ॥ सो राजस
फल कर म प्रसंगी ॥ विधिक रिर हि

ततांमसीकर्ता॥आसैताग्यकरम
 निविसतर्ता॥३६॥आपहीमेदिरहेम
 मसराणां॥ताकोसबनिरगुणआच
 रणां॥सोजननिरगुणकरताकही
 ये॥ताकेसंगपरमपदलहीये॥३७॥
 जोनिहकरमआतमांजांनै॥सकल
 तजनकीसरदावांनै॥सकलत्याग्य
 निश्चलजोहोई॥सांतिकप्रदाकही
 येसोई॥३८॥राजसप्रधावांनैकरम
 तांमसप्रधाकरैविकरम॥निरगुण
 सरधामेरीभक्ती॥जातैमिटेसकल
 आसक्ती॥३९॥पथ्यपवित्रविनांप्र
 मआवै॥जामेंअपनोंधरमनजावै॥
 जातैउपजैनहीविकार॥सोकहीये
 सांतिकीअहारा॥४०॥घाटामीवाती
 घाघारा दुषदायकराजसअहारा
 जोअसुद्धहंस्यातैआवै॥सोतांमस
 अहारकहारवै॥४१॥ममजनअरुमे
 रोउच्छिष्ट॥सोनिगुणनोजनअति

ए॥ इंद्रिय सुषुप्तत्वादि क द है ॥ तजि
आरंभ निश्चिर है रहे ॥ ४२ ॥ आत्मते
उपजै जो ई सांतिक सुषुप्त कही यतु है
सो ई इंद्रिय सुषुप्तराजसन ही गहीये ॥
निद्रा आलसतां मस कहीये ॥ ४३ ॥
रे प्रेम भक्ति सुषुप्त जो ई निरगुण सुषु
कही यतु है सो ई इव्य देस फल का
ल रुग्णान कर ता कर्म अ वस्था दा
न ॥ ४४ ॥ धर धानि द्या अरुं कार ॥ त्रिगुण
निर्मति सब विसतार ॥ जो क ब्रु क है
सुने अरु देषे ॥ मन अरु बुधि जहां ल
गुलेषे ॥ ४५ ॥ सो सब प्रकृति पुरष वि
सतार ॥ त्रिगुण निरमत सकल यसा
इन तैं जीवल है संसार ॥ त्रिगुण कर
मय बासं वार ॥ ४६ ॥ जो इन ती न्यौ गु
नि निवारै ॥ चित्त आपनो मो में धारै ॥ स
मेरो निरगुण पद पावे ॥ ब्रु स्यो या म
वमैं न ही आवै ॥ ४७ ॥ ता तैं ये असी न
र देह ॥ जा करि मिटै सकल संदेह ॥

होवै प्रगट्गपान विज्ञान ॥ पावै मोहि
मिद्वै सख्खं न ॥ धर्मात्ता तैपंडिस क
नं विवर्ष ॥ मोको सेय अपकौत्पारै
विन सकल अपंडित जांनौ ॥ जिते
श्रात मघाती मानौ ॥ धरण ॥ सकल क
होवै नेह संग ॥ सावधान पल परै
भंगा इंडीय प्राण देह मन जीतै ॥
मचर चादि नरै निविदीतै ॥ पूबे स
कल सातिक की संगतिकरै ॥ राज स
तांम सपरिहरै ॥ देहादिक तै निस
ह होई आगे अंछा करै न कोई पूर
मै धारै नह चल बुद्धी ॥ तव पावै न
तिसुद्धी ॥ या विधिसातिक इ
वै ॥ तातै लिंग सरीर मिटावै
ग सरीर मिटे भवत जै ॥ निर
आप नौ भजै ॥ त्रै सो के
गै ॥ बाहरि नीतरि देत न
मै मिलि मोही में रहै ॥
गनि न ही देहै ॥ रहै तिर

तातैं कदे न होवे भंग ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥
 द्वयये तो सों कहि ॥ तीत्यो गणकी
 बरति ॥ अब चो रूपां न ही कहो ॥
 जाते होय निरबरति ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥
 भागवते महापुराणोये कादरुच
 दे भगवद उचवसं मादे गुर्विदि
 तिनिरूपणानां मयं च न्नी समो न्नाथा
 य ॥ २ ॥ ५ ॥ १ ॥ ५ ॥ १ ॥ श्री भगवान उवा
 च ॥ ५ ॥ उचवये नरतन हे त्रैसो
 कलसिष्टमैनां ही तैसो ॥ यातन क
 रि मम ग्पां न ही पावे ॥ जाते नवतजि
 मोमै न्नावे ॥ १ ॥ तातैं त्रैसे तन कं पा
 मो मिलिनैको करे उपाई ॥ अंतरमं
 ही मोहि विचारे ॥ श्रीरैस कल बस
 नां टारे ॥ २ ॥ मम भगतन के लक्षि
 णो ॥ त्यों त्यों न्नाय न्नापमें वां नो ॥ न्नाय
 सैत बमोको पावे ॥ काल व्याल कव
 हें न ही पावे ॥ ३ ॥ माया गुण जब मिथ्य
 जानै ॥ मेरो ज्ञान पाय करि भां नो ॥ यों दे

रहे देह हूमां ही ॥ तो हू फेरि लिपे कः

॥ तो हू ग्यान ध्यान को भंग ॥

परे ॥ जैसे अंध अंध के संग ॥ कृपय
नंगा या की गाथा नाथों के

उर

ही तो सौ भाषा भाष्य सौ ही ॥ ७ ॥ रा.

रवाच कर बरती ॥ ताकी आन जहां

लौ धरती ॥ प्राप कुतै उतरी उर बसी

सो मिलि करि निरपके उर बसी ॥ ए ॥ ये

उर ना हरि ले वै ज बही ॥ नगन देखें

समै बिन त बही ॥ त बही उर बसी ॥

॥

लेननपावे॥१०॥ असें वै न उरबसी
नांवे। राजा सुनिहिरदा मेरावे।
परसपर भोगनिरंतर। विवे।
हं। परे अंतर॥११॥ बडस्यौ श्रा
तिजब भई। तबतजि उरबसी नृ
ही गई। निरपबिनापकरे बकुरो
परिसो नृपकी वोरन जोवे॥१२॥ रा
गनदेह सुदिनां ही। बांणी विक
नता मां ही। नजारहित मत मद जैसे
चले। उरबसी पीछे ते सें।१३॥ अहो प्री
या तुम ठाही होवो। मेरी वोर कृपा क
जोवो। मोको बिसारे कहे जोवो। कृपा
करो मेरे ग्रह आवो॥१४॥ मिलि उरब
संग सुषपायो। सो सो सकल दुष होय
आयो। नृपन भयो भोगवत भोग। पा
उरबसी को संजोग॥१५॥ ता उर
न आकर व्यो। ता तें नलो मां निकरि
रव्यो। तन मय हिरदे कछु न आं न्यो॥
निसदिन मां सब रथ नही जां न्यो॥१६॥

बतानरपके पूरण भाग ॥ जाते प्रग
दभयो वैराग ॥ तब नृप बचन बध
नें जेई ॥ तेसों में नाथ तहों तेही ॥ १७
पुहरवा उवाच ॥ अहो एक देयो मम
मोहा ॥ आपही कीयो अपनों झोहा गही
यो कं व देवकी माया ॥ जिन मेरो सब
आयु गवाया ॥ १८ ॥ नमो कों डह क्यो
बहुतैरो ॥ प्रबसु आयु लीयो हरि मे
रो मैं दिन राति न जांनें जाता ॥ अमृत
करि मां त्यों विषयात ॥ १९ ॥ बरष
समूह गये देन बीती ॥ सकल विकार
नली नौ जीती ॥ देयो मैं कै सो डह
कायो ॥ अस्त्री के कर अप वि कायो
२० ॥ जो मैं राजा राज चक्र बरती ॥ जी
तिसमस्त करी बस धरती ॥ सकल भू
पमम चरण निसेवै ॥ तन मन धुव सेव
मो कों देवै ॥ २१ ॥ सो मैं विकानै ॥ स्त्री हा
थि ज्यों बां नर बाजी गर साधि ॥ ज्यों ज्यों
स्त्री मोहिन चाये ॥ त्यों त्यों मूरख मे सख

ध यो २२ तापरिराजसहितत
 तृणसमानिकरिचलीबिच्छोहि
 गनभयोमैपीच्छेधायो ज्योउनम
 तत्रापविसरायो २३ कौनमा
 ताकेवलहोई तेजपरतापरहेन
 हीकोई जोहोवैस्त्रीअधीनजैसे
 रीसंगघरहीन २४ विद्यामौनित
 स्यात्पाग ॥ बनेमैबसिबोद्विहवैरा
 गयेसमस्तकीन्हेंकचुनांही ॥
 लगत्रीयाबसेमनमांही २५ ये
 उरवसीजबहीतैपाई कामत्र
 गनिबहुभांतिजगाई परियेअ
 गनिनसीतलभई अधिकअ
 बाधतैगाई २६ जैसेअगनिप्रज
 तहोई तामैईधनडारेकोई सो
 अधिकअधिपरजरे पलकोनही
 सीतलताकरे २७ मैअपनौंनहिं
 न्योअरथ ॥ अपुअपुकोकीयो
 रथ ॥ मूरषअपहीपंडितमांमों ॥ प

स्त्रौ मृत्युमुषं मृतजान्मो ॥ २४ ॥ जो
 में ईसक कलमूके रो ॥ सो कैरहो त्री
 याको चरो में मूरखतको द्विरकार
 जिननकीयो कछु ग्पांन विचार ॥ २५ ॥
 स्त्रीकरिजाको चितगहो ॥ ग्पांन वि
 चारसकलसोदहो ॥ ताको हरि विन
 को न छुडोवे ॥ इजो आपन छूटनपा
 वे ॥ २६ ॥ ताते में हरि चरणनिगहो ॥ स
 कलत्याग हरिको कैरहो ॥ जद्यपि दे
 वी मोहि बुजायो ॥ त्रीया प्रीति डुषक
 हि समजायो ॥ २७ ॥ तो उमें मूरखनही
 जानो ॥ कां मन्त्रंध सुषई करि मान्यो ॥
 ताते ताको नही अपराध ॥ ये मेरो मन
 डो असाध ॥ २८ ॥ जो में सुरगनरकमें
 यो ॥ डुषही मां हि सुष करिले यो ॥
 पजांनि डुषपावे ॥ अगनिपत
 परें मरिजावे ॥ २९ ॥ तो तिनको अप
 धनको ई ॥ आप डुष करिले वे सो
 ताते इनको यह सु

धस्यौकु भाव ॥ ३४ ॥ जोमें अापन्नग
निमें परों ॥ तौ उर देख कवन को ध
रों ॥ देह मलीन महादुरगंध ॥ सो क
रिजांनी विमल सुगंध ॥ ३५ ॥ सो अ प
नी अ विद्या कस्यौ ॥ निजानंद अ
तम विसस्यौ ॥ येतन तौ ब्रहुतन
को कहीये ॥ तामें ममता गहिकेयो
हीये ॥ ३६ ॥ माता पिता अ पनौ करि
कहै ॥ स्त्रीयेक मेक मिलिरहै ॥ के
यहतन कहीये राजाको ॥ के पाव
क न विण है जाको ॥ ३७ ॥ के नूकोके
स्वान्प्रंगाल ॥ के अ पनौ मित्रके का
ल ॥ येतन धू कहीये किनकिनको
प्रगटही सते है तिनतिनको ॥ ३८ ॥ म
हा अ सुख देह ह अैसी ॥ परगटनर
कथांनि है जैसी ॥ तहांको मन बांधे
मति मंद ॥ अ स्त्रीनां मकालको फं
द ॥ ३९ ॥ तु चारु हीरमांस अ रु अं
तमंजामे दरों मन अ दंत ॥ निद्यामु

ॐ महाड^वस्त्री परगहनरक

गतातैस्त्री अरुतासंगी

तिनके नही कृजे प्रसंगी ॥ तिनके
दरसक भित्तमन होशी देखै बिना

दसनै करी

शमनवचिंक्रमदोऊसंगतिवारे

शतवयहमनसह

शीकदेबिकारनपरसैकोशीता

तैजोस्त्रीनकोभजै ॥ अरुअस्त्रीतिन

कौबुधितजै ॥ ४३ ॥ दरसपरसअरु

प्रवणनिवाससबभावनेतैमानै

त्रास ॥ इंश्रीयनुकेविस्वासनकरे

ग्यानवंतनेतहीपरहरे ॥ ४४ ॥ महा

पुरुषजेजीवनमुक्ति ॥ तिनहुंको

सबसंगअयुक्ति ॥ तौजेजगतेंबूटे

चहै ॥ तेहमसेक्योसंगतिगहै ॥ ४५

तातैमैसबसंग

रनकं वलन उरधासं दीन बंडुक
रुणामयस्वामी ॥ कृपा करी यह
अंत्रजोमी ॥ ४६ ॥ श्री जगवानुवा
च ॥ या विधि वचन कहे नरराज
तजि उरवसी लोक सुषसाज ॥ ज्ञान
लेहो सब संसय टास्यो ॥ मन निश्चल
करि मोमै धास्यो ॥ ४७ ॥ ताते उद्धवये
पुरधारध ॥ नरतन पायो तब ही स्व
रध ॥ जब समस्त की संगति तजे ॥ स
त संगति गहि मोको भजे ॥ ४८ ॥ संत
वतां वै हित उपदेस ॥ जिन सैं संसय
रहन लहेस ॥ मन की सब आसक्ति नि
त्रारे ॥ संत महा तब सागर तारे ॥ ४९ ॥
नेस पृह निगरं भसम दरसै ॥ संश
हर हित द्वंद नही परसै ॥ अहंकारं
ममता नही आनै ॥ मोहि नजे हजोन
ही जानै ॥ ५० ॥ ते जद्यपि उपदेस न दे
॥ तो कृमोहि चहे ते सेवै ॥ तहां कथा
परी निति होवे ॥ तेही अंध संदेहनये

वे॥५॥ मेरी कथा प्रवण जो करै॥ ते
सब पाप नितै निसतरै॥ सुनै करै अं
तर गति धावै॥ अति आदर सों प्रीति
बधावै॥ पूरति सहज ही लहै मम त
की॥ सहजै होवै सकल विरक्ती॥ मेरी
भगतिलहै नर जब ही॥ पूरण कां म
नयो सो तब ही॥ ५३॥ ताको कछु न
करणौर है॥ ग्यानां नंद रूप मम लहै
सीत निसौ कहुं होवै कोड़ी॥ तहां अ
गनि परजालै सो ही॥ ५४॥ तिम तुयोर
भय सहज ही जावै॥ त्यों साधु सब दो
ष मिटावै॥ ये अ पार सागर संसार॥
जामै बूडे जीव अ पार॥ ५५॥ तिनको
नां वये कहिये ही॥ संतरूप परगत
मम देही॥ ज्यों प्राण निराये अ हार॥
मेरी सरणि डष संहार॥ ५६॥ ज्यों पर
लोक धर मधुन जानौ॥ त्यों भवतारक
साधु मानौ॥ जिनके

५७। ज्यों बाहरि है सूरजिये क। थौं उ
रनयन उद्यारे अनेक। संत ही मात
पिता हितकारी। संतै देव बंधू दुष
हारी। ५८। ताते संत संग नितिकर
णों। और उपाय नहिं हि दे धरणों।
तिन तै अनायास नवतरे। अनाया
स मो कौ अनुसरे। ५९। तब पुरुरवा
असोक स्यो। सो उर बसी लोक परिह
स्यो। तब तजि भयो आतमां रंम। बि
चस्यो भूमें के निहकांम। ६०। ताते
असत संग परहरीये। साधू संग नि
रंतर करीये। साधू जन सुष ही नवत
रे। सुष ही मम चरण निचित धारे। ६१।
शा दोहा। असो साधू असाधको सुनि
हरिजीसू संग। तब उद्वव जन पूछ
यो। करम योग परसंग। ६२। इति
नागवले महापुराणो येकादस स्कंदे
श्री गगवद उद्वव संभादे येले गीत
पायान लबी सो अर्थीया। २६। २०

उद्धव उवाच ॥ चोप ई ॥ हे प्रभू कृ

गविधिजैसी ॥ जाके करत होय स
तसंगा ॥ पावे ग्यां न होय निहसंगा ॥ श
यह जो तुव प्रतिमांकी पूजा ॥ ताते
श्रीये कहत नही पूजा ॥ याको कहे
व्यास श्रु नारदा गुरु बृहस्पति
परम बिसारदा ॥ शत्रोरो सकल मु
नी सुरजेते ॥ परम श्रीये यह नाथेते
ते ॥ कल्प आदि विधिसो तुमक ह्यो
से दिठ करि विधि हिरदे गह्यो ॥ इति
नमृग्वादि कसुतनि सुनायो ॥ सो भव
हते भवानी पायो ॥ जे हे सकल वर
ए आश्रमा ॥ अस्त्री अंत्यज सब को ध
रमा ॥ धाया विनु श्रौर धरम हे जेते ॥
याही को जक हे हे तेते ॥ या विनु श्रौ
र धरम जे करै ॥ तो तिनतें फिरि बंध
न परै ॥ अथ हई सब धरमनि को धर
मा याही

विधिबिसतारों

जीवनिनिसतारों ॥ ३ ॥ तुमदया

सर्वहितकारी

षड्रघहारी ॥

बैना बोलेहरयिकं मलदत्तनेन

श्री जगवानुवाच ॥ उद्धवयाके

अंतनपारममपूजाविधिबहुबिस

तारपरतोसोंसंछेपसुनां कुं ॥ तामै

तत्वसकलकौल्या कुं ॥ ७ ॥ पूजाविधि

हेतीनप्रकारै वैदिकतंत्रकमिश्र

तसारै ॥ वेदमंत्ररुबैदिकश्रंग ॥

सोकहीयेवैदिकपरसंग ॥ ८ ॥ यौ

हीतंत्रकमिश्रतजानै ॥ नावेतासं

पूजावांनै ॥ विप्ररुषित्रीवैस्पत्रिव

रण ॥ इनकौंजाविधिपूजाकरण ॥ ९ ॥

सोसमस्तविधितुमहीसुनां ॥ जीव

निकोंकल्याणउपां कुं ॥ प्रतिमाभूं

मिश्रगनिजलवाइ ॥ द्वजिन्नरुश्रा

पुत्रर्करुगाइ ॥ ११ ॥ अरुसबहिन

कौं जांनै॥ जथा जोग सब पूजा
 वां नौ॥ गुरुं चरु मोमें भेद न राधे॥
 बुध बुधि हरि करि नांथे॥ १२॥ सु
 होय जल मांटी संग॥ स्नानादिक
 सकल ही अंग॥ जे जे प्रगत वेद अ
 रुतंत्र॥ तिते सकल पढे मम मंत्र
 १३॥ संध्या पासनादिक जे करम
 प्रगत तिहूं बरण निके धरम॥ ति
 नति नसौ निति मो कौं भजे॥ होय न
 येद सकल सो तजे॥ १४॥ जाही करे
 मम सुमरण होई॥ काटे सब करम नि
 कौं सोई॥ सोई सो कही ये मम धरम
 मम सुमरण विनुं वंधन करम॥ १५॥
 अब भायों प्रति मांके नेद॥ सेवत ति
 नही॥ मिटे भव येद॥ येक सिनाकी
 कही ये मूरति॥ येक काठे की॥ त्यों म
 म मूरति॥ १६॥ येक लेपि चंदन का
 करीये॥ येक चित्र रघुसुकलिय
 धरीये॥ प्रति मांयेक सु

येक मनोमय मनमै धारी ॥ १५ ॥ ये
क मृतकाकी लनेकी नही ॥ येकर
तनमणिकी करि ली नही ॥ येमम
प्रतिमां अष्टपरकार ॥ तामैमम
मंदरिनिजसार ॥ १६ ॥ तिनमैहोवे
निश्चलजेती ॥ सेनादिकनिक
वैतेती ॥ सालिगरांमश्रादिहै
मेरोतनजांनै नितितेती ॥ १७ ॥ और
वनकौंपूजाकाल ॥ किंवाजां
तिगोपाल ॥ लेपीलिषीमारजन
औरनितिसनानहीं विसतारे ॥ १८ ॥
उत्तमसामग्रीसौंसेवै ॥ तनमनधन
सबमोकौंदेवै ॥ जोनेहकांमनि
कपटीहोई ॥ करेभावव
सोई ॥ १९ ॥ उत्तमवस्तुनिमनकरि
वै ॥ प्रेमसहितसबमोहिचहावै ॥
उत्तमविधिज्ञानकरावै ॥ वस्तर
भरणांदिक्पहिरावै ॥ २० ॥ अ
तादिकहोमहीकरे ॥ धरणीरविअ

मोकोवडुकिउकनर
२४ ताकीसहिमाकहावय

केसुनीयोमामाहाय

किरिउतिबेकौरडननरेड
बवेउत्रकेपूरवसुय निश्चरप
२७ धननिमांनि

तिश्रान
रहाउतमक
लसतोयसौंनरेहजेजलकेपातर

हि धरे जलमें बकुत सुगंधमिलावे
तासूं मोहि सनांन करावे ॥ २७ ॥ अर
घपाद्य अरु बिष्टुर करे ॥ तिन पा
तरता तें जल भरें ॥ गंध पुसपतिन
में बकु धरे ॥ गायत्री अणि मंत्र नि
करे ॥ २८ ॥ तब अपनो करे तन सुद्ध
के द्वार न होय अ सुद्ध ॥ हिर दे
मां हिम मरूप ही ध्यावे ॥ ऊं कारु
हां तें आवे ॥ २९ ॥ जैसें ग्रह में दीप प्र
कासे ॥ यों ध्यावे तन मां हि उजासे ॥
पूजे ॥ प्रेम सों तन मद्य हो ई ॥ पुनि मूर
ति में ध्याये सो ई ॥ ३० ॥ सांगो पांग करे
तन पूजा ॥ कोई भावन उपजे हजा ॥
देवे अर घपाद्य आचवन ॥ रचे अ
ष्टदल पंकज भवन ॥ ३१ ॥ तापरि
सथाये धरमादि ॥ सकल सक्तीर वि
सि अगनादि ॥ संघ चक्र गदापद्म
अरु अस्त्र ॥ धन धरु बाण मूसल ह
लसस्त्र ॥ ३२ ॥ ये आवुं आवुं दि स

नै। मणिमालारुलता उरजां नै। न
 दसुनंदमहाबलचंडाकु मूदेक्षण
 बलकु मूदप्रचंडा। ३५। अष्टदिशा
 पारषदसामग्र। गहोगरुड. जोरि
 करअग्र। विष्वकसैनव्यासगुरदे
 व। गणपतिदुरगान्तरुबसुदेव। ३६। स
 करजोरेंहरिसुनमुषगहो। हरवि
 तबदनप्रेमअतिबाहो। सबहिन
 कूं पूजे। अरघादीविनयनमृतावं
 दनआदी। ३७। चंदनअरुकपूरउ
 सीरकुंकमअगररुसुगंधतनीरा।
 प्रथमहिंकवूमधूपकचहावे। नि
 रमलजलआचमनकरावे। ३८। पु
 निसुगंधजलदेयसनां नै। मंत्रद्वय
 मनकरमही। अं नै। पुंस्त्रीकजाव
 नभवभावन। अतिपुरपयअकंन
 पजावन। ३९। जेअद्य
 आध

श्रुतिविसत्तारे॥४०॥ बस्रजनेउग्र
रुद्रानरण॥ अंगअंगतिलका
ककरण॥ उत्तममालाबहुत
द्व॥ प्रेमसहितमोसोंमनबंध॥४१॥
बालभोगआचमनकरावेकु
मसुगंधरुधूपवनावे॥ बहुतभा
शरतीउत्तारे॥ नांनंविधिनेवेद
वारै॥४२॥ धीरषांडघृतदधलाप
सी॥ लाडूपुवासहारसुरसी॥ विजन
करैऔरबहुतेरे॥ विनोतगा
फुतहीमेरे॥४३॥ नितिदांत्यो नउ
बटनोतेल॥ अफवावेपंचांमृत
मेलन॥ अलंकारदरसनआप्रस
गीतनृतवादित्रसपरस॥४४॥
तभांतिनैवेदसवारै॥ नितनाही
तोपरवनदारै॥ बफुरिकरेपाव
कमेंपूजा॥ मोविनुंताहिनजानै
जा॥४५॥ अगनिकुंडमेंअगनिही
धरै॥ सम्यधघृतादिकहेमहीकरै

हे वेद अरु तंत्र ॥ धर्मा करि होम ही
आचमन करावै ॥ ताको मेरे रूप ही
आवै ॥ तपत सुवराण तुल्य छवि अं
ग ॥ चारु चतुर चुज आयु इ संग ॥ ध
रा पीत वस्त्र कुंडल बन माला सी
समुकटक टिसुत्र विसाला ॥ मृगु
लता अरु लक्ष्मी आदि ॥ ब्रह्म विधि
ध्यावै रूप अनादि ॥ ४७ ॥ पुनि नंदा
दि पारषद जेते ॥ विधि विधान संप्र
जेते ते जेपे मूल मंत्र ब्रह्म वार जा
विधि बंधे प्रेम अधिकार ॥ ४८ ॥ पीठे
ता परि साद ही लेवै ॥ ले करे सब न
कन कों देवै ॥ आग्या पाय आपत व
पावै ॥ प्रीति सहित जेते जीय भावै
पूजा पुनि अरु रपे सुगंधता मूल उत्तम
माला उत्तम फूल मेरे गुण
रगावै ॥ नाम नना
मेरे गुण अरु कर मसरा है ॥

मोक्षविधिप्रवृत्तताहो। कथावितिम
प्रसुप्तोसुखावै। मोक्षिनकहन
रत्नहरावै। पूराचरणपत्तोटेसे
नकराही। दुहातैनामभूतिनही
श्रीपाकृतिश्रुसहसकृतिवेद॥
जेईजेअस्तुतिकेनेद॥ ५३॥ तिन
नसोभमअस्तुतिकरै। बारबारच
रननममपरै। पीछेधारिजोरि
कोईकरैदीनकेबिनतीसोई॥ ५४
हेप्रभुभवसागरतैतारै। कालमृ
त्तुभैसोकनिवारै। तुमबिनमेरेओ
रनकोई। पांचचरणनिकीजेसोई
५५॥ हिरदेजोतिजोतिमेंधारे। मूर
तिकेसज्याबिसतारै। योंआका
जहांलौदेवै। तेसमस्तमममूरति
लेवै॥ ५६॥ करैजशाविधिसबमेंपू
जा। मोकेछोडिनजांनैदूजा। यावि
धिकीयाजोगमनल्यावै। सोनरभु
मुक्तिफलपावै॥ ५७॥ मोकेउतम

हसं वरावै। तामै मम प्रतिमां पधरा
वै। मो कौं करै वाग फुलवा ई। जॉनि
महो छवकी अ धिका ई। पूठ। मम हि
त सदा बरता दिक देवै। बडत नां
ति मम भक्तन सेवै। मम पूजा प्रवा
ह के हेत। देइ गां वपुर हाट अरु ये
त। पाए। सो मम समि ई सुरता पावै। ति
हुं लोक को ई सक हावै। जो मम प्रति
मा थापन करै। सो सब भूपति होय अ
तरै। ई०। जो मेरो मंदिर सवरावै। ति
हुं लोक की प्रभूता पावै। प्रजादिक न
ब्रह्म को लोक जहां नही नां। नै सो
क। ई। तनौ की ये न है वै कं व। काला
दिक सब कुंते अ कं व। जो यो सेवै
के गह कां म। सो मम भक्ति न है सुष
धां म। ई०। न्ह कां मी भावै तै सेवै सो
तन मन सब मो कौं देवै। सो पावै मे
रो निज ज्ञान। न है मो हि छै सव अं
न। ई०। वृति शुक्ति अरु विप्रनिकेरी

अरुजो करी होइ कछु मेरी दर्द
शोर की किंवा श्राप ताके हरे क
स्यो सब पाप दध सो होई कर मति
दृगमांही बरथ को टिकु निकसेनां
ही करता प्रेरक तथा सहार्द
नुमोदक जिनि रुचि उपजाई दध
सब हिन को फल होय समान ना
वे उत्तम ना वे श्रान ताते महित कर
निकरे सो बकु तन ले नव जल तरे
दध दोहा या विधि पूजा कौ करे त
कं उपजे श्रान जाते मेरो पद लहे
ता कौ करौ बघान दध इति श्री भा
गवते महापुराणे येकादसस्कंदे श्री भ
वदुर्ध्वसमां देवायां पूजा विधि
निरूपण नाम सप्तवीसोऽध्यायः ॥
२०८० ॥ श्री भगवां न उवाच ॥ चै
परी ॥ उर्ध्वतो सौ भायूं श्रान ताते लहे
मोहित जि श्रान उत्तम मध्यम कर म
पु भाव जे सब जग मै नां नां भाव ॥ १ ॥ ति

तिनकी निंदा नहीं करे। अरु नहीं
 कहे अस्तुति विसतरे। प्रकृति पुर
 यनिरमत सब जानै। येक जांनि सब
 भेदही जांनै। शब्द स्था आदिकी टपर
 यंत। येकरूप देखै मम संताजे जेबहु
 धि कर मख भाव। तिनको आंनै ना
 अभाव। तौ सो होय अरथ तै नृ
 माया मोह चित आ कृष्ण मिथ्या
 हि चित को धरे। तातै मूरख जांमै
 रे। धानी न होय जब इंद्रिय देह॥
 रुप न लहे तब आतम येह। जहो मन
 जाग्यो तहां तहां जावे। ब्रह्म त नांति
 के सुषुप्त्य पावे। पुनि सुषुपति में हो
 वे लीन। मरणो कही ये अहं मम ही न
 यौ सुषुपति अरु देखत सुपनां। जन
 म मरण ब्रह्म सुषुप्त्य उपनां। जो
 लग सोवे तो लग पावे। जागतही क
 खे न रह पावे। तौ यह सुषुप्त्य पाप
 र पुन्य। जन म मरण

॥ ह्येर्षा सब आकार जहां लंकोर्षा ता
 ॥ १९ ॥ सब मिथ्या आकार चेतन ब्रह्म
 ॥ कलन आधार ॥ २० ॥ अरु स्रुतिको प्र
 ॥ म विचारे नेतिनेतिक रि सदा पु
 ॥ कारे ॥ अरु त्यों देखे अनुभव मां ही ॥
 ॥ नामरूप कछु यह नां ही ॥ २१ ॥ अंतन
 ॥ रहि हैं कृतेनां आदी ॥ आतमनिश्चल
 ॥ अनादी ॥ अैसे ब्रह्म विधिको विसता
 ॥ मिथ्या जां निवरण आकार ॥ २२ ॥ मन
 ॥ क म वचन होय नह संग ॥ ब्रह्म विचा
 ॥ रही करे अ भंग ॥ अैसे वचन कहे भग
 ॥ वान ॥ तब उठ वृष्टो दिह जां न ॥ २३ ॥
 ॥ उठ न उवाच ॥ हे प्रभू यह आतम अ
 ॥ विनासी ॥ चेतन रूप स्वयं परकासी ॥ निर
 ॥ गुण निराकार निति सुध ॥ सदा अनावर
 ॥ तिसदा परबुध ॥ २४ ॥ इहारहित सदा रु
 ॥ नंद ॥ सकल प्रकास तिषे न ही दंद ॥ अ
 ॥ रु यह देह सक्ति करि ही न ॥ जड अ सुध
 ॥ कै जावै ली न ॥ २५ ॥ ताते तिन को संग न

।महाविशेषपरसपरहोईकचुअं
 न्मानहींआतममांहीं।अरुतनसोंक
 होवेनांहीं।रई।आतमकंबंधनन
 कोई।अरुआतमआवरणनहोई।
 संसारतहैसोकौन।आतमसुधस
 दासुषभौना।रष।थहकरिकृपामो
 हिसमजावो।मेरोअमसंदेहमिटवो
 सोउधवपूछो।ज्ञानातबबोलेभव
 तिभगवांनारु।श्रीभगवांनउवा
 च॥आतमकौनांहींसंसार।अरुतिन
 कौनहींजेआकार।तिनदोनों।तैंजो
 अविबेकाताही।कौंभवइअनेक
 रण।इंद्रीयदेहप्राणमलबंध।इतर
 जोआतमसंबंध।तातैंआभासैसं
 महादुषनांनपरकार।रु।जे
 दै।इंसोंसंबंधातै।लगणातंस
 नेबंध।सोअग्निअनकस्योसहजां
 नांहीं।सकचुसकलकरिमानै
 शजद्वयिमिथ्याहैसंसार।

कुंवार न पार ॥ सदा जीवतु यही मैं रहे
बार बार तन छोड़े गेहे ॥ ३२ ॥ ज्यों सुप
हे यह क कुनां ही ॥ परिसब सांचौ नि
प्रा मां ही ॥ जो जो सुषुप्त मनमें आवे
सो सो सकल सुपनमें धावे ॥ ३३ ॥ हे न
ही परि है सो जां नैं ॥ नां नां विधिके सुष
दुष मां नैं ॥ जागत ही क बुहे ये नां
ही ॥ सब व्योहार कृथा के जां ही ॥ ३४ ॥
हरष सो क नय मोह अरु लो न ॥ अ
छा क्रोध अ सो ना सो न ॥ जन मरु म
रण विकार जहां लौ ॥ अहंकार के
सकल तहां लौ ॥ ३५ ॥ आत्म सदा ये
कर स है ॥ अहंकार संगति दुष स है
इं शी य देह बुधि मन प्रां न ॥ सुत्र रु म
हत्त त्व अ नि मां न ॥ ३६ ॥ इन सों मिलि
करि आत्म ये क ॥ माया के सुष ग
हे नै क ॥ तिन तिन के हित कर म
निकरे ॥ करम निके वसि जनमें मरे
३७ ॥ लिंग बंधो देह निमें जावे ॥ तिन

एषमीरमहतत्वइं प्रीयकरम
रीराष्ट्रसुषत्ररुदुयममतात्रहं
नारतिनकोनांविधिसंसारजो
नेरमूलसंकलहीजांनैज्योजेवरी
सांपत्योमांनै।।त्रए।।प्यानषडगभ
जिमोहिउपावे।।गुरसेवासोसांनध
रावे।।तासौकाटिहोयनहसंग।।वि
चरेसंबदेष्टममत्रंग।।ध०।।गुरुके
हामेंधारे।।आदिअंतलौशु
तिविचारे।।जनममरणदेष्टेपरतत्ति
तजिअज्ञानहीहोवेदसा।।ध०।।साध
नधरममांहिंशिरहोई।।आतमदेह
विचारेदोई।।जोयाजगकीआदिरुअं
ता।।सोहीमधिचारेसंता।।ध०।।आदिरु
अंतमधिमेंयेक।।नांमरूपनरमरूप
अनेकाहेमयेकज्योआदिरुअंत।।
मधिकीयेआत्तरणाअनेक।।तोके
हेमछोडिनहीं।।अंन।।जोविचारक

रदेये ज्ञान मिथ्या सकलनांमन्त्राका
हेमकाल नीये करे विचार ४४ तै
जगन्नादिमधिन्त्ररुन्त्रंत मोहिन्त्ररु
पविचार संत आदिन्त्रंतमेंयेक
रूप सोइमधिहृथासवरूप ४५ ज
शतसुपनसुधौषतिन्त्रवस्था आ
दिन्त्ररुन्त्रंतमधिमास्वस्था इनके
नाम नवं जो रहे सकल ह्योडिताके
बुधगंहे धर्द इंद्रियन्त्ररु इंद्रिय
के हेव इंद्रियविषय इनके वक्र
व तेसबजाय एक विननांही स
ब्रह्मसोयो जो मांहे ४७ जाहि
सतसकलप्रकासे जाकी सति
ननासे मुखको मुखकरणिके
शा करके करचरननके च
४८ जासानामनेनकेनेन जि
भनेनकेनेन याविधिसकल
संयक ताविनुंमिथ्यासकल
क थाए जेनांमरूपविसत

एतद्वत्संसारतेसबत्रादि
तेकमनांही॥अरुनहीरहेअंतक
ही॥पुत्रातेतेअबहुमिथ्यामाने॥
कारणब्रह्मनिरंतरजांनै॥नांमधस्यो
लविकारातिहुंकालमेंमा
टीसारापुशयेजोकबहुब्रह्मसमस्त
दिमधिअरुसबकेअस्तात्रैसैब
विधिबेदबघांनै॥ब्रह्मबतायहेत
जांनै॥अत्रादिसमस्तहुंतोकबहु
नांही॥अबत्राभासतुहेमोहिमांही॥
यातैपरेब्रह्ममरूप॥सकलप्रका
शापत्ररूप॥पुशयेविचतरता
श्राभासै॥ताकासक्तिमक्तिपरकासै
तैसकलब्रह्महीनेये॥जिकरि
पत्ररूपहीदेथै॥इत्तैपरेरूप
मजांमो॥अरुयेसबमरूपहीम
हेतछोडिनिश्चलकरहो॥जांनिब
ताब्रह्महीनहो॥पुशयेजैजेनितिक
विचारामिथ्याजांनैसबत्राका

८ सेवाकरि ज्ञानवधावे चित्तनमोहि
 अथंफितध्यावे ॥ ५ ॥ धियेजोतनसो
 तमनांही ॥ तनघटरूपविचारैमां
 अरुइं प्रीयतेदीपसमांन ॥ इनही
 प्रकासकज्ञातमज्ञान ॥ ५ ॥ अरु
 ज्यौं देवपत्नमनबुधी ॥ आत्मकीन
 जांनै सुधी ॥ चित्तजलतेजपवनश्चा
 कास ॥ अहंकारगुणचित्तप्रकास ॥ ५ ॥
 सांमिप्रकितनमज्ञापंच ॥ तेजइज्ञात
 मकौंनही जांनै ॥ आत्मसक्तिइहास
 ववांनै ॥ ५ ॥ सकलप्रकासकज्ञातम
 येक ॥ येजइजांनिनसकैअनेक ॥ याधि
 धिजोममरूपविचारै ॥ सकलउपाधिउ
 रैकीटारै ॥ ६ ॥ सोअजरहैइं प्रीयनथं
 नै ॥ किंवापुरविषयनश्चारतै ॥ तोरु
 वाकौंनही गुणदोष ॥ जीवतहीजिनप
 योमोषा ॥ ६ ॥ जैसेघनरबिआडेआयेते
 तिनसौं कचूरबिनही छाये ॥ अरुजो
 मेघहरिछैगये ॥ तोकचूरबिनप्रकासि

ततयो। ईश्वरविहेपरैउरैघनचंद्र। जंभै
लिपतिलोगमतिमंद। जैसेप्रगतपवन
घनतोशीधूमधूलिअरुदांमनिहोई। ईश्वर
रितुकेगुणसीतजसनादी। उपजतबिन
सतरहेअनादी। परिनहिंलिपतिहोय
आकासा। त्योंआतमांपरमप्रकासा।
परितोहूसंगतिनहींकरै। मायागुणनि
दूरिपरिहरे। जोलेंकरैमेरीदिठभक्ती
छुटीनहींरजतमआसक्ती। ईश्वरदेवेने
दनभूलेजोलें। समजनसंगकरैनहीं
जैसेरोगहोयतनमांहीं। दिठकं
मूरउयास्योनांहीं। ईईसोतजिअर्गद
थहीकरैसोसोरोगबहुविंस
त्योंअहंकाररोगभवमूल। सो
लगपनभयोनिरमूल। ईश्वरतौल
संगअपथिहीकरै। तौबहुस्यो। जग
अवतरे। बंधुकुटंबसिषबहुते
आवैसकलसुरनकेप्रेरे। ईईतेअं
यबहुकरै। जोगीकोंकसनिबि

रे सोतिन तै पावे श्रवतार बऊ स्यौं
भक्ति विसतार ६ ए कर मपंथ मै
मे नां ही मै प्रेर क ता के उर मां ही या वि
प्रायज्ञान विज्ञान दे धे मोहि मिटावे
प्रांन पुणे तव ता को तन कर मनिक
लेन देन नो जन विसतरे पूरव संस
कार करवे विधि को लिख्यौ न मिथ्या
जावे ७१ सो मुनि मगन ब्रह्म सुषमां
ही ताते करत जां ने नां ही जो वै वै श्र
रुठा डो होई श्रा वै जाय क हूं जी से
ई पर अंन घाय जल पीवे सो वै औ
ब्योहार देह को होवे सो सो क छुन
जांने जोगी निश्चल रहे ब्रह्मर सने
गी ७३ जो क बहू दे धे संसार इंडी
य गोचर विविधि प्रकार तेते क छु
तिन ही जांने सुपन वसत ज्यो जागे
ने ७४ प्रथम श्रात मां फुतो श्रबंध
श्राप ही भयो प्रकृति सो बंध बहो
स्यौं सो सो विद्या पावे तव ड थ जांनि

प्रकृति छिंटकावे ॥ ७५ ॥ तब बकुस्यो
 ताको तंही गहे ॥ मोहि जांनि मांही में रहे
 प्रथम हिजब मोको नहिं जांन्यो ॥ तब मा
 या सुषु उतम मांन्यो ॥ ७६ ॥ बकुस्यो जब
 मस सरणि ही आवे ॥ मस प्रसाद अग्यां न
 मिटावे ॥ तब मायाको दुषमय जांने ॥ प
 रमां नंदरूप मोहि मांने ॥ ७७ ॥ तातें आप
 ही गही उपाधि ॥ ताको तजे जांनि करि

। सदा निरंतर मोमें रहे ॥ बकुस्यो

भवसागर नही बहे ॥ ७८ ॥ ज्यो रवि अंस
 कल ही अक्षय परि रवि विनु न लये प्र
 क्षय ॥ रिव संजोग बकु रिजब होई ॥ तब
 मस्त देखे सो सोई ॥ ७९ ॥ रिव विनु अंस
 वै ॥ तातें कोई नैन न जोवे ॥

रिव संजोग प्रकास ही पावे ॥ तब सब दे
 तम ही मिटावे ॥ ८० ॥ परिते नैन त्रिकाल
 अले पा अंधकार सो भये न ले पाते त्यो
 के त्यो तम ही मांही ॥ परिरिव विन क छ
 देखे नांही ॥ ८१ ॥ रिव ते तम उपाधि परिह

पायप्रकासप्रकासहीकरे। त्यों यह
शतममेरोरूप। स्वयंप्रकासिकप्र
अनूप। ६२। जनममरणमरजादार
हेत। काहूकरिकबहूनहीगहित
अजरहितआमहीयेक। ताहीकरिये
देहअनेक। ६३। महानुभावसकल
अनुभाव। जामैंकदेनकरमसुभाव
नित्यानंदसदाअतिसुखै। सदानिरीह
सदाप्रबुध। ६४। जाकरइंद्रियतनमन
प्रांना। चेतनिकेवरतैंविधिनां। ज
हांलौंमनअरुबचननजावै। औरकै
नविधिताकंपावै। ६५। परिजबमोतै
रहितोभयो। तबताकोसबबलमिति
गयो। अंधकारआयोअज्ञान। तातैंदू
रिभयोमैंभांन। ६६। जबबहुस्योमम
सरणिहीआवै। तबसोगपानप्रकास
हीपावै। तातैंछो। डैसकलउपाधि।
जोमोबिनुकरिलीन्हीव्याधि। ६७।
ताकोअबहूपरसेनाही। परिमोवि

नांतजी नही जां श्री मो कों पाय सक त्म परि
हरे। मेरे चरण न कों अनुसरे
प्रकास भिदें तम जैसे दाम

ताते तिल हूँ के मेरे हे। मो मिलि प्रता नद
ही लं है। एणं उ ह्व क लो ई न्र ज्ञाना जो वे
के वल मे जां नै लं जां प्र ह्य बि नां क लु ह जे
नां ही। जैसे सां प जे वरी को ही। ए शि हें ल
दे ह ज ड सि ए जा नै। के ल क र क ब्र ह्म
करि मां नै। अरु य ह पंच व रण वि स ता
रा उ प जे वि न सें वार वारा। ए श ज कें
मि थ्या वे द ब्र ह्म नै। अरु त्यों ही ग र सा ध
मां नै। अरु अ नु न व तें त्यों ही दे खें। जग
सु प न ज ग त त्यों लें वें। ए श त्रि सो ज ग त्त
स ति जो जां नै। पु ष्य त वां नी वे ह ब्र ह्म नै
अं ति न श्रु ति के व च न वि ध रै। ज रे व
हैं ते ई उ र ध रै। ए धां ता

कहोते मूरषया न वमै ब्रह्मै। करमवि
पतति मकी बुधि तातै क देन पावे सु
शुभ्र ताते तिन कै लगे न ग्यान मूरष
आप ही जानै जाना तातै बिषई जीव स
नस्त। तिन ही नरमाय करै ते अस्त। ए
ताते उच्य यह ही ज्ञान। ब्रह्म ज्ञानिक
रिछो हे आन। मेरो न जन निरंतर करै
जा प्रकास देत ही पुरि हरै। ए७। अरु उ
द्वजो जोग कहौ वै। अष्ट अंग कौ वेद
बतावै। सब धर्म नि कोरा जामा नौ। भव
मोच क ये साधवै जानौ। ए८। जब या के
तन प्रवृत्त विकार। करि नही सके तकि
अधिकार। तातै वेवजु बिधि बिसतरे।
मबिस्वास पाय परिहरै। ए९। प्रथम ति
जोग धारणा करै। सीत उर रोग निपसि
रे। जैसे करित पपाप निवारै। मंत्र निग्रह
बाधादि कटारै। १०। भोजन शुभाशु
दसो रोग यौ। अज्ञान नासक हे जोग।
मादिक भांन सी। विकारा जीतै सुमर

अधार १०१ ममभक्तनकीसेवा
 करे। ताकरिदंभादिकपरिहरे। यावि
 धिविप्रजयसमस्तनिवारे। मेरोभज
 हिरदेमेंधारे। १०२। अरुएकनमूह
 केराजा। साधेकरमदेहकेकाजा
 देहमिटार्इचहीयो। देहमिटैमे
 षलहीयो। १०३। मेरोअंसआत
 मायेह। याकौडषदातीसोदेह। ता
 देहहीजेराख्योचहै। तिआपुहीयाभव
 मैबहै। १०४। तनकेरोगजरदिकटारे।
 स्वासजीतिकैमृत्युनिवारे। फेरिमृत्युना
 हीकलपंत। अरुनिपावैमहंत १०५।
 मृत्युजीतिब्रह्मरतहोई। ब्रह्मस्थांनमृ
 त्मनहीकोई। योगीसदाब्रह्मरतरहै।।
 ताकंकानमृत्युनहीदेहै। १०६। देहज
 तनअरुआसातजै। जोगजुगतिआतम
 कंभजै। जेयोगीदेहाअभिमांनी।।
 डषउधवयेनांही। १०७। मोबिनहृथाक
 रैश्रममूहामेरोयोगभजनसो

ॐ संतनिमांही तेतोमोतैन्मारेमांही ॥
० ८ ॥ प्रथम योगी जोगही करै ॥ विघन
तेवारियोगविसतरै ॥ ताकोतनजोनि
अनहोई ॥ तोहूआदरकरै नसोई ॥ १०
५ ॥ साधे जोगसमाधिसहेत गहिममस
गिबठावैहेत ॥ योगमांहीछांडैअहं
कार ॥ तातैनहींहोवैसंसार ॥ ११ ॥ तातै
योगीमोकौभजे ॥ ममआधीनहैआ
मात्तजे ॥ ममप्रसादतैमोकौपावै ॥ बड
स्यौभवदुषमैनहींआवै ॥ ११ ॥ अहंभा
वतजिजोगहीकरै ॥ सोजनभवसाप्र
नहींपरै ॥ जोगहीपरैब्रह्महैअसो ॥ स
मिकज्ञानजांनीयेतैसो ॥ ११२ ॥ जोगीयो
गमनजोरैजासौ ॥ आत्मब्रह्मप्रकासै
तासौ ॥ येसाधनहेमनकोनीको ॥ आ
गेजीवब्रह्मकैटीको ॥ ११३ ॥ जोहोके
रेआधीन ॥ आपहीमांनैसबबुलहींन
मैआधीनहोहुंताजनके ॥ जौआधीन
देहयामनके ॥ ११४ ॥ केवलजोगममस

वे ॥
ताते विघ्न न श्रवे को ई। विघ्न जहं
तहां ई का हो ई। ११५। मम श्रानं दे रहे श्रा
नंदता सब देवन के होवे वंदता। ताते
उध्वय हई करणों। मेरो मन जन हिरदा
में धरणों। ११६। जगत्तरु श्रा पब्रह्म म
ये जानें। द्वैत भाव कब कू नहीं श्रानें।
ब्रह्म भाव तें ब्रह्म ही पावें। जनम जनम

वस ॥
पूछो सुगम उपाय तब। उध्व परम सु
जाना ११७। इति श्री नागवत्सलापुरा
णो येकादस स्कंदे श्री भगवद् उध्व
भाषायां प्रमारण निरौ। ता
पद्मवी सो श्रध्याया २४। २१७।
उध्व उवाचा। चोपई। हे प्रभू य
तुम ज्ञान वषां यो। सो तो मे श्रति उध्व

न के
केवल
कैसे काज होय प्रभूति नको। १। जे हें

ॐ संतनिमांही ॥ तेतोमोतैन्यारेमांही ॥
० ८ ॥ प्रथम योगी जोगही करै ॥ विघ्न
नेवारि योगविसतरै ॥ ताकोतन जोति
अल होई ॥ तोहू आदर करै न सोई ॥ १०
॥ साधे जोगसमाधिसहेत ॥ गहिममस
णि बढावेहेत ॥ योगमाहिच्छांडेअहं
कार ॥ तातेनही होवेसंसार ॥ ११ ॥ ताते
योगीमोको भजे ॥ मम आधीन है आ
गतजे ॥ मम प्रसादतेमोको पावे ॥ बड
घौ भव दुषमैनही आवे ॥ १२ ॥ अहं ना
व्रतजि जोगही करै ॥ सो जन भवसाग
तही परै ॥ जोगही परै ब्रह्महेअसो ॥ स
मिक ज्ञान जानीयेतैसो ॥ १३ ॥ जोगीये
गमन जोरे जासो ॥ आत्मब्रह्म प्रकारे
तासो ॥ येसाधनहे मनकोनीको ॥ आ
जीवब्रह्मकैटीको ॥ १४ ॥ जोहोके
रेआधीन ॥ आपहीमांनै सबबलहीन
मैआधीन होइ ताजनके ॥ ज्योआधीन
देहयामनके ॥ १५ ॥ केवलजोगममस

एहि आवे ताही की सब अंका जावे
 ताते विघन न आवे कोई। विघन जह
 महां ईछा होई। ११५। मम आनंद रहे आ
 नंदता। सब देवन के होवे वंदता। ताते
 उद्वय हई करणों। मेरो न जन हिरदा
 में धरणों। ११६। जगत्तरु आ पब्रह्म म
 ये जानै। हेत भाव कब कुरु नही आनै।
 ब्रह्म भाव तें ब्रह्म ही पावे। जनम जनम
 के दुष विसरावे। ११७। दोहा। जैसे सु
 नि प्री कृष्ण तें अति ही दुस कर जाना।
 प्री को सुगम उपाय तव। उद्वय परम सु
 जाना। ११८। इति श्री भागवत महापुरा
 णे येकादस स्कंदे श्री भगवद उद्वय
 समां दे भाषायां प्रमारण निरौणोक्तं स
 अष्टादशोऽध्यायाः २४॥ २१७७॥
 उद्वय उवाच। चोपई। हे प्रभू यद
 तुम ज्ञान बषांयो। सो तो मे अति दुस
 र जानै। बसनां ही इंद्रीय मन जिन को
 कैसे काज होय प्रभूति न को। १। जे हें प

११५
 ११६
 ११७
 ११८
 ११९
 १२०
 १२१
 १२२
 १२३
 १२४
 १२५
 १२६
 १२७
 १२८
 १२९
 १३०
 १३१
 १३२
 १३३
 १३४
 १३५
 १३६
 १३७
 १३८
 १३९
 १४०
 १४१
 १४२
 १४३
 १४४
 १४५
 १४६
 १४७
 १४८
 १४९
 १५०

धी

महं सद्रिष्ठचित्तं तिनके ब्रह्मद्रिष्ट्यहे
जित्तोरे जेये ज्ञानविचारेणै चिचैवे
यामनको धारेणै २ तिनको मनवसि हो
यनज्यो ज्यो महाकलेसलहतहे तैते
तिनको मनवसि हो यनको हीं प्रम
करि जनमगुमावे यो हीं ३ तुव पद
परमां नंदसमुद्र ताको नेदन जांते
दुद्र करे जोगजग्पादिक करमा ति
नतै कदेन छूटे नरमा धी तातें गरव
बधे जे करे यातें जुगजुग जनमै मरै
केवल न क तुहारे जेते परमां नंद
नहे सो तेते ५ जबही तें तुम चरण
श्रावे तबही तें पूरण सुष पावे माय
निकटिन श्रावे तिनके तुमरे चरण
हिरदा मे जिनके ६ तातें सहज ही ज
गत मिटावे तुव चरण निमें सहजिस
मावे तुम ब्रह्मादिस कल के नायक
सबहिनके प्रभूता के दायक ७ ति
नके चरण गहे कैदीना तुमता के हो

वो आधीन ॥ अरु यह कहा अचं भा
स्वामी ॥ तुम सब प्रभू सब अंजामी ॥
६ ॥ तिनको सब तजि से वै जो श्री करे अ

हे जते तुव प्रद मुकट निधारे ते ते ॥ ए
राम रूप तुम भये मुरारी ॥ तिनकी हे वा
नर अधिकारी ॥ वानर सकल सषा तु

१० ॥ ताते जो तुव कृतहिं विचारे ॥ सो
क्यों पल तुव न जननि वारे ॥ तुमही न
यसिष देह सवारी ॥ चेतनिसक्ति तुहे
पुनिधारी ॥ ११ ॥ सदार है तुमरे आधारा ॥
तुमही निति प्रतिपालन हारा ॥ तापरि जी
व तुमही नही जानै ॥ करता भरता अर
न मानै ॥ १२ ॥ तो कृतुम अंगुण नही मानै ॥
बहु विधि जहां तहां रक्षा ठानै ॥ पुनि
जबही तुव सरणि ही आवै ॥ तब तुम सौ
चारु फल पावै ॥ १३ ॥ परितथापि सो
अति अज्ञान तुम कूं से थल है जो अ

महं सद्रिष्ठचित्तं तिनके ब्रह्मद्रिष्टहे
जित्तं चोरे जे ये ज्ञान विचारों ये चिषे
या मनको धारें २। तिनको मन बसि हो
यन ज्यो ज्यो महा कले सलहत हे तै
तिनको मन बसि हो यन क्यो ही श्रम
करि जनम गुमावै यो ही ३। तु वप द्य
परमां नंद समुद्रा ताको नेद न जानै
द्यु प्र। करे जोग जग्पा दिक् करमा ति
नतै कदे न छूटे नरमा धी ता तें गरव
बधे जे करे। या तें जुग जुग जनमै मरै
केवल न। क लु हारे जेतो। परमां नंद
न है सो तै तो ५। जव ही तें तुम चरण नि
श्रवै। तव ही तें पूरण सुष पावै। माय
निकटिन श्रवै तिनके। तुम रे चरण
हिरदा मे जिनके। ही। ता तें सह जही ज
गत मिटावै। तुव चरण निमें सह जिस
मावै। तुम ब्रह्मा हि सकल के नायक।
सब हि नके प्र नृता के दायक। या ति
नके चरण ग है कै दीना। तुम ता के हो

वो अधीन। अरु यह कहा अचं भा
स्वामी। तुम सब प्रभू सब अंजामी।
७। तिनको सब तजि से वै जो श्री करै अ

हे जते। तुव प्रद मुकट निधारै ते ते। ए
प तुम भये मुरारी। तिनकी हेवा
नर अधिकारी। वानर सकल सधा तु
स करे। सब हिनके सब हित अचरै
१०। तातै जो तुव कृत हिं हि चरै। सो

तुम न
व सिध देह सवारी। चैन नितु कि तुने
पुनिधारी। ११। सदा रहै तुमरे अवार
तुमही निति प्रतिपान्नहार। सा पाणि जी
व तुमही नहीं जानै करता भरता अर
न मांनै। १२। तो कतुम अगुण नही मांनै।
व क विधि जहां तहां अवागंनै। पुनि
जवही तुव सरणि ही आवै। तव तुम सौ
आरु फल पावै। १३। परितथा पिसो
अति अज्ञान तुम कूं सेय तन है जो अं

न॥ चारिपदार एसेव कजाके॥ तुम
भक्तिविराजे ताके॥ १४॥ येकजहां न
ही तुव भजनों॥ नरक जांनि सोही से
तजनों॥ तातें जो होवै सरवग्य तुम
उपकारन कौं तज॥ १५॥ अरु विधि
समि आयु रबल पावै बडु विधि प्र
त्युपकार बनावै॥ तो कह तुम ही अ
नृण नही होई ब्रह्मा आदि जहां लै
जोई॥ १६॥ जेतुम वा हरिसत गुररूप
भीतरि चेतनि सक्ति अनूप॥ यो जीव
निको पापनिवारो॥ आपही हिरदै
भसंकट टारो॥ १७॥ तातें भायो भज
नानंद॥ सहजिमिले तुम छूटे फंद
ये सुनि प्रीय उध्वके वै न॥ बोले क
कृपाके अंन॥ १८॥ श्री भगवानुवाच
धन्यं धन्यं उध्वममनक॥ सब जीव
नके हित अनुरक्त॥ तोसौ कहें आप
धर्म जातें सिटे सहजि सब क्रम॥ १९॥
करतें सुष आगे सुष पावै॥ छोडै न

नयमोमैश्रवे। छ व कर म करे नर
जेते। मेरे हेत करे सब तेते। २०। कर
मनिमै जाये ममनाम। मेरे करि राये ध
न धांम। मोमै श्रये मन की वृत्ति। ताके
सब श्राचरण निवृत्ति। २१। मेरी प्रीति
करे सो करे। मेरी प्रीति रहित परिह
रै। जिन देसनिमै मेरे भक्त। तिन करि
बास होय अनुरक्त। २२। सुर श्रु श्र
सुर नरनिमै जेते। मेरे भक्त नये हे केते
तिन तिनके श्राचरण निजानै। २३। मेरे
जजमहो छ व करे। परिबनिमै मिलाप
विसतरै। मेरी जहां जातरा होई। तहां त
हां चलि जावै सोई। २४। गीत नृति बाह्य
व करावै। छत्र चंवर श्रादिक श्रद्धि
कावै। प्रति उदारता करि सब ठानै।
ममहित लगे नलो सोमानै। २५। सब
भूतनिमै मो कौ देखै। अंतर बाहरिये
के लये। श्राप श्रादि जगमोमै जानै ज्यो
श्राकास अनावृत्ति मानै। २६। यों स

स्वभाव। सबहिनकेसतकारहीकरे
ज्ञानद्रिष्टिभेदहीपरिहरे। २७। येके
विप्रवेदअधिकारी। येकेअंतिजमह
विकारी। येकेविप्रनकेधनहरता।
अरुयेकेधनकेबिसतरता। २८। येके
तेजहीनबडुदेये। एकेतेजवंतबडु
पेये। येकेकरसकलदुषदाईयेके
सकलसातिकसमाई। २९। इत्यादि
कनांनाविधिदेये। परिजोभेदकहून
हीलेये। मेरीद्रिष्टिसबनमेंअंनें। मम
जनपंडितताहिव्रयांनें। ३०। याविधि
सबमेंमोकोजांनें। देहभेदकचुवे
नहींअंनें। थोरेकालमांहिताजनके
सबविकारमिटिजावेमनके। ३१। स
पद्दातिरस्कारअहंकार। सकलमिटि
कचुलगेनवार। तातेदेहद्रिष्टिनहीं
धरे। लोककुंटंबलाजपरिहरे। ३२।
हांसीकरेसकलहीलोक। परिसोअ

नेहरथनइरखनसोकानिनकीकछु
सबजीवनमैमोकौजा
जहां

इंसमानधरनिमैपरै
उधजोलगथावरजंगममांही। मेरो
भावहोयधिरनांही। तोलगमनवच
कायसमेत। यौसबमैवांनैममहेत। र
ध्याविधिकरतरहेनरजोई। ताकौस
कलब्रह्ममयहोई। मिटेअबिद्याबि
द्याआवै। तातैबंधनसकलमिटावै
उही। उइवसकलमतेहैजेते। वेदम
धिमेभायेतेते। तिनमैयहमतोमम
सार। जातेवेग्यमिटेसंसार। उध। मन
कमवचनजहांलौजेते। ममरूपही।
जानैसबतेते। उधवइसोधरमहेमेरो
कहाप्रभावकइंतिहिंकेरो। उध। अ
णरूपकप्रगटजवहोई। क्यौंहीबहु
रिमिटेनहीसोई। जहांनगैगुणनिरम

तवस्तु जन्म लगे सब होवे श्रुतु ३५
मै निरगुण सब गुण पर कासी ताते स
मधर मन्त्र बिना सी । मेरो नां सक
देन ही केया ही । मम धर्म थोरो उत्थो ही
ध० श्रुतु बुद्ध बये कदा कही जै मेरो
धरम कदेन ही छी । जै बुद्ध बजे लो
कि कब्यो हार राज सतां मस बिबधि प्र
कार ध१ जिन ते केवल न होय श्रुत नर
थ पर वृत्तिको सब मे टे श्रुत नर
कन साहि डार निहार कां म क्रोध हे
प्रादि विकार ध२ जो ते उते मो मै क
रै तो ह्रुमो हिन हे व कुतरे जै सैं कं स
मरग नय कस्यौ मेरो धरम न ही आव
धो ध३ परि सो नय न करि मो मां ही
नम पद पङ्क चो नो मै ना ही श्रुत गोपि
निकीये विन चार लंघे वेद तजे न
रतार ध४ परि विन चार मो मै कस्यौ
गो ह्रुति न नो जल परि हस्यौ श्रुत ज्यो
धर कियो सिस पाल जाते जीवनि रा

सौकालापरिसोर्नमोमेंकरिदोष॥भ
वजलतजिकरिपङ्कचौमोठा॥यौविष
रूपविकारहैजेते॥मोमेंआयईमृतके
ई॥

चहीलीजे॥पूरणकाजआपनौकीजे
धषायेकंठीक्षिणनगुरदेहासकलवि
कारनहीकौगेहाताकरिपईयेहरिअ
बिनासी॥निरविकारपूरणसुषरासी
धषायेसबब्रह्मग्यानकौसारजातैमि
टैसहजसंसारमेंसंघेपमांहिसबक
हौ॥यातैसारनकहिबैरहौ॥धरुणिय
हेनरतनरुयेममग्यानदेवनहूँ
कौदुरतनजानि॥जहृपिजीवलहेन
रदेहातोहूग्याननपावैयेहा॥पुगतातै
मेंनाथेनिजग्यान॥तातैमोहिलहेत
जिआना॥उहवप्रह्नकरीनुमजेती॥

यह तुमसे मेरो संबाद। अध्यात्म परमा
तम वाद। धरता कौ सुनिहिरदा में धा
रे। पावे मोहि आ फको तारे। जो यह मेरो
धरणा ज्ञान। मेरे न कन देवे दां ना धर
सो कह। यतु हे मेरो दाता जहां तहां
होवे बिध्याता। जो जो दर्शन है सो सो
लोक वेद भाय हे दोई। धरता तै दां
न देय जो मेरो मैं आधीन होइ। तिहिं
के रो मोहि देय सो मो कौ पावे। तिन
को ले सो मोहि समावे ५५ जो नरया
को निति ही पढे। ता जन कौ मो सो हित
बहे। सो जन मेरो अति प्रीय होई। ता
के सम ह जो नही कोई। ५६ जो ये सुने
निति करि आदर। ओर सकल को क
रे अनादर सो कर मन सौं लिपति न होई
मेरी भक्ति न है दिठ सोई। ५७ मैं ये प
रम ज्ञान उच्चास्यो। उ ह्वतुम क छे
हिर दे भास्यो। सो क मोह नय न द्यो
निबर न निश्चल नये। हिर दे आब

उद्धवये जो मेरो ज्ञान सोम

अरुनासती कड है कुवा हेई
धृपा प्रीति न जानै नही मम भक्त ॥ ५२ ॥
नन देवे येह ज्यो काल र भूबी जरु
मेह ॥ ६० ॥ इन दोष न करि हो वै ही न
मेरो भक्त प्रीति दिठे दीन अस्त्री सुइ
उत्तरे सो होई ता रुसो अंतर नही को
ई ॥ ईश असे न सो या ज्ञान ही कही ये
तोति न सहित प्रम पद लही ये जो ये मे
रो ज्ञाने ज्ञाना ताहि ज्ञानि वै रहे न अं
ना ॥ ईश ज्यो को ई पा वै पा यूष ता कै रहे
न द्व जी भूषा ॥ ज्ञान रु कर म जो ग अष्ट
ग ॥ सब स्वा फिल ये मेरो अंग ॥ ६३ ॥ अर
थ रु धर म मोषि अरु कामा इन सब हि
न को मो में धाम ता तें मो में आवे जो ई ॥
इन सब हि न को पा वै सो ही ॥ ६४ ॥ परि
रो जन क वृ न ले वै ॥ सकल त्याग क

106 मोकोसेव तातेसाध्यरुसाधनजेते म
मजनदेधमोमेजेते ईधु सबतजिज
बममचरणानिसेवे। आपनिवेदेक
चनलेवे ताकेसमिहजाधीयनाही
सोनितामामेमेतामांही ईई तबसुनि
असहरिकेवेन उधवअंसुकला
कुन्नेन आगेवाडेअंजुलीबांधेपे
ममगानतनमनदिठसांधे ईधु वेन
ऊतेंबोलेनहीजावे कंठकूतेगद
गदसुरआवे तातेउधवचुपकरिर
है कळवेरकळवेननकहे ईठ
वऊस्योचितथानिकरिधीरज पूर
एप्रेमनयोअं वकीरज निश्चेआप
कृतारथःमान्यो सबसंदेहहिरदेतैना
न्यो ईधु हरिकेचरणनमांथोधास्यो
उधवनकबचनउच्चास्यो जिनतैह
रिमैवाटेप्रेम जिनकोंकहिसुनिपर्
थेधेम उठे । ईतेअंजुलीबांधेपे
ननमाअरुअविनासी परमानंदप

रमपरकासी। तिनके संनिधां न जब श्रावे
तवही सब श्रां न मिटावौ। ७१ संनिधां
न पावक के जावै। सहज ही तम मन यस
तगमावै। अरु तापरि तुम परम दयालू
मोनि जन परि भये कृपा लू। पश। ये
विज्ञान दी प्रमोहि दी कौं। जितैं सकल सु
भा सु भ चीन्हौं। तुम रे चरण सरणि भव
मांही। इजे वौर क दे सुष नां ही। पत्र जे
कोई तुव कृत कौं जां नैं। अरु तापरि
भव कौं इय मां नैं। सो तुव चरण सरणि
नहीं श्रावै। तो इजे कहं तैं सुष पावै
७४। प्रभू जी तुम श्रति करणां करी। म
म माया कांसी परि हरी। सकल जाद्व
निमैं अरु सनेहा। अरु जोषती सुत बित
ग्रह देहा। ७५। ये सब मेरे मन तैं टारे ॥
अपने चरण कं कल उर धारे। तुम बि
सर्तरी अपनी माया। जिन ये सकल ज
गत भर माया। ७६। सो तुम ज्ञान व डग
सौं छेदी। ६

नमो नमस्तु ज्ञानप्रकाशी जोगेश्वर
रत्ननासी पुप दीजे मोहिये कबर
देवा निश्चल हिरदै निरंतर सेवा तुम
हैं। छुं डिङ्ग जो नही जानें। परिसेवक
छे सेवा जानें। ७७ मोहि प्रसाद दी जीये
येह तुमसो निश्चल बढे संनेह। करी
वीनती उद्धव भक्त। बोले हरि जी छे
अनुरक्त ७८

तथा अस्तु उद्धव भक्त मम चरण
निनिश्चल आसक्त अस्तु म उद्धव
ऐसी करौ लोकनि कौ सिद्धा बिस
तरो ७९ वडी घंड आ प्रमहे मेरो। अ
तिपुनीति दरसन जिहिं केरो। तहां ती
रथ मम चरणानि को जल। दरस परस
अस्नान हरे मल ८१ नाम अलखनि
द्रासो गंगा। निरमल करे इस सब अंग
तहां जाय तुम वासा करौ। फल नषिण
तनवल कल धरो ८२ इंद सीत उल
दिक सहो। विनयादिक सुनलषिण

गहो। इंद्रियनके अरथनिपरिहरो।
येवि

सदाबिसतारो। ७४। तवती
न्योगुणकौपरिहरिहो। ममनिरगुणप
दकौ अनुसरिहो। यहं उद्धवपरतं पा
मेरी। फिरिउतपतिनहीकैहेतेरी। ७५
याबिधिकृष्णवचनउच्चारो। तेउद्धव
त्तेमसतकंधारो। चरणनिपरिदधिणा
दीन्ही। तवचलेबेकीअंकाकीकी।
७६। जद्यपिहंदहिरदेनहीआवे। तो
हृहिरजीतजेनजावे। अंसूकंठअति
आंदरबुधि। तनमयनयोनतनकीसु
द्धि। ७७। कृष्णवियोगनक्योहीसहे। वा
रवारचलिफिरिफिरिहो। अंतरजां
मीपरमगोपाल। जनकौजांनिप्रेमवि
हसन। ७८। निकटिबुलायमिलेदेअंग
जांनरूपकीकौसरबंग। तवअपनी

८७७ तोह प्रथमही कृष्णपधारे जाद
 वलेपुजा ममं हारे तबही तहां उद्धव
 चत्तिनाथ कृष्णयेकही वैवेपाये ॥
 पुनिमें त्रेयपधारे तहां कृष्णदेववैवे
 हैं जहां दोऊकीयो हरिकों प्रनांम ॥ ६१
 सनपाये अतिअनिरांम ॥ ६२ गडेन
 येजोरिकरदोई प्रेममगनककुक
 हनकोई तबतिनकों हरिभाष्यो जंत
 जंम अंधकारकों भांन ॥ ६३ परस्मत
 योगसौ भाष्यो अपनों गोपिम तोसो
 दाष्यो प्रमसिद्धांतसारको सार या
 तें औरन ब्रह्मविचार ॥ ६४ मैत्रेयको
 दीनों आदेस बिदुरही करी योयान
 पदेस अज्ञादी नही उद्धवजनकों अप
 नीसक्तिकीयो धिरमनकों ॥ ६५ तब
 उद्धव हरिचरणनिपरे हरिहेरदे
 निश्चलकरिधरे पुनि उद्धवजनपंड
 चेतहां नरनारांयण परगतजहां
 ॥ ६६ जहां जायकी न्हें आचरण जेजेह
 रिभाष्येने करण बलकलअंबरफल

दीतवत्रिगुणविसतारमिटायो ॥
ध्रुवब्रह्मनिरंजनपायो ॥ यह हरि
ध्रुवकौसमादा ॥ हरिजीकोहे प्रमप्र
मादा ॥ ए७ ॥ जाकौं कृपाकरै सो पावे
नजिनवसिधुब्रह्ममेंजावे ॥ जब तै
याकौं जाये सुनै ॥ प्रेमसहितहिरदामें
गुनै ॥ ए८ ॥ तब तै पावे परमानंद ॥ प्रम
हीबिनांमिटे दुषदंदा ॥ यह स्वयंमेव
आपहरिकहो ॥ जामें कछुसंदेनर
हो ॥ ए९ ॥ यामें त्रैसोकृष्णप्रभाव ॥ मिटे
जगतउपजे हरिभाव ॥ जिनहरिप्रग
दंभ्रंमृतहै करै ॥ नक्तनपायसकल
दुषहरे ॥ १०० ॥ एकजलधितै भ्रंमृत
नेपायो ॥ निजाधीनदेवनकौं पायो ॥
जरारोगआदिकं दुषहरे ॥ बलउप
जायविगतभयकरे ॥ १०१ ॥ अरुहृजो
यहभ्रंमृतयेकावेदसिधुतै ब्रह्मवि
वेषसोअपनेजनिकौं पायो ॥ जिन
ममरनभवनयहीमिटायो ॥ १०२ ॥ अरे

से आदि प्रत्यक्ष विनासी ॥ सुमरत जिने
मिटे तब यासी ॥ कृष्णनां मली नौं अ
वतार तिन कौ बंदन बारं बार ॥ १०७ ॥
देवता ॥ ओं सो सुनि सुख देवसों ॥ परमत
त्व उपदेस ॥ कृष्ण कथा के प्रेम तैं ॥
की नही प्रहसन रेस ॥ १०४ ॥ ५ ति आना
गवतिली ॥ गी ॥ कृष्ण कथा के प्रेम तैं ॥
शिव ॥ कृष्ण कथा के प्रेम तैं ॥
कृष्ण कथा के प्रेम तैं ॥ १०५ ॥
हरिकी कथा सुनावो ॥ करण पुढ निय
ह अंशु तपावो ॥ हरि उपदेस नुठ वही
दी न्हो ॥ पीछे आप कहत हां की कौ ॥
१ जादव कुल कं प्रगट्यो आप ॥ हरि
जी कहा कसो तब आप ईशुर कौ वा
धान ही कोई ॥ अरु दिज आपन मिथ्या
होई ॥ सब के तन मन मोहन देह ॥
परमानंद सुखा को गेह ॥ जे नारी हरि
दरसन पावै ॥ तिन सों नैन नयै चै जावै
३ ॥ अरु जे हरिके रूप ही गावै ॥ वाणी

माश्रीप्रज्ञेसोतनहरित्याग्योकेसै॥
कोईहरेनागमणिजैसेंज्ञेसेबचन
कहेंनरदेवातबउतरदीन्होंप्रोसु
कदेवादीशुकउवाचा॥द्वारवतीउ
ठेउतपात॥तिनकोंदेधिकहीहलि
वाता॥उग्रसैनप्रादिकसबलोगास
नासुहरमांड्यनसोक॥७॥तिनसोंक
प्रबचनउच्चारे॥हरिकोंमत्तेनलये
विचारे॥निजमायासोंमोहितकरे॥
ज्ञानविवेकसबनकेहरे॥४॥श्रीभग
वानुवाचा॥हेयावहंसुनोससबा
ता॥द्वारावतीबहुतउतपाता॥य
हउतपातमृत्युनिसाना॥तातैतजिये
यहअस्थाना॥जुवतीबालहृदस

बजेते। श्राद्धद्वारपठईयेतेते। श्रोरस
 कल्पप्रभासहीजईये। तहांपश्चिमस
 रस्वती। अन्हईये। १० करिसनानतन
 निरमत्तक रिये। सुधहिरदेतीरथव
 तध्विये। जेजेवकुतपितरअरुदेवा
 तिनकीकरियेप्रजासेवा। ११ अरुविप्र
 नकीप्रजाकीजे। करिसुनभानदानवकु
 दोजे गायत्रिसौनोंवसत्रादि। हयहा
 श्रीरथअनग्रहादि। १२ आश्रीवाददि
 जनिकेनीजे जातेदिष्टासकत्तईली
 जे देवरुविप्रगायकीप्रजा। पापहर
 णविधिप्रोक्तनइजा। १३ जेसीसुनिह
 जीकीबांनी। सबजादवनेमलीक
 रिमांनी। नावनेबेठिसिंधुहिउतरे
 चदिकरिरथनपयांनोंकरे। १४
 ज्योहरितिनकोश्राग्पादीन्ही। त्योते
 सबनिसंबेविधिकीनी। करिसनान
 धरमसबवांने। सधिप्रनासआपवैकु
 मांने। १५ तबलिनकीयो जुमद्राश्रयत

तेनू लिंगये सबज्ञाना तबमदमतस
 कलई नये। हरिमाया विवेक हरिस्ति
 ये। १६॥ तिनमें कलह नये। उतपन स
 बमें प्रेरक हरिपरिच्छेना तबतिनक
 तासना संजारी। सातिकबीरगिरा उ
 चारी। १७॥ कृतब्रह्माको करिअपमा
 नासातिकछोडे बाणी बाण। नाई जो
 कत्रीयतनधारी। अरुबहुमें कही
 ये अधिकारी। १८॥ सोत्रैसोत्रैसीको क
 रै। सोवतबालनिके सिरहरे। येप्रद्यु
 त्तवचनरनुबास्यो। कृत्यब्रह्माको
 अतिधिकारीस्यो। १९॥ तबकृतब्रह्माकी
 कौकुधा बाणी बाण प्रकास्यो जुध। अ
 रकरैषित्रीकोत्रैसी। व्याधकुरज्योने
 कीहीजैसी। २०॥ भूरीश्रवानिरायुध
 यो। जा

कौबधतुमकीन्होत्रैसै।

करैनेजैसै। २१॥ तबसातिक

बाणी सुनै सुनै हो सारंगपाणी। २२॥ न

को जस सब श्राप सिरा ह्यो ॥ तातें इसी म
 तो छे श्राप ॥ २२ ॥ येक हिवचन बडु
 निन का ह्यो ॥ कृतवत्सा को मस्तक वा
 ह्यो ॥ ज ह्यो पसब मिलि बकृत निवासै
 तो कृसातिकी को धन टास्यो ॥ २३ ॥ तातें
 सकल नये जब कुध सातिकही संग
 न्यो जुध तब तें सकल नये है श्रोरा जु
 धर चो सायर तट घोर ॥ २४ ॥ को ई धन क
 वा नसो लरे को ई घड गहें संहरे ॥ के ई
 फरसा गदा कुठार ॥ के ई ले सो हथी प्रहा
 र ॥ २५ ॥ के ई गुरु जगो फणी के ई ब्रयादि
 क निलरें ते ते ई हरिषित्त सबै करें संग
 छेते देयें कृष्ण चरु राम ॥ २६ ॥ हय सो हय
 हाथी सो हाथी ॥ रथ सो रथ साथी सो साथी
 धर सो धर कुंठ कुंठ नसो मही मरु मही
 धंवे नवे निसो ॥ २७ ॥ ध्वर सं ध्वर मि
 लिलरें नर सो नर मिलि जुद्धि करे ॥ म
 हामत क बू नवे नये सै ॥ जुध करे बन
 भंग ज जै सै ॥ २८ ॥ सांव प्रद्यु मनवां न्यो जु

लौं अक्रूर धनो ज अति कुधा तहां सं
जीतरु सुन प्राकरै जुध वीरन को
न प्राण गद सेनां म कृष्ण को भ्राता नां
म सुचारु पुत्र विष्याता ल्यो सांतिकी सं
मिलि अ नुरुधा पुरुथ सुमित्र करै मि
सत जिता भां नूं आदि दे जो ध अ पर मि
ता आ पुत्रा पु मै जुध ही गं नै हरि करि
हित क छन जा नै ॥ ३ ॥ हृष्ण वं सदा
ह वं सा सात्व अंध क नो ज व तं स
अर बुद सूर सेन म ध मा धुरा दे स वि
सर जन कुंति रु कुं कुरा ॥ ३ ॥ आ प न्ना
प मिलि जुध ही गं न्यो ॥ सब नि पर स पर
हदा भां न्यो ॥ पुत्र पिता भाई अ रु नाई
मां मां अ रु भां नै ज ल रा ई ई का का न
ती जे ना ती नां नां मित्र मित्र मिलि जुध
ही गं नो ॥ सु रु दे रु द ज्ञा ति न सं ज्ञा ती ॥
व मिलि न ये पर स पर घा ती ॥ ३ ॥ त व
दी ए न ये सब हि न के ॥ दृ टे त था ध

नकतिन ननके श्रायुधसकलची
तब नये तबतिनकरनिशेरकाल
ये ३५ नयेमूसलचूरातेजेते बज्र
मानिसिंधुतटतेतेजितसकलकरनि
करलीन्है। हरिसंजुधक्रोधहीकीन्है
३६ रामकृष्णवक्रनातिनिबारे। परि
तेभूरधकछुनविचारे। रामकृष्णके
रिपुक रिजांनै जुधबुधिअंतरगतिव
नै ३७ तबश्रापुहीकीयोतिनकोप।
कस्योचहेसबहिनकोलोप। तबश्रे
रकाकरनितिनलीये। थोरमाहिप्रल
यसबकीये ३८ विप्रश्रापश्राद्धादि
नकरे। हरिमायाविचारसबहरे। प्रा
धकक्रोधप्रगटजबनयो वांसविप
नकुलजरेवरिगयो ३९ तबकुल
सकलनिष्टहरिदेख्यो नकोनारु
तास्योलेख्यो जाकारणतीन्होंश्रवता
र सोपरिहस्योधरनिको नार तबसु
इतसेमंवननद्र कीन्होंब्रह्मध्यान

प्रतिभद्रा प्रापही ब्रह्ममांहिलेरा
योमानवदेहै हरिकरिनाथो ॥४१॥
मप्रयाणत्तयो हरिजबही लघुपी
लबेवेतबही निरमत्तरूप
जधास्यो दसोदिसाकौति
स्यो ॥४२॥ ज्यो निरधूमपावकप्र
सल्लेसो प्रगतभयो उजासा पीत
वसनैतनघनस्यो मत्तप्रसोवरण
अभिरामा ॥४३॥ सुंदरहास
मुषपद्म कंवलनेन सोभाकेस
द्व्यकरणिकंडलमकराकार
मुकटसोभा अधिकारा ॥४४॥ रूप
चतुरभुजश्रीगोपालरुचिरनील
रकेसबिसाला उरभृगुलतामणि
बनमाला कंठसूतकटिसुत्रवि
चुदुघंटिकानूपुरराजे ॥४५॥ ब
आभूषणभूमितश्रंगादे
अमितश्रनंगशायुधमूरतिवं
मस्तां सुमरतजिन्हहिं होयभय

अस्त॥४६॥उतमचरणकंकनशरत्त
 जिनको उरध्यावेनितिनक्त॥दधिए
 जंघानीचैकस्यो॥वांमचरणतार्नुप
 रिधस्यो॥४७॥योंपद्मासनकस्योजो
 गीस॥नासान्गरदिष्टिसमिसीस॥
 त्रैसीरीतिकरीसुषदाई॥संतनको
 यहरीतिदिवाई॥४८॥योंनिश्चलके
 वेवेकृष्ण॥सुमरतजिन्हहीमिटेन
 यत्रिष्ण॥अतिलघुमूसलनयंडज्योर
 ह्यो॥जलमेडास्योमछीगह्यो॥४९॥
 सोबहमच्छजालमेंत्रायो॥जाकेउदर
 लोहसोपायो॥जराब्याधिभलकोसे
 कीज्यो॥लेकरेसिरकेआगेदीन्हो॥
 ५०॥सोबहब्याधिफुतोवनमांही॥ह
 रिकोपदतिनजांन्योनांही॥हरिको
 चरणदृष्टिजबपस्यो॥मृगमुषजां
 निघाततिनकस्यो॥५१॥सोहीवांएल
 गायोचरण॥विप्रवचननहींमिथ्य
 करण॥सोबहैबध्दिकनिकटिचलि

यो ॥ रूप चतरनुज दरसन पायो ॥
शं चरण लज्जो जब देख्यो बाण ॥ जरा
नयो तब मृत्तिक समांति ॥ चरण निप
रे बो ल्यो नयनीत ॥ कं पत अंग लज्जे
ज्यो सीता ॥ पूरु हे प्रभू मे की न्हों ॥ अपरा
धा तुम हिन जां न्यो ॥ मूरुष व्याधायें मे की
न्हों सकल न्यो ने ॥ वां न लगायो मृ
ग के जां ने ॥ पूधा ॥ अपराध हिन तुम ही
टारो ॥ जेतु मनां मली ये ते तारो ॥ तुव सु
मरण सब पाप बिना से ॥ मिटे ॥ ज्ञान
ग्यो न प्रको से ॥ पूधा ॥ ब्रह्मा आदि करै ॥ अ
राधा ॥ तिन को मे की न्हों ॥ अपराधा ॥ तां ते
प्रभू जी बिलमन करो ॥ मोषी पी के प्रा
ही हरौ ॥ पूधा ॥ तां ते बडु स्यो करूं न्ये से
यह अपराध कस्यो मे जे सो ॥ जिन की
माया को बिसतार ॥ ब्रह्मा सिवसन क
दिकु मार ॥ पूधा ॥ श्रौ रो श्रुति द्रष्टा है जे
ते क्यो ही जां निस के नही ते ते ॥ मोहि
त सकल तुम्हारी माया ॥ जां ते कि न

हं पाप... राया पृष्ठ जिनकों पाप जे
 निहम लल कोन नांतिक रिजा नैह
 ले लाने जे जइ जीन विचारे विगौ मोष
 र्षी कों सारे पूए जे सी जरा अधिक
 का बाणी सु नीह्ने क पर सारंग पा
 र्णी तव प्रभु श्राप जवन उचारे ता
 के सकल नमो क ते हारे ई०

उ वि उ वि ज रा भ ये म ति

माने अपनों क सो पाप मति जां नै ये स
 म ल ली ला हे मेरी या में कहा सक्ति हे
 लरी दर मेरी कया जा कु तु ख र ग ज
 लो न्हा सु द न ति न प स र ग जे से वे न
 क हे हरि ज व ह । उ चो वि मा न सु र गौ
 त व ह । ई० ती न परे क मां श्रु प्र ना म
 को र के अधिक गयो सुर धां म च ठि वि
 वां न सु र ग ना क ही गयो जै जे सब द त
 लो न लो न यो ई० त व र थु ली ये स् व र
 थो र थु पारि हरि जा कों क ह न पे ये
 तु न म धां ध प व न ज व न यो ता के यो

कृष्णपैत्राद्योर्द्धधापीपलमूलक

आसनाप्रभार्मनुससिस्तरक

तासनाश्रायुद्धश्रागेभूरतिवंत॥

तिदेवेभगवन्तार्द्धधातव

रुकधीरजबहीकक्षोरप्रतजि

हवलचरननपस्यो।उमगपोहि

रदेनैननजलस्यो।प्रेममगनसु

बैननश्रायोर्द्धधातवकरिधीर

श्रासुनिवारो।करुणांसहितवच

नउचारोहेप्रभूमंतुवचरणनदेवे

पलकल्पकल्पकरिलेयार्द्धधात

निष्टुष्टिष्टुमैभयो।सबडयये

कवारन्नुभयो।नूतिदिसानक

सुप्रपायो।ज्योउडपत्तिनिसमां

हिष्ठिपायो।र्द्धधातुमविजमैज्योत

नविनप्रांन।जैसेनैनश्रंधविनभां

नाश्रैसेबलनकहेजवसूत।देव्यो

येकचिरत्रत्रदभूत।र्द्धधातुगानि

तमरथश्रायो।हयनसहित

रुगरुद्र... श्रीरत्न... हरिश्चायुध
जैते रथसंजायन्ते सबतेते १००५
हचरिन्दारु कजवदेयो विसमयत
योश्च चनीलेष्यो तद्वहरिसुतहीवेन
मुनाय करिमुनमानइषविसराये॥

५२ सूतद्वारका
कौतुमजावो समाचारसबजाययमु
नावो सबकोमरणारंमनिरजांत॥
श्रुतमंहोश्चवकरतप्रयान ५२ ह
रावतीरहोभतिकोई तनकौंधरेज
होलां जोई यहनरलोकतजोमैजव
हो सिंधूद्वारिकाबोरैतवही ५३ ह
मरेमातपितादिकजेई लेश्चपनेको
कनितेतेई दिल्लीजईयोश्चरजुनसं
या रहेंद्वारिकाकेहेभंग ५४ तिन
कोपइसंदेससुनावो श्रुतुसम
मधर्महीमनलावो सममायारचना
वजांनो लामरूपसबमिष्ट्यामांनो
५५ चिह्नानंगुरसबनांनारूपनि

अलजानों मोहि अरु रूपा जिहां त व्यप
कमो कौं भानों नाम रूप सब माया जों
नों ॥ ७६ ॥ मेरे चरण निरंतर भजो ॥ इजी
सकल वासनां तजो ॥ छे से कै आवो मो
मां ही जाते फिरि दुष पावो नां ही ॥ ७७ ॥ य
ह सुनि सूत कृष्ण सों ज्ञान छौ डो सो
क मोह भय अं न ॥ निमस कार करि
वारं वारां पर दधिणां दे विविधि प्र
कारां ॥ ७८ ॥ हरि बियोग तें अति दुष
यो ॥ ज्ञान बिचार चित वहरा यो ॥ ह
के चरण कंवल उर धारे ॥ त बहारु
क द्वारिका पदारे ॥ ७९ ॥ दोहा ॥ य
प में तुम सों कहौ ॥ अड कुल कौ संहा
रा ॥ अब भायों हरि कौ गवना ॥ अरु
रिजन उधारे ॥ ८० ॥ इति श्री भागव
म्हापुराणे येकादस स्कंदे श्री सुक
परीष्यत समा दे भाषायां बल देव
पियाणों नाम त्रिंशो अध्याय ॥ ३० ॥ ॥
॥ ॥ श्रीसुकनवाचा ॥ चोपई ॥ ॥

तव ब्रह्मासनकादिक लीये ॥ नर्गुन
दिक नत्तया संगपकीये ॥ सहित नव
नी संकर देव ॥ इंद्रादिक सुर अरु
उपदेव ॥ शिविद्या धर किं नर गंधर्व
पितर महोरग चारण सरव ॥ गरुड
लोक पंची अरु सिध ॥ हरिके दर
सकां मनां विध ॥ २ ॥ सब मिलि हरि व
रसन कौं आये ॥ सब हिन हरिके दर
न पाये ॥ हरिके जनम कर मगुण ग
वे ॥ सब मिलि जय जय सब द सुना
वे ॥ ३ ॥ सकल विवां ए निच्छा योग गत
वर धै पुष्य प्रेम कर मगन ॥ वारं व
र करै परनां म ॥ मुषतै नाये हरिके
नां म ॥ ४ ॥ ब्रह्मादिक सब कृष्ण वि
नूती ॥ कृष्ण ही तै तिनकी उद नूत
ते समस्त देये नगवां न ॥ नैन मूदि
तव वां नौ ध्यां न ॥ ५ ॥ ब्रह्मरु आप ये
क करि ध्याये ॥ हेत नाव सब हरि
वहाये ॥ निज तन लोक निको अरि

रामाध्यांनधारणमंगलधामादि॥
ताकोअंगनिधारणाधरीअंगनि
उपायनस्मसोकरातबहरिजीवे
कूटसिधारेयाविधिसबकेकार
जसारेणतबहंदनीबाजेसुरलोक
उपजोहरयमितेअयेसोकासतिस
कीरतिधारजधरमासोनाअरुजेउ
तमकरमाछतेसबगयेसंगजगदी
साजातेहरिसबहिनकेईसातातेज
होकर्याहरिजीकी। पूजाध्यांनधारण
नीकी। ए। जहांसमस्तरहैतेईसत्यादि
कसबविधिजेजेईब्रह्माआदिसब
सुरजेतेहरिकीअंगतिहितजानेतेते॥
१०। हरिबैकूटपयाणोंकस्यो। सोकिंन
हूकोजांनिनपस्यो। कहुंनहींतिन
हरिकोदेख्यो। बडोअचेभासबहि
नलेष्यो॥ ११। जैसेमेघहोयआकास
अरुदामेनिप्रगटघनपास। कैकरिप
रगटगुपतकैजावे। ताकोघोजनकोई

पावे ॥ १२ ॥ तौ हरिकायो प्रयाज बह
का कृति नही न देव्यो त बही ॥ भूमें
प्रगट कृते त ब देव्ये ॥ गुपत न ये कि
न हूँ न ही पेये ॥ १३ ॥ हे नृपय ह नृ चं न
नां ही ॥ सक्ति अ नंत सदा हरि मां ही ॥
जड कुल में हरिको अवतार ॥ अरु
करिबो नां नां व्योहार ॥ १४ ॥ सो सम
स्त माया करि मां नो ॥ हरिकी सक्ति हे
त सब जां नो ॥ हरि जी सहाये कर स
र है ॥ कर मन करै जन मन ही ग है ॥ १५ ॥
औरै कर म कर त सब जां नो ॥ जन म
लीयो हरि जी को मानै ॥ ये सब देह न
के व्योहार ॥ हरि जी इन सब हि न वे
पार ॥ १६ ॥ जैसे नट बाजी बिसतारै
बहु र्यो आप ही सकल निवारै ॥ ब
जी गर सब हि न सौ न्यारा ॥ अं हरिके
कर मरु अवतारा ॥ १७ ॥ जिन हरि र
च्यो त्रि गुण ससार ॥ नां नां भांति प्रगट
आकार ॥ आपु प्रवेस कीयो तिन ति

सब वरनाथ बिना सैचिनमें
प्राप्त तत्रापके प्रापहीरहै। त्योंहीइ

त्रजिनशानों। कालमृत्युके ग्रमही
भानों। श्याब्रह्मसखतेतुमहीबचा
यो। अधिकहीसुरगसंदेहपठयो। ते
जोअपनीरक्षाकरते। तोतनकौक
हेपरिहरते। २०॥ सबजगकीउत्पत्ति
प्रतिपालनासकरैजिनकौबलका
ल। सैसकलसक्तिमयदेवीब्रह्मा
आदिकरैजासेवी। २१॥ हरिवेकौंधर
णकोभारधार्योहूतोमानुषआका

ज्योंकाटोभागे
बिननिकसेनाही
जबही। उहेउडा
निजबही। २२॥ त्योंहरिमृ

क्योंनाथै। अरुयेकअतिहीअपान॥

तिनकों प्रगट दिषायो ज्ञाना २४ जो
साधिक रिराथें देह ॥ पुरधारथ करि
नेयेह ॥ सकल विकार नको आगार
ताकों राधित जे सुषसार २५ ॥ तातें ति
नको मोह मिटायो ॥ देह तजें तें ब्रह्म
तायो ॥ ऐसे तनको की अनादर जातें
कोई करे न आदर २६ ॥ देह निरंजन
सुध सरूप ब्रह्म देह सो तत अनूप ॥
काल कर मगुण ताकों नांही ॥ अकल
देह सकल कें मांही २७ ॥ तातें हरि वै
कुं ठप धारे ॥ बाजी ज्यो देहादि निवारि
ब्रह्मा रुद्र इंद्रादिक जेतें ॥ देषि प्रयां
णों हरि को तेते २८ ॥ बिसमय भय ह
सगुण गावें ॥ अपने अपने लोक निज
वें ॥ ज्यो यह चिर तपठे परमात् ॥ कृष्
देवकी निरमल जात २९ ॥ सो दिह
भक्ति कृष्णकी पावें ॥ जातें कृष्ण लो
कमें जावें ॥ हरि दारक द्वारिका पठा
यो ॥ सो बसु देव ब्रह्म नृपयें आयो ३०

कृष्णधियोगविकल्पनप्रतिचिन्ताजे
 सैक्यपणगयेतेवित्तिनहृम्योके
 चरणनिपरोत्तवस्वारथीवचनउ
 चरो॥३॥श्रांसूप्रवाहचलेनैननितै॥प्र
 तिब्याकुलप्रपटेबैननितै॥सबज
 पुकुलकोनाससुनायो॥प्ररुबलको
 निर्जानजनायो॥३॥शयोसुनिसोकतपति
 सबभयो॥करतवित्तापप्रभासहीगये
 जहांजायहरिजीनहीदेधे॥तववैक

जातेमिट्टोदेहसंजोगवलि

कीयोप्रतिनेहा३॥पुबसुदेवहीलेषोड
 सनारिकीयोसहगमनचितासंवारि॥प्र
 द्युमनादिजहांलौजेते॥तिनकीवियनि

ह्रस्ववियोगः तातेकस्योऽग्निसंजोगः
हरिकीलधजहांलौजेती रुक्मने
आदिमकल्ललौतेती ३७ हरिकोस
पहरिदेसंधस्यो अग्निप्रवेससवन
मिलिकस्यो अरजुनप्रमसथाहरि
जीका ह्रस्ववियोगप्रहारकजी
के ३६ ताते अरजुनअतिदुषपायो
हृन्मजानतवाहिरदेआयो गीतभाहिक
ह्योहरिजान मिथ्यादेहसत्पनगवान
३७ असावकविधिजानविचासो
हृन्मजानयोगसोकसबटास्यो अप
आपनेमारजेते अपनेबंधूतातिप्री
यतेते ४० जिनकोजोपिंडादिकदां
ना मृत्तिकक्रीयाजेतीविधिनांतांसे
ह्योसोअरजुनसबकरी ह्रस्वप्रीति
ननहापरिहरी ४१ तवेहारिकाहृन्म
जिननई सायरबोरिपत्नकमेंलई
केव्वनहरिजीकेग्रहजेते लोहीरहेस
कलपतेते ४२ नितिबिहारतहांहरि

जाको सुमिरत सुनत उधारण जीको
मंगल सकल मंगल निकै रो ॥ त्रि नव
न सुष होवे निति चैरो ॥ ४३ ॥ सत्री बा
ल वर धस बजे ते मरत मरत उबरे
तेके ते ॥ अर जुन ताहि दिली ले आ
ये समाचार पांडु वनि सुनाये ॥ ४४ ॥ तु
मरे पैता संकल्पिता महजे ते ॥ क
स्म प्रयाण ही सुनिकरिते ते ॥ तुम ही ब
स धर राजा कीयो सुधरा तिलक बज
रको हीयो ॥ ४५ ॥ ते सबत जिउ तर दिस
गये ॥ कस्महि सेय कस्म मय नये ॥ जो
यह हरि जीको अवतार ॥ जा मै क म गुण
न बिसतर ॥ ४६ ॥ तिनको कहे सुने नर
जोई सब पाप निते छूटे सोही ॥ या विधि
हरिके जे अवतार बिलिपना तेते हि
कर म अ पार ॥ ४७ ॥ लोक वेद में परग
ट जेते ॥ गावे पहे सुने विचारै तेते ॥ सब
ते लहे प्रम आनंद ॥ मिले कस्म छूटे
षट् द ॥ ४८ ॥ दोह

मे
रमें नमः शिवाय नमः यथा कौकह
सु नैनां रज र नारायणपैजाय प्रण

ब्रह्मनिरीह निरंजनस्योम

सकललोकके श्रं नजामी भगति

हैतधरं श्रवतार नानाभांतिकरेण

धार पुं तिनमें कृष्णखयं भगवान

जान कृष्णसत्त्वयक्ति प्रधान जिनके

गुणनिष्कहो सुयदेव सुनततस्योप

राहु मनरदेव पूर जिनको नामनी

ये सब नाहें। लेक रिराथे निजपद

नाहें। ऐसे कृष्णसंतनके बित नि

समकारतिन प्रभूकौ नित पूर ते श्र

वसेत दामसेनां स देहधरें जीवनि

कः काम कृष्णनिहान भक्ति करवा

वे श्रपनीसक्ति हिरदेमें ल्यां वे पूर

श्रीसी विधिगवतः समितावे श्रपनेप

रसपदही पकं चां वे कृष्णरूपतिन

जानभुलाके उद्वजन निजपदहैं

चायो पूष मोलेक लोसंह सकृति

सा तातै होय नर रथ परकासा जो पं
दित जां नै सो सो श्री प्र जो क दे न जां नै
कोई ॥ ५ ॥ तातै तिन अरु ब करुणा क
न्है ॥ मो सेवक कौ अरु ज्ञा दी न्है ॥ सब
लोक निका हित मन धारी ॥ मम नुर कै
भाषा बिसतारी ॥ ५ ॥ जो कोई बांचे
सुनै सुनावे ॥ ध्यान करे नुंचे सुर गावे ॥
ततै लहे ज्ञान वैराग ॥ प्रेम भक्ति हरि
को अरु नुराग ॥ ५ ॥ प्रेम प्रवाह मगन
नितिरहे ॥ भवदावा गिनिक देन दहे
असे कै करि ब्रह्म समावे ॥ तजि आ
नंद जगत नही आवे ॥ ५ ॥ कब क
रै कां मनां कोई ॥ यातै लहे सकल सो सो
श्री तातै जे जे होय सह कां मा अरु जे ब
ड भागी नह कां मा ॥ ५ ॥ तिन सब हि
न कौ भाषा येह ॥ मुक्ति रु मुक्ति भक्ति
को गेहा ॥ तातै या संकी जे प्रीति येह
सकल संतन कीरीति ॥ ६ ॥ संमंत
सो लहे से बांत वा ॥ जे वहु कल बह्ये ॥

कुंजिदेवा संतदासगुराज्ञादीन्
 चतुरदासयेभाषाकीन् ॥ ईश्वर
 प्रमगपानप्रगतकह्यो ॥ ममघटकेति
 देवातिमेरेउरनितवसै ॥ संतदासगुर
 देवा ॥ ईश ॥ इति श्री भागवते महापुरा
 णे येकादसस्कंदे श्रीसुकपरीचुत
 समादेशे श्रीकृष्णवेकंठपद्याणोना
 मयकलीसोत्रध्याय ॥ ३१ ॥ संपूर्ण
 दोहा ॥ चौपई ॥ सबकीगुणतीयेक
 व ॥ २४४४ ॥ अथसबहीजलेंद्री
 पावकीतिवसे ॥ चौपई ॥ सुन्यमं
 लमेंमनकावार्सीजहांहैप्रमजोति
 प्रगार्सीअपेपूछेअपेकहै ॥ सतगुर
 मिलेसोपरमपदलहे ॥ येकअच
 नाअसाहुवागगरीमाहिउरंस्याक
 वाबोछीनेजपहुंचैनांही ॥ लोगपिया
 सामरिमरिजांई ॥ २ ॥ आसापासाहरि ॥ प
 सरंतीनिवारि ॥ सिधसाधिकसंसंगक
 रि ॥ सतगुरसबदबिचारि ॥ ३ ॥ धरतीअ

वनश्रुपाणी चंद्रसूर्यदर
 णी कुंकारजां ऐजो मंत्रां त्रैसा
 श्रुतवश्रनंतां धिगोपी चंद्रकहे
 नीवसतीरहंतो कं ड्रफ व्यापे ॥ जं
 रहंतो युद्या संतापे ॥ आस एरहं
 लगे माया पंथ चलंतो छीजे काया ॥ पु
 मीठां वां कुंतो व्यापे रोग ॥ कहे किसी वि
 धिसाधूं जोग ॥ श्रवधू संजम श्रहार कं ड्र
 फ नही व्यापे ॥ पवन श्रहार युद्या न संता
 पे ॥ ही सिध आस ए नही लगे माया ॥ नाद
 पीयां ऐ नही छीजे काया ॥ जिन्हा स्वाद
 नकी जे भोग मन प्रवनां ले साधो जोग ॥ ७
 थोडा याय तो कले पे ऊले पे ॥ बडत या
 य तो रोगी ॥ दोई पधां की संधि विचारे ॥
 सोको ड्र चिरंता जोगी ॥ ८ ॥ मरदल के संश्र
 नले श्रवधू ॥ पवन श्रस्थां नले का
 या ॥ श्रावतो से जरां सरसथां नले
 त्याग ले माया ॥ ए ॥ सब सिधां मिलि पा
 पार ॥ नां मरे जोगी नले श्रवतारा ॥ सुंम्य

समावेवांजेवीनां॥ अतएवपुरषतहांते
लीनां॥ १०॥ अकराजछोमिजोगीकुवा
एकजोगछांडिघरवासं॥ च्चट्टाहस
तीवनकंजावै॥ खांनकरककेपास
११॥ जोगनजोग्याभोगनभोग्या॥ अहल
गद्याजमारं॥ ग्रामेंगादरजंगलसूकर
फिरिफिरिलेओतारं॥ १२॥ योसंसारक
ककायेत॥ जवलनगजीवैतवलनगचे
ति॥ आंध्यांदेवैकांनांसुमैजेसाबा
वैतेसालुणै॥ १३॥ इतिश्रीजलंश्री
पावकीसबहीसंपूरागः॥ १॥ अथ
हालीपावकीसबहीलिख्यते॥
अजपाजपोरेअबधूअजपाजपो
पूजेनिरंजननाथं॥ गगनिमंरुत्तमे
जेतिलयाई॥ देविधरेतंध्यांनं॥ १॥
लोकीआंध्यचेतनकीपांथि॥ दिव्य
दिष्टिसुंन्यकेजांके॥ अगमअगो
चरगुरुकंनहोयं॥ तहंपिसिअहा
लीपावकहो॥ २॥ छोटांनमोटासेतन
वैतत

सांवला।हालीपावकहैपाणीजैसे
पतला।सुन्यसरूपीपवनजैसे।ता
वला।जोबोअबधूफलजसहत्व
३।अरधैहोता।उरधेआवे॥घटहीक
याविचारं॥निरंजधुनि।सुनिभयान
हचलनिरात्मनसबदपारं॥१॥
४।हंसावरणंपहिलीहोता।सुषम
निघरजोआया॥मिंडधरेनहींगुर
जांएपा।आवागवनमिटाया॥२॥
रेदेषिआराधते।करतेआसज
नीडाहीसिवपाईया।नाद्यागुरसु
नेद॥३॥मनसामेरेमाताकहीये।मि
तानिरंजन।समनरांगुरुहमारे
गोरषकहीये।अतीतसबदभये
पारं॥४॥इतिप्राहालीपावकीस्व
दीसंपूरणः॥२॥अथकुहारीपा
वकीसबदीलिरव्यते॥हादसआं
गलहंसाजाय॥उनिमनितालीगग
निसमाययेहजोगजुगत्तिसिधगोर

यराव। सत्य भाषे कुम्हारी पाव। १॥५॥
लापिंगला मधिधरे सुषमनिनारी प
नाकरे नासि चरत हंगे रोके वाय
सतिसतिकहे कुम्हारी पाव। २॥ सुष
मनितंती छे इ करे। वंक नालित
हां इ मरत करे अनंत सिध पीवगे
रशराव। सत्य सतिकहे कुम्हारी पा
वा। पिंड जो जेरे अब धूपिं योजे
पिं योजा सं अनंत कोटि सिधा। पा
रगामी भये। अन हद सब दसं रंधा
ध। ऊं कारषो जेरे अब धू ऊं कारषो
जो। कहां उठत तै ऊं कारं जा योजा
निम्माणव कोटि रा जा उधरे। अनंत
सिध भये पारं ध। उतनी वाइ चढी
आकास। गरजे मेर गगनिके लास
गावे ते गावणीयां कहीये। जो डै ते
जो डा। भेषप हरि ते इ सणी कही
ये। सिध पुरष को इ थो डा। ई अब
धूसई हमारे सुरति बोलीये। अब

निससी बांलागा ॥ छेसे अकरी सहजारधा
 गाबोलीये ॥ सीबांस्वाउसासा ॥ ७ ॥ तीन
 सेंसाठि धेगती कहीये ॥ ब्रह्मपांनप
 रगासं ॥ बहत्र अस्थानं हमारे नग्री क
 हीये ॥ अडु सतितीर्थ अस्थानं ॥ ८ ॥ नोसे
 नाडी हमारे नदी बोलीये ॥ चोसठि जोग
 एनिछा प्रमाणं ॥ मही हमारे चंवर गु
 का बोलीये ॥ कोटिदत्त बजरकपाटं
 ॥ परमसुनिमै ध्यानं हमारे ॥ जोबो अश्रो
 त्वा टं सुरगलोक हमारे मस्तक कही
 पातात्त बोलीये पादिका ॥ उडु मृतमं
 दल कहीये ॥ हमजोगी हे अदिका ॥ १० ॥
 द्या हमारे रह रासि बोलीये ॥ सीगी अन्न
 इदना दं चंदसर सुद्रा बोलीये ॥ मठमु
 कांम कहीये ॥ अदं ११ ॥ दोपी हमारे अ
 नंतदत्त बोलीये ॥ परमगुरु हमारे च
 ना ॥ सतिसति कहे कुमारी पावले
 रहां अन्नंत सिधां सुमेल ॥ १२ ॥
 शिबं कनात्ति कहीये ॥ दादस

लीयेकपालीरथबांहणपवनबोलीये।
मनरावत्तकरैरथवाली॥१३॥पिंगलाज
मनांबोलीये।इंगलाहमारैगंगासुवम
नांसुरसतीबोलीये।असनांनत्रवेणीस
गा॥१४॥कासीयेत्रकायाकहीयेत्रवेणी
प्रागअस्नांनदसवैहारकेदारबोलीये
त्रकुटीजगनाथथानं॥१५॥कंपचक
पहोकरकहीये।दसदलद्वारेकाध्या
नंतीनकंपगयाबोलीये।बदरीधरि
बाध्यांनं॥१६॥चंद्रहमारैकंद्रफबोली
ये।सूरजबोलीयेनादंअग्निब्रह्मअ
गनिबोलीये।तजिबाबादविबादं॥१७॥
नेत्रचंद्ररूसूरजिबोलीये।वैराठसक
लसरीरंगगनिमंरुत्तअरंतहमारै
तहांधरतीवरथतनीरं॥१८॥कायांपर
थीबोलीये।लौहीबोलीयेनीरंतेज
उद्रअगनिबोलीये।पवनस्वससरी
रं॥१९॥अष्टकुलीपरवतमस्तगबोली
ये।सबदबोलीयेअकासं॥सताईस

यत्र श्रवणरसैमालाकंहीये। जपित्
 स्वासउसांसे। २०॥ श्रकईससुरगपि
 बोलीये। सीससप्तब्रह्मं। सप्तदीपा
 कायाबोलीये। नौहं हारनवषंमं
 शश्रुबदिषणजोगजुंगतिबोलीये।
 त्रपक्षिमधरिवाध्यानाश्रधउरध
 मुकंसबोलीये। तहं कशिवाब्र
 नौ॥ २१॥ षट्चक्रगढकोटबो
 कंवलमहलश्रवासं। सतिना
 रीपुवजोगीसि त्वैकूटकै
 लासं। २२॥ दीपदीपगजुजासं। सूरज
 प्रगासं। स्वासस्वांसघटपरना
 वं। नाथैसत्यकुम्हारी। पावं। रधाचं
 चंद्रमृतसारं। छंदबूंदसमं। २३॥ श्र
 ॥ सबदैसष्टगोपानं। अनंतं। वचन
 वचनसतगुरदीसंत। २४॥ चत्रदलपि
 कामूलं। षटदलकंवलसुधेमश्र
 थूलं। दिसदलकंवलस्वासकावा
 ॥ द्वासदसकंवलजोतिकांसा

षोडशदन्तकं वल्लगगानकास्यन चोद
 मानुषमध्यकृत दोदन्तकं वल्लनत्रवेणी
 वात्वा नाथसतिकुम्हारीपाव २७ षट्द
 दन्तकं कर्मसंसासार कावरुमंरुतक
 रंरंकार उच्यते श्रानिकं रेप्रकासं
 श्रुतकं वल्लदन्तनुरधनिवासं २८ व
 हीमन्तयाणप्रोणसंचारं सहंश्रकं वल्ल
 ल्लसंसासारं श्रुतगगानिमुद्युक्तगोसूरं कु
 म्भारपावकं हेतुनहदतरं २९ चत्रद
 न्तकं वल्लनुरधमुद्युहार षट्दन्तकं व
 ल्लपल्लिमश्रुतुसार दसदन्तकं वल्लतलि
 दुन्ताधरे हादसकं वल्लदन्तसूरजिसंच
 रं ३० षोडशदन्तकं वल्लसिमकाञ्चा
 ३१ द्वातसकं वल्लमधिजोगविचारं श्रु
 तं कं कृत्वा निप्रजरे बंकनालिवकु
 म्भारं ३२ श्रुतकं वल्लकुगेसूर श्र
 न्तदसवदकरैधनतरं सहंश्रकं व
 ल्लनल्लश्रुतपाजाम श्रुमंथिकं वल्लद
 ल्लश्रुतश्राम ३३ श्रुतं तं कं वल्लदन्त

रधप्रमाण॥परसुंन्यपनमेसुरधोनं॥जोग
जुगतिश्रासिंभूरवा॥भावेसंत्यकुम्हा
रीपावै॥३॥षट्षटाषट्थिररहेतो
षट्षटाषट्थिजाय॥षट्षटाषट्थिजाय
सैधे॥उनमनिरहेसमाय॥३॥उत्रयंत
रुतैसक्तिचलेगी॥दषणपकाईडीबिं॥५
कलयदोलयहंससमानां॥गोदंतपत्त
द्याबिंदो॥३॥पातालविवरथब्बालच
नेगा॥श्रकासविवरथदूंकां॥मेरडंरु
जबवरणफिरेगा॥षट्चक्रनरिकुंडं
३॥जुगतिगंमथिरनये॥योडससत
प्रमाणं॥जोगजुगतिसमाधितट॥ताली
जोगनिरबांरां॥३॥रोगभोगतहांजो
गनदरसै॥ग्यांनखिनांगुरकेसा॥बुधि
बिहंनंऊंठाचेलां॥सिधसंबदहेत्रेसा
३॥नासिकाश्रगनानीमंडल॥षट्सत
सहंश्रकीसा॥द्वादसश्रांगनजोगवि
३॥जपिजेबिसवाबीसा॥३॥षट्चक्र

सोहंश्चहृदिसजपै॥ब्रह्मरंद्रश्चस्थानं
४०॥इडापिंगलाजोगश्चासं॥सुषम
निपवनसमानं॥अष्टपत्रधुनिनाद
लद्या॥सहंपत्रश्चस्थानं॥४१॥इडा
रितेपूरणपवनां॥सुषमनिकुंतसमा
नं॥पिंगलानाडीरेचिवावारि॥त्राटक
धरिवाधानं॥४२॥इंगलपिंगलाजल
टिचत्नेगी॥सुषमनिकेघरवासं॥सहंप
त्रानजवपक्षिंफिरैगा॥तवपरंजोति
परगासं॥४३॥त्रिकुटीमध्येवाटवहीतै
नाद्विंदकामेला॥बहत्रचंदागगनि
फिरैगा॥दसोंद्वारगुरचेला॥४४॥त्रिकु
टीमध्येजोगणिनांचै॥जोगीधरिवाधां
नं॥गगनिमंरुतजहांश्चरजदेष्वा॥
मुनिजनकधैगीयांनं॥४५॥बहत्रसह
अधुनिसीगी॥बंकनात्नितहांसुषमनि
नांचै॥भंवरगुफातहांजोगी॥४६॥नासि
काश्चग्रत्रिकुटीमध्ये॥देविधरिवाधां
नं॥इलापिंगलाजोगश्चासं॥सुषम

चक्रजहांवायबंभेगी॥अजपाजाप
 संचारो॥६॥इतिश्रीकुम्हारीपावकी
 ।संपूरणः॥३॥अथचरपटन
 प्रकीसबदीतिरव्यते॥साधूकैकरि
 करेउपादिचरपटकहैकलजुगका
 गद॥साधकहावैभुगतेभगा॥काला
 मूढापीलापगा॥शचमडीकूटेधरैध्या
 नातापसुवभैकहागियांनचरपट
 कहेसुनैरेअबधूकामनिसंगनकीजे
 जिंदबिंदनौनाडीसूकैदिनदिनकाया
 हीजेरजतनकरतीजायतोजावाम
 गदेषिनहीघालैघावाकोटिवरसलौ
 वाअवासतिसतिभायेचरपटरावा
 अचरपटचरकरैमनकंथाचित्तचो
 वककरणांअसीकरणीकरैरेअबध
 वडरिनहोवैमरणां॥४॥दिटकरिमनवा
 थिरकरिचित्तकायापवनैधालैनिता॥

अजराभरो ज्योऽथिर होय कंधा। उकेन हंस
 पडे न जिंद। ५। मूलन द्वारे दीजे बंध। बाई
 ले चोस तिसं द्व। जुराप लने षं मे रोग। ६।
 ले चरपट धनि धनि जोग। ७। मूलन द्वारे ब
 धन गाय। पवनपलने गगनिसमाय।
 नाद विंद दो उन्न स्थिर होय। अदिष्ट पु
 षदिष्ट तब जोय। ८। बंधे से ध विषम
 करि बंध। तलिकरि रिक्क परिकरि च
 दारे निद्यो सरस चरपट पीया। ९। देते ल
 न बूजे दीया। १०। जो तू रावल लघरा सीया
 ना। हसिकि न बंधे टाटी। वारे अंगुत्तये
 विगई तब सो ले अंगुत्त फाटी। ११। पव
 नकाथा अंगुत्तिले वास। पिसननकोई
 आवे पासि। मनसूं मतों पांन ब फूत। च
 पट बोले ते अवधूत। १२। निर भै निसंक
 रहै तत वेता। मनमो निवि बरजत ई डी
 जीता। सेत फटक मणि पांन रता। च
 पटक हेये सिधमता। १३। सोधे नूष अरु
 मोडे नीद। सुपने फरवा दे न विंद। १४।

चौतानाम्

पाणाभूत। चरपटवोत्तेतेश्रवधृतार्थ
गरकंदलवासा। अहनिपर
जोगश्रभ्यासा। मलटैकायाच्छैरो

तोजनरहे

चरपटविं
त्रकंथा। पूरणपूरणविवरजतपंथा। स्व

दांखादचिब्रजततूड सुखमैजाव
 तसूंमैमूमननहींमूमैमूडैकेसावे
 संमुडैकाउपदेसमंडैनहींमनमार
 कामान॥बोलैचरपटततगीयांन॥२०
 धंभाधीगीमुसतामुसुती॥बुधिचोरब
 जारी॥आपगुरनिंदैपरंबंदै॥नडबड
 पालषचारी॥२१॥कोलीपाईपत्रपाया
 पायापंथका नेव॥रीताजांउंनरिया
 उं॥कहाकरैगुरदेव॥२२॥बैवे
 जाबैठेपरजा॥बैठेजंगलहिरणी॥हम
 क्योबैवेरावलवावल॥सगलीनगरी
 फिरणी॥२३॥बांवेहाथकमंडलदाहो
 रुंडा॥माफोचककरपूजोभैरुं॥तुममुह
 आगेबैवेरं॥चरपटकहैयेसवपा
 यांड॥२४॥हकापायामगरमचाया॥जे
 रसहरकाकुता॥जोगजुगत्तिकीषव
 रिनजांणी॥मूमुकायविगूता॥२५॥
 ईनछोमूलेणनजांउं॥तासूंमेराचरप
 टनांउं॥आईकीछोडीयेलेणतजाई

ये गोरधक है सतगुरकी माया विचारि वि
चारि खाईये। रही बेसिन रहिवा दोड़न
जावा पंदन देवा पावा। शतमा प्रमाण नि
ह्याया इवा। देखिवा जती सती का भाव।।
२५। सति चलण गुरवाय क थीर। निसच
लकाया गहरगंभीर। जत सत निरवरति
धिमा ब्रह्मता। बंचत चरपट ते अबधूत
२६। बूढा जोगी वैदरोगी। सुरा पीवपी छैघा
वार सायणी होय करि मागे नीय। तिसकी
मूडं माया रण। पुरध कुल यणै बेसा जा
री कुलल जावन नील जनारि। हसणो जो
गी पदणी नारि। चरपट कहै ते माथे मा
२७। काने मुडा गले रुडा रधि। फिरि
मागे निषु नी सधि। चरपट कहै सुणो रे
लोडी। बरतन है पणि जोगन होई। रशिप
गावडा उमाथे वोपा गल मैवा गामन मै
कोपि माया देखि पसारा करै। चरपट
कहै अणवूटी मरै। २८। बजर कछोटी
चाबै पान। तीर थ जाय उगा वेदांन। क

रैवेदगी ज्योवैरोगी॥ चरपटकहैविगुत
जोगी॥ जंटाविटंबनश्रंगैछाराटोपाह
कावकुविसतार॥ विचत्रकंथाश्रच
लाचंग॥ बटवासीवैबकुविधिरंगा॥ ३४
मांनश्रिमांननलाद्यांफिरै॥ गुरुनयोजे
मूरधमैरे॥ मंरुकमंडलनभगवांनेसा॥ प
थरपूजावगउपदेसा॥ ३५॥ जीवहतेश्र
रुपूजाकरै॥ जंत्रमंत्रलेमनमैधरौती
रथजायकरैश्रसनांन॥ बोलेचरपट
षंडतिपांन॥ ३६॥ न्हावैधोवैपयालेश्र
गीनीतरिमैलावाहरिचंग॥ होमजाप
श्रगपारीकरै॥ पारब्रह्महिरदै नहीधरै
३७॥ दिनदिनहत्याकरैश्रपार॥ सूतक
पासकफेलेनार॥ ब्रह्मरूपठग्यासंसा
र॥ चरपटकहैयेधूतविचार॥ ३८॥ म
ध्रमांससंन्यावैचित्त॥ ग्यांनविवरजत
गावैगीत॥ श्रहनिसनिंशभोगविलास
चरपटबोलेकंधविनासा॥ ३९॥ दयाध
रमसत्तिचितनहीबसै॥ श्रतीतदेधि

चर द प्रकलिका
जिसका कामजिमीको
हाजे और करे तो वीगा बाजे चर प
कनक का
नेय ॥ धश फोकट आवे फोक
है फोकट या या फो

बैनु पाधि धश कथनी बकनी सब
वसकै तो बंधो वाया च
है पवनकी मोरि नूकत गंध
धश नामे मोरु पांरु धरम
चा मंदर कूडा करमा चरपटक
रतन

रपावा हू
गोडा ऊपरि भावा तीजा शगे ब
जेतूर चरपटक है बिगोवा पूरा ४५
येकै पाथर ऊपर पावा हू जा पाथर
ऊपर भावा चरपटक है डनी का से

रैवैदगी ज्यो वैरोगी ॥ चरपटक है विगुत
 जोगी ॥ जंटा बिटंबन अंगे छारा टोपा हं
 कावकु विसतार ॥ विचत्रकं था अच
 लाचंग ॥ बटवासी वैबकु विधिरंगा ॥ ३४
 मांन अमिमांन नला ह्यां फिरे ॥ गुरुनयो जे
 मूरधमरे ॥ मंरु क मंडल नगवां मेसा ॥ प
 धर पूजा ठग उप देसा ॥ ३५ ॥ जीव हते अ
 रु पूजा करै ॥ जंत्र मंत्र ले मन मे धरो ॥ ती
 रथ जाव करै असनांन ॥ बोले चरपट
 थंड तिपांन ॥ ३६ ॥ न्हा वैधो वैषया ले अ
 र्गी नी तरि मैला वा हरि चंग ॥ होम जाप
 अग्यारी करै ॥ पारब्रह्म हिरदै नही धरै
 ३७ ॥ दिन दिन हत्या करै अपार ॥ सूतव
 पासक फेले नार ॥ ब्रह्म रूप ठग्या संसा
 र ॥ चरपटक है ये धृत विचार ॥ ३८ ॥ म
 ध्रमांस संख्या वैचित ॥ ग्यांन विवर जत
 गा वैगीत ॥ अहनि सनिं द्रा भोग बिनास
 चरपट बोले कंध बिनासा ॥ ३९ ॥ दया ध
 रम सति चित नही बसे ॥ अतीत दे वि

रपटक है अकलिका
जिसका काम जिसे कौ

गैवायांच
है पवनकी मोरि नूकत गंध
गया चौराध्रानामे मोरे प्रांमे धरम
डाकरमाचरपटक

फोक। धधयेका गोका ऊपरि पावा हू
जागोडा ऊपरि भावाती जा अगैव
जेतूर। चरपटक है विगोवा पूरा ४५
येकें पाथर ऊपर पावा हू जा पाथर
ऊपर भावाचरपटक है डनीका से

वा वाक्ये वा श्रवाकं देवा धर्षिपुजिपु
 जिपाम्भवजगघाटा निजततरहा
 विराल ज्योति सरूपी संगही छाजे ता
 का करो विचारं ४५ पुजिवातो अत्र
 सदेव चली यवा अनादिपाती चरप
 दकहे नहा केन मरना घटही तीर
 अजाती ४६ नना चरपुट नाथकी
 मना मपरा मना अथ नरथरी जे
 नना जना निरना अहंकार प्रथ
 मी दिगी पुस पधिणा नौरा सतिसति
 नाथ तनरथरी पिंकुका बैरी जोगा
 मधीया सोवत दुयी यारोवत कव
 नाकर तरस बाणी सुराऊ फंत नौद
 नाजना नतिसति नाथ तनरथरी जित
 पुरका सबहु नजाणी ना रं चढे गो सोप
 हे गे महे गे तत विचारी सा फु कारतो
 गही जेगे तिरा क्य जायगा नरथरी पि
 थारी अ मरने का संसान ही नही जीव
 णकी अ स सतिसति नाथ तनरथरी

नेतिही भोग बिल्लासा ॥४॥ निरगुण कं थ
कृ विमिसारा कथुं निरंजन रं श्रा
रा प्रचे विकर म बा व न बी रा को ए
चेर हि बा थी रा पु सु ए हो वि क म
ब्रह्म ग्या ना दे ह वि व र ज त ध रि वा ध्या
ना उ दे अ स थ ज हां क थ्या न जा य त हो
न र थ री र हे स मा य ही श्रा गे व ह नी पी छे
नां नां सुर ति नि र ति वि र छु त ल ध्या ना क
थुं नि रं ज न रं क उ दा सा अ ज क न छे दे अ
से पां सि अ नै प स त्र णी क रि वा गृ विं न
ही ध न जो व न रा ज अ रु द्र विं क न क
कां म णी भोग बिल्लासा क हे न र थ री
कं द वि ना सा ॥४॥ सा ध वा तो ये क प व न
अ रं न सा धि वा ॥ छों डि वा स क ल वि
का रं र हे वा तो स ति स व द की छा य
से य वा नि रं ज न नि रा का रं ए म न पं
छी उ रि पां णी वं धो प व नां ले हो स मा
झा स ति स ति ना व त न र थ री ॥ चै र न
सं च रि हे जा ई १०

नप्रमोधिवा॥ निष्पाते ग्यां न विचारं॥ पं
सावत्तिकरिदेकरसरहिवा॥ त्रैसैं उ
रेपारं॥ ११॥ निरमलबुधीनिश्चैवासा॥
गलीनुमेदनपावुलीआसा॥ सहजसु
न्यमेंनयाप्रगासा॥ अजगैबनरथरी
देखितमासा॥ १२॥ मरीयेपरिमागीयेन
हो कहै नरथरी नीय॥ मनसावाचक
रमनां॥ योगुरगोरथकीसीय॥ १३॥ मनवै
रागीधुंधुकार॥ पेटवैरागीकोधेनार
सौवैरागी॥ क्रोधअपार॥ ग्यांनवैरागीनि
नवनसार॥ १४॥ देसफिरंतासदावैरा
गी॥ सासत्रवैरागीपंकिता॥ बलकंन्य
बिधिबैरागी॥ ग्यांनवैरागीनरथरी॥ १५॥
तननिरासमनबिच्यमाया॥ मूरुमुड
यबिगाडीकाया॥ मननिराससकनर
सभोगी॥ कहैं नरथरीतेनरजोगी॥ १६॥
पंचषंडाअधिकवैरंवंसा॥ मनरावल
महमंतगाजै॥ बिद्यमलहरिकंद्रफ
कीजागै॥ देखैकौणफूजेकौणनाजै

जगयांकराजारोवैवैद
कांमजुरै

दसाकौनाथशयज
बा

॥बैरागकौन

गच्छता॥र०जसिमायातसिजाया
मुगतायाहैहैलोगा

गचारी॥निजततछोडिलोहीचांम

चितलाया॥शकांमकसाइचितचिंन

लासुराविषेसज्यामनमथमासावी

रजब्रह्महत्या॥हैहैलोकडराचारी
श्रसत्रीजोदी

पबरतनजनब्रह्महत्यापदेषुदे॥च

मडीदमडीममडीतीनबंसकात्या

गी॥सतिसतिकहैभरथरीबैगी॥र३

नारीचोरीजोरीतीनूबसतसागी
श्रवसिकरि

दोयदोइलकडी जुगतिस्वाली ॥ जोगी
 नरथरीजीवैजुगचारी ॥ ७ ॥ अखधूजल
 विनकंवलकंवलविनमधुकर ॥ कोय
 लबोलेकंवलविनां ॥ यलविनमृघमृघवि
 नपारधी ॥ यकसरवेध्यापंचजनां ॥ ८ ॥ नव
 द्वारजडिलेकपाटांसवैद्वारसिवधरव
 टांइकलनयचंद्रादोयलनयभांनोवेध्या
 मृघगगनिअसथांनोवेध्यामृघनचौडे
 पासिनएतुनरथरीगोरयदासाणीबी
 जनहीअंकरैर्नही ॥ रूपरेखआकारबी
 नांही ॥ उदैअसतजहांकथ्यानजाया ॥ त
 हांनरथरीरहेसमाया ॥ १० ॥ तरणसजाया
 बनोत्तवासी ॥ ऊपरअमरुचाया ॥ नर
 थरीमननिअलनां ॥ घोरघोरवरसेइंइके
 राया ॥ ११ ॥ नगनस्यकाह्यनगनस्परिअन
 गनस्यजीवजलचरा ॥ अजहंकाचैर
 सहोयमूरयनरा ॥ नहीप्रसिधजोगेसु
 १२ ॥ धनिस्येपुत्रीकुलवंतीनारी ॥ धनिध
 नितुवपतिव्रता ॥ धनिस्यदेसतदेबी ॥ ध

निगुरु नप देसतुव। १३। राजाके घर राणी
होती। हंसधर कहीये माई सातधियोचें
वारे रहती। ग्यांन कहांतें त्याई। १४। गुरु
मारे गोरव कहीये। चरपटहे गुर माई।
एक सबद गुर गोरव दीया। तेवे लिष्या
मेंणावती माई। १५। सोनासे राणी वारा
से कन्या देस बंगला वडु भोगी। वारा
बारसदमकं राजकरण देमाता पीछे
कं गाजागी। १६। अजिकालि करंतारे
पुता काया ऊरे ज्यौं कलातकी भाठी।
सतिभाषतमेंणावती। येतन जलबलहे
अमाठी। १७। सतधियोमंडवेसता। पोट
सोहि। दुलाई सुवरण देह तुमारा पित
कीरपुता सो जलबलिको इलाहोई
ठ जो गनहो सीरपुता भोगनहोसी। न
सीऊसी जलाब्यंबकी काया सतिभाष
तमेंणावती। भरमनभूलो। भाया। १८।
मरोगे भरजायेंगे। फिरहोय मसांणें
रा। कलुपरमततचीन्हों राजा गोपीचं

राजौ नतरो भोपार ॥ २० ॥ कौणहमंक
 नातधिलावै ॥ कौणपयालेपाया ॥ कहां
 मरेमैडीमंदराकहांतुमैणावतीमा
 याशधरतारेपूनानातधिलावै ॥ २१ ॥ प
 प्रालेपायसूषवरवतरिमैडीमंदराघ
 रघरमैणावतीमाया ॥ २२ ॥ माताकैउप
 देसकरित्तजियादेसबंगालागोपीचंद
 गुरकैसरणै ॥ नेवतनागाकाला ॥ २३ ॥
 छांडाराजपाटफिशि ॥ छांडाभोगवि
 लासगोपीचंदधोलगिरतजेही ॥ छांड
 डिगयावनवासैराणीसकलकन्यासु
 तसबही ॥ हाहाकारभईतारावरतरे
 तुरीगजबंगला ॥ राजगोपीचंदकहांग
 ईला ॥ २५ ॥ जलंधरीपावहाथदेहीवी
 गोपीचंदधियाया ॥ मंद्रमहलपोलिजहां
 नीतरितहांअलवजगाया ॥ २६ ॥ मायव
 हनिकरिनिध्यासागी ॥ प्रस्थासीगीनाद
 ॥ २७ ॥ सबद ॥ नैसबराणी ॥ आयक
 दासंगवा ॥ २८ ॥ ति श्रीगोपीचंदजी

कीसंपूरण॥॥॥॥ अथ कंकेरी वावक
सबही लिख्यते॥ सगो नही संसाशि॥
चित्त नही आवे वैरी॥ निर नै हेयत्ति सं
का हरष हस्यो कंकेरी॥ १॥ हस्यो कंकेरी
हरष करि ये कल जो और न। जुरा
वि छो ही जो मरणा मरन वि छो हामन
३ मन वामे रा बी जो वै॥ पवन ना बा डी
त्तगा डी॥ चेतन रा वत्त प हर वै वै ठा मर
अवे तन धा डी ३ जा गो प सु वा जे म ति ह
नं जहां न पा या ने व। काल वि कालै व
करि मारै॥ सो वै कंकेरी देवा॥ धा अ कल
कंकेरी सां कल बंध॥ विन पर चै जोग
बघां रो धंध॥ विन पर चै जोग न हो सीर
बला॥ भुस कूट्यां कयां निक से चां वल
५॥ द्यो से चंद्रा रा त्पूं सूर ग गति मंड मे
वा जे तूर॥ सति सब द कंकेरी कहै॥ पर
महं स थिर का हे नर है॥ ६॥ कहां तै जुग
वै कहां तै अंश वै कहां तै रै नि वि हा
या पूछै कंकेरी सुनें ना गा अर जुन॥

गडि प्रांन कहां समाया ॥ ७ ॥ सहजे
 नां सहजे जावनां ॥ सहजे सहजे
 पवनां ॥ सहजे सहजे बहे बाशी
 जे सहजे चरे काशी ॥ इति श्री कं
 पावजी की सबही संपूर्ण ॥ ७ ॥
 अथ मीडकी पावकी सबही लिखते
 पिंड चलता सबको इ देखा ॥ प्रांण चलन

आशीश उरधवसे गुरु मधिवसे चेलाना ॥ त्रि
 कुटीषेत्र उलटा मेला ॥ अत्र नहद सबद
 भई उलटा ॥ अत्र गुरु मुख जोति निरंजन पा
 ॥ सो
 ले गुर कंदीजे ॥ अत्र बंडे मंरुन मंठी छि
 वाशी जुरा मरन ही छीजे ॥ अत्र सिधा गड बड
 कांडि हो ॥ अत्र नहद प्याला फेला बूंद सम
 नी समदमें ॥ सोही बूंद लेषे ला पा पीर न

द्वारं परवीये मनमेत्नूरमत्तं जती सती
पटंतरा नौने थिर रहतां ॥ ६ ॥ राति गइ
धराति गइ बालक ये पुकारै है कोई न
गरमै सूरवां बालक ककड यनिवारै ॥
इति श्री सीडकी पावकी सबदी संपू
रणः ॥ ६ ॥ अथ चौरंगी नाथजी की स
बदी लिख्यते ॥ मूलसी चोरे अबध
लसी चो ॥ ज्योंतरवरमे लहत डार हम
चौरंगी मूलसी चीया ॥ अननै उतसा
पारा शमाली लो भाई माली लो ॥ सी चै स
हजकी यारी ॥ उनमनि कलायक पड
पयाय लो ॥ अवा गवन निवारी ॥ शमारि
ते मनमस्तमारिवा ॥ लूटिवा पवन भंडा
रं ॥ साधिवा तो पंचतत साधिवा ॥ सेयवा
निरंजन निराकारं ॥ अगनि सेती अग
निबालिवा ॥ पांणी सेती सेधिवा पांणी
वाइ सेती वाय फेरवा ॥ अका समुय
वो लिवा बांणी ॥ ६ ॥ इति श्री चौरंगी ना
थजी की सबदी संपूरणः ॥ ६ ॥ अथ

तलनाथ। जीकी सबदी लिख्यते ॥
इंदिसजोगीसदा मलंगा ये लै बर
। मणि संग। ह सै ये लै राये ना वाराये
। त्यागठ काराव। शिद सदर वाजारा
प्रेवांण। भीतरि चोरन देवै जांण। पां
नक छोटी बंधे क स्या। पांचूं इंद्री राये
बस्यार। पवन पीयाला भरि बो करै। उ
नमनिताली जुग जुग धरै। रामै रागै लय
एक है। जोगी होय सो अह निसर है। ३॥
अबधूसो जो अण नै जांणो। उलटा बां
ण गति कुंतांणो। पलटी बाइ बंधीया
मों रा। प्रात मजोगी बसिकीया जौरा।
ध पारधी चढीया सै जि जुपाया। भाषे
बाल गुनाही। परचै डोरी गुरमुख जांणी
सुसै स्पं हहराशी। कल जुग मांही सत
जुग थाप्या। उलटी जोति चढाशी। नेद बि
होंणं भगसर होसी। सति नाथन बाल
गुनाही। ही बूटी सुरति बोदी होसी। बा
लकडा हो सै बो लयाशी। कलके तुंटे

परने... बकरिनमिन्तरी नाई ७
नुरक... हरतीइके गाई बहनिके
नाई... नागीके पत्रमाई तीतनोये
ब... यैनीनोत्र नयरे नाई ये
क... योअरको जाई ८ पहिलेपह
अनकाइ जागे हुजेपहिरै नागी ती
अ... नमकर जागे चोष्टेपहिरै जो
इ... अन्धविंदने डनीयां उपजी
अ... विंदनेयोया गयेविंदकीष
अ... मुवाविंदकरोया १० प
अ... कालडकी अत्रब
अ... चमडे नसमल
अ... वजरसिधहोयवेवा ११
अ... गुरकापरा तुमहोचतुर
अ... चायाहीलछुमण चष
अ... मनरा जगत्रवा
अ... विनाई विमलवि
अ... सिवधरसक्तिमाई
अ... लगुनाही पृष्ठ

बासोही॥जनमनितालीजोतिर
गाई॥सिधु॥धरिदीपगहोई॥१६
पद्मासनरुकोचनदेवा॥दसवेहा
घडारकत्रकासोआया॥सुणि
धूबालगुनाही॥येगुणसिधिसोधित
हिवापवनभया॥ई॥१५॥पदपणे
प्रपदहरिअवध्यापदलेपिंडप्रवा
आकारहोयनिराकारदेवो॥अनंत
सिधांकीबाणी॥१६॥नामअच्छेअ
रबिऊंणा॥सितकंवलमनलागात्रि
धिविंदनीलगिरनिरालेवा॥का
लदोइभागा॥१७॥वाहरिनीतरिप्रत
अदेव्यासंधिनेदहमर्त्तधा॥ब्रह्मावि
स्वरदेवा॥तिनक्तुगुरकरेसिधा॥१८॥स
दुऊननीत्रिभवनजननी॥तीसकि
णमेपाया॥अदिकवारीगतकीना
ब्रह्माविरमहादेवजिनजाया॥१९॥सु
तेहमवहराभईनादेवतेजाचंधा॥
यनाथवाइषसादोअमरपदहर

ब्रह्मसंस्तुति ॥४॥ परमैकैतत्
सहस्रं चिदात्मात्माके भवित्ते
रंते जतत्तुहमदीपगवालिवा
के धरते विचारां प्राञ्चकासत
ब्रामै करिवा ॥ मारिवा मनराय
ानां सुन्यसिंघासनसंतोषडली
वेसिवा प्राणपुरसदिवां एादीजु
रामरत्तिकालसबव्यापे कां मेवस
तसरीरां लयमणकहे बावा अजेपा
ला तुमकौण अरं नतै थी रो घात्र
स्रगनिवजरंग सीऊ वा कं प्र
फदेवसरीरां जुरा मृतिपवनका न
षिणा जोग अरं स्रस थी रो षाद्वादसल
हरिगगनि अस्थाना सोविलीया जल
मालां यदचक्रजोग धरि वैवा तव
जाजिगया जंम काला एा इति श्री अ
प्राज्ञ जीको सबदी संप्रसाशा अ
प्रजती हरावतकी सबदी लिख्य
वैता अगे सुरता होवा धीगदेष

मसकानं सिधकैसाधिकहोवा सति
आधनदशा वतवीरं १ वेदपठेप
दित्तुमुवापठिगुणभाटनगारी
राजकरंतेराजामुवा रूपदेवतीना
री २०कतासुरतामरिमरिजासीर
दितारहसीथारंसारकाचणांकोईवि
रत्ताचावे सतिनाथतहणवतवीर
उक्तधितातोकथिगयेसुरतासुणारेहे
निरमलरहेगेथीरं बिरलाबिचुष
सापारउत रेगा सतिनाथतहणवत
वीरं ४ चंचलशातेन्हश्रुलकुवा
गुरकेसबदांथीरं परमजोतिआका
सबसाई सतिनाथतहणवतवीर
५ मगरधजपूछे होहणतवीरं काय
कोणविचारं अडसठितीरथजाक
चरणं सोदेवतुम्हारेअंतहकरण
हीहणवतकहेमनअसथिरंरणां
बाहरिंरणांमट केन मरणंरणां
थचलेतोपवनाहृते तनचीजेतन

प्रादेहीतैंकोइहरिबतावे।ति
।मूंमूंमाया।हादेहअंदरकरो ०
।धूदेहअंदरकरो।दिसंतरांतन
ठुंजो।हएवतकहेदेहअंतरकर
तां।कारजसंगलासीकै।एचलेमी
नजलधोजनदरसै।गगनिबिहंग
सरहीया।सिधकामारगकोइसाधू
जाणै।ओरसबदरस।एवहीया
शे।करतमकरतारहेबीचही।बि
करतूतिपहुंता।विधनारचीविध
हैजेता।गुरवायकअबंधूता॥११
इतिश्रीहएवतजीकीसबहीसं
पूरणः॥१२॥अथमहादेवजीकी
ब्रहीलिरव्यते।गगनिमनछाकि
लै।त्रिविधिदुषकाटिले।था
बर्नपंचभूतां।हरीरसपांपले
नमभोभागले।भायतसिवअ
धूतां॥१॥सिवसक्तिगुरपायलेमां
णिकलाभलोरोकिवहत्रथां ॥

मसक्तः सिधुके साधिक होवा सति
 मोक्षन हरा वतवीरं १ वेदपठेप
 टि... सुवा पठिगुण भाटनगारी
 राजक रंतेगजा सुवा रूपदेवतीना
 री... कता सुरता मरिमरिजासी
 दिना... धीधरं सारकाचणांकोई
 रगाचावे सति भावतहणवतवीरं
 उ... धिता लोकधिगये सुरता सुणारे
 विरमनरहेगे धीरं विरला विनुष
 लना... न रंगा सति भावतहणव
 तीरं ४ चंचलथातेन्हश्चलकुवा
 सुरकेसवदोधीरं परमजोतिश्चाक
 नवसाई सति भावतहणवतवीरं
 म... रधजपूछे होहणतवीरं काय
 तीरावि... अडसवितीरथजाक
 अरगां मोदेवतुभ्भारे अंतहकरण
 ई... वतकहेमनअसधिरं रणा
 बाह... नट कन मरणां ७प
 थ... तोपवना हृदे तनचीजेतत

यादिहीतैकोइइरिबतावे।तिस
।मूंमूंमाया।ठादिहअंदरकरोरेअ
।धूदेहअंदरकरो।दिसंतरांतन
ठुजोहएवतकहेदेहअंतरकर

भ्यासिधकामारगकोइसाधू
।एणो।ओरसबदरसा।एवहीया

ता।विधनांरचीविध
हेजेता।एरवायकअबंधूता॥११

हएवतजीकीसबहीसं

।१२।अथहादेवजीकीसं

।गगनिमनसुआकि

बेधिइयकाटिले।थाकि

।हरीरसपासुलेज

।सिबअब

धूलां॥१॥सिवसुकिगुरदरकेलां

।एकलाभले।रेकिनहउयक

।ती॥उत्तरेपर्वेन गंगानि समाह

।रणं च ज्ञानी पसुवामरिं जाहीर

प्रवृत्तुगोधांनी।बालश्च वसुधै कुर्व

हारी।सोश्च बंधूत वैरागी पारवती॥इ

शेषधारी।श।धनं जोवनकी करेनश्च

।चेतनराषेकां मणिपासिनाद्विंद

सुंभव रथगिरकंदलवासा निरगुण

धार है उदास

।उगति निरंतर रहण

।रहे उदास।सतगुर शबद लेहि

।ति प्री पारवती की संबदी संपूरा

।ध॥अथ गोरथ नाथ जी की संबदी

॥वसती न सुं न्य सुं न्य न बसी

।बोली नां वधरोगे के सांश

प्रवादेषि विचरिवा ॥ अदिष्टरायिवाच
या ॥ पातात्नकी गंगा ब्रह्मसंभ्रवहा ईश
तहां विमलविमलजलपीया ॥ २ ॥ इहां
ही अं च्छा इहां ही अलोप ॥ इहां ही रचि
लैती न त्रिलोक ॥ अं च्छा संगमरे हे जुवा
ता करणी अंतसिधु फवा ॥ ३ ॥ वेदक
तेव ब्रह्मांणे बाणी ॥ सबं ठां की त लि अ
णी ॥ गगनि सिधर चठि शब्द प्रकानी
ता हि ब्रु फिलै अल य निर बां नी ॥ ४ ॥ अ
ल य बिना नी दो इ दी प कर चि लै ती
न भवन त त जो ती ॥ ता स विचार त त्रि स
वन सू फे ॥ चु ए लो मां णि क मो ती ॥ ५ ॥
वेद सा स त्र क ते व कु रां ण ॥ पु स्त क लि
ध्यान जा इ ॥ ते प द जां ण त वि र ला जो गी
ओ र ड नी यं धं धे ला य ॥ ६ ॥ ह सि बा धे ल
वार हि वारं ग ॥ कां म क्रो ध का करै न सं ग
हे सै धे लै गा वे गी त ॥ दि ठ क रि रा धे अ
णा चि त ॥ ७ ॥ ह सि बा धे ल बा ध रि बा धां
ना ॥ अ ह नि स क थि ले ब्र ह्म गि नां न ॥ ८ ॥

सीधे लकरे मन भंगा निश्चल रहै साध
 का संग ॥ ४ ॥ मन मुख जाता गुर मुख लेह
 लोही मांस अंग नि मुख देह ॥ मात पिता
 की मे दै धात ॥ त्रैसा होय बुलावे नाथ ॥
 एनाथ कहंता सब जगनाथ ॥ जोर थ
 कहता गोश्री कलमां का गुर महम देहो
 ता पहली मुवा सोश्री ॥ १० ॥ महम द महम द क
 हता काजी ॥ महम द विषम विचार ॥ मह
 म द हाथि कर द जो होती ॥ लोह गही न
 सारंग ॥ ११ ॥ संब देही मारी शष्ट ही जाइ ॥
 त्रैसा महम द पीरा ॥ ताके भर मन भू
 काजी ॥ सो बल न हीं सरीरा ॥ १२ ॥ सारंग
 रंग गहरंग नीरंग गनि उ छुलीयाना
 माणिक पाया फेर लुकाया ॥ फूवा बा द
 विवादां ॥ १३ ॥ कोई बादी कोई विवादी ॥
 जोगी कुवा वा द न मरण ॥ अड सति तीर
 थ सम द समावे ॥ जोगी कूं गुर मुख जरण
 १४ ॥ उत पति ही कुजरणं जोगी ॥ अ
 पीर मुसल मानी ॥ तैरे ह ची न्हौं काजी
 ही

मुला। ब्रह्माविष्णुमहेश्वरजांणी। १५।
न्यासत्रदमीठयादं। नहचैराजामर
शरी। परचैगोपीचंद। नहचैरवैभयो
निरंदा। परचैपरमानंद। १६। अहनि स
मत्तलेनुनमनिरहै। गमकीकांडिअ
मकीकहै। आसाकांडैरहै निरासाब्रह्म
कहैकृताकोदासा। १७। अरधेजाताउ
रधेधरे। कामदगधजेजोगीकरै। तजेअ
लिंगकोटेमाया। ताकाबि^{सु}नपठालैप
या। १८। अजपाजापसुनिमेंधरे। पांचै
इंद्रीनिग्रहकरै। ब्रह्मअगनिमेंहोमेंक
या। तासम्हादेवबंदैपाया। १९। धनजो
वनकीकरैनआसा। चितनराधैकां
मणिपासा। नादविंदजाकैघटजैरै। ता
कीसेवपारवतीकरै। २०। बालैजोवन
जेनसजती। कालइकालातेनरसती
पूरतिभोजनअल्पअहारी। गोरधक
हैसोकायाहमारी। २१। पूरणपेटतब
हीहैसती। जुवतीमुद्येंकहवैजती। २२।

नबिनांसवरानीत्यागी॥नाथकहेसोव
नाथभागी॥रराशहिसालाशहही
कंची॥शहहीशहजगया॥शहहिशहप
रच्याकृवा॥शहहिशहसमाया॥रराश
हवं दोरेअवधूसहवं दो॥शहवैसीक
तकाया॥निम्नांणवेकोटिराजारजनजि
परजाअंतनपाया॥रधाशहवंदोरेअ
वधुशहवंदो॥थानमानसबंधधा॥वं
दतगोरथअतमबिचारी॥ज्योजलम
धेचंदा॥रधापंथबिनचलिबाअगनि
बिनजलिबाअनिनत्रिवाबिनपीया
सुसमवेदश्रीगोरथकथिया॥प्रच्छले
पंकितपहीया॥रधागगनिमंडलमैउ
रमुषकुवा॥तहांअमृतकावासासु
गराहोयसोभरिभरिपीवै॥नुगराजा
यपियासा॥रधागगनिनगोसततेजन
सोषता॥पवनैपेलंतवाश॥सहीभोरि
नभाजंतउदिकनडुवंताककृतो
पतियाश॥रधावाससहितसंबज

ला। ब्रह्माविष्णुमहेश्वरजांणी ॥ १५ ॥
न्यासबद्धमीठायादं नहचैराजाभर
शरी ॥ परचैगोपीचंदं नहचैरवैभयो
निरंदं परचैपरमानंदं ॥ १६ ॥ अहनि स
मनलेनुनमनिरहै ॥ गमकीकांडि अ
मकीकहै ॥ आसाकांडैरहै निरासाब्रह्म
कहै कृताकोदासा ॥ १७ ॥ अरधेजाताउ
रधेधुरै ॥ कामदगधजेजोगीकरै तजै अ
लिंगकौटेमाया ॥ ताकवि^{सु}मपयालेपा
या ॥ १८ ॥ अजपाजापसुनिमैधुरै ॥ पांचै
इंद्रीनिग्रहकरै ॥ ब्रह्मअगनिमैहोमैक
या ॥ तासमहादेवबंदैपाया ॥ १९ ॥ धनजो
बनकीकरै नशासा ॥ चितनराधैकां
मणिपासा ॥ नांदविंदजाकैघटजैरै ॥ ता
कीसेवपारवतीकरै ॥ २० ॥ बालैजोबन
जेनरजती ॥ कालडकालातेनरसती
पूरतिभोजनअल्पअहारी ॥ गोरधक
हैसोकायाहमारी ॥ २१ ॥ पूरणपेटतब
हीहैसती ॥ जुवतीमुद्येंकहवैजती ॥ २२ ॥

नबिनांसवरागीत्यागी॥नाथकहेसोब
नात्रभागी॥२२॥शाष्टहितालाशाष्टही
कंचीशाष्टहीशाष्टजगया॥शाष्टहिशाष्टप
रचाकृवा॥शाष्टहिशाष्टसमाया॥२३॥शा
दोरेत्रवधूसष्टवंदो॥शब्ददेसीक
गावेकोटिराजाराजतजि

का

त

वं

मवेदप्रीगोरयकथिया॥पूछलै
मैउ

रमुषकुवा॥तहांअमृतकावासासु
गराहोयसोभरिभरिपीवै॥मुगराजा
यपियासा॥२७॥गगनिनगोसततेजन
सोषता॥पवनयेनंतबाश॥सहीभोरि
नभाजंतउदिकनडुवंता॥कहंतोको
पतियाइ॥२८॥वाससहितसबजग

वास्या स्ववाद सहित सब मीठा सांच
हों तो सतगुर मानै रूप सहित सब
२ ए। मरि वेजोगी मरण है मीठा जिस
रणे मै गोर बही ठा जीव जत मरि बा
रि कै जीवै। अमी म्हार स नरि नरि पी
३०। वा इवा पीय वाधा पिवानां ही च
लिवा धा इवा था किवानां ही। तो टि
पो टिवा सो इवानां ही। ह सिवा ये लव
बो लिवानां ही। ३१। हव कन बो लिवा
वव कन चालिवा। धी रै धरिवा पाव।
गरवन करिवा सह जैर हिवा यौ भा
त गोर बराव। ३२। नरिया ते थै रं फल
कत अाधा। सिध सौ मिल्पा अरु लाधा
नाथ कहै फकीर परवाणी। पारिषपु
रष दिष्ट सुषवांणी। ३३। नाथ कहै सु
रे अ बधू। दिठ करि रायो चीया। कां म
क्रोध अहंकार निरवारो। शब्दिसंत्र
कीया। ३४। स्वांमी वन वं रुजां उंतो सु
व्यापै। नगरी रहंतो माया। नरि नरि वां उं

निंशब्दापै। क्योसीऊतजलाबिंबकी
काय। ३५। सूताधापनयाइबां भूषन
रहिवाइनबिधिब्रह्मअग्निकासेव। ह
ठनकरिबांपडानरहिवा। बोलेगोर
षदेव। ३६। थोडाबोलैथोडायाइता
घटपवनरहेसमाइ। गगनिमंरुलमैअ
नहदबाजे। पिंडपडे। तोसत्तगुरलाजे
३७। अहारतेनिंशामोडो। कबडूनहो
वारोगी। नागाबंगबनासैती। योंकोइवि
रलाजोगी। ३८। अहारकृतोडिबापवन
कंपलटिबा। कबडूनहीविरोगी। छुटे
महींनेकाथापलटै। नागाबंगबनासप
तीजोगी। ३९। देवकलातोसंजमरहिवा
भूषकलातेअहारमनपवनालेउन
मनरहिवा। तेजोगीततसारं। ४०। निंश
केघरकालजंजालं। अहारकेघरचो
रं। मिथुनकेघरजुराबियापै। अरधउ
रधलेजोरं। ४१। घटघटगोरबोवैक्या
रो। जोनिपजैसोहोयहमारो। घटघट

रथक है कहांणी। काचै नांडैरहनपां।
धर अति अहार इं प्री चल करै। नासै
ज्ञान मिथुन चित धरै। व्यापै निद्रा कं पै
काल। ताकै हिरदै सदा जंजाल। धर
अति अहार निद्रा वैरी काल। कैसै
राधिवागुरका नं मारा। अहार तो डै निद्रा
मो डो। सिव सकीले दिह कुरि जो डो। ध
४। सूरज घाट्वा चंद्र सोइ उवैन पीब
पाणी। जीवता कै तले मुवा बिछावै। यौ
कहै गोरष बाणी। ध ५। जीवत बिछावै मु
वा छोटे। कब ऊन होवै रोगी। वरसै दि
नकी यापल टो। यूं कोइ बिरला जोगी। ध
६। जलके संजम अटल अकासं। अने
क संजम जोति परकासं। पवनके संज
मला बंध। बिंदकै संजम थिर होय कं
७। अनकामास अलील काहा डं। त
तका बंध चाल ताचा डं। फेर बाव
इसाधे जोगं। बंदत गोरष अथे ये भोगं।
८। नही पडै त्रिभणी नही पडै कंध त

बेही जाणें अनहं दका बंधर क अरु
रेत आगें छैन छूटै ॥ जोगी कहै ताही रा
नफूटै ॥ धरणा आसं एदि ठ अहार दिहा ॥
जो निद्रा दिठ होइ ॥ गोरख कहै सु एरै अ
बध्ना मरे न बूटा होइ ॥ पूजे जब लग पे
ठे पुठिन ही हटै ॥ जब लार किरे त
नही हटै ॥ चित चेत न्य कर मनिको दे
जोगी कहै ताही यान फूटै ॥ ५१ ॥ बडे
बडे कुल हूटे पेटा ॥ नाहीं पूता गुर संभे
टा अडी अडी काया निरमल नेत ॥ त
बजाणि वा गुरु काहेता ॥ पूरा मोटे पे
ठ पिंरु अरु सधूला ॥ जोगें जुगति न जां रौ भू
ल ॥ वाया भात कुला या पेटा ॥ नाहीं पूता
गुर संभे ॥ ५३ ॥ सरां का पंथ हा स्यां का
बिसरां म ॥ सुरता ले डु बिचारी ॥ अण
परचे पिंरु ने ध्याया ॥ श्रंत काल हो
यः ॥ भारी मिलै सत गुर दीनी दिव्या ॥
उत्तम करणी मांगी निव्या ॥ नाथ क
हेतु म सुणौ रेवाला ॥ तब जाय बूटै

अनहदतात्ना ॥ ५५ ॥ निच्छाहमारी कोम
नबोलीये संसारहमारी बाडी ॥ गुरपरस
दनिच्छायायवा ॥ अदिअंतनही भारी ॥
६ ॥ घावेबकुतचलावे छोटा ॥ जोगीनां
पंथकाघोटा ॥ अलपत्रहारी पात्रपूरा
थकहें पंथकासूरा ॥ ५७ ॥ स्वांगकापूरा
नकाकुरापेटकाटटाडाभातिकासू
बंदतगोरषनाथयाजोग ॥ करिपायंडरि
जायालोग ॥ ५८ ॥ पेटकीअग्निबरजतद्रिष्ट
कीअग्निबाइ ॥ ज्ञानगुरुकाअगेहोतीपु
निविरलैअबधूपाया ॥ ५९ ॥ बहुलयेके
दीजेछांडे ॥ कहेगुरुजीयहविधिमांडे
यायेंमरियेअणयायें ॥ गोरषकहेपूता
जमतिरेये ॥ ६० ॥ दाबिनभारिवायाली
रषिवा ॥ जाणिवान्अग्निकाजेव ॥ बूडा
तेंसतगुरयीणीहोयगी ॥ सतिभायतगोर
देव ॥ ६१ ॥ जिभ्यास्वारथतननयोजे ॥ हेल
करैगुरवाचा ॥ अग्निबिडुणांबंधनलं
हलिकेंगया ॥ रसकाचा ॥ ६२ ॥ भरिभरि

इह लिखित निजाइ जोगन ही पूता बडी ब
डा संज मरहि बी सो वै न जागे। ना द बिंद अ
स्थिर काल क्रम भागे। ईश इंद्री काल
डा जिभ्या का फुह डा गोर थ कहै ते पर
त वि चुह डा का लु का जती मुख इ मृत
वांणी॥ सो सति पुर था उत म जांणी॥ ई धा
मन चंगा तो क ठो टी गंगा॥ व्या ध्या पे ना तो
जगति चेत्ना॥ ना थ कहै दया त ब्र अ ई
गया दो थ त ब मु क ति पा ई॥ ई धा करी या
ही न सब द का सू रा॥ कार ज सि धि न परे
पू रा॥ सी थी सा वि ब सा या ब रा॥ ना थ क
हे पू ता थो टा न थारा॥ ई ई सी थ ये सा वि
ब सा ई ये ब रा॥ डारी ये थो टा ली जे थ रा
थारे धी र त थो डे पू रं त मी वै उ प जे रोगा गो
र थ कहै सु गौ रे अ ब धू अ न पां णी
गा ई पा अ ल स निं ड इ ज भा ई॥ उ र द
प्रां न प्रां न स मा ई गोर थ कहै अ ध्या
इ॥ सा ध त जो मी दे ह बि दे ह गा ई ण
कर तां अ मरी रा थो अ

अनहदतान्ना ५५ निच्चाहमारीको
नबोलीये संसारहमारी बाड़ी एरपर
दनिच्चाथायबा अदिअंतनहीभारी
ईषावेवकुत्तचलावेछोटा जोगीनाव
पंथकाषोटा अल्पअहारीपात्रपूरा
थकहेंपंथकासूरा ५७ स्वांगकापूरा
नकाकुरापेटकाटटा डाभातिकासूरा
बंदतगोरषनाथयाजोग करिपायंडरि
जायालोग ५८ पेटकीअग्निबरजतद्रिष्ट
कीअग्निबाइ ज्ञानगुरुकाअगेहोतीपु
तिबिरलेअबधुपाया ५९ बहुतेयेके
दीजेछांडे कहेगरुजीयहविधिमांडि
यायेंसरियेअणयाये गोरषकहेपूता
जमतिरये ६० दाबिनभारिबायालीन
रथिवा जांणिवान्अग्निकनेवा बूढाह
तेरागुरथीणीहोयगी सतिभाअतगोरष
देव ६१ जिभ्यास्वारथतननयोजे हेला
करैगुरवाचा अग्निबिडुणांबंधनलो
रसकाचा ६२ भरिभरिया

बाड़ी भोग करंतां जो खंद राखै गोरख
गुर भाई ॥ ६९ ॥ भग मुख विंद अग्नि मु
ख पारा जो राखै सो गुरु हमारा गोरख
कहे सुणैरे श्रुता ॥ नाद ख्यंद ले अह
निस सूता ॥ ७० ॥ ईश्वर हमारा चेला कह
ये मछि प्रकही ये नाती ॥ निगुरी प्रथी म
रि मरि जाती ॥ हम उलटि सिद्ध करि ध्या
यी ॥ ७१ ॥ सांचका सब दसौं नांकी रेखा ॥
निगुराकै चाणिसुगुराकै उपदेसान
थक है सति न भरांती ॥ जाति प्रमांणै
लागे नांती ॥ ७२ ॥ रोस्त गोला रुषारोग
भूषा भच्छिक भोला जोगी ॥ गोरख कहे
सरदा सोगी ॥ इनमें निपजे नांही जोगी ॥
७३ ॥ घटघट गोरख बोवै क्यारी ॥ सो निपजे
सो होय हमारी ॥ घटघट गोरख क
हांणी ॥ काचे भांडेर हेन पांणी ॥ ७४ ॥
घट गोरखर हेन रूता ॥ को घट
घट सूता ॥ घटघट गोरख घटघट म
न्नापा परचै गुर मुख चीन्ह ॥ ७५ ॥ के

शवेकेताजाईकेतामागेकेतावाइ
केतारुंषबिरघततिरहे॥गोरथरु
एनेकासुधतनहे॥७६॥बूफएतेभूल
एानही॥नायोजतरुग्यानीसही॥
येजाजीवेवादीमरे॥अहंकारीकेपिंरु
पदे॥७७॥परथमयेछांडियेकेसमेस
अरुदेसांतजिवांसतएरकेऊपरै॥७८॥
अबधूपंथषराउषस॥७९॥जोगीहोइ
पणिनिद्राऊथे॥मदमांसअरुमांगि
नथे॥इकोत्रसेपुरषानरकांजाई॥स
निसतिभाथेगोरथराई॥८०॥मांसभ
थेतहांदयाधरमकोनासामधपीवैत
हांप्राणनिरासाभांगनेथेतज्ञानध्यान
यावतजमहारेतेप्राणीरोवता॥८१॥
सूकेकंठभूषसंतापे॥देहबिसरज
ननिद्राव्यापे॥बुधिविनाविकलहेइ
जाइ॥तानेगोरथभांगिनमाइ॥८२॥

५॥ तौ ते बिजीया सिधनया ॥ ६२ ॥ पाव
 डीयां पगपिस लै अबधू लोही चूडि
 काया नागामौ नी दुदाधारी ॥ येता जो
 गनपाया ॥ ६३ ॥ दुदाधारी परघरचित
 नागालक डीचा है निति मूनी करे मि
 त्रकी आस ॥ विनांगू दडी नहि बिसवा
 स ॥ ६४ ॥ दक्षिण जोगी रंगा चंगा ॥ पूरब
 जोगी बांदी ॥ पच्छिम जोगी बाला नोल
 सिध जोगी जनादी ॥ ६५ ॥ पूरब दिसा व्या
 धिकारोग ॥ पच्छिम दिसा मृत्तिका सोग
 दक्षिण दिसा माया को भोग ॥ उत्तर दि
 सा सिधका जोग ॥ ६६ ॥ जोगी सो जो मन
 को जो वै ॥ विना बिलाय तरा ज नोग वै
 कनक कां मणी त्यागे दोई ॥ सो जोगे ल
 रनिर नै होई ॥ ६७ ॥ सन्यासी होय क
 रम सब नासे ॥ गगनि मंडल में मांडे
 सैं ॥ अन्ह दसु मरन उनमनिर है ॥
 सो सन्यासी अगमकी कहै ॥ ६८ ॥ गोर
 मना अली सबही याकी दूव कि बत
 का गुटका मे छै सो जां गो गा

प्राग्प्रथमो नीजी करीसवदीलिय
साग्प्रदेयदेयेसवदविचारे। प्रापति
रेओरनकं त्यारे। पद्यापयी कांयधन
हिंजाले। लोकवेदसंजितदाचाले।
प्रातमततकाकरे। विचारा। कहैग्या
नीसो गुरुहमारा। शिप्रजनमाहि निरंज
नधावे। अत्रंगतिसंलोमनेत्यावे। सत
गुरसवदसूनाग्यारहै। कामक्रोधसौदा
हनदहै। प्रासात्रहमारहैतजिन्यारा। क
हैग्यानीसो गुरुहमारा। शिष्येकायेकीअ
रुवऊसंगी। सदाजुदासीअरुवऊरंगी।
ग्रहमैरहनांबनधरुवासा। अरुवऊव्या
धिकीकाटेफासा। हेहरिनीडानीडगते
हरिजनग्यानीकासतगुरपूरिशिममता
जालेभसमचढावै। प्राग्प्रनाहदसी
गीबजावै। मनमनसाकीसुझाकरे। कां
मक्रोधदोउअजरौजरे। इंगलापिंगला
सुषमनिभोगी। कहैग्यानीसोसाचा
जोगी। दीजंत्रमंत्रनाहीकरै। नाटिकचे

दक सब परि हे ॥ आनदिसानही लागे ज
ई मनपवनां ले सहज समाई सो जोगी
निर भैरे भाई ॥ जाके ग्यानी लागे पाई ॥
५ ॥ नागा सोई निरंजन ध्यावे ॥ अत्र गति
संमेलन मिलावे ॥ त्रिकुटी ऊपर आस
न करे ॥ धूणी पाणी सहजै बवे ॥ भोजन
बसती नां ही जाई ॥ कहै ग्यानी सो नाग
भाई ॥ ६ ॥ मोनी सोही भगन होय रहै ॥ स
बद कहै सो पूरन गहै ॥ उनमनिताली
हे लगई ग्रह छांडि बाहरिन ही जाई
१० ॥ सबद अनाहद ल्यावे धूनी ॥ कहै ग
नी सो सांचा मोनी ॥ पांचू इंद्र करे परह
रा ॥ सत सबद गुर बचन उचारा ॥ ११ ॥ नि
रमल रहै तजै अहंकारा ॥ सील संतोष
गहै मत सारा ॥ येकां येकी रहै उदासी ॥
कहै ग्यानी सो सतिसंन्यासी ॥ १२ ॥ वैरागी
सो त्यागे भ्रम ॥ मनके काटे सबही क
म ॥ सैष साधिका करै ननिंद ॥ आसा पां
सिपडे नहिं फंद ॥ १३ ॥ धस्या गुन्या संरहज

त्यागी कहें ग्यांती सो सत खै रागी। सेवग
सो ही सेवा भाड़ी सेवा छांडि अंत नहि जा
ड़ी। १४। तांती सीत्ता कसनी स है। सेवा छं
डि और नही लहे। सत गुर की नही मे टै
बा चा। कहें ग्यांती सो सेवग सां चा। १५। गि
ही सो ही गि ह बन करे। हरष सो ग सब
ही परि हरै। तां वौ निंदो बिंदो को ई। वे
र भाव मन में नही होई। १६। पधा पथी
का भावन धरै। कहें ग्यांती गुर सेवां क
रे। स्वांमी सोई सब घट समता। सब घट
देवै ये कहै रमता। १७। मान अंपमान
व्यापे न। ही को ई। नली बुरी सब लेय
स मोई। अंत्र गतिका अंत्र जांमी। कहै
ग्यांती सो सां चा स्वांमी। १८। ब्राह्म सो ही
ची नै ब्रह्मा। गगनि गुफा में रोपे यं न। सु
न्यमंडल में धरै ज ध्यांती। सो ही ब्रह्मण ब्र
ह्म समान। १९।
बेहक का सब त्यागी ग्यां

घट पूरि २० मुसलमान मुसावै आ पा
त सबूरी कत मां पाक। घड़ी न च्छे डै
पडी न घा इ सो मुसलमान नित्त कौ
जाय २१ सेष सबूरी मां हार है। आ पा
त जि करि साहिब तन है। सब घट साहि
ब एक बिचारै। इजा का फू और नहि म
रे २२ घट में म काम दीनां देया कहै
ग्यांती सो सांचा सेया। मुत्ता सो ही मन की
जां नै। बाहरि जाती नी तरि आं नै। २३ क
जी सो ही कुरां न बघां नै। ये क अलाबिन
नहि जां नै। आ पा त जि करि यो जै दित
घट में जोरि करै बिस मल २४। जंगम
सो ही जो अजरा जरे। आ पा त जि जीवत
ही मरै। जंदा सो ईद म की जां नै। इम दम
मन ही में आं नै। २५। सो फी सो ही ब्रह्म बि
चारे। ब्रह्म अग्नि अत्र परि जारै। सब द
परिष की पारिषा हो ई अ्रे सा हो इ सो उ
धरे सो ई २६ कहै ग्यांती यो निर मल ग्यां त
मिट गयो ति मरु दे नयो भांन ॥ दीहा ॥

दकबीजकीमांरुमें॥देखिनयामन
राजनग्यानीकासंसामित्या॥संतगु

त्माकेबीरा२७॥सबदहमाराग्यांनद
रासंतचलेवैवाटा॥कोईसहंप्रमेंऊ
रैग्यांनीश्रोघटघाटा॥२६॥इतिश्री
नीजीकीसबदीसंपूरणः॥१६॥अ
थअतस्त्वच्छिजोगगोरवनाथ
लिख्यते॥

तेहै॥सोलाप्रकारकेराजजोगहैं॥तिनके
नांमकहतेहै॥कृयाजोग॥शगिनांनजोग॥
वरचाजोग॥शहठजोग॥धाकरमजोग॥पु
नैजोग॥दीध्यानजोग॥७॥मंत्रजोग॥८॥त्वच्छि
जोग ९॥वासनांजोग॥१०॥सिवजोग॥११॥ब्र
ह्मतीतजोग॥१२॥राजजोग॥१३॥
धजोग॥१४॥कृयामुक्तिजोग॥१६॥सर
वपिंरुसिधायेकांजयकरोतीकिलोत्त
करजारंनैमनसदाथंनै॥कूंचनुकूर

वंती॥ क्रियाजोगसो भवंती॥ षिमां बिवे
प्रवैराग॥ सत्यसंतोषी॥ निसप्रेही॥ येता
त्वसमाजुगता॥ मायामिमता॥ हंस्यास
दमच्छर॥ कांमक्रोधलोभमोह॥ मयला
जरागदोष॥ जिसयेतानबंधते॥ क्रीयाजे
गसोचचते॥ १॥ येताग्यानजोगकेलव
नकहतेहै॥ अरथबनासपतीपरव
त॥ प्रथीअसिदथावरजंगमा॥ संसार
नुषहसतीघोडा॥ पंथीआदिसर्वभूतसं
सारआपणीअं व्यादेवीयेसोद्रष्टिक
ये॥ नहीदीयेसोअद्रिष्टकहीये॥ अैसेसं
सारकंआपणीआतमाकानेददूरिये
ककरिदेवीये॥ येगिनानजोगसाधंते॥
कालसरारकूंजलनिनांकरिसके॥ २॥
इतालचिनचरचाजोगकेनेदकहते
है॥ निराकारअचलअनेदअैसेसीआ
तमारूपमांनीये॥ मननिश्चलकरि
थीये॥ मननिश्चलकरिराथैथी॥ ३॥ ज्योप
रवनिकेपातसमांनिरहतेहै॥ संसोनहो

यतोयां पुरसकं पापपुंन्यको संसोनां
हं। ज्योऽसमानिभैः शं पणीं च्छानं
वतहे। ज्योऽजिसकामननिराकारसां
हिलानहोयां। वा पुरसचरचं जोगक
हीये।। हठजोगके भेद कहते है।। रि
चक पूरक कुंभक त्राटक येतादस
पवनसाधना। और यदकरमधोती आ
दिकरिसाधिते। येसाधें सरीरकी नाडी
नाडी सुधहोती है। सारे सरीरके रोग ह
रिहोया। तिसतें मननिश्चलनहोय मन
निश्चलनहुवातें। अनेकरूप प्रगटहो
या। हठजोगतें चित्तसुंन्यमानिलानहो
तहै। लीनहुवातें कालनेजीकनहीं
आवे। हठजोगका हूसरा भेद कहते है
पावतें सिरताईको हिस्तरजमानों तें
जहै। सुपेदपीतनालनसबजस्याहांको
ईकरंगरूपका ध्यानकीयां तें सारे अ
गके रोगजाया। राजजोगके भेद कह
ते है। केतीकसिंधिकुंभननीसक्तिज

गाई तिसकंराजजोगीकहतेहै॥ मूल
कुंठकीओरतेतेजरूपयेकमांहीना
डीहै॥ वानाडीयेकइडापिंगलाके
दिगन्त्रेसैनेदकंपावतीहै॥ बावैभा
ग्यचंद्ररूपनाडीहै॥ दिषणनागिस
रजरूपनाडीहै॥ मध्यमारगसुषमना
नाडीहै॥ सुषमनाकेमूलकेतांतूसमा
निकोटिबीजलीकेतेजकंधरतीहै॥
भक्तिमुकतिकीदेणहारहै॥ त्रैसीसु
षमनांनाडीहै॥ एकगिनांनउपावक
हतीहै॥ गिनांनउपजतेहै॥ पुरषप्रव
गिनानी॥ त्रकंणीकामपीविहै॥ तिस
कंपीविमांनीहोय॥ चारिदलकाकंव
लमूलकंदकेओरहै॥ कंवलमांहि
ग्निकीसिषाकेआकारयेकमूरति
है॥ तिसमूरतिकाध्यानकीयांतै॥ सक
लसासत्रविनांठकआदिकरिसरब
मारगभ्यासे॥ आपहीपुरषकंमनमां
निउपजताजाय॥ येतालछिदुजाकम

लस्वादिष्टाननां वच्छदलं कोकं मत्तं
 हे। उमाणापीति असनां मकहते है।
 जिसमां हिमांणिकरंगतेज है। तिस
 काध्यानकीयां तै। साधिकं कूं अति
 सुरति हो या और तिकूं अति बलन
 होय। दिनदिन आवबधती जाय। ये
 तालच्छिती जाकं मत्तनां नीका ठोर
 दसदलका है। तिसकं मत्तमां हिपंचवे
 रं चक है। तीननाडी तालरंग देष्या न
 जाय। तिसकं बलमां हि आवदलका
 और उरधसुषकं बल है। तिसकं म
 त्तमां हि अगुष्टा प्रमां एणक मूरति है
 तिसमूरतिकारूप नूर अरु सुं इपण
 जिभ्यासं कह्या न जाय। उंसमूरतिका
 नकीयां तै। सुरगमां निकपां तालमां
 कशाकासमां निक। गंडपलोककी
 हीजलोककी बिंद्याधरलोककी इं
 लोककी सुं इकां मनी वसि होया। जो
 धिकं के मनमै अंछा होया। तो इनलो

ककी बसि होय ॥ प्रथी क

इसका क्या कहण है ॥ ये ताल छिपंच
मांक वल कंब की वोर सोला दलक
हे ॥ तिसमांही कोटि चंद्र कंधरता है ॥
ये कपुरस है ॥ तिसका ध्यान कीयां तें स
धिक कारो गजाय ॥ ये कसहं प्रपुरस
की उमरि बंधे ॥ ये ताल छि छुठ मांक
मल अग्निनांम है ॥ सो कंमल भौं मा
हि है दो दलका कंमल कहते है ॥ तिस
कंवल मांही अग्नि की सिषा के आका
र ये क मूरति है ॥ तिस मूरति का ध्यान
कीयां तें पुरष का पिंठ अजर होया ये
ताल छि सातवां कंवल तालवा
इमृत पूरता है ॥ सो कंवल चौस विद
लका है ॥ कंमल मांही नील रंग
का है ॥ तिसमांही प्रग
ला इमृत सरवती है ॥
रब साता है ॥ उस कला का ध्यान
यां तें पुरष के नजीक मरण नहं

ककी बसि होय ॥ प्रथी की बसि होय ॥
इसका क्या कहणां है ॥ ये ताल छिपंच
मां कं वल कंठ की वोर सो ला दल का
हे ॥ तिस मां हि को टि चं ५ कंधरता है ॥ ये स
ये क पुरस है ॥ तिसका ध्यान कीयां तैं सा
धिक कारो ग जाय ॥ ये क सहं प्र पुरस
की उ मरि बंधे ॥ ये ताल छि च्च व मां कं
मल अग्नि नां म है ॥ सो कं मल भौं मां
हि है दो दल का कं मल कहते है ॥ तिस
कं वल मां हि अग्नि की सिषा के आ का
र ये क मूर ति है ॥ तिस मूर तिका ध्यान
कीयां तैं पुरष का पिठ अजर होय ॥ ये
ताल छि सात वां कं वल ताल वा मां हि
इ मृत पूरता है ॥ सो कं वल चौ स वि द
ल का है ॥ कं मल मां हि नी ल रं ग घं टि
का है ॥ तिस मां हि प्र ग ट चं ५ मां की क
ला इ मृत सरवती है ॥ और मिथुन स
रव साता है ॥ उस कला का ध्यान की
यां तैं पुरष के न जी क मरण नही आवै ॥

रोज लक्ष्मि ध्यान की यांतै पित्तजुर हिर
देहाहं जीभ के जांड़ा भाव सरब रोग
नासकूं पावै। जहर धाय तो जल निना क
रि सके। उसका परम मनो र्थ हो याये
तालक्षि सातवी कंवलक। श्राव मां
के मल ब्रह्मरं दर की ठोर एके सहंश्र
दलक है। तिसके सिधपुर सब ह्य च
क्र कहते है। तिसके मल मां हि ध्रुवां की
रेश होय तैसी पुरष की मूरति है। तिस
की आदि अंत नां ही। तिस मूरतिका
ध्यान की यांतै। असमान मां हि श्राव ए
जावै की सां मरथा होय। डनी यां मां हि
रहै। असु श्रापण तै डनी हरि करि देवै। तो
अनंत उं मेरे बंधे हरण करण की सां म
रथा कहै। ये तालक्षि नवमा कंवलक
नेद महासुन्य चक्र कहते है गोरख उं व
च स्वां मी मनका श्रे सां पूरण नां म कह
ते है। तिसके परि श्रोर कुं छि नां है। तिस
सकूं सिधपुर महासुन्य चक्र कहते है

तिसका पूरण श्रेयसांनांमहे। तिसमांहि
मांने उरधमुषअनंतरंगहै। सारा सोना
भंकारहै। अनेककल्याणपूरताहै। अस
षिदत्तकाकंवलहै तिसकाप्रमलअ
रुबचनमनहीसंअगोचरहै। तिस
वलमांहिनिरंजनरूपअनंतकला
कोटिसूरजबराबरउसकलाकाते
जहै। परिसूरजकासुभावनांही। को
चंद्रबराबरउसकलाकातेजहै।
चंद्रकासीतलसुभावउसुभावनां
ही। जोअतिदाहोयअथवासीतल
हाय। साधिककेमनडुषहोयतिस
तैअकलिप्रमाणउर्धसक्तिकलाहै।
उसकलाकाध्यानकीयांतै। पुरस
मनमेंजैसीअच्छाकरै। तिसनावै
सबोरउपजतीजावै। राजसुषभोग
तोअरतिमांनेबिनासकरै। तोसं
तिकैबिनोददेषतेरहै। दिनदिन
जातापाषपरिउमरिबधतीजाय।

तिसल्लि

अरधल्लिकेतेदकह
निमोहिमनअरुनजरैउरधकरिरा
धीयेतेल्लिनिजरिसिहकीयांतै॥
करतारकेअग्नितेजसेतीनिजरिका
मेल्लाहोयाअसमानमोहिअद्विष्टप
दारथसिधसाधिकसोसारेनिजरअ
गेदेधीयेअरधल्लिकहरीयेनासिका
कीअणीऊपरिवाराअंगलतांडी॥नि
जरथिकरिराधीयेतोनुमरिदराजहो
याअथवादोयभौरांमांहिनिजरिथि
रराधीयेतोनुमरिदराजहोयायेवा
जिल्लिकहरीयेअबउरधल्लिक
वाहरिनीतरिअसमानकेपरेसुंन्य

लक्ष्मिकरणां जागतां चालतां घाटां
घातां पडारहतां सरबठोररहतां सु
नलक्ष्मिकरणां तो मरणो की त्रासन
होय ॥ येतालक्ष्मिराजजोगीपुरसके
चहनकहतेहे सरबत्रसारीडनीते
दूरिभावेअरुडनीमां हि विचरे ॥ जिस
केगांवनां ही नां वनां ही जनमनां ही
मरणनां ही सुषनां ही दुषनां ही कुल
नां ही स्वांतिनां ही रूपनां ही रंगनां ही
चहननां ही ॥ अरेसाअलषनिरंजनअ
लेषकरतार ॥ तिसकामनमां नैहरि
रोजबिकासकूं पावे ॥ वापुरसराजजे
गीकहीये ॥ अरुराजपायेतैजिसकाम
नहरषचपलभावकूं नपावे ॥ अरुह
णिकुयेकचुमनमां हि ही एतानहोय
पहारथपायेतैकचुमनमां हिहरषन
हीहोय ॥ वापुरषराजजोगीकहीये
अरुजिसठोरकंडुतासताहोय ॥ अ
वडीनंदीकीतीरहोयवापरवेगहो

यदुसमनमित्रकैबिधेयाष्टरसौनां
केबिधेयै॥जिसकामनअरुनिजरिव
रावरिहोयवापुरधराजजोगीक
हीथे॥सारीडुनीमांहिरमतासुषभोग
ताहैवैकछूनहीकरतेहै॥सहरमां
हिअष्टवांउजाडिगावमांहि॥जिसका
मनउनांनपूराहोयावापुरधराजजो
गीकहीथे॥येतालछिसुभावकेनेदक
हतेहै॥ऐसैबटकाविरछंआपणासु
भावदसनांतिकंपावै॥मूलअंकूरतु
चायुठकालकलीपातेफूलफलबी
जनहचै॥ऐसैनिरमलनांमरहतेहै॥
निरविकारनिरंजनयेकआतमांआ
पणासुभावतैदसनांतिकंपावै॥प्रथ
अप्रतेजवायआकासमनबुधिमां
याहंकारविकारऐसैसुभावकंपा
वै॥गिनांनजोगकेप्रभावतैयेकआ
तमांहे॥जोनहचलहोयतोयेप्रथीक
विनहैसकोमलहैमनोहरहैप्रमंत

मुक्ता है। परमत्तर हतवी है। जर नी है
नले नले फल है इ मृत्तरूप है। येष
का सुभाव तै एक श्रात मान पंथी ॥ हर
णह स्त्री विद्या धरंग इ पके नगर है। सै
पंक्ति महा मूरध जोगी सकल संसक
ल जरता है। स्वाति रूप के विन श्राप
णां सुभाव कं न धरता है। गिन्यान जोग
तै विकार न रहता है ॥ ये ताल छिना
सिका की श्राणी तै चारि श्रांग ल प्रम
ण निराकार तेज पूरता है ॥ ध्रुवां के व
रणि श्रे सान छि करणा ॥ अथ वानासि
का की श्राणी तै श्राव श्रांग ल प्रमाण
अतिना तरंग तेज कं ल छि करणा ॥
अथ वानासिका की श्राणी तै दस श्रा
ग ल प्रमाण का लोको यत्ने अति उंते
उदिक तत काल छि करणा ॥ अथ व
नासिका की श्राणी संवारा श्रांग प्र
णपी तरंग प्रथी तत काल छि क
णां ॥ अथ वाकोटि सूरजिका तेज

पूरता है। असमान मां हि तन्निष्ठ करण
असमान मां हि ऊपर की यां तै वारे ह
तार सूरज की करण के ई हजार दे
प्राये। अथ वा ऊपर श्रांगल सत्रा उंच
ने जरा सिका तन्निष्ठ करण। अथ वानि
तरिके श्रांगे गात्मा सौं ना के आकार
प्रथी त त काल निष्ठ करण। ये तन्निष्ठ मां
हे ये क तन्निष्ठ साधी ये। बिन पत्नी त हरि
होया। अंग के सारे रोग दूरि होया। वर
पहजार की उं मरि है। के वत सा स
वगी त जी भ के अण्डे ते जाया। अथ
मे व ऊं तै रे न फल है। तन्निष्ठ अत्र
ल निष्ठ कहते है। मूल क द से ती ब्रह्म रु
ता ई नागी। स्वपे दरंग ब्रह्म रुं इ तां ई।
थे क ब्रह्म ना डी क न क तां तू स मां
को
ति समूरति का ध्यान की यां तै।
महि मां ग्र मां मह सिधि पुर थ
थर है। ये ता ल निष्ठ अथ वानि लाट के ऊं

परि॥ असमानमांहितैसातारेकातेज
यतैसातेजध्यानकीयांतैहोय॥ कोह
याजिबौचीगजचरमबहीरत्रैसेत
नकेरोगनासकंपावैउंमरिवधे॥ ये
तालच्छि॥ अथवाभौहरामांहिवता
ताराकातेजहोयतातरंगध्यानकी
यांतै॥ दुनीयांकौपुरषबलभहोय
वापुरषदेवैतैसारीदुनीकीनिजरि
हीहोय॥ येतालच्छि॥ अंगमांहिनाड
काभेदकहैहै॥ बहत्रहजारता
डीहै॥ तिसहस्रहै॥ नाडीसरेष्टहै॥
तिनकेनांमहैहै॥ ५३॥ पिंगला
साद्वारबहतहै॥ सुषमनांनाडीताल
वामारगब्रह्मरुद्वारबहतीहै॥ अल
बुषमुषमांहिवहतीहै॥ गंधारीहस्र
चक्षुमांहिवहतीहै॥ मुषजास्वासनी
करणमांहिवहतीहै॥ ककुसचालि
गमांहिवहतीहै॥ संघनीमूलद्वारमा
हिवहतीहै॥ येदसनाडीदसंद्वारबह

मां हि बहती है। सो

बहती है। सो वायु सारी नाडी कं सोष
ती है। सो नाडी कं संतापन करती है॥

सो वायु न्नं कं
प्रसूपांणी पीवता है॥ नाग वायु सारे न्नं

मां

हिवहती है। देवदत्त वायुकरण मां हि
वहती है। धनजय वायु सारे अंग मां
हिवहती है। येतालच्छि अबमधिल
छि कहते है। सुषेदरंग अथवा पीत
रंग लातन वरण अथवा अगनिकी सि
षा सारिषा अथवा धुंवां की रेय अथवा
लीला वरण। बीजली के तेजस मां नि
सूरज मंरुत अथवा चंद्र के आकार
ये मध्यतल छि कहते है। ये लच्छि मां हि
मन कामै लजाइ ये मन स्वांति रूप प्र
गट होय पुरुष के सदा आनंद होय।
येतालच्छि असमान मां हितिन के ल
छन कहते है। आकास प्रकास महा आ
कास तत आकास सूरजि आकास वा
रि सीतरि निरमल निराकार कालच्छि
करण। अथवा वा हरि सीतरि कोटि दी
पग होय अथवा उजाल होय। अथवा तत क
प्रकास होय लच्छि करण। येतालच्छि च
कल के अनूक म कहते है। आधार म

लक्ष्मणानचक्राशस्त्रादिष्टानलिंगत्र
स्थानचक्रानानीश्रस्थानमाणिक
पूरचक्रात्र। हिरदैश्रस्थानत्रनहदच
क्राधाकठमधिबिसुधचक्रा५। नौमधि
अग्निचक्रादीसप्तवातालवाचक्रा७।
अष्टमाब्रह्मरंडकीवोरहै। ८। नौमाचक्र
परमसुंयमधि येतालच्छि। आधारकेभेद
कहतेहै। पावकेअंगुठाकेआकारल
च्छिकीयांतैनिजरिथिरहोया। पूजामूल
द्वारपावकीपणी देवैवेतैअग्निअपर
बलहोया। तीजागुदाधारसंकोचकीयं
तैपवनथिरहोय। पुरषमरणानहोय
चोथालिंगमाहिसंकोचनकीयांतैप
च्छिमरुंरुमाहिवजरनाडीहैतिसका
ध्यानकीयांतैमनपवनकासंचारन
होया। संचारनकुवांतैतीनघंटिका
फले। पवनब्रह्मकेवलमाहिसरप्र
रिहोया। तिसतैबीरजअसंश्रंभनहो
या। बीरजअसंश्रंभनकुवांतैपुरष

सदाजोवनरहै॥पंचमांजनाणीश्र
रा॥तहांबंधदीयांतैमलमुत्रकाना
होय॥छठवानाभीधारणीतहांसम
निवायकाश्रन्यासकीयांतै॥श्रनहव
नादऊपजे॥सातवांहिरदाधारतह
प्रांनवायकानिरोधकीयांतै॥छकं
लउरमुषहोयविकारकंपावै॥श्र
ठवांकंठधारबंधदीयांतैइंगलपिंग
लाकापवनधिरहोय॥नोंमाघंटिक
धारतहांजीभकीश्रणीतगायेरही
ये॥तिसकीकलाइंमृतप्रवे॥सोइमृ
तपीयांतैश्रंगमांहिसिधिकासंचार
होय॥दसवांतालवाधार॥तिसमधिवे
दनचालनदोहनकरलविकारकाप्र
वेसकीयांतैतालीलागेग्यारवैजीभ
कैतलेजिभ्यासार॥तहांजीभकेश्र
मैथुनकीयांतैश्रतिमीवास्वादपा
वैस्वादपायेतैकवितगीतगिन्यांन
ऊपजे॥बारवांऊपरिकादोयदंत

मां हि दं धा धारा तिस वौर जी भ की छ
णी न गा ये र ही ये चां पि घ डी छ धी लो
ई रा यी ये तो सारे अंग के रो ग ना स कं
या वौ ते र वां ना सिका धार तिस की छ
णी काल छि करण। इस ल छि की वं तै
नि ज रि थिर हो या। चौ द वां ना सिका मू
ल धारा ल्प्र मणा सरूप छु ठै मह नै प्र
ग ट हो या। प्र ग ट ऊ वां तै डनी के सुरे
बंधन छु ठै। मं ड वां नै धार त हां ति ज
रि थिर रा ये तै करण को टि दे यी ये सो
ल वां ने त्र धार अं गु ली के अंग कर रि
चौ ली यो। चाल ए के अ भ्या स तै जे तै क
डनी मां निते हो य तै तै क नि ज रि थि वौ
दे धें दे धें पुर थ अ व गि न्यां नं इ ताल छि
अ ह्यं ग जोग के वि च्यारि कह तै हौ। मा
या निर मा या अ सा ए प्र। णा यां म प्र ति
हारा। ध्यां न स मा धि कै ल छ न क कह तै हौ
स ति छै इं डी का या ज म धू प्र
क ही यो थै ताल छि कह तै

नीतें हरि रहीये ॥ किसी बसतकी न्य
न करीये ॥ मन का चपलता ना बर
राखीये ॥ येकांत्र रहीये ॥ प्राणी मात्र
संगन करीये ॥ जो कछु वातत परिस
मराखीये ॥ उसताजका वचन विच
ये ॥ मन मां हि ही एतान् प्राणीये ॥ इ
त्न छि ॥ आसणके नेद कहते है ॥ श्रो
ग्रंथ मां हि बो लते है ॥ तिसतें बोलते
नांहीं ॥ प्राण वायु मुसक लि है ॥ पुर
तैसा धीन जाय ॥ तिसतें नां व मात्र क
ते है ॥ प्रतिहार ध्याय मन ये अ करि पहि
म कं राखीये ॥ मन मां हि तेज विकार उ
पजते है ॥ तेपी छै ग्रासीये ॥ अनंत चि
मत्त कारकी बुधि उपजै ॥ ते बुध्य लोक
मां हि गुपतराखीये ॥ ध्यान ब्रह्म तेरे न
तिसतें लहते नांहीं ॥ इत्ता ल छि ॥ पिंरु
हं रुये करूप है ॥ तिस ब्रह्म मंरु मां हि ते
ज पदारथ है ॥ तेते पिंरु मां हि कहते है
पावके अगुठा तलै पाता ल है ॥ पावक

पृथिवीपरिहृतात्तहै। पीठिमांहिती
 नलोकहै। मूलधारपातात्तहै। लिंगभू
 लोकहै। लिंगकेअंगसूरलोकहै। इ
 तात्तच्छि चारिलोकपिठुमांहिहैं। पी
 ठिकामंरुकेअंरुमांहिहृतात्तलोकहै
 पीठिकामंरुकेछेदमांहिजनलोक
 है। मंरुकीनालिमांहितपलोकहै
 डंडकेमूलमांहिसतिलोकहै। ब्रह्मं
 रुमांहिचारिलोकहैं। मीहोतेबीपिं
 डमांहिरहतेहै। इतात्तच्छि। राजजोगी
 केनछुएकहतेहैं। पहलीसाररोगह
 रिहोय। सारीडुनीकूंप्पारोहोया। सारीड
 नीदेखनचाहै। तापीछेसारतत्वगिन्यां
 नउपजे। प्रबकी। तायासमऊँ। तिस
 पीछेबजरदेहहोया। नाहररूपपरधि
 प्रायेनहीं। तिसपीछेभूषप्पाससीत
 उष्मवापुसकूंव्यापेनहीं। तापीछे
 कचबोलेसोसतहोया। किंसतिपडे
 तेअंगकूंज्यांनहींहोया। सारीडुनी

कृनिजरिआगे देवै पवनवेगहोय
 आपणी गंमश्चृष्टि सिधिनोनेधिनजीव
 आयरहे अस्मानमां हि देस देसांमा
 हि आवणो जावणो को बलि होय आ
 फुरे करण हरण का सांमरथा होय
 ये गुर की सेवा का फल है आतम
 हि आपणां मुको मविस रंम कर ॥
 अंछा करे ता पुरषा धरि ॥ इति ३ स्त
 लच्छि जोग सा सत्र ग्रंथ संपूर ॥ अ
 एकं वल नि चार लिख्यते ॥ अब धूजे
 ग अध्यातम सो श्री ये कही ब्रह्म सक
 लमें व्यापक ॥ और न दूजा को ई टेक
 प्रथम कं वल जहां जां नि च न दल ॥
 देव गणो सका वासा छ से जा प ज पी जे
 रिध सिधि परक सा ॥ षट दल कं वल
 ब्रह्मा का वासा ॥ सावत्री संग सेवा ॥ ष
 ट सहं अ जहां जा प ज पी जे इ इ स
 हित सब देवा ॥ २ अष्ट दल कं वल ज
 हां हरि संग ल छमी ॥ ती जा सेवा ग ध व न

प्रवसहंश्रजहांजापजपीजे।मिठिजाय
श्रावगवनां।शहीदसकंकनदंतसिव
कावासा।स्योसकतीजहांसंगा।प्रवसहं
जहांजापजपीजे।निरगुणसुरतिले
गा।धोडसकंकनजहांजीवकावा
।संगतिविद्याजांणथिकसहंश्रजहां
।सैब्रह्मवधांणी।धु।भंव

करमभरमकानासा।हीश्रागेसहंश्र
।प्रडीकंकनश्रनुपा।जिहांकनमले
।जोतिश्रपारा।जोतिसरुप्रसकलघटव
रतै।श्रनषपुरषनिन्यारा।।सुरतिकं
वलपरिसतगुरबोले।जापजपीजेसोई
है।कीसहजारकीश्रकैश्रजपा।क
कबीरबूकेविरलाकोई।ठा।सरो।।
कंकनदंतन्यारा।जहांबसैगुणप
हारे।मनडवारप्रपतरसजहांबसै
भनवारे।शिनानकंकनदंतश्र

जहां बसे सां पनि। नासते परि उगे सुर
कोटी चंद्र प्रगासे। रहिर दाकं वलदा
दस। जहां बसे श्रात मा राजा। अमी चं
द मन मिले तहां प्रगासा। शं कंठ कं व
ल दल थोड। स जहां बसे सुर सरीरा।
नी। तहां रुघना थका थान चेतो सब
ग्यां नी। ४। भंवर गुफा जहां दोइ दल कं
वल। पर महं स का वा सा। हा ल ह ल
कं त लं क अ संधि पां थडी को कं वल
जहां जोगी को आसना। ५। साध जन इ
सन पावै। आगे सहं श्र द ल तहां फल म
ल बसे। आ प ब से आरा। जोति सरूप
सकल घट बरतै ये कल पुरष है म्पा
रा। ६। आगे तल के पाट बती सदल कं
वलं र मत सिधा उल टं त गंगा पी वल
जोगे सुरं। पर म सुं न्य गर मत सिधां जु
गरं डी यां जोगे सुर पर न्या। स्त्री हे सिद्ध
सकती सूं फेरा। जे मं दल पर धजा क
रु कै। जो मं दल घर मेरा। ७। सब जु ग वि

सतकंबराचलीया॥ नहीकोईजन
सूरा॥ मोहिसतगुरपरनाईया॥ कहैक
बीरजहंचंदनसूराएयासाथी॥ प्रेमपी
यालासुरतिभरि॥ पीवैसंतसुजांन
जुगनजुगनकेसोमतवाले॥ पावैपद
निरबाना॥ शोप्रेसोपीयासोसीनवत
बुधिवंताबहुधीरान्नगमलहरिजि
नकेउवै॥ सतगुरमितिकंबीरा॥ शन्न
प्रसीढीकणिहाकीउफासिकीलिथ्य
ते॥ दोहा॥ कणिहारकडवांभये॥ ज्यो
तरकसकातीरा॥ शब्दबिनाधालीप
डै॥ सतगुरकहैकंबीरा॥ शमेणी॥ का
याछोडिचलेकणिहारा॥ पलापकडे
धरमबटपाडाबैवोगुरुजीलेखसुना
वो॥ तापीचेतुमलोकसिधावो॥ शनरी
यरकंधकैसैकरिजांनो॥ भूलोगुरवा
न्नापन्नभिमांनो॥ चौकैबैवेकंधफु
लाई॥ नरीयरमोरिकरिगफलाई॥ उ
मुजाउवायरुनरीयरफोडालेबावि

नाकसमकाचौरा। तेषाविनां नो हि
निहोर्ष। गुरुसिष्यनाचैहोयकोर्ष। धाम
मै॥ धरमरायत्रैसैंकहै। करुंतुमार
हांनि। चारिपहरिसासतिदेउं। पुनि
तनकीषांनि। ५॥ रमैणी॥ नरगुनीयां
जोगुनकंपावै॥ बंसहेमायाअनिच
हावै॥ मायाजोरिवंससुषपावै॥ आ
सिरवादबंसकोपावै॥ दी। जबजीवन
जमत्रासदिषावै॥ आसिरवादकहां
तवपावै॥ आसिरवादजीवनहींतिरह
मूलतैषबिनअगतिधरिजरही॥ जल
रीयरहमारहाथितैलीन्हां॥ तेषाको
नगुरुतोहिदीन्हां॥ हंसकंगरुतिलक
जोदीन्हां॥ मांसिसिषापनसिरपरैली
न्हां॥ ४॥ करिचोकाहमनरीयरमोर
भावभगतिहमकीन्होभोरा॥ अबप
ऊंचैसत्तलोककूंचीन्हां॥ गुरुसिषाप
नहमकूंदीन्हां॥ ५॥ अरेगरुतुमकबु
नकीन्हां॥ अंधअंधतोहिदछादीना

वे। इत भूत जम अंनि हुलावे ॥ १६ ॥ दो
पीतिलक काल कावांनं ॥ तहं चो क
हे धर मठिकांनं ॥ काम बजर तब जा
नागे नाई ॥ होय असासिक आदि पुरजा
ई १७ ॥ होय असासिक जो अंगल गावे
सो जाग्रत पुनि उष्टक हावे ॥ असासो
ववे करे विचारा ॥ चूर भूत होय सं
सारा ॥ १८ ॥ ताकी काया चूटे नाई ॥ मर
ति अंधा तब छे कै जाई ॥ सब घटरो
क जीव गहिले ही ॥ पकडि जीव ध्रमरा
य कूंदे हा ॥ १९ ॥ तुम संसार के गरु कह
ई पारस कीया बडु त सुष पाई ॥ नो ह
की ज्यो जरे न नाई ॥ नो ह की जो से ज
बेग ई ॥ २० ॥ अ बत न लो ह छुवा जो
आई ॥ छिन न छिन न जो जम जराई ॥
तापी छे पुनि अरक सल गाई ॥ काटि
काटि सब देह जराई ॥ २१ ॥ देषि देषि
अगनि परै मुर जाई ॥ इतनी सासति जी
व कूं की न्हां ॥ सत्रे जनम चामत

समै॥ कहैं कबीर धर्मदास सं॥ दे

समाया रशानो
हजार लौ॥ कंठिहार नका

रध॥ रमेणी॥ नांव अमल
जोर है मतवाला सो कहीये सांचा कं
ठिहारा॥ देह सिध्या मन कपट नहीं क
रिहीं॥ सो कंठिहार जीवलेति रही॥ २५
सबद सरोत्र हिरदै सूचा॥ सो कंठिहार
नगत सूत्रं च॥ कुल करणी कामे देखो

सकोधतरहमा परिहरही॥ सो कंठिहार
अरती करिही॥ जमसंतुनका बकु
तोडै॥ सो कंठिहार नरीयर कूं मो
समै॥ आसणमारि बंस होयवे
वोलीनौ सब सिरभारा कहैं कबीर जव
जांनिहो॥ पड़े बजरकी मारा॥ २६ रमेणी
नांतरि हत शयै कंठिहार॥ सब जीव

नका करै अहारा करै अहार उ
भरिही सो पापी कै सै निसति रही
बहुत भांति करि चोक
णी यां हट वारै लगाई ते लै बसत द
गा पुनि करिही
रिही ॥ ३० ॥ तमै ॥ कहै कबीर धर्म दास
सुं असाहेय कं फि हार ॥ कहा हमार
नां करै ॥ सो अट कै जम हार ॥ शर मेणी
संपूरण ॥ अथ तत बोध लिख्यते ॥ गे
बी गिर नारी धजा धारी ॥ पवन तुरी पला
गांता ॥ आसण मूल सब द कचा बक ॥
लो लगां मदे फेरंता ॥ १ ॥ पांच पची संप
गले चंपी ॥ ती नौं न्यारे रहें वंता ॥ जोग
ण जागी अब तव लागी ॥ सिधु बे राग
गावंता ॥ २ ॥ गंगा जमनां उलटि चहा
चंदरु सूर मिलावंता ॥ अधर धरंता चक
फिरंता ॥ सम करि निरति लगावंता ॥ ३ ॥ च
क वै जोगी सुषम निभोगी ॥ त
वंता ॥ ध्यान निरंत्र आ पा अं ॥ पच्छिम भां

गुणगवन्ता। धांतीन्लोकेनयाउजीयारा
तेतिहीजोतिमिन्नावन्ता। तीनोंलोकन
याउजियारा॥ चोडेचोपडित्पावन्ता॥ १२
वहांथेलेबाजीमनवाराजी॥ जुंगजीते
प्रश्रवन्ता। पांचूंपीरादरीयातीरा। दि
यावूंदसमावन्ता। ईवहांधरनिनगगने
धोसनरजनी। उंसघरथ्यात्मचावन्ता॥
तीनोंपासागुणकादासातेतीसंसारिमि
नावन्ता। उवहांगरजेगिगनोबाजेबेनां॥
प्रकविधिनग्रवसंभ्रवन्ता। पांचूंवाइसह
नसमाई। नसमांतीघरवावन्ता। ईवहां
रबाजेसंभ्रधुनिगांजे। दरीयाप्रा
वा। सेतंधनाफहिरावन्ता। एमूत्नंसव
जोगीनेदागहरीबाणीगावन्ता॥ वहां
बीगरवाहाथैफरवा। चरिनरिप्या
ग्यालासदमतवाल
गोव्दंदापरमानंदा। ततबोधमथिबे

लंता ॥११॥ घणघोरनिसांणी अक थकहा
णी अणभैवांणी गावंता ॥ उलटी बाई
हजसमाई ध्याननिरंतरत्यावंता ॥१२॥
वहां बाजेतूरा बरथेनूरा ॥ सुरलीघोरसु
णावंता ॥ वहां गगनी गाजे नो बति बाजे द
रीया लहरिसमावंता ॥१३॥ सतगुरचंहे
मैतैनांहे ॥ सुरतिशबदमै सुरतिबसवं
ता ॥ वहां अोरनहूजा अ्रातमपूजा ॥ तत
रूपी दरसावंता ॥१४॥ ततपरितता उल
टा मता जोगी छुता बोलंता ॥ जोगेखर
बोलै न्याराथेले ॥ अमृतप्यालापीवंता ॥
१५॥ सबद समालागुरकीनाला अरस
पीयाला ॥ गहरी बांणी बोलंता ॥ बोल
तबांणी उलटापांणी ॥ सुषमनिहोदम
रावंता ॥१६॥ वहां कछनी काछे पात
रिनांचे ॥ बडु बांणी गुणगावंता ॥ वहां
गहरागाजे गुरुविराजे ॥ वाघरचंवर
दुलावंता ॥१७॥ वहां अ्रापाभूलादरी
घाफूला ॥ बडुरिनमही बाणावंता ॥

बीजपानीमोमपिच्छानी॥ गुरगम

रजणं वंता ॥ १८ ॥ दोहा ॥ सबसंतो

रुबीनती ॥ सुनो संतचित्तलाया ॥ अज

रश्मरघरश्नलषकागेबीरहेसमा

था ॥ १९ ॥ इति प्रीतत बोधसंप्रसा ॥ अ

॥ बगं थलिरसते ॥ चोपई ॥ मुक्ति

कैमारगसत गुरवाहा ॥ तालिबकीया

सबदसंगहा ॥ उनसाहिवकौं योजोभ

या ॥ जिनअंछामेती मताउपाया ॥ १० ॥ अ

गमनेदचेलाबतलाया विसचैलापरि

करो गुरुजीवाया ॥ धरतीअसमानकी

नीवबिचारी ॥ जबकौंनसेपंडितकरीअ

पारी ॥ २ ॥ ऊंकारसूँऊ वापेदा ॥ सोणीदोडि

लग्योचोगडदा ॥ पांचततकीमोडजमं

नीनिकसीडनीयांबुगसीपंडी ॥ ३ ॥ गाग

रिफैसौंरवरेषेभाया ॥ जमीमांहिसूँचु

गाउपाया ॥ चंदरुस्तरजऊँऊँमसूँवा

नेराष्यारहेप्रतिनहींहाले ॥ ४ ॥ उनयेर

काउजीरो ॥ आदिहजरी ॥

कवीर

लंता ॥११॥ घणघोरनिसांणी अकथकह
णी अणभैवांणी गावंता ॥ उलटी बाई
हजसमाई ध्याननिरंतरत्यावंता ॥१२॥
वहां बाजेतूरा बरयेनूरा ॥ मुरलीघोरसु
णावंता ॥ वहां गगनी गाजे नो बतिवाजे द
रीया लहरिसमावंता ॥१३॥ सतगुरचंहे
मैतैनांहे ॥ सुरतिशब्दमें सुरतिबसवं
ता ॥ वहां अोर नहजा अ्रातमपूजा ॥ तत
रूपी दरसावंता ॥१४॥ ततपरितता उल
टा मता जोगी छुता बोलंता ॥ जोगेश्वर
बोलै न्यारा येले ॥ अमृतप्याला पीवंता ॥
१५॥ सबद समाला गुरकीनाला अरस
पीयांला ॥ गहरी बांणी बोलंता ॥ बोल
तबांणी उलटा पांणी ॥ सुप्रमनिहोदस
रावंता ॥१६॥ वहां कछनी काछे पात
रिनांचे ॥ बडु बांणी गुण गावंता ॥ वहां
गहरा गाजे गुरु विराजे ॥ वाघरचंवर
हुलावंता ॥१७॥ वहां अ्रा पाभूलादरी
घाफूला ॥ बडुरिनमही बाणांवंता ॥

गोबी

मरुजणं वंता ॥ १८ ॥ दोहा ॥ सब संता
सूबी नती ॥ सुनो संत

इति श्रुत त बोध सं पूरण

तिर्यक्ते ॥ चौपई

गुरगढाता निबकीया

म

छाया धरती न्नसमानक

दा ॥ पांचतलकी मोडजमा

मीनिक सीडिनीयां बुगसीपंडी ॥ ३ ॥ गाग
रिऊ सैरि वरवै नाया ॥ जमी माहि सुंचु
गाउपाया ॥ चंदरुस्तरुज ऊकूमस्त्रवा

काउजीरो

कबीर

नांमनवृजे॥ श्रेसीडनीयांहीयाकीफ
टी॥साधांसेतीडोलेरूठी॥१८॥दोहा॥
पातसाहरूग्याक्याकरेसी॥क्याकर
सीसंसार॥रचनेहारायेकहे॥जिनक
सबबिसतार॥१९॥चौपई॥धीरजडि
ठकरिराषोभाया॥गुरसंपरंपरगट
पाया॥परचापायडिगोमतिकोई॥हो
सीजोगबिजोगनहोई॥२०॥दोहा॥क
हमडरबासाकासिधहै॥सतगुरका
हेदासजाकाछिपायाकबरहै॥जिन
दरस्याबंदीबिलास॥२१॥चौपई॥दर
साकै॥जरजोधनगावै॥सतगुरचरन
जुगांजुगपावै॥सतकासबदाजेनरबे
ध्या॥बेध्याजिनैकुंबधिकुंवेध्या॥२२॥
दोहा॥देवनकुंपथरकरिदेषो॥त
रथदेषोपांण॥जिनकुंसतगुरपूराप
या॥अननैभगतिपछानी॥२३॥अन
नैनेदकौंनसंकहीये॥हेकोइचतु
रबिबेष्ठी॥कहेकवीरगुरदीयापलीत

फलविरलां देषीः रथा इति श्रुते
रथसंप्रणाः ॥ अथ का फर दोष
व्यते ॥ अकलिपीरहे मनसुरी
॥ तनसही देहे ॥ असलिंगजा हे वि
सघाती दो जग हे ॥ ही मतिक ते
॥ गुसाहरा महे ॥ निससेतां न हे ॥
॥ तवे गुलां महे ॥ असीत्न जा दे कुं
महे ॥ नेकी नां मति हे ॥ बदी कुची
॥ मंदिल पाक हे ॥ सिंघ दिल ना पा
हे वां न हे ॥ बेहर सत्रो
॥ गा फल हे ॥ शुदी शु मर हे ॥
॥ त हे ॥ मुसल मां

स्त हे ॥ शोह दो जग हे ॥ हिल महल हे जो
री जुल म हे ॥ आसा पर बेसा हे ॥ ज्यां न म
॥ त हे ॥ दिल महरा व हे ॥ अोर व के क
ल मा संग ति हे ॥ पेकं मर करी बंद गी ॥
ता सूर्या ई सिप ति हे ॥ अली मह मंद हे
अला बेह द हे

धम तो मूल बंध। दुतीये नंगो र बंध
त्रितीये क म रे बंध। चौथे दिवाल बंध
पांचवे ना ल बंध। ये ते क बंध सब दी
पावती बो लीये। अहं
जा का ने द बिर ले पाया। म का का स मे
ल म दी नां व सा या। श्रु नी महं म द बु ल
ष का पा त स्पा बू फि व त ला या। तुर क
की का टी च म डी। ही हु के फा डे कां त
बो ल न हारा ही हु न मु स ल मां न। ही हु
पू जा दे हरा। मु स ल मां न मह जी द। क
हे क बी र ह म तु म जिं द फ की र। रे व ब
उ स कूं पू जै ज हां दो ऊ की पर ती ति। इ
ति श्री का फ र बो ध संपूर्णः॥ अथ ब्र
ह्म ग्यां न लि ख्यते॥ परा प सं ती म धि म
बे ष री च्छा रि बां णी॥ परा को ना भी अ स
थ्यां न। प सं ती को हिर दै अ स्थां न। म धि
मा को कं व अ स्थां न। बे ष री को हो व
स्थां न। परा को स्पां म व र ण। प सं ती को
र ग त व र ण। म धि मां को पी त व र ण। वे

गीकोलीलवरणावेदसबदकी
रीवांणी॥सोहंसबदकीमधिमाबं
नहदसबदकीपसंतीबांणीसा
दकीपराबांणी॥तूपद॥तत्तपद॥
पद॥परमपद॥तूपदमाया॥तत्तप
व॥त्रैसीपदब्रह्मा॥परमपदअस्थ
ल्लिंगाकात्रा॥ईशुरा॥हरणागरम॥अ
व्याकरता॥अष्टगगनिकेऊपरै॥परम
तपरमानंदा॥अचित्तगगनिकं॥जोकेत
गी॥अपनगंदसुगंदरूपअचंतागगनि
समानेनिराकारतासंगोष्टि॥अग्रप्रग
यो॥कोईकजांणोसंतागगनिसमानेगु
रुहे॥उदीपजांणो॥देहीमहततवरणार
हो॥जीवघरतकंजांणि॥बाससरूपी
ब्रह्महे॥मायाअच्छिपिछांनि॥कोटक
यामेंकालहे॥देधोब्रह्मविचारि॥कहेक
वीरअग्रपुरुषकाअसको॥विरत्ताजांणो
नेवा॥महततविराजेऊपरै॥पऊंचैगोको
इदेवा॥इतिश्रीब्रह्मग्यानसंप्रणाम॥अष्ट

चौदा इंद्रि को विचार लिख्यते ॥ पां
चू नूत परपंच ॥ पांच तन मात्रा भना
पांच ग्यान इंद्रि ॥ पांच करम इंद्रि तज
नीजे ॥ चतुष्टयंत्र करण इंद्रि ॥ अक्षर
अक्षर अक्षर ॥ जीव पुरुष पांच
सर्वो ॥ तन वात ति कुं लोक मे ॥ योजिस
दा षट् बीस उम्हा विष्णु ॥ पांच ग्यान इं
द्रि ॥ पांच कर्म इंद्रि ॥ प्रथम तुचा ॥ हसै
चतु ॥ त्रितीये घराना ॥ चतुरथी रसना
पंच नो सरोत्र ॥ तुचा इंद्रि के देवता वा
बोलीये सार स रूपी ॥ इतीये चतु इं
द्रि के देवात्ता सूरज बोलीये तेज सरु
पा ॥ त्रितीये घराना इंद्रि के देवता ॥ अक्ष
नी कुं वार बोलीये सुगंध सरु रूपी ॥ चतु
रथी रसना इंद्रि के देवता ब्रह्म बोलीये
स्वाद सरु रूपी ॥ पांच इंद्रि सरोत्र इंद्रि के दे
वता ॥ दरगदिसा बोलीये सब द सरु रूपी
इती पांच ग्यान इंद्रि ॥ वाकि इंद्रि के दे
वता इंद्रि ^{वाचा} अक्षर अक्षर हृद सरु रूपी ॥ पांच इंद्रि के
अगति

देवता इंद्रवरदासरूपी ॥ शशिहा इंद्र
के देवता जेमकालसरूपी ॥ शोषो व
२२ के देवता कुरमभारसरूपी ॥ धा
उपस्थ इंद्र के देवता दक्षपरजापति
श्रीमन इंद्र

के देवता चंद्रमा वृं कसरूपी ॥ बुद्धि
२ ॥ सावेदसरूपी ॥ शक्ति
त इंद्र के देवता विष्णु ब्रह्म गंत सरू
पी ॥ शत्रुहंकार इंद्र के देवता रुद्रज्व
लासरूपी ॥ धा इती चोदा इंद्र ॥ सा श्री ॥ क
बीर कौण सबद का मुख है ॥ कौन सब
दकी न्युं प्रिया ॥ कौन सबद का ध्यान है
कौन सबद की साधि ॥ ब्रह्म सबद

दका ध्यान है ॥ कब
बद कौन का पुत्र है ॥ कौन माय न एं
जे ॥ पंक्ति करो विचार ॥ इनका अर्थ
करीजे ॥ सबद सबद सबको कहे ॥ बिना
पिता नही कोय ॥ बिना पिताजे ऊपजे

चौदाइं डीको विचारति स्थिति ॥ प
 चूं नूतपरपंचा ॥ पांचतनमात्रा भन
 पांचपांनइं डी ॥ पांचकरमइं डी न
 नीजे ॥ चतुष्टयंत्रतकरणइं डी ॥ मन
 अक्षितरहंकार ॥ जीवपुरषपच
 सर्वौ ॥ ततवातति कुं लोकमै ॥ योजि
 दा षटबीसउमहाविष्णु ॥ पांचपांन
 डी ॥ पांचकर्मइं डी ॥ प्रथमतुचा ॥ हस
 चतु ॥ त्रितीयेघरांन ॥ चतुरथीरसन
 पं वनोसरोत्र ॥ तुचाइं डीके देवतावा
 बोलीयेस परसरूपी ॥ इतीयेचतु
 डीके देवात्ता सूरजबोलीयेतेजसर
 पी ॥ त्रितीयेघरांणइं डीके देवता ॥ अ
 नीकुं वारबोलीयेसुगंधसरूपी ॥ च
 रथीरसनांइं डीके देवताबेइं बोलीये
 स्वादसरूपी ॥ पांचइंसरोतरइं डीके
 वता ॥ दरगदिसाबोलीयेसबदसरूपी
 इतीपांचपांनइं डी ॥ वाकिइं डीके दे
 वताइं डी ^{बाचा} चतुरत्रनहदसरूपी ॥ पांनइं डीके
 अगति

देवता इंद्र वरदा सरूपी शंभु इंद्र
के देवता जम काल सरूपी शंभु पाच
इंद्र के देवता कुंभार सरूपी ४॥
उपस्थ इंद्र के देवता दक्ष परजापति
वेद सरूपी ५॥ इती क्रम इंद्र मंन इंद्र
के देवता चंद्रमा जं क सरूपी बुध
इंद्र के देवता ब्रह्मा वेद सरूपी रश्मि
त इंद्र के देवता विष्णु ब्रह्म त सरू
पी शंभु हंकार इंद्र के देवता इंद्र च
ला सरूपी ६॥ इती चौदा इंद्र साथी क
बीर कौण सबद का मुख है कौन सब
द का श्रंथि कौन सबद का ध्यान है
कौन सबद की साथि ब्रह्म सबद का
मुख है सुरति सबद है श्रंथि गणेश
द का ध्यान है कबीर सबद की साथि स
बद कौन का पुत्र है कौन माय नदी
जो पंक्ति करो विचार इनका श्रु
करी जो सबद सबद सबको कहें वि
पिता नहीं कोया विना पिता जे ऊपजे

तो तारयां करि जो प्रसवदके पित्तज
ति मय बाय है पुत्र नये प्रकार एव
सबद पर थी चले ॥ येक सब दरं क
रं रं कार विरला ल है ॥ यो बाय क सब
संसार ॥ तीन गगनि बै कूं व है ॥ दोय जल
मधि निवास ॥ पांच भौं म बै कूं व ॥ इक
घट अंतर बास ॥ बीस पर चौ बीस क
वीर पूरी आस ॥ साध संगति बै कूं व प
दा ॥ अ नै लोक अ मरापुरी सं पूरा ॥
य व सि छ जी की जो छि लि ख्य ते ॥ क
रमी जी सु नौं नु प दे सा ॥ करमी जी व काल
कर भे सा ॥ गुरु ब सि छ राम के ने हा ॥ तुम सौ
श्रुं श्रुं स ने हा ॥ १ ॥ गुरु ब सि छ रि ष न के
रा ऊ ॥ मो हितु म बो लो स ति सु भा ऊ ॥ मो
सुं नै द धरो जि न गो र्श ॥ कै सै मु क्ति जी व क
गो र्श ॥ नी म धार बै वे अ स्था नां ॥ मो सुं क
स ति नि र बां नां ॥ रां म चं द्र त्रि भ व न के
ता के प्र भु तु म गुरु क हा जी ॥ ३ ॥ व ता त्रै के
अ च न सु ना य ऊ ॥ कौं न भे द तु म ता हिल

।यद्वा।सोमोहिनेर्दकहोसमकोडीजी
।नमुक्तिकोनविधिपाडी।धारांमचंद्र
वेबलदाता।ताकेप्रभुतुमगुरुविधा
।।श्रदिश्रंतजो।जोतकुबाता।तुमको
वृक्षसतिमुहाता।।श्रसतजुगसतिगहेस
वकोडी।ऊंचनीचजेतानरलोडी।पडमी
नग्रकहीएश्रानंदातिहांवहांवसेराव
हरिचंदा।।सतिवचनवननंहुंसनलावा
सतकुमावनकालकहांतेश्रावा।गहेस
तिवेसदानरेसा।कीन्होंकालविप्रकोने
सा।।गुरुवसिष्टतुमरिवनकेनेहा।।स
कालकेनंजुगएहानृपतिहरचंद्रस
तंजुगमेंराजा।वेनितिकरेसतिकोका
जा।।ताकेछलनकालेंतेश्रावा।।क
होकोनश्रोगुनेतंसतकुडावा।गहेसत
दासदानरेसा।कीकोदालविप्रकोने
ता।।करेमहनतीमसकतिलेई।उदि
मकरायै।।पिहोहा।।कंहानिमतवेसत
कुडावे।कालकविनविकरारा।गुरुव

सिद्धरिषभायिङ्ग। सोधूकौनविचारा॥
१०॥ चोपड़ी। रामरामसतितिसुमरहीजा
नी सतचुडावनकालबलगानी। नृप
तिहरचंद्रपापनही। भावा। काहेका
रनकालसतचुडावामश्रावा। नृपति
हरचंद्रसतिकरिनेहा। नरमतकाल
दुषदेतहेदेहा। श्रो गुनकी नहरामदर
बारा। तातैनृपतिसहेदुषभारा। १३।
रामकाजकी नृचतुराई। तातैकाल
वगै। तिंहिजाई रामजांनेंविनकाल
वगैसंसारा। कासिबकावैनृपतिके
कठमपरिवारा। १४। तुनिद्रववाच
हेरिषरावकहो नलबानी। कालवगै
कौनश्रो गुनजांनी। मोतैकहोसतिसो
भेवा। तुमगुररामचंद्रकेदेवा। १५। रा
मरामनितनृपतिपुकारा। तेऊतैकाल
नयेअधिकारा। वैतो कहे रामकीवा
नी। कालभरावेडूंमघरपांनी। १६।
कहोवासिद्धभेदनिजसोश्रीसेयेराम

यह फल होई ॥ महि माराम कहौ अ
 धिकारी ॥ तेही सेवत मन भय उ सु
 वारी ॥ १७ ॥ सेवत राम यह फल पाव
 नरपति नरिले हाटि बिकावा ॥ राम
 सेवतें होय अरु सहात्नाराम हीतें जोर
 वर काना ॥ १८ ॥ एनि जनेद कहोरि धरा
 उ ॥ राम चंद्र कौ को निरमा उ ॥ राम चंद्र
 प्रकै तुम गुर देवा कौ न सष्ट समकै
 यो नेवा ॥ १९ ॥ सुदिन लगनि धरि व्याह
 कराय ॥ सुदिन सनेह मंत्र समकाय
 ॥ २० ॥ अंगुन कौ न बैनै गय उ ॥ सीतां सा
 थि वियोगी नय उ ॥ २१ ॥ लंका पति जो
 कही ये नरे सा ॥ राम वन कीयो मग को ने
 पा ॥ कनक देह न बन वन वय उ ॥ राम
 वंद प्रभु लिवन गय उ ॥ २२ ॥ राम ही होते
 हरता अपातो नही जाते मग के सा
 या ॥ राम ही होते मुक्ति के मूला ॥ तो नही
 ॥ २३ ॥ मग वन भूला ॥ २४ ॥ कौ न मंत्र तु
 राही दी नहा ॥ काया कनक मग

चीन्हें॥ माया म्रगको मरमनजांनो॥ त
के गुहनरांमभूलांनो॥ २३॥ वैनही हो
हि मुक्ति के दाता॥ विन चीन्हें जग
हे विधाता॥ बंधो राम माया की डोरी
रावन श्राय सीया की चोरी॥ २४॥ ल
च्छिमन रेखा धरती दीन्हें॥ चोकी सद
सीया की कीकां॥ सीया बचन चित
मांनि कुमोरा॥ शष्टपेलि किन करि कु
मोरा॥ २५॥ रेखा पार पाव किं धरि कु
माया कहन जेल पुनि परि कु॥ रावन
म्रग माया करि नयनी रांम चंद्र ते
ही गुहन गयनी॥ २६॥ सीता एक बच
नहुनि लै रेखा परै पाव किन धरि कु
कहि कै बचन रांम बचन गयनी॥ राव
न दुष्ट प्रगट्ट हांन येनी॥ २७॥ सिधा
पन बचन मांनि नही लीन्हें॥ रेखा ज
परि पाव जिन दीकां॥ रावन सीया ल
कले गयनी॥ श्रे गुन कौन कर मयत
नयनी॥ २८॥ लच्छिमन रेखा लषी विवे

मां रां वन उलंघ्य रां कसके नही रेखा
 अपेलिके बाहरि नयती रावनता
 इलंक ले गयती ॥ राण कौन सब दरा
 ही सम जाय कु रावन के र भेद नहं
 पा कु ॥ यह रिष भेद सुना वो मोही ॥ ग म
 करे काल नही होई ॥ ३० ॥ ये निज ने
 सोहि सम जाय कु ॥ रां मचंद्र के पुत्र
 रुक हाव कु ॥ गुरु बसिष्ठ तुम रिष
 नेही ॥ रां मचंद्र धरी यादिक देही
 ॥ आदि गुप्त इंद्र यां सो नही कहावा ॥

मां या म्रग भूत नहं
 रिष कर भे
 ॥ ३२ ॥
 हां ॥ गुरु वासिष्ठ तुम पंक्ति ॥ सुदिन
 लै दीन्ह कनक म्रगराम वन भू
 ॥ ३३ ॥
 प्रउवाच बो लो साहिब सति तुम जां

वञ्जवत्तार नयेयेही लेषा ॥ आदि सनेही
नेदनपया ॥ ३४ ॥ आदि निरंजन निरगुन
देवा इनकी करै सर्व मिलि सेवा ॥ ती नले
कपुनि इनते नयनी ॥ नोञ्जवत्तार इनही
जोठयर्थ ३५ ॥ आदि निरंजन निरगुन
रा ताहीते नयो सब व्योहारा ॥ सवाला
जीव करै अहारा ॥ उतिपतिपरलै रचने
हारा ३६ ॥ सोहसरा निज कहीये विधात
सोप्रभु कहीये मुक्ति के दाता ॥ जोति
रूप सकल सब ताया ॥ नोञ्जोतार इनै
रचिराया ३७ ॥ सोप्रभु निरगुन आदि
हमारा सरगुन कहीये नोञ्जोतारा ॥ हो
निरगुन नोम निरंजन ॥ जाका सक
लपसार गणगुंइ फ मुनि सुमरिही ॥
सो निजनां हहमार ३८ ॥ चोपुई ॥ गति
गुरु बसिष्ट मुनौ वचन बिलो
ई निरंजन नोही निरगुन होई ॥ जोयेही
ते मुक्ति के दाता ॥ सवालष जीव कर
ते नही घाता ३९ ॥ जुगमें निरगुन पव

नकहावै॥ताकीदेहदिसृष्टनहींश्रावै
निरगुनपवनजुगमांहिसनेही॥जा
कीचलतनदीसेदेही॥४०॥निरगुन
कहीयेनीरकरिअंगा॥उपजनिवि
नसनताकेसंगा॥मनकीश्राससकं
तघटनेहा॥मनकीचलतनदीसेदे
हा॥४१॥होहा॥मनकंचलतनदेवीये
तीनलोकफिरिश्रावै॥मनकोनेदनज
नहीं॥करैकलेजेघावा॥४२॥जोपई॥
मनहैतीनलोकमैराजा॥मनप्ररतहैस
बकेकाजा॥मनहींजांनितपसाधेकोई
तीनलोकमैराजाहोई॥४३॥मनकंसोध
तपहोईभाई॥तपसाधेबिनराजनपाई
मनसाधेतैहोयतपसाजा॥बुकरिजन
मघरपावैराजा॥४४॥तपसाधेउपजेब
डरंगा॥कोमनिकनकतुरीबडसंगा॥
राजजनमहोयहैअहंकारा॥तुरीतेज
बनषेनहीसिकारा॥४५॥होहा॥तुरी
चैमनहरषहोयाबिन

कागखांनजुगजनमले। नरघनकरैश्च
हार॥४६॥ तैप्रतपस्यासाधिकै॥ निपट
करैश्चहंकार। जाकोकीयो निरंजनां॥
सोतोपुखनिन्यार। ४७॥ चोपई॥ जुग
मेंकहीयेनिरंजनभारा। सवालाषजी
वकरहीश्चहारा॥ चारिवेदकीन्हंशि
संतारा॥ इनहोरचेननुंश्चवतारा॥४८॥
जोत्तिसरूपरच्योइनदेवा॥ गनगंडक
मुनित्मावहीसेवा॥ तीरथवरतजुगस
कल्पसारा॥ इनरंगभूलेसबसंसार
४९॥ तुलाचढायदेयबडदांनां॥ जन
मधरिंधरिलेहीनिधांनां॥ आवागवन
रहेउरफाई॥ उपजतबिनसतपरेनु
लाई॥ ५०॥ देवेदांनदांनपुनिपावैर
हतिघरकदेनहीजावै॥ फिरिफिरि
गरभवासमेंआवै॥ नरश्चघोरसदान
रमावै॥ ५१॥ चोह॥ गरवासचूटेनही॥
मुनौंवसिद्यचित्तर्षय। जिनप्रनुरच्यो
निरंजनां ताहिनिजोतुमध्याय। ५२॥ चो

ईतहांकेसंबदगहोचितजांती॥
तोसागरतैचूटेप्रांती॥तपसाधेंज
नमधरैकाया॥जनमलेतचौरासी
धाय॥५३॥शोरबचनसुनोरिषराउ
मेंतोबोलैसतिसुभाउ॥तीनलोक
कहीयेसंसार॥घरघरदीपगहोय
उजियारा॥५४॥ऊंचनीचकहीयेन
रलोईदीपगवारि॥रहैसबकोईघ
रघरहोतिजोतिउजियारा॥प्रीतिनेह
बरेसंसार॥५५॥कितहोयकांमनि
छिमांकराई॥कितहोयदीपगघरकं
जाई॥ताकेकऊंनेदसमजाई॥दीप
गजोतिकहांधुजाई॥५६॥ताहिजोति
कोकहांहेबासा॥सोमोहिनेदकहो
रगासा॥कौंनसोमंदेत्तकौंनग्रांमा॥ज
बहांजोतिकरैबिसप्रांमा॥५७॥कै
नपवनकामंदिलछाये॥कौंनपवन
चदिघरकंजाये॥कौंनजतनतहांठ
हराये॥कहोबसिष्टमोहिसमजाये॥

५६॥ दीपकजोतितहांपरगासा॥ ती
तदीपगमैवासा॥ न्यमजजीवकर
हेभंगा॥ जायपड॥ तहैंताकेसंगा॥
पंछीजीवदेषिजोपावे॥ फुलासप
नसंगताहिजरावे॥ त्रैसालच्छिनव
लसुभाजी॥ कैसैजीवतहांमुकता
६०॥ सोवसिष्टनाथऊसमजाई॥ वे
सैजमतेजीवबुडाईदोहा॥ रिवव
ष्टजोजांनहू॥ कहोभेदसमजाय॥
वतुमबां॥ चऊकालसं॥ चलोनि
नवजाय॥ ६१॥ चोपई॥ वसिष्टगु
च॥ एसतगुरलख्योनहींजाई॥ सोधुज
तिकहांवहराई॥ प्रांनश्रातमाकोगु
रपाजी॥ दीपगजोतितहांवहराजी॥ ६२
कौनसोदेसकहांधूजाई॥ येकबु
दलिष्योनहींजाई॥ हेसाहिवतुमकी
नवषांनां॥ त्रैसोपानसुमौनहींकांन
६३॥ दोहा॥ दीपगजोतिअरुश्रातमा॥
नांजांनूंकहांजाय॥ तुमसाहिवजोभा

धृष्टा दीपक ज्योति तहां परगासा
तदीपगमैवासा ॥ ३ ॥
हे भंगा जाय पड तहें ताके संग ॥ ४ ॥
पंढी जीव देखि जो पावै
नसंगता हि जरावै ॥ ५ ॥
लसुभाजी कैसै जीवतहां मुक
ई ॥ सो वसिष्ठ नाथ ऊ समजाई
सै जमतै जीव बुडाई हो हारि
वृजो जानू कहो नेद समजाय
वतुमबां चऊकालसं ॥
नवजाय ॥ ६ ॥ चोपई ॥ वसि ॥ ७ ॥
॥ एस तगुरत लख्यो नही जाई
तिकहां वहराई ॥ प्रांन
रपाजी दीपग ज्योति तहां वहराजी
कौन सो देखक हां धूजाई
दल्लिख्यो नही जाई
नवषांनां ॥ ८ ॥ सो पांन सुन्यो नही कां
ई ॥ ९ ॥ दीपग ज्योति अरु
नां जानूंक हां जाय ॥ तुमसा हि वजो

प्रकृत तैत्तरीयं ध्याया ॥ ६४ ॥ चोप ई ॥
मुनि ई उवाच हमरो क हो जो मानि
हो देवा तो नित सुमरो सत गुरु सेवा ॥
जोति सरूप कहै संसारा ॥ जोति सरूपी
काल बट पारा ॥ ६५ ॥ जोति सरूपी कहै
सब को ई जा को मर मन जाने लो ई ॥
जोति सरूप काल होय भा ई चौरा सी
लखि जीवन कौ वा ई ॥ ६६ ॥ धरती मा
हि जोय हस मानां ॥ सब कौ मारि करे
पिस मानां ॥ अग निरूपये कहै धरा
सब कौ जारत हे चारा ॥ ६७ ॥ धरती बस
लखि दोय धर ई सूनी देह क हा बल क
र ई तन त्यागि र निरंजन कर ई प्रीगे जो
य जो देह धरा ई ॥ ६८ ॥ सूने घर वह जाय
समा ई वास करे अरु देह मुला ई ॥ जारे
बिना रहने जो पावे ॥ तहां तहां तै उचि उ
विधावे ॥ ६९ ॥ पांच तत काया को वासा
ताचे टित हां करे परगासा ॥ जल तै तसे
ग जोति समा ई जल के जीवमें जाय हे भा

७०॥ आकासततमेंतजैजोदेहा॥ तार
नमेंज्यायउरेहा॥ वायुततमेंतजैजे
ईबनबृहस्पैरहैसमाई॥ ७१॥ तेजत
मेंकरेपयांनो॥ वजरसितामेंज्याय
मांनो॥ धरतीततमेंदेहजबजावै॥ ध
तीजीवनमेंजायसमावै॥ ७२॥ पांच
तततुमनेदबिचारा॥ तबसोजांनि
होसैदहमारा॥ गणगंडफमुनिजुग
जांनो॥ सबकेघटमेंकालसमांनो॥ ७
३॥ कहैबसिष्टनेदनिरवांनो॥ राम
इकेतुमगुरजांनो॥ कौननीरसंगपच
नब्रषांनी॥ जातेनयेपथरजुतपांनी
७४॥ पाथरजनमकहांधुनयनीकौ
नभांतिपाथरनिरमयनी॥ नपज्योपा
थरकौनैसांचा॥ कौनअंगतानीतरि
नांचा॥ ७५॥ वैसंदरदूतबसेतामही
ताकोभायूंनेदजोसही॥ चकमकते
जोमारैजांनी॥ निकसेअगनिमहाबि
षषांनी॥ ७६॥ तालोहाकोअत्रघडा

वातबसोपाधरदेवकहावावे
 संहरइतबसेबटपाडानरभाये
 गोविंदहमारा॥७७॥पूजेमतिकेहीन
 गवारा॥अगेजनमभूतबटपारा
 दोहासुनिबसिष्टरिथेभोरमतादोष
 परेतोहिजांनिसबअपराधतोहिसि
 राधोयेजावकीहांनिषठाचोपडी॥रि
 अउवाचसुनुहोस्वामीअपराधसब
 जाडी॥सुनसपुरांसदाचितलाडीग
 उदांसअरुकेचनदीजे॥जमकूंमारि
 हरिकरिदीजे॥७८॥नोजनकरावैस
 बबिप्रनअानी॥तबअपराधहोयस
 बहांनी॥५बदानअरुहस्तीघोरा॥मा
 याभोगजाकेजसजोरा॥६॥करिअस
 नानदेवकीपूजा॥तनअपराधरहेन
 हीपूजा॥धोतीपहरिजनेउकोधोकर
 मजकालरहेनहीरोधो॥७॥मूरतिपूजि
 दछिनोदेई॥बिप्रनपुनिअसिकालेई
 दोहातबदूचेअपराधस

करमकटाय चिमादयापुरांनसुति
 कबडनजमसाय। ८२। चौपई। सुनि
 सुनुब सिष्टक हंसमफ
 सुनतपुरांनदयाठहराई। सुनतपुरा
 नदयादित्तजांनी। कबडनहोतजी
 वकीहांनी। ८३। सुनतपुरांनदयादि
 लश्राई। उत्तमजनमबैविकैपाईमु
 कतिपंथइरिहैदेसा। तहांकरैजो
 कोईसंदेसा। ८४। तबहोयताहिजी
 वकरकाजा। जबकुलकरममिटा
 वेलाजा। सुमरेनामनहश्चरजांनी
 तातेंहोयकरमकीहांनी। ८५। बिन
 जिम्मावहवेदउचारा। तबजीवनत
 रेभोजत्तपारा। सनैपुरांनजोअतिवि
 तनाई। ता... तइरिहोयभाई।
 ८६। ... गैकरही। जीव
 कीदद... ही। सुनतपुरांन
 जीवकुं... रनरकमेंडा
 रा। ८७। मा... पोपावे। जन

। तं उच्यते निष्ठां च
छिवावो ॥ ८ ॥ गं वं धं न सो पुरा न जो
सुनही ॥ सिव सक्ती लेनां मं उ च र ही ॥
जज्ञ करत जीव मारे जानी ॥ को टि ज
नम परे नरक की घानी ॥ ८ ॥ ए ॥ जीव म
कर घट होय

नो जनैक
राव ही ॥ जीव मारि अरु हर ब ड ल्मा व
ही ॥ ए ॥ जीव मारि निष्ठ न जिन की न्ह
त्रे सा ह वा ल पु नि ता को दी न्ह ॥ जीव
मारि जीव ज स ले ही ॥ मूल न ब्या जन ही
ठ ह रे ही ॥ ए ॥ जीव मारि नो जन जिन पा
वां सा वि सा वि वो ल पु नि ता सि र ल्मा व
जीव मारे अरु सुने पुरा नां ॥ ता घ व स द
का ल त्रे स्थानां ॥ ए ॥ सुने पुरा न ग्पा न वं

त्यागो नो गुणैर्विषयाही घटजागो सुन
तपुरां नवगबंधनकी न्हां बोलेवे
ले पुनिताहि कूं दी न्हां ॥ ए ४ ॥ ज बज
वल्लहरिपानकी श्रां वै ॥ कालगर
धूरि बफ बहा वै ॥ जज्ञपुरां नजाके प
ठिक हा वै ॥ ताके घटमें दयानही श्रा
वै ॥ ए ५ ॥ सुनौ ब सिष्ट तुम रिषसनेही
श्रायधरी तुमतपकी देही ॥ सुमति स
नाव कुमति ले डारी ॥
रदेधारी ॥ ए ६ ॥ जुग हजा रचो कडी
नी बीजसरूपी सबको ५ जां नां सब
सनेही को ५ को ५ मां नां ॥ ए ७ ॥ हो हा
इतनां जुग मोहि वीति या ॥ को ५ सब
दनही जां नि ॥ श्रादि श्रंत जां नै विनां
पहुे काल की यां नि ॥ ए ८ ॥ ज सिष्ट
उवाचा ॥ चौ पई ॥ तुम हो पूरण पुर
पुरां नां ॥ सैन तुमूरी को ई नही जां नां
के तेरां मरु ह्य हो य गय नी के तारा वन
लंका नय नी ॥ ए ९ ॥ के ते ब्रह्मा विष्णु च

गयर्डीकेतेसंकरगनपतिभयर्डी॥
केतेभयेदेवगणभारी॥केतेचंद्रसूर
रविसंतारी॥१००॥वीतेचोकडीसर्व

कजुगसकलजुगठयर्डी॥गनगंड्रफ
देवसबभयर्डी॥१०१॥दोहाजोतुमपुर
षपुरानहैगउतिपनसबकहदेवी॥आ
दिअंतसंबभायिर्डी॥योजससबतुमले
र्डी॥१०२॥मुनिंद्रउवाचा॥चोपई॥सुनुं
बसिष्टमैकहूँबिचारी॥जुगकीकथा
कहूँनिवारी॥चंद्रसूरधरतीअसमानो
पाणीपवनसंकलअस्थानो॥१०३॥आ
दिअंतघटअंतरजांनो॥जांपरसंकलदे
वअनमानो॥जुगसमानरोमकहूँचंति
गयर्डीकेतेरावनलंकाभयर्डी॥१०४॥त्रै
संजीवनतपबलठयर्डी॥तपसाधतन
रकमैगयर्डी॥मुकतिसंदेसनपूछेलोई
जमकीघातमरैसबकोई॥१०५॥ब्रह्मा
दिगयेअनेकनदेवा॥एसबकरैकाल

की सेवा विष्णुने कहे सैं चत्विग्य
उ मुक्ति काज का हुके न भयनी ॥ १०६ ॥
कहीये रिय महश्रुत्वासी मरिमरि
नये का त घर वासी ॥ १०७ ॥ का त बरि
सब जीव नये ॥ पूछ परे नही का हुके
रही के चा कर सबे को इन पूछे साह
१०८ ॥ १०९ ॥ चो पही ॥ अ हो साहि
व चारि वेद कहीये उन मां नां कौ न से
ब्रह्मा की न्ह वषां नां ॥ चो दार त न जो क
हीये वषां नी ॥ को रा ये उ द्ध मे श्रं नी ॥
१०८ ॥ कौ न सो ब्रह्मा कहां सो न यनी ॥ च
र वेद के सैं जिन उ यनी ॥ के सैं चो दार त
न स वां ना ॥ मि ध दे व कहां बिस तारा ॥ १०९ ॥
किं हिं या त र वै द धि मे रा या ॥ क हो से
ता हि करि ना या ॥ ब्रह्मा विष्णु जो क
हीये म दे सा ॥ सो पु नि की न्ह मि
प दे सा ॥ ११० ॥ ॥ ॥ की न्हो मि थु न
म इ को चार वेद ते श्राव ॥ चो द
न स म करि क हे उ ॥ ता को क हो सु

कवच ७ वेते बुद्धि प्रकाश
मरुत बुद्धि निरंजन मरुत
पसुदकं कवलरु कवच ७
दसुब्रह्म उत पांती न्यारिषे ह्युभया
यही ब्रांती ११३ शशिपुर मश १३
निगाजा सुरनिसने हकी न्हस मश १
जा सुरनकर ही शष्ट धनिने हा ॥ ता
नये ही नसब देहा ११४ शशु म निरी
ध्यान लगवा ॥ शोर क सु म ह नि पा ११
वा राय निरंजन कु म धि नि घा ॥ ११
षलोक को मं हो दारा ॥ ११५ ॥ ग म र १
राषी सहि दं नी ॥ विर ता पां ती ११
जांती मारि ऊं ब्र ह्म सी श ष पा ॥ ११
शिवे द उ द धि मे डारी ११६ ॥ वि श र १
हि सं ग न य ती ॥ सर्व गान उ र ११
७ ॥ नि न ते खा सानी ना सु ११

की सेवा ॥ बिष्मन्ननेक श्रेयैसैचलिगये
३ मुक्तिकाजकाहूकेनभयनी ॥ १०६ ॥
कहीयेरिषसहश्रन्नयासी ॥ मरिमरि
नयेकालघरवासी ॥ दोहा ॥ कालवसि
सबजीवनये ॥ पूछुपरैनहींकाहू ॥ च
रहीकेचाकरसबै ॥ कोइनपूछेसाहू
१०७ ॥ रिषउवाच ॥ चोपई ॥ अहोसाहि
वचारिवेदकहीयेउनमांतां ॥ कौंनसै
ब्रह्माकीन्हवषांतां ॥ चोदारतनजोक
हीयेवषांती ॥ कोरायेउदधमेंश्रंती ॥
१०८ ॥ कौंनसोब्रह्माकहोसोभयनी ॥ च
रवेदकैसैजिनठयनी ॥ कैसैचोदारत
नसवांता ॥ सिधदेवकहांविसतारा ॥ १०९ ॥
किंहिंसातरवैदधिमेंराया ॥ कहोमे
ताहिकरिभाया ॥ ब्रह्माबिष्मजोक
हीयेमहेसा ॥ सोपुनिकीन्हमिथुनउ
पदेसा ॥ ११० ॥ दोहा ॥ कीन्होंमिथुनस
मद्रको ॥ चारवेदतेश्राव ॥ चोदारत
नसमकरिकहेउ ॥ ताकोकहोसुन

वा॥११॥मुनिंद्र उवाचा॥चोप॥मुने
वासिष्ट ब्रह्मसुजांनां॥जिनमुषच्य
रूं वेद वयांनां॥ब्रह्मप्रसादसी
कवयर्जो॥वोतो ब्रह्मत्रजोनी संभ
११२॥पार ब्रह्मनिरंजनमयर्जो॥जि
पसेवकं वलइक वयर्जो॥ताहिपसे
वसू ब्रह्मउतंपोनी॥चारिवेदमुयना
यही वांनी॥११३॥आदिपुरषत्राष्ट धु
निगाजा॥सुरनिसनेहकीन्हसबसा
जा सुंरनंकरही शष्ट धुनिनेहा॥ताते
नयेदीनसबदेहा॥११४॥त्राष्टधुनिसं
ध्यानलगावा॥शोरकह्वहनिजर
वा॥रायनिरंजनकुबंधिबिचारा॥खर
प्रलोककोमूद्योदारा॥११५॥मकरत
रायीसहिदांनी॥बिरताजांनेहंससु
तांनी॥मारिऊं ब्रह्मसी सबतारी॥च्या
रेवेदउदधिमेंडारा॥११६॥तेरारतनत
हेसंगभयर्जो॥सर्वसांजउदधिमेंवय
॥तिनतेखासालीन्हबुडोई

वनमें दीन्ह फेलाई ॥ ११७ ॥ छिन छिन
ध्यान धरे संसारा ॥ वो तो ब्रह्म है अंस सि
र दारा ॥ सो ब्रह्मा है अंत्र नेहा ॥ च्यारि
वेद वन की देहा ॥ ११८ ॥ दोहा ॥ सो ब्रह्म
हे सी सबिना ॥ च्यारि वेद जिन की न्ह ॥
सो ई संदेसा जानि कै ॥ उदधि मिथुन
जो की न्ह ॥ ११९ ॥ चौपत्री ॥ बाजी काल
की क जुग मांहीं ॥ नरीयर धोये सी सक
यो तांहीं ॥ जम नरीयर ताको सिर की
नां ॥ बिरल जांनै कर चीनां ॥ १२० ॥ त
को नां महे नरीयर मोरा ॥ जनम चोरा
सी जम के चोरा ॥ नरीयर बी
को बासा ॥ ताको नाम करो परगासा ॥
१२१ ॥ स्वासा पुरष बिबेय कर नाउ
रे उचार नरीयर के गांउ ॥ पवन नांम
जांनै नही नाउ ॥ फिरि फिरि बसै काल
के गांउ ॥ १२२ ॥ दोहा ॥ जोर पवन नरी
यर बसै संजम नीर सनेह ॥ ताकर नेद
जांनै नही ॥ बहुरि धरे जग देह ॥ १२३ ॥

चोपई॥ जुगहजारचोकडीगयर्ज
इतनेजुगमोहिआवतभयर्ज॥ह
तेअदेहदेहधरिआयर्ज॥यहां
आयकरिकबीरकहांयर्ज॥१२५
पवनसरूपीदेहसंचारा॥काया
बीरहेनांमहेमारा॥पवनसरूपीवे
स्तिउवांनी॥कोकरिहेमांससपहि
चांनी॥१२५॥देहधारिमानससमजा
यर्ज॥बिनांदेहप्रह्लेभाजी॥कहूनेद
निजबचनसुधारी॥गहेनेदताहिले
हूँउबारी॥१२६॥जुगएकनांमहेच्या
री॥ताकरिदेवोभेदबिच्यारी॥चारह
जारजुगत्रैसैंचलिगयैउ॥हंसकाज
आवतमोहिभयउ॥१२७॥जुगजुगना
धिर्जशष्टबिलोडी॥सुनतसंदेसजीव
चक्रतहोई॥आरंभजुगबोधिउजुग
च्यारी॥जमसंसुक्रतलीन्हउबारी॥१
२८॥धरमरायसुतबडाअभिमांनी॥बि
दवायककीअस्तुतिठांनी॥ताकाय

हसकलसंसार॥ अस्तुतिप्रेमकरे
अधिकारा॥ १२५॥ विनजिन्यावेदजो
नाथा॥ सोपरतीतिसदाजीवराया॥ पं
चर्णवेदनिरगुनअधिकारा॥ ताका
अंसजममारिउतारहीपारा॥ १२६॥
कंचमुकामपूरनकोजांनी॥ जोपा
वेनिरगुनसहिदांनी॥ निसबासुरउ
वेवहांवांनी॥ सतगुरमित्तैतोनिषे
सहिदांनी॥ १२७॥ दोहा॥ गुरुबसिष्ट
चित्तचेतेहू॥ जिनभूलोजमदेसाक
ह्याहमारामांनिहू॥ तोनिरगुनगहो
सनेस॥ १२८॥ दोपडी॥ तुमसाहिवहो
निरगुननाहा॥ मोकंदेहोसतिकरि
वांहा॥ विनजिन्यावेदजोनाथा॥ सो
मोसंतुमकछूनराया॥ १२९॥ अथे
द्वकेदरेनहोई॥ साहिवनेदधरोजि
नगोई॥ मेभूल्योरांमरांमकहिआई
श्रीघटजातकालमोहिषाई॥ १३०॥
चोरासीमेंपडिहंजाई॥ मनषजन

पुत्र न हे नाई। कौन देह धरि बाह
रिआवै। कैसे दर सताहि कर पावे
१३५। त्रेसी मोहि बुझावो वाता। तु
म सत गुर हो मु कर्तिके दाता दोह
तै त्रेता जुग मै जावता। अष्टके जम
के देसा नर कथा निबह जात है।।
कर गह काटि कुकेस। १३६। चौप
गुरु बासिष्ठ पूछि रूपां नां। तुम कौ
देहूं मुक्ति मनि पां नां। जिभ्या विनां वे
द है सो या। ताहि जां निज मच लि है
रोय। १३७। दोहा। चारि वेद है जम के
देयो लच्छि निसां ना। इन सब हि न तैं मु
कति न ही। सत गुर कहै बंधां नि। १३८
चौपई। नलि वसिष्ठ चैत तुम की न्हां
निरथ निरंतर सत गुर ची न्हां। के ता
रां म त्रेता लुप गे होय गय उी त्रे स विरां
म त्रेता मै वै धि उी। १३९। त्रे स वि त्रे ता
पाछे चलि गय उी। त्रे स वि जन म रां म
के न य उी। ताहि रां म के तुम

हसकत्न संसारा ॥ अस्तुति प्रेमकरे
अधिकारा ॥ १२९ ॥ विनजिन्या वेद
भाषा सोपरती तिसदाजीवराया ॥
चउं वेद निरगुन अधिकारा ॥ ता
अंसजममास्ति उतारही पारा ॥ १३० ॥
कंचमुकां मपूरनकोजां नी ॥ जोपा
वे निरगुन सहिदां नी ॥ निसवा सुर
वेव हां वां नी ॥ सतगुर मिलै तो
सहिदां नी ॥ १३१ ॥ दोहा ॥ गुस्वसि
चित्तचेते हू ॥ जिन भूलो जमदेसा
ह्याहमारा मां निहू ॥ ति निरगुन ग
सनेसा ॥ १३२ ॥ दोहा ॥ तुमसा हिव
निरगुन नाहा ॥ मोकं देहो सतिक
वां हा ॥ विनजिन्या वेद जो भाषा
मोसं तुमक हू नराया ॥ १३३ ॥ अ
ल्लके दरैन हो ई ॥ साहिव नेदधरो जि
नगो ई ॥ मे भूल्यो रां मरां मकहि
अघट जात काल मोहि घाई ॥ १३४ ॥
चो रासी में पडि हू जाई ॥ मनष

स

पुत्र न हे नाई। कौन देह धरि ब्राह्म
रि श्रावै के सैं दर सताहि कर पावै
१३५। ऐसी मोहि बुझावो वाता॥ तु
म सत गुर हो मु कति के दाता दोह
ते त्रै ता जुग में जावता। अष्ट के जम
के देसा नर कषांनि बह जात हैं॥
कर गह काहि कु के सा। १३६। चोप
गुरु ब्रासिष्ट पूछि रूपांन॥ तुम कौ
देहूं मुक्ति मनि पांन॥ जिम्पा बिनांवे
दहे सो या॥ ताहि जांनि जम चलि हे
राय। १३७। दोहा॥ चारि वेद हे जम के
देखो लच्छि निसांन। इन सब हि नतें मु
कति नही। सत गुर कहै बंधांनि। १३८
चोपई जलिव सिष्ट चेत तुम की न्हं
निरथ निरंतर सत गुर ची न्हं॥ के ता
रां मत्रे ता लुगें होय गय उ। त्रै सठि रां
मत्रे ता मै बेधि उ॥ १३९॥ त्रै सठि त्रै ता
पाछे चलि गय उ। त्रै सठि जन मरांम
के भय उ। ताहिरांम के तुम गुर देवा

वातै नये चौरा सी घां नी ॥ १५१ ॥ तामें जे
निरंजन देवा ॥ तीन लोक ल्यावें सब से
वा ॥ तासूं नये नउं श्रवतारा ॥ ब्रह्मा वि
ष्णु महेश विचार ॥ १५२ ॥ होहा ॥ तास
हिब कौं छिपाय कें रि ॥ आप नये सिर
दारा ॥ उपजावही बिन सावही ॥ उनतै
मुक्ति निन्दार ॥ १५३ ॥ जो पई ॥ मुक्ति पंथ
की नां हे द्वारा ॥ सुनौं वा सिष्ट कह्या हम
रा ॥ सत गुर मिलै तो ते देवता वै ॥ जमकूं
जीतै लोक कौं श्रावै ॥ १५४ ॥ इति श्री ब्र
ह्मसिद्धि जी की गोष्ठि संपूरणः ॥ अथ श्र
जनां तां लिख्यते ॥ करत हूं पुकार प्र
भुतुमही हो श्रधार मेरै ॥ की जीये गुहा
र वेगि बार काहिलाये हो ॥ शब्द बने
संकट में सहाय करी संतन की ॥ रामो
पनजन की निजिपै जकु सिधाये हो ॥ २ ॥
जन के दुष दुषित श्राप देषिन सकि ज
कलापताप कौं मिठाय सुष सिंधु श्र
वाये हो ॥ ३ ॥ सेत बंध बांध वे कौं राम च

इति कलन पद्ये लिखी सत्परे बाजंतनप
आं न लेति रावे हो ॥ ४ ॥ हापुरपगधास्ते
निसतास्यो नृप बधुव्यात्तद्विषयके गंदि
डारिजमकिं करतै लुमाये हो ॥ ५ ॥ पं
डके कुमारगये कस्मैपे पुकार नये
संसेकी धारहारसी स सुवलाये हो
ई। उनको जगि सास्या विडास्यो डषद
हलताप सर्वभूपने धमै जैजै उचारे
हो ॥ ७ ॥ जाके जन विकल कलन कै रें बा
साहिब कौं दासकी हसाई श्शदि टा कु
रही ह साये हो ॥ ८ ॥ कलुतन धास्यो काज
सास्यो सब नेवनको जयनहि पुरसो
संपुरी देवलन प्रपये हो ॥ ९ ॥ न नरह
दायो प्रग टायो श्शवंतल्ल जकल ज
ये देषिड निमो जल नर्म मिवाये हो ॥ १० ॥
बलबकौं सिधये बुडवाये बकलेय
नकौं देहायो दुखतां नं न कि मारच
चिताये हो ॥ ११ ॥ सिंधुवो हिलव चाये
पावपंडाको बुकायो होय कासीपुर

बासी अनंत गुनग वाये हो ॥ १२ ॥ सैष
तकी बार बार रह्यो हारे कसणी देक
रि कुदरते क माल सुत मित्त क जिवा
ये हो ॥ १३ ॥ गोरघ पुर मग हर बसि प्रमो
धेतु म दो उ दी न बो धो ब धे ला यां त यं
नां कु चिता ये हो ॥ १४ ॥ को ति ग दि या ये
न दी अ मी कुं बु हा ये त हां धा ये न र ना
री मन बं छ त फ ल दि वा ये हो ॥ १५ ॥ ज
वन के ध नी आ प प्र मु त के ला य क
हो आ सा जा हि जै सी ता हि तै सी पुर वा
ये हो ॥ १६ ॥ बं दी छोर नां म ते रो बे ग बं द
छोरि मे रो कुं तो अ ब ते रो क हा अ ने रो
व ह रा ये हो ॥ १७ ॥ नि र यो प्र मु अ प नी
तोर क पा की जे मे री अोर च चु यो लि
चिंतुं तु म्हें अोर कौं न धा ये है ॥ १८ ॥ स
पूत अोक पूत सुत ल ज्या पितु जननी
कौं अाप नौ ही जां नि ता हि पा ल न कु
करा ये है ॥ तु म्हे रो वृ त्त जां नि अं नि जी
वन कौं दी यो पां न ली जे सुने वि नै ज

नधर्मनिगहोरायेहै।२१॥प्रगटेसगुर
कवीरधर्मनिचितधरोधीरपुनवे
ततनुचचुनीरधायपायलागेहै।
२२॥निरषतमुखारविंदउपज्योमन
अतिअनंदहीयेजमगिबोलेसत्
नामअनुरागेहै।२३॥पगयेषरग
द्विद्वारिगुफापठच्छुदिजमकेघ
भइलूदिडरजनउविजागेहै।२४॥
द्वारपालकियोसोरधायेसबचऊं
रकरतकल्पपहाहारोत्ततहांनहं
पायेहै।२५॥कहेदंपतिकरजोरिमु
इनमास्योमोरहममरिहैयेहिवोरप्रा
पुत्रअनुरागेहै।बोलेसतनामदैनस
हीयेराषिचेनतेरोसुतजीवैअनतउ
कुबधिकागेहै।२६॥सहजअरतिर
निमांनिवांनिसुतदीयोपानतबबालव
अंगरानेंपितुमाताअनुरागेहै।२७॥ध
मनिचितभयोअनंदमेटेसबविकल्प
दसतनामपाय

रुधिधरमनिदासानुदाससतगुरपदकं
जज्ञासच्छटीकलिफाससहाप्रेमरस
पागेहै। २९॥ इति श्रीश्ररजनांसां
श्ररः॥ दोहा॥ संमत्चतुरदसपं
चमो॥ सात्तदोयकोजांनि। कातिक
ग्यारससुकलपधि। सोमवारकौमा
नि। शगुरपदरजसिरपरधरे। संतनको
प्रठभाव। सोअधिकारीगुंथको तै
कपटकोदाव। २। जेपुंरमोतीडूंगरी॥
संतनपुज्यशुथान। तहां वैठिपुस्तक
लिष्यो। भगवांनदासतेऊजांन। ३॥ ग
रनहचकनकेसिषहै॥ भगवांनदासति
हिनांम। पुस्तकलिषपूरणकस्यो॥ त
नसुषतयेनजांन। ४॥ दिष्यासोतोलिष
दीयाहमकूं दोसनहोय॥ अचरमान
जोघटै। विडुजननीज्योजोय। धूनीची
नांदि। कडिकबडी॥ नीचानैनरुबै
न। एताकष्टपोथीलषी॥ नीकांराघोसै
नदीसबसंतनसंबीनती। करुणालीज्यो
मांन। अष्टअंगदंडवतकरूं। भगवनसह
तजान। ५॥

अथ पुस्तकमैंग्रंथतिनकीयाद
दासती लिख्यते॥

- १ अमरकूलपांने १
- २ बंकेजकीरमैंगीपांने ७१
- ३ सेऊसमनकीपरचईपांने ७६
- ४ गोरवजीकीगोष्पांने ७९
- ५ अरजसांसापांने ८३
- ६ नेदसारपांने ८५
- ७ लिप्यांनसारपांने ९७
- ८ ग्यांनप्रकासपांने १०२
- ९ जंबूसरपांने १०६
- १० ब्रह्मजग्यांसपांने १०९
- ११ षटसास्त्रकोमतपांने ११२
- १२ हेतनुप्रदेसपांने ११४
- १३ परचईकबीरसाहिबकीपा
- १४ अमृतधारापांने १४२
- १५ अष्टांगजोगपांने १९४
- १६ प्रथीषंडपांने १९८
- १७ गोरवजीकीबूकण

- १४ कबीर छन्द कतीन पाने २१४
 १५ शबद पारखा पाने २१५
 २० बैत पाने २२१ पुस्तकी
 २१ प्रहमोत्री पाने २२६
 २२ पंची करण पाने २२८
 २३ कुलण पाने २३०
 २४ नो त्यारण पाने २५२
 २५ अधर मारी पाने २५१
 २६ मूल गान पाने २८९
 २७ नसीबत नामां ३०२ पाने
 २८ सीढी मूल की पाने ३०५
 २९ काफर बोध पाने ३०९
 ३० एक दस भाग वत पाने ३०८
 ३१ शबदी सोला पाने ५२३
 ३२ कृत लक्षि जोग पाने ५५२
 ३३ कंबल विचार पाने ५६२
 ३४ रमैणी पाने ५६६
 ३५ तत बोध पाने ५७०
 ३६ बुझगान पाने ५७०
 ३७ चौदा इंद्रीको विचार पाने ५७१

